नमस्ते जी

ऋषि दयानंद द्वारा प्रचारित वैदिक विचारधारा ने सैकड़ो हृदय को क्रन्तिकारी विचारो से भर दिया | जो वेद उस काल में विचारो से भी भुला दिए गए थे | ऋषि दयानंद ने उन हृदयों को वेदों के विचारो से ओतप्रोत कर दिया और देश में वेद गंगा बहने लगी | ऋषि के अपने अल्प कार्य काल में समाज की आध्यात्मिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विचार धारा को बदल के रख दिया | ऋषि के बाद भी कही वर्षो तक यह परिपाटी चली पर यह वैचारिक परिवर्तन पुनः उसी विकृति की और लौट रहा है | और इसी विकृति को रोकने के लिए वैदिक विद्वान प्रो० राजेंद्र जी जिज्ञासु के सानिध्य में "पंडित लेखराम वैदिक मिशन" संस्था का जन्म हुआ है | इस संस्था का मुख्य उद्देश्य वेदों को समाज रूपी शरीर के रक्त धमनियों में रक्त के समान स्थापित करना है | यह कार्य ऋषि के जीवन का मुख्य उद्देश्य था और यही इस संस्था का भी मुख्य उद्देश्य है | संस्था के अन्य उद्देश्यों में सम्लित है साहित्य का सृजन करना | जो दुर्लभ आर्य साहित्य नष्ट होने की और अग्रसर है उस साहित्य को नष्ट होने से बचाना और उस साहित्य को क्रम बद्ध तरीके से हमारे भाई और बहनों के समक्ष प्रस्तुत करना जिससे उनकी स्वाध्याय में रूचि बढ़े और वे तुलनात्मक अध्यन कर सकें जिससे उनकी स्वधर्म में रूचि बढ़े और अन्य मत मतान्तरो की जानकारी उन्हें प्राप्त हो और वे विधर्मियो द्वारा लगाये जा रहे विभिन्न आक्षेपों का उत्तर दे सकें विधर्मियो से स्वयं भी बचें और अन्यो की भी सहयता करें | संस्था का उद्देश्य है समाज के समक्ष हमारे गौरव शाली इतिहास को प्रस्तुत करना जिससे हमारा रक्त जो ठंडा हो गया है वह पुनः गर्म हो सके और हम हमारे इतिहास पुरुषो का मान सम्मान करें और उनके बताये गये नीतिगत मार्ग पर चलें | संस्था का अन्य उद्देश्य गौ पालन और गौ सेवा को बढ़ावा देना जिससे पशुओ के प्रति प्रेम, दया का भाव बढ़े और इन पशुओ की हत्या बंद हो, समाज में हो रहे परमात्मा के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, अत्याचार को जड़ से नष्ट करना और परमात्मा के शुद्ध वैदिक स्वरुप को समाज के समक्ष रखना, हमारे युवा शक्ति को अनेक भोग, विबिन्न व्यसनों, छल, कपट इत्यादि से बचाना |

इन कार्यो को हम अकेले पूरा करने का सामर्थ्य नहीं रखते पर, यह सारे कार्य है तो बड़े विशाल और व्यापक पर अगर संस्था को आप का साथ मिला तो बड़ी सरलता से पूर्ण किये जा सकते है | हमारा समाजिक ढाचा ऐसा है की हम प्रत्येक कार्य के लिए एक दुसरे पर निर्भर है | आशा करते है की इस कार्य में आप हमारी तन, मन से साहयता करेंगे | संस्था द्वारा चलाई जा रही वेबसाइट www.aryamantavya.in और www.vedickranti.in पर आप संस्था द्वारा स्थापित संकल्पों सम्बन्धी लेख पड़ सकते है और भिन्न-भिन्न वैदिक साहित्य को निशुल्क डाउनलोड कर सकते है | कृपया स्वयं भी जाये और अन्यो को भी सूचित करे यही आप की हवी होंगी इस यज्ञ में जो आप अवश्य करेंगे यही परमात्मा से प्रार्थना करते है |

जिन सज्जनों के पास दुर्लभ आर्य साहित्य है एवं वे उसे संरक्षित करने में संस्था की सहायता करना चाहते हैं वो कृपया निम्न पते पर सूचित करें

ptlekhram@gmail.com

धन्यवाद् !

पंडित लेखराम वैदिक मिशन

आर्य मंतव्य टीम

AryaMantavya
Make The Whole World Noble

# ॥ओ३म्॥

## अथ पञ्चमं मण्डलम्॥

**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ द्वादशर्चस्य प्रथमस्य सूक्तस्य बुधगविष्ठिरावात्रेयावृषी। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ७, १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक्पङ्क्तिः। ८ स्वराट्पङ्क्तिः। ९ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथोपदेश्योपदेशकगुणानाह॥**

अब बारह ऋचा वाले प्रथम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में उपदेश देने योग्य और उपदेश देने वाले के गुणों को कहते हैं॥

**अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।**

**यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ॥ १॥**

**अबोधि। अग्निः। सम्ऽइधा। जनानाम्। प्रति। धेनुम्ऽइव। आऽयतीम्। उषासम्। यह्वाःऽइव। प्र। वयाम्। उत्ऽजिहानाः। प्र। भानवः। सिस्रते। नाकम्। अच्छ॥ १॥**

**पदार्थः-(अबोधि)** बुध्यते **(अग्निः)** पावकः **(समिधा)** इन्धनैर्घृतादिना **(जनानाम्)** मनुष्याणाम् **(प्रति) (धेनुमिव)** दुग्धप्रदां गामिव **(आयतीम्)** आगच्छन्तीम् **(उषासम्)** उषसम्। अत्र**ान्येषामपी**ति दीर्घः। **(यह्वाइव)** महान्तो वृक्षा इव **(प्र) (वयाम्)** शाखाम् **(उज्जिहानाः)** त्यजन्तः **(प्र) (भानवः)** दीप्तयः **(सिस्रते)** सरन्ति गच्छन्ति **(नाकम्)** अविद्यमानदुःखमन्तरिक्षम् **(अच्छ)** सम्यक्॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा समिधाग्निरबोधि भानवो जनानामायतीं धेनुमिवोषासं प्रति प्र सिस्रते वयां प्रोज्जिहाना यह्वा इव नाकमच्छ सिस्रते तथा त्वं भव॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। येऽग्न्यादिविद्यां गृहीत्वा कार्य्येषु प्रयुञ्जते दुःखविरहाः सन्तो वृक्षा इव वर्द्धन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(समिधा)** ईन्धन और घृत आदि से **(अग्निः)** अग्नि **(अबोधि)** जाना जाता अर्थात् प्रज्वलित किया जाता है **(भानवः)** कान्तियें **(जनानाम्)** मनुष्यों की **(आयतीम्)** आती हुई **(धेनुमिव)** दुग्ध देने वाली गौ के तुल्य **(उषासम्)** प्रातर्वेला के **(प्रति) (प्र, सिस्रते)** प्राप्त होती और **(वयाम्)** शाखा को **(प्र, उज्जिहानाः)** अच्छे प्रकार त्यागते हुए **(यह्वा इव)** बड़े वृक्षों के सदृश **(नाकम्)** दुःख से रहित अन्तरिक्ष को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती है, वैसे आप हूजिये॥१॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्न्यादि पदार्थों की विद्या को ग्रहण कर कार्य्यों में अच्छे प्रकार युक्त करते हैं, वे दु:ख रहित हुए वृक्षों के समान बढ़ते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात्।**
**समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस्तमसो निरमोचि॥२॥**

**अबोधि। होता। यजथाय। देवान्। ऊर्ध्वः। अग्निः। सुऽमनाः। प्रातः। अस्थात्। सम्ऽइद्धस्य। रुशत्। अदर्शि। पाजः। महान्। देवः। तमसः। निः। अमोचि॥२॥**

**पदार्थ:**-(**अबोधि**) बुध्यते (**होता**) हवनकर्त्ता (**यजथाय**) यजनाय (**देवान्**) विदुषो दिव्यान् गुणान् वा (**ऊर्ध्वः**) ऊर्ध्वगामी (**अग्निः**) पावक इव (**सुमनाः**) शुद्धमनाः (**प्रातः**) (**अस्थात्**) तिष्ठति (**समिद्धस्य**) प्रदीप्तस्य (**रुशत्**) रूपम् (**अदर्शि**) दृश्यते (**पाजः**) बलम् (**महान्**) (**देवः**) देदीप्यमानः सूर्यः (**तमसः**) अन्धकरात् (**निः**) नितराम् (**अमोचि**) मुच्यते॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुमना होता यजथायोर्ध्वोऽग्निरिव देवानबोधि प्रातरस्थात् स समिद्धस्य रुशदिवादर्शि महान् देवः पाजः तमसो निरमोचि तं यूयं सेवध्वम्॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या उत्तमाचरणेनाग्निवदूर्ध्वगामिनो भवन्ति तेऽविद्यातो निवृत्य यशस्विनो जायन्ते॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**सुमनाः**) शुद्ध मन वाला (**होता**) हवनकर्त्ता पुरुष (**यजथाय**) यज्ञ करने के लिये (**ऊर्ध्वः**) ऊपर को चलने वाले (**अग्निः**) अग्नि के सदृश (**देवान्**) विद्वानों वा श्रेष्ठ गुणों को (**अबोधि**) जानता और (**प्रातः**) प्रातःकाल में (**अस्थात्**) स्थित होता है, वह (**समिद्धस्य**) प्रदीप्त अग्नि के (**रुशत्**) रूप के समान (**अदर्शि**) देखा जाता है और जो (**महान्**) बड़ा (**देवः**) प्रकाशमान सूर्य (**पाजः**) बल को प्राप्त होकर (**तमसः**) अन्धकार से (**निः**) (**अमोचि**) अत्यन्त छुटाया जाता है, उसकी आप लोग सेवा करो॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य उत्तम आचरण से अग्नि सदृश ऊपर को जाने वाले होते हैं, वे अविद्या से निवृत्त होकर यशस्वी होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः।**
**आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः॥३॥**

**यत्। ईम्। गणस्य। रशनाम्। अजीगरिति। शुचिः। अङ्क्ते। शुचिऽभिः। गोभिः। अग्निः। आत्। दक्षिणा। युज्यते। वाजऽयन्ती। उत्तानाम्। ऊर्ध्वः। अधयत्। जुहूभिः॥३॥**

**पदार्थः-(यत्)** यः **(ईम्)** प्राप्तम् **(गणस्य)** समूहस्य **(रशनाम्)** रज्जुम् **(अजीगः)** भृशं गिरति **(शुचिः)** पवित्रः सन् **(अङ्क्ते)** प्रसिद्धो भवति **(शुचिभिः)** पवित्रैः **(गोभिः)** किरणैः **(अग्निः)** पावक इव **(आत्) (दक्षिणा)** दक्षिणस्यां दिशि **(युज्यते) (वाजयन्ती)** प्रापयन्ती **(उत्तानाम्)** ऊर्ध्वगामिनीम् **(ऊर्ध्वः) (अधयत्)** पिबति **(जुहूभिः)** पानसाधनैः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः शुचिभिर्गोभिरग्निरिव गणस्य रशनामजीग आच्छुचिरूर्ध्वोऽङ्क्ते स दक्षिणा युज्यते या विदुषी वाजयन्त्युत्तानामजीगस्स ईं जुहूभिः पेयमधयत्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये समुदायस्य सन्तोषं जनयन्ति ते किरणैः सूर्य इव सर्वत्र यशसा प्रकाशिता जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(शुचिभिः)** पवित्र **(गोभिः)** किरणों से **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(गणस्य)** समूह की **(रशनाम्)** डोरी को **(अजीगः)** अत्यन्त निगलता अर्थात् ग्रहण करता **(आत्)** और **(शुचिः)** पवित्र होता हुआ **(ऊर्ध्वः)** ऊपर को उठा **(अङ्क्ते)** प्रसिद्ध होता है, वह **(दक्षिणा)** दक्षिणा दिशा में **(युज्यते)** युक्त किया जाता है, जो विद्यायुक्त स्त्री **(वाजयन्ती)** प्राप्ति कराती हुई **(उत्तानाम्)** ऊपर जाने वाली सामग्री को निरन्तर ग्रहण करती है, वह **(ईम्)** प्राप्त हुए **(जुहूभिः)** पान करने के साधनों से पीने योग्य पदार्थ को **(अधयत्)** पान करती है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो समुदाय के संतोष को उत्पन्न करते हैं, वे किरणों से सूर्य जैसे वैसे सर्वत्र यश से प्रकाशित होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति।
### यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्॥४॥

**अग्निम्। अच्छ। देवऽयताम्। मनांसि। चक्षूंषिऽइव। सूर्ये। सम्। चरन्ति। यत्। ईम्। सुवाते इति। उषसा। विरूपे इति विऽरूपे। श्वेतः। वाजी। जायते। अग्रे। अह्नाम्॥४॥**

**पदार्थः-(अग्निम्)** पावकम् **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(देवयताम्)** कामयमानानाम् **(मनांसि)** अन्तःकरणानि **(चक्षूंषीव) (सूर्ये)** सवितरीव सूर्ये **(सम्) (चरन्ति)** गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति **(यत्)** यथा **(ईम्) (सुवाते)** उत्पादयतः **(उषसा)** रात्रिदिने **(विरूपे)** विरुद्धस्वरूपे **(श्वेतः) (वाजी)** विज्ञापको दिवसः **(जायते)** उत्पद्यते **(अग्रे) (अह्नाम्)** दिनानाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यथाऽह्नामग्रे विरूपे उषसेम् सुवाते तयोः श्वेतो वाजी जायते तथाग्निं देवयतां सूर्ये

चक्षूंषीव परमात्मनि मनांस्यच्छा सञ्चरन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा दिनं तथा विद्वांसो यथा रात्रिस्तथाऽविद्वांसः सन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जैसे **(अह्नाम्)** दिनों के **(अग्रे)** अग्रभाग में **(विरूपे)** विरुद्धस्वरूप **(उषसा)** रात्रि और दिन **(ईम्)** प्राप्त हुई क्रिया को **(सुवाते)** उत्पन्न कराते हैं और उन में **(श्वेतः)** श्वेतवर्ण **(वाजी)** जनाने वाला अर्थात् कार्य्यों की सूचना दिलाने वाला दिवस **(जायते)** उत्पन्न होता है, वैसे **(अग्निम्)** अग्नि की **(देवयताम्)** कामना करते हुए जनों के बीच **(सूर्ये)** सूर्य्य में **(चक्षूंषीव)** नेत्रों के सदृश परमात्मा में **(मनांसि)** अन्तःकरण **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(सम्, चरन्ति)** प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे दिन वैसे विद्वान् जन और जैसे रात्रि वैसे अविद्वान् हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु।**

**दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान्॥५॥**

**जनिष्ट। हि। जेन्यः। अग्रे। अह्नाम्। हितः। हितेषु। अरुषः। वनेषु। दमेऽदमे। सप्त। रत्ना। दधानः। अग्निः। होता। नि। ससाद। यजीयान्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(जनिष्ट)** जायते **(हि)** **(जेन्यः)** जेतुं शीलः **(अग्रे)** **(अह्नाम्)** दिनानाम् **(हितः)** हितकारी **(हितेषु)** सुखनिमित्तेषु **(अरुषः)** न मर्मव्यापी **(वनेषु)** जङ्गलेषु **(दमेदमे)** गृहेगृहे **(सप्त)** सप्तसङ्ख्याकान् किरणान् **(रत्ना)** रत्नानि धनानि **(दधानः)** धरन् **(अग्निः)** अग्निरिव **(होता)** सङ्गतक्रियाकर्त्ता **(नि)** **(ससाद)** निषीदत्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(यजीयान्)** अतिशयेन यज्ञकर्त्ता॥५॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! योऽह्नामग्रे हितेषु हितो वनेष्वरुषो दमेदमे सप्त किरणान् रत्ना दधानो जेन्योऽग्निरिव होता जनिष्ट सत्कर्मसु निषसाद स हि यजीयान् जायते॥५॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा दिवसाऽऽरम्भे प्रभातसमयः सर्वेषां हितकारी वर्त्तते तथैव सत्कर्मकर्त्ता यजमानः सर्वहितैषी जायते॥५॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जो **(अह्नाम्)** दिनों के **(अग्रे)** अग्रभाग में **(हितेषु)** सुख के कारणों में **(हितः)** हित करने वाला **(वनेषु)** वनों में **(अरुषः)** मर्मस्थलों में न व्यापी **(दमेदमे)** गृह-गृह में **(सप्त)** सात किरणों और **(रत्ना)** धनों को **(दधानः)** धारण करता हुआ **(जेन्यः)** जीतने वाला **(अग्निः)** अग्नि के

सदृश **(होता)** सङ्गत क्रियाओं का कर्त्ता **(जनिष्ट)** उत्पन्न होता है और श्रेष्ठ कर्म्मों में **(नि, ससाद)** प्रवृत्त होवे **(हि)** वही **(यजीयान्)** अत्यन्त यज्ञ करने वाला होता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे दिन के आरम्भ में प्रभातसमय सब का हितकारी होता है, वैसे ही श्रेष्ठ कर्म करने वाला यजमान सब का हितैषी होता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्होता॒ न्य॑सीद॒द् यजी॑यानु॒पस्थे॑ मा॒तुः सु॑र॒भा उ॑ लो॒के।**

**युवा॑ क॒विः पु॑रु॒नि॒ःष्ठ ऋ॒तावा॑ ध॒र्ता कृ॑ष्टी॒नामु॒त मध्य॑ इ॒द्धः॥६॥१२॥**

अ॒ग्निः। होता॑। नि। अ॒सी॒द॒त्। यजी॑यान्। उ॒पऽस्थे॑। मा॒तुः। सु॒र॒भौ। उँ॒ इति॑। लो॒के। युवा॑। क॒विः। पु॒रु॒निः॒ऽस्थः। ऋ॒तऽवा॑। ध॒र्ता। कृ॒ष्टी॒नाम्। उ॒त। मध्ये॑। इ॒द्धः॥६॥

**पदार्थः**-**(अग्निः)** विद्युदिव **(होता)** यज्ञकर्ता **(नि)** **(असीदत्)** निषीदेत् **(यजीयान्)** अतिशयेन यष्टा **(उपस्थे)** समीपे **(मातुः)** **(सुरभौ)** सुगन्धिते **(उ)** **(लोके)** **(युवा)** बलिष्ठः **(कविः)** क्रान्तप्रज्ञो विपश्चित् **(पुरुनिःष्ठः)** पुरवो बहुविधा निष्ठा यस्य बहुस्थानी वा **(ऋतावा)** सत्यविभाजकः **(धर्त्ता)** **(कृष्टीनाम्)** मनुष्याणाम् **(उत)** अपि **(मध्ये)** **(इद्धः)** प्रदीप्तः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मध्य इद्धोऽग्निरिव यजीयान् युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्त्ता होता सुरभौ मातुरुपस्थे लोके न्यसीदत् स उ कृष्टीनामुत पश्वादीनां रक्षकः स्यात्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निर्मातरि वायौ स्थितः सन् विद्युद्रूपेण सर्वान् सुखयति तथैव धार्मिको विद्वान् सर्वानानन्दयितुमर्हति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(मध्ये)** मध्य में **(इद्धः)** प्रदीप्त **(अग्निः)** बिजुली सदृश **(यजीयान्)** अत्यन्त यज्ञकर्त्ता **(युवा)** बलवान् **(कविः)** उत्तम बुद्धि वाला विद्वान् **(पुरुनिःष्ठः)** अनेक प्रकार की श्रद्धा व बहुत स्थानों वाला **(ऋतावा)** सत्य का विभाग [करने वाला] **(धर्त्ता)** और धारण करने वाला **(होता)** यज्ञकर्त्ता **(सुरभौ)** सुगन्धित **(मातुः)** माता के **(उपस्थे)** समीप में **(लोके)** लोक में **(नि, असीदत्)** निरन्तर स्थित होवे **(उ)** वही **(कृष्टीनाम्)** मनुष्यों का **(उत)** और पशु आदिकों का रक्षक होवे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि मातारूप वायु में विराजता हुआ बिजुलीरूप से सब को सुख देता है, वैसे ही धार्मिक विद्वान् सब को आनन्द दिलाने के योग्य है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र णु त्यं विप्र॑मध्व॒रेषु॑ सा॒धुम॒ग्निं होता॑रमीळते॒ नमो॑भिः।**

**आ यस्ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन॥७॥**

**प्र। नु। त्यम्। विप्रम्। अध्वरेषु। साधुम्। अग्निम्। होतारम्। ईळते। नमःऽभिः। आ। यः। ततान। रोदसी इति। ऋतेन। नित्यम्। मृजन्ति। वाजिनम्। घृतेन॥७॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**नु**) सद्यः (**त्यम्**) तम् (**विप्रम्**) मेधाविनम् (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु व्यवहारेषु (**साधुम्**) (**अग्निम्**) पावकम् (**होतारम्**) (**ईळते**) स्तुवन्ति (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**आ**) (**यः**) (**ततान**) विस्तृणोति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**ऋतेन**) सत्येन (**नित्यम्**) (**मृजन्ति**) शुन्धन्ति (**वाजिनम्**) (**घृतेन**) उदकेन॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्नमोभिर्ऋतेन घृतेन वाजिनं रोदसी आ ततान तद्विद्यया ये नित्यं मृजन्ति त्यमग्निमिव होतारं साधुं विप्रमध्वरेषु नु प्र ईळते ते सुखिनो जायन्ते॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽग्निं कार्येषु सम्प्रयुज्य धनधान्ययुक्ता जायन्ते तथैतद् विद्यां कार्येषु संयोज्य प्रत्यक्षविद्या जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो अग्नि (**नमोभिः**) अन्न आदिकों से (**ऋतेन**) सत्य से (**घृतेन**) और जल से (**वाजिनम्**) गति वाले पदार्थ को (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**आ, ततान**) विस्तृत करता अर्थात् अन्तरिक्ष और पृथिवी पर पहुंचाता है, उसकी विद्या से जो (**नित्यम्**) नित्य (**मृजन्ति**) शुद्ध करते और (**त्यम्**) उस (**अग्निम्**) अग्नि के सदृश (**होतारम्**) यज्ञ करने वाले (**साधुम्**) श्रेष्ठ (**विप्रम्**) बुद्धिमान् की (**अध्वरेषु**) नहीं हिंसा करने योग्य व्यवहारों में (**नु**) शीघ्र (**प्र, ईळते**) अच्छे प्रकार स्तुति करते हैं, वे सुखी होते है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन अग्नि को कार्य्यों में संप्रयुक्त अर्थात् काम में लाकर धन और धान्य से युक्त होते हैं, वैसे ही इसकी विद्या को कार्यों में संयुक्त करके प्रत्यक्ष विद्यायुक्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः।**

**सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान्॥८॥**

**मार्जाल्यः। मृज्यते। स्वे। दमूनाः। कविऽप्रशस्तः। अतिथिः। शिवः। नः। सहस्रऽशृङ्गः। वृषभः। तत्ऽओजाः। विश्वान्। अग्ने। सहसा। प्र। असि। अन्यान्॥८॥**

**पदार्थः**-(**मार्जाल्यः**) संशोधकः (**मृज्यते**) शुद्ध्यते (**स्वे**) स्वकीये (**दमूनाः**) दमनशीलः (**कविप्रशस्तः**) कविभिः प्रशंसनीयः कविषु प्रशस्तो वा (**अतिथिः**) अविद्यमाननियततिथिः (**शिवः**) मङ्गलमयो मङ्गलकारी (**नः**) अस्मान् (**सहस्रशृङ्गः**) सहस्राणि शृङ्गाणीव तेजांसि यस्य सः (**वृषभः**)

बलिष्ठो वर्षणशीलः **(तदोजाः)** तदेवौजः पराक्रमो यस्य सः **(विश्वान्)** समग्रान् **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान **(सहसा)** बलेन **(प्र)** **(असि)** **(अन्यान्)**॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! दमूनाः कविप्रशस्तः शिवोऽतिथिः सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा मार्जाल्योऽग्निरिव भवान् स्वे प्र मृज्यते स सहसा विश्वान्नोऽस्मानन्यांश्च प्ररक्षन्नसि तं वयं सेवेमहि॥८॥

**भावार्थः**-त एवाऽतिथयः स्युर्ये दान्ता मङ्गलाचारा धर्मिष्ठा विद्वांसो जितेन्द्रियाः सर्वेषां प्रियसाधनरुचयो भवेयुः। यथाऽग्निः सर्वशोधकोऽस्ति तथैव सर्वजगत्पवित्रकरा अतिथयः सन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान **(दमूनाः)** इन्द्रियों को वश में रखने वाले **(कविप्रशस्तः)** विद्वानों से प्रशंसा करने योग्य अथवा विद्वानों में प्रशंसा को प्राप्त **(शिवः)** मङ्गलस्वरूप वा मङ्गल करने वाले **(अतिथिः)** जिनकी आने की कोई तिथि नियत विद्यमान न हो **(सहस्रशृङ्गः)** जो हजारों शृङ्गों के तुल्य तेजों से युक्त **(वृषभः)** बलिष्ठ और वृष्टि करने वाले **(तदोजाः)** जिनका वही पराक्रम **(मार्जाल्यः)** जो अत्यन्त शुद्ध करने वाले अग्नि के सदृश आप **(स्वे)** अपने में **(प्र, मृज्यते)** शुद्ध किये जाते हैं, वह **(सहसा)** बल से **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(नः)** हम लोगों की तथा **(अन्यान्)** अन्यों की रक्षा करते हुए **(असि)** विद्यमान हो, उनकी हम लोग सेवा करें॥८॥

**भावार्थः**-वे ही अतिथि होवें जो इन्द्रियों के दमन करने और मङ्गलाचरण करने वाले धर्म्मिष्ठ विद्वान् और सब के प्रिय साधन में प्रीति करने वाले होवें और जैसे अग्नि सब का शुद्ध करने वाला है, वैसे ही सम्पूर्ण जगत् के पवित्र करने वाले अतिथि जन हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र सद्यो अ॑ग्ने अत्ये॑ष्य॒न्याना॒विर्यस्मै॒ चारु॑तमो ब॒भूथ॑।**

**ई॒ळेन्यो॑ वपु॒ष्यो॑ वि॒भावा॑ प्रि॒यो वि॒शामति॑थि॒र्मानु॑षीणाम्॥९॥**

**प्र। स॒द्यः। अ॒ग्ने॒। अति॑। ए॒षि॒। अ॒न्यान्। आ॒विः। यस्मै॑। चारु॑ऽतमः। ब॒भूथ॑। ई॒ळेन्यः॑। व॒पु॒ष्यः॑। वि॒भाऽवा॑। प्रि॒यः। वि॒शाम्। अति॑थिः। मानु॑षीणाम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(सद्यः)** समानेऽहनि **(अग्ने)** विद्वन् **(अति)** उल्लङ्घने **(एषि)** **(अन्यान्)** पूर्वोपदिष्टान् **(आविः)** प्राकट्ये **(यस्मै)** **(चारुतमः)** अतिशयेन सुशीलः सुन्दरः **(बभूथ)** भवसि **(ईळेन्यः)** प्रशंसनीयधर्म्यकर्मा **(वपुष्यः)** वपुषि सुन्दरे रूपे भवः **(विभावा)** विशेषेण भानवान् **(प्रियः)** कमनीयः सेवनीयो वा **(विशाम्)** प्रजानाम् **(अतिथिः)** सर्वत्र भ्रमणकर्त्ता **(मानुषीणाम्)** मनुष्यादि-रूपाणाम्॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्मै त्वमाविर्बभूथ स ईळेन्यो वपुष्यो विभावा चारुतमो मानुषीणां विशां प्रियोऽतिथिः प्र भवति यतस्त्वमन्यान् सद्योऽत्येषि स भवानस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥९॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या नित्यं भ्रमन्ति प्राप्तानुपदिश्याऽप्राप्तानुपदेशाय गच्छन्ति सर्वेषां हितैषिणो महाविद्वांस आप्ता: सन्ति त एवाऽतिथयो भवितुमर्हन्ति॥९॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(यस्मै)** जिसके लिये आप **(आवि:)** प्रकट **(बभूथ)** होते हो वह **(ईळेन्य:)** प्रशंसा करने योग्य धर्म्मयुक्त कर्म्म करने वाला **(वपुष्य:)** सुन्दर रूप में प्रसिद्ध **(विभावा)** विशेष कान्तियुक्त **(चारुतम:)** अत्यन्त सुशील और सुन्दर और **(मानुषीणाम्)** मनुष्यादिरूप **(विशाम्)** प्रजाओं को **(प्रिय:)** कामना वा सेवा करने योग्य **(अतिथि:)** सर्वत्र घूमने वाला **(प्र)** समर्थ होता है, जिस कारण आप **(अन्यान्)** प्रथम उपदेश दिये हुओं को **(सद्य:)** तुल्य दिन में **(अति, एषि)** उल्लङ्घन करके प्राप्त होते हो, वह आप हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥९॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य नित्य भ्रमण करते और प्राप्त हुए जनों को उपदेश कर और नहीं प्राप्त हुओं को उपदेश के लिये प्राप्त होते तथा सब के हितैषी बड़े विद्वान् और यथार्थवादी हैं, वे ही अतिथि होने के योग्य हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्ने अन्तित ओत दूरात्।**
**भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत्ते अग्ने महि शर्म भद्रम्॥१०॥**

**तुभ्यम्। भरन्ति। क्षितयः। यविष्ठ। बलिम्। अग्ने। अन्तितः। आ। उत। दूरात्। आ। भन्दिष्ठस्य। सुऽमतिम्। चिकिद्धि। बृहत्। ते। अग्ने। महि। शर्म। भद्रम्॥१०॥**

**पदार्थ:**-**(तुभ्यम्)** **(भरन्ति)** धरन्ति **(क्षितय:)** गृहस्था मनुष्या: **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(बलिम्)** भक्ष्यभोज्यादिपदार्थसमुदायम् **(अग्ने)** विद्युद्वद्व्याप्तविद्य **(अन्तित:)** समीपत: **(आ)** **(उत)** **(दूरात्)** **(आ)** **(भन्दिष्ठस्य)** अतिशयेन कल्याणाचरणस्य **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(चिकिद्धि)** विजानीहि **(बृहत्)** महत् **(ते)** तव **(अग्ने)** पवित्रकर्त्त: **(महि)** पूजनीयम् **(शर्म)** गृहं सुखं वा **(भद्रम्)** सेवनीयसुखप्रदम्॥१०॥

**अन्वय:**-हे यविष्ठाऽग्ने! यतस्त्वमन्तित उत दूरादागत्य सर्वान् सत्यमुपदिशसि तस्मात् क्षितयस्तुभ्यं बलिमाभरन्ति। हे अग्ने! त्वं भन्दिष्ठस्य सुमतिमा चिकिद्धीदं ते महि बृहद्भद्रं शर्मास्तु॥१०॥

**भावार्थ:**-यस्मादतिथय: सर्वेषां मनुष्याणां सत्योपदेशेन परममुपकारं कुर्वन्ति तस्मात्तेऽन्नपानस्थानप्रियवचनधनादिना सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(यविष्ठ)** अतिशय युवा **(अग्ने)** बिजली के सदृश विद्या में व्याप्त जिससे आप **(अन्तित:)** समीप से **(उत)** और **(दूरात्)** दूर से आकर सब को सत्य का उपदेश करते हो, इससे **(क्षितय:)** गृहस्थ मनुष्य **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(बलिम्)** खाने और पीने योग्यादि पदार्थों के समूह को

**(आ, भरन्ति)** धारण करते हैं और हे **(अग्ने)** पवित्र कार्य्य करने वाले! आप **(भन्दिष्ठस्य)** अत्यन्त श्रेष्ठ आचरण करने वाले की **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को **(आ, चिकिद्धि)** विशेष करके जानिये और यह **(ते)** आपका **(महि)** सत्कार करने योग्य **(बृहत्)** बड़ा **(भद्रम्)** सेवन करने योग्य सुख देने वाला **(शर्म)** गृह वा सुख हो॥१०॥

**भावार्थः**-जिससे अतिथि जन सब मनुष्यों के सत्य उपदेश से परम उपकार को करते हैं, इससे वे अन्न, पान, स्थान, प्रिय वचन और धन आदि से सत्कार करने योग्य होते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आद्य रथं भानुमो भानुमन्तमग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्।**

**विद्वान् पथीनामुर्व१न्तरिक्षमेह देवान् हविरद्याय वक्षि॥११॥**

**आ। अद्य। रथम्। भानुऽमः। भानुऽमन्तम्। अग्ने। तिष्ठ। यजतेभिः। सम्ऽअन्तम्। विद्वान्। पथीनाम्। उरु। अन्तरिक्षम्। आ। इह। देवान्। हविःऽअद्याय। वक्षि॥११॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(अद्य)** इदानीम् **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(भानुमः)** भानवन् **(भानुमन्तम्)** दीप्तिमन्तम् **(अग्ने)** विद्वान् **(तिष्ठ)** **(यजतेभिः)** सङ्गतैरश्वादिभिः संयुक्तम् **(समन्तम्)** सर्वतो दृढाङ्गम् **(विद्वान्)** **(पथीनाम्)** मार्गाणाम् **(उरु)** व्यापकम् **(अन्तरिक्षम्)** **(आ)** **(इह)** **(देवान्)** विदुषोऽतिथीन् **(हविरद्याय)** अत्तुं योग्यायाऽन्नाद्याय **(वक्षि)** वहसि॥११॥

**अन्वयः**-हे भानुमोऽग्ने! त्वमिहाद्य यजतेभिस्सह समन्तं भानुमन्तं रथमा तिष्ठ तेन विद्वांस्त्वं पथीनामुर्वन्तरिक्षं हविरद्याय देवान् यत आ वक्षि तस्मादस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽसि॥११॥

**भावार्थः**-गृहस्थैर्दूरस्थानप्युत्तमानतिथीनुत्तमेषु यानेषु संस्थाप्योपदेशायाऽऽनेया अन्नादिना सत्कर्त्तव्याश्च॥११॥

**पदार्थः**-हे **(भानुमः)** कान्ति वाले **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(इह)** यहाँ **(अद्य)** इस समय **(यजतेभिः)** प्राप्त हुए घोड़े आदिकों से संयुक्त **(समन्तम्)** सब प्रकार दृढ़ अवयवों वाले **(भानुमन्तम्)** कान्तियुक्त **(रथम्)** सुन्दर वाहन पर **(आ)** अच्छे प्रकार **(तिष्ठ)** विराजिये इससे **(विद्वान्)** विद्यायुक्त आप **(पथीनाम्)** मार्गों के **(उरु)** व्यापक **(अन्तरिक्षम्)** अन्तरिक्ष को और **(हविरद्याय)** खाने योग्य अन्न आदि के लिये **(देवान्)** विद्वान् अतिथियों को जिससे **(आ, वक्षि)** अच्छे प्रकार पहुँचाते हो, इससे हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥११॥

**भावार्थः**-गृहस्थों को चाहिये कि दूर स्थित भी उत्तम अतिथियों को उत्तम वाहनों पर बैठाकर उपदेश के लिये लावें और अन्न आदि से उनका सत्कार करें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवो॑चाम क॒वये॒ मेध्या॑य॒ वचो॑ व॒न्दारु॑ वृष॒भाय॒ वृष्णे॑।**

**गवि॑ष्ठिरो॒ नम॑सा॒ स्तोम॑म॒ग्नौ दि॒वी॑व रु॒क्मम॑ु॒रुव्यञ्च॒मश्रे॑त्॥ १२॥ १३॥**

**अवो॑चाम। क॒वये॑। मेध्या॑य। वचः॑। व॒न्दारु॑। वृ॒ष॒भाय॑। वृष्णे॑। गवि॑ष्ठिरः। नम॑सा। स्तोम॑म्। अ॒ग्नौ। दि॒विऽइ॑व। रु॒क्मम्। उ॒रु॒ऽव्यञ्च॑म्। अ॒श्रे॒त्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**अवोचाम**) उपदिशेम (**कवये**) विदुषे (**मेध्याय**) पवित्राय (**वचः**) (**वन्दारु**) प्रशंसनीयं धर्म्यम् (**वृषभाय**) बलिष्ठाय (**वृष्णे**) सत्योपदेशवर्षकाय (**गविष्ठिरः**) यो गवि सुशिक्षितायां वाचि तिष्ठति (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**स्तोमम्**) श्लाघनीयम् (**अग्नौ**) पावके (**दिवीव**) यथा सूर्ये (**रुक्मम्**) रुचिकरं भास्वरम् (**उरुव्यञ्चम्**) बहुव्याप्तिमन्तम् (**अश्रेत्**) आश्रयेत्॥ १२॥

**अन्वयः**-हे राजादयो मनुष्या अतिथयो! वयं यो गविष्ठिरो नमसा दिवीवाग्नौ रुक्ममुरुव्यञ्चं स्तोममश्रेत् तस्मै वृष्णे वृषभाय मेध्याय कवये वन्दारु वचोऽवोचाम॥ १२॥

**भावार्थः**-तानेव विद्वांसोऽतिथयो विशिष्टमुपदिशन्तु ये पवित्रात्मानो विद्याप्रियाः सत्क्रियां जिज्ञासवो भवेयुर्ये चातो विपरीतास्तानधिकारयोग्यतामुपदेशेन प्रापय्याऽधिकारिणः सम्पादयेयुरिति॥ १२॥

अत्रोपदेश्योपदेष्टृगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति प्रथम सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यो अतिथि! हम लोग जो (**गविष्ठिरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी में स्थित (**नमसा**) सत्कार वा अन्न आदि से (**दिवीव**) जैसे सूर्य्य में वैसे (**अग्नौ**) अग्नि में (**रुक्मम्**) प्रीतिकारक और प्रकाशयुक्त (**उरुव्यञ्चम्**) बहुत व्यापक और (**स्तोमम्**) प्रशंसा करने योग्य का (**अश्रेत्**) आश्रय करें उस (**वृष्णे**) सत्य उपदेश की वृष्टि करने वाले (**वृषभाय**) बलिष्ठ (**मेध्याय**) पवित्र (**कवये**) विद्वान् जन के लिये (**वन्दारु**) प्रशंसा करने योग्य और धर्म्मसम्बन्धी (**वचः**) वचन का (**अवोचाम**) उपदेश करें॥ १२॥

**भावार्थः**-उन पुरुषों को ही विद्वान् अतिथि जन विशेष उपदेश देवें कि जो पवित्रात्मा विद्या में प्रीति करने और उत्तम क्रियाओं के जानने की इच्छा करने वाले होवें और जो इन बातों से विपरीत अर्थात् रहित हों उनको अधिकार की योग्यता अर्थात् विशेष उपदेश के समझने का सामर्थ्य साधारण उपदेश के द्वारा प्राप्त करा के अधिकारी करें॥ १२॥

इस सूक्त में उपदेश सुनने और उपदेश के सुनाने वाले का गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह प्रथम सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य द्वितीयस्य सूक्तस्य १, ३-८, १०-१२ कुमार आत्रेयो वृशो वा जार उभौ वा। २, ९ वृशो जार ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ७, ८ त्रिष्टुप्। ५, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ११ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराट्पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १२ भुरिगतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

**अथ युवावस्थायां विवाहविषयमाह॥**

अब बारह ऋचा वाले द्वितीय सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में युवावस्था में विवाह करने के विषय को कहते हैं॥

**कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।**
**अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ॥१॥**

**कुमारम्। माता। युवतिः। सम्ऽउब्धम्। गुहा। बिभर्ति। न। ददाति। पित्रे। अनीकम्। अस्य। न। मिनत्। जनासः। पुरः। पश्यन्ति। निऽहितम्। अरतौ॥ १॥**

**पदार्थः**-**(कुमारम्) (माता) (युवतिः)** पूर्णावस्था सती कृतविवाहा **(समुब्धम्)** समत्वेन गूढम् **(गुहा)** गुहायां गर्भाशये **(बिभर्ति) (न) (ददाति) (पित्रे)** जनकाय **(अनीकम्)** बलं सैन्यम् **(अस्य) (न)** निषेधे **(मिनत्)** हिंसत् **(जनासः)** विद्वांसः **(पुरः) (पश्यन्ति) (निहितम्)** स्थितम् **(अरतौ)** अरमणवेलायाम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा युवतिर्माता समुब्धं कुमारं गुहा बिभर्ति पित्रे न ददात्यस्यानीकं न मिनदरतौ निहितं जनासः पुरः पश्यन्ति तथैव यूयमाचरत॥१॥

**भावार्थः**-यदि कुमाराः कुमार्यश्च ब्रह्मचर्य्येण विद्यामधीत्य सन्तानोत्पत्तिं विज्ञाय पूर्णायां युवावस्थायां स्वयंवरं विवाहं कृत्वा सन्तानोत्पत्तिं कुर्वन्ति तर्हि ते सदाऽऽनन्दिता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(युवतिः)** पूर्ण अवस्था अर्थात् विवाह करने योग्य अवस्थावाली होकर जिस स्त्री ने विवाह किया ऐसी **(माता)** माता **(समुब्धम्)** तुल्यता से ढपे हुए **(कुमारम्)** कुमार को **(गुहा)** गर्भाशय में **(बिभर्ति)** धारण करती और **(पित्रे)** उस पुत्र के पिता के लिये **(न)** नहीं **(ददाति)** देती है **(अस्य)** इस पिता के **(अनीकम्)** समुदायबल को अर्थात् **(न)** जो नहीं **(मिनत्)** नाश करने वाला होता हुआ **(अरतौ)** रमणसमय से अन्यसमय में **(निहितम्)** स्थित उसको **(जनासः)** विद्वान् जन **(पुरः)** पहिले **(पश्यन्ति)** देखते हैं, वैसा ही आप लोग आचरण करो॥१॥

**भावार्थः**-जो कुमार और कुमारी ब्रह्मचर्य्य से विद्या पढ़के और सन्तान के उत्पन्न करने की रीति को जान के पूर्ण अवस्था अर्थात् विवाह करने के योग्य अवस्था होने पर स्वयंवर नामक विवाह को करके सन्तान की उत्पत्ति करते हैं तो वे सदा आनन्दित होते हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान।**

**पूर्वीर्हि गर्भः शरदो ववर्धापश्यं जातं यदसूत माता॥२॥**

**कम्। एतम्। त्वम्। युवते। कुमारम्। पेषी। बिभर्षि। महिषी। जजान। पूर्वीः। हि। गर्भः। शरदः। ववर्ध। अपश्यम्। जातम्। यत्। असूत। माता॥२॥**

**पदार्थः-(कम्)** **(एतम्)** कृतब्रह्मचर्य्यम् **(त्वम्)** **(युवते)** ब्रह्मचर्य्येणाधीतविद्ये पूर्णयुवावस्थे **(कुमारम्)** बालकम् **(पेषी)** पेष्याकारं गर्भाशयस्थं वीर्यं कृतवती **(बिभर्षि)** **(महिषी)** महारूपबलशीलादियोगेन पूजनीया **(जजान)** जायते **(पूर्वीः)** प्राचीनाः **(हि)** यतः **(गर्भः)** गर्भाशयं प्राप्तः **(शरदः)** शरदृतून् **(ववर्ध)** वर्धते **(अपश्यम्)** पश्यामि **(जातम्)** उत्पन्नम् **(यत्)** यम् **(असूत)** सूते **(माता)** जननी॥२॥

**अन्वयः**-हे युवते पेषी महिषी! त्वं कमेतं कुमारम् बिभर्षि माता यद्यमसूत जातमहमपश्यं स गर्भः पूर्वीः शरदो हि ववर्धातो जजान॥२॥

**भावार्थः**-हे कन्या! यूयं बाल्यावस्थायामाशेषोडशाद् वर्षात् प्रागापञ्चविंशाद् वर्षाच्च कुमारा विवाहं मा कुरुत। य एवं ब्रह्मचर्यानन्तरं विवाहं कुर्युस्तेषामपत्यानि रूपगुणान्वितानि चिरञ्जीवीनि शिष्टसम्मतानि जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे **(युवते)** ब्रह्मचर्य्य से पढ़ी विद्या जिसने ऐसी पूर्ण अवस्था वाली **(पेषी)** पेष्याकार अर्थात् डिब्बी के आकार करि गर्भाशय में वीर्य्य को स्थित करने वाली **(महिषी)** महान् रूप, बल और उत्तम स्वभाव आदि के योग से आदर करने योग्य **(त्वम्)** तू **(कम्)** किस **(एतम्)** किया है ब्रह्मचर्य्य जिसने ऐसे इस **(कुमारम्)** बालक का **(बिभर्षि)** पालन करती है और **(माता)** माता **(यत्)** जिसको **(असूत)** उत्पन्न करती तथा **(जातम्)** उत्पन्न हुए को मैं **(अपश्यम्)** देखता हूँ वह **(गर्भः)** गर्भाशय में प्राप्त **(पूर्वीः)** प्राचीन **(शरदः)** शरद् ऋतुओं तक निरन्तर **(हि)** जिससे **(ववर्ध)** बढ़ता है, उससे **(जजान)** उत्पन्न होता है॥२॥

**भावार्थः**-हे कन्याओ! तुम बाल्यावास्था में सोलह वर्ष के प्रथम और पच्चीस वर्ष के प्रथम कुमारजनो! विवाह को न करो। जो इस प्रकार से ब्रह्मचर्य्य के करने के अनन्तर विवाह को करें उनके सन्तान उत्तम रूप और गुणों से युक्त बहुत कालपर्य्यन्त जीवने वाले और शिष्ट जनों से उत्तम प्रकार मान पाने वाले होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम्।**

**ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः॥ ३॥**

**हिरण्यऽदन्तम्। शुचिऽवर्णम्। आरात्। क्षेत्रात्। अपश्यम्। आयुधा। मिमानम्। ददानः। अस्मै। अमृतम्। विपृक्वत्। किम्। माम्। अनिन्द्राः। कृणवन्। अनुक्थाः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**हिरण्यदन्तम्**) हिरण्येन सुवर्णेन तेजसा वा तुल्या दन्ता यस्य तम् (**शुचिवर्णम्**) पवित्रस्वरूपमतिसुन्दरं वा (**आरात्**) समीपात् (**क्षेत्रात्**) संस्कृताया भार्यायाः (**अपश्यम्**) पश्येयम् (**आयुधा**) आयुधानि (**मिमानम्**) धर्त्तारम् (**ददानः**) दाता (**अस्मै**) (**अमृतम्**) मोक्षसुखम् (**विपृक्वत्**) विशेषेण सम्बद्धम् (**किम्**) (**माम्**) (**अनिन्द्राः**) अनैश्वर्य्याः (**कृणवन्**) कुर्युः (**अनुक्थाः**) अविद्वांसः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽहं कृतब्रह्मचर्य्ययोः क्षेत्राज्जातं हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमायुधा मिमानमारादपश्यमस्मै विपृक्वदमृतं ददानोऽहमस्मि तं मामनिन्द्रा अनुक्थाः किं कृणवन्॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! पूर्णब्रह्मचर्य्यशिक्षाविद्यायुवावस्थापरस्परप्रीतिभिर्विना सन्तानानां विवाहं मा कुर्वन्त्वेवं कुर्वाणाः सर्वेऽत्युत्तमान्यपत्यानि प्राप्यातीवानन्दं लभन्ते य एवं जायन्ते तत्समीपे दारिद्र्यं मूर्खता दरिद्रा अविद्वांसो वा जनाः किमपि विघ्नं कर्त्तुं न शक्नुवन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मैं, किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री पुरुषों में से (**क्षेत्रात्**) संस्कार की हुई भार्या स्त्री से उत्पन्न हुए (**हिरण्यदन्तम्**) सुवर्ण वा तेज के तुल्य दांत वाले (**शुचिवर्णम्**) पवित्र स्वरूपयुक्त अतिसुन्दर और (**आयुधा**) शस्त्र और अस्त्रों को (**मिमानम्**) धारण करने वाले को (**आरात्**) समीप से (**अपश्यम्**) देखूं और (**अस्मै**) इसके लिये (**विपृक्वत्**) विशेष करके सम्बद्ध (**अमृतम्**) मोक्षसुख को (**ददानः**) देता हुआ मैं हूँ उस (**माम्**) मुझ को (**अनिन्द्राः**) ऐश्वर्य्य से रहित (**अनुक्थाः**) अविद्वान् जन (**किम्**) क्या (**कृणवन्**) करें॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पूर्ण शास्त्र नियत ब्रह्मचर्य्य, शिक्षा, विद्या, युवावस्था और परस्पर प्रीति के बिना सन्तानों का विवाह न करें। इस प्रकार करते हुए सब जन अति उत्तम सन्तानों को प्राप्त होकर अति ही आनन्द को प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार प्रसिद्ध होते हैं, उनके समीप दारिद्र्य मूर्खता वा दरिद्री और अविद्वान् जन कुछ भी विघ्न नहीं कर सकते हैं॥ ३॥

**पुनर्विवाहसम्बन्धिसन्तानविषयमाह॥**

फिर विवाहसम्बन्धी सन्तानविषय को कहते हैं॥

**क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम्।**

**न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति॥ ४॥**

**क्षेत्रात्। अपश्यम्। सनुतरिति। चरन्तम्। सुऽमत्। यूथम्। न। पुरु। शोभमानम्। न। ताः। अगृभ्रन्। अजनिष्ट। हि। सः। पलिक्नीः। इत्। युवतयः। भवन्ति॥४॥**

**पदार्थः**-(**क्षेत्रात्**) संस्कृताया भार्यायाः (**अपश्यम्**) पश्यामि (**सनुतः**) सनातनात् (**चरन्तम्**) व्यवहरन्तम् (**सुमत्**) स्वयमेव (**यूथम्**) सेनासमूहम् (**न**) इव (**पुरु**) बहु (**शोभमानम्**) (**न**) (**ताः**) (**अगृभ्रन्**) गृह्णन्ति (**अजनिष्ट**) जायते (**हि**) (**सः**) (**पलिक्नीः**) श्वेतकेशाः (**इत्**) एव (**युवतयः**) (**भवन्ति**)॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यहं यं क्षेत्राज्जातं चरन्तं सुमत् पुरु शोभमानं न यूथं न बलिष्ठं सनुतोऽपश्यं स सुख्यजनिष्ट या ब्रह्मचारिण्यः कन्याः सुनियमाः सत्यो युवावस्थायाः प्राक् पतीनगृभ्रँस्ता हि युवतयः पुत्रपौत्रातिसुखयुक्ता इत् पलिक्नीर्भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि भवन्तः स्वसन्तानान् दीर्घं ब्रह्मचर्य्यं कारयेयुस्तर्हि ते धर्मिष्ठाः प्रज्ञायुक्ताश्चिरञ्जीविनः सन्तो युष्मभ्यमतीव सुखं प्रयच्छेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मैं जिस (**क्षेत्रात्**) संस्कार की हुई स्त्री से उत्पन्न (**चरन्तम्**) व्यवहार करते हुए (**सुमत्**) आप ही (**पुरु**) बहुत (**शोभमानम्**) शोभायुक्त [के] (**न**) समान वा (**यूथम्**) सेनासमूह के (**न**) समान बलिष्ठ को (**सनुतः**) सनातन से (**अपश्यम्**) देखता हूं (**सः**) वह सुखी (**अजनिष्ट**) होता है और जो ब्रह्मचारिणी कन्यायें उत्तम नियमों वाली हुई युवावस्था के प्रथम पतियों को (**अगृभ्रन्**) ग्रहण करती हैं (**ताः**) वे (**हि**) ही (**युवतयः**) युवति हुई पुत्र पौत्रों के अतिसुख के युक्त (**इत्**) और (**पलिक्नीः**) श्वेत केशों वाली अर्थात् वृद्धावस्थायुक्त (**भवन्ति**) होती हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! यदि आप लोग अपने सन्तानों को अतिकाल पर्यन्त ब्रह्मचर्य्य करावें तो वे धर्मिष्ठ बुद्धियुक्त और चिरञ्जीवी हुए आप लोगों के लिये अतीव सुख देवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर्न येषां गोपा अरणश्चिदास।**

**य ईं जगृभुरव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश्चिकित्वान्॥५॥**

**के। मे। मर्यकम्। वि। यवन्त। गोभिः। न। येषाम्। गोपाः। अरणः। चित्। आस। ये। ईम्। जगृभुः। अव। ते। सृजन्तु। आ। अजाति। पश्वः। उप। नः। चिकित्वान्॥५॥**

**पदार्थः**-(**के**) (**मे**) मम (**मर्यकम्**) मर्त्यम् (**वि**) (**यवन्त**) वियोजयेयुः (**गोभिः**) (**न**) इव (**येषाम्**) (**गोपाः**) गवां पालकाः (**अरणः**) सङ्गन्ता (**चित्**) अपि (**आस**) भवति (**ये**) (**ईम्**) विद्याम्

**(जगृभुः)** गृह्णीयुः **(अव)** **(ते)** **(सृजन्तु)** **(आ)** **(अजाति)** समन्ताज्जातिर्जननं यस्मिन् कुले तत्। **(पश्वः)** पशून् **(उप)** **(नः)** अस्माकम् **(चिकित्वान्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! के गोपा गोभिर्न मे मर्यकं वि यवन्त येषां स चिदरण आस ये पश्वो जगृभुस्त आजात्युप सृजन्तु य ईं जगृभुस्ते दुःखमव सृजन्तु यश्चिकित्वानुपसृजतु सो नोऽस्माकं हितैषी वर्त्तत इति विज्ञापयत॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोमालङ्कारः। मनुष्यैर्विदुषः प्रतीदं तावत्प्रष्टव्यं केऽस्माकमल्पप्रज्ञानान् सन्तानान् विशालधियः कर्त्तुं शक्नुयुस्त इदं समादध्युर्य आप्तास्त एवैतत्कर्त्तुं शक्नुयुर्नेतरे॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(के)** कौन **(गोपाः)** गौओं के पालन करने वाले **(गोभिः)** गौओं के **(न)** सदृश **(मे)** मेरे **(मर्यकम्)** अल्प मनुष्य को **(वि, यवन्त)** दूर करें और **(येषाम्)** जिनका वह **(चित्)** निश्चित **(अरणः)** मिलने वाला **(आस)** होता है और **(ये)** जो **(पश्वः)** पशुओं को **(जगृभुः)** ग्रहण करें **(ते)** वे **(आ, अजाति)** अच्छे प्रकार सन्तानों की उत्पत्ति जिस कुल में उसको **(उप, सृजन्तु)** उत्पन्न करें और जो **(ईम्)** विद्या ग्रहण करें, वे दुःख को **(अव)** दूर करें और जो **(चिकित्वान्)** बुद्धिमान् उत्पन्न करता है वह **(नः)** हम लोगों का हितैषी है, यह समझाओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के प्रति यह पूछें कौन हम लोगों के थोड़े ज्ञान वाले सन्तानों को उत्तम बुद्धि वाले कर सकें, वे विद्वान् यह उत्तर देवें कि जो यथार्थवादी हों, वे ही उक्त काम को कर सकें, अन्य जन नहीं॥५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वसां राजानं वसतिं जनानामरातयो नि दधुर्मर्त्येषु।**

**ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु॥६॥१४॥**

**वसाम्। राजानम्। वसतिम्। जनानाम्। अरातयः। नि। दधुः। मर्त्येषु। ब्रह्माणि। अत्रेः। अव। तम्। सृजन्तु। निन्दितारः। निन्द्यासः। भवन्तु॥६॥**

**पदार्थः**-**(वसाम्)** वसतां प्राणिनाम् **(राजानम्)** न्यायकारिणम् **(वसतिम्)** निवासम् **(जनानाम्)** सज्जनानाम् **(अरातयः)** अन्यायेनादातारः शत्रवः **(नि)** **(दधुः)** दधीरन् **(मर्त्येषु)** **(ब्रह्माणि)** महान्ति धनानि **(अत्रेः)** अविद्यमानत्रिविधदुःखस्य **(अव)** निषेधे **(तम्)** **(सृजन्तु)** निःसारयन्तु **(निन्दितारः)** गुणेषु दोषान् दोषेषु गुणान् स्थापयन्तः **(निन्द्यासः)** अधर्माचरणेन निन्दितुं योग्याः **(भवन्तु)**॥६॥

**अन्वयः**-यो वसां जनानां राजानं वसतिं जनयतु तं विद्वांसोऽव सृजन्तु ये निन्दितारो निन्द्यासोऽरातयो मर्त्येषु ब्रह्माणि नि दधुस्तेऽत्रेरपि दूरस्था भवन्तु॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये कुत्सितकर्माचारा: परद्रव्यापहर्त्तारो द्वेष्टार: स्युस्तान् दण्डयित्वा निर्जने देशे बध्नन्तु। ये च स्तावका धर्मिष्ठा: स्युस्तान् समीपे निवास्य सदा सत्कुर्वन्तु॥६॥

**पदार्थ:**-जो **(वसाम्)** वसते हुए प्राणियों और **(जनानाम्)** सज्जन पुरुषों के **(राजानम्)** न्याय करने वाले को और **(वसतिम्)** निवास को प्रकट करे। **(तम्)** उसको विद्वान् जन **(अव, सृजन्तु)** न निकाल दे और जो **(निन्दितार:)** गुणों में दोषों और दोषों में गुणों का स्थापन करने वाले **(निन्द्यास:)** अधर्म के आचरण से निन्दा करने योग्य और **(अरातय:)** अन्याय से ग्रहण करने वाले शत्रुजन **(मर्त्येषु)** मरणधर्म्मा मनुष्यों में **(ब्रह्माणि)** बड़े धनों को **(नि, दधु:)** स्थापन करें वे **(अत्रि:)** तीन प्रकार के दु:ख से रहित के भी दूर स्थित **(भवन्तु)** हों॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो निकृष्ट कर्म्म करने और दूसरे के द्रव्य के हरने वाले द्वेषकर्त्ता हों, उनको दण्ड देकर निर्जन देश में बांधो और जो स्तुति करने वाले धर्म्मिष्ठ होवें, उनको समीप में निवास देकर सदा सत्कार करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुन॑श्चि॒च्छेपं॒ निदि॑तं स॒हस्रा॒द् यूपा॑दमुञ्चो॒ अश॑मिष्ट॒ हि ष:।**

**ए॒वास्मद॑ग्ने॒ वि मु॑मुग्धि॒ पाशा॒न् होत॑श्चिकित्व इ॒ह तू नि॒षद्य॑॥७॥**

**शुन॑:। चि॒त्। शेप॑म्। निऽदि॑तम्। स॒हस्रा॑त्। यूपा॑त्। अ॒मु॒ञ्च॒:। अश॑मिष्ट। हि। स:। ए॒व। अ॒स्मत्। अ॒ग्ने॒। वि। मु॒मु॒ग्धि॒। पाशा॑न्। हो॒त॒रिति॑। चि॒कि॒त्व॒:। इ॒ह। तु। नि॒ऽसद्य॑॥७॥**

**पदार्थ:**-**(शुन:शेपम्)** सुखस्य प्रापकमिन्द्रियारामम् **(चित्)** अपि **(निदितम्)** निन्दितम् **(सहस्रात्)** असङ्ख्यात् **(यूपात्)** मिश्रितादमिश्रिताद् बन्धनात् **(अमुञ्च:)** मुच्या: **(अशमिष्ट)** शाम्यति **(हि)** यत: **(स:)** **(एव)** **(अस्मत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(वि)** **(मुमुग्धि)** विमोचय **(पाशान्)** बन्धनानि **(होत:)** **(चिकित्व:)** बुद्धिमन् **(इह)** अस्मिन् धर्म्ये व्यवहारे **(तू)** पुन:। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घ:। **(निषद्य)** निषण्णो भूत्वा॥७॥

**अन्वय:**-हे अग्ने विद्वँस्त्वं सहस्राद् यूपान्निदितं शुन:शेपं चिदमुञ्चो हि यत: सोऽशमिष्टैव। हे होतश्चिकित्व! इह निषद्याऽस्मत् पाशाँस्तू वि मुमुग्धि॥७॥

**भावार्थ:**-विदुषामिदमेवावश्यकं कृत्यमस्ति यत्सर्वान् मनुष्यानविद्याऽधर्म्माचरणात् पृथक्कृत्य विदुषो धार्मिकान् सम्पाद्य तेषां दु:खबन्धनान्मोचनं सततं कर्त्तव्यमिति॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(सहस्रात्)** असंख्य **(यूपात्)** मिले वा न मिले हुए बन्धन से **(निदितम्)** निन्दित **(शुन:शेपम्)** सुख के प्राप्त कराने और इन्द्रियाराम अर्थात् इन्द्रियों में रमण रखने वाले को **(चित्)** भी **(अमुञ्च:)** त्याग करो **(हि)** जिससे **(स:)** वह **(अशमिष्ट)** शान्त होता **(एव)** ही है।

हे **(होत:)** हवन करने वाले **(चिकित्व)** बुद्धिमान्! **(इह)** यहाँ युक्तधर्म्म सम्बन्धी व्यवहार में **(निषद्य)** प्रवृत्त होकर **(अस्मत्)** हम लोगों से **(पाशान्)** संसाररूप बन्धनों को **(तू)** फिर **(वि, मुमुग्धि)** काटिये॥७॥

**भावार्थ:**-विद्वानों का यही आवश्यक कर्म्म है, जो सब मनुष्यों को अविद्या और अधर्म्माचरण से अलग कर विद्वान् धार्मिक बना उनका दु:खबन्धन छुड़ाना निरन्तर करना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हृणीयमानो अप हि मदैये: प्र मे देवानां व्रतपा उवाच।**

**इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्॥८॥**

**हृणीयमान:। अप। हि। मत्। ऐयै:। प्र। मे। देवानाम्। व्रतऽपा:। उवाच। इन्द्र:। विद्वान्। अनु। हि। त्वा। चचक्ष। तेन। अहम्। अग्ने। अनुऽशिष्ट:। आ। अगाम्॥८॥**

**पदार्थ:**-**(हृणीयमान:)** क्रोधं कुर्वन् **(अप)** **(हि)** खलु **(मत्)** **(ऐये:)** गच्छे: **(प्र)** **(मे)** मह्यम् **(देवानाम्)** विदुषाम् **(व्रतपा:)** सत्यरक्षक: **(उवाच)** उच्यात् **(इन्द्र:)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त: **(विद्वान्)** **(अनु)** **(हि)** यत: **(त्वा)** त्वाम् **(चचक्ष)** कथयेत् **(तेन)** **(अहम्)** **(अग्ने)** त्रिदोषदाहक **(अनुशिष्ट:)** प्राप्तशिक्ष: **(आ)** **(अगाम्)** प्राप्नुयाम्॥८॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! हृणीयमानस्त्वं हि मदपैयेर्यो हीन्द्रो विद्वाँस्त्वानु चचक्ष यो मे देवानां व्रतपा: सन् सत्यं प्रोवाच तेनाऽनुशिष्टोऽहं सत्यं बोधमागाम्॥८॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या दुष्टगुणकर्मस्वभावा: स्युस्ते दूरं रक्षणीया:। ये च धर्मिष्ठा: सत्यमुपदिशेयुस्तत्सङ्गेन शिष्टा भूत्वा सुखमाप्नुत॥८॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** तीन दोषों के नाश करनेवाले! **(हृणीयमान:)** क्रोध करते हुए आप **(हि)** ही **(मत्)** मेरे समीप से **(अप, ऐये:)** जाइये और जो **(हि)** निश्चय **(इन्द्र:)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त **(विद्वान्)** विद्वान् **(त्वा)** आपको **(अनु, चचक्ष)** अनुकूल कहे और जो **(मे)** मेरे लिये **(देवानाम्)** विद्वानों के बीच **(व्रतपा:)** सत्य की रक्षा करने वाला हुआ सत्य को **(प्र, उवाच)** कहे **(तेन)** इससे **(अनुशिष्ट:)** शिक्षा को प्राप्त **(अहम्)** मैं सत्यबोध को **(आ, अगाम्)** प्राप्त होऊं॥८॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य दुष्ट गुण, कर्म, स्वभाव वाले हों वे दूर रखने योग्य हैं और जो धर्मिष्ठ सत्य का उपदेश करें, उनके सङ्ग से शिष्ट अर्थात् श्रेष्ठ होके सुख को प्राप्त होवें॥८॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।**

**प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे॥ ९॥**

**वि। ज्योतिषा। बृहता। भाति। अग्निः। आविः। विश्वानि। कृणुते। महिऽत्वा। प्र। अदेवीः। मायाः। सहते। दुःऽएवाः। शिशीते। शृङ्गे इति। रक्षसे। विऽनिक्षे॥ ९॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**बृहता**) महता (**भाति**) प्रकाशते (**अग्निः**) सूर्यादिरूपेण पावकः (**आविः**) प्राकट्ये (**विश्वानि**) सर्वाणि वस्तूनि (**कृणुते**) (**महित्वा**) महत्त्वेन (**प्र**) (**अदेवीः**) अशुद्धाः (**मायाः**) छलादियुक्ता प्रज्ञाः (**सहते**) (**दुरेवाः**) दुष्टमेवः प्रापणं कर्म यासां ताः (**शिशीते**) तेजते (**शृङ्गे**) (**रक्षसे**) दुष्टानां विनाशय (**विनिक्षे**) विनाशाय॥ ९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाग्निर्बृहता ज्योतिषा महित्वा विश्वान्याविष्कृणुते वि भाति प्र सहते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे शिशीते तथा दुरेवा अदेवीर्मायाः सर्वतो निवारयत॥ ९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्योऽन्धकारं निवार्य प्रकाशं जनयित्वा भयं निवारयति तथैव विद्वांसो गाढमज्ञानं निवार्य विद्यार्कं जनयित्वा सर्वेषामात्मनः प्रकाशयन्तु॥ ९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**अग्निः**) सूर्य्य आदि रूप से अग्नि (**बृहता**) बड़े (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**महित्वा**) बड़प्पन से (**विश्वानि**) सम्पूर्ण वस्तुओं को (**आविः**) प्रकट (**कृणुते**) करता है (**वि**) विशेष करके (**भाति**) प्रकाशित होता है और (**प्र**) अत्यन्त (**सहते**) सहन करता है (**शृङ्गे**) शृङ्ग के निमित्त (**रक्षसे**) दुष्टों के विनाश के लिये (**विनिक्षे**) वा अन्य विनाश के लिये (**शिशीते**) प्रतापयुक्त होता है, वैसे (**दुरेवाः**) दुष्ट प्राप्त कराने रूप कर्म वाली (**अदेवीः**) अशुद्ध (**मायाः**) छल आदि से युक्त बुद्धियों को सब प्रकार से वारण कीजिये॥ ९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य अन्धकार का वारण कर और प्रकाश को उत्पन्न करके भय का निवारण करता है, वैसे ही विद्वान् जन घोर अज्ञान का निवारण करके विद्यारूप सूर्य को उत्पन्न करके सब के आत्माओं को प्रकाशित करें॥ ९॥

**अथ धनुर्वेददृष्टान्तेनाविद्यानिवारणमाह॥**

अब धनुर्वेद के दृष्टान्त से अविद्यानिवारण को कहते हैं॥

**उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेऽस्तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ।**

**मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः॥ १०॥**

**उत। स्वानासः। दिवि। सन्तु। अग्नेः। तिग्मऽआयुधाः। रक्षसे। हन्तवै। ऊँ इति। मदे। चित्। अस्य। प्र। रुजन्ति। भामाः। न। वरन्ते। परिऽबाधः। अदेवीः॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**स्वानासः**) उपदेशकाः (**दिवि**) विद्याप्रकाशे (**सन्तु**) (**अग्नेः**) पावकात् (**तिग्मायुधाः**) तीक्ष्णायुधाः (**रक्षसे**) दुष्टविनाशय (**हन्तवै**) हन्तुम् (**उ**) (**मदे**) आनन्दाय (**चित्**) (**अस्य**)

**(प्र)** **(रुजन्ति)** आभञ्जन्ति **(भामाः)** क्रोधाः **(न)** इव **(वरन्ते)** स्वीकुर्वन्ति **(परिबाधः)** सर्वतो बाधनानि **(अदेवीः)** अप्रमदाः क्रियाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसोऽग्नेऽस्तिग्मायुधाः स्वानासो दिवि वर्त्तमाना भवन्तो रक्षसे हन्तवै समर्थाः सन्तु उतापि मदे प्रवृत्ताः सन्तु चिद्वस्य भामा न परिबाधोऽदेवीः प्र रुजन्ति वरन्ते ता निवारयन्तु॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं यथाऽधीतधनुर्वेदाः शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला आग्नेयास्त्रादिभिश्शत्रून् निवार्य विजयं प्रकाशयन्ति तथैव तीव्रविद्याध्यापनोपदेशाभ्यामविद्याप्रमादान्निवार्य विद्याशुभगुणान् प्रकाशयत॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(अग्नेः)** अग्नि से **(तिग्मायुधाः)** तीक्ष्ण आयुधयुक्त **(स्वानासः)** उपदेश करने वाले **(दिवि)** विद्या के प्रकाश में वर्त्तमान **(रक्षसे)** दुष्टों के विनाश करने के लिये **(हन्तवै)** हनने को समर्थ **(सन्तु)** हूजिये और **(उत)** भी **(मदे)** आनन्द के लिये प्रवृत्त हूजिये **(चित्, उ)** और भी **(अस्य)** इसके **(भामाः)** क्रोधों के **(न)** तुल्य **(परिबाधः)** सब ओर से बन्धनों को **(अदेवीः)** प्रमादरहित क्रियायें **(प्र, रुजन्ति)** सब प्रकार भङ्ग करती और **(वरन्ते)** स्वीकार करती हैं, उनका निवारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग जैसे धनुर्वेद को पढ़े हुए शस्त्र और अस्त्रों के प्रक्षेप अर्थात् चलाने रूप युद्ध में चतुर जन अग्निसम्बन्धी अस्त्रादिकों से शत्रुओं का निवारण करके विजय को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही अत्यन्त विद्या के पढ़ाने और उपदेश करने से अविद्याकृत प्रमादों का निवारण करके विद्याकृत श्रेष्ठ गुणों का प्रकाश करो॥१०॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।**

**यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम॥११॥**

**एतम्। ते। स्तोमम्। तुविऽजात। विप्रः। रथम्। न। धीरः। सुऽअपाः। अतक्षम्। यदि। इत्। अग्ने। प्रति। त्वम्। देव। हर्याः। स्वःऽवतीः। अपः। एना। जयेम॥११॥**

**पदार्थः**-**(एतम्)** शुभगुणप्रकाशकम् **(ते)** तव **(स्तोमम्)** प्रशंसितव्यवहारम् **(तुविजात)** बहुषु विद्वत्सु प्रसिद्ध **(विप्रः)** मेधावी **(रथम्)** रमणीययानम् **(न)** इव **(धीरः)** क्षमादिगुणान्वितो ध्यानकृत् **(स्वपाः)** सुष्ठुकर्मा **(अतक्षम्)** निर्ममे **(यदि)** **(इत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(प्रति)** **(त्वम्)** **(देव)** सकलविद्याप्रदातः **(हर्याः)** कमनीयाः **(स्वर्वतीः)** प्रशस्तसुखयुक्ताः **(अपः)** प्राणान् **(एना)** एनेन **(जयेम)**॥११॥

**अन्वयः**-हे तुविजाताग्ने! यथाहं ते स्वपा धीरो विप्रो नैतं रथमतक्षं तथा त्वमाचर। हे देव! यदि त्वं रथं रचयेस्तर्हीत्स्तोमं प्राप्नुयाः। यथा वयमेना हर्याः स्वर्वतीरपः प्रति जयेम तथा त्वमेता जय॥११॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विपश्चितो धर्म्याः कामनाः कृत्वा जयिनो भवन्ति तथैव यूयमप्याचरत॥११॥

**पदार्थः**-हे **(तुविजात)** बहुत विद्वानों में प्रसिद्ध **(अग्ने)** विद्वन्! जैसे मैं **(ते)** आपका **(स्वपाः)** उत्तम कर्म्म करने वाला **(धीरः)** क्षमा आदि गुणों से युक्त और ध्यान करने वाला **(विप्रः)** बुद्धिमान् जन के **(न)** सदृश **(एतम्)** इस श्रेष्ठ गुणों के प्रकाशक **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(अतक्षम्)** बनाता हूं, वैसे **(त्वम्)** आचारण कीजिये और हे **(देव)** सम्पूर्ण विद्या के देने वाले! **(यदि)** जो आप वाहन को रचिये तो **(इत्)** ही **(स्तोमम्)** प्रशंसित व्यवहार जिसमें ऐसे सुख को प्राप्त हूजिये और जैसे हम लोग **(एना)** इससे **(हर्याः)** कामना करने योग्य अर्थात् सुन्दर **(स्वर्वतीः)** अच्छे सुखों से युक्त **(अपः)** प्राणों से युक्त **(प्रति, जयेम)** प्रति जीतें, वैसे आप इनको जीतिये॥११॥

**भावार्थ**–इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन धर्म्मयुक्त कामनाओं को करके विजयी होते हैं, वैसे ही आप लोग भी आचरण करो॥११॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**तुविग्रीवो वृषभो वावृधानोऽशत्र्वर्यः समजाति वेदः।**

**इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म**

**यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसत्॥१२॥१५॥**

तुविऽग्रीवः। वृषभः। वावृधानः। अशत्रु। अर्यः। सम्। अजाति। वेदः। इति। इमम्। अग्निम्। अमृताः। अवोचन्। बर्हिष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्। हविष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्॥१२॥

**पदार्थः**-**(तुविग्रीवः)** बहुबलयुक्ता सुन्दरी वा ग्रीवा यस्य सः **(वृषभः)** अतीव बलिष्ठः **(वावृधानः)** भृशं वर्धमानः। अत्र **तुजादीनामिति** दीर्घः। **(अशत्रु)** अविद्यमानाः शत्रवो यस्य तम् **(अर्य्यः)** स्वामी **(सम्)** **(अजाति)** प्राप्नुयात् **(वेदः)** धनम् **(इति)** अनेन प्रकारेण **(इमम्)** **(अग्निम्)** विद्युतम् **(अमृताः)** प्राप्तात्मविज्ञानाः **(अवोचन्)** वदन्तु **(बर्हिष्मते)** प्रवृद्धविज्ञानाय **(मनवे)** मनुष्याय **(शर्म)** सुखं गृहं वा **(यंसत्)** दद्यात् **(हविष्मते)** बहूत्तमपदार्थयुक्ताय **(मनवे)** मननशीलाय **(शर्म)** सुखम् **(यंसत्)** प्रदद्यात्॥१२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा तुविग्रावो वावृधानो वृषभोऽर्य्योऽशत्रु वेदः समजाति बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसदितीममग्निममृता अवोचन्॥१२॥

**भावार्थः**-सर्वे विद्वांसो हि सर्वेभ्यो विद्यार्थिभ्यः सुशिक्षां दत्त्वा शत्रुतां त्याजयित्वा सर्वथा सुखं प्राप्नुवन्तु॥१२॥

अत्र युवावस्थाविवाहविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वितीयं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(तुविग्रीवः)** बहुत बल वा सुन्दरी ग्रीवायुक्त **(वावृधानः)** अत्यन्त बढ़ता हुआ **(वृषभः)** अतीव बलवान् **(अर्य्यः)** स्वामी **(अशत्रु)** शत्रुओं से रहित **(वेदः)** धन को **(सम्, अजाति)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवे और **(बर्हिष्मते)** ज्ञान की वृद्धि से युक्त **(मनवे)** मनुष्य के लिये **(शर्म)** सुख वा गृह को **(यंसत्)** देवे और **(हविष्मते)** बहुत उत्तम पदार्थों से युक्त **(मनवे)** विचारशील पुरुष के लिये **(शर्म)** सुख को **(यंसत्)** देवे **(इति)** इस प्रकार से **(इमम्)** इस **(अग्निम्)** बिजुली को **(अमृताः)** आत्मज्ञान जिनकी प्राप्त वे **(अवोचन्)** कहें॥१२॥

**भावार्थः**-सब विद्वान् जन ही सब विद्यार्थियों के लिये उत्तम शिक्षा देकर शत्रुता को छुड़ा के सब प्रकार के सुख को प्राप्त होवें॥१२॥

इस सूक्त में युवावस्था में विवाह और विद्वान् के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह द्वितीय सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य तृतीयस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषि:। अग्निर्देवता। १ निचृत्पङ्क्ति:। ११ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्द:। पञ्चम: स्वर:। २, ३, ५, ९, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, १० त्रिष्टुप्। ६, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:॥**

***अथ राजकर्तव्यकर्म्माह॥***

अब बारह ऋचा वाले तीसरे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा के कर्त्तव्य को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने॒ वरु॑णो॒ जाय॑से॒ यत्त्वं मि॒त्रो भ॑वसि॒ यत्समि॑द्धः।**

**त्वे विश्वे॑ सहसस्पुत्र दे॒वास्त्वमिन्द्रो॑ दा॒शुषे॒ मर्त्या॑य॥ १॥**

त्वम्। अ॒ग्ने॒। वरु॑णः। जाय॑से। यत्। त्वम्। मि॒त्रः। भ॒व॒सि॒। यत्। सम्ऽइ॑द्धः। त्वे इति॑। विश्वे॑। स॒ह॒सः॒। पु॒त्र॒। दे॒वाः। त्वम्। इन्द्रः॑। दा॒शुषे॑। मर्त्या॑य॥ १॥

**पदार्थ:-(त्वम्)** **(अग्ने)** कृतविद्याभ्यास **(वरुण:)** दुष्टानां बन्धकृच्छ्रेष्ठ: **(जायसे)** **(यत्)** यस्य **(त्वम्)** **(मित्र:)** सखा **(भवसि)** **(यत्)** येन **(समिद्ध:)** प्रदीप्त: **(त्वे)** त्वयि **(विश्वे)** सर्वे **(सहस:)** **(पुत्र:)** बलस्य पालक **(देवा:)** विद्वांस: **(त्वम्)** **(इन्द्र:)** ऐश्वर्यदाता **(दाशुषे)** दातुं योग्याय **(मर्त्याय)**॥१॥

**अन्वय:**-हे सहसस्पुत्राग्ने! यत्त्वं मित्रो यत्समिद्धो भवसि यस्त्वं वरुणो जायसे यस्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय धनं ददासि तस्मिँस्त्वे विश्वे देवा: प्रसन्ना जायन्ते॥१॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! यस्य त्वं सखा यस्माद्विरुद्ध उदासीनो वा भवसि स त्वया सह सदैव मित्रतां रक्षेत् त्वमपि॥१॥

**पदार्थ:**-हे **(सहस:)** बल के **(पुत्र)** पालन करने वाले **(अग्ने)** विद्या का अभ्यास किये हुए विद्वान्! **(यत्)** जिसके **(त्वम्)** आप **(मित्र:)** सखा और **(यत्)** जिससे **(समिद्ध:)** प्रकाशयुक्त **(भवसि)** होते हो और जो **(त्वम्)** आप **(वरुण:)** दुष्टों के बन्ध करने वाले श्रेष्ठ **(जायसे)** होते हो और जो **(त्वम्)** आप **(इन्द्र:)** ऐश्वर्य्य के दाता **(दाशुषे)** देने योग्य **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये धन देते हो उन **(त्वे)** आप में **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवा:)** विद्वान् जन प्रसन्न होते हैं॥१॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जिसके आप मित्र वा जिससे आप विरुद्ध और उदासीन होते हैं, वह आपके साथ सदैव मित्रता रक्खे और आप भी उसके साथ रक्खें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वम॑र्य॒मा भ॑वसि॒ यत्क॒नीनां॒ नाम॑ स्वधाव॒न् गुह्यं॑ बिभर्षि।**

**अ॒ञ्जन्ति॑ मि॒त्रं सुधि॑तं॒ न गोभि॒र्यद्दम्प॑ती॒ सम॑नसा कृ॒णोषि॑॥२॥**

**त्वम्। अ॒र्य॒मा। भ॒व॒सि॒। यत्। क॒नीना॑म्। नाम॑। स्व॒धा॒ऽव॒न्। गुह्य॑म्। बि॒भ॒र्षि॒। अ॒ञ्जन्ति॑। मि॒त्रम्। सु॒ऽधि॑तम्। न। गोभिः॑। यत्। दम्प॑ती॒ इति॒ दम्ऽप॑ती। सऽम॑नसा। कृ॒णोषि॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अर्यमा**) न्यायाधीशः (**भवसि**) (**यत्**) यस्मात् (**कनीनाम्**) कामयमानानाम् (**नाम**) (**स्वधावन्**) प्रशस्तान्नयुक्त (**गुह्यम्**) रहस्यम् (**बिभर्षि**) (**अञ्जन्ति**) व्यक्तीकुर्वन्ति (**मित्रम्**) सखायम् (**सुधितम्**) सुष्ठुप्रसन्नम् (**न**) इव (**गोभिः**) वागादिभिः (**यत्**) यः (**दम्पती**) विवाहितौ स्त्रीपुरुषौ (**समनसा**) समानमनस्कौ दृढप्रीती (**कृणोषि**)॥२॥

**अन्वयः**-हे स्वधावन् राजन्! यत् त्वं कनीनामर्यमा भवसि गुह्यं नाम बिभर्षि यद्दम्पती समनसा कृणोषि तं त्वां विश्वे देवा गोभिः सुधितं मित्रं नाञ्जन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एव राजा श्रेष्ठोऽस्ति यः प्रजानां यथार्थं न्याय विधत्ते यथा मित्रं मित्रं प्रीणाति तथैव राजा प्रजाः प्रीणीत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**स्वधावन्**) अच्छे अन्न से युक्त राजन्! (**यत्**) जिससे (**त्वम्**) आप (**कनीनाम्**) कामना करने वालों के (**अर्यमा**) न्यायाधीश (**भवसि**) होते हो और (**गुह्यम्**) गुप्त (**नाम**) नाम को (**बिभर्षि**) धारण करते हो और (**यत्**) जो (**दम्पती**) विवाहित स्त्री पुरुषों को (**समनसा**) तुल्य मन और दृढ़ प्रीतियुक्त (**कृणोषि**) करते हो उन आप को सम्पूर्ण विद्वान् जन (**गोभिः**) वाणी आदि पदार्थों से (**सुधितम्**) सुन्दर प्रसन्न (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) सदृश (**अञ्जन्ति**) प्रकट करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही राजा श्रेष्ठ है, जो प्रजाओं का यथार्थ न्याय करता है और जैसे मित्र मित्र को प्रसन्न करता है, वैसे ही राजा प्रजाओं को प्रसन्न करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र मे कहते हैं॥

**तव॑ श्रि॒ये म॒रुतो॑ मर्जयन्त॒ रुद्र॒ यत्ते॒ जनि॑म॒ चारु॑ चि॒त्रम्।**

**प॒दं यद्विष्णो॑रुप॒मं नि॒धायि॒ तेन॑ पासि॒ गुह्यं॒ नाम॒ गोना॑म्॥३॥**

**तव॑। श्रि॒ये। म॒रुतः॑। म॒र्ज॒य॒न्त॒। रुद्र॑। यत्। ते॒। जनि॑म। चारु॑। चि॒त्रम्। प॒दम्। यत्। विष्णोः॑। उ॒प॒ऽमम्। नि॒ऽधायि॑। तेन॑। पा॒सि॒। गुह्य॑म्। नाम॑। गोना॑म्॥३॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**श्रिये**) लक्ष्म्यै (**मरुतः**) मनुष्याः (**मर्जयन्त**) शोधयन्तु (**रुद्र**) दुष्टानां रोदयितः (**यत्**) (**ते**) तव (**जनिम**) जन्म (**चारु**) सुन्दरम् (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**पदम्**) प्राप्तव्यम् (**यत्**) (**विष्णोः**) व्यापकस्येश्वरस्य (**उपमम्**) (**निधायि**) ध्रियेत (**तेन**) (**पासि**) (**गुह्यम्**) (**नाम**) (**गोनाम्**) इन्द्रियाणां किरणानां वा॥३॥

**अन्वयः**-हे रुद्र! यो मरुतस्तव श्रिये मर्जयन्त ते यच्चारु चित्रं पदं जनिम तन्मर्जयन्त यत्त्वया

विष्णोरुपमं गोनां गुह्यं नाम निधायि तेन ताँस्त्वं पासि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥३॥

**भावार्थः**-हे राजँस्तेनैव तव जन्मसाफल्यं भवेद्येन त्वमीश्वरवत्पक्षपातं विहाय प्रजाः पालयेः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(रुद्र)** दुष्टों के रुलाने वाले! जो **(मरुतः)** मनुष्य **(तव)** आपकी **(श्रिये)** लक्ष्मी के लिये **(मर्जयन्त)** शुद्ध करें **(ते)** आपका **(यत्)** जो **(चारु)** सुन्दर **(चित्रम्)** अद्भुत **(पदम्)** प्राप्त होने योग्य **(जनिम)** जन्म उसको शुद्ध करें और **(यत्)** जो आप **(विष्णोः)** व्यापक ईश्वर का **(उपमम्)** उपमायुक्त और **(गोनाम्)** इन्द्रियों वा किरणों का **(गुह्यम्)** गुप्त **(नाम)** नाम **(निधायि)** धारण करें **(तेन)** इसी हेतु से उनका आप **(पासि)** पालन करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! इसी से आपके जन्म का साफल्य होवे, जिससे आप ईश्वर के सदृश पक्षपात का त्याग करके प्रजाओं का पालन करो॥३॥

**अथ प्रजाकृत्यमाह॥**

अब प्रजाकृत्य को कहते हैं॥

**तव॑ श्रि॒या सु॒दृशो॑ देव दे॒वाः पु॒रू दधा॑ना अ॒मृतं॑ सपन्त।**
**होता॑रम॒ग्निं मनु॑षो॒ नि षे॑दुर्दश॒स्यन्त॑ उ॒शिजः॒ शंस॑मा॒योः॥४॥**

**तव॑। श्रि॒या। सु॒ऽदृशः॑। दे॒व॒। दे॒वाः। पु॒रु। दधा॑नाः। अ॒मृत॑म्। स॒प॒न्त॒। होता॑रम्। अ॒ग्निम्। मनु॑षः। नि। से॒दुः। द॒श॒स्यन्तः॑। उ॒शिजः॑। शंस॑म्। आ॒योः॥४॥**

**पदार्थः**-**(तव)** **(श्रिया)** शोभया लक्ष्म्या वा **(सुदृशः)** ये सुष्ठु पश्यन्ति **(देव)** दातः **(देवाः)** विद्वांसः **(पुरू)** बहु **(दधानाः)** धरन्तः **(अमृतम्)** मृत्युरहितम् **(सपन्त)** आक्रोशन्ति **(होतारम्)** आदातारम् **(अग्निम्)** पावकम् **(मनुषः)** मनुष्याः **(नि, षेदुः)** निषीदेयुः **(दशस्यन्तः)** विस्तारयन्तः **(उशिजः)** कामयमानाः **(शंसम्)** शंसन्ति येन तम् **(आयोः)** जीवनस्य॥४॥

**अन्वयः**-हे देव! राजंस्तव श्रिया सुदृशः पुर्वमृतं दधाना उशिज आयोः शंसं होतारमग्निं दशस्यन्त देवा मनुषः सपन्त तेऽमृतं नि षेदुः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमाप्तानां विदुषां सङ्गेन विद्या सङ्गृह्य श्रीमन्तो भूत्वेह सुखं भुक्त्वाऽन्ते मुक्तिमपि लभध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** दानशील राजन्! **(तव)** आपकी **(श्रिया)** लक्ष्मी वा शोभा से **(सुदृशः)** उत्तम प्रकार देखने और **(पुरू)** बहुत **(अमृतम्)** मृत्युरहित अर्थात् अविनाशी पदवी को **(दधानाः)** धारण करते और **(उशिजः)** कामना करते हुए **(आयोः)** जीवन के **(शंसम्)** कहाने और **(होतारम्)** ग्रहण करने वाले **(अग्निम्)** अग्नि को **(दशस्यन्तः)** विस्तारते हुए **(देवाः)** विद्वान् **(मनुषः)** मनुष्य **(सपन्त)** आक्रोशी रहे अर्थात् चिल्ला-चिल्ला उसका उपदेश दे रहे हैं, वे मृत्युरहित पदवी को **(नि, षेदुः)** प्राप्त होवें॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप यथार्थवक्ता विद्वानों के सङ्ग से विद्याओं को ग्रहण कर लक्ष्मीवान् हो और इस संसार में सुख भोगकर अन्त अर्थात् मरणसमय में मुक्ति को भी प्राप्त होओ॥४॥३

**पुना राजधर्ममाह॥**

फिर राजधर्म को कहते हैं॥

**न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।**

**विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्॥५॥**

**न। त्वत्। होता। पूर्वः। अग्ने। यजीयान्। न। काव्यैः। परः। अस्ति। स्वधाऽवः। विशः। च। यस्याः। अतिथिः। भवासि। सः। यज्ञेन। वनवत्। देव। मर्तान्॥५॥**

**पदार्थ:**-(**न**) निषेधे (**त्वत्**) तव सकाशात् (**होता**) दाता (**पूर्वः**) (**अग्ने**) विद्वन् राजन् वा (**यजीयान्**) अतिशयेन यष्टा (**न**) निषेधे (**काव्यैः**) कविभिर्निर्मितैः (**परः**) श्रेष्ठः (**अस्ति**) (**स्वधावः**) बहुधनधान्ययुक्त (**विशः**) प्रजायाः (**च**) (**यस्याः**) (**अतिथिः**) पूजनीयः (**भवासि**) भवेः (**सः**) (**यज्ञेन**) प्रजापालनव्यवहारेण (**वनवत्**) सेवयसि (**देव**) सुखप्रदातः (**मर्त्तान्**) मनुष्यान्॥५॥

**अन्वय:**-हे स्वधावो देवाग्ने! त्वं यज्ञेन मर्त्तान् वनवन्न त्वत्पूर्वो होता यजीयानस्ति न काव्यैः परोऽस्ति यस्या विशश्चातिथिर्यस्त्वं भवासि स भवांस्तस्याः सत्कर्तुं योग्योऽस्ति॥५॥

**भावार्थ:**-यो राजा धर्म्येण प्रजाः पालयेत् स एव राज्यं कर्तुमर्हति॥५॥

**पदार्थ:**-हे (**स्वधावः**) बहुत धन और धान्य से युक्त (**देव**) सुख के देने वाले (**अग्ने**) विद्वान् वा राजन्! आप (**यज्ञेन**) प्रजापालनरूप व्यवहार से (**मर्त्तान्**) मनुष्यों का (**वनवत्**) सेवन करते हो (**न**) न (**त्वत्**) आपके समीप से (**पूर्वः**) प्राचीन (**होता**) दाता (**यजीयान्**) अत्यन्त यज्ञ करने वाला (**अस्ति**) है और (**न**) न (**काव्यैः**) कवियों के बनाये हुओं से (**परः**) श्रेष्ठ है (**यस्याः**) जिस (**विशः**) प्रजा के (**च**) भी (**अतिथिः**) आदर करने योग्य जो आप (**भवासि**) होवें (**सः**) वह आप उस प्रजा के सत्कार करने योग्य है॥५॥

**भावार्थ:**-जो राजा धर्मयुक्त व्यवहार से प्रजाओं का पालन करे, वही राज्य करने के योग्य होता है॥५॥

**पुनः प्रजाविषयमाह॥**

फिर प्रजाविषय को कहते हैं॥

**वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।**

**वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्॥६॥१६॥**

**वयम्। अग्ने। वनुयाम। त्वाऽऊंताः। वसुऽयर्वः। हविषां। बुध्यमानाः। वयम्। सऽमर्ये। विदथेषु। अह्नाम्। वयम्। राया। सहसः। पुत्र। मर्तान्॥६॥**

**पदार्थः-(वयम्) (अग्ने)** अग्निरिव राजन् **(वनुयाम)** याचेमहि **(त्वोताः)** त्वया रक्षिताः **(वसूयवः)** आत्मनो धनमिच्छवः **(हविषा)** दानेन **(बुध्यमानाः) (वयम्) (समर्ये)** सङ्ग्रामे **(विदथेषु)** विज्ञानव्यवहारेषु **(अह्नाम्) (वयम्) (राया)** धनेन **(सहसस्पुत्र)** बलस्य पालक **(मर्त्तान्)** मनुष्यान्॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसस्पुत्राग्ने! त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमाना वयं त्वत्तो रक्षणं वनुयाम वयमह्नां विदथेषु समर्ये प्रवर्त्तेमहि वयं राया मर्त्तान् वनुयाम॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वद्भ्यः सद्गुणान् भवन्तो याचेरंस्तर्हि स्वयं प्रजा धनाढ्या भवेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सहस्पुत्र)** बल की पालना करने वाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! **(त्वोताः)** आपसे रक्षा किये गये **(वसूयवः)** अपने धन की इच्छा करने वाले **(हविषा)** दान से **(बुध्यमानाः)** बोध को प्राप्त होते हुए **(वयम्)** हम लोग आपसे रक्षा की **(वनुयाम)** याचना करें और **(वयम्)** हम लोग **(अह्नाम्)** दिनों के **(विदथेषु)** विशेष ज्ञानसम्बन्धी व्यवहारों में **(समर्ये)** संग्राम के बीच प्रवृत्त होवें और **(वयम्)** हम लोग **(राया)** धन से **(मर्त्तान्)** मनुष्यों को याचें अर्थात् मनुष्यों से मांगें॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वानों से श्रेष्ठ गुणों की आप लोग प्रार्थना करें तो स्वयं प्रजायें धनवती होवें॥६॥

**पुनश्चौर्य्याद्यपराधनिवारणप्रजापालनराजधर्ममाह॥**

फिर चोरी आदि अपराधनिवारण प्रजापालन राजधर्म को कहते हैं॥

**यो न आगो अभ्येनो भरात्यधीदघमघशंसे दधात।**

**जही चिकित्वो अभिशस्तिमेतामग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन॥७॥**

**यः। नः। आगः। अभि। एनः। भराति। अधि। इत्। अघम्। अघऽशंसे। दधात। जहि। चिकित्वः। अभिऽशस्तिम्। एताम्। अग्ने। यः। नः। मर्चयति। द्वयेन॥७॥**

**पदार्थः-(यः) (नः)** अस्माकम् **(आगः)** अपराधम् **(अभि) (एनः)** पापम् **(भराति)** धरति **(अधि) (इत्) (अघम्)** किल्विषम् **(अघशंसे)** स्तेने **(दधात)** दध्यात् **(जही)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(चिकित्वः)** विज्ञानवन् **(अभिशस्तिम्)** अभितो हिंसाम् **(एताम्) (अग्ने)** पावक इव महीपते **(यः) (न)** अस्मान् **(मर्चयति)** बाधते **(द्वयेन)** पापापराधाभ्याम्॥७॥

**अन्वयः**-हे चिकित्वोऽग्ने! यो न आग एनोऽभि भराति तस्मिन्नघशंसे योऽघमिदधि दधात यो द्वयेन नोऽस्मान् मर्चयति। एतामभिशस्तिं विधत्ते तं त्वं जही॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये प्रजादूषकाः स्युस्तान् सदैव दण्डय, ये श्रेष्ठाचारा भवेयुस्तान् मानय॥७॥

**पदार्थः**-हे **(चिकित्वः)** विज्ञानवान् **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी पृथिवी के पालने वाले! **(यः)** जो **(नः)** हम लोगों के **(आगः)** अपराध और **(एनः)** पाप को **(अभि, भराति)** सन्मुख धारण करता है उस **(अघशंसे)** चोरीरूप कर्म में जो **(अघम्)** पाप **(इत)** ही को **(अधि, दधात)** अधिस्थापन करे और **(यः)** जो **(द्वयेन)** पाप और अपराध से **(नः)** हम लोगों को **(मर्चयति)** बाधता है और **(एताम्)** इस **(अभिशस्तिम्)** सब ओर से हिंसा को करता है, उसका आप **(जही)** त्याग कीजिए॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो प्रजा को दोष देने वाले होवें, उनको सदा ही दण्ड दीजिये और जो श्रेष्ठ आचरण करने वाले होवें, उनको मानो अर्थात् सत्कार करो॥७॥

**पुना राजधर्म्ममाह॥**

फिर राजधर्म को कहते हैं॥

**त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः।**
**संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः॥८॥**

**त्वाम्। अस्याः। विऽउषि। देव। पूर्वे। दूतम्। कृण्वानाः। अयजन्त। हव्यैः। सम्ऽस्थे। यत्। अग्ने। ईयसे। रयीणाम्। देवः। मर्तैः। वसुऽभिः। इध्यमानः॥८॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(अस्याः)** प्रजाया मध्ये **(व्युषि)** सेवसे **(देव)** दिव्यगुणसम्पन्न **(पूर्वे)** पालनकर्त्तारः **(दूतम्)** यो दुनोति शत्रूँस्तम् **(कृण्वानाः)** **(अयजन्त)** सङ्गच्छेरन् **(हव्यैः)** पूजितुमर्हैः **(संस्थे)** सम्यक् तिष्ठन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(यत्)** यस्मात् **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(ईयसे)** प्राप्नोषि गच्छसि वा **(रयीणाम्)** धनानाम् **(देवः)** विद्वान् सन् **(मर्तैः)** मरणधर्म्मैर्मनुष्यैः **(वसुभिः)** धनादियुक्तैः **(इध्यमानः)** देदीप्यमानः॥८॥

**अन्वयः**-हे देवाग्ने! देवस्त्वं यदस्याः संस्थे रयीणां वसुभिर्मर्तैरिध्यमान ईयसे पालनं व्युषि तं त्वां हव्यैर्दूतं कृण्वानाः पूर्वे विद्वांसोऽयजन्त॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् विद्याविनयाभ्यां न्यायेन प्रजाः सततं पालयेत्तर्हि त्वां कीर्त्तिर्धनं राज्योन्नतिरुत्तमाः पुरुषाश्च प्राप्नुयुः॥८॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** श्रेष्ठ गुणों से युक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! **(देवः)** विद्वान् होते हुए आप **(यत्)** जिससे **(अस्याः)** इस प्रजा के मध्य में **(संस्थे)** उत्तम प्रकार स्थित होते हैं, जिसमें उसमें **(रयीणाम्)** धनों के बीच **(वसुभिः)** धन आदि पदार्थों से युक्त **(मर्तैः)** मरणधर्म वाले मनुष्यों से **(इध्यमानः)** प्रकाशित किये गये **(ईयसे)** प्राप्त होते वा जाते हो और पालन का **(व्युषि)** सेवन करते हो उन **(त्वाम्)** आपको **(हव्यैः)** प्रशंसा करने योग्य पदार्थों से **(दूतम्)** शत्रुओं के नाश करने वाले **(कृण्वानाः)** करते हुए **(पूर्वे)** पालन करने वाले विद्वान् जन **(अयजन्त)** मिलें॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप विद्या और विनय से न्यायपूर्वक प्रजाओं का निरन्तर पालन करें तो आप को यश, धन, राज्य की उन्नति और उत्तम पुरुष प्राप्त होवें॥८॥

**पुनः सन्तानशिक्षाविषयकं प्रजाधर्ममाह॥**

फिर सन्तानशिक्षाविषयक प्रजाधर्म को कहते हैं॥

**अवं स्पृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे।**
**कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नोग्ने कदाँ ऋतचिद् यातयासे॥९॥**

अव। स्पृधि। पितरम्। योधि। विद्वान्। पुत्रः। यः। ते। सहसः। सूनो इति। ऊहे। कदा। चिकित्वः। अभि। चक्षसे। नः। अग्ने। कदा। ऋतऽचित्। यातयासे॥९॥

**पदार्थः**-(**अव**) (**स्पृधि**) अभिकाङ्क्ष (**पितरम्**) पालकम् (**योधि**) वियोजय (**विद्वान्**) (**पुत्रः**) (**यः**) (**ते**) (**सहसः**) ब्रह्मचर्यबलयुक्तस्य (**सूनो**) अपत्य (**ऊहे**) वितर्कयामि (**कदा**) (**चिकित्वः**) (**अभि**) (**चक्षसे**) उपदिशेः (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) (**कदा**) (**ऋतचित्**) य ऋतं चिनोति सः (**यातयासे**) प्रेरयेः॥९॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो चिकित्वोऽग्ने! ते तुभ्यमहमूहे यस्त्वं विद्वान् पुत्रस्स पितरमव स्पृधि दुःखं योधि। ऋतचित्त्वं नोऽस्मान् कदाऽभि चक्षसे सत्कर्मसु कदा यातयासे॥९॥

**भावार्थः**-यदि कन्या बालकाँश्च पितरौ ब्रह्मचर्य्येण विद्याः प्रापयेयुः पूर्णयुवावस्थायां विवाहयेयुस्तर्हि तेऽत्यन्तं सुखमाप्नुयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) ब्रह्मचर्य्यबल से युक्त पुरुष के (**सूनो**) पुत्र (**चिकित्वः**) बुद्धियुक्त (**अग्ने**) अग्नि के सदृश तेजस्विन् (**ते**) तेरे लिये मैं (**ऊहे**) विशेष तर्क करता हूँ (**यः**) जो तू (**विद्वान्**) विद्यावान् (**पुत्रः**) दुःख से रक्षा करने वाला है सो (**पितरम्**) पिता अर्थात् अपने पालने वाले की (**अव, स्पृधि**) अभिकांक्षा कर और दुःख को (**योधि**) दूर कर तथा (**ऋतचित्**) सत्य का संचय करने वाले तुम (**नः**) हम लोगों को (**कदा**) कब (**अभि, चक्षसे**) उपदेश दोगे और (**कदा**) कब अच्छे कामों में (**यातयासे**) प्रेरणा करोगे॥९॥

**भावार्थः**-जो कन्या और बालकों को माता-पिता ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करावें और पूर्ण युवावस्था में विवाह करावें तो वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज्जोषयासे।**
**कुविद्देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः॥१०॥**

**भूरि। नाम। वन्दमानः। दधाति। पिता। वसो इति। यदि। तत्। जोषयासे। कुवित्। देवस्य। सहसा। चकानः। सुम्नम्। अग्निः। वनते। वावृधानः॥१०॥**

**पदार्थः-(भूरि)** बहु **(नाम)** संज्ञाम् **(वन्दमानः)** स्तुवन् **(दधाति)** **(पिता)** जनकः **(वसो)** वासयितः **(यदि)** **(तत्)** **(जोषयासे)** सेवयेः **(कुवित्)** महत् **(देवस्य)** विदुषः **(सहसा)** बलेन **(चकानः)** कामयमानः **(सुम्नम्)** सुखम् **(अग्निः)** पावक इव **(वनते)** सम्भजति **(वावृधानः)** अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे वसो! यस्ते वन्दमानो देवस्य सहसा सुम्नं चकानोऽग्निरिव वावृधानः पिता यदि भूरि कुविद्यन्नाम दधाति वनते तत्तर्हि त्वं जोषयासे॥१०॥

**भावार्थः**-हे सन्ताना! ये युष्माकं पितरो द्वितीयं विद्याजन्माख्यं द्विजेति नाम विदधति तेषां सेवनं सततं यूयं कुरुत॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** निवास करने वाले! जो आपकी **(वन्दमानः)** स्तुति करता हुआ **(देवस्य)** विद्वान् के **(सहसा)** बल से **(सुम्नम्)** सुख की **(चकानः)** कामना करता और **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(वावृधानः)** निरन्तर बढ़ता हुआ **(पिता)** उत्पन्न करने वाला **(यदि)** यदि **(भूरि)** बहुत **(कुवित्)** बड़े जिस **(नाम)** नाम को **(दधाति)** धारण करता और **(वनते)** सेवन करता है और **(तत्)** उसका तो आप **(जोषयासे)** सेवन करें॥१०॥

**भावार्थः**-हे सन्तानो! जो आप लोगों के माता-पिता दूसरे विद्यारूप जन्म नामक द्विज ऐसा नाम विधान करते हैं, उनका सेवन निरन्तर तुम लोग करो॥१०॥

**अथ चौर्यादिदोषनिवारणसन्तानशिक्षाकरणप्रजाधर्मविषयमाह॥**

अब चोरी आदि दोषनिवारण, सन्तानशिक्षाकरण, प्रजाधर्मविषय को कहते हैं॥

**त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरिताति पर्षि।**

**स्तेना अदृश्रन् रिपवो जनासोऽज्ञातकेता वृजिना अभूवन्॥११॥**

**त्वम्। अङ्ग। जरितारम्। यविष्ठ। विश्वानि। अग्ने। दुःऽइता। अति। पर्षि। स्तेनाः। अदृश्रन्। रिपवः। जनासः। अज्ञातऽकेताः। वृजिनाः। अभूवन्॥११॥**

**पदार्थः-(त्वम्)** **(अङ्ग)** मित्र **(जरितारम्)** विद्यागुणस्तावकं पितरम् **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(विश्वानि)** अखिलानि **(अग्ने)** **(दुरिता)** दुःखप्रापकाणि कर्माणि फलानि वा **(अति)** **(पर्षि)** अत्यन्तं पालयसि **(स्तेनाः)** चोराः **(अदृश्रन्)** पश्यन्ति **(रिपवः)** शत्रवः **(जनासः)** विद्वांसः **(अज्ञातकेताः)** अज्ञातः केतः प्रज्ञा यैस्ते मूढाः **(वृजिनाः)** पापाचारा वर्जनीयाः **(अभूवन्)** भवन्ति॥११॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाङ्गाग्ने! यतस्त्वं जरितारमति पर्षि विश्वानि दुरिता त्यजसि येऽज्ञातकेता वृजिनाः स्तेना रिपवोऽभूवन् याञ्जनासोऽदृश्रँस्तांस्त्वं परित्यज॥११॥

**भावार्थ:**-हे सुसन्ताना! यूयं दुष्टाचारं त्यक्त्वा पितॄन् सत्कृत्य स्तेनादीन्निवार्य पुण्यकीर्त्तयो भवत॥११॥

**पदार्थ:**-हे **(यविष्ठ)** अतिशय करके युवा **(अङ्ग)** मित्र **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान जिससे **(त्वम्)** आप **(जरितारम्)** विद्या और गुण की स्तुति करने वाले पिता की **(अति, पर्षि)** अत्यन्त पालना करते हो **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(दुरिता)** दु:ख के प्राप्त कराने वाले कर्म्म वा फलों का त्याग करते हो और जो **(अज्ञातकेता:)** नहीं जानी बुद्धि जिन्होंने वे मूर्ख **(वृजिना:)** पापाचरणयुक्त वर्जने योग्य **(स्तेना:)** चोर **(रिपव:)** शत्रु **(अभूवन्)** होते हैं और जिनको **(जनास:)** विद्वान् जन **(अदृश्रन्)** देखते हैं, उनका आप परित्याग करो॥११॥

**भावार्थ:**-हे उत्तम सन्तानो! आप लोग दुष्ट आचरणों का त्याग, माता-पितादि का सत्कार और चौरी कर्म्म आदि का निवारण करके पुण्य यश वाले हूजिये॥११॥

**पुन: प्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर प्रजाधर्मविषय को कहते हैं॥

**इ॒मे यामा॑सस्त्व॒द्रिग॑भूव॒न् वस॑वे वा॒ तदिदागो॑ अवाचि।**
**नाहा॒यम॒ग्निर॒भिश॑स्तये नो॒ न रीष॑ते वावृधा॒नः परा॑ दात्॥१२॥१७॥**

**इ॒मे। यामा॑सः। त्व॒द्रिक्। अ॒भू॒व॒न्। वस॑वे। वा॒। तत्। इत्। आग॑:। अ॒वा॒चि। न। अह॑। अ॒यम्। अ॒ग्निः।** **अ॒भिऽश॑स्तये। न॒:। न। रिष॑ते। व॒वृ॒धा॒नः। परा॑। दा॒त्॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(इमे) (यामास:)** यमनियमान्विता: **(त्वद्रिक्)** त्वां प्रति यतमान: **(अभूवन्)** भवन्ति **(वसवे)** धनाय **(वा) (तत्) (इत्)** एव **(आग:)** अपराध: **(अवाचि) (न) (अह) (अयम्) (अग्नि:)** पावक इव **(अभिशस्तये)** अभितो हिंसनाय **(न:)** अस्मान् **(न) (रीषते)** हिनस्ति **(वावृधान:)** वर्धमान: **(परा, दात्)** दूरं गमयेत्॥१२॥

**अन्वय:**-हे सत्सन्तान! योऽयमग्निरिव नोऽभिशस्तये नाऽह परा दाद् वावृधान: सन्न रीषते त्वद्रिक् सन् वसवेऽवाचि वा तदाग इदवाचि तमिमे यामासोऽध्यापनोपदेशाभ्यां शोधयन्तु त आनन्दिता अभूवन्॥१२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! ये विद्वांस: कश्चिदपि विनाऽपराधेन नाऽपराध्नुवन्ति तान् स्वसमीपाद्दूरे मा नि:सारयेतेति॥१२॥

अत्र राजप्रजास्तेनापराधनिवारणाद्युक्तत्वादस्य पूर्वसक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति तृतीयं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे श्रेष्ठ सन्तान जो **(अयम्)** यह **(अग्नि:)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(न:)** हम लोगों को **(अभिशस्तये)** सब प्रकार के हिंसा करने के लिये **(न)** नहीं **(अह)** निश्चय **(परा, दात्)** दूर पहुँचावे और **(वावृधान:)** निरन्तर बढ़ता हुआ **(न)** नहीं **(रीषते)** हिंसा करता और **(त्वद्रिक्)** आपके प्रति यत्न कराता **(वसवे)** धन के लिए **(अवाचि)** कहा गया **(वा)** वा **(तत्)** वह **(आग:)** अपराध **(इत्)** ही कहा गया

उसको **(इमे)** जो **(यामासः)** यम और नियमों से युक्त जन पढ़ाने और उपदेश से पवित्र करें, वे आनन्दित **(अभूवन्)** होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन किसी को भी बिना अपराध के नहीं दोष देते हैं, उनको अपने समीप से दूर मत निकालो॥१२॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा को चोरी और अन्य अपराध आदि के निवारण आदि के कहने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसरा सूक्त और सत्रहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य चतुर्थस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, १०, ११ भुरिक् पङ्क्तिः। ४, ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ९ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजविषयमाह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले चतुर्थ सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने वसु॑पतिं वसू॑नाम॒भि प्र म॑न्दे अध्व॒रेषु॑ राजन्।**

**त्वया॒ वाजं॑ वाज॒यन्तो॑ जयेमा॒भि ष्या॑म पृत्सु॒तीर्मर्त्या॑नाम्॥ १॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। वसु॑ऽपतिम्। वसू॑नाम्। अ॒भि। प्र। म॒न्दे॒। अ॒ध्व॒रेषु॑। रा॒ज॒न्। त्वया॑। वाज॑म्। वा॒ज॒ऽयन्तः॑। ज॒ये॒म॒। अ॒भि। स्या॒म॒। पृ॒त्सु॒तीः। मर्त्या॑नाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** विद्युद्वद्व्याप्तविद्य **(वसुपतिम्)** धनस्वामिनम् **(वसूनाम्)** धनानाम् **(अभि)** **(प्र)** **(मन्दे)** आनन्दयेयमानन्दयामि वा **(अध्वरेषु)** अहिंसनीयेषु प्रजापालनन्यायव्यवहारेषु **(राजन्)** शुभगुणैः प्रकाशमान **(त्वया)** अधिष्ठात्रा **(वाजम्)** सङ्ग्रामम् **(वाजयन्तः)** कुर्वन्तः कारयन्तो वा **(जयेम)** **(अभि)** **(स्याम)** **(पृत्सुतीः)** सेनाः **(मर्त्यानाम्)** मरणधर्माणां शत्रूणाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! राजन्नध्वरेषु वसूनां वसुपतिं त्वामहमभि प्र मन्दे। त्वया सह वाजं वाजयन्तो वयं मर्त्यानां पृत्सुतीरभि जयेमाऽनेन धनकीर्त्तियुक्ताः स्याम॥ १॥

**भावार्थः**-येषामधिष्ठातारो धार्मिका विद्वांसस्स्युस्तेषां सदैव विजयो राजवृद्धिरतुला श्रीश्च जायते॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** बिजुली के सदृश विद्या से व्याप्त **(राजन्)** उत्तम गुणों से प्रकाशमान राजन्! **(अध्वरेषु)** नहीं हिंसा करने योग्य प्रजापालन और न्यायव्यवहारों में **(वसूनाम्)** धनों के **(वसुपतिम्)** धनस्वामी **(त्वाम्)** आप को मैं **(अभि, प्र, मन्दे)** सब ओर से आनन्द देऊँ वा आनन्द देता हूँ और **(त्वया)** अधिष्ठातारूप आपके साथ **(वाजम्)** संग्राम को **(वाजयन्त)** करते वा कराते हुए हम लोग **(मर्त्यानाम्)** मरण धर्म वाले शत्रुओं की **(पृत्सुतीः)** सेनाओं को **(अभि, जयेम)** सब ओर से जीतें, इससे धन और यश से युक्त **(स्याम)** होवें॥ १॥

**भावार्थः**-जिनके अधिष्ठाता मुखिया धार्मिक और विद्वान् जन होवें, उनका सदा ही विजय, राज्य की वृद्धि और अतुल लक्ष्मी होती है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ह॒व्य॒वाळ॒ग्निर॒जरः॑ पि॒ता नो॑ वि॒भुर्वि॒भावा॑ सु॒दृशी॑को अ॒स्मे।**

**सुगार्हपत्याः समिषो दिदीह्यस्मद्र्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि॥ २॥**

**हव्यऽवाट्। अग्निः। अजरः। पिता। नः। विऽभुः। विभाऽवा। सुऽदृशीकः। अस्मे इति। सुऽगार्हपत्याः। सम्। इषः। दिदीहि। अस्मद्र्यक्। सम्। मिमीहि। श्रवांसि॥ २॥**

**पदार्थः**-(**हव्यवाट्**) यो हव्यानि द्रव्याणि देशान्तरं प्रापयति (**अग्निः**) शुद्धस्वरूपः (**अजरः**) अवृद्धः (**पिता**) पालकः (**नः**) अस्माकम् (**विभुः**) व्यापकः परमेश्वरवत् (**विभावा**) विविधभानवान् (**सुदृशीकः**) दर्शयिता वा (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**सुगार्हपत्याः**) शोभनो गार्हपत्योऽग्न्यादिपदार्थसमुदायो यासान्ताः (**सम्**) (**इषः**) अन्नानि (**दिदीहि**) देहि (**अस्मद्र्यक्**) योऽस्मानञ्चति जानाति ज्ञापयति वा (**सम्**) (**मिमीहि**) विधेहि (**श्रवांसि**) अध्ययनाध्यापनादीनि कर्माणि॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा हव्यवाट् सुदृशीकोऽग्निः पावको यथा विभुरीश्वरवत् सर्वं पाति प्रकाशते तथा विभावाऽजरो नः पिता सन्नस्मे सुगार्हपत्या इषः सन् दिदीहि अस्मद्र्यक् सन् श्रवांसि सं मिमीहि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा विद्युद्भौमरूपेणाग्निः सर्वानुपकरोति यथा च परमेश्वरोऽसङ्ख्यातपदार्थानामुत्पादनेन पितृवत्सर्वान् पालयति तथैव त्वं भव॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजन् जैसे (**हव्यवाट्**) द्रव्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने वा (**सुदृशीकः**) उत्तम प्रकार देखने वा दिखाने वाला (**अग्निः**) शुद्धस्वरूप अग्नि जैसे (**विभुः**) व्यापक परमेश्वर के सदृश सब का पालन करता और प्रकाशित होता है, वैसे (**विभावा**) अनेक प्रकार के प्रकाश वा ज्ञान से युक्त (**अजरः**) वृद्धावस्थारहित (**नः**) हम लोगों के (**पिता**) पालन करने वाले होते हुए (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**सुगार्हपत्याः**) सुन्दर अग्नि आदि पदार्थ समुदाय वाले (**इषः**) अन्नों को (**सम्, दिदीहि**) अच्छे प्रकार दीजिये और (**अस्मद्र्यक्**) हम लोगों का आदर करने, जानने वा जनाने वाले होते हुए (**श्रवांसि**) पढ़ने और पढ़ाने आदि कर्म्मों का (**सम्, मिमीह**) विधान करिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे बिजुली और भूमि में प्रसिद्ध हुए रूप से अग्नि सब का उपकार करता है और जैसे परमेश्वर असंख्यात पदार्थों के उत्पन्न करने से पितरों के सदृश सब का पालन करता है, वैसे ही आप हूजिये॥ २॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को कहते हैं॥

**विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम्।**
**नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि॥ ३॥**

**विशाम्। कविम्। विश्पतिम्। मानुषीणाम्। शुचिम्। पावकम्। घृतऽपृष्ठम्। अग्निम्। नि। होतारम्। विश्वऽविदम्। दधिध्वे। सः। देवेषु। वनते। वार्याणि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**विशाम्**) प्रजानाम् (**कविम्**) मेधाविनम् (**विश्पतिम्**) प्रजापालकम् (**मानुषीणाम्**) मनुष्यसम्बन्धिनीनाम् (**शुचिम्**) पवित्रम् (**पावकम्**) पवित्रकरं वह्निम् (**घृतपृष्ठम्**) घृतमुदकमाज्यं पृष्ठ आधारे यस्य तम् (**अग्निम्**) वह्निम् (**नि**) (**होतारम्**) दातारम् (**विश्वविदम्**) यो विश्वं वेत्ति तम् (**दधिध्वे**) (**सः**) (**देवेषु**) विद्वत्सु दिव्येषु पदार्थेषु वा (**वनते**) सम्भजति (**वार्य्याणि**) वरितुं स्वीकर्त्तुमर्हाणि॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं घृतपृष्ठं पावकमग्निमिव विश्वविदमिव मानुषीणां विशां विश्पतिं शुचिं होतारं कविं यं राजानं यूयं नि दधिध्वे स देवेषु वार्य्याणि वनते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो हि पावकवत्प्रतापी जगदीश्वरवन्न्यायकारी विद्वाञ्छुभलक्षणो राजा भवति स एव सम्राट् भवितुमर्हति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**घृतपृष्ठम्**) जल और घृत आधार में जिसके उस (**पावकम्**) पवित्र करने वाले (**अग्निम्**) अग्नि और (**विश्वविदम्**) संसार को जानने वाले के सदृश (**मानुषीणाम्**) मनुष्यसम्बन्धिनी (**विशाम्**) प्रजाओं के (**विश्पतिम्**) प्रजापालक (**शुचिम्**) पवित्र और (**होतारम्**) देने वाले (**कविम्**) मेधावी जिस राजा को आप लोग (**नि, दधिध्वे**) अच्छे स्वीकार करें (**सः**) वह (**देवेषु**) विद्वानों वा श्रेष्ठ पदार्थों में (**वार्य्याणि**) स्वीकार करने योग्यों का (**वनते**) सेवन करता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि के सदृश प्रतापी, जगदीश्वर के सदृश न्यायकारी, विद्वान् और उत्तम लक्षणों वाला राजा होता है, वही चक्रवर्त्ती राजा होने योग्य है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहतेहैं॥

**जुषस्वाग्न इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य।**

**जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान् हविरद्याय वक्षि॥४॥**

**जुषस्व। अग्ने। इळया। सऽजोषाः। यतमानः। रश्मिऽभिः। सूर्यस्य। जुषस्व। नः। सम्ऽइधम्। जातऽवेदः। आ। च। देवान्। हविःऽअद्याय। वक्षि॥४॥**

**पदार्थः**-(**जुषस्व**) सेवस्व (**अग्ने**) दुष्टप्रदाहक (**इळया**) प्रशंसितया वाचा (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवनः (**यतमानः**) प्रयतमानः (**रश्मिभिः**) (**सूर्य्यस्य**) (**जुषस्व**) (**नः**) अस्माकम् (**समिधम्**) काष्ठमिव शत्रुम् (**जातवेदः**) उत्पन्नप्रज्ञान (**आ**) (**च**) (**देवान्**) विदुषः (**हविरद्याय**) हविश्चाद्यमत्तव्यं च तस्मै (**वक्षि**) वहसि प्रापयसि॥४॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! यतमानः सजोषास्त्वं सूर्य्यस्य रश्मिभिरिवेळया नः समिधमिव शत्रुं जुषस्व हविरद्याय देवानां वक्षि तांश्च जुषस्व॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथाऽऽदित्यस्य प्रकाशेन सर्वेषां जीवानां कर्त्तव्यानि कर्म्माणि सिध्यन्ति तथैवाप्तैः पुरुषैः राज्ञः सर्वाणि न्याययुक्तानि प्रजापालनादीनि कर्माणि भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** ज्ञान की उत्पत्ति से विशिष्ट **(अग्ने)** दुष्टों के नाश करने वाले **(यतमानः)** प्रयत्न करते हुए **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति सेवन करने वाले आप **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य की **(रश्मिभिः)** किरणों के सदृश **(इळया)** प्रशंसित वाणी से **(नः)** हम लोगों के **(समिधम्)** काष्ठ के तुल्य शत्रु को **(जुषस्व)** सेवा करो और **(हविरद्याय)** खाने योग्य पदार्थ के लिये **(देवान्)** विद्वानों को **(आ, वक्षि)** प्राप्त कराते अर्थात् पहुंचाते हो उनकी **(च)** और **(जुषस्व)** सेवा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य के प्रकाश से सब जीवों के करने योग्य कर्म्म सिद्ध होते हैं, वैसे ही यथार्थवक्ता पुरुषों से राजा के सर्व न्याययुक्त प्रजापालन आदि कर्म्म होते हैं॥४॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्।**
**विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥५॥१८॥**

**जुष्टः। दमूनाः। अतिथिः। दुरोणे। इमम्। नः। यज्ञम्। उप। याहि। विद्वान्। विश्वाः। अग्ने। अभिऽयुजः। विऽहत्य। शत्रुऽयताम्। आ। भर। भोजनानि॥५॥**

**पदार्थः**-**(जुष्टः)** सेवितः प्रीतो वा **(दमूनाः)** शमदमादियुक्तः **(अतिथिः)** अकस्मादागतः **(दुरोणे)** गृहे **(इमम्)** प्रत्यक्षम् **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** अन्नाद्युत्तमपदार्थदानम् **(उप)** **(याहि)** **(विद्वान्)** **(विश्वाः)** समग्राः **(अग्ने)** विद्युदिव शुभगुणाढ्य राजन् **(अभियुजः)** या आभिमुख्यं युञ्जते ताः शत्रुसेनाः **(विहत्या)** विविधवधैर्हत्वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(शत्रूयताम्)** शत्रूणामिवाचरताम् **(आ)** **(भरा)** धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(भोजनानि)** प्रजापालनानि भोक्तव्यान्यन्नानि वा॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोणे प्राप्त इव विद्वांस्त्वं न इमं यज्ञमुप याहि शत्रूयतां विश्वा अभियुजो विहत्या भोजनान्या भरा॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा दुष्टान् हत्वा न्यायेन प्रजाः पालयति सोऽत्यन्तं प्रजाप्रियो भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** बिजुली के सदृश श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न राजन्! **(जुष्टः)** सेवित वा प्रसन्न किये गये **(दमूनाः)** शम, दम आदि से युक्त **(अतिथिः)** अकस्मात् आये **(दुरोणे)** गृह में प्राप्त हुए से **(विद्वान्)** विद्वान् आप **(नः)** हम लोगों के **(इमम्)** इस प्रत्यक्ष **(यज्ञम्)** अन्न आदि उत्तम पदार्थों के दान को **(उप, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(शत्रूयताम्)** शत्रुओं के सदृश आचरण करते हुओं की **(विश्वाः)**

सम्पूर्ण **(अभियुजः)** सम्मुख प्राप्त हुई शत्रुसेनाओं का **(विहत्या)** अनेक प्रकार के वधों से नाश करके **(भोजनानि)** प्रजापालन वा खाने योग्य अन्नों को **(आ, भरा)** धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा दुष्टों का नाश करके न्याय से प्रजाओं का पालन करता है, वह बहुत ही प्रजा का प्रिय होता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व वयः कृण्वानस्तन्वे३ स्वायै।**

**पिपर्षि यत्सहसस्पुत्र देवान्त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्॥६॥**

**वधेन। दस्युम्। प्र। हि चातयस्व। वयः। कृण्वानः। तन्वे। स्वायै। पिपर्षि। यत्। सहसः। पुत्र। देवान्। सः। अग्ने। पाहि। नृऽतम। वाजे। अस्मान्॥६॥**

**पदार्थः**-**(वधेन)** **(दस्युम्)** साहसिकं चोरम् **(प्र)** **(हि)** **(चातयस्व)** हिंसय हिंधि वा **(वयः)** जीवनम् **(कृण्वानः)** **(तन्वे)** शरीराय **(स्वायै)** स्वकीयाय **(पिपर्षि)** **(यत्)** यः **(सहसः, पुत्र)** बलिष्ठस्य पुत्र **(देवान्)** विदुषः **(सः)** **(अग्ने)** **(पाहि)** रक्ष **(नृतम)** अतिशयेन नायक **(वाजे)** स- ामे **(अस्मान्)**॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसस्पुत्र नृतमाग्ने राजन्! यद्यस्त्वं स्वायै तन्वे वयः कृण्वानस्सन् वधेन दस्युं प्र चातयस्व। प्रजा हि पिपर्षि स त्वं वाजेऽस्मान् देवान् पाहि॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! त्वं सदा दस्यून् हत्वा धार्मिकान् पालयेः शत्रून् विजयस्व॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः, पुत्र)** बलवान् के पुत्र **(नृतम)** अतिशय मुख्य **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी राजन्! **(यत्)** जो आप **(स्वायै)** अपने **(तन्वे)** शरीर के लिये **(वयः)** जीवन को **(कृण्वानः)** करते हुए **(वधेन)** वध से **(दस्युम्)** साहस कर्मकारी चोर का **(प्र, चातयस्व)** अत्यन्त नाश करो वा नाश कराओ तथा प्रजाओं को **(हि)** ही **(पिपर्षि)** प्रसन्न करते हो **(सः)** वह आप **(वाजे)** स- ामों में **(अस्मान्)** हम लोगों **(देवान्)** विद्वानों की **(पाहि)** रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सदा चोर डाकुओं का नाश कर धार्मिकों का पालन करें और शत्रुओं को जीतें॥६॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अथ राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे।**

**अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्वास्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि॥७॥**

**वयम्। ते। अग्ने। उक्थैः। विधेम। वयम्। हव्यैः। पावक। भद्रऽशोचे। अस्मे इति। रयिम्। विश्वऽवारम्। सम्। इन्व। अस्मे इति। विश्वानि। द्रविणानि। धेहि॥७॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**ते**) तव (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान (**उक्थैः**) प्रशंसितैर्वचनैः (**विधेम**) कुर्याम (**वयम्**) (**हव्यैः**) दातुमादातुमर्हैः (**पावक**) पवित्र (**भद्रशोचे**) कल्याणप्रकाशक (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**रयिम्**) श्रियम् (**विश्ववारम्**) आविवरपदार्थयुक्ताम् (**सम्**) (**इन्व**) व्याप्नुहि (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**विश्वानि**) अखिलानि (**द्रविणानि**) यशांसि (**धेहि**)॥७॥

**अन्वयः**-हे पावक भद्रशोचेऽग्ने विद्वन् राजन्! यथा वयं यस्य त उक्थैर्विश्वानि द्रविणानि विधेम तथाऽस्म एतानि सन् धेहि यथा वयं हव्यैस्ते विश्ववारं रयिं प्रापयेम तथा त्वमस्म एतमिन्व॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रजाऽमात्यजना राजश्रियं वर्धयेयुस्तथैव राजा एभ्यो धनं वर्धयेदेवं न्यायेन पितृपुत्रवद्वर्त्तित्वा कीर्त्तिमन्तो भवन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**पावक**) पवित्र (**भद्रशोचे**) कल्याण के प्रकाश करने वाले (**अग्ने**) बिजुली के सदृश वर्त्तमान विद्वान् राजन्! जैसे (**वयम्**) हम लोग जिन (**ते**) आपके (**उक्थैः**) प्रशंसित वचनों से (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**द्रविणानि**) यशों को (**विधेम**) सिद्ध करें वैसे (**अस्मे**) हम लोगों के लिये इनको (**सम्, धेहि**) अत्यन्त धारण कीजिये और जैसे (**वयम्**) हम लोग (**हव्यैः**) देने और लेने योग्यों से आपकी (**विश्ववारम्**) विवरपर्यन्त अर्थात् अति उत्तम पदार्थपर्यन्त पदार्थों से युक्त (**रयिम्**) लक्ष्मी को प्राप्त करावें, वैसे आप (**अस्मे**) हम लोगों के लिये इसको (**इन्व**) व्याप्त कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रजा और मन्त्रीजन राजलक्ष्मी को बढ़ावें, वैसे ही राजा इन लोगों के लिये धन बढ़ावे। इस प्रकार न्याय से पिता और पुत्र के सदृश वर्त्ताव करके यशस्वी होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम्।**

**वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नस्त्रिवरूथेन पाहि॥८॥**

**अस्माकम्। अग्ने। अध्वरम्। जुषस्व। सहसः। सूनो इति। त्रिऽसधस्थ। हव्यम्। वयम्। देवेषु। सुऽकृतः। स्याम। शर्मणा। नः। त्रिऽवरूथेन। पाहि॥८॥**

**पदार्थः**-(**अस्माकम्**) (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान राजन् (**अध्वरम्**) पालनाख्यं व्यवहारम् (**जुषस्व**) (**सहसः**) बलिष्ठस्य कृतदीर्घब्रह्मचारिणः (**सूनो**) पुत्र (**त्रिषधस्थ**) त्रिभिः प्रजाभृत्यात्मीयैर्जनैः सह पक्षपातरहितस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ (**हव्यम्**) दातुमर्हं सुखम् (**वयम्**) (**देवेषु**) विद्वत्सु (**सुकृतः**)

धर्म्मकर्माचरणाः **(स्याम)** **(शर्मणा)** गृहेण **(नः)** **(त्रिवरूथेन)** त्रिषु वर्षाहेमन्तग्रीष्मसमयेषु वरूथेन वरेण **(पाहि)**॥८॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनो त्रिषधस्थाग्ने! त्वमस्माकं हव्यमध्वरं जुषस्व त्रिवरूथेन शर्मणा सह नोऽस्मान्त्सततं पाहि यतो वयं देवेषु सुकृतः स्याम॥८॥

**भावार्थः**-सर्वे जना राजानं प्रतीदं ब्रूयुर्हे राजँस्त्वमस्माकं पालनं यथावत्कुरु त्वद्रक्षिता वयं सततं धर्माचारिणो भूत्वा तवोन्नतिं यथा कुर्याम॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः, सूनो)** बलवान् और अतिकालपर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य को धारण किये हुए जन के पुत्र और **(त्रिषधस्थ)** तीन अर्थात् प्रजा, भृत्य और अपने कुटुम्ब के जनों के साथ पक्षपात छोड़ के रहने वाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी वर्त्तमान राजन्! आप **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(हव्यम्)** देने योग्य सुख और **(अध्वरम्)** पालनरूप व्यवहार का **(जुषस्व)** सेवन करो और **(त्रिवरूथेन)** वर्षा, शीत और ग्रीष्मकाल में श्रेष्ठ **(शर्मणा)** गृह के साथ **(नः)** हम लोगों का निरन्तर **(पाहि)** पालन करो जिससे **(वयम्)** हम लोग **(देवेषु)** विद्वानों में **(सुकृतः)** धर्म्मसम्बन्धी कर्म्म करने वाले **(स्याम)** होवें॥८॥

**भावार्थः**-सब जन राजा के प्रति यह कहें कि हे राजन्! आप हम लोगों का पालन यथावत् करिये, आपसे रक्षित हम लोग निरन्तर धर्माचरणयुक्त होकर आपकी उन्नति को जैसे [=जिस प्रकार] करें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वा॑नि नो दु॒र्गहा॑ जातवेदः॒ सिन्धुं॒ न ना॒वा दु॑रि॒ताति॑ पर्षि।**

**अग्ने॑ अत्रि॒वन्नम॑सा गृणा॒नो॑३॒॑स्माकं॑ बोध्यवि॒ता त॒नूना॑म्॥९॥**

**विश्वा॑नि। नः॒। दुः॒ऽगहा॑। जा॒तऽवे॒दः॒। सिन्धु॑म्। न। ना॒वा। दुः॒ऽइ॒ता। अति॑। प॒र्षि॒। अग्ने॑। अ॒त्रि॒ऽवत्। नम॑सा। गृ॒णा॒नः। अ॒स्माक॑म्। बो॒धि॒। अ॒वि॒ता। त॒नूना॑म्॥९॥**

**पदार्थः**-**(विश्वानि)** अखिलानि **(नः)** अस्माकम् **(दुर्गहा)** दुःखेन पारं गन्तुं योग्यानि **(जातवेदः)** जातविद्य **(सिन्धुम्)** नदीं समुद्रं वा **(न)** इव **(नावा)** नौकया **(दुरिता)** दुःखेन प्राप्तुं योग्यानि **(अति)** **(पर्षि)** पारयसि **(अग्ने)** धर्मिष्ठ राजन् **(अत्रिवत्)** अत्रयः सततं गन्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(गृणानः)** स्तुवन् **(अस्माकम्)** **(बोधि)** बुध्यसे **(अविता)** रक्षकः **(तनूनाम्)** शरीराणाम्॥९॥

**अन्वयः**-हेऽत्रिवज्जातवेदोऽग्ने! यतस्त्वं नावा सिन्धुं न नो विश्वानि दुर्गहा दुरिताति पर्षि। नमसा गृणानोऽस्माकं तनूनामविता सन् बोधि तस्मात् सततं सेवनीयोऽसि॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजाऽध्यापकोपदेशकाः सर्वान् जनान् दुःखात् पारयन्ति तेऽतुलं सुखं लभन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अत्रिवत्)** निरन्तर चलने वालों से युक्त **(जातवेदः)** विद्याओं से सम्पन्न **(अग्ने)** धर्मिष्ठ राजन्! जिससे आप **(नावा)** नौका से **(सिन्धुम्)** नदी वा समुद्र को **(न)** जैसे वैसे **(नः)** हम लोगों के **(विश्वानि)** समस्त **(दुर्गहा)** दुःख से पार जाने को योग्य और **(दुरिता)** दुःख से प्राप्त होने योग्यों के भी **(अति, पर्षि)** पार जाते हो **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(गृणानः)** स्तुति करते हुए **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(तनूनाम्)** शरीरों के **(अविता)** रक्षक होते हुए **(बोधि)** जानते हो, इससे निरन्तर सेवा करने योग्य हो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा अध्यापक और उपदेशक जन सब लोगों को दुःख से पार पहुँचाते हैं, वे अतुल सुख को प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।**

**जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्॥१०॥**

**यः। त्वा। हृदा। कीरिणा। मन्यमानः। अमर्त्यम्। मर्त्यः। जोहवीमि। जातऽवेदः। यशः। अस्मासु। धेहि। प्रजाभिः। अग्ने। अमृतऽत्वम्। अश्याम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(त्वा)** त्वाम् **(हृदा)** **(कीरिणा)** स्तावकेन। **कीरिरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६)। **(मन्यमानः)** विजानन् **(अमर्त्यम्)** मरणधर्मरहितम् **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(जोहवीमि)** भृशं स्पर्द्धे **(जातवेदः)** जातविज्ञान **(यशः)** कीर्त्तिम् **(अस्मासु)** **(धेहि)** **(प्रजाभिः)** पालनीयाभिस्सह **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान राजन् **(अमृतत्वम्)** मोक्षभावम् **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! यो मन्यमानो मर्त्योऽहं हृदा कीरिणामर्त्यं त्वा जोहवीमि यथा प्रजाभिः सहाऽमृतत्वमश्यां तथाऽस्मासु यशो धेहि॥१०॥

**भावार्थः**-यथा प्रजा राजहितं साध्नुवन्ति तथैव राजा प्रजासुखमिच्छेदेवं परस्परप्रीत्याऽतुलं सुखं प्राप्नुवन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** विज्ञान से युक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान राजन्! **(यः)** जो **(मन्यमानः)** जानता हुआ **(मर्त्यः)** मनुष्य मैं **(हृदा)** अन्तःकरण और **(कीरिणा)** स्तुति करने वाले से **(अमर्त्यम्)** मरणधर्म से रहित **(त्वा)** आपकी **(जोहवीमि)** अत्यन्त स्पर्द्धा करूं और जैसे **(प्रजाभिः)** पालन करने योग्य प्रजाओं के साथ **(अमृतत्वम्)** मोक्षभाव को **(अश्याम्)** प्राप्त होऊँ, वैसे **(अस्मासु)** हम लोगों में **(यशः)** कीर्त्ति को **(धेहि)** धरिये, स्थापन कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-जैसे प्रजायें राजा के हित को सिद्ध करती हैं, वैसे ही राजा प्रजा के सुख की इच्छा करें। इस प्रकार परस्पर प्रीति से अतुल सुख को प्राप्त होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम्।**
**अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति॥११॥१९॥**

**यस्मै। त्वम्। सुऽकृते। जातऽवेदः। ऊँ इति। लोकम्। अग्ने। कृणवः। स्योनम्। अश्विनम्। सः। पुत्रिणम्। वीरऽवन्तम्। गोऽमन्तम्। रयिम्। नशते। स्वस्ति॥११॥**

**पदार्थः**-**(यस्मै)** **(त्वम्)** **(सुकृते)** धर्मात्मने **(जातवेदः)** जातप्रज्ञ **(उ)** **(लोकम्)** द्रष्टव्यम् **(अग्ने)** विद्वन् **(कृणवः)** करोषि **(स्योनम्)** सुखकारणम् **(अश्विनम्)** प्रशस्ताश्वादियुक्तम् **(सः)** **(पुत्रिणम्)** प्रशस्तपुत्रयुक्तम् **(वीरवन्तम्)** बहुवीराढ्यम् **(गोमन्तम्)** बहुगवादिसहितम् **(रयिम्)** धनम् **(नशते)** प्राप्नोति **(स्वस्ति)** सुखमयम्॥११॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! त्वं यस्मै सुकते स्योनं लोकं कृणवः स उ अश्विनं पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं स्वस्ति रयिं नशते॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् विद्याविनयाभ्यां प्रजाः पुत्राद्यैश्वर्ययुक्ताः कुर्यात् तर्हीमाः प्रजा भवन्तमतिमन्येरन्निति॥११॥

अत्र राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्थं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** बुद्धि से युक्त **(अग्ने)** विद्वन् **(त्वम्)** आप **(यस्मै)** जिस **(सुकृते)** धर्मात्मा के लिये **(स्योनम्)** सुख का कारण **(लोकम्)** देखने योग्य **(कृणवः)** करते हो **(सः, उ)** वही **(अश्विनम्)** अच्छे घोड़े आदि पदार्थों **(पुत्रिणम्)** अच्छे पुत्रों **(वीरवन्तम्)** बहुत वीरों तथा **(गोमन्तम्)** बहुत गौ आदिकों के सहित **(स्वस्ति)** सुखस्वरूप **(रयिम्)** धन को **(नशते)** प्राप्त होता है॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप विद्या और विनय से प्रजाओं को पुत्र आदि ऐश्वर्य्यों से युक्त करें तो ये प्रजायें आपका अति सत्कार करें॥११॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौथा सूक्त और उन्नीसवाँ समाप्त हुआ॥**

**अथैकादशर्चस्य पञ्चमस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। आप्री देवता। १, ५, ६, ७, ९, १० गायत्री। ३, ८ निचृद्गायत्री। ११ विराड्गायत्री। ४ पिपीलिकामध्या गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

*अथ विद्वद्विषयमाह॥*

अब ग्यारह ऋचा वाले पञ्चम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे॥ १॥**

**सुऽसमिद्धाय। शोचिषे। घृतम्। तीव्रम्। जुहोतन। अग्नये। जातऽवेदसे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सुसमिद्धाय**) सुप्रदीप्ताय (**शोचिषे**) पवित्रकराय (**घृतम्**) आज्यम् (**तीव्रम्**) सुशोधितम् (**जुहोतन**) (**अग्नये**) पावकाय (**जातवेदसे**) जातेषु विद्यमानाय॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं जातवेदसे सुसमिद्धाय शोचिषेऽग्नये तीव्रं घृतं जुहोतन॥ १॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकाः शुद्धान्तःकरणेषु विद्यां वपन्ति ते सूर्य इव प्रतापयुक्ता भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**जातवेदसे**) उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान (**सुसमिद्धाय**) उत्तम प्रकार प्रदीप्त और (**शोचिषे**) पवित्र करने वाले (**अग्नये**) अग्नि के लिये (**तीव्रम्**) उत्तम प्रकार शुद्ध अर्थात् साफ किये (**घृतम्**) घृत का (**जुहोतन**) होम करो॥ १॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक जन पवित्र अन्तःकरण वालों में विद्या का संस्कार डालते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रताप से युक्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय कहते हैं॥

**नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः॥ २॥**

**नराशंसः। सुसूदति। इमम्। यज्ञम्। अदाभ्यः। कविः। हि। मधुऽहस्त्यः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**नराशंसः**) यो नरैः प्रशस्यते (**सुषूदति**) अमृतं क्षरति (**इमम्**) (**यज्ञम्**) विद्याप्रचाराख्यं व्यवहारम् (**अदाभ्यः**) निष्कपटः (**कविः**) मेधावी (**हि**) यतः (**मधुहस्त्यः**) मधुहस्तेषु साधुः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽदाभ्यो मधुहस्त्यो नराशंसः कविर्जनो हीमं यज्ञं सुषूदत्यतः सोऽलंसुखो जायते॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यथा गौः सर्वेषां सुखाय दुग्धं क्षरति तथा सर्वेषां सुखाय सत्यविद्योपदेशान् सततं वर्षय॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अदाभ्यः**) निष्कपट (**मधुहस्त्यः**) मधुर हस्त वालों में श्रेष्ठ (**नराशंसः**) मनुष्यों से प्रशंसा किया गया (**कविः**) बुद्धिमान् जन (**हि**) जिस कारण (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) विद्या के

प्रचारनामक व्यवहार को **(सुषूदति)** अमृत के सदृश टपकाता है, इस कारण वह पूर्ण सुखयुक्त होता है॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वान्! जैसे गौ सब के सुख के लिये दुग्ध देती है, वैसे सब के सुख के लिये सत्यविद्या के उपदेशों को निरन्तर वर्षाइये॥२॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को कहते हैं॥

**ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम्। सुखै रथेभिरूतये॥३॥**

**ईळितः। अग्ने। आ। वह। इन्द्रम्। चित्रम्। इह। प्रियम्। सुऽखैः। रथेभिः। ऊतये॥३॥**

**पदार्थः**-**(ईळितः)** प्रशंसितः **(अग्ने)** प्रकाशात्मन् **(आ)** **(वह)** समन्तात् प्राप्नुहि **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(इह)** संसारे **(प्रियम्)** कमनीयम् **(सुखैः)** सुखकारकैः **(रथेभिः)** यानैः **(ऊतये)** रक्षणाद्याय॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ईळितस्त्वमिह सुखै रथेभिरूतये चित्रं प्रियमिन्द्रमा वह॥३॥

**भावार्थः**-राजँस्त्वं महैश्वर्य्यं प्राप्य प्रजारक्षणाय सर्वत्र भ्रम॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** आत्मप्रकाशस्वरूप **(ईळितः)** प्रशंसा किये गये आप **(इह)** इस संसार में **(सुखैः)** सुखकारक **(रथेभिः)** वाहनों से **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(चित्रम्)** अद्भुत **(प्रियम्)** मनोहर **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होके प्रजा के रक्षण के लिये सर्वत्र भ्रमण कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय कहते हैं॥

**ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्यर्का अनूषत। भवा नः शुभ्र सातये॥४॥**

**ऊर्णऽम्रदाः। वि। प्रथस्व। अभि। अर्काः। अनूषत। भव। नः। शुभ्र। सातये॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऊर्णम्रदाः)** य ऊर्णं रक्षकैर्मृद्नन्ति **(वि)** **(प्रथस्व)** प्रख्याहि **(अभि)** **(अर्काः)** मन्त्रार्थविदः **(अनूषत)** **(भवा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(शुभ्र)** शुद्धाचरण **(सातये)** दायविभागाय॥४॥

**अन्वयः**-हे शुभ्र राजँस्त्वं सातये वि प्रथस्व नोऽस्मभ्यं सुखकारी भवा। हे ऊर्णम्रदा अर्का! यूयं नोऽस्मान्त्सर्वा विद्या अभ्यनूषत॥४॥

**भावार्थः**-राजा राजपुरुषाश्च विभज्य स्वमंशं गृह्णीयुः प्रजाभागाँश्च प्रजाभ्यो दद्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(शुभ्र)** शुद्ध आचरण करने वाले राजन्! आप **(सातये)** दाय विभाग के लिये **(वि, प्रथस्व)** प्रसिद्ध कीजिये और हम लोगों के लिये सुखकारी **(भवा)** हूजिये। हे **(ऊर्णम्रदाः)** रक्षकों के सहित मर्दन करने और **(अर्काः)** मन्त्र और अर्थ के जानने वाले आप लोगो **(नः)** हम लोगों को सम्पूर्ण विद्याओं से सम्पन्न **(अभि, अनूषत)** कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-राजा और राजपुरुष विभाग करके अपने-अपने अंश अर्थात् हिस्से को ग्रहण करें और प्रजाओं के भाग प्रजाओं के लिये देवें॥४॥

**अथ गृहाश्रमविषयमाह॥**

अब गृहाश्रमविषय को कहते हैं॥

## देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा नं ऊतये। प्रप्रं यज्ञं पृणीतन॥५॥ २०॥

**देवीः। द्वारः। वि। श्रयध्वम्। सुऽप्रऽअयनाः। नः। ऊतये। प्रऽप्र। यज्ञम्। पृणीतन॥५॥**

**पदार्थः**-**(देवीः)** दिव्याः शुद्धाः **(द्वारः)** द्वाराणीव सुखनिमित्ताः **(वि)** **(श्रयध्वम्)** विशेषेण सेवध्वम् **(सुप्रायणाः)** सुष्ठु प्रकृष्टमयनं गमनं याभ्यस्ताः **(नः)** अस्माकम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(प्रप्र)** **(यज्ञम्)** गृहाश्रमव्यवहारम् **(पृणीतन)** अलं कुरुत॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुषा! यूयं सुप्रायणा देवीर्द्वार इवोत्तमाः पत्नीर्वि श्रयध्वं न ऊतये यज्ञं प्रप्र पृणीतन॥५॥

**भावार्थः**-यदि तुल्यगुणकर्म्मस्वभावाः स्त्रीपुरुषा विवाहं कृत्वा गृहाश्रमारभेरंस्तर्हि पूर्णं सुखं लभेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे पुरुषो! तुम **(सुप्रायणाः)** उत्तम प्रकार गृहों में प्रवेश हो जिनसे ऐसी **(देवीः)** श्रेष्ठ और शुद्ध **(द्वारः)** द्वारों के सदृश सुख की कारणभूत उत्तम स्त्रियों का **(वि, श्रयध्वम्)** विशेष करके सेवन करो और **(नः)** हम लोगों के **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(यज्ञम्)** गृहाश्रमव्यवहार को **(प्रप्र, पृणीतन)** पुष्ट करो॥५॥

**भावार्थः**-यदि तुल्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले स्त्री-पुरुष विवाह करके गृहाश्रम का आरम्भ करें तो पूर्ण सुख पावें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

## सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्यं मातरां। दोषामुषासमीमहे॥६॥

**सुप्रतीके इति सुऽप्रतीके। वयःऽवृधा। यह्वी इति। ऋतस्य। मातरां। दोषाम्। उषसम्। ईमहे॥६॥**

**पदार्थः**-**(सुप्रतीके)** सुष्ठु प्रतीतिकरे **(वयोवृधा)** ये वयः कमनीयं जीवनं वर्धयतः **(यह्वी)** महत्यौ **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(मातरा)** मान्यप्रदे **(दोषाम्)** रात्रीम् **(उषासम्)** दिनम्। अत्रान्येषामपीति दीर्घः। **(ईमहे)** याचामहे॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा दोषामुषासमीमहे तथैते यूयमपि याचध्वम्॥६॥

**भावार्थः**-यथा रात्रिदिने सहैव वर्त्तेते तथैव कृतविवाहौ स्त्रीपुरुषौ वर्त्तेयाताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(सुप्रतीके)** उत्तम विश्वास करने **(वयोवृधा)** सुन्दर जीवन को बढ़ाने और **(यह्वी)** बड़े **(ऋतस्य)** सत्य के **(मातरा)** आदर देने वाले **(दोषाम्)** रात्रि और **(उषासम्)** दिन की **(ईमहे)** याचना करते हैं, वैसे इन की आप लोग भी याचना करो॥६॥

**भावार्थः**-जैसे रात्रि और दिन एक साथ ही वर्त्तमान हैं, वैसे ही जिन्होंने विवाह किया, ऐसे स्त्री पुरुष वर्त्ताव करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### वात॑स्य पत्म॑न्नीळि॒ता दैव्या॒ होता॑रा॒ मनु॑षः। इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा ग॑तम्॥७॥

**वात॑स्य। पत्म॑न्। ई॒ळि॒ता। दैव्या॑। होता॑रा। मनु॑षः। इ॒मम्। नः॒। य॒ज्ञम्। आ। ग॒त॒म्॥७॥**

**पदार्थः**-**(वातस्य)** वायोः **(पत्मन्)** पतन्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् **(ईळिता)** प्रशंसितौ **(दैव्या)** देवेषु दिव्यगुणेषु भवौ **(होतारा)** दातारौ **(मनुषः)** मनुष्यान् **(इमम्)** **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् **(आ)** **(गतम्)** आगच्छतम्॥७॥

**अन्वयः**-हे ईळिता दैव्या होतारा! युवां वातस्य पत्मन्निमं यज्ञं मनुषश्चाऽऽगतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषौ! युवां धर्म्यकर्माचरणेन प्रशंसितौ भूत्वेतं गृहाश्रमव्यवहारं साध्नुतम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(ईळिता)** प्रशंसित **(दैव्या)** श्रेष्ठ गुणों में उत्पन्न **(होतारा)** दाता जनो! आप दोनों **(वातस्य)** वायु के **(पत्मन्)** गिरते हैं जिसमें उस मार्ग में **(नः)** हम लोगों के **(इमम्)** इस **(यज्ञम्)** मिलने योग्य व्यवहार को **(मनुषः)** और मनुष्यों को **(आ, गतम्)** प्राप्त होवें॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्री-पुरुषो! आप दोनों धर्म्मसम्बन्धी कर्म्म के आचरण से प्रशंसित होकर इस गृहाश्रमव्यवहार को सिद्ध करो॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### इळा॒ सर॑स्वती म॒ही ति॒स्रो दे॒वीर्म॑यो॒भुव॑ः। ब॒र्हिः सी॑दन्त्व॒स्रिध॑ः॥८॥

**इळा॑। सर॑स्वती। म॒ही। ति॒स्रः। दे॒वीः। म॒यः॒ऽभुव॑ः। ब॒र्हिः। सी॒द॒न्तु॒। अ॒स्रिध॑ः॥८॥**

**पदार्थः**-**(इळा)** प्रशंसिता विद्या **(सरस्वती)** वाक् **(मही)** भूमिः **(तिस्रः)** **(देवीः)** दिव्यगुणाः **(मयोभुवः)** सुखं भावुकाः **(बर्हिः)** उत्तमं गृहाश्रमम् **(सीदन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(अस्रिधः)** अहिंस्राः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽस्रिध इळा सरस्वती मही मयोभुवस्तिस्रो देवीर्बर्हिः सीदन्तु तथैव यूयमपि

सीदत॥८॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषा! यूयं विद्यां सुशिक्षितां वाचं भूमिराज्यं च सुखाय प्राप्नुत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अस्रिधः)** नहीं नाश करने वाली **(इळा)** प्रशंसित विद्या **(सरस्वती)** वाणी **(मही)** भूमि **(मयोभुवः)** सुख को कराने वाली **(तिस्रः)** तीन **(देवीः)** श्रेष्ठ गुणवती **(बर्हिः)** उत्तम गृहाश्रम को **(सीदन्तु)** प्राप्त हों, वैसे ही आप लोग भी प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-हे स्त्री और पुरुषो! आप लोग विद्या उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी और भूमि के राज्य को सुख के लिये प्राप्त हूजिये॥८॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अब राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना। यज्ञेयज्ञे न उदव॥९॥**

**शिवः। त्वष्टः। इह। आ। गहि। विऽभुः। पोषे। उत। त्मना। यज्ञेऽयज्ञे। नः। उत्। अव॥९॥**

**पदार्थः**-**(शिवः)** मङ्गलकारी **(त्वष्टः)** सर्वदुःखछेत्तः **(इह)** अस्मिँस्थले **(आ)** **(गहि)** **(विभुः)** व्यापकः परमेश्वर इव **(पोषे)** पुष्यन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(उत)** **(त्मना)** आत्मना **(यज्ञेयज्ञे)** सङ्गन्तव्ये व्यवहारे **(नः)** अस्मान् **(उत्)** **(अव)** उत्कृष्टतया रक्ष॥९॥

**अन्वयः**-हे त्वष्टा राजन्निह पोषे विभुरिव शिवः सँस्त्मना यज्ञेयज्ञे आ गहि उत न उदव॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं परमेश्वरवद्वर्त्तित्वा सर्वेषां कल्याणं कुरुत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(त्वष्टः)** सब दुःखों के नाश करने वाले राजन्! **(इह)** इस स्थल में **(पोषे)** कि जिसमें पुष्ट हों **(विभुः)** व्यापक परमेश्वर के सदृश **(शिवः)** मङ्गलकारी होते हुए **(त्मना)** आत्मा से **(यज्ञेयज्ञे)** मेल करने योग्य व्यवहार में **(आ, गहि)** प्राप्त होओ **(उत)** और **(नः)** हम लोगों की **(उत्, अव)** उत्तम प्रकार रक्षा करो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग परमेश्वर के सदृश वर्त्ताव करके सब के कल्याण को करो॥९॥

**अथ विद्याग्रहणविषयमाह॥**

अब विद्याग्रहणविषय को कहते हैं॥

**यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि। तत्र हव्यानि गामय॥१०॥**

**यत्र। वेत्थ। वनस्पते। देवानाम्। गुह्या। नामानि। तत्र। हव्यानि। गमय॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** अस्मिन् **(वेत्थ)** जानासि **(वनस्पते)** वनस्य पालक **(देवानाम्)** **(गुह्या)** गुप्तानि **(नामानि)** **(तत्र)** **(हव्यानि)** दातुमादातुमर्हाणि वस्तूनि **(गामय)** प्रापय। अत्र **तुजादीनामिति** दीर्घः॥१०॥

**अन्वयः**-हे वनस्पते! त्वं यत्र देवानां गुह्या नामानि वेत्थ तत्र हव्यानि गामय॥१०॥

**भावार्थः**-ये विदुषामन्तःस्थानि विद्याप्रभावेन जातानि नामानि जानन्ति ते पुष्कलं सुखं जनान् प्रापयन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(वनस्पते)** वन के पालन करने वाले आप **(यत्र)** जिसमें **(देवानाम्)** विद्वानों के **(गुह्या)** गुप्त **(नामानि)** नाम **(वेत्थ)** जानते हैं **(तत्र)** वहाँ **(हव्यानि)** देने और लेने योग्य वस्तुओं को **(गामय)** पहुंचाइये॥१०॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के हृदयों में स्थित और विद्या के प्रभाव से उत्पन्न हुए नामों को जानते हैं, वे बहुत सुख मनुष्यों को प्राप्त कराते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः। स्वाहा देवेभ्यो हविः॥११॥२१॥**

**स्वाहा। अग्नये। वरुणाय। स्वाहा। इन्द्राय। मरुत्ऽभ्यः। स्वाहा। देवेभ्यः। हविः॥११॥**

**पदार्थः**-**(स्वाहा)** सत्या वाक् **(अग्नये)** विद्युदादिविद्यायै **(वरुणाय)** श्रेष्ठाय **(स्वाहा)** सत्या क्रिया **(इन्द्राय)** ऐश्वर्याय **(मरुद्भ्यः)** मनुष्येभ्यः **(स्वाहा)** सत्क्रिया **(देवेभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(हविः)** दातव्यवस्तु॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्वरुणायाग्नये स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः स्वाहा देवेभ्यो हविः स्वाहा प्रयोक्तव्या॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्या विद्यासत्क्रियाभ्यामग्निविद्यां गृहीत्वा विदुषः सत्कृत्य मनुष्याणां हितं सततं कुर्वन्त्विति॥११॥

अत्र विद्वद्राजगृहाश्रमराजप्रजाविषयविद्याग्रहणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को चाहिये कि **(वरुणाय)** श्रेष्ठ के और **(अग्नये)** बिजुली आदि की विद्या के लिये **(स्वाहा)** सत्य वाणी **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य और **(मरुद्भ्यः)** मनुष्यों के लिये **(स्वाहा)** सत्य क्रिया तथा **(देवेभ्यः)** विद्वानों के लिये **(हविः)** देने योग्य वस्तु और **(स्वाहा)** श्रेष्ठ कर्म्म का प्रयोग करो॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्य विद्या और श्रेष्ठ कर्म्म से अग्नि की विद्या को ग्रहण कर विद्वानों का सत्कार करके मनुष्यों के हित को निरन्तर करें॥११॥ इस सूक्त में विद्वान्, राजा, गृहाश्रम, राजप्रजाविषय और विद्याग्रहण का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पांचवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ दशर्चस्य षष्ठस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः। २, ५ पङ्क्तिः। ७ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४ स्वराड्बृहती। ६, १० भुरिग्बृहतीछन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब दश ऋचा वाले छठे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं तं म॑न्ये॒ यो वसु॒रस्तं॒ यं यन्ति॑ धे॒नवः॑।**

**अस्त॒मर्व॑न्त आ॒शवोऽस्तं॒ नित्या॑सो वा॒जिन॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥१॥**

अ॒ग्निम्। तम्। म॒न्ये॒। यः। वसुः॑। अस्त॑म्। यम्। यन्ति॑। धे॒नवः॑। अस्त॑म्। अर्व॑न्तः। आ॒शवः॑। अस्त॑म्। नित्या॑सः। वा॒जिनः॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥१॥

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**तम्**) (**मन्ये**) (**यः**) (**वसुः**) सर्वत्र वस्ता (**अस्तम्**) प्रक्षिप्तं प्रेरितम् (**यम्**) (**यन्ति**) (**धेनवः**) गावः (**अस्तम्**) (**अर्वन्तः**) गच्छन्तः (**आशवः**) आशुगामिनः पदार्थाः (**अस्तम्**) (**नित्यासः**) अविनाशिनः (**वाजिनः**) वेगवन्तः (**इषम्**) अन्नम् (**स्तोतृभ्यः**) स्तावकेभ्यः (**आ**) (**भर**) धर॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो वसुर्यमस्तमग्निं धेनवो यमस्तमर्वन्त आशवो नित्यासो वाजिनो यमस्तं यन्ति तमहं मन्ये तद्विद्यया त्वं स्तोतृभ्य इषमा भर॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि भवन्तो विद्युदादिरूपं सर्वत्राऽभिव्याप्तमग्निं युक्त्या चालयेयुस्तर्ह्ययं स्वयं वेगवान् भूत्वाऽन्यान्यपि सद्यो गमयति॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**वसुः**) सब स्थानों में रहने वाला (**यम्**) जिस (**अस्तम्**) फेंके अर्थात् काम में लाये गये (**अग्निम्**) अग्नि को और (**धेनवः**) गौएँ जिस (**अस्तम्**) प्रेरणा किये गये को तथा (**अर्वन्तः**) जाते हुए और (**आशवः**) शीघ्र चलने वाले पदार्थ और (**नित्यासः**) नहीं नाश होने वाले (**वाजिनः**) वेग से युक्त पदार्थ जिस (**अस्तम्**) प्रेरणा किये गये को (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**तम्**) उसको मैं (**मन्ये**) मानता हूँ, उसकी विद्या से आप (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये (**इषम्**) अन्न को (**आ, भर**) अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यदि आप बिजुली आदि रूपवान् और सब कहीं अभिव्याप्त अग्नि को युक्ति से चलावें तो यह स्वयं वेगवान् होकर औरों को भी शीघ्र चलाता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सो अ॒ग्निर्यो वसु॑र्गृ॒णे सं यमा॒यन्ति॑ धे॒नवः॑।**
**समर्व॑न्तो रघु॒द्रुवः॒ सं सु॑जा॒तासः॑ सू॒रय॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥२॥**

**सः। अ॒ग्निः। यः। वसुः॑। गृ॒णे। सम्। यम्। आ॒ऽयन्ति॑। धे॒नवः॑। सम्। अर्व॑न्तः। र॒घु॒ऽद्रुवः॑। सम्। सु॒ऽजा॒तासः॑। सू॒रयः॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**अग्निः**) (**यः**) (**वसुः**) द्रव्यस्वरूपः (**गृणे**) स्तौमि (**सम्**) (**यम्**) (**आयन्ति**) आगच्छन्ति (**धेनवः**) वाचः (**सम्**) (**अर्वन्तः**) वेगवन्तः (**रघुद्रुवः**) ये लघु द्रवन्ति ते (**सम्**) (**सुजातासः**) सम्यक् प्रसिद्धाः (**सूरयः**) विद्वांसः (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) अध्यापकेभ्यः (**आ**) (**भर**)॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो वसुर्यं धेनवः समायन्ति यं रघुद्रुवोऽर्वन्तः समायन्ति यं सुजातासः सूरयः समायन्ति यमहं गृणे सोऽग्निस्तत्प्रयोगेन स्तोतृभ्य इषमा भर॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तोऽग्न्यादिपदार्थविज्ञानेन पण्डिता भूत्वाऽध्यापकेभ्य ऐश्वर्य्यमुन्नयन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**वसुः**) धनरूप (**यम्**) जिसको (**धेनवः**) वाणियाँ (**सम्, आयन्ति**) अच्छे प्रकार प्राप्त होती हैं और जिसको (**रघुद्रुवः**) थोड़ा दौड़ने वाले (**अर्वन्तः**) वेगवान् पदार्थ (**सम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं और जिसको (**सुजातासः**) उत्तम प्रकार प्रसिद्ध (**सूरयः**) विद्वान् जन (**सम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं और जिसकी मैं (**गृणे**) प्रशंसा करता हूं (**सः**) वह (**अग्निः**) अग्नि है, उसके प्रयोग से (**स्तोतृभ्यः**) अध्यापकों के लिये (**इषम्**) अन्न को (**आ, भर**) सब प्रकार धारण कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थ के विज्ञान से चतुर होकर अध्यापकों के लिये ऐश्वर्य्य की प्राप्ति कराइये॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्हि वा॒जिनं॑ वि॒शे ददा॑ति वि॒श्वच॑र्षणिः।**
**अ॒ग्नी रा॒ये स्वा॒भुवं॒ स प्री॒तो या॑ति॒ वार्य॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥३॥**

**अ॒ग्निः। हि। वा॒जिन॑म्। वि॒शे। ददा॑ति। वि॒श्वऽच॑र्षणिः। अ॒ग्निः। रा॒ये। सु॒ऽआ॒भुव॑म्। सः। प्री॒तः। या॒ति॒। वार्य॑म्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥३॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) पावकः (**हि**) यतः (**वाजिनम्**) बहुवेगवन्तम् (**विशे**) प्रजायै (**ददाति**) (**विश्वचर्षणिः**) विश्वप्रकाशकः (**अग्निः**) (**राये**) धनाय (**स्वाभुवम्**) यः स्वयमाभवति तम् (**सः**) (**प्रीतः**) कमितः (**याति**) (**वार्यम्**) वरणीयम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो विश्वचर्षणिरग्निर्हि विशो वाजिनं ददाति योऽग्नी राये स्वाभुवं याति तद्विद्यया सः प्रीतः स्तोतृभ्यो वार्यमिषमा भर॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अग्निरेव सुसाधितः सन् सुखप्रदो भवति येन भवन्त ऐश्वर्यमुन्नयन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(विश्वचर्षणिः)** संसार का प्रकाश करने वाला **(अग्निः)** अग्नि **(हि)** जिससे **(विशे)** प्रजा के लिये **(वाजिनम्)** बहुत वेग वाले को **(ददाति)** देता है और जो **(अग्निः)** अग्नि **(राये)** धन के लिये **(स्वाभुवम्)** स्वयं उत्पन्न होने वाले को **(याति)** प्राप्त होता है, उस विद्या से **(सः)** वह आप **(प्रीतः)** कामना किये गये **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य **(इषम्)** अन्न आदि का **(आ, भर)** धारण कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अग्नि ही उत्तम प्रकार साधित किया गया सुख देने वाला होता है, जिससे आप लोग ऐश्वर्य की वृद्धि करो॥३॥

**अथाग्निविद्याविद्विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निविद्या के जानने वाले विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**आ ते॑ अग्न इधीमहि द्युमन्तं॑ देवा॒जर॑म्।**

**यद्ध॒ स्या ते॒ पनी॑यसी स॒मिद्दी॒दय॑ति॒ द्यवी॑षं॒ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥४॥**

**आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। इ॒धी॒म॒हि॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। दे॒व॒। अ॒जर॑म्। यत्। ह॒। स्या। ते॒। पनी॑यसी। स॒म्ऽइत्। दी॒दय॑ति। द्यवि॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्य॑ः। आ। भ॒र॥४॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(ते)** तव **(अग्ने)** विद्वन् **(इधीमहि)** प्रदीपयेम **(द्युमन्तम्)** दीप्तिमन्तम् **(देव)** सुखप्रदातः **(अजरम्)** जरारहितम् **(यत्)** या **(ह)** किल **(स्या)** सा **(ते)** तव **(पनीयसी)** अतीव प्रशंसनीया **(समित्)** प्रदीप्ता **(दीदयति)** प्रदीप्यते **(द्यवि)** प्रकाशे **(इषम्)** अन्नादिकम् **(स्तोतृभ्यः)** **(आ)** **(भर)**॥४॥

**अन्वयः**-हे देवाऽग्ने! त्वं द्युमन्तमजरमग्निं प्रदीपयसि यद्या ते पनीयसी समित् स्या ते द्यवि दीदयति येन स्तोतृभ्य इषं ह वयमेधीमहि तया स्तोतृभ्य इषं त्वमा भर॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यामग्न्यादिविद्यां भवाञ्जानाति यया भवतः प्रशंसा जायते तामस्मान् बोधय॥४॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** सुख के देने वाले **(अग्ने)** विद्वन् आप **(द्युमन्तम्)** प्रकाशित **(अजरम्)** जरावस्था से रहित अग्नि को प्रज्वलित करते हो और **(यत्)** जो **(ते)** आपकी **(पनीयसी)** अतीव प्रशंसा करने योग्य **(समित्)** समिध है **(स्या)** वह **(ते)** आपके **(द्यवि)** प्रकाश में **(दीदयति)** प्रज्वलित की जाती है और जिससे **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न आदि को **(ह)** निश्चय से हम लोग **(आ, इधीमहि)** प्रकाशित करें, उससे स्तुति करने वालों के लिये अन्न आदि को आप **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिस अग्नि आदि की विद्या को आप जानते हैं और जिस विद्या से आपकी प्रशंसा होती है, उसका हम लोगों को बोध दीजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते।**

**सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर॥५॥२२॥**

**आ। ते। अग्ने। ऋचा। हविः। शुक्रस्य। शोचिषः। पते। सुऽचन्द्र। दस्म। विश्पते। हव्यऽवाट्। तुभ्यम्। हूयते। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥५॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(ते)** तव **(अग्ने)** विद्वन् **(ऋचा)** प्रशंसया **(हविः)** होतव्यम् **(शुक्रस्य)** शुद्धस्य **(शोचिषः)** प्रकाशस्य **(पते)** स्वामिन् **(सुश्चन्द्र)** शोभनं चन्द्रं हिरण्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ **(दस्म)** दुःखोपक्षयितः **(विश्पते)** प्रजापालक **(हव्यवाट्)** यो हव्यं दातव्यं वहति प्राप्नोति **(तुभ्यम्)** **(हूयते)** दीयते **(इषम्)** अन्नम् **(स्तोतृभ्यः)** **(आ)** **(भर)**॥५॥

**अन्वयः-**हे शोचिषस्पते सुश्चन्द्र दस्म विश्पतेऽग्ने राजञ्छुक्रस्य ते ऋचा हविराहूयते। हे हव्यवाट्! तुभ्यं सुखं दीयते स त्वं स्तोतृभ्य इषमा भर॥५॥

**भावार्थः-**ये विद्वांसोऽग्न्यादिभ्यः कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सिद्धकामा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः-**हे **(शोचिषः, पते)** प्रकाश के स्वामिन् **(सुश्चन्द्र)** अच्छे सुवर्ण से युक्त **(दस्म)** दुःख के नाश करने वाले **(विश्पते)** प्रजाओं के पालक **(अग्ने)** विद्वान् राजन्! **(शुक्रस्य)** शुद्ध **(ते)** आपकी **(ऋचा)** प्रशंसा से **(हविः)** देने योग्य पदार्थ **(आ)** सब प्रकार से **(हूयते)** दिया जाता है और हे **(हव्यवाट्)** देने योग्य वस्तु के देने वाले! **(तुभ्यम्)** आपके लिये सुख दिया जाता है, वह आप **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः-**जो विद्वान् लोग अग्नि आदिकों से कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, उनके काम सिद्ध होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम्।**

**ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्यानुषगिषं स्तोतृभ्य आ भर॥६॥**

**प्रो इति। त्ये। अग्नयः। अग्निषु। विश्वम्। पुष्यन्ति। वार्यम्। ते। हिन्विरे। ते। इन्विरे। ते। इषण्यन्ति। आनुषक्। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥६॥**

**पदार्थः**-(**प्रो**) (**त्ये**) ते (**अग्नयः**) पावकाः (**अग्निषु**) अग्न्यादिपदार्थेषु (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**पुष्यन्ति**) (**वार्यम्**) वरणीयम् (**ते**) (**हिन्विरे**) वर्द्धयन्ति (**ते**) (**इन्विरे**) व्याप्नुवन्ति (**ते**) (**इषण्यन्ति**) अन्नादिकमिच्छन्ति (**आनुषक्**) आनुकूल्ये (**इषम्**) विज्ञानम् (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽग्नयोऽग्निषु वर्त्तन्ते त्ये वार्यं विश्वं प्रो पुष्यन्ति ते वार्यं हिन्विरे त इन्विरे ते साधकाः सन्ति तान् विदित्वा य आनुषगिषण्यन्ति तद्विद्यया स्तोतृभ्यस्त्वमिषमा भर॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पृथिव्यादिष्वग्न्यादयः पदार्थाः सन्ति तान् विदित्वा पुनरीश्वरं विजानीत॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अग्नयः**) अग्नि (**अग्निषु**) अग्नि आदि पदार्थों में वर्त्तमान हैं (**त्ये**) वे (**वार्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**विश्वम्**) सब जगत् को (**प्रो, पुष्यन्ति**) पुष्ट करते हैं (**ते**) वे स्वीकार करने योग्य पदार्थ की (**हिन्विरे**) वृद्धि कराते हैं (**ते**) वे (**इन्विरे**) व्याप्त होते हैं और (**ते**) वे कार्य्यों के सिद्ध करने वाले हैं, उनको जान के जो (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**इषण्यन्ति**) अन्न आदि की इच्छा करते हैं, उनकी विद्या से (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये आप (**इषम्**) विज्ञान को (**आ, भर**) धारण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पृथिवी आदि में अग्नि आदि पदार्थ हैं, उनको जान के फिर ईश्वर को जानो॥६॥

**पुनरग्निविद्योपदेशमाह॥**

फिर अग्निविद्या के उपदेश को कहते हैं॥

**तव त्ये अग्ने अर्चयो महि व्राधन्त वाजिनः।**

**ये पत्वभिः शफानां व्रजा भुरन्त गोनामिषं स्तोतृभ्य आ भर॥७॥**

**तव। त्ये। अग्ने। अर्चयः। महि। व्राधन्त। वाजिनः। ये। पत्वऽभिः। शफानाम्। व्रजा। भुरन्त। गोनाम्। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥७॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्ये**) ते (**अग्ने**) विद्वन् (**अर्चयः**) दीप्तयः (**महि**) महान्तः (**व्राधन्त**) वर्द्धन्ते (**वाजिनः**) वेगवन्तः (**ये**) (**पत्वभिः**) गमनैः (**शफानाम्**) खुराणाम् (**व्रजा**) वेगान् (**भुरन्त**) धरन्ति (**गोनाम्**) गवाम् (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये गोनां शफानां पत्वभिर्व्रजा भुरन्त ये मह्यर्चयो वाजिनो व्राधन्त त्ये तव कार्यसाधकाः सन्ति तद्विज्ञानेन स्तोतृभ्य इषमा भर॥७॥

**भावार्थः**-यथाश्वा गावश्च पद्भिर्धावन्ति तथैवाग्नेर्ज्योतींषि सद्यो गच्छन्ति येऽग्न्यादीन् सम्प्रयोक्तुं जानन्ति ते सर्वतो वर्द्धन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**ये**) जो (**गोनाम्**) गौओं के (**शफानाम्**) खुरों के (**पत्वभिः**) गमनों से (**व्रजा**) वेगों को (**भुरन्त**) धारण करते हैं और **[जो]** (**महि**) बड़े (**अर्चयः**) तेज (**वाजिनः**) वेग वाले

**(व्राधन्त)** बढ़ते हैं **(त्ये)** वे **(तव)** आपके कार्य सिद्ध करने वाले हैं, उनके विज्ञान से **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जैसे घोड़े और गाएँ पैरों से दौड़ती हैं, वैसे ही अग्नि के तेज शीघ्र चलते हैं और जो अग्न्यादिकों के संप्रयोग करने को जानते हैं, उन की सब प्रकार वृद्धि होती है॥७॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नवा नो अग्न आ भर स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः।**
**ते स्याम य आनृचुस्त्वादूतासो दमेदम इषं स्तोतृभ्य आ भर॥८॥**

नवाः। नः। अग्ने। आ। भर। स्तोतृऽभ्यः। सुऽक्षितीः। इषः। ते। स्याम। ये। आनृचुः। त्वाऽदूतासः। दमेऽदमे। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥८॥

**पदार्थः**-**(नवाः)** नवीनाः **(नः)** अस्मभ्यम् **(अग्ने)** राजन् **(आ)** **(भर)** **(स्तोतृभ्यः)** धार्मिकेभ्यो विद्वद्भ्यः **(सुक्षितीः)** शोभना क्षितयः पृथिव्यो मनुष्या वा यासु ताः **(इषः)** अन्नाद्याः **(ते)** **(स्याम)** **(ये)** **(आनृचुः)** अर्चामः **(त्वादूतासः)** त्वं दूतो येषां ते **(दमेदमे)** गृहेगृहे **(इषम्)** उत्तमामिच्छाम् **(स्तोतृभ्यः)** सुपात्रेभ्यो विपश्चिद्भ्यः **(आ)** **(भर)**॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये त्वादूतासो वयं त्वामानृचुस्तेभ्य नः स्तोतृभ्यस्त्वं सुक्षितीर्नवा इष आ भर येन ते वयमुत्साहिताः स्याम त्वं स्तोतृभ्यो दमेदम इषमा भर॥८॥

**भावार्थः**-स एव राजा श्रेयान् भवति य उत्तमान् भृत्यानतुलमैश्वर्यं सर्वसुखाय दधाति दूतचारैः सर्वस्य राजस्य सर्वं समाचारं विदित्वा यथायोग्यं प्रबन्धं करोति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! **(ये)** जो **(त्वादूतासः)** त्वादूतास अर्थात् आप दूत जिनके ऐसे हम लोग आपका **(आनृचुः)** सत्कार करते हैं उन **(नः)** हम **(स्तोतृभ्यः)** धार्मिक विद्वानों के लिये आप **(सुक्षितीः)** सुन्दर पृथिवी वा मनुष्य विद्यमान जिनमें ऐसे **(नवाः)** नवीन **(इषः)** अन्न आदि को **(आ, भर)** धारण कीजिये जिससे **(ते)** वे हम लोग उत्साहित **(स्याम)** होवें और आप **(स्तोतृभ्यः)** सुपात्र अर्थात् सज्जन विद्वानों के लिये **(दमेदमे)** घर-घर में **(इषम्)** उत्तम इच्छा को **(आ, भर)** धारण कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-वही राजा प्रशंसनीय होता है, जो [उत्तम] भृत्य और अतुल ऐश्वर्य्य को सब के सुख के लिये धारण करता है और दूत और चारों अर्थात् गुप्त संदेश देने वालों से सब राज्य का समाचार जान के यथायोग्य प्रबन्ध करता है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि।**

**उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर॥९॥**

**उभे इति। सुऽचन्द्र। सर्पिषः। दर्वी इति। श्रीणीषे। आसनि। उतो इति। नः। उत्। पुपूर्याः। उक्थेषु। शवसः। पते। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥९॥**

**पदार्थः**-(**उभे**) (**सुश्चन्द्र**) सुष्ठुसुवर्णाद्यैश्वर्य्य (**सर्पिषः**) घृतादेः (**दर्वी**) दृणाति याभ्यां ते पाकसाधने (**श्रीणीषे**) पचसि (**आसनि**) आस्ये (**उतो**) (**नः**) अस्मान् (**उत्**) (**पुपूर्याः**) अलङ्कुर्याः पालयेः (**उक्थेषु**) प्रशंसितेषु धर्म्येषु कर्मसु (**शवसः, पते**) बलस्य सैन्यस्य स्वामिन् (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) अध्यापकाध्येतृभ्यः (**आ**) (**भर**)॥९॥

**अन्वयः**-हे सुश्चन्द्र शवसस्पते! यतस्त्वमुभे दर्वी घटयित्वाऽऽसनि सर्पिषः श्रीणीष उतो तेन नोऽस्मानुत्पुपूर्याः स त्वमुक्थेषु स्तोतृभ्य इषमा भर॥९॥

**भावार्थः**-यो राजा सैन्यस्य भोजनप्रबन्धमुत्तममारोग्याय वैद्यान् रक्षति स एव प्रशंसितो भूत्वा राज्यं वर्धयति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**सुश्चन्द्र**) उत्तम सुवर्ण आदि ऐश्वर्य्य से युक्त (**शवसः, पते**) सेना के स्वामी! जो आप (**उभे**) दोनों (**दर्वी**) पाक करने के साधानों अर्थात् चम्मचों को इकट्ठे करके (**आसनि**) मुख में अर्थात् अग्निमुख में (**सर्पिषः**) घृत आदि का (**श्रीणीषे**) पाक करते हो (**उतो**) और उससे (**नः**) हम लोगों को (**उत्, पुपूर्याः**) उत्तमता से शोभित करें वा पालें वह आप (**उक्थेषु**) प्रशंसित धर्म्मसम्बन्धी कर्म्मों में (**स्तोतृभ्यः**) पढ़ाने और पढ़ने वालों के लिये (**इषम्**) अन्न का (**आ, भर**) धारण करें॥९॥

**भावार्थः**-जो राजा सेना के भोजन के उत्तम प्रबन्ध को आरोग्य के लिये वैद्यों को रखता है, वही प्रशंसित होकर राज्य बढ़ाता है॥९॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**एवाँ अग्निमजुर्यमुर्गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक्।**

**दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर॥१०॥२३॥**

**एव। अग्निम्। अजुर्यमुः। गीःऽभिः। यज्ञेभिः। आनुषक्। दधत्। अस्मे इति। सुऽवीर्यम्। उत। त्यत्। आशुऽअश्व्यम्। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥१०॥**

**पदार्थः**-(**एव**) (**अग्निम्**) पावकम् (**अजुर्यमुः**) प्रक्षिपेयुर्नियच्छेयुश्च (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**यज्ञेभिः**) सङ्गतैः कर्मभिः (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**दधत्**) दधाति (**अस्मे**) अस्मासु (**सुवीर्यम्**) सुष्ठुपराक्रमम् (**उत**)

**(त्यत्)** ताम् **(आश्वश्व्यम्)** आशवो वेगादयो गुणा अश्वा इव यस्मिँस्तम् **(इषम्)** **(स्तोतृभ्यः)** **(आ)** **(भर)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे शवसस्पते! ये गीर्भिर्यज्ञेभिराश्वश्व्यं सुवीर्यमग्निमानुषगजुर्यमुस्तेष्वेवाऽस्मे भवान् सुवीर्यं दधदुतापि त्यदिषं स्तोतृभ्य आ भर॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! य अग्न्यादिविद्यां विदित्वाऽनेकानि विमानादीनि यानानि निर्मिमते तेभ्योऽन्नादिकं दत्त्वा सततं सत्कुर्या इति॥१०॥

अत्राग्निविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्ठं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे सेना के स्वामिन्! जो **(गीर्भिः)** वाणियों और **(यज्ञेभिः)** संगत कर्म्मों से **(आश्वश्व्यम्)** घोड़ों के सदृश वेग आदि गुणों से युक्त **(सुवीर्यम्)** उत्तम पराक्रम वाले **(अग्निम्)** अग्नि को **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(अजुर्यमुः)** प्रेरणा दें और नियमयुक्त करें **(एव)** उन्हीं में **(अस्मे)** हम लोगों के निमित्त आप उत्तम पराक्रमयुक्त व्यवहार को **(दधत्)** धारण करते हैं **(उत)** और भी **(त्यत्)** उस **(इषम्)** इष्ट व्यवहार को **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो अग्नि आदि की विद्या को जान के अनेक विमान आदि वाहनों को बनाते हैं, उनके लिये अन्न आदि देकर निरन्तर सत्कार कीजिये॥१०॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और राजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छठा सूक्त और तेईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य सप्तमस्य सूक्तस्येष आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ९ विराडनुष्टुप्। २ अनुष्टुप्। ३, ४, ५, ८, निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ६, ७ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १० निचृद् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथ मित्रभावमाह॥*

अब दश ऋचा वाले सातवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रता को कहते हैं॥

**सखा॑यः॒ सं वः॑ स॒म्यञ्च॒मिषं॒ स्तोमं॑ चा॒ग्नये॑।**

**वर्षि॑ष्ठाय क्षिती॒नामू॒र्जो नप्त्रे॒ सह॑स्वते॥ १॥**

**सखा॑यः। सम्। वः॒। स॒म्यञ्च॑म्। इष॑म्। स्तोम॑म्। च॒। अ॒ग्नये॑। वर्षि॑ष्ठाय। क्षि॒ती॒नाम्। ऊ॒र्जः। नप्त्रे॑। सह॑स्वते॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सखायः**) सुहृदः सन्तः (**सम्**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**सम्यञ्चम्**) समीचीनम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**च**) (**अग्नये**) (**वर्षिष्ठाय**) अतिशयेन वृष्टिकराय (**क्षितीनाम्**) मनुष्याणाम् (**ऊर्जः**) पराक्रमयुक्तस्य (**नप्त्रे**) नप्त्र इव वर्त्तमानाय (**सहस्वते**) सहो बलं विद्यते यस्मिँस्तस्मै॥ १॥

**अन्वयः**-हे सखायो भवन्तो ये क्षितीनां वो वर्षिष्ठायोर्जो नप्त्रे सहस्वतेऽग्नये सम्यञ्चं स्तोममिषं च सन् दधति तान् सदा सत्कुर्वन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह संसारे भवन्तो मित्रभावेन वर्त्तित्वा मनुष्यादिप्रजाहितायाग्न्यादिविद्यां लब्ध्वान्येभ्यः प्रयच्छन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सखायः**) मित्र हुए आप लोग जो (**क्षितीनाम्**) मनुष्यों के बीच (**वः**) आप लोगों के लिये (**वर्षिष्ठाय**) अत्यन्त वृष्टि करने वाले के लिये और (**ऊर्जः**) पराक्रम युक्त के (**नप्त्रे**) नाती के सदृश वर्त्तमान (**सहस्वते**) बलयुक्त (**अग्नये**) अग्नि के लिये (**सम्यञ्चम्**) श्रेष्ठ (**स्तोमम्**) प्रशंसा और (**इषम्**) अन्न आदि को (**च**) भी (**सम्**) अच्छे प्रकार धारण करते हैं, उनका सदा सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में आप लोग मित्रभाव से वर्ताव करके मनुष्य आदि प्रजा के हित के लिये अग्नि आदि की विद्या को प्राप्त होके अन्य जनों के लिये शिक्षा दीजिये॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुत्रा॑ चि॒द्यस्य॒ समृ॑तौ र॒ण्वा नरो॑ नृ॒षद॑ने।**

**अर्ह॑न्तश्चि॒द्यमि॑न्ध॒ते सं॑ज॒नय॑न्ति ज॒न्तवः॑॥ २॥**

**कुत्र॑। चि॒त्। यस्य॑। सम्ऽऋ॑तौ। र॒ण्वाः। नरः॑। नृ॒ऽसद॑ने। अर्ह॑न्तः। चि॒त्। यम्। इ॒न्धते॑। सम्ऽज॒नय॑न्ति। ज॒न्तवः॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कुत्रा**) कस्मिन्। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**चित्**) (**यस्य**) (**समृतौ**) सम्यग् यथार्थबोधयुक्तायां प्रज्ञायाम् (**रण्वाः**) रममाणाः (**नरः**) नायकाः (**नृषदने**) नृणां स्थाने (**अर्हन्तः**) सत्कुर्वन्तः (**चित्**) (**यम्**) (**इन्धते**) प्रकाशयन्ति (**सञ्जनयन्ति**) (**जन्तवः**) जीवाः॥२॥

**अन्वयः**-हे नरो ये जन्तवो यस्य समृतौ रण्वा नृषदने चिदर्हन्तो यं समिन्धते सञ्जनयन्ति ते चित्कुत्रापि तिरस्कारं नाप्नुवन्ति॥२॥

**भावार्थः**-ये जीवाः सर्वेषां मनुष्याणां हिते वर्त्तमाना यथाशक्ति परोपकारं कुर्वन्ति ते योग्याः सन्तिः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायक अर्थात् कार्य्यों में अग्रगामी मुख्यजनो! जो (**जन्तवः**) जीव (**यस्य**) जिसकी (**समृतौ**) अच्छे प्रकार यथार्थ बोध से युक्त बुद्धि में (**रण्वाः**) रमण करते और (**नृषदने**) मनुष्यों के स्थान में (**चित्**) भी (**अर्हन्तः**) सत्कार करते हुए (**यम्**) जिसको (**इन्धते**) [अच्छे प्रकार] प्रकाशित कराते और (**सञ्जनयन्ति**) उत्तम प्रकार उत्पन्न कराते हैं, वे (**चित्**) भी (**कुत्रा**) किसी में अनादर को नहीं प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो जीव सब मनुष्यों के हित में वर्त्तमान हुए यथाशक्ति परोपकार करते हैं, वे योग्य हैं॥२॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**सं यदिषो वनामहे सं हव्या मानुषाणाम्।**

**उत द्युम्नस्य शवस ऋतस्य रश्मिमा ददे॥३॥**

**सम्। यत्। इषः। वनामहे। सम्। हव्या। मानुषाणाम्। उत। द्युम्नस्य। शवसा। ऋतस्य। रश्मिम्। आ। ददे॥३॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**यत्**) यथा (**इषः**) अन्नाद्याः सामग्रीः (**वनामहे**) सम्भजामः (**सम्**) (**हव्या**) दातुमादातुमर्हाः (**मानुषाणाम्**) मनुष्याणाम् (**उत**) (**द्युम्नस्य**) धनस्य यशसो वा (**शवसा**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**रश्मिम्**) प्रकाशम् (**आ**) (**ददे**)॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! मानुषाणां द्युम्नस्यर्तस्य शवसा यद्धव्या इषो वयं सं वनामहे। उत रश्मिं समा ददे तथा यूयमपि कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि विद्वांसः पक्षपातं विहाय यथायोग्यं व्यवहारं कृत्वा मनुष्यात्मसु विद्याप्रकाशं सन्दध्युस्तर्हि सर्वे योग्या जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**मानुषाणाम्**) मनुष्यों के बीच (**द्युम्नस्य**) धन वा यश तथा (**ऋतस्य**) सत्य का (**शवसा**) सेना से (**यत्**) जैसे (**हव्या**) देने और लेने योग्य (**इषः**) अन्न आदि सामग्रियों का हम लोग

**(सम्, वनामहे)** अच्छे प्रकार सेवन करें **(उत)** वा **(रश्मिम्)** प्रकाश को मैं **(सम्, आ, ददे)** ग्रहण करता हूँ, वैसे आप लोग भी करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन पक्षपात को छोड़ के यथायोग्य व्यवहार कर मनुष्यों के आत्माओं में विद्याप्रकाश को धारण करें तो सब योग्य होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स स्मा कृणोति केतुमा नक्तं चिद्दूर आ सते।**

**पावको यद्वनस्पतीन् प्र स्मा मिनात्यजरः॥४॥**

**सः। स्म। कृणोति। केतुम्। आ। नक्तम्। चित्। दूरे। आ। सते। पावकः। यत्। वनस्पतीन्। प्र। स्म। मिनाति। अजरः॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(स्मा)** एव **(कृणोति)** **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(आ)** **(नक्तम्)** रात्रौ **(चित्)** **(दूरे)** **(आ)** **(सते)** सत्पुरुषाय **(पावकः)** पवित्रकरः **(यत्)** यः **(वनस्पतीन्)** वनानां पालकान् **(प्र)** **(स्मा)** अत्रोभयत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(मिनाति)** हिनस्ति **(अजरः)** नाशरहितः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्योऽजरः पावको वनस्पतीन् स्माऽऽकृणोति नक्तं चिद् दूरे सते केतुं प्रयच्छति दूरे सन् स्मा दुष्टान् दोषान् प्रा मिनाति स सर्वत्र सत्कृतो जायते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो दूरेऽपि स्थिता अहर्निशमग्निवद्वनस्पतिवच्च परोपकारिणो जायन्ते त एव जगद्भूषणा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(अजरः)** नाश से रहित **(पावकः)** पवित्र करने वाला **(वनस्पतीन्)** वनों के पालने वालों का **(स्मा)** ही **(आ, कृणोति)** अनुकरण करता **(नक्तम्)** रात्रि में **(चित्)** भी **(दूरे)** दूर देश में **(सते)** सत्पुरुष के लिये **(केतुम्)** बुद्धि देता और दूर स्थान में वर्त्तमान हुआ **(स्मा)** ही दुष्ट और दोषों का **(प्र, आ, मिनाति)** अच्छे प्रकार नाश करता है **(सः)** वह सर्वत्र सत्कृत होता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् दूर भी वर्त्तमान हुए रात्रि दिन अग्नि वा वनस्पतियों के सदृश परोपकारी होते हैं, वे संसार के भूषण अंलकार होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**अव स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति।**

**अभीमह स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः॥५॥२४॥**

**अव॑। स्म॒। यस्य॑। वेष॑णे। स्वेद॑म्। प॒थिषु॑। जुह्व॑ति। अ॒भि। ई॒म्। अह॑। स्वऽजे॑न्यम्। भूम॑। पृ॒ष्ठाऽइ॑व। रु॒रु॒हुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अव** ) (**स्म**) (**यस्य**) (**वेषणे**) व्याप्ते व्यवहारे (**स्वेदम्**) (**पथिषु**) (**जुह्वति**) क्षरन्ति (**अभि**) (**ईम्**) (**अह**) (**स्वजेन्यम्**) स्वेन जेतुं योग्यम् (**भूमा**) पृथिव्याः (**पृष्ठेव**) (**रुरुहुः**) वर्धन्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य वेषणे पथिषु वीराः स्वेदं स्माव जुह्वति भूमाह स्वजेन्यं पृष्ठेवाभि रुरुहुस्तस्यान्वेषणं तथा यूयमपि कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या मार्गेषु व्याप्तान् व्यवहारान् विज्ञाय कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सौख्यानि प्राप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिसके (**वेषणे**) व्याप्त व्यवहार के निमित्त (**पथिषु**) मार्गों में वीर (**स्वेदम्**) जल को (**स्म**) ही (**अव, जुह्वति**) बहाते और (**भूमा**) पृथिवी के (**अह**) निश्चित (**स्वजेन्यम्**) अपने से जीतने योग्य स्थान को (**पृष्ठेव**) पृष्ठ के सदृश (**अभि, रुरुहुः**) अभिवर्द्धन करते अर्थात् उस पर बढ़ते हैं उसकी खोज **[**करते हैं**]** (**ईम्**) वैसे ही आप लोग भी करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य मार्ग में व्याप्त व्यवहारों को जान कर कार्यों को सिद्ध करते हैं, वे सुखों को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**यं मर्त्यः॑ पुरु॒स्पृहं॑ वि॒दद्विश्व॑स्य॒ धाय॑से।**

**प्र स्वाद॑नं पितू॒नामस्त॑तातिं चिदा॒यवे॑॥६॥**

**यम्। मर्त्यः॑। पु॒रु॒ऽस्पृह॑म्। वि॒दत्। विश्व॑स्य। धाय॑से। प्र। स्वाद॑नम्। पि॒तू॒नाम्। अस्त॑ऽतातिम्। चि॒त्। आ॒यवे॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**मर्त्यः**) (**पुरुस्पृहम्**) बहुभिः स्पर्हणीयम् (**विदत्**) लभेत (**विश्वस्य**) जगतः (**धायसे**) धारणाय (**प्र**) (**स्वादनम्**) (**पितूनाम्**) अन्नानाम् (**अस्तातिम्**) गृहस्थम् (**चित्**) (**आयवे**) मनुष्याय॥६॥

**अन्वयः**-मर्त्य आयवे विश्वस्य धायसे यं पुरुस्पृहं पितूनां स्वादनमस्तातिं चित्प्र विदत्तं सर्वोपकाराय दध्यात्॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्येण यद्यदुत्तमं वस्तु ज्ञानं च लभ्येत तत्तत्सर्वेषां सुखाय दध्यात्॥६॥

**पदार्थः**-(**मर्त्यः**) मनुष्य (**आयवे**) मनुष्य के लिये और (**विश्वस्य**) संसार के (**धायसे**) धारण के लिये (**यम्**) जिस (**पुरुस्पृहम्**) बहुतों से प्रशंसा करने योग्य (**पितूनाम्**) अन्नों के (**स्वादनम्**) स्वाद और (**अस्तातिम्**) गृहस्थ को (**चित्**) भी (**प्र, विदत्**) प्राप्त होवे, उसको परोपकार के लिये धारण करे॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्य को जिस उत्तम वस्तु और ज्ञान की प्राप्ति होवे, उस उसको सब के सुख के लिये धारण करे॥६॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को कहते हैं॥

**स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः।**

**हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुरनिभृष्टतविषिः॥७॥**

**सः। हि। स्म। धन्व। आऽक्षितम्। दाता। न। दाति। आ। पशुः। हिरिऽश्मश्रुः। शुचिऽदन्। ऋभुः। अनिभृष्टऽतविषिः॥७॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) यतः (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**धन्व**) अन्तरिक्षम् (**आक्षितम्**) समन्तादनष्टमिव (**दाता**) (**न**) इव (**दाति**) ददाति (**आ**) (**पशुः**) (**हिरिश्मश्रुः**) हिरण्यमिव श्मश्रूणि यस्य सः (**शुचिदन्**) शुचयः पवित्रा दन्ता यस्य सः (**ऋभुः**) मेधावी (**अनिभृष्टतविषिः**) न निर्भृष्टा प्रदग्धा तविषी सेना यस्य सः॥७॥

**अन्वयः**-यो हिरिश्मश्रुः शुचिदन्ननिभृष्टतविषिर्ऋभुर्दाता पशुर्न धन्वाक्षितं दुष्टानां दाति स हि ष्मा सुखमेधते॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा निदाता धान्यं खण्डयित्वा बुसं पृथक्कृत्यान्नं गृह्णाति यथा पशुश्च खुरैर्धान्यादिकं खण्डयति तथैव राजा साहसिकान् दुष्टान् मनुष्यान् भृशं ताडयेत्॥७॥

**पदार्थः**-जो (**हिरिश्मश्रुः**) सुवर्ण के तुल्य दाढ़ी और (**शुचिदन्**) पवित्र दाँतों से युक्त (**अनिभृष्टतविषिः**) नहीं जली सेना जिसकी ऐसा (**ऋभुः**) मेधावी (**दाता**) [देनेवाला] (**पशुः**) पशु (**न**) जैसे (**धन्व**) अन्तरिक्ष जो (**आक्षितम्**) सब ओर से अविनाशी उसको वैसे दुष्टों को (**आ, दाति**) ग्रहण करता है (**सः, हि, स्मा**) यही निश्चित सुखपूर्वक बढ़ता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे नहीं देने वाला धान्य को कटवा कर भूसे को अलग करके अन्न का ग्रहण करता है और जैसे पशु खुरों से धान्य आदि को तोड़ता है, वैसे ही राजा साहस करने वाले दुष्ट मनुष्यों का निरन्तर ताड़न करे॥७॥

**अथ राजशासनविषयमाह॥**

अब राजशिक्षा विषय को कहते हैं॥

**शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते।**

**सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम्॥८॥**

**शुचि॑:। स्म॒। यस्मै॑। अ॒त्रि॒ऽवत्। प्र। स्वधि॑तिःऽइव। रीय॑ते। सु॒ऽसूः। अ॒सू॒त॒। मा॒ता। क्रा॒णा। यत्। आ॒न॒शे। भग॑म्॥८॥**

**पदार्थः-(शुचिः)** पवित्रः **(स्म) (यस्मै) (अत्रिवत्) (प्र) (स्वधितीव)** वज्रधर इव **(रीयते)** श्लिष्यति **(सुषूः)** सुष्ठु जनयित्री **(असूत)** सूते **(माता)** जननी **(क्राणा)** कुर्वती **(यत्)** या **(आनशे)** प्राप्नोति **(भगम्)** ऐश्वर्य्यम्॥८॥

**अन्वयः**-यद्या शुचिः क्राणा माता यस्मै स्वधितीवात्रिवत्सुषूरसूत प्र रीयते सा स्म भगमानशे॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मातापितरौ कृतब्रह्मचर्य्यौ विधिवत्सन्तानानुत्पादयेतां तर्हि सुखैश्वर्य्यं लभेताम्॥८॥

**पदार्थः-(यत्)** जो **(शुचिः)** पवित्र **(क्राणाः)** करती हुई **(माता)** माता **(यस्मै)** जिसके लिये **(स्वधितीव)** वज्र के धारण करने वाले के सदृश और **(अत्रिवत्)** अविद्यमान तीन वाले के सदृश **(सुषूः)** उत्तम प्रकार उत्पन्न करने वाली **(असूत)** उत्पन्न करती और **(प्र, रीयते)** मिलती है **(स्म)** वही **(भगम्)** ऐश्वर्य्य को **(आनशे)** प्राप्त होती है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो माता-पिता ब्रह्मचर्य्य किये हुए विधिपूर्वक सन्तानों को उत्पन्न करें तो सुख और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें॥८॥

**अथाग्निशब्दार्थविद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यस्ते॑ सर्पिरासुतेऽग्ने॒ शमस्ति॒ धाय॑से।**

**ऐषु॑ द्यु॒म्नमु॒त श्रव॒ आ चि॒त्तं मर्त्ये॑षु धाः॥९॥**

**आ। यः। ते॒। स॒र्पि॒ःऽआ॒सु॒ते॒। अग्ने॑। शम्। अस्ति॑। धाय॑से। आ। ए॒षु॒। द्यु॒म्नम्। उ॒त। श्रवः॑। आ। चि॒त्तम्। मर्त्ये॑षु। धा॒ः॥९॥**

**पदार्थः-(आ) (यः) (ते)** तव **(सर्पिरासुते)** सर्पिभिः सर्वतो जनिते **(अग्ने)** विद्वन् **(शम्)** सुखम् **(अस्ति) (धायसे)** धात्रे **(आ) (एषु) (द्युम्नम्)** यशो धनं वा **(उत) (श्रवः)** अन्नम् **(आ) (चित्तम्)** संज्ञानम् **(मर्त्येषु) (धाः)** दधाति॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो धायसे ते सर्पिरासुते शमस्ति तद्धरत्येषु मर्त्येषु द्युम्नमा धाः श्रव आ धा उत चित्तमा धास्तस्मै त्वमैश्वर्यं देहि॥९॥

**भावार्थः**-यदि कश्चित् कस्मैचिद्विद्यां धनं विज्ञानञ्च दधाति तर्हि तस्मा उपकृतोऽपि प्रत्युपकाराय तादृशमेव सत्कारं कुर्यात्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् **(यः)** जो **(धायसे)** धारण करने वाले के लिये **(ते)** आपका **(सर्पिरासुते)** घृतों से सब प्रकार उत्पन्न किये गये में **(शम्)** सुख **(अस्ति)** है उसको ग्रहण करता **(एषु)**

इन **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(द्युम्नम्)** यश वा धन को **(आ, धा:)** धारण करता **(श्रव:)** अन्न को **(आ)** धारण करता **(उत)** और **(चित्तम्)** संज्ञान को **(आ)** धारण करता है, उसके लिये आप ऐश्वर्य्य दीजिये॥९॥

**भावार्थ:**-जो कोई किसी के लिये विद्या धन और विज्ञान को धारण करता है तो उसके लिये उपकार किया भी पुरुष प्रत्युपकार के लिये वैसे ही सत्कार को करे॥९॥

**अथाग्निशब्दार्थराजविषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ राजविषय को कहते हैं॥

**इति॑ चिन्म॒न्युम॒ध्रिज॒स्त्वादा॑त॒मा प॒शुं द॑दे।**

**आद॑ग्ने॒ अपृ॑ण॒तोऽत्रि॑: सासह्या॒द्दस्यू॑नि॒ष: सा॑सह्या॒न्नॄन्॥१०॥२५॥**

इति॑। चि॒त्। म॒न्युम्। अ॒ध्रिज॑:। त्वाऽदा॑तम्। आ। प॒शुम्। द॒दे। आत्। अ॒ग्ने॒। अपृ॑णत:। अत्रि॑:। स॒स॒ह्या॒त्। दस्यू॑न्। इ॒ष:। स॒स॒ह्या॒त्। नॄन्॥१०॥

**पदार्थ:**-**(इति)** अनेन प्रकारेण **(चित्)** अपि **(मन्युम्)** क्रोधम् **(अध्रिज:)** अध्रिषु धारकेषु जात: **(त्वादातम्)** त्वया दातव्यम् **(आ)** **(पशुम्)** **(ददे)** ददामि **(आत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(अपृणत:)** अपालयत: **(अत्रि:)** सततं पुरुषार्थी **(सासह्यात्)** भृशं सहेत् **(दस्यून्)** दुष्टान् साहसिकान् चोरान् **(इष:)** इच्छा: **(सासह्यात्)** अत्रोभयत्राभ्यासदीर्घ:। **(नॄन्)** नीतियुक्तान् मनुष्यान्॥१०॥

**अन्वय:**-हे अग्नेऽध्रिजो भवान् मन्युं सासह्यादत्रिस्त्वमपृणतो दस्यून् सासह्यादादिषो नॄँश्च सासह्यादिति वर्त्तमानाच्चित्त्वत्त्वादातं पशुमहमा ददे॥१०॥

**भावार्थ:**-ये राजान: क्रोधादीन् दुर्व्यसनानि च निवार्य दस्यूञ्जित्वा श्रेष्ठै: कृतमपमानं सहेरँस्तेऽखण्डितराज्या भवन्तीति॥१०॥

अत्र मित्रत्वविद्वद्राजाग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(अध्रिज:)** धारण करने वालों में उत्पन्न आप **(मन्युम्)** क्रोध को **(सासह्यात्)** निरन्तर सहें **(अत्रि:)** निरन्तर पुरुषार्थी आप **(अपृणत:)** नहीं पालन करते हुए **(दस्यून्)** दुष्ट साहस करने वाले चोरों को **(सासह्यात्)** निरन्तर सहें और **(आत्)** सब ओर से **(इष:)** इच्छाओं और **(नॄन्)** नीति से युक्त मनुष्यों को निरन्तर सहें **(इति)** इस प्रकार वर्त्तमान **(चित्)** भी **(त्वादातम्)** आपसे देने योग्य **(पशुम्)** पशु को मैं **(आ, ददे)** ग्रहण करता हूँ॥१०॥

**भावार्थ:**-जो राजजन क्रोधादि और दुष्ट व्यसनों का निवारण करके चोर डाकुओं को जीत कर श्रेष्ठ पुरुषों से किये गये अपमान को सहें, वे अखण्डित राज्य युक्त होते हैं॥१०॥

इस सूक्त में मित्रत्व विद्वान् राजा और अग्नि के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सप्तम सूक्त और पच्चीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्याष्टमस्य सूक्तस्येष आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ५ स्वराट् त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ निचृज्जगती। ६, ७ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथाग्निशब्दार्थगृहाश्रमविषयमाह॥***

अब सात ऋचा वाले आठवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में अग्निशब्दार्थ गृहाश्रमी के विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्न ऋता॒यव॒: समी॑धिरे प्र॒त्नं प्र॒त्नास॑ ऊ॒तये॑ सहस्कृत।**

**पु॒रु॒श्च॒न्द्रं य॑ज॒तं वि॒श्वधा॑यसं॒ दमू॑नसं गृ॒हप॑तिं॒ वरे॑ण्यम्॥ १॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ऋ॒त॒ऽयव॑ः। सम्। ई॒धि॒रे॒। प्र॒त्नम्। प्र॒त्नास॑ः। ऊ॒तये॑। स॒हः॒ऽकृ॒त॒। पु॒रु॒ऽच॒न्द्रम्। य॒ज॒तम्। वि॒श्वऽधा॑यसम्। दमू॑नसम्। गृ॒हऽप॑तिम्। वरे॑ण्यम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) कृतब्रह्मचर्य्यगृहाश्रमिन् (**ऋतायवः**) ऋतं सत्यमिच्छवः (**सम्, ईधिरे**) सम्यक् प्रदीपयेयुः (**प्रत्नम्**) प्राचीनम् (**प्रत्नासः**) प्राचीना विद्वांसः (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**सहस्कृत**) सहो बलं कृतं येन तत्सम्बुद्धौ (**पुरुश्चन्द्रम्**) बहुहिरण्यादियुक्तम् (**यजतम्**) पूजनीयम् (**विश्वधायसम्**) सर्वव्यवहारधनधर्त्तारम् (**दमूनसम्**) इन्द्रियान्तःकरणस्य दमकरम् (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहारपालकम् (**वरेण्यम्**) अतिशयेन वर्त्तव्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहस्कृताग्ने! प्रत्नास ऋतायव ऊतये यं प्रत्नं पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं **[**दमूनसं**]** वरेण्यं गृहपतिं त्वां समीधिरे स त्वमेतान् सत्कुरु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मान् विद्यादानादिभिर्वर्धयन्ति तान् यूयं सततं सत्कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहस्कृत**) बल किये (**अग्ने**) और ब्रह्मचर्य्य किये हुए गृहाश्रमी! (**प्रत्नासः**) प्राचीन विद्वान् जन (**ऋतायवः**) सत्य की इच्छा करने वाले (**ऊतये**) रक्षण आदि के लिये जिस (**प्रत्नम्**) प्राचीन (**पुरुश्चन्द्रम्**) बहुत सुवर्ण आदि से युक्त (**यजतम्**) आदर करने योग्य (**विश्वधायसम्**) सब व्यवहार और धन के धारण तथा (**दमूनसम्**) इन्द्रिय और अन्तःकरण के दमन करने वाले (**वरेण्यम्**) अतीव स्वीकार करने योग्य और श्रेष्ठ (**गृहपतिम्**) गृहस्थ व्यवहार के पालन करने वाले (**त्वाम्**) आप को (**सम्, ईधिरे**) उत्तम प्रकार प्रकाशित करावें, वह आप इनका सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों की विद्या और दान आदिकों से वृद्धि करते हैं, उनका आप लोग निरन्तर सत्कार करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने अति॑थिं पू॒र्व्यं विशः॑ शो॒चिष्के॑शं गृ॒हप॑तिं॒ नि षे॑दिरे।**

**बृ॒हत्के॑तुं पुरु॒रूपं॑ धन॒स्पृतं॑ सु॒शर्मा॑णं॒ स्वव॑सं जर॒द्विष॑म्॥ २॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। अति॑थिम्। पू॒र्व्यम्। विशः॑। शो॒चिःऽके॑शम्। गृ॒हऽप॑तिम्। नि। से॒दि॒रे। बृ॒हत्ऽके॑तुम्। पु॒रु॒ऽरूप॑म्। ध॒न॒ऽस्पृत॑म्। सु॒ऽशर्मा॑णम्। सु॒ऽअव॑सम्। ज॒र॒त्ऽवि॑षम्॥ २॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) गृहस्थ (**अतिथिम्**) सर्वदोपदेशाय भ्रमन्तम् (**पूर्व्यम्**) पूर्वैः कृतं विद्वांसम् (**विशः**) प्रजाः (**शोचिष्केशम्**) शोचींषि न्यायव्यवहारप्रकाशाः केशा इव यस्य तम् (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहारपालकम् (**नि, षेदिरे**) निषीदन्ति (**बृहत्केतुम्**) महाप्रज्ञम् (**पुरुरूपम्**) बहुरूपयुक्तं सुन्दराकृतिम् (**धनस्पृतम्**) धनस्पृहायुक्तम् (**सुशर्म्माणम्**) प्रशंसितगृहम् (**स्ववसम्**) शोभनमवो रक्षणादिकं यस्य तम् (**जरद्विषम्**) जरद् विनष्टं शत्रुरूपं विषं यस्य तम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! या विशोऽतिथिमिव वर्त्तमानं पूर्व्यं शोचिष्केशं बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्म्माणं स्ववसं जरद्विषं गृहपतिं त्वां नि षेदिरे तास्त्वं सततं सत्कुर्य्याः॥ २॥

**भावार्थः**-गृहस्थाः सदैव प्रजापालनमतिथिसेवामुत्तमगृहाणि विद्याप्रचारं प्रज्ञावर्द्धनं सर्वतो रक्षणं रागद्वेषराहित्यं च सततं कुर्युः॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) गृहस्थ जो (**विशः**) प्रजायें (**अतिथिम्**) सदा उपदेश देने के लिये घूमते हुए के सदृश वर्त्तमान (**पूर्व्यम्**) प्राचीनों से किये गये विद्वान् और (**शोचिष्केशम्**) केशों के सदृश न्यायव्यवहार के प्रकाशों से युक्त (**बृहत्केतुम्**) बड़ी बुद्धि वाले (**पुरुरूपम्**) बहुत रूपों से युक्त सुन्दर आकृतिमान् (**धनस्पृतम्**) धन की इच्छा से युक्त (**सुशर्म्माणम्**) प्रशंसित गृह वाले (**स्ववसम्**) श्रेष्ठ रक्षण आदि जिनके (**जरद्विषम्**) वा निवृत्त हुआ शत्रुरूपी विष जिनका ऐसे (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहार के पालन करने वाले (**त्वाम्**) आप को (**नि, षेदिरे**) स्थित करते हैं, उनका आप निरन्तर सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-गृहस्थ जन सदा ही प्रजा का पालन, अतिथि की सेवा, उत्तम गृह तथा विद्या का प्रचार, बुद्धि की वृद्धि, सब प्रकार से रक्षा तथा राग और द्वेष का त्याग निरन्तर करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने॒ मानु॑षीरीळते॒ विशो॑ होत्रा॒विदं॒ विवि॑चिं रत्न॒धात॑मम्।**

**गुहा॒ सन्तं॑ सुभग विश्वद॑र्शतं तुविष्व॒णसं॑ सु॒यजं॑ घृत॒श्रिय॑म्॥ ३॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। मानु॑षीः। ई॒ळ॒ते॒। विशः॑। हो॒त्रा॒ऽविद॑म्। विवि॑चिम्। र॒त्न॒ऽधात॑मम्। गुहा॑। सन्त॑म्। सु॒ऽभ॒ग॒। वि॒श्व॒ऽद॑र्शतम्। तु॒वि॒ऽस्व॒नस॑म्। सु॒ऽयज॑म्। घृ॒त॒ऽश्रिय॑म्॥ ३॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धिन्यः (**ईळते**) स्तुवन्ति गुणैः प्रकाशितं कुर्वन्ति (**विशः**) प्रजाः (**होत्राविदम्**) होत्राणि हवनानि वेत्ति तम् (**विविचिम्**) विवेचकं विभागकर्त्तारम् (**रत्नधातमम्**) रत्नानामतिशयेन धर्त्तारम् (**गुहा**) गुहायामन्तःकरणे (**सन्तम्**) अभिव्याप्य स्थितम् (**सुभग**) शोभनैश्वर्य्य (**विश्वदर्शतम्**) विश्वस्य प्रकाशकम् (**तुविष्वणसम्**) बहूनां सेवकम् (**सुयजम्**) सुष्ठु यजन्ति यस्मात्तम् (**घृतश्रियम्**) यो घृतं श्रयति घृतेन शुम्भमानस्तम्॥३॥

**अन्वयः**-हे सुभगाग्ने! मानुषीर्विशो यं होत्राविदं विविचिं रत्नधातमं विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियं गुहा सन्तं त्वामीळते ता वयमपि विजानीयाम॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो येन विद्युद्रूपेणाग्निना जीवनं चेतनता च जायते तद्वद्राजानं विज्ञाय सुखं वर्धयन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे (**सुभग**) सुन्दर ऐश्वर्य्य से युक्त (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धिनी (**विशः**) प्रजायें जिस (**होत्राविदम्**) हवनों के गुणों को जानने वाले (**विविचिम्**) विवेचक विभाग करने (**रत्नधातमम्**) रत्नों के अतीव धारण करने (**विश्वदर्शतम्**) संसार के प्रकाश करने और (**तुविष्वणसम्**) बहुतों की सेवा करने वाले (**सुयजम्**) उत्तम प्रकार यज्ञ करते जिससे उस (**घृतश्रियम्**) घृत का आश्रय करते वा घृत से शोभते हुए (**गुहा**) अन्तःकरण में (**सन्तम्**) अभिव्याप्त होकर स्थित (**त्वाम्**) आपको (**ईळते**) गुणों से प्रकाशित करती हैं, उनको हम लोग भी जानें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग जिस बिजुली रूप अग्नि से जीवन और चेतनता होती है, तद्वत् राजा को जान के सुख बढ़ाओ॥३॥

**अथाग्निशब्दार्थविद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने धर्ण॒सिं वि॒श्वधा॑ व॒यं गी॒र्भिर्गृ॒णन्तो॒ नम॒सोप॑ सेदिम।**

**स नो॑ जुषस्व समिधा॒नो अ॑ङ्गिरो दे॒वो मर्त॑स्य य॒शसा॑ सु॒दीति॑भिः॥४॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ध॒र्ण॒सिम्। वि॒श्वधा॑। व॒यम्। गीः॒ऽभिः। गृ॒णन्तः॑। नम॑सा। उप॑। से॒दि॒म॒। सः। नः॒। जु॒ष॒स्व॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नः। अ॒ङ्गि॒रः॒। दे॒वः। मर्त॑स्य। य॒शसा॑। सु॒दीति॑ऽभिः॥४॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) विद्वन् (**धर्णसिम्**) अन्यद्धारकम् (**विश्वधा**) विश्वस्य धर्त्तारम् (**वयम्**) (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**गृणन्तः**) स्तुवन्तः (**नमसा**) सत्कारेण (**उप**) (**सेदिम**) उपतिष्ठेम (**सः**) (**नः**) अस्मान् (**जुषस्व**) सेवस्व (**समिधानः**) देदीप्यमानः (**अङ्गिरः**) अङ्गेषु रममाणः (**देवः**) दाता (**मर्त्तस्य**) मनुष्यस्य (**यशसा**) उदकेनान्नेन धनेन वा। **यश इति उदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **अन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०)। (**सुदीतिभिः**) सुष्ठै दानैः॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वँस्त्वं यथा वयं गीर्भिर्गृणन्तो विश्वधा धर्णसिं त्वां नमसोप सेदिम। हे अङ्गिरः! स

देव: समिधानस्त्वं मर्त्तस्य सुदीतिभिर्यशसा नोऽस्मान् जुषस्व तथा वयं त्वामुपतिष्ठेम॥४॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। सर्वथायं सर्वेषां स्वभावोऽस्ति यो यादृशेन भावेन यं प्राप्नुयात् सेवेत तादृश एव भाव: सेवनं च तस्योपजायते॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप जैसे हम लोग **(गीर्भि:)** वाणियों से **(गृणन्त:)** स्तुति करते हुए **(विश्वधा)** संसार के धारण करने वा **(धर्णसिम्)** अन्य को धारण करने वाले **(त्वाम्)** आपके **(नमसा)** सत्कार से **(उप, सेदिम)** समीप प्राप्त होवें और हे **(अङ्गिर:)** अङ्गों में रमते हुए! **(स:)** वह **(देव:)** दाता **(समिधान:)** प्रकाशमान आप **(मर्त्तस्य)** मनुष्य के **(सुदीतिभि:)** उत्तम दानों से **(यशसा)** जल, अन्न वा धन से **(न:)** हम लोगों का **(जुषस्व)** सेवन करें, वैसे **(वयम्)** हम लोग आपके समीप स्थित होवें॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब प्रकार से यह सब का स्वभाव है, जो जिस भाव से जिसको प्राप्त होवे सेवन करे, वैसा ही भाव और सेवन उसका होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने पुरु॒रूपो॑ वि॒शेवि॑शे॒ वयो॑ दधासि प्र॒त्नथा॑ पुरुष्टुत।**

**पु॒रूण्यन्ना॒ सह॑सा॒ वि रा॑जसि॒ त्विषि॒: सा ते॑ तित्वि॒षा॒णस्य॒ नाधृषे॑॥५॥**

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। पु॒रु॒ऽरूप॑:। वि॒शेऽवि॑शे। वय॑:। द॒धा॒सि॒। प्र॒त्नऽथा॑। पु॒रु॒ऽस्तु॒त॒। पु॒रूणि॑। अन्ना॑। सह॑सा। वि। रा॒ज॒सि॒। त्विषि॑:। सा। ते॒। ति॒त्वि॒षा॒णाय॑। न। आ॒ऽधृषे॑॥५॥**

**पदार्थ:**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** राजन् **(पुरुरूप:)** बहुरूप: **(विशेविशे)** प्रजायै प्रजायै **(वय:)** जीवनम् **(दधासि)** **(प्रत्नथा)** प्राचीनेनेव **(पुरुष्टुत)** बहुभि: प्रशंसित **(पुरूणि)** बहूनि **(अन्ना)** अन्नानि **(सहसा)** बलेन **(वि)** **(राजसि)** **(त्विषि:)** दीप्ति: **(सा)** **(ते)** **(तित्विषाणस्य)** अग्निज्वालयेव विद्यया प्रकाशमानस्य **(न)** इव **(आधृषे)** समन्ताद् धृषाय॥५॥

**अन्वय:**-हे पुरुष्टुताग्ने! यया त्वं वि राजसि सा तित्विषाणस्य ते त्विषिरस्ति साऽऽधृषे न विशेविशे पुरूण्यन्ना दधाति यया त्वं विशेविशे पुरुरूपस्त्वं प्रत्नथा सहसा वयो दधासि तां विजानीहि॥५॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! भवन्तो यथाऽग्नि: सर्वं जगद्धाति तथा सर्वान् मनुष्यान् विद्याप्रकाशे धरन्तु॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसित **(अग्ने)** राजन्! जिससे आप **(वि, राजसि)** विशेष प्रकाशमान हैं **(सा)** वह **(तित्विषाणस्य)** अग्निज वाला के समान विद्या से प्रकाशमान **(ते)** आपकी **(त्विषि:)** दीप्ति है और वह **(आधृषे)** सब प्रकार से धृष्ट के लिये **(न)** जैसे वैसे **(विशेविशे)** प्रजा-प्रजा के लिये **(पुरूणि)** बहुत **(अन्ना)** अन्नों को धारण करती है तथा जिससे **(त्वम्)** आप प्रजा-प्रजा के लिये

**(पुरुरूपः)** बहुत रूप वाले आप **(प्रत्नथा)** प्राचीन के सदृश **(सहसा)** बल से **(वयः)** जीवन को **(दधासि)** धारण करते हो, उसको विशेषता से जानिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जैसे अग्नि सब जगत् को धारण करता है, वैसे सब मनुष्यों को विद्या के प्रकाश में धारण करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने स॒मिधा॒नं य॑विष्ठ्य दे॒वा दू॒तं च॑क्रिरे हव्य॒वाह॑नम्।**
**उ॒रु॒ज्रय॑सं घृ॒तयो॑निमाहु॑तं त्वे॒षं चक्षु॑र्दधिरे चोद॒यन्म॑ति॥६॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नम्। य॒वि॒ष्ठ्य॒। दे॒वाः। दू॒तम्। च॒क्रि॒रे॒। ह॒व्य॒ऽवाह॑नम्। उ॒रु॒ऽज्रय॑सम्। घृ॒तऽयो॑निम्। आऽहु॑तम्। त्वे॒षम्। चक्षुः॑। द॒धि॒रे॒। चो॒द॒यत्ऽम॑ति॥६॥

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(समिधानम्)** देदीप्यमानम् **(यविष्ठ्य)** अतिशयेन युवसु साधो **(देवाः)** विद्वांसः **(दूतम्)** सर्वतो व्यवहारसाधकम् **(चक्रिरे)** कुर्वन्ति **(हव्यवाहनम्)** यो हव्यान्यादातुमर्हाणि यानानि सद्यो वहति तम् **(उरुज्रयसम्)** बहुवेगवन्तम् **(घृतयोनिम्)** घृतमुदकं प्रदीप्तं कारणं वा योनिर्गृहं यस्य तम् **(आहुतम्)** स्पर्द्धितं समन्ताच्छब्दितम् **(त्वेषम्)** प्रदीप्तम् **(चक्षुः)** दर्शकम् **(दधिरे)** **(चोदयन्मति)** प्रज्ञाप्रेरकम्॥६॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठ्याग्ने! यथा देवा हव्यवाहनमुरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चोदयन्मति चक्षुस्समिधानमग्निं दधिरे दूतं चक्रिरे तथा त्वा दध्याम॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। नहि मनुष्या विद्वत्सङ्गेन विनाऽग्निगुणानग्न्यादिसंयोग-गुणाँश्च ज्ञातुमर्हन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ्य)** अत्यन्त युवाजनों में श्रेष्ठ **(अग्ने)** विद्वन् जैसे **(देवाः)** विद्वान् जन **(हव्यवाहनम्)** ग्रहण करने योग्य वाहनों को शीघ्र प्राप्त करने वाले **(उरुज्रयसम्)** बहुत वेगयुक्त **(घृतयोनिम्)** जल वा प्रदीप्त अथवा कारण है गृह जिसका **(आहुतम्)** जो सब ओर से शब्दयुक्त **(त्वेषम्)** प्रदीप्त तथा **(चोदयन्मति)** बुद्धि को प्रेरणा करने और **(चक्षुः)** पदार्थों को दिखाने वाले **(समिधानम्)** प्रकाशमान अग्नि को **(दधिरे)** धारण करते और **(दूतम्)** सब ओर से व्यवहारसाधक **(चक्रिरे)** करते हैं, वैसे **(त्वाम्)** आप को हम लोग धारण करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य विद्वानों के सङ्ग के बिना अग्नियों के गुण और अग्नि आदि संयोग के गुणों को जानने योग्य नहीं होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे।**
**स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे॥७॥२६॥८॥३॥**

त्वाम्। अग्ने। प्रऽदिवः। आऽहुतम्। घृतैः। सुम्नऽयवः। सुऽसमिधा। सम्। ईधिरे। सः। ववृधानः। ओषधीभिः। उक्षितः। अभि। ज्रयांसि। पार्थिवा। वि। तिष्ठसे॥७॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) शिल्पविद्योपदेशकम् (**अग्ने**) विद्वन् (**प्रदिवः**) प्रकृष्टात् प्रकाशात् (**आहुतम्**) गृहीतम् (**घृतैः**) प्रदीपकैः साधनैः (**सुम्नायवः**) य आत्मनः सुम्नमिच्छवः (**सुषमिधा**) सम्यक् प्रदीपकेनेन्धनेन (**सम्**) (**ईधिरे**) सम्यक् प्रदीपयन्ति (**सः**) (**वावृधानः**) भृशं वर्धनः (**ओषधीभिः**) सोमयवादिभिः (**उक्षितः**) संसिक्तः (**अभि**) (**ज्रयांसि**) वेगयुक्तानि कर्माणि (**पार्थिवा**) पृथिव्यां विदितानि (**वि**) (**तिष्ठसे**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा सुम्नायवो घृतैः सुषमिधा प्रदिव आहुतं यं समीधिरे स वावृधान उक्षितस्त्वमोषधीभिः पार्थिवा अभि ज्रयांसि वि तिष्ठसे तथा त्वां सततं वयं सुखयेम॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसः सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यो विद्युद्विद्यामुत्पादयन्ति तथा विद्वांसः सर्वतो गुणान् गृह्णन्तीति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां महाविदुषां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीदयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्ते संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां विभूषित ऋग्वेदभाष्ये तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः षड्विंशो वर्गस्तृतीयाष्टकश्च पञ्चमे मण्डलेऽष्टमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् जैसे (**सुम्नायवः**) अपने सुख की इच्छा करने वाले जन (**घृतैः**) प्रकाशित करने वाले साधनों और (**सुषमिधा**) उत्तम प्रकार प्रकाश करने वाले इन्धन के साथ (**प्रदिवः**) अत्यन्त प्रकाश से (**आहुतम्**) ग्रहण किये गये जिनको (**सम्, ईधिरे**) उत्तम प्रकार प्रकाशित करते हैं (**सः**) वह (**वावृधानः**) निरन्तर बढ़ने वाले (**उक्षितः**) उत्तम प्रकार सींचे गये आप (**ओषधीभिः**) सोमलता और यवादिकों से (**पार्थिवा**) पृथिवी में विदित (**अभि**) सब ओर से (**ज्रयांसि**) वेगयुक्त कर्मों को (**वि, तिष्ठसे**) विशेष करके स्थित करते हो, वैसे (**त्वाम्**) आप को निरन्तर हम लोग सुख देवें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन सब पदार्थों से बिजुली की विद्या को उत्पन्न करते हैं, वैसे विद्वान् जन सब से गुणों को ग्रहण करते हैं॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इस पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य महाविद्वान् श्रीमद्विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्री दयानन्द सरस्वती स्वामिविरचित उत्तम प्रमाणयुक्त संस्कृत और आर्य्यभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्य में तृतीयाष्टक में अष्टम अध्याय और छब्बीसवां वर्ग, तीसरा अष्टक तथा पञ्चम मण्डल में अष्टम सूक्त समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

## अथ चतुर्थाष्टकारम्भः॥

### तत्र प्रथमाऽध्यायः॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ सप्तर्चस्य नवमस्य सूक्तस्य गय आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ स्वराडुष्णिक्। ३, ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ निचृदनुष्टुप्। ६ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ स्वराड् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ७ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्न्यादिगुणानाह॥*

अब चतुर्थ अष्टक में सात ऋचा वाले नवम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्न्यादि पदार्थों के गुणों को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने ह॒विष्म॑न्तो दे॒वं मर्ता॑स ईळते।**

**मन्ये॑ त्वा जा॒तवे॑दसं॒ स ह॒व्या व॑क्ष्यानु॒षक्॥ १॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ह॒विष्म॑न्तः। दे॒वम्। मर्ता॑सः। ई॒ळ॒ते॒। मन्ये॑। त्वा॒। जा॒तऽवे॑दसम्। सः। ह॒व्या। व॒क्षि॒। आ॒नु॒षक्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) विद्वांसम् (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**हविष्मन्तः**) प्रशस्तदानादियुक्ताः (**देवम्**) देदीप्यमानम् (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**ईळते**) स्तुवन्ति (**मन्ये**) (**त्वा**) त्वाम् (**जातवेदसम्**) (**सः**) (**हव्या**) होतुमर्हाणि (**वक्षि**) (**आनुषक्**) आनुकूल्येन॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा हविष्मन्तो मर्त्तासो जातवेदसं देवमग्निं प्रशंसन्ति तथा त्वामीळते। अहं यं त्वा मन्ये स त्वं हव्यानुषग्वक्षि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्न्यादिगुणानन्विच्छन्ति त एव विद्यानुकूलान् व्यवहारान् जनयन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान जैसे (**हविष्मन्तः**) अच्छे दान आदि से युक्त (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**जातवेदसम्**) उत्पन्न हुए पदार्थों को जानने वाले (**देवम्**) प्रकाशमान अग्नि की प्रशंसा करते है, वैसे (**त्वाम्**) विद्वान् आपकी (**ईळते**) स्तुति करते हैं मैं जिन (**त्वा**) आप को (**मन्ये**) मानता हूं (**सः**) वह आप (**हव्या**) ग्रहण करने योग्य पदार्थों को (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**वक्षि**) धारण करते हो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि आदि के गुणों को ढूंढ़ते हैं, वे ही विद्या के अनुकूल व्यवहारों को उत्पन्न करते हैं॥ १॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्होता॑ दा॒स्वतः॒ क्षय॑स्य वृ॒क्तब॑र्हिषः।**

**सं य॒ज्ञास॒श्चर॑न्ति॒ यं सं वाजा॑सः श्र॒व॒स्यवः॑॥२॥**

**अ॒ग्निः। होता॑। दा॒स्वतः॑। क्षय॑स्य। वृ॒क्तऽब॑र्हिषः। सम्। य॒ज्ञासः॑। चर॑न्ति। यम्। सम्। वाजा॑सः। श्र॒व॒स्यवः॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) पावक इव (**होता**) दाता (**दास्वतः**) दातृस्वभावस्य (**क्षयस्य**) निवासस्य (**वृक्तबर्हिषः**) वृक्तं वर्जितं बर्हिर्यस्मिन् (**सम्**) (**यज्ञासः**) सङ्गन्तव्याः (**चरन्ति**) (**यम्**) (**सम्**) (**वाजासः**) वेगवन्तः (**श्रवस्यवः**) आत्मनः श्रवमिच्छवः॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा होताग्निर्दास्वतो वृक्तबर्हिषः क्षयस्य मध्ये वसति तथा यं श्रवस्यवो वाजासो यज्ञासः सं चरन्ति स संज्ञापको भवति॥२॥

**भावार्थः**-मनुष्या विस्तीर्णावकाशानि गृहाणि निर्माय पुरुषार्थेन पदार्थविद्यां प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जैसे (**होता**) दाता (**अग्निः**) अग्नि के सदृश पुरुष (**दास्वतः**) देने वाले के स्वभाव से युक्त (**वृक्तबर्हिषः**) जल से रहित (**क्षयस्य**) स्थान के मध्य में बसता है, वैसे (**यम्**) जिसको (**श्रवस्यवः**) अपने धन की इच्छा करने वाले (**वाजासः**) वेग से युक्त (**यज्ञासः**) मिलने योग्य जन (**सम्, चरन्ति**) उत्तम प्रकार संचार करते हैं, वह (**सम्**) उत्तम प्रकार जनाने वाला होता है॥२॥

**भावार्थः**-मनुष्य बड़े अवकाश वाले गृहों को रच के पुरुषार्थ से पदार्थविद्या को प्राप्त हों॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**उ॒त स्म॒ यं शिशुं॑ यथा॒ नवं॒ जनि॑ष्टा॒रणी॑।**

**ध॒र्तारं॒ मानु॑षीणां वि॒शाम॒ग्निं स्व॑ध्व॒रम्॥३॥**

**उ॒त। स्म॒। यम्। शिशु॑म्। य॒था। नव॑म्। जनि॑ष्ट। अ॒रणी॒ इति॑। ध॒र्तार॑म्। मानु॑षीणाम्। वि॒शाम्। अ॒ग्निम्। सु॒ऽअ॒ध्व॒रम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्म**) (**यम्**) (**शिशुम्**) बालकम् (**यथा**) (**नवम्**) नवीनम् (**जनिष्ट**) जनयतः (**अरणी**) काष्ठविशेषाविव (**धर्त्तारम्**) (**मानुषीणाम्**) मनुष्यादीनाम् (**विशाम्**) प्रजानाम् (**अग्निम्**) (**स्वधरम्**) सुष्ठ्वहिंसाधर्मं प्राप्तम्॥३॥

**अन्वयः**-यथा मातापितरौ नवं शिशुं जनिष्ट तथा स्म यमरणी मानुषीणां विशां धर्त्तारमुत स्वध्वरमग्निं विद्वांसो जनयन्तु॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा मातापितरौ श्रेष्ठं सन्तानं जनयित्वा सुखमाप्नुतस्तथा विद्वांसो विद्युतमग्निमुत्पाद्यैश्वर्य्यमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-(**यथा**) जैसे माता और पिता (**नवम्**) नवीन (**शिशुम्**) बालक को (**जनिष्ट**) उत्पन्न करते हैं, वैसे (**स्म**) ही (**यम्**) जिसको (**अरणी**) काष्ठविशेषों के सदृश (**मानुषीणाम्**) मनुष्य आदि (**विशाम्**) प्रजाओं के (**धर्त्तारम्**) धारण करने वाले (**उत**) भी (**स्वध्वरम्**) उत्तम प्रकार अहिंसारूप धर्म को प्राप्त (**अग्निम्**) अग्नि को विद्वान् जन उत्पन्न करें॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे माता-पिता श्रेष्ठ सन्तान को उत्पन्न करके सुख को प्राप्त होते हैं, वैसे विद्वान् जन बिजुलीरूप अग्नि को उत्पन्न करके ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम्।**

**पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर्न यवसे॥४॥**

**उत। स्म। दुःऽगृभीयसे। पुत्रः। न। ह्वार्याणाम्। पुरु। यः। दग्धा। असि। वना। अग्ने। पशुः। न। यवसे॥४॥**

**पदार्थ:**-(**उत**) (**स्म**) (**दुर्गृभीयसे**) दुःखेन गृह्णासि (**पुत्रः**) (**न**) इव (**ह्वार्याणाम्**) कुटिलानाम् (**पुरू**) बहु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**यः**) (**दग्धा**) (**असि**) (**वना**) वनानि (**अग्ने**) अग्निः (**पशुः**) (**न**) इव (**यवसे**) अद्याय घासाय॥४॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! विद्वन्! ह्वार्य्याणां पुत्रो न पुरू दुर्गृभीयसे स्म योऽग्निर्वना दग्धेवोत यवसे पशुर्नाऽसि तस्मात् पदार्थविदसि॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यो हि पदार्थविद्याग्रहणाय पुत्रवद्धेनुवच्च वर्त्तते स एवाग्न्यादिविद्यां ज्ञातुमर्हति॥४॥

**पदार्थ:**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन्! (**ह्वार्याणाम्**) कुटिलों के (**पुत्रः**) पुत्र के (**नः**) सदृश (**पुरू**) बहुत को (**दुर्गृभीयसे**) दुःख से ग्रहण करते (**स्म**) ही हो (**यः**) जो अग्नि (**वना**) वनों को (**दग्धा**) जलाने वाले के सदृश (**उत**) भी (**यवसे**) खाने योग्य घास के लिये (**पशुः**) पशु के (**न**) सदृश है, उससे पदार्थों को जानने वाले (**असि**) हो॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो पदार्थविद्या के ग्रहण के लिये पुत्र और गौ के सदृश वर्त्तमान है, वही अग्नि आदि की विद्या को जान सकता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अध स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः।**

**यदीमह त्रितो दिव्युप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा॥५॥**

**अध। स्म। यस्य। अर्चयः। सम्यक्। सम्ऽयन्ति। धूमिनः। यत्। ईम्। अह। त्रितः। दिवि। उप। ध्माताऽइव। धमति। शिशीते। ध्मातरि। यथा॥५॥**

**पदार्थः**-(**अध**) अथ (**स्म**) (**यस्य**) (**अर्चयः**) (**सम्यक्**) (**संयन्ति**) (**धूमिनः**) बहुर्धूमो विद्यते येषान्ते (**यत्**) यः (**ईम्**) सर्वतः (**अह**) विनिग्रहे (**त्रितः**) संप्लावकः (**दिवि**) अन्तरिक्षे (**उप**) (**ध्मातेव**) धमनकर्त्तेव (**धमति**) (**शिशीते**) तनूकरोति (**ध्मातरी**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**यथा**)॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्याग्नेऽर्चयो धूमिनः संयन्त्यध यद्य ईमह त्रितः सन् दिवि ध्मातेवोप धमति यथा ध्मातरी सम्यक् शिशीते तेन तथा स्म कार्य्याणि साध्नुवन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! सर्वाभ्यः पदार्थविद्याभ्यः पूराग्निविद्या वेदितव्या॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिस अग्नि के (**अर्चयः**) तेज (**धूमिनः**) बहुत धूम से युक्त (**संयन्ति**) उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं (**अध**) इसके अनन्तर (**यत्**) जो (**ईम्**) सब ओर से (**अह**) निश्चय ग्रहण करने में (**त्रितः**) अच्छे प्रकार ले जाने वाला हुआ (**दिवि**) अन्तरिक्ष में (**ध्मातेव**) शब्द करने वाले के सदृश (**उप, धमति**) शब्द करता है और (**यथा**) जैसे (**ध्मातरी**) चलने वाले में (**सम्यक्**) उत्तम प्रकार (**शिशीते**) सूक्ष्म करता है, उससे वैसे (**स्म**) ही कार्य्यों को सिद्ध करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! सब पदार्थविद्याओं से पहले अग्निविद्या जाननी चाहिये॥५॥

**पुनर्मित्रभावेनोक्तविषयमाह॥**

फिर मित्रभाव से उक्त विषय को कहते हैं॥

**तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य च प्रशस्तिभिः।**

**द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम्॥६॥**

**तव। अहम्। अग्ने। ऊतिऽभिः। मित्रस्य। च। प्रशस्तिऽभिः। द्वेषःऽयुतः। न। दुःऽइता। तुर्याम। मर्त्यानाम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**अहम्**) (**अग्ने**) विद्वन् (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः (**मित्रस्य**) (**च**) (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाभिः (**द्वेषोयुतः**) द्वेषयुक्ताः (**न**) इव (**दुरिता**) दुःखेनेता प्राप्तानि (**तुर्याम**) हिंस्याम (**मर्त्यानाम्**) मनुष्याणाम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! अहं मित्रस्य तवोतिभिः प्रशस्तिभिश्च प्रशंसितो भवेयं तथा त्वं भव सर्वे वयं मिलित्वा द्वेषोयुतो न मर्त्यानां दुरिता तुर्य्याम॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा मित्रं मित्रस्य प्रशंसां करोति शत्रवो हितं घ्नन्ति तथैव मित्रतां कृत्वा मनुष्याणां दुःखानि वयं हिंस्येम॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् **(अहम्)** मैं **(मित्रस्य)** मित्र **(तव)** आपकी **(ऊतिभिः)** रक्षा आदिकों से और **(प्रशस्तिभिः)** प्रशंसाओं से **(च)** भी प्रशंसित होऊं, वैसे आप हूजिये और सब हम लोग मिल कर **(द्वेषोयुतः)** द्वेषयुक्तों के **(न)** सदृश **(मर्त्यानाम्)** मनुष्यों के **(दुरिता)** दुःख से प्राप्त हुए दोषों की **(तुर्याम)** हिंसा करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे मित्र मित्र की प्रशंसा करता और शत्रुजन हित का नाश करते हैं, वैसे ही मित्रता करके मनुष्यों के दुःखों का हम नाश करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर।**

**स क्षेपयत्स पोषयद्भुवद्वाजस्य सातय उतैधि पृत्सु नो वृधे॥७॥ १॥**

**तम्। नः। अग्ने। अभि। नरः। रयिम्। सहस्वः। आ। भर। सः। क्षेपयत्। सः। पोषयत्। भुवत्। वाजस्य। सातये। उत। एधि। पृतऽसु। नः। वृधे॥७॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** विद्वन् **(अभि)** आभिमुख्ये **(नरः)** नायकान्। व्यत्ययेन प्रथमा। **(रयिम्)** धनम् **(सहस्वः)** बहुसहनादिगुणयुक्त **(आ)** **(भर)** **(सः)** **(क्षेपयत्)** प्रेरयेत् **(सः)** **(पोषयत्)** पोषयेत् **(भुवत्)** भवेत् **(वाजस्य)** अन्नादेः **(सातये)** संविभागाय **(उत)** **(एधि)** भव **(पृत्सु)** स-ग्रामेषु **(नः)** अस्माकम् **(वृधे)** वर्धनाय॥७॥

**अन्वयः**-हे सहस्वोऽग्ने विद्वन्! यस्त्वं नो नरो रयिमभ्या भर तं वयं सत्कुर्याम स भवानस्मान् क्षेपयत् पोषयत् स वाजस्य सातये भुवदुत पृत्सु नो वृध एधि॥७॥

**भावार्थः**-जिज्ञासुभिर्विदुषः प्रतीयं प्रार्थना कार्य्या भवन्तोऽस्मान् सद्गुणेषु प्रेरयन्तु ब्रह्मचर्य्यादिना पोषयन्तु सत्यासत्ययोर्विभाजका युद्धविद्याकुशला अस्मान् सततं रक्षन्त्विति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति नवमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहस्वः)** बहुत सहन आदि गुणों से युक्त **(अग्ने)** विद्वन्! जो आप **(नः)** हम लोगों के **(नरः)** नायक अर्थात् कार्य्यों में अग्रगामियों और **(रयिम्)** धन को **(अभि)** सन्मुख **(आ, भर)** सब प्रकार धारण करें **(तम्)** उनका हम लोग सत्कार करें **(सः)** वह आप हम लोगों की **(क्षेपयत्)** प्रेरणा करें और **(पोषयत्)** पोषण पालन करें **(सः)** वह **(वाजस्य)** अन्न आदि के **(सातये)** संविभाग के लिये **(भुवत्)** होवें **(उत)** और **(पृत्सु)** स-ग्रामों में **(नः)** हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(एधि)** हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-सुकर्म्मों के जानने की इच्छा करने वालों को चाहिये कि विद्वानों के प्रति यह प्रार्थना करें कि आप लोग हम लोगों को श्रेष्ठ गुणों में प्रेरित करो और ब्रह्मचर्य्य आदि से पुष्ट करो और सत्य और असत्य के विभाग करने वाले और युद्धविद्या में चतुर जन हम लोगों की निरन्तर रक्षा करें॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह नवमा सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**

### ॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य दशमस्य सूक्तस्य गय आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ६ निचृदनुष्टुप्। ५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ स्वराडुष्णिक्। ३ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ स्वराड् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्निशब्दार्थविद्वद्गुणानाह॥*

अब सात ऋचा वाले दशवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो।**

**प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम्॥१॥**

**अग्ने। ओजिष्ठम्। आ। भर। द्युम्नम्। अस्मभ्यम्। अध्रिगो इत्यध्रिऽगो। प्र। नः। राया। परीणसा। रत्सि। वाजाय। पन्थाम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**ओजिष्ठम्**) अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर (**द्युम्नम्**) यशो धनं वा (**अस्मभ्यम्**) (**अध्रिगो**) योऽधृन् धारकान् गच्छन्ति तत्सम्बुद्धौ (**प्र**) (**नः**) अस्मान् (**राया**) धनेन (**परीणसा**) (**रत्सि**) रमसे (**वाजाय**) विज्ञानाय (**पन्थाम्**) मार्गम्॥१॥

**अन्वयः**-हे अध्रिगोऽग्ने! त्वमस्मभ्यमोजिष्ठं द्युम्नमा भर नोऽस्मान् परीणसा राया वाजाय पन्थां प्राप्य रत्सि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अन्येषां सदुपदेशेन पुण्यकीर्त्तिं वर्धयन्ति ते धर्मकीर्तयो भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अध्रिगो**) धारण करने वालों को प्राप्त होने वाले (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**ओजिष्ठम्**) अत्यन्त पराक्रमयुक्त (**द्युम्नम्**) यश वा धन को (**आ, भर**) चारों ओर से धारण कीजिये और (**नः**) हम लोगों को (**परीणसा**) बहुत (**राया**) धन से (**वाजाय**) विज्ञान के लिये (**पन्थाम्**) मार्ग को (**प्र**) प्राप्त होकर (**रत्सि**) रमते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अन्य जनों के श्रेष्ठ उपदेश से पुण्यकीर्त्ति को बढ़ाते, वे धर्म्म सम्बन्धी यश वाले होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना।**

**त्वे असुर्य१मारुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः॥२॥**

**त्वम्। नः। अग्ने। अद्भुत। क्रत्वा। दक्षस्य। मंहना। त्वे इति। असुर्यम्। आ। अरुहत्। क्राणा। मित्रः। न। यज्ञियः॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) अध्यापकोपदेशक (**अद्भुत**) आश्चर्योत्तमगुणकर्मस्वभाव (**क्रत्वा**) प्रज्ञया (**दक्षस्य**) चतुरस्य विद्याबलयुक्तस्य (**मंहना**) महत्त्वेन (**त्वे**) त्वयि (**असुर्य्यम्**) असुरसम्बन्धिनम् (**आ, अरुहत्**) (**क्राणा**) कुर्वन् (**मित्रः**) (**न**) इव (**यज्ञियः**) यज्ञमनुष्ठातुमर्हः॥२॥

**अन्वयः**-हे अद्भुताऽग्ने! त्वं क्रत्वा दक्षस्य मंहना यथा त्वेऽसुर्य्यं क्राणा मित्रो यज्ञियो नाऽऽरुहत्तथा नः वर्धय॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एवोत्तमो विद्वान् भवति यः सर्वेषां सत्कारस्य विद्योपदेशं ददाति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अद्भुत**) आश्चर्ययुक्त उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**अग्ने**) अध्यापक और उपदेशक! (**त्वम्**) आप (**क्रत्वा**) बुद्धि से (**दक्षस्य**) चतुर विद्या और बल से युक्त पुरुष के (**मंहना**) महत्त्व से जैसे (**त्वे**) आप में (**असुर्य्यम्**) असुरसम्बन्धी कर्म (**क्राणा**) करता हुआ (**मित्रः**) मित्र (**यज्ञियः**) यज्ञ करने योग्य के (**न**) सदृश (**आ, अरुहत्**) बढ़ता है, वैसे (**नः**) हम लोगों को बढ़ाइये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही उत्तम विद्वान् होता है, जो सब के सत्कार के लिये विद्या का उपदेश देता है॥२॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय।**
**ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः॥३॥**

**त्वम्। नः। अग्ने। एषाम्। गयम्। पुष्टिम्। च। वर्धय। ये। स्तोमेभिः। प्र। सूरयः। नरः। मघानि। आनशुः॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**नः**) अस्माकम् (**अग्ने**) विद्वन् (**एषाम्**) (**गयम्**) अपत्यं गृहं च। **गय इत्यपत्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.२)। **धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०) **गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) (**पुष्टिम्**) (**च**) (**वर्धय**) (**ये**) (**स्तोमेभिः**) वेदस्थैः प्रकरणैः स्तोत्रैः (**प्र**) (**सूरयः**) विपश्चितः (**नरः**) नेतारः (**मघानि**) मघानि धनानि (**आनशुः**) प्राप्नुयुः॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये नरः सूरयः स्तोमेभिर्मघानि प्रानशुस्तैः सह त्वं न एषां गयं च पुष्टिं च वर्धय॥३॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिराप्तैः सहितैः सर्वेषां मनुष्याणां सुखं बलं च वर्द्धयेत॥३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**ये**) जो (**नरः**) नायक (**सूरयः**) विद्वान् जन (**स्तोमेभिः**) वेद में वर्त्तमान स्तुति के प्रकरणों से (**मघानि**) धनों को (**प्र, आनशुः**) प्राप्त होवें, उनके साथ (**त्वम्**) आप

**(नः)** हम लोगों और **(एषाम्)** इनके **(गयम्)** सन्तान तथा गृह वा धन **(च)** और **(पुष्टिम्)** पुष्टि को **(वर्धय)** वृद्धि कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि यथार्थवक्ताओं के सहित सब मनुष्यों के सुख और बल को बढ़ावें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ये अ॑ग्ने चन्द्र ते॒ गिर॑: शु॒म्भन्त्यश्व॑राधसः।**

**शुष्मे॑भिः शु॒ष्मिणो॒ नरो॑ दि॒वश्चि॒द्येषां॑ बृहत्सु॑की॒र्त्तिर्बोध॑ति॒ त्मना॑॥४॥**

ये। अ॒ग्ने॒। च॒न्द्र॒। ते॒। गिर॑ः। शु॒म्भन्ति॑। अश्व॑ऽराधसः। शुष्मे॑भिः। शु॒ष्मिण॑ः। नर॑ः। दि॒वः। चि॒त्। येषा॑म्। बृ॒हत्। सु॒ऽकी॒र्त्तिः। बोध॑ति। त्मना॑॥४॥

**पदार्थः**-**(ये)** **(अग्ने)** विद्वन् **(चन्द्र)** आह्लादप्रद **(ते)** तव **(गिरः)** धर्म्या वाचः **(शुम्भन्ति)** विराजन्ते **(अश्वराधसः)** विद्युदादिपदार्थसंसाधिकाः **(शुष्मेभिः)** बलैः **(शुष्मिणः)** बलिनः **(नरः)** नायकाः **(दिवः)** कामयमानाः **(चित्)** अपि **(येषाम्)** **(बृहत्, सुकीर्त्तिः)** महोत्तमप्रशंसः **(बोधति)** जानाति **(त्मना)** आत्मना॥४॥

**अन्वयः**-हे चन्द्राग्ने! तेऽश्वराधसो गिरो ये शुष्मेभिः सह शुष्मिणो दिवश्चिन्नरः शुम्भन्ति येषामेता गिरो बृहत्सुकीर्त्तिर्भवान् त्मना बोधति ते सखायो भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसस्तुल्यगुणकर्मस्वभावाः सखायो भूत्वाऽग्न्यादिपदार्थविद्यां परस्परं बोधयन्ति ते सिद्धकामा जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(चन्द्र)** आनन्द देने वाले **(अग्ने)** विद्वन्! **(ते)** आपकी **(अश्वराधसः)** बिजुली आदि पदार्थों की सिद्धि करने वाली **(गिरः)** धर्मसम्बन्धिनी वाणियों को **(ये)** जो **(शुष्मेभिः)** बलों के साथ **(शुष्मिणः)** बली **(दिवः)** कामना करते हुए **(चित्)** भी **(नरः)** मुख्य नायकजन **(शुम्भन्ति)** विराजते हैं और **(येषाम्)** जिनकी इन वाणियों को **(बृहत्, सुकीर्त्तिः)** बड़ी उत्तम प्रशंसायुक्त आप **(त्मना)** आत्मा से **(बोधति)** जानते हैं, वे मित्र हों॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् सदृश गुण, कर्म और स्वभाव वाले मित्र होकर अग्नि आदि पदार्थों की विद्याओं को परस्पर जनाते हैं, वे सिद्ध मनोरथ वाले होते हैं॥४॥

**अथ शिल्पविद्याविषयकविद्वद्गुणानाह॥**

अब शिल्पविद्यविषयक विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**तव॒ त्ये अ॑ग्ने अ॒र्चयो॒ भ्राज॑न्तो यन्ति धृष्णु॒या।**

**परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः॥५॥**

**तव। त्ये। अग्ने। अर्चयः। भ्राजन्तः। यन्ति। धृष्णुऽया। परिऽज्मानः। न। विऽद्युतः। स्वानः। रथः। न। वाजऽयुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्ये**) ते (**अग्ने**) विद्वन् (**अर्चयः**) विद्याविनयप्रकाशिताः (**भ्राजन्तः**) अन्यान् प्रकाशयन्तः (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**धृष्णुया**) प्रगल्भाः (**परिज्मानः**) परितो ज्मा भूमिराज्यं येषान्ते (**न**) इव (**विद्युतः**) (**स्वानः**) शब्दायमानः (**रथः**) विमानादियानसमूहः (**न**) इव (**वाजयुः**) आत्मनो वाजं वेगमिच्छुरिव॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! तव सङ्गेन येऽर्चयो भ्राजन्तो धृष्णुया विद्वांसः परिज्मानो विद्युतो न वाजयुः स्वानो रथो न शिल्पविद्यां यन्ति त्ये सद्यः श्रीमन्तो जायन्ते॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये नरो यथार्थां शिल्पविद्यां जानन्ति ते सर्वत्र व्याप्तविद्युदिव विमानादियानवत् सद्योगामिनो भूत्वा सर्वतो धनमाप्य बहुसुखं लभन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**तव**) आपके सङ्ग से जो (**अर्चयः**) विद्या और विनय से प्रकाशित (**भ्राजन्तः**) परस्पर एक-दूसरे को प्रकाशित करते हुए (**धृष्णुया**) न्यायपूर्वक बोलने में ढीठ विद्वान् जन (**परिज्मानः**) सब ओर से भूमि के राज्य से युक्त (**विद्युतः**) बिजुलियों के (**न**) सदृश (**वाजयुः**) अपने वेग की इच्छा करने वाले के सदृश और (**स्वानः**) शब्द करते हुए (**रथः**) विमान आदि वाहनसमूह के (**न**) सदृश शिल्पविद्या को (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**त्ये**) वे शीघ्र धनवान् होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जन यथार्थ शिल्पविद्या को जानते हैं, वे सर्वत्र व्याप्त बिजुली के समान विमान आदि वाहनों के सदृश शीघ्रगामी हो और सब प्रकार से धन को प्राप्त होकर बहुत सुख को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**नू नो अग्न ऊतये सबाधसश्च रातये।**
**अस्माकासश्च सूरयो विश्वा आशास्तरीषणि॥६॥**

**नू। नः। अग्ने। ऊतये। सऽबाधसः। च। रातये। अस्माकासः। च। सूरयः। विश्वाः। आशाः। तरीषणि॥६॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः (**नः**) अस्माकम् (**अग्ने**) विद्वन् राजन् (**ऊतये**) रक्षाद्याय (**सबाधसः**) बाधेन सह वर्त्तमानाः (**च**) (**रातये**) दानाय (**अस्माकासः**) अस्माकमिमे (**च**) (**सूरयः**) (**विश्वाः**) सकलाः (**आशाः**) दिशः (**तरीषणि**) तरणे॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो सबाधसश्चास्माकासः सूरयो न ऊतये रातये च विश्वा आशास्तरीषणि नोऽस्मान्नू प्रापयेयुस्ते परोपकारिणो जायन्ते॥६॥

**भावार्थः**-त एव पण्डिता ये विमानादीनि यानानि निर्माय भूगोलेऽभितो भ्रामयन्ति ते प्रशंसितदाना भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् राजन्! जो **(सबाधसः)** बाध के सहित वर्त्तमान **(च)** और **(अस्माकासः)** हम लोगों के सम्बन्धी **(सूरयः)** विद्वान् जन **(नः)** हम लोगों की **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये और **(रातये)** दान के लिये **(च)** भी **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(आशाः)** दिशाओं को **(तरीषणि)** तरण में, हम लोगों को **(नू)** शीघ्र पहुंचावें, वे परोपकारी होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-वे ही चतुर विद्वान् हैं जो विमान आदि वाहनों को रच के भूगोल में चारों ओर घुमाते हैं, वे प्रशंसित दान वाले होते हैं॥६॥

**अथ विद्यार्थिविषयमाह॥**

अब विद्यार्थिविषय को कहते हैं॥

**त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान आ भर।**

**होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे॥७॥२॥**

**त्वम्। नः। अग्ने। अङ्गिरः। स्तुतः। स्तवानः। आ। भर। होतः। विभ्वऽसहम्। रयिम्। स्तोतृभ्यः। स्तवसे। च। नः। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** विद्वन् **(अङ्गिरः)** प्राण इव प्रियः **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(स्तवानः)** प्रशंसन् **(आ)** **(भर)** **(होतः)** दातः **(विभ्वासहम्)** यो विभूनासहते तम् **(रयिम्)** **(स्तोतृभ्यः)** **(स्तवसे)** स्तावकाय **(च)** **(नः)** अस्मान् **(उत)** **(एधि)** **(पृत्सु)** स- ग्रमेषु **(नः)** **(वृधे)** वर्द्धनाय॥७॥

**अन्वयः**-हे होतरङ्गिरोऽग्ने! स्तुतः स्तवानः सँस्त्वं नो विभ्वासहं रयिमा भर स्तोतृभ्यः स्तवसे च नोऽस्मानाभरोत पृत्सु नो वृध एधि॥७॥

**भावार्थः**-विद्यार्थिनो विदुष एवं प्रार्थयेयुर्हे भगवन्तो यूयमस्मान् ब्रह्मचर्य्यं कारयित्वा सुशिक्षां विद्यां दत्त्वा स- ग्रमान् जित्वाऽस्माकं वृद्धिं सततं कुरुतेति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्विद्यार्थिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति दशमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(होतः)** दाता और **(अङ्गिरः)** प्राण के सदृश प्रिय **(अग्ने)** विद्वन्! **(स्तुतः)** प्रशंसित **(स्तवानः)** प्रशंसा करते हुए **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(विभ्वासहम्)** व्यापकों के अच्छे प्रकार सहने वाले **(रयिम्)** धन को **(आ, भर)** धारण कीजिये तथा **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों और **(स्तवसे)** स्तुति करने वाले के लिये **(च)** भी **(नः)** हम लोगों को **[**धारण कीजिये **(उत)** और **(पृत्सु)** संग्रामों में**]** **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थ:**-विद्यार्थियों को चाहिये कि विद्वानों की इस प्रकार प्रार्थना करें कि हे भगवानो! अर्थात् विद्यारूप ऐश्वर्य्ययुक्त महाशयो! आप लोग हम लोगों को ब्रह्मचर्य्य करा और उत्तम शिक्षा तथा विद्या देके और संग्रामों को जीतकर हम लोगों की निरन्तर वृद्धि करिये॥७॥

इस सूक्त में अग्निशब्दार्थ विद्वान् और विद्यार्थी के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह दशवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**

### ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्यैकादशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ५ निचृज्जगती। २ जगती। ४, ६ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथाग्निगुणानाह॥*

अब छः ऋचा वाले ग्याहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**जन॑स्य गो॒पा अ॑जनिष्ट जागृ॑विर॒ग्निः सु॒दक्षः॑ सु॒वि॒ताय॒ नव्य॑से।**
**घृ॒तप्र॑तीको बृह॒ता दि॑वि॒स्पृशा॑ द्यु॒मद्वि भा॑ति भर॒तेभ्यः॒ शुचिः॑॥१॥**

**जन॑स्य। गो॒पाः। अ॒ज॒नि॒ष्ट॒। जागृ॑विः। अ॒ग्निः। सु॒ऽदक्षः॑। सु॒वि॒ताय॑। नव्य॑से। घृ॒तऽप्र॑तीकः। बृ॒ह॒ता। दि॒वि॒ऽस्पृशा॑। द्यु॒ऽमत्। वि। भा॒ति॒। भ॒र॒तेभ्यः॑। शुचिः॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**जनस्य**) मनुष्यस्य (**गोपाः**) रक्षकः (**अजनिष्ट**) जायते (**जागृविः**) जागरूकः (**अग्निः**) पावकः (**सुदक्षः**) सुष्ठु बलं यस्मात् (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**नव्यसे**) अतिशयेन नवीनाय (**घृतप्रतीकः**) घृतमाज्यमुदकं वा प्रतीतिकरं यस्य सः (**बृहता**) महता (**दिविस्पृशा**) यो दिवि प्रकाशे स्पृशति तेन (**द्युमत्**) प्रकाशवत् (**वि**) विशेषेण (**भाति**) प्रकाशते (**भरतेभ्यः**) धारणपोषणकृद्भ्यो मनुष्येभ्यः (**शुचिः**) पवित्रः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जनस्य गोपा जागृविः सुदक्षो घृतप्रतीकः शुचिरग्निर्बृहता दिविस्पृशा नव्यसे सुवितायाजनिष्ट भरतेभ्यो द्युमद्विभाति तं यथावद्विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिरग्न्यादिपदार्थगुणा अवश्यं विज्ञातव्याः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जनस्य**) मनुष्य की (**गोपाः**) रक्षा करने और (**जागृविः**) जागने वाला (**सुदक्षः**) अच्छे प्रकार बल जिससे (**घृतप्रतीकः**) और घृत वा जल प्रतीतिकर जिसका ऐसा (**शुचिः**) पवित्र (**अग्निः**) अग्नि (**बृहता**) बड़े (**दिविस्पृशा**) प्रकाश में स्पर्श करने वाले से (**नव्यसे**) अत्यन्त नवीन (**सुविताय**) ऐश्वर्य के लिये (**अजनिष्ट**) उत्पन्न होता तथा (**भरतेभ्यः**) धारण और पोषण करने वाले मनुष्यों के लिये (**द्युमत्**) प्रकाश के सदृश (**वि**) विशेष करके (**भाति**) प्रकाशित होता है, उसको यथावत् जानिये॥१॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि अग्नि आदि पदार्थों के गुण अवश्य जानें॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**य॒ज्ञस्य॑ के॒तुं प्र॑थ॒मं पु॒रोहि॑तम॒ग्निं नर॑स्त्रिषध॒स्थे समी॑धिरे।**

**इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः॥२॥**

**यज्ञस्य। केतुम्। प्रथमम्। पुरःऽहितम्। अग्निम्। नरः। त्रिऽसधस्थे। सम्। ईधिरे। इन्द्रेण। देवैः। सऽरथम्। सः। बर्हिषि। सीदत्। नि। होता। यजथाय। सुऽक्रतुः॥२॥**

**पदार्थः-(यज्ञस्य)** सम्यग्ज्ञानस्य **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(प्रथमम्)** आदिमम् **(पुरोहितम्)** पुर एनं दधति **(अग्निम्)** पावकमिव प्रकाशमानम् **(नरः)** नायका विद्वांसः **(त्रिषधस्थे)** त्रिभिस्सह स्थाने **(सम्, ईधिरे)** सम्यक् प्रदीपयेयुः **(इन्द्रेण)** विद्युता **(देवैः)** पृथिव्यादिभिः **(सरथम्)** रथेन यानसमूहेन सहितम् **(सः)** **(बर्हिषि)** अन्तरिक्षे **(सीदत्)** सीद **(नि)** **(होता)** दाता **(यजथाय)** सङ्गमनाय **(सुक्रतुः)** सुष्ठुप्रज्ञः शोभनकर्मा वा॥२॥

**अन्वयः**-हे नरो विद्वांसो! यथा यूयं त्रिषधस्थे यजथाय यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं समीधिरे तथा स सुक्रतुर्होता त्वमिन्द्रेण देवैः सह बर्हिषि सरथं नि षीदत्॥२॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्याधर्मपुरुषार्थेषु स्वयं वर्त्तित्वाऽन्यान् वर्त्तयन्ति त एव सर्वविज्ञापका भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** श्रेष्ठ कार्य्यों में अग्रणी विद्वान् लोगो! जैसे आप लोग **(त्रिषधस्थे)** तीन पदार्थों के सहित स्थान में **(यजथाय)** मिलने के लिये **(यज्ञस्य)** उत्तम ज्ञान की **(केतुम्)** बुद्धि को तथा **(प्रथमम्)** प्रथम वर्त्तमान **(पुरोहितम्)** प्रथम इसको धारण करें ऐसे **(अग्निम्)** अग्नि के समान प्रकाशमान को **(सम्, इधिरे)** उत्तम प्रकार प्रकाशित करें, वैसे **(सः)** वह **(सुक्रतुः)** उत्तम बुद्धि वा उत्तम कर्म्म वाले **(होता)** दाता आप **(इन्द्रेण)** बिजुली और **(देवैः)** पृथिवी आदिकों के साथ **(बर्हिषि)** अन्तरिक्ष में **(सरथम्)** वाहनों के समूह के सहित **(नि, सीदत्)** स्थित हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन विद्या, धर्म और पुरुषार्थ में स्वयं वर्त्ताव करके अन्यों का उसके अनुसार वर्त्ताव कराते हैं, वे ही सब को बोध देने वाले होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेवविषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर्मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः।**

**घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस्ते केतुरभवद्दिवि श्रितः॥३॥**

**असम्ऽमृष्टः। जायसे। मात्रोः। शुचिः। मन्द्रः। कविः। उत्। अतिष्ठः। विवस्वतः। घृतेन। त्वा। अवर्धयन्। अग्ने। आऽहुत। धूमः। ते। केतुः। अभवत्। दिवि। श्रितः॥३॥**

**पदार्थः-(असंमृष्ट)** सम्यगशुद्धः **(जायसे)** उत्पद्यसे **(मात्रोः)** मातृवन्मान्यकारकयोर्विद्याचार्ययोः **(शुचिः)** **(मन्द्रः)** प्रशंसित आनन्दितः **(कविः)** विद्वान् **(उत्)** **(अतिष्ठः)** उत्तिष्ठते **(विवस्वतः)** सूर्यात् **(घृतेन)** विद्याप्रकाशेन **(त्वा)** त्वाम् **(अवर्धयन्)** वर्धयन्तु **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(आहुत)** सत्कारेण

निमन्त्रित **(धूमः)** **(ते)** तव **(केतुः)** प्रज्ञापक इव प्रज्ञा **(अभवत्)** भवति **(दिवि)** प्रकाशमाने कमनीये सत्कर्त्तव्ये परमेश्वरे **(श्रितः)** सेवितः॥३॥

**अन्वयः**-हे आहुताग्ने विद्यार्थिन्! ये विद्वांसो विवस्वतो घृतेन त्वावर्धयन् यस्य तेऽग्नेर्धूम इव दिवि केतुः श्रितोऽभवन्मात्रोः शिक्षां प्राप्याऽसंमृष्टस्त्वं मन्द्रः शुचिर्जायसे कविरुदतिष्ठस्तं वयं सत्कुर्याम॥३॥

**भावार्थः**-यो बालकः कन्या वा विद्वद्भ्यो विदुषीभ्यो वा ब्रह्मचर्य्येण विद्यां प्राप्य पवित्रौ जायेते तौ जगतो भूषकौ भवतः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(आहुत)** सत्कार से निमन्त्रित **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्यार्थी! जो विद्वान् जन **(विवस्वतः)** सूर्य्य से **(घृतेन)** विद्या के प्रकाश से **(त्वा)** आपकी **(अवर्धयन्)** वृद्धि करें और जिन **(ते)** आपकी अग्नि के **(धूमः)** धूम के सदृश **(दिवि)** प्रकाशमान मनोहर और सत्कार करने योग्य परमेश्वर में **(केतुः)** जनाने वाले के सदृश बुद्धि **(श्रितः)** सेवन किई **[=की गयी]** **(अभवत्)** होती है तथा **(मात्रोः)** माता के सदृश आदर करने वाले विद्या और आचार्य्य की शिक्षा को प्राप्त होकर **(असंमृष्टः)** अच्छे प्रकार अशुद्ध आप **(मन्द्रः)** प्रशंसित और आनन्दित **(शुचिः)** पवित्र **(जायसे)** होते हो और **(कविः)** विद्वान् **(उत्, अतिष्ठः)** उठता है, उनका हम लोग सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-जो बालक वा कन्या विद्वानों वा पढ़ी हुई स्त्रियों से ब्रह्मचर्य्यपूर्वक विद्या को प्राप्त होकर पवित्र होते, वे संसार को शोभित करने वाले होते हैं॥३॥

**पुनरग्न्यादिगुणानाह॥**

फिर अग्न्यादिकों के गुणों को मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुयाग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे।**

**अग्निर्दूतो अभवद्धव्यवाहनोऽग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम्॥४॥**

**अग्निः। नः। यज्ञम्। उप। वेतु। साधुऽया। अग्निम्। नरः। वि। भरन्ते। गृहेऽगृहे। अग्निः। दूतः। अभवत्। हव्यऽवाहनः। अग्निम्। वृणानाः। वृणते। कविऽक्रतुम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावकः **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् **(उप)** **(वेतु)** व्याप्नोतु **(साधुया)** साधवः **(अग्निम्)** पावकम् **(नरः)** नेतारो मनुष्याः **(वि)** **(भरन्ते)** धरन्ति **(गृहेगृहे)** प्रतिगृहम् **(अग्निः)** **(दूतः)** दूतवत्कार्य्यसाधकः **(अभवत्)** भवति **(हव्यवाहनः)** आदातव्यान् पदार्थान् देशान्तरे प्रापकः **(अग्निम्)** **(वृणानाः)** स्वीकुर्वाणाः **(वृणते)** स्वीकुर्वन्ति **(कविक्रतुम्)** प्रज्ञप्रज्ञाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाग्निर्नो यज्ञमुप वेतु यथा साधुया नरो गृहेगृहेऽग्निं वि भरन्ते यथा हव्यवाहनोऽग्निर्दूतोऽभवद् यथाऽग्निं वृणानाः कविक्रतुं वृणते तथैव यूयमाचरत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्निवत्प्रतापिनः सज्जनवदुपकारकाः प्रतिजनाय मङ्गलप्रदाः सन्ति ते सर्वदा सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे **(अग्निः)** अग्नि **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** मिलने योग्य व्यवहार को **(उप, वेतु)** व्याप्त हो और जैसे **(साधुया)** श्रेष्ठ **(नरः)** अग्रणी मनुष्य **(गृहेगृहे)** गृहगृह में **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश **(वि, भरन्ते)** धारण करते हैं और जैसे **(हव्यवाहनः)** ग्रहण करने योग्य पदार्थों को एक देश से दूसरे देशों में पहुँचाने वाला **(अग्निः)** अग्नि **(दूतः)** दूत के सदृश कार्य्यों का सिद्धकर्त्ता **(अभवत्)** होता है और जैसे **(अग्निम्)** अग्नि को **(वृणानाः)** स्वीकार करते हुए जन **(कविक्रतुम्)** बुद्धिमान् की बुद्धि का **(वृणते)** स्वीकार करते हैं, वैसे ही आप लोग आचरण करो॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि के सदृश तेजस्वी, सज्जनों के सदृश उपकार करने और प्रत्येक जन के लिये मङ्गल देने वाले हैं, वे सर्वदा सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे।**
**त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च॥५॥**

**तुभ्य। इदम्। अग्ने। मधुमत्ऽतम्। वचः। तुभ्यम्। मनीषा। इयम्। अस्तु। शम्। हृदे। त्वाम्। गिरः। सिन्धुम्ऽइव। अवनीः। महीः। आ। पृणन्ति। शवसा। वर्धयन्ति। च॥५॥**

**पदार्थ:**-**(तुभ्य)** तुभ्यम्। अत्र **सुपां सुलुगिति** भ्यसो लुक्। **(इदम्) (अग्ने) (मधुमत्तमम्)** अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तम् **(वचः)** वचनम् **(तुभ्यम्) (मनीषा)** प्रज्ञा **(इयम्) (अस्तु) (शम्)** सुखकरम् **(हृदे)** हृदयाय **(त्वाम्) (गिरः)** वाचः **(सिन्धुमिव)** समुद्रमिव **(अवनीः)** रक्षिकाः **(महीः)** श्रेष्ठा धरा इव पूज्याः **(आ) (पृणन्ति)** पालयन्ति विद्याः पूरयन्ति वा **(शवसा)** बलेन परिचरणेन वा। **शवतीति परिचरणकर्मा।** (निघं०३।५) अस्मादसुनि कृते रूपसिद्धिः। **(वर्धयन्ति) (च)**॥५॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! पावकवत्पवित्रान्तःकरण विद्यार्थिस्तुभ्येदं मधुमत्तमं वचस्तुभ्यमियं मनीषा हृदे शमस्तु याः सिन्धुमिवावनीर्महीर्गिरः शवसा त्वाम् पृणन्ति वर्धयन्ति च तास्त्वं गृहाण॥५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्यार्थिनो! यथा नद्यः सिन्धुमलंकुर्वन्ति तथैव विद्याविनययुक्ता वाचो युष्मानलं कुर्वन्तु यत्प्रतापेन युष्माकं मुखेभ्यः सत्यं सर्वहितकरं वचः सदैव निःसरेत्॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश पवित्र अन्तःकरण वाले विद्यार्थी **(तुभ्य)** आपके लिये **(इदम्)** यह **(मधुमत्तमम्)** अतिशय मधुर आदि गुण से युक्त **(वचः)** वचन और **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(इयम्)** यह **(मनीषा)** बुद्धि **(हृदे)** हृदय के लिये **(शम्)** सुखकारक **(अस्तु)** हो और जो **(सिन्धुमिव)** समुद्र को जैसे वैसे **(अवनीः)** रक्षा करने वाली **(महीः)** श्रेष्ठ भूमियों के सदृश आदर करने योग्य **(गिरः)** वाणियाँ **(शवसा)** बल वा सेवा से **(त्वाम्)** आपका **(आ, पृणन्ति)** अच्छे प्रकार पालन करतीं वा विद्याओं को पूर्ण करतीं **(वर्धयन्ति, च)** और वृद्धि करती हैं, उनका आप ग्रहण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्यार्थीजनो! जैसे नदियाँ समुद्र को शोभित करती हैं, वैसे ही विद्या और नम्रता से युक्त वाणियाँ आप लोगों को शोभित करें, जिनके प्रताप से आप लोगों के मुखों से सत्य और सब का हितकारक वचन सर्वदा ही निकले॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने॒ अङ्गि॑रसो॒ गुहा॑ हि॒तमन्व॑विन्दच्छिश्रिया॒णं वने॑वने।**

**स जा॑यसे म॒थ्यमा॑नः॒ सहो॑ म॒हत्त्वामा॑हुः॒ सह॑सस्पु॒त्रम॑ङ्गिरः॥६॥ ३॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। अङ्गि॑रसः। गुहा॑। हि॒तम्। अनु॑। अ॒वि॒न्द॒न्। शि॒श्रि॒या॒णम्। वने॑ऽवने। सः। जा॒य॒से॒। म॒थ्यमा॑नः। सहः॑। म॒हत्। त्वाम्। आ॒हुः॒। सह॑सः। पु॒त्रम्। अ॒ङ्गि॒रः॒॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) विद्यां जिघृक्षो (**अङ्गिरसः**) प्राणा इव विद्यासु व्याप्ता जनाः (**गुहा**) बुद्धौ (**हितम्**) स्थितं परमात्मानम् (**अनु**) (**अविन्दन्**) अनुलभन्ते (**शिश्रियाणम्**) व्याप्तम् (**वनेवने**) जङ्गलेजङ्गलेऽग्नाविव जीवेजीवे (**सः**) (**जायसे**) (**मथ्यमानः**) विलोड्यमानः (**सहः**) बलम् (**महत्**) (**त्वाम्**) (**आहुः**) कथयेयुः (**सहसः**) विद्याशरीरबलयुक्तस्य (**पुत्रम्**) (**अङ्गिरः**) प्राण इव प्रियः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथाङ्गिरसो वनेवने शिश्रियाणं गुहा हितमन्वविन्दन् यं त्वां प्रापयन्ति तथा स त्वं मथ्यमानो विद्वाञ्जायसे येन सहसस्पुत्रं सहो महत्प्राप्तं त्वामङ्गिरः विद्वांस आहुः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा योगिनः संयमेन परमात्मानं प्राप्य नित्यं मोदन्ते तथैतं प्राप्य यूयमप्यानन्दतेति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकादशं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्या की इच्छा करने वाले! जैसे (**अङ्गिरसः**) प्राणों के सदृश विद्याओं में व्याप्त जन (**वनेवने**) जंगल-जंगल में अग्नि के सदृश जीव-जीव में (**शिश्रियाणम्**) व्याप्त (**गुहा**) बुद्धि में (**हितम्**) स्थित परमात्मा को (**अनु, अविन्दन्**) प्राप्त होते हैं और जिन (**त्वाम्**) आप को प्राप्त कराते हैं, वैसे (**सः**) वह आप (**मथ्यमानः**) मथे गये विद्वान् (**जायसे**) होते हो और जिससे (**सहसः**) विद्या और शरीर के बल से युक्त के (**पुत्रम्**) पुत्र और (**सहः**) बल (**महत्**) बड़े को प्राप्त (**त्वाम्**) आप को (**अङ्गिरः**) प्राण के सदृश प्रिय विद्वान् जन (**आहुः**) कहें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे योगी जन संयम अर्थात् इन्द्रियों को अन्य विषयों से रोकने से परमात्मा को प्राप्त होकर नित्य आनन्दित होते हैं, वैसे इसको प्राप्त होकर आप लोग आनन्दित हूजिये॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ग्यारहवां सूक्त और तृतीय वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य द्वादशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४, ५ त्रिष्टुप् ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब छः ऋचा वाले बारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म।**

**घृतं न यज्ञ आस्ये३ सुपूतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम्॥ १॥**

**प्र। अग्नये। बृहते। यज्ञियाय। ऋतस्य। वृष्णे। असुराय। मन्म। घृतम्। न। यज्ञे। आस्ये। सुऽपूतम्। गिरम्। भरे। वृषभाय। प्रतीचीम्॥ १॥**

**पदार्थः**-**(प्र) (अग्नये)** पावकाय **(बृहते)** महते **(यज्ञियाय)** यज्ञार्हाय **(ऋतस्य)** जलस्य **(वृष्णे)** वर्षकाय **(असुराय)** असुषु प्राणेषु रममाणाय **(मन्म)** ज्ञानोत्पादकं कारणम् **(घृतम्)** आज्यम् **(न)** इव **(यज्ञे)** सङ्गन्तव्ये **(आस्ये)** मुखे **(सुपूतम्)** सुष्ठु पवित्रम् **(गिरम्)** वाचम् **(भरे)** धरामि **(वृषभाय)** बलिष्ठाय **(प्रतीचीम्)** पश्चिमां क्रियाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमास्ये यज्ञे सुपूतं घृतं न बृहते यज्ञियायर्त्तस्य वृष्णेऽसुराय वृषभायाग्नये मन्म प्रतीचीं गिरं प्र भरे तथैतस्मा एतां यूयमपि धरत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथाऽग्निज्ञानाय प्रयत्यते तथैव पृथिव्यादिपदार्थ-विज्ञानाय प्रयतितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(आस्ये)** मुख में और **(यज्ञे)** मिलने योग्य व्यवहार में **(सुपूतम्)** उत्तम प्रकार पवित्र **(घृतम्)** घृत के **(न)** सदृश पदार्थ को तथा **(बृहते)** बड़े **(यज्ञियाय)** यज्ञ के योग्य और **(ऋतस्य)** जल के **(वृष्णे)** वर्षाने और **(असुराय)** प्राणों में रमने वाले **(वृषभाय)** बलिष्ठ **(अग्नये)** अग्नि के लिये **(मन्म)** ज्ञान के उत्पन्न कराने वाले कारण को **(प्रतीचीम्)** पिछली क्रिया और **(गिरम्)** वाणी को **(प्र, भरे)** अच्छे प्रकार धारण करता हूं, वैसे इसके लिये इसको आप लोग भी धारण करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों से जैसे अग्निविद्या के ज्ञान के लिये प्रयत्न किया जाता है, उनको चाहिये कि वैसे ही पृथिवी आदि पदार्थों की विद्या के ज्ञान के लिये प्रयत्न करें॥ १॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्ध्यृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः।**

**नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः॥२॥**

**ऋतम्। चिकित्वः। ऋतम्। इत्। चिकिद्धि। ऋतस्य। धाराः। अनु। तृन्धि। पूर्वीः। न। अहम्। यातुम्। सहसा। न। द्वयेन। ऋतम्। सपामि। अरुषस्य। वृष्णः॥२॥**

**पदार्थः**-(**ऋतम्**) सत्यं कारणम् (**चिकित्वः**) विज्ञातव्यम् (**ऋतम्**) सत्यं ब्रह्म (**इत्**) एव (**चिकिद्धि**) विजानीहि (**ऋतस्य**) सत्यस्य विज्ञापिकाः (**धाराः**) वाचः (**अनु**) (**तृन्धि**) हिन्धि (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**न**) (**अहम्**) (**यातुम्**) गन्तुम् (**सहसा**) बलेन (**न**) इव (**द्वयेन**) कार्यकारणात्मकेन (**ऋतम्**) उदकम् (**सपामि**) आक्रुशामि (**अरुषस्य**) अहिंसकस्य (**वृष्णः**) बलिष्ठस्य॥२॥

**अन्वयः**-हे ऋतं चिकित्वस्त्वमृतमिच्चिकिद्धि ऋतस्य पूर्वीर्धाराश्चिकिद्धि अविद्यामनु तृन्धि अहं सहसा यातुं नेच्छामि द्वयेन सहसारुषस्य वृष्ण ऋतं न सपामि॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसोऽसत्यं खण्डयित्वा सत्यं धरन्ति अविद्यां विहाय विद्यां धरन्ति तथैव यूयमपि कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**ऋतम्**) सत्य कारण को (**चिकित्वः**) जानने योग्य! आप (**ऋतम्**) सत्य ब्रह्म को (**इत्**) निश्चय से (**चिकिद्धि**) जानिये और (**ऋतस्य**) सत्य के जनाने वाली (**पूर्वीः**) प्राचीन (**धाराः**) वाणियों को जानिये और अविद्या का (**अनु, तृन्धि**) नाश करिये (**अहम्**) मैं (**सहसा**) बल से (**यातुम्**) जाने की (**न**) नहीं इच्छा करता हूं और (**द्वयेन**) कार्य्यकारणस्वरूप बल से (**अरुषस्य**) नहीं हिंसा करने वाले (**वृष्णः**) बलिष्ठ के (**ऋतम्**) जल के (**न**) सदृश पदार्थ को (**सपामि**) गम्भीर शब्द से क्रोशता हूँ॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन असत्य का खडन करके सत्य को धारण करते हैं और अविद्या का त्याग करके विद्या को धारण करते हैं, वैसे ही आप लोग भी करो॥२॥

**पुनरग्निपदवाच्यविद्वद्विषयमाह॥**

फिर अग्निपदवाच्य विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः।**

**वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः॥३॥**

**कया। नः। अग्ने। ऋतयन्। ऋतेन। भुवः। नवेदाः। उचथस्य। नव्यः। वेद। मे। देवः। ऋतुऽपाः। ऋतूनाम्। न। अहम्। पतिम्। सनितुः। अस्य। रायः॥३॥**

**पदार्थः**-(**कया**) विद्यया युक्तया वा (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) विद्वन् (**ऋतयन्**) सत्यमाचरन् (**ऋतेन**) सत्येन (**भुवः**) पृथिव्याः (**नवेदाः**) यो न विन्दति सः (**उचथस्य**) उचितस्य (**नव्यः**) नवेषु साधुः

**(वेदा)** जानीहि **(मे)** माम् **(देवः)** विद्वान् **(ऋतुपाः)** य ऋतून् पाति **(ऋतूनाम्)** वसन्तादीनाम् **(न)** निषेधे **(अहम्)** **(पतिम्)** **(सनितुः)** विभाजकस्य **(अस्य)** **(रायः)** धनस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं कया युक्त्या नोऽस्मान् विज्ञापयेः ऋतेनर्त्तयन् सन् भुवो नवेदा उचथस्य नव्य ऋतुपा भुवो देवोऽहमृतूनामस्य सनितू रायः पतिं न नाशयामि तथा मे वेदा मा नाशय॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सत्याचरणेनैव भूराज्यं प्राप्यते पृथिवीराज्येन श्रिया च सर्वेषां सुखं जायते॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(कया)** किस विद्या वा युक्ति से **(नः)** हम लोगों को जनावें **(ऋतेन)** सत्य से **(ऋतयन्)** सत्य का आचरण करता हुआ **(भुवः)** पृथिवी का **(नवेदाः)** नहीं प्राप्त होने वाला **(उचथस्य)** उचित का सम्बन्धी **(नव्यः)** नवीनों में श्रेष्ठ **(ऋतुपाः)** ऋतुओं का पालन करने वाला पृथ्वीसम्बन्धी **(देवः)** विद्वान् **(अहम्)** मैं **(ऋतूनाम्)** वसन्त आदि ऋतुओं और **(अस्य)** इस **(सनितुः)** विभाग करने वाले **(रायः)** धन के **(पतिम्)** स्वामी का **(न)** नहीं नाश कराता हूं, वैसे आप **(मे)** मुझ को **(वेदा)** जानिये और मुझ को नष्ट मत करिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सत्य के आचरण से ही पृथ्वी का राज्य प्राप्त होता है और पृथ्वी के राज्य और लक्ष्मी से सब को सुख होता है॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः।**

**के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः॥४॥**

**के। ते। अग्ने। रिपवे। बन्धनासः। के। पायवः। सनिषन्त। द्युऽमन्तः। के। धासिम्। अग्ने। अनृतस्य। पान्ति। के। असतः। वचसः। सन्ति। गोपाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(के)** **(ते)** तव **(अग्ने)** राजन् **(रिपवे)** **(बन्धनासः)** बन्धकाः **(के)** **(पायवः)** पालकाः **(सनिषन्त)** विभजन्ते **(द्युमन्तः)** कामयमानाः प्रकाशवन्तो वा **(के)** **(धासिम्)** अन्नम् **(अग्ने)** विद्याविनयप्रकाशक **(अनृतस्य)** असत्यव्यवहारस्य **(पान्ति)** रक्षन्ति **(के)** **(असतः)** निन्द्यात् **(वचसः)** वचनात् **(सन्ति)** **(गोपाः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ते रिपवे के बन्धनासः के ते राज्यस्य पायवः के द्युमन्तः सनिषन्त। हे अग्ने! के धासिं पान्ति केऽनृतस्यासतो वचसो गोपाः सन्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजन्! त्वयैवं कर्मानुष्ठेयं येन रिपूणां विनाशः प्रजापालनं सम्भवेदस्योत्तरम्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन् **(ते)** आपके **(रिपवे)** शत्रु के लिये **(के)** कौन **(बन्धनासः)** बन्धक और **(के)** कौन आपके राज्य के **(पायवः)** पालन करने वाले **(के)** कौन **(द्युमन्तः)** कामना करने वाले वा प्रकाशयुक्त **(सनिषन्त)** विभाग करते हैं, और हे **(अग्ने)** विद्या और विनय के प्रकाशक कौन

**(धासिम्)** अन्न की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं **(के)** कौन **(अनृतस्य)** असत्य व्यवहार के **(आसतः)** निन्द्य **(वचसः)** वचन से **(गोपाः)** रक्षा करने वाले **(सन्ति)** हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! राजन्! आप को चाहिये कि इस प्रकार का कर्म्म करें जिससे शत्रुओं का नाश, प्रजा का पालन होवे, यह इस का उत्तर है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सखा॑यस्ते॒ विषु॑णा अग्न ए॒ते शि॒वास॒: सन्तो॒ अशि॑वा अभूवन्।**

**अधू॑र्षत स्व॒यमे॒ते वचो॑भिर्ऋजू॒य॒ते वृ॑जि॒नानि॑ ब्रु॒वन्त॑:॥५॥**

**सखा॑यः। ते॒। विषु॑णाः। अ॒ग्ने॒। ए॒ते। शि॒वास॑ः। सन्त॑ः। अशि॑वाः। अ॒भू॒व॒न्। अधू॑र्षत। स्व॒यम्। ए॒ते। वच॑ःऽभिः। ऋ॒जु॒ऽय॒ते। वृ॒जि॒नानि॑। ब्रु॒वन्त॑ः॥५॥**

**पदार्थः**-**(सखायः)** सुहृदः सन्तः **(ते)** तव **(विषुणाः)** विद्यां व्याप्नुवन्तः **(अग्ने)** विद्वन् **(एते)** **(शिवासः)** मङ्गलाचरणाः **(सन्तः)** **(अशिवाः)** अमङ्गलाचरणाः **(अभूवन्)** भवेयुः **(अधूर्षत)** हिंसन्तु **(स्वयम्)** **(एते)** **(वचोभिः)** **(ऋजूयते)** ऋजूयन्ते **(वृजिनानि)** धनानि बलानि वा **(ब्रुवन्तः)** उपदिशन्तः॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! य एते ते विषुणाः सखायः शिवासः सन्तोऽशिवा अभूवँस्तांस्तव भृत्यास्त्वं चाऽधूर्षत घ्नन्तु हिन्धि, हे राजभृत्या! य एते स्वयं वचोभिर्वृजिनानि ब्रुवन्त ऋजूयते तान् सततं पालयत॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्याणां योग्यतास्ति ये मित्रजना असुहृदो भवेयुस्ते तिरस्करणीया येऽरयस्सखायस्स्युस्ते सत्कर्त्तव्याः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(एते)** ये **(ते)** आपके **(विषुणाः)** विद्या को व्याप्त **(सखायः)** मित्र हुए **(शिवासः)** मङ्गल अर्थात् अच्छे आचरण करते **(सन्तः)** हुए **(अशिवाः)** अमङ्गल आचरण करने वाले **(अभूवन्)** होवें उनका आपके नौकर और आप **(अधूर्षत)** नाश करो और हे राजा के नौकरो! जो **(एते)** ये **(स्वयम्)** अपने ही **(वचोभिः)** वचनों से **(वृजिनानि)** धनों और बलों का **(ब्रुवन्तः)** उपदेश देते हुए **(ऋजूयते)** सरल होते हैं, उनका निरन्तर पालन करो॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को यह योग्यता है कि जो मित्रजन शत्रु होवें, वे निरादर करने योग्य हैं और जो शत्रु मित्र होवें, वे सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्ते॑ अग्ने॒ नम॑सा य॒ज्ञमीट्ट॑ ऋ॒तं स पा॑त्यरु॒षस्य॒ वृष्ण॑ः।**

**तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसर्स्राणस्य नहुषस्य शेषः॥६॥४॥**

**यः। ते। अग्ने। नमसा। यज्ञम्। ईट्टे। ऋतम्। सः। पाति। अरुषस्य। वृष्णः। तस्य। क्षयः। पृथुः। आ। साधुः। एतु। प्रऽसर्स्राणस्य। नहुषस्य। शेषः॥६॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**अग्ने**) राजन् (**नमसा**) अन्नादिना (**यज्ञम्**) (**ईट्टे**) ऐश्वर्य्ययुक्तं करोति (**ऋतम्**) सत्यं न्यायम् (**सः**) (**पाति**) रक्षति (**अरुषस्य**) अहिंसकस्य (**वृष्णः**) सुखवर्षकस्य (**तस्य**) (**क्षयः**) निवासः (**पृथुः**) विस्तीर्णः (**आ**) (**साधुः**) श्रेष्ठः (**एतु**) प्राप्नोतु (**प्रसर्स्राणस्य**) भृशं धर्मं प्राप्नमाणस्य (**नहुषस्य**) मनुष्यस्य। **नहुष इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) (**शेषः**) यः शिष्यते सः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्नेऽरुषस्य वृष्णस्तस्य ते यः पृथुः प्रसर्स्राणस्य नहुषस्य शेष इव साधुः क्षयो नमसा यज्ञमीट्टे स ऋतं पाति सोऽस्मानैतु॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो विद्वत्सेवां धर्म्मरक्षणं करोति तद्रक्षणं यूयं कृत्वा शिष्टं सुखं प्राप्नुतेति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वादशं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! (**अरुषस्य**) नहीं हिंसा करने और (**वृष्णः**) सुख के वर्षाने वाले (**तस्य**) उन (**ते**) आपका (**यः**) जो (**पृथुः**) विस्तारयुक्त (**प्रसर्स्राणस्य**) अत्यन्त धर्म को प्राप्त हुए (**नहुषस्य**) मनुष्य के (**शेषः**) बाकी रहे के सदृश (**साधुः**) श्रेष्ठ (**क्षयः**) निवास (**नमसा**) अन्न आदि से (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**ईट्टे**) ऐश्वर्ययुक्त करता है (**सः**) वह (**ऋतम्**) सत्य-न्याय की (**पाति**) रक्षा करता है, वह हम लोगों को (**आ, एतु**) सब प्रकार प्राप्त हो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वानों की सेवा और धर्म की रक्षा करता है, उसके रक्षण को आप लोग करके शेष सुख को प्राप्त हूजिये॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बारहवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षडृचस्य त्रयोदशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४, ५ निचृद्गायत्री। २, ६ गायत्री। ३ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

अब छः ऋचा वाले तेरहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**अर्चन्तस्त्वा हवामहेऽर्चन्तः समिधीमहि। अग्ने अर्चन्त ऊतये॥ १॥**

**अर्चन्तः। त्वा। हवामहे। अर्चन्तः। सम्। इधीमहि। अग्ने। अर्चन्तः। ऊतये॥ १॥**

**पदार्थः-(अर्चन्तः)** सत्कुर्वन्तः **(त्वा)** त्वाम् **(हवामहे)** स्वीकुर्महे **(अर्चन्तः)** **(सम्, इधीमहि)** प्रकाशयेम **(अग्ने)** विद्वन् **(अर्चन्तः)** सत्कुर्वन्तः **(ऊतये)** रक्षणाद्याय॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! वयमूतये त्वार्चन्तो हवामहे त्वामर्चन्तः समिधीमहि त्वामर्चन्तो विपश्चितो भवेम॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! वयं भवतां सत्कारेण सुशिक्षां विद्यां लब्ध्वाऽऽनन्दिताः स्याम॥१॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! हम लोग **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(त्वा)** आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं, और आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए **(सम्, इधीमहि)** प्रकाश करें और आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए विद्वान् होवें॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! हम लोग आप लोगों के सत्कार से उत्तम शिक्षा और विद्या को प्राप्त होकर आनन्दित होवें॥१॥

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब अग्निगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥ २॥**

**अग्नेः। स्तोमम्। मनामहे। सिध्रम्। अद्य। दिविऽस्पृशः। देवस्य। द्रविणस्यवः॥ २॥**

**पदार्थः-(अग्नेः)** पावकस्य **(स्तोमम्)** गुणकर्मस्वभावप्रशंसाम् **(मनामहे)** **(सिध्रम्)** साधकम् **(अद्य)** **(दिविस्पृशः)** यो दिवि परमात्मनि सुखं स्पृशति तस्य **(देवस्य)** द्योतमानस्य **(द्रविणस्यवः)** आत्मनो द्रविणमिच्छमानाः॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा द्रविणस्यवो वयमद्य दिविस्पृशो देवस्याग्नेः सिध्रं स्तोमं मनामहे तथैतं यूयमपि विजानीत॥२॥

**भावार्थः**-येषा धनेच्छा स्यात्तेऽग्न्यादिपदार्थविज्ञानं सङ्गृह्णन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(द्रविणस्यवः)** अपने धन की इच्छा करने वाले हम लोग **(अद्य)** आज **(दिविस्पृशः)** परमात्मा में सुख को स्पर्श करने वाले **(देवस्य)** प्रकाशमान **(अग्नेः)** अग्नि के **(सिध्रम्)** साधक **(स्तोमम्)** गुण, कर्म और स्वभाव की प्रशंसा को **(मनामहे)** मानते हैं, वैसे इसको आप लोग भी जानो॥२॥

**भावार्थः**-जिनकी धन की इच्छा होवे, वे अग्नि आदि पदार्थों के विज्ञान को ग्रहण करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### अ॒ग्निर्जु॑षत नो॒ गिरो॒ होता॒ यो मानु॑षे॒ष्वा। स य॑क्षद्दैव्यं॒ जन॑म्॥३॥

**अ॒ग्निः। जु॒ष॒त॒। नः॒। गिरः॑। होता॑। यः। मानु॑षेषु। आ। सः। य॒क्ष॒त्। दैव्य॑म्। जन॑म्॥३॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावक इव विद्वान् **(जुषत)** जुषते **(नः)** अस्माकम् **(गिरः)** वाचः **(होता)** दाता **(यः)** मानुषेषु **(आ)** **(सः)** **(यक्षत्)** सङ्गच्छेत् पूजयेद्वा **(दैव्यम्)** दिव्येषु गुणेषु भवम् **(जनम्)** विद्वांसम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो होता यथाग्निर्नो गिरो जुषत यथा स मानुषेषु दैव्यं जनमा यक्षत्तथा त्वमनुतिष्ठ॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यद्यग्निर्न स्यात्तर्हि कोऽपि जीवो जिह्वां चालयितुं न शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यः)** जो **(होता)** दाता **(अग्नि)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान् **(नः)** हम लोगों की **(गिरः)** वाणियों का **(जुषत)** सेवन करता है और जैसे **(सः)** वह **(मानुषेषु)** मनुष्यों में **(दैव्यम्)** श्रेष्ठ गुणों में उत्पन्न **(जनम्)** विद्वान् जन को **(आ, यक्षत्)** प्राप्त हो वा सत्कार करे, वैसे आप करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि न हो तो कोई भी जीव जिह्वा न चला सके॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

### त्वम॑ग्ने स॒प्रथा॑ असि॒ जुष्टो॒ होता॒ वरे॑ण्यः। त्वया॑ य॒ज्ञं वि त॑न्वते॥४॥

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। स॒ऽप्रथाः॑। अ॒सि॒। जुष्टः॑। होता॑। वरे॑ण्यः। त्वया॑। य॒ज्ञम्। वि। त॒न्व॒ते॒॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(सप्रथाः)** प्रसिद्धकीर्तिः **(असि)** **(जुष्टः)** सेवितः **(होता)** दाताऽऽदाता वा **(वरेण्यः)** अतिश्रेष्ठः **(त्वया)** **(यज्ञम्)** **(वि)** **(तन्वते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतो विद्वांसस्त्वया सह यज्ञं वि तन्वते तैः सह होता वरेण्यः सप्रथा जुष्टस्त्वमसि

तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्या आप्तविदुषां सङ्गेन धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिकरं यज्ञं वितन्वन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जिससे विद्वान् जन **(त्वया)** आपके साथ **(यज्ञम्)** यज्ञ का **(वि, तन्वते)** विस्तार करते हैं उनके साथ **(होता)** दाता वा ग्रहण करने वाले **(वरेण्यः)** अतिश्रेष्ठ और **(सप्रथाः)** प्रसिद्ध यश वाले **(जुष्टः)** सेवन किये गये **(त्वम्)** आप **(असि)** हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग यथार्थवक्ता विद्वानों के संग से धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने वाज॒सात॑मं॒ विप्रा॑ वर्धन्ति॒ सुष्टु॑तम्। स नो॑ रास्व सु॒वीर्य॑म्॥५॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने। वा॒ज॒ऽसात॑मम्। विप्रा॑ः। व॒र्धन्ति॒। सुऽस्तु॑तम्। सः। नः॒। रा॒स्व॒। सु॒ऽवीर्य॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** महाविद्वन् **(वाजसातमम्)** वाजानां विज्ञानानां वेगानामतिशयेन विभाजकम् **(विप्राः)** मेधाविनः **(वर्धन्ति)** वर्धयन्ति **(सुष्टुतम्)** शोभनकीर्त्तिम् **(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(रास्व)** देहि **(सुवीर्यम्)** सुष्ठुपराक्रमम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! विप्रा यं वाजसातमं सुष्टुतं सुवीर्य्यं त्वां वर्धन्ति स त्वं नस्सुवीर्यं रास्व॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि युष्मानाप्ता विद्वांसः सर्वतो वर्धयेयुस्तर्हि युष्माकमतुलः प्रभावो वर्द्धेत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** महाविद्वन्! **(विप्राः)** बुद्धिमान् जन जिन **(वाजसातमम्)** विज्ञान और वेगों के विभाग करने वाले **(सुष्टुतम्)** उत्तम यश वाले और **(सुवीर्य्यम्)** उत्तम पराक्रमयुक्त **(त्वाम्)** आपकी **(वर्धन्ति)** वृद्धि करते हैं, **(सः)** वह आप **(नः)** हम लोगों के लिये उत्तम पराक्रम को **(रास्व)** दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों की यथार्थवक्ता विद्वान् जन सब प्रकार से वृद्धि करें तो आप लोगों का अतुल प्रताप बढ़े॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॑ ने॒मिर॒राँ इ॑व दे॒वांस्त्वं प॑रि॒भूर॑सि। आ राध॑श्चि॒त्रमृ॑ञ्जसे॥६॥५॥**

**अग्ने॑। ने॒मिः। अ॒रान्ऽइ॑व। दे॒वान्। त्वम्। प॒रि॒ऽभूः। अ॒सि॒। आ। राध॑ः। चि॒त्रम्। ऋ॒ञ्ज॒से॒॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वान् (**नेमिः**) रथाङ्गम् (**अरानिव**) चक्राङ्गानीव (**देवान्**) दिव्यान् गुणान् विदुषो वा (**त्वम्**) (**परिभूः**) सर्वतो भावयिता (**असि**) (**आ**) (**राधः**) धनम् (**चित्रम्**) (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोसि॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं नेमिररानिव देवान् परिभूरसि चित्रं राध आ ऋञ्जसे तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथाऽरादिभिश्चक्रं सुशोभते तथैव विद्वद्भिः शुभैर्गुणैश्च मनुष्याः शोभन्त इति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोदशं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**त्वम्**) आप जैसे (**नेमिः**) रथाङ्ग (**अरानिव**) चक्रों के अङ्गों को वैसे (**देवान्**) श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों को (**परिभूः**) सब प्रकार से हुवाने वाले (**असि**) हो और (**चित्रम्**) विचित्र (**राधः**) धन को (**आ, ऋञ्जसे**) सिद्ध करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे अरादिकों से चक्र उत्तम प्रकार शोभित होता है, वैसे ही विद्वानों और उत्तम गुणों से मनुष्य शोभित होते हैं॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेरहवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य चतुर्दशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४, ५, ६ निचृद्गायत्री। २ विराड् गायत्री। ३ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब छः ऋचा वाले चौदहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निगुणों को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं स्तोमे॑न बोधय समिधा॒नो अम॑र्त्यम्। ह॒व्या दे॒वेषु॑ नो दधत्॥ १॥**

**अ॒ग्निम्। स्तोमे॑न। बो॒ध॒य॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नः। अम॑र्त्यम्। ह॒व्या। दे॒वेषु॑। न॒ः। द॒ध॒त्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**स्तोमेन**) गुणप्रशंसनेन (**बोधय**) प्रदीपय (**समिधानः**) सम्यक् स्वयं प्रकाशमानः (**अमर्त्यम्**) मरणधर्मरहितम् (**हव्या**) दातुमादातुमर्हाणि वस्तूनि (**देवेषु**) विद्वत्सु दिव्यगुणपदार्थेषु वा (**नः**) अस्मभ्यम् (**दधत्**) दधाति॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्समिधानोऽग्निर्देवेषु नो हव्या दधत् तममर्त्यमग्निं स्तोमेन बोधय॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! प्रयत्नेनाऽग्न्यादिपदार्थविद्यां प्राप्नुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**समिधानः**) उत्तम प्रकार स्वयं प्रकाशमान अग्नि (**देवेषु**) विद्वानों वा श्रेष्ठ गुणों वाले पदार्थों में (**नः**) हम लोगों के लिये (**हव्या**) देने और ग्रहण करने योग्य वस्तुओं को (**दधत्**) धारण करता है, उस (**अमर्त्यम्**) मरणधर्म से रहित (**अग्निम्**) अग्नि को (**स्तोमेन**) गुणों की प्रशंसा से (**बोधय**) प्रकाशित कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! प्रयत्न से अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त होओ॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तम॑ध्व॒रेष्वी॑ळते दे॒वं मर्ता॒ अम॑र्त्यम्। यजि॑ष्ठं मानु॑षे जने॑॥ २॥**

**तम्। अ॒ध्व॒रेषु॑। ई॒ळ॒ते॒। दे॒वम्। मर्ताः॑। अम॑र्त्यम्। यजि॑ष्ठम्। मानु॑षे। जने॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु धर्म्येषु व्यवहारेषु (**ईळते**) स्तुवन्ति (**देवम्**) दिव्यगुणम् (**मर्त्ताः**) मनुष्याः (**अमर्त्यम्**) स्वरूपतो नित्यम् (**यजिष्ठम्**) अतिशयेन सङ्गन्तारम् (**मानुषे**) (**जने**)॥ २॥

**अन्वयः**-ये मर्त्ता अध्वरेषु मानुषे जने तममर्त्यं यजिष्ठं देवमग्निमिव स्वप्रकाशं परमात्मानमीळते ते हि पुष्कलं सुखमश्नुवते॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थमिव पदार्थविद्यां गृह्णन्ति ते सर्वतः सुखिनो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-जो **(मर्ताः)** मनुष्य **(अध्वरेषु)** नहीं नाश करने योग्य धर्मयुक्त व्यवहारों में **(मानुषे)** विचारशील **(जने)** जन में **(तम्)** उस **(अमर्त्यम्)** स्वरूप से नित्य **(यजिष्ठम्)** अतिशय मेल करने वाले **(देवम्)** श्रेष्ठ गुण वाले अग्नि के सदृश स्वयं प्रकाशित परमात्मा की **(ईळते)** स्तुति करते हैं, वे ही बहुत सुख का भोग करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थ के सदृश पदार्थविद्या को ग्रहण करते हैं, वे सब प्रकार सुखी होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता। अग्निं हव्याय वोळ्हवे॥३॥**

**तम्। हि। शश्वन्तः। ईळते। स्रुचा। देवम्। घृतऽश्चुता। अग्निम्। हव्याय। वोळ्हवे॥३॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(हि)** **(शश्वन्तः)** अनादिभूता जीवाः **(ईळते)** प्रशंसन्ति **(स्रुचा)** यज्ञसाधनेनेव योगाभ्यासेन **(देवम्)** देदीप्यमानम् **(घृतश्चुता)** घृतं श्चोतति तेन **(अग्निम्)** **(हव्याय)** दातुमादातुमर्हाय **(वोळ्हवे)** वोढुम्॥३॥

**अन्वयः**-शश्वन्तो जीवा यथा ऋत्विग्यजमाना घृतश्चुता स्रुचा हव्याय वोळ्हवेऽग्निमीळते तथा हि तं परमात्मानं देवमीळन्ताम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा शिल्पिनोऽग्न्यादितत्त्वविद्यां प्राप्यानेकानि कार्य्याणि संसाध्य सिद्धप्रयोजना जायन्ते तथा मनुष्याः परमात्मानं यथावद्विज्ञाय सिद्धेच्छा भवन्तु॥३॥

**पदार्थः**-**(शश्वन्तः)** अनादि से वर्त्तमान जीव जैसे यज्ञ करने वाला और यजमान **(घृतश्चुता)** जो घृत वा जल चुआती उस **(स्रुचा)** यज्ञ सिद्ध करने वाली स्रुच् उससे **(हव्याय)** देने और लेने के योग्य के लिये **(वोळ्हवे)** धारण करने को **(अग्निम्)** अग्नि की **(ईळते)** प्रशंसा करते हैं, वैसे **(हि)** ही योगाभ्यास से **(तम्)** उस परमात्मा **(देवम्)** देव अर्थात् निरन्तर प्रकाशमान की स्तुति करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे शिल्पीजन अग्नि आदि तत्वों की विद्या को प्राप्त होकर और अनेक कार्य्यों को सिद्ध करके प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं, वैसे मनुष्य परमात्मा को यथावत् जान के अपनी इच्छाओं को सिद्ध करें॥३॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अग्निर्जातो अरोचत घ्नन् दस्यूञ्ज्योतिषा तमः। अविन्दद् गा अपः स्वः॥४॥**

**अग्निः। जातः। अरोचत। घ्नन्। दस्यून्। ज्योतिषा। तमः। अविन्दत्। गाः। अपः। स्वरिति स्वः॥४॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) पावकः (**जातः**) प्रकटः सन् (**अरोचत**) प्रकाशते (**घ्नन्**) (**दस्यून्**) दुष्टाँश्चोरान् (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**तमः**) अन्धकाररूपां रात्रिम् (**अविन्दत्**) लभते (**गाः**) किरणान् (**अपः**) अन्तरिक्षम् (**स्वः**) आदित्यम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! राजा यथा जातोऽग्निर्ज्योतिषां तमो घ्नन्नरोचत गा अपः स्वश्चाऽविन्दत तथा जातविद्याविनयो दस्यून् घ्नन् न्यायेनाऽन्यायं निवार्य्य विजयं कीर्तिं च लभेत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निरन्धकारं निवार्य्य प्रकाशते तथा राजा दुष्टान् चोरान् निवार्य्य विराजेत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! राजा जैसे (**जातः**) प्रकट हुआ (**अग्निः**) अग्नि (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**तमः**) अन्धकाररूप रात्रि का (**घ्नन्**) नाश करता हुआ (**अरोचत**) प्रकाशित होता और (**गाः**) किरणों (**अपः**) अन्तरिक्ष और (**स्वः**) सूर्य्य को (**अविन्दत्**) प्राप्त होता, वैसे प्राप्त हुए विद्या विनय जिसको वह (**दस्यून्**) दुष्ट चोरों का नाश करते हुए और न्याय से अन्याय का निवारण करके विजय और यश को प्राप्त हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि अन्धकार का निवारण करके प्रकाशित होता है, वैसे राजा दुष्ट चोरों का निवारण करके विशेष शोभित होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

## अ॒ग्निमी॒ळेन्यं॑ क॒विं घृ॒तपृ॑ष्ठं सपर्यत। वेतु॑ मे शृ॒णव॒द्धव॑म्॥५॥

**अ॒ग्निम्। ई॒ळेन्य॑म्। क॒विम्। घृ॒तऽपृ॑ष्ठम्। स॒प॒र्य॒त॒। वेतु॑। मे॒। शृ॒णव॑त्। हव॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**ईळेन्यम्**) प्रशंसनीयम् (**कविम्**) क्रान्तदर्शनम् (**घृतपृष्ठम्**) घृतं दीपनमाज्यमुदकं वा पृष्ठे यस्य तम् (**सपर्यत**) सेवध्वम् (**वेतु**) व्याप्नोतु (**मे**) मम (**शृणवत्**) शृणुयात् (**हवम्**)॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा विद्वान् मे हवं वेतु शृणवत् तथैवेळेन्यं कविं घृतपृष्ठमग्निं यूयं सपर्यत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थविद्याभ्यासं कुर्य्युस्ते निरन्तरं सुखं सेवेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् (**मे**) मेरे (**हवम्**) देने-लेने योग्य व्यवहार को (**वेतु**) व्याप्त हो और (**शृणवत्**) सुने वैसे (**ईळेन्यम्**) प्रशंसा करने योग्य (**कविम्**) प्रतापयुक्त दर्शन वाले (**घृतपृष्ठम्**) प्रकाश घृत वा जल पृष्ठ में जिसके उस (**अग्निम्**) अग्नि का (**सपर्यत**) सेवन करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या का अभ्यास करें, वे निरन्तर सुख को सेवें॥५॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं घृ॒तेन॑ वावृधुः स्तोमे॑भिर्वि॒श्वच॑र्षणिम्। स्वा॒धीभि॑र्वच॒स्युभि॑:॥६॥६॥१॥**

**अ॒ग्निम्। घृ॒तेन॑। व॒वृधुः। स्तोमे॑भिः। वि॒श्वऽच॑र्षणिम्। सु॒ऽआ॒धीभि॑:। व॒च॒स्युऽभि॑:॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**घृतेन**) आज्येन (**वावृधुः**) वर्धयेयुः (**स्तोमेभिः**) प्रशंसितैः कर्मभिः (**विश्वचर्षणिम्**) विश्वप्रकाशकम् (**स्वाधीभिः**) सुष्ठुध्यानयुक्तैः (**वचस्युभिः**) आत्मनो वचनमिच्छुभिः॥६॥

**अन्वयः**-ये स्तोमेभिर्घृतेन विश्वचर्षणिमग्निं वावृधुस्तैर्वचस्युभिः स्वाधीभिर्जनैः सह जना अग्न्यादिविद्यां गृह्णीयुः॥६॥

**भावार्थः**-यथेन्धनादिनाग्निर्वर्धते तथैव सत्सङ्गेन विज्ञानं वर्धत इति॥६॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्दशं सूक्तं पञ्चमे मण्डले प्रथमोऽनुवाकः षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो (**स्तोमेभिः**) प्रशंसित कर्मों और (**घृतेन**) घृत से (**विश्वचर्षणिम्**) संसार के प्रकाश करने वाले (**अग्निम्**) अग्नि की (**वावृधुः**) वृद्धि करावें उन (**वचस्युभिः**) अपने वचन की इच्छा करने वाले (**स्वाधीभिः**) उत्तम प्रकार ध्यान से युक्त जनों के साथ सब मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को ग्रहण करें॥६॥

**भावार्थः**-जैसे ईंधन आदि से अग्नि बढ़ता है, वैसे ही सत्सङ्ग से विज्ञान बढ़ता है॥६॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चतुर्दश सूक्त और पञ्चम मण्डल में प्रथम अनुवाक और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य पञ्चदशस्य सूक्तस्य धरुण अङ्गिरस ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४ त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वदग्निगुणविषयमाह॥***

अब पांच ऋचा वाले पन्द्रहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् और अग्निगुणविषय को कहते हैं॥

**प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय।**

**घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः॥१॥**

**प्र। वेधसे। कवये। वेद्याय। गिरम्। भरे। यशसे। पूर्व्याय। घृतऽप्रसत्तः। असुरः। सुऽशेवः। रायः। धर्ता। धरुणः। वस्वः। अग्निः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वेधसे**) मेधाविने (**कवये**) विपश्चिते (**वेद्याय**) वेदितुं योग्याय (**गिरम्**) वाचम् (**भरे**) धरामि (**यशसे**) प्रशंसिताय (**पूर्व्याय**) पूर्वेषु लब्धविद्याय (**घृतप्रसत्तः**) घृते प्रसत्तः (**असुरः**) प्राणेषु सुखदाता (**सुशेवः**) शोभनं शेवः सुखं यस्मात् (**रायः**) द्रव्यस्य (**धर्त्ता**) (**धरुणः**) धारकः (**वस्वः**) पृथिव्यादेः (**अग्निः**) पावकः॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा मया घृतप्रसत्तोऽसुरः सुशेवो रायो धर्त्ता वस्वो धरुणोऽग्निर्ध्रियते तद्बोधाय कवये वेद्याय यशसे पूर्व्याय वेधसे गिरं प्र भरे तथा यूयमप्येनमेतदर्थं धरत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! याग्न्यादिविद्यासाधारणास्ति तां शुभलक्षणान् मेधाविनो विद्यार्थिनो ग्राहयत॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे मुझ को (**घृतप्रसत्तः**) जल में प्रसक्त होने (**असुरः**) और प्राणों में सुख देने वाला तथा (**सुशेवः**) सुन्दर सुख जिसमें ऐसे (**रायः**) धन का (**धर्त्ता**) धारण करने और (**वस्वः**) पृथिवी आदि का (**धरुणः**) धारण करने वाला (**अग्निः**) अग्नि धारण किया जाता है, उसके बोध के लिये (**कवये**) विद्वान् और (**वेद्याय**) जानने योग्य के लिये और (**यशसे**) प्रशंसित (**पूर्व्याय**) प्राचीनों में प्राप्त विद्या वाले (**वेधसे**) बुद्धिमान् के लिये (**गिरम्**) वाणी को (**प्र, भरे**) धारण करता हूं, वैसे आप लोग भी इसको इसलिये धारण करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जो अग्नि आदि पदार्थों की विद्या असाधारण अर्थात् विलक्षण है, उसको उत्तम लक्षण वाले बुद्धिमान् विद्यार्थियों के लिये ग्रहण कराइये॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ऋतेन॑ ऋतं ध॒रुण॑ं धारयन्त य॒ज्ञस्य॑ शा॒के प॑र॒मे व्यो॑मन्।**

**दि॒वो धर्म॑न् ध॒रुणे॑ से॒दुषो॒ नॄञ्जा॒तैरजा॑ताँ अ॒भि ये न॑न॒क्षुः॥२॥**

**ऋ॒तेन॑। ऋ॒तम्। ध॒रुण॑म्। धा॒र॒य॒न्त॒। य॒ज्ञस्य॑। शा॒के। प॒र॒मे। विऽओ॑मन्। दि॒वः। धर्म॑न्। ध॒रुणे॑। से॒दुषः॑। नॄन्। जा॒तैः। अजा॑तान्। अ॒भि। ये। न॒न॒क्षुः॥२॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन परमात्मना वा (**ऋतम्**) सत्यं कारणादिकम् (**धरुणम्**) सर्वस्य धर्त्तृ (**धारयन्त**) (**यज्ञस्य**) सर्वस्य व्यवहारस्य (**शाके**) शक्तिनिमित्ते (**परमे**) प्रकृष्टे (**व्योमन्**) व्यापके (**दिवः**) सूर्य्यादेः (**धर्मन्**) धर्मे (**धरुणे**) धारके (**सेदुषः**) ज्ञानवतः (**नॄन्**) मनुष्यान् (**जातैः**) (**अजातान्**) (**अभि**) (**ये**) (**ननक्षुः**) प्राप्नुवन्ति। **नक्षतिर्गतिकर्मासु पठितम्।** (निघं०२.१४)॥२॥

**अन्वयः**-य ऋतेनर्त्तं धरुणं यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् दिवो धर्मन् धरुणे जातैरजातान् सेदुषो नॄनभि ननक्षुस्ते सत्यां विद्यां धारयन्त॥२॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या विद्वांसो ये पूर्वापरवर्त्तमानान् विदुषः सङ्गत्य परमेश्वरप्रकृतिजीवकार्यविद्यां जानन्ति॥२॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**ऋतेन**) सत्य वा परमात्मा से (**ऋतम्**) सत्य कारणादिक (**धरुणम्**) सब के धारण करने वाले को (**यज्ञस्य**) सम्पूर्ण व्यवहार के (**शाके**) सामर्थ्य के निमित्त (**परमे**) उत्तम (**व्योमन्**) व्यापक (**दिवः**) सूर्य्य आदि से (**धर्मन्**) धर्म (**धरुणे**) और धारण करने वाले में (**जातैः**) उत्पन्न हुए पदार्थों से (**अजातान्**) न उत्पन्न हुए (**सेदुषः**) ज्ञानवान् (**नॄन्**) मनुष्यों को (**अभि, ननक्षुः**) प्राप्त होते हैं, वे सत्यविद्या को (**धारयन्त**) धारण करें॥२॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य विद्वान् हैं जो पूर्व और आगे वर्त्तमान विद्वानों को मिलकर परमेश्वर, प्रकृति और जीव के कार्य्य की विद्या को जानते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अं॒हो॒युव॑स्त॒न्व॑स्तन्वते॒ वि वयो॑ म॒हद्दु॒ष्टर॑ं पू॒र्व्याय॑।**

**स सं॒वतो॒ नव॑जातस्तुतु॒र्यात् सिं॒हं न क्रु॒द्धम॒भित॒ परि॑ ष्ठुः॥३॥**

**अं॒हः॒ऽयुवः॑। त॒न्वः॑। त॒न्व॒ते॒। वि। वयः॑। म॒हत्। दु॒स्तर॑म्। पू॒र्व्याय॑। सः। स॒म्ऽवतः॑। नव॑ऽजातः। तु॒तु॒र्या॒त्। सिं॒हम्। न। क्रु॒द्धम्। अ॒भितः॑। परि॑। स्थुः॥३॥**

**पदार्थः**-(**अंहोयुवः**) येंऽहोऽपराधं युवन्ति पृथक्कुर्वन्ति ते (**तन्वः**) शरीरस्य मध्ये (**तन्वते**) विस्तृणन्ति (**वि**) (**वयः**) जीवनम् (**महत्**) (**दुष्टरम्**) दुःखेन तरितुं योग्यम् (**पूर्व्याय**) पूर्वेषु भवाय (**सः**)

**(संवतः)** संसेवमानः **(नवजातः)** नवीनाभ्यासेन जातो विद्यावान् **(तुतुर्यात्)** हिंस्यात् **(सिंहम्)** **(न)** इव **(क्रुद्धम्)** **(अभितः)** सर्वतः **(परि)** सर्वतः **(स्थुः)** तिष्ठन्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्यांहोयुवस्तन्वस्तन्वते महद्दुष्टरं वयो वि तन्वते सुखं परि ष्ठुः स तत्सङ्गी संवतो नवजातः पूर्व्याय क्रुद्धं सिंहं नाऽभितस्तुतुर्यात्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पापं दूरीकृत्य धर्ममाचरन्ति ते शरीरात्मसुखं जीवनं च वर्धयन्ति। यथा क्रुद्धः सिंहः प्राप्तान् प्राणिनो हिनस्ति तथा प्राप्तान् दुर्गुणान् सर्वे घ्नन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके सम्बन्ध में **(अंहोयुवः)** जो अपराध को दूर करते वे **(तन्वः)** शरीर के मध्य में **(तन्वते)** विस्तार को प्राप्त होते और **(महत्)** बड़े **(दुष्टरम्)** दुःख से पार होने योग्य **(वयः)** जीवन को **(वि)** विशेष करके विस्तृत करते और सुख के **(परि)** सब ओर **(स्थुः)** स्थित होते हैं **(सः)** वह उनका सङ्गी **(संवतः)** उत्तम प्रकार सेवन किया गया **(नवजातः)** नवीन अभ्यास से उत्पन्न हुई विद्या जिसकी ऐसा पुरुष **(पूर्व्याय)** पूर्वज के लिये **(क्रुद्धम्)** क्रोधयुक्त **(सिंहम्)** सिंह के **(न)** सदृश अन्य को **(अभितः)** सब प्रकार से **(तुतुर्यात्)** नाश करे॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य पाप को दूर करके धर्म का आचरण करते हैं, वे शरीर और आत्मा के सुख और जीवन की वृद्धि कराते हैं। और जैसे क्रुद्ध सिंह प्राप्त हुए प्राणियों का नाश करता है, वैसे प्राप्त हुए दुर्गुणों का सब जन नाश करें॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**मातेव यद्भरसे पप्रथानो जनंजनं धायसे चक्षसे च।**

**वयोवयो जरसे यद्दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि॥४॥**

**माताऽइव। यत्। भरसे। पप्रथानः। जनम्ऽजनम्। धायसे। चक्षसे। च। वयःऽवयः। जरसे। यत्। दधानः। परि। त्मना। विषुऽरूपः। जिगासि॥४॥**

**पदार्थः**-**(मातेव)** यथा जननी **(यत्)** यतः **(भरसे)** **(पप्रथानः)** प्रख्यातविद्यः **(जनञ्जनम्)** मनुष्यं मनुष्यम् **(धायसे)** धातुम् **(चक्षसे)** ख्यापयितुम् **(च)** **(वयोवयः)** कमनीयं जीवनं जीवनम् **(जरसे)** स्तौषि **(यत्)** यतः **(दधानः)** **(परि)** सर्वतः **(त्मना)** आत्मना **(विषुरूपः)** प्राप्तविद्यः **(जिगासि)** प्रशंससि॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यद्यतः पप्रथानस्त्वं मातेव धायसे चक्षसे च जनञ्जनं भरसे त्मना यद्दधानो वयोवयो जरसे विषुरूपः सन् सर्वान् पदार्थान् परि जिगासि तस्माद्विद्वान् भवसि॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो मातृवद्विद्यार्थिनो रक्षन्ति सर्वेषामुन्नतिं चिकीर्षन्ति ब्रह्मचर्य्यायुर्वर्धननिमित्तानि कर्माण्युपदिशन्ति ते जगत्पूज्या भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यत्)** जिस कारण **(पप्रथानः)** प्रसिद्ध विद्यायुक्त आप **(मातेव)** माता के सदृश **(धायसे)** धारण करने और **(चक्षसे)** कहाने को **(च)** भी **(जनञ्जनम्)** मनुष्य-मनुष्य का **(भरसे)** पोषण करते हो और **(त्मना)** आत्मा से **(यत्)** जिस कारण **(दधानः)** धारण करते हुए **(वयोवयः)** सुन्दर जीवन की **(जरसे)** स्तुति करते हो और **(विषुरूपः)** विद्या जिनको प्राप्त ऐसे हुए सम्पूर्ण पदार्थों की **(परि)** सब प्रकार से **(जिगासि)** प्रशंसा करते हो, इससे विद्वान् होते हो॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन माता के सदृश विद्यार्थियों की रक्षा करते, सब की उन्नति करने की इच्छा करते और ब्रह्मचर्य तथा अवस्था के बढ़ने में कारणरूप कार्य्यों का उपदेश करते हैं, वे संसार के आदर करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तमुरुं दोधं धरुणं देव रायः।**
**पदं न तायुर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्पः॥५॥७॥**

**वाजः। नु। ते। शवसः। पातु। अन्तम्। उरुम्। दोधम्। धरुणम्। देव। रायः। पदम्। न। तायुः। गुहा। दधानः। महः। राये। चितयन्। अत्रिम्। अस्पुरित्यस्पः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वाजः)** वेगः **(नु)** सद्यः **(ते)** **(शवसः)** बलस्य **(पातु)** रक्षतु **(अन्तम्)** **(उरुम्)** बहुम् **(दोधम्)** प्रपूरकम् **(धरुणम्)** धर्त्तारम् **(देव)** **(रायः)** धनस्य **(पदम्)** पादचिह्नम् **(न)** इव **(तायुः)** चोरः **(गुहा)** बुद्धौ **(दधानः)** **(महः)** महते **(राये)** धनाय **(चितयन्)** ज्ञापयन् **(अत्रिम्)** पालकम् **(अस्पः)** प्रीणय॥५॥

**अन्वयः**-हे देव! ते वाजः शवस उरुमन्तं दोधं रायो धरुणं नु पातु तायुः पदं न महो राये गुहा सत्यं दधानोऽत्रिं चितयन् सर्वास्त्वमस्पः॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा चोरश्चोरस्य पदमन्विष्य गृह्णाति तथैवाऽऽत्मसु सत्यं धृत्वा कामपूर्त्तिं विधाय सर्वान् प्रीणयन्तु॥५॥

अत्र विद्वदग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चदशं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्वन् **(ते)** आपका **(वाजः)** वेग **(शवसः)** बल के **(उरुम्)** बहुत **(अन्तम्)** अन्त की **(दोधम्)** तथा उत्तम पूर्ण करने वाले और **(रायः)** धन के **(धरुणम्)** धारण करने वाले की **(नु)** शीघ्र **(पातु)** रक्षा करे और **(तायुः)** चोर **(पदम्)** पैरों के चिह्न को **(न)** जैसे वैसे **(महः)** बड़े **(राये)** धन के लिये **(गुहा)** बुद्धि में सत्य को **(दधानः)** धारण करते और **(अत्रिम्)** पालन करने वाले को **(चितयन्)** जताते हुए आप सब को **(अस्पः)** प्रसन्न कीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे चोर, चोर के पाद के चिह्न को ढूढं के ग्रहण करता है, वैसे ही आत्माओं में सत्य को धारण कर और कामना की पूर्ति करके सब को प्रसन्न करें॥५॥

इस सूक्त में विद्वान् और अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह पन्द्रहवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चस्य षोडशस्य सूक्तस्य पुरुरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २, ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब पांच ऋचा वाले सोलहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में बिजुली के विषय को कहते हैं॥

**बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये। यं मित्रं न प्रशस्तिभिर्मर्तासो दधिरे पुरः॥१॥**

**बृहत्। वयः। हि। भानवे। अर्च। देवाय। अग्नये। यम्। मित्रम्। न। प्रशस्तिऽभिः। मर्तासः। दधिरे। पुरः॥१॥**

**पदार्थः**-(**बृहत्**) महत् (**वयः**) प्रदीपकं तेजः (**हि**) (**भानवे**) प्रकाशाय (**अर्चा**) पूजय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**देवाय**) दिव्यगुणाय (**अग्नये**) विद्युदाद्याय (**यम्**) (**मित्रम्**) सखायम् (**न**) इव (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाभिः (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**दधिरे**) दधति (**पुरः**) पुरस्तात्॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! मर्त्तासः प्रशस्तिभिर्यं मित्रं न पुरो दधिरे तं भानवे देवायाग्नये बृहद्वयो यथा स्यात् तथा ह्यर्चा॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सखा सखायं धृत्वा सुखमेधते तथैवाग्न्यादिविद्यां प्राप्य विद्वांस आनन्देन वर्धन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाओं से (**यम्**) जिसको (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) समान (**पुरः**) प्रथम से (**दधिरे**) धारण करते हैं, उसको (**भानवे**) प्रकाश के लिये और (**देवाय**) श्रेष्ठ गुण वाले (**अग्नये**) बिजुली आदि के लिये (**बृहत्**) बड़ा (**वयः**) प्रदीप्त करने वाला तेज जैसे हो, वैसे (**हि**) ही (**अर्चा**) पूजिये, आदर करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे मित्र, मित्र को धारण करके सुख की वृद्धि को प्राप्त होता है, वैसे ही अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त होकर विद्वान् जन आनन्द से वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः।**
**वि हव्यमग्निरानुषग्भगो न वारमृण्वति॥२॥**

**सः। हि। द्युऽभिः। जनानाम्। होता। दक्षस्य। बाह्वोः। वि। हव्यम्। अग्निः। आनुषक्। भगः। न। वारम्। ऋण्वति॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) (**द्युभिः**) धर्म्यैः कामैः (**जनानाम्**) (**होता**) दाता (**दक्षस्य**) बलस्य (**बाह्वोः**) भुजयोः (**वि**) (**हव्यम्**) दातुमर्हम् (**अग्निः**) पावकः (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**भगः**) सूर्य्यः (**न**) इव (**वारम्**) वरणीयम् (**ऋण्वति**) साध्नोति॥२॥

**अन्वयः**-यो जनानां बाह्वोर्दक्षस्य होताऽग्निर्भगो नानुषग्वारं हव्यं व्यृण्वति स हि द्युभिर्बलिष्ठो जायते॥२॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः स्वात्मवत्सर्वान् जनान् विदित्वा विद्यां प्रापय्योन्नतिं कर्तुमिच्छन्ति त एव भाग्यशालिनो वर्त्तन्ते॥२॥

**पदार्थः**-जो (**जनानाम्**) मनुष्यों की (**बाह्वोः**) भुजाओं के (**दक्षस्य**) बल का (**होता**) देने वाला (**अग्निः**) अग्नि (**भगः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**वारम्**) स्वीकार करने और (**हव्यम्**) देने योग्य पदार्थ को (**वि, ऋण्वति**) विशेष सिद्ध करता है (**सः, हि**) वही (**द्युभिः**) धर्मयुक्त कामों से बलवान् होता है॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन अपने आत्मा के सदृश सब मनुष्यों को जान और विद्या को प्राप्त करा के उन्नति करने की इच्छा करते हैं, वे ही भाग्यशाली वर्तमान हैं॥२॥

**अथ स- ामविजयविषयमाह॥**

अब संग्रामविजयविषय को कहते हैं॥

**अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः।**

**विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि समर्ये शुष्ममादधुः॥३॥**

**अस्य। स्तोमे। मघोनः। सख्ये। वृद्धऽशोचिषः। विश्वा। यस्मिन्। तुविऽस्वनि। सम्। अर्ये। शुष्मम्। आऽदधुः॥३॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**स्तोमे**) प्रशंसायाम् (**मघोनः**) बहुधनयुक्तस्य (**सख्ये**) सख्युर्भावाय कर्मणे वा (**वृद्धशोचिषः**) वृद्धा शोचिर्दीप्तिर्यस्य सः (**विश्वा**) सर्वाणि (**यस्मिन्**) (**तुविष्वणि**) बलसेवने (**सम्**) सम्यक् (**अर्य्ये**) स्वामिनि वैश्ये वा (**शुष्मम्**) बलम् (**आदधुः**) समन्ताद्धरन्तु॥३॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या अस्य वृद्धशोचिषो मघोनः स्तोमे सख्ये यस्मिन् तुविष्वणि समर्य्ये शुष्ममादधुस्ते विश्वा सुखानि प्राप्नुयुः॥३॥

**भावार्थः**-ये सखायो भूत्वा शरीरात्मबलं धृत्वा प्रयतन्ते ते स- ामादिषु विजयं प्राप्य प्रशंसितश्रियो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य (**अस्य**) इस (**वृद्धशोचिषः**) वृद्ध अर्थात् बढ़ी हुई कान्ति जिसकी ऐसे (**मघोनः**) बहुत धन से युक्त पुरुष की (**स्तोमे**) प्रशंसा में और (**सख्ये**) मित्रपन वा मित्र के कार्य्य के

लिये **(यस्मिन्)** जिस **(तुविष्वणि)** बलसेवन तथा **(सम्, अर्य्ये)** अच्छे प्रकार स्वामी वा वैश्य में **(शुष्मम्)** बल को **(आदधुः)** सब प्रकार धारण करें, वे **(विश्वा)** सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होवें॥३॥

**भावार्थः**-जो मित्र होकर शरीर और आत्मा के बल को धारण करके प्रयत्न करते हैं, वे स- ामादिकों में विजय को प्राप्त होकर प्रशंसित लक्ष्मीवान् होते हैं॥३॥

**अथ राज्यैश्वर्य्यवर्द्धनमाह॥**

अब राज्य और ऐश्वर्य्यवृद्धि को कहते हैं॥

**अधा ह्यग्न एषां सुवीर्यस्य मंहना।**

**तमिद्यह्वं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः॥४॥**

**अध। हि। अग्ने। एषाम्। सुऽवीर्यस्य। मंहना। तम्। इत्। यह्वम्। न। रोदसी इति। परि। श्रवः। बभूवतुः॥४॥**

**पदार्थः**-**(अधा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(हि)** **(अग्ने)** राजन् **(एषाम्)** वीराणाम् **(सुवीर्य्यस्य)** सुष्ठु पराक्रमस्य **(मंहना)** महत्त्वेन **(तम्)** **(इत्)** **(यह्वम्)** महान्तं सूर्य्यम् **(न)** इव **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(परि)** सर्वतः **(श्रवः)** अन्नम् **(बभूवतुः)** भवतः॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! एषां सुवीर्य्यस्य मंहना यौ तमिद्यह्वमधा रोदसी न श्रवो यथास्यात्तथा परि बभूवतुस्तौ हि विजयं प्राप्नुतः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये महतीं सुशिक्षितां सेनां लभन्ते तेषामेव राज्यैश्वर्य्यं वर्धते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन् **(एषाम्)** इन वीरों और **(सुवीर्यस्य)** उत्तम पराक्रम वाले के **(मंहना)** बड़प्पन से जो **(तम्)** उसको **(इत्)** ही **(यह्वम्)** बड़े सूर्य्य **(अधा)** इसके अन्तर **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के **(न)** सदृश **(श्रवः)** अन्न जैसे हो, वैसे **(परि)** सब ओर से **(बभूवतुः)** होते हैं, वे **(हि)** ही विजय को प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बड़ी, उत्तम प्रकार शिक्षित सेना को प्राप्त होते हैं, उनके ही राज्य का ऐश्वर्य बढ़ता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू न एहि वार्यमग्ने गृणान आ भर।**

**ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचोतैधि पृत्सु नो वृधे॥५॥८॥**

**नु। नः। आ। इहि। वार्यम्। अग्ने। गृणानः। आ। भर। ये। वयम्। ये। च। सूरयः। स्वस्ति। धामहे। सचा। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥५॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः (**नः**) अस्मान् (**आ**) (**इहि**) समन्तात् प्राप्नुहि (**वार्यम्**) वर्त्तुमर्हम् (**अग्ने**) विद्वन् (**गृणानः**) विद्वद्गुणान् स्तुवन् (**आ**) (**भर**) समन्तात् पुष्णीहि (**ये**) (**वयम्**) (**ये**) (**च**) (**सूरयः**) (**स्वस्ति**) सुखम् (**धामहे**) (**सचा**) सम्बद्धः (**उत**) (**एधि**) (**पृत्सु**) स- ामेषु (**नः**) अस्माकम् (**वृधे**) वर्धनाय॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये सूरयो ये च वयं स्वस्ति धामहे तैः सचा त्वं वार्यं नू गृणानो नोऽस्मानेहि। उत स्वस्ति चा भर पृत्सु नो वृध एधि॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्येभ्यः सततं सुखं प्रयच्छन्ति तैः सह मनुष्याः सदोन्नतिं कुर्वन्त्विति॥५॥

अत्र विद्युद्विषयसङ्ग्रामविजयराज्यैश्वर्य्यवर्द्धनवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षोडशं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् (**ये**) जो (**सूरयः**) विद्वान् (**ये**, **च**) और जो (**वयम्**) हम लोग (**स्वस्ति**) सुख को (**धामहे**) धारण करते हैं उनसे (**सचा**) सम्बद्ध आप (**वार्यम्**) स्वीकार करने योग्य की (**नू**) शीघ्र और (**गृणानः**) विद्वानों के गुणों की स्तुति करते हुए (**नः**) हम लोगों को (**आ, इहि**) सब प्रकार से प्राप्त हूजिये (**उत**) और सुख की (**आ, भर**) सब प्रकार पुष्टि कीजिये तथा (**पृत्सु**) संग्रामों में (**नः**) हम लागों की (**वृधे**) वृद्धि के लिये (**एधि**) प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्यों के लिये निरन्तर सुख देते हैं, उनके साथ मनुष्य सदा उन्नति करें॥५॥

इस सूक्त में बिजुली का विषय, संग्रामविजय और राज्यैश्वर्य के वर्धन का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सोलहवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तदशस्य सूक्तस्य पुरुरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ अनुष्टुप्। ३ निचृदनुष्टुप्। ४ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्न्यादिविद्याविषयमाह॥*

अब पांच ऋचा वाले सत्रहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्न्यादि विद्याविषय को कहते हैं॥

**आ यज्ञैर्देव मर्त्य इत्था तव्यांसमूतये।**
**अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे॥१॥**

**आ। यज्ञैः। देव। मर्त्यः। इत्था। तव्यांसम्। ऊतये। अग्निम्। कृते। सुऽअध्वरे। पूरुः। ईळीत। अवसे॥१॥**

**पदार्थः-(आ)** **(यज्ञैः)** विद्वत्सत्काराद्यैर्व्यवहारैः **(देव)** विद्वन् **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(इत्था)** अस्माद्धेतोः **(तव्यांसम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(अग्निम्)** पावकम् **(कृते)** **(स्वध्वरे)** शोभनेऽहिंसामये **(पूरुः)** मननशीलो मनुष्यः **(ईळीत)** स्तौति **(अवसे)** विद्यादिसद्गुणप्रवेशाय॥१॥

**अन्वयः**-हे देव! यथा पूरुर्मर्त्यः कृते स्वध्वरे यज्ञैरवसे तव्यांसमग्निमीळीतेत्थोतय आ प्रयुङ्क्ष्व॥१॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्सङ्गरुचयो मनुष्या अग्न्यादिपदार्थविद्यां प्राप्य सत्क्रियां कुर्वन्ति ते सर्वतो रक्षिता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्वन् जैसे **(पूरुः)** मननशील **(मर्त्यः)** मनुष्य **(कृते)** किये हुए **(स्वध्वरे)** शोभन अहिंसामय यज्ञ में **(यज्ञैः)** विद्वानों के सत्कारादिक व्यवहारों से **(अवसे)** विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों में प्रवेश होने के लिये **(तव्यांसम्)** अत्यन्त वृद्ध बड़े तेजयुक्त **(अग्निम्)** अग्नि की **(ईळीत)** प्रशंसा करता है **(इत्था)** इस कारण से **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(आ)** प्रयोग अर्थात् विशेष उद्योग करो॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के सङ्ग में प्रीति करने वाले मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त हो कर श्रेष्ठ कर्म को करते हैं, वे सब प्रकार से रक्षित होते हैं॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य हि स्वयशस्तर आसा विधर्मन् मन्यसे।**
**तं नाकं चित्रशोचिषं मन्द्रं परो मनीषया॥२॥**

**अस्य। हि। स्वयशःतरः। आसा। विऽधर्मन्। मन्यसे। तम्। नाकम्। चित्रऽशोचिषम्। मन्द्रम्। परः। मनीषया॥२॥**

**पदार्थ:-(अस्य) (हि) (स्वयशस्तर:)** अतिशयेन स्वकीयं यशो यस्य स: **(आसा)** मुखेनासनेन वा **(विधर्मन्)** विशेषधर्मानुचारिन् **(मन्यसे) (तम्) (नाकम्)** अविद्यमानदु:खम् **(चित्रशोचिषम्)** अद्भुत-प्रकाशम् **(मन्द्रम्)** आनन्दप्रदम् **(पर:) (मनीषया)** प्रज्ञया॥२॥

**अन्वय:-**हे विधर्मन्! यो ह्यस्य स्वयशस्तर आसा वर्त्तते पर: सन्मनीषया तं मन्द्रं चित्रशोचिषं नाकं त्वं मन्यसे तमहं मन्ये॥२॥

**भावार्थ:-**हे विद्वन्! भवान् सदैव धर्म्यं कीर्त्तिकरं कर्म्म कुर्य्याद्येन परं सुखमाप्नुयात्॥२॥

**पदार्थ:-**हे **(विधर्मन्)** विशेष धर्म के अनुगामी! जो **(हि)** निश्चय **(अस्य)** इसके सम्बन्ध में **(स्वयशस्तर:)** अत्यन्त अपना यश जिसका ऐसा पुरुष **(आसा)** मुख वा आसन से वर्त्तमान है और **(पर:)** श्रेष्ठ हुए **(मनीषया)** बुद्धि से **(तम्)** उस **(मन्द्रम्)** आनन्द देने वाले और **(चित्रशोचिषम्)** अद्भुत प्रकाशयुक्त **(नाकम्)** दु:ख से रहित को आप **(मन्यसे)** जानते हो, उसका मैं आदर करता हूं॥२॥

**भावार्थ:-**हे विद्वन्! आप सदा ही धर्म्मयुक्त यश को बढ़ाने वाले कर्म्म को करें, जिससे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒स्य वासा उ॑ अ॒र्चिषा॒ य आयु॑क्त तु॒जा गि॒रा।**

**दि॒वो न यस्य॒ रेत॑सा बृ॒हच्छोच॑न्त्य॒र्चय॑:॥३॥**

**अ॒स्य। वै। अ॒सौ। ऊँ इति॑। अ॒र्चिषा॑। य:। अयु॑क्त। तु॒जा। गि॒रा। दि॒व:। न। यस्य॑। रेत॑सा। बृ॒हत्। शोच॑न्ति। अ॒र्चय॑:॥३॥**

**पदार्थ:-(अस्य) (वै)** निश्चयेन **(असौ) (उ) (अर्चिषा)** विद्याप्रकाशेन **(य:) (आयुक्त)** युक्तो भवति **(तुजा)** प्रेरय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घ:। **(गिरा)** वाण्या **(दिव:)** कमनीयार्थस्य **(न)** इव **(यस्य) (रेतसा) (बृहत्) (शोचन्ति) (अर्चय:)** सत्कृतय:॥३॥

**अन्वय:-**हे विद्वन्! योऽसावस्य वा अर्चिषा गिराऽऽयुक्त। उ यस्य रेतसा दिवो नार्चयो बृहच्छोचन्ति स त्वं दु:खानि तुजा॥३॥

**भावार्थ:-**अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! येषां विदुषां सूर्यप्रकाशवद्विद्यायश:कीर्त्तयो विलसन्ति त एव बृहद्विज्ञानं प्रसृजन्ति॥३॥

**पदार्थ:-**हे विद्वन्! **(य:)** जो **(असौ)** यह **(अस्य)** इसकी **(वै)** निश्चय से **(अर्चिषा)** विद्या की दीप्ति और **(गिरा)** वाणी से **(आयुक्त)** युक्त होता **(उ)** और **(यस्य)** जिसके **(रेतसा)** पराक्रम से **(दिव:)** जैसे मनोहर प्रयोजन के **(न)** वैसे **(अर्चय:)** उत्तम सत्कार **(बृहत्)** बड़े **(शोचन्ति)** शोभित होते हैं, वह आप दु:खों की **(तुजा)** हिंसा करो॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन विद्वानों के सूर्य्य के प्रकाश के सदृश विद्या यश: और कीर्ति विलास को प्राप्त होते हैं, वे ही बड़े विज्ञान को उत्पन्न करते हैं॥३॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन विद्याविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से विद्याविषय को कहते हैं॥

**अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ।**
**अधा विश्वासु हव्योऽग्निर्विक्षु प्र शंस्यते॥४॥**

**अस्य। क्रत्वा। विऽचेतसः। दस्मस्य। वसु। रथे। आ। अध। विश्वासु। हव्यः। अग्निः। विक्षु। प्र। शस्यते॥४॥**

**पदार्थ:**-**(अस्य)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(विचेतस:)** विज्ञापकस्य **(दस्मस्य)** दु:खापक्षयितु: **(वसु)** द्रव्यम् **(रथे)** रमणीये याने **(आ)** **(अधा)** **(विश्वासु)** सर्वासु **(हव्य:)** आदातुमर्ह: **(अग्नि:)** पावक: **(विक्षु)** प्रजासु **(प्र)** **(शस्यते)**॥४॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यस्य विश्वासु विक्षु हव्योऽग्नि: प्र शस्यतेऽधास्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य क्रत्वा रथे वस्वा प्रशस्यते॥४॥

**भावार्थ:**-यथा प्रजायामग्निर्विराजते तथैव विद्याविनययुक्ता धीमन्तो पुरुषा विराजन्ते॥४॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जिसकी **(विश्वासु)** सम्पूर्ण **(विक्षु)** प्रजाओं में **(हव्य:)** ग्रहण करने योग्य **(अग्नि:)** अग्नि **(प्र, शस्यते)** प्रशंसा को प्राप्त होता है **(अधा)** इसके अनन्तर **(अस्य)** इसकी **(क्रत्वा)** बुद्धि तथा **(विचेतस:)** जनाने और **(दस्मस्य)** दु:ख के नाश करने वाले की बुद्धि से **(रथे)** सुन्दर वाहन में **(वसु)** द्रव्य **(आ)** प्रशंसित होता है॥४॥

**भावार्थ:**-जैसे प्रजा में अग्नि विराजता है, वैसे ही विद्या और विनय से युक्त बुद्धिमान् पुरुष शोभित होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**नू न इद्धि वार्यमासा सचन्त सूरयः।**
**ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे॥५॥९॥**

**नु। नः। इत्। हि। वार्यम्। आसा। सचन्त। सूरयः। ऊर्जः। नपात्। अभिष्टये। पाहि। शग्धि। स्वस्तये। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥५॥**

**पदार्थ:**-**(नू)** सद्य: **(न:)** अस्मान् **(इत्)** **(हि)** यत: **(वार्यम्)** वरेषु पदार्थेषु भवं विद्युदग्निम् **(आसा)** उपवेशनेन **(सचन्त)** सम्बध्नन्ति **(सूरय:)** विद्वांस: **(ऊर्ज:)** पराक्रमान् **(नपात्)** यो न पतति

**(अभिष्टये)** इष्टसुखाय **(पाहि)** **(शग्धि)** समर्थो भव **(स्वस्तये)** सुखाय **(उत)** अपि **(एधि)** भव **(पृत्सु)** स- ग्रमेषु **(नः)** अस्माकम् **(वृधे)** वृद्धये॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा सूरय आसा नो वार्यं सचन्त तथा नपात् त्वं नोऽभिष्टय ऊर्जः पाहि पृत्सु नो वृधे हि शग्धि स्वस्तये न्विदुतैधि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या विद्वदनुकरणं कुर्युस्तर्हि शुभगुणप्राप्तिबलवृद्धिं सुखेन विजयं कुर्वन्तीति॥५॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तदशं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(सूरयः)** विद्वान् जन **(आसा)** उपवेशन अर्थात् स्थिति से **(नः)** हम लोगों को और **(वार्यम्)** श्रेष्ठ पदार्थों में उत्पन्न बिजुलीरूप अग्नि को **(सचन्त)** सम्बद्ध करते हैं, वैसे **(नपात्)** नहीं गिरने वाले आप **(नः)** हम लोगों के **(अभिष्टये)** अपेक्षित सुख के लिये **(ऊर्जः)** पराक्रमों की **(पाहि)** रक्षा कीजिये और **(पृत्सु)** संग्रामों में हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(हि)** जिससे **(शग्धि)** समर्थ हूजिये और **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(नु)** शीघ्र **(इत्)** ही **(उत)** निश्चय से **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वानों के अनुकरण को करें तो उत्तम गुणों की प्राप्ति, बल की वृद्धि और सुखपूर्वक विजय को करते हैं॥५॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्रहवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ पञ्चर्चस्याष्टादशस्य सूक्तस्य द्वितो मृक्तवाहा आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४ विराडनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ३ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निवदतिथिविषयमाह॥*

अब पांच ऋचा वाले अठारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के सदृश अतिथि के विषय को कहते हैं॥

**प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः।**

**विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति॥ १॥**

**प्रातः। अग्निः। पुरुऽप्रियः। विशः। स्तवेत। अतिथिः। विश्वानि। यः। अमर्त्यः। हव्या। मर्तेषु। रण्यति॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रातः**) (**अग्निः**) अग्निरिव पवित्रः (**पुरुप्रियः**) बहुभिः कमितः सेवितो वा (**विशः**) प्रजाः (**स्तवेत**) प्रशंसेत् (**अतिथिः**) पूजनीय आप्तो विद्वान् (**विश्वानि**) (**यः**) (**अमर्त्यः**) स्वभावेन मरणधर्मरहितः (**हव्या**) दातुमर्हाणि (**मर्तेषु**) मरणधर्मेषु कार्य्येषु (**रण्यति**) रमते॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव पुरुप्रियो मर्तेष्वमर्त्यो रण्यति विश्वानि हव्या स्तवेत यः प्रातरारभ्य विश उपदिशेत् सोऽतिथिः पूजनीयो भवति॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽतिथिरात्मवित्सत्योपदेशको विद्वान् विद्वत्प्रियः परमात्मेव सर्वहितैषी नित्यं क्रीडते स एव सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अग्निः**) अग्नि के सदृश पवित्र (**पुरुप्रियः**) बहुतों से कामना किया वा सेवन किया गया (**मर्तेषु**) नाश होने वाले कार्य्यों में (**अमर्त्यः**) स्वभाव से मरणधर्म्मरहित (**रण्यति**) रमता है (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**हव्या**) देने योग्यों की (**स्तवेत**) प्रशंसा करे और जो (**प्रातः**) प्रातःकाल के आरम्भ से (**विशः**) प्रजाओं को उपदेश देवे वह (**अतिथिः**) आदर करने योग्य यथार्थवक्ता विद्वान् सत्कार करने योग्य होता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अतिथि आत्मा का जानने वाला, सत्य का उपदेशक, विद्वान्, विद्वानों का प्रिय, परमात्मा के सदृश सब के हित को चाहने वाला नित्य क्रीड़ा करता है, वह ही सत्कार करने योग्य है॥ १॥

**पुनरतिथिविषयमाह॥**

फिर अतिथिविषय को कहते हैं॥

**द्विताय मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना।**

**इन्दुं स धत्त आनुषक् स्तोता चित्ते अमर्त्य॥२॥**

**द्विताय। मृक्तऽवाहसे। स्वस्य। दक्षस्य। मंहना। इन्दुम्। सः। धत्ते। आनुषक्। स्तोता। चित्। ते। अमर्त्य॥२॥**

**पदार्थः**-(**द्विताय**) द्वाभ्यां जन्मभ्यां विद्यां प्राप्ताय (**मृक्तवाहसे**) शुद्धविज्ञानप्रापकाय (**स्वस्य**) (**दक्षस्य**) (**मंहना**) महत्त्वेन (**इन्दुम्**) ऐश्वर्यम् (**सः**) (**धत्ते**) (**आनुषक्**) आनुकूल्ये (**स्तोता**) सत्यविद्याप्रशंसकः (**चित्**) अपि (**ते**) तुभ्यम् (**अमर्त्य**) आत्मस्वरूपेण नित्य॥२॥

**अन्वयः**-हे अमर्त्य! यः स्तोतानुषगिन्दुं चित्ते धत्ते स द्विताय मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना सह वर्त्तमानायाऽतिथये सुखं प्रयच्छेत्॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तानतिथीन् सत्कुर्वन्ति ते सत्यं विज्ञानं प्राप्य सर्वदानन्दन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अमर्त्य**) अपने स्वरूप से नित्य! जो (**स्तोता**) सत्य विद्या की प्रशंसा करने वाला (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**इन्दुम्**) ऐश्वर्य्य को (**चित्**) ही (**ते**) तेरे लिये (**धत्ते**) धारण करता है (**सः**) वह (**द्विताय**) दो जन्मों से विद्या को प्राप्त (**मृक्तवाहसे**) शुद्ध विज्ञान को प्राप्त कराने वाले (**स्वस्य**) और अपने (**दक्षस्य**) बल के (**मंहना**) बडप्पन के साथ वर्त्तमान अतिथि के लिये सुख देवे॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता अतिथियों का सत्कार करते हैं, वे सत्य विज्ञान को प्राप्त हो कर सर्वदा आनन्दित होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तं वो दीर्घायुशोचिषं गिरा हुवे मघोनाम्।**
**अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते॥३॥**

**तम्। वः। दीर्घायुऽशोचिषम्। गिरा। हुवे। मघोनाम्। अरिष्टः। येषाम्। रथः। वि। अश्वऽदावन्। ईयते॥३॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**वः**) युष्माकम् (**दीर्घायुशोचिषम्**) दीर्घमायुः शोचिः पवित्रकरं यस्य तम् (**गिरा**) (**हुवे**) आह्वये (**मघोनाम्**) बहुधनयुक्तानाम् (**अरिष्टः**) अहिंसनीयः (**येषाम्**) अतिथीनाम् (**रथः**) यानम् (**वि**) (**अश्वदावन्**) योऽश्वान् व्याप्तिकरान् विज्ञानादिगुणान् ददाति तत्सम्बुद्धौ (**ईयते**) गच्छति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषां मघोनां वोऽरिष्टो रथो वीयते तानहं हुवे। हे अश्वदावन् गृहस्थ! त्वत्कल्याणाय तं दीर्घायुशोचिषमतिथिमहं गिरा हुवे॥३॥

**भावार्थः**-येऽहिंसादिधर्मयुक्ता मनुष्याश्चिरञ्जीविनो धार्मिकानतिथीन् सेवन्ते तेऽपि दीर्घायुषः श्रीमन्तो भूत्वाऽऽनन्दिता जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**येषाम्**) जिन अतिथियों और (**मघोनाम्**) बहुत धन से युक्त (**वः**) आप लोगों का (**अरिष्टः**) नहीं हिंसा करने योग्य (**रथः**) वाहन (**वि, ईयते**) विशेषता से चलता है, उनका मैं

**(हुवे)** आह्वान करता हूं और हे **(अश्वदावन्)** व्याप्त करने वाले विज्ञान आदि गुणों के दाता गृहस्थ! आपके कल्याण के लिये **(तम्)** उस **(दीर्घायुशोचिषम्)** दीर्घ अर्थात् अधिक अवस्था पवित्र करनेवाली जिसकी ऐसे अतिथि विद्वान् का मैं **(गिरा)** वाणी से आह्वान करता हूं॥३॥

**भावार्थः**-जो अहिंसादि धर्म से युक्त मनुष्य अतिकालपर्य्यन्त जीवने वाले धार्मिक अतिथियों की सेवा करते हैं, वे भी दीर्घायु और लक्ष्मीवान् होकर आनन्दित होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**चित्रा वा येषु दीधितिरासन्नुक्था पान्ति ये।**
**स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे श्रवांसि दधिरे परि॥४॥**

**चित्रा। वा। येषु। दीधितिः। आसन्। उक्था। पान्ति। ये। स्तीर्णम्। बर्हिः। स्वःऽनरे। श्रवांसि। दधिरे। परि॥४॥**

**पदार्थः**-**(चित्रा)** **(वा)** **(येषु)** अतिथिषु **(दीधितिः)** प्रकाशमाना विद्या **(आसन्)** आसन आस्ये वा **(उक्था)** प्रशंसनीयानि कर्माणि **(पान्ति)** रक्षन्ति **(ये)** **(स्तीर्णम्)** आच्छादितम् **(बर्हिः)** अन्तरिक्षमिव विज्ञानम् **(स्वर्णरे)** स्वः सुखेन युक्ते नरे **(श्रवांसि)** अन्नादीनि **(दधिरे)** दध्युः **(परि)** सर्वतः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषु चित्रा दीधितिरस्त्यासन्नुक्था सन्ति ये वा स्तीर्णं बर्हिरिव स्वर्णरे पान्ति श्रवांसि परि दधिरे त एवोत्तमा अतिथयः सन्ति॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्याशुभगुणपूर्णाः सर्वेषां हितं प्रेप्सवः पुरुषार्थिनः पक्षपातरहिता अतिथय उपदेशेन सर्वान् रक्षन्ति ते जगत्कल्याणकरा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(येषु)** जिन अतिथियों में **(चित्रा)** विचित्र **(दीधितिः)** प्रकाशमान विद्या है और **(आसन्)** आसन वा मुख में **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य कर्म हैं और **(ये, वा)** अथवा जो **(स्तीर्णम्)** आच्छादित अर्थात् अन्तःकरण में व्याप्त **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष के सदृश विज्ञान की **(स्वर्णरे)** सुख से युक्त मनुष्य में **(पान्ति)** रक्षा करते हैं और **(श्रवांसि)** अन्नादिकों को **(परि)** सब ओर से **(दधिरे)** धारण करें, वे ही श्रेष्ठ अतिथि होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्या के उत्तम गुणों से पूर्ण, सब के हित चाहने वाले, पुरुषार्थी अर्थात् उत्साही और पक्षपात से रहित अतिथिजन उपदेश से सब की रक्षा करते हैं, वे संसार के कल्याण करने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये मे पञ्चाशतं ददुरश्वानां सधस्तुति।**

**द्युमदग्ने महि श्रवो बृहत्कृधि मघोनां नृवदमृत नृणाम्॥५॥१०॥**

**ये। मे। पञ्चाशतम्। ददुः। अश्वानाम्। सधऽस्तुति। द्युऽमत्। अग्ने। महि। श्रवः। बृहत्। कृधि। मघोनाम्। नृऽवत्। अमृत। नृणाम्॥५॥**

**पदार्थः-(ये) (मे)** मह्यम् **(पञ्चाशतम्) (ददुः)** दत्तवन्तः स्युः **(अश्वानाम्)** वेगवतामग्न्यादि-पदार्थानाम् **(सधस्तुति)** सहप्रशंसितम् **(द्युमत्)** यथार्थज्ञानप्रकाशयुक्तम् **(अग्ने)** विद्वन् **(महि)** महत् **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(बृहत्) (कृधि) (मघोनाम्)** बहुधनवताम् **(नृवत्)** नृभिस्तुल्यम् **(अमृत)** मरणधर्मरहित **(नृणाम्)** मनुष्याणाम्॥५॥

**अन्वयः**-येऽतिथयो मेऽश्वानां सधस्तुति द्युमत्पञ्चाशतं विज्ञानं ददुस्तैः सहाग्ने विद्वँस्त्वं सधस्तुति द्युमन्महि बृहच्छ्रवः कृधि। हे अमृत! तेषां मघोनां नृणां नृवदुन्नतिं विधेहीति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽतिथयः पदार्थविद्यां प्रयच्छेयुस्तेषां सत्कारं यथावत्कुरुतेति॥५॥

अत्राग्निवदतिथिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टादशं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(ये)** जो अतिथि जन **(मे)** मेरे लिये **(अश्वानाम्)** वेग से युक्त अग्नि आदि पदार्थों के **(सधस्तुति)** साथ प्रशंसित **(द्युमत्)** यथार्थ ज्ञान के प्रकाश से युक्त **(पञ्चाशतम्)** पञ्चाशत् संख्यायुक्त विज्ञान को **(ददुः)** देने वाले हों, उनके साथ हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप एक साथ प्रशंसित और यथार्थ ज्ञान के प्रकाश से युक्त **(महि)** बड़े **(बृहत्)** बहुत **(श्रवः)** अन्न वा श्रवण को **(कृधि)** करिये और हे **(अमृत)** मरणधर्म्म से रहित! उन **(मघोनाम्)** बहुत धनवान् **(नृणाम्)** मनुष्यों के **(नृवत्)** मनुष्यों के तुल्य उन्नति का विधान करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अतिथिजन पदार्थविद्या को देवें, उनका सत्कार यथायोग्य करो॥५॥

इस सूक्त में अग्निवत् अतिथि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अठारहवाँ सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनविंशतितमस्य सूक्तस्य वव्रिरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ गायत्री। २ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ निचृत् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वत्साध्योपदेशविषयमाह॥***

अब पांच ऋचा वाले उन्नीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों के सिद्ध करने योग्य उपदेश विषय को कहते हैं॥

**अ॒भ्य॑व॒स्थाः प्र जा॑यन्ते॒ प्र व॒व्रेर्व॒व्रिश्चि॑केत। उ॒पस्थे॑ मा॒तुर्वि च॑ष्टे॥ १॥**

**अ॒भि। अ॒व॒ऽस्थाः। प्र। जा॒य॒न्ते॒। प्र। व॒व्रेः। व॒व्रिः। चि॒के॒त॒। उ॒पऽस्थे॑। मा॒तुः। वि। च॒ष्टे॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**अवस्थाः**) अवतिष्ठन्ति विरुद्धं प्राप्नुवन्ति यासु ता वर्त्तमाना दशाः (**प्र**) (**जायन्ते**) उत्पद्यन्ते (**प्र**) (**वव्रेः**) स्वीकर्त्तुः (**वव्रिः**) अङ्गीकर्त्ता (**चिकेत**) विजानीयात् (**उपस्थे**) समीपे (**मातुः**) जनन्याः (**वि**) (**चष्टे**) विख्यायते॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वव्रेर्या अवस्थाः प्र जायन्ते ता वव्रिरभि प्र चिकेत मातुरुपस्थे वि चष्ट एता त्वमपि जानीहि॥ १॥

**भावार्थः**-न कोऽपि प्राण्यस्ति यस्योत्तममध्यमाऽधमा अवस्था न जायेरन् यश्च मात्रा पित्राऽऽचार्य्येण शिक्षितोऽस्ति स एव स्वकीया अवस्थाः शोधयितुं शक्नोति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**वव्रेः**) स्वीकार करने वाले की जो (**अवस्थाः**) विरुद्ध वर्त्ताव को प्राप्त होते हैं, जिनमें ऐसी वर्त्तमान दशायें (**प्र, जायन्ते**) उत्पन्न होती हैं, उनका (**वव्रिः**) स्वीकार करने वाला (**अभि**) सन्मुख (**प्र, चिकेत**) विशेष करके जाने और (**मातुः**) माता के (**उपस्थे**) समीप में (**वि, चष्टे**) प्रसिद्ध होता है, इनको आप भी जानिये॥ १॥

**भावार्थः**-ऐसा नहीं कोई भी प्राणी है कि जिसकी उत्तम, मध्यम और अधम दशायें न होवें और जो माता पिता और आचार्य से शिक्षित है, वही अपनी दशाओं को सुधार सकता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**जु॒हु॒रे वि चि॒तय॒न्तोऽनि॑मिषं नृ॒म्णं पा॑न्ति। आ दृ॒ळ्हां पुरं॑ विविशुः॥ २॥**

**जु॒हु॒रे। वि। चि॒तय॑न्तः। अनि॑ऽमिषम्। नृ॒म्णम्। पा॒न्ति॒। आ। दृ॒ळ्हाम्। पुर॑म्। वि॒वि॒शुः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**जुहुरे**) कुटिलयन्ति (**वि**) विरुद्धे (**चितयन्तः**) ज्ञापयन्तः (**अनिमिषम्**) अहर्निशम् (**नृम्णम्**) धनम् (**पान्ति**) रक्षन्ति (**आ**) (**दृळ्हाम्**) (**पुरम्**) नगरम् (**विविशुः**) आविशन्ति॥ २॥

**अन्वयः**-येऽनिमिषं चितयन्तो वि जुहुरे नृम्णं पान्ति ते दृळ्हां पुरमा विविशुः॥२॥

**भावार्थः**-ये सरलस्वभावाः सत्यविज्ञापकाः प्रतिक्षणं पुरुषार्थयन्ते ते राज्यैश्वर्य्यं लभन्ते॥२॥

**पदार्थः**-जो **(अनिमिषम्)** दिन-रात्रि **(चितयन्तः)** बोध कराते हुए **(वि)** विरुद्ध **(जुहुरे)** कुटिलता करते और **(नृम्णम्)** धन की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं, वे **(दृळहाम्)** दृढ़ **(पुरम्)** नगर को **(आ, विविशुः)** सब प्रकार प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो सरल स्वभाव वाले और सत्य के बोधक प्रतिक्षण पुरुषार्थ करते हैं, वे राज्य और ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः।**

**निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न वाजयुः॥३॥**

**आ। श्वैत्रेयस्य। जन्तवः। द्युऽमत्। वर्धन्त। कृष्टयः। निष्कऽग्रीवः। बृहत्ऽउक्थः। एना। मध्वा। न। वाजऽयुः॥३॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(श्वैत्रेयस्य)** श्वित्रास्वन्तरिक्षस्थासु दिक्षु भवस्य जलस्य **(जन्तवः)** जीवाः **(द्युमत्)** प्रकाशवत् **(वर्धन्त)** वर्धन्ते **(कृष्टयः)** मनुष्याः **(निष्कग्रीवः)** निष्कं चतुस्सौवर्णप्रमितमाभूषणं ग्रीवायां यस्य सः **(बृहदुक्थः)** महत् प्रशंसितः **(एना)** एनेन **(मध्वा)** मधुना **(न)** इव **(वाजयुः)** वाजमन्नं कामयमानः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य श्वैत्रेयस्य मध्ये जन्तवः कृष्टयो वर्धन्तैना मध्वा वाजयुर्न बृहदुक्थो निष्कग्रीवो द्युमत् सुखमा लभते॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह संसारे यावन्तः पदार्थास्सन्ति तावन्तो जलेनैव भवन्ति सर्वेषां बीजं जलमेवास्तीति विज्ञाय सर्वाणि सुखानि लभध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो जिस **(श्वैत्रेयस्य)** अन्तरिक्ष में स्थित दिशाओं में उत्पन्न जल के मध्य में **(जन्तवः)** जीव और **(कृष्टयः)** मनुष्य **(वर्धन्त)** वृद्धि को प्राप्त होते हैं **(एना)** इस **(मध्वा)** मधुर जल से **(वाजयुः)** अन्न की कामना करते हुए के **(न)** सदृश **(बृहदुक्थः)** अत्यन्त प्रशंसित **(निष्कग्रीवः)** एक निष्क का जिसमें चार सुवर्ण प्रमाण से युक्त आभूषण जिसकी ग्रीवा में ऐसा पुरुष **(द्युमत्)** प्रकाश से युक्त सुख को **(आ)** प्राप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में जितने पदार्थ हैं, वे सब जल ही से होते हैं अर्थात् सब का बीज जल ही है, ऐसा जान कर सब सुखों को प्राप्त होओ॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रियं दुग्धं न काम्यमजामि जाम्योः सचा।**

**घर्मो न वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभः॥४॥**

**प्रियम्। दुग्धम्। न। काम्यम्। अजामि। जाम्योः। सचा। घर्मः। न। वाजऽजठरः। अदब्धः। शश्वतः। दभः॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्रियम्**) (**दुग्धम्**) (**न**) इव (**काम्यम्**) कमनीयम् (**अजामि**) प्राप्नोमि (**जाम्योः**) अत्तव्यान्नप्रदयोर्द्यावापृथिव्योः (**सचा**) सम्बन्धेन (**घर्मः**) प्रतापः (**न**) इव (**वाजजठरः**) वाजो क्षुद्वेगो जठरे यस्मात्सः (**अदब्धः**) अहिंसनीयः (**शश्वतः**) निरन्तरोऽव्याप्तः (**दभः**) दम्नाति हिनस्ति येन सः॥४॥

**अन्वयः**-वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभो घर्मो न प्रियं दुग्धं न सचा जाम्योः काम्यमजामि तेन मया सह यूयमप्येदं कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यप्रकाशवद् व्याप्तविद्या दुग्धवत्प्रियवचसो धर्मं कामयमाना जनास्सन्ति ते भूमिवत्सर्वेषां रक्षका भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-(**वाजजठरः**) क्षुधा का वेग उदर में जिससे हो (**अदब्धः**) जो नहीं हिंसा करने योग्य (**शश्वतः**) निरन्तर व्याप्त (**दभः**) और जिससे नाश करता है उस (**घर्मः**) प्रताप के (**न**) सदृश वा (**प्रियम्**) प्रिय (**दुग्धम्**) दुग्ध के (**न**) सदृश (**सचा**) सम्बन्ध से (**जाम्योः**) खाने योग्य अन्न को देने वाले प्रकाश और पृथिवी के (**काम्यम्**) कामना करने योग्य पदार्थ को (**अजामि**) प्राप्त होता हूं, इससे मेरे साथ आप लोग भी इसको करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सूर्य्य के प्रकाश के सदृश विद्या से व्याप्त, दुग्ध के सदृश प्रिय वचन वाले और धर्म्म की कामना करते हुए जन हैं, वे पृथ्वी के सदृश सब के रक्षक होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क्रीळन्नो रश्म आ भुवः सं भस्मना वायुना वेविदानः।**

**ता अस्य सन् धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः॥५॥११॥**

**क्रीळन्। नः। रश्मे। आ। भुवः। सम्। भस्मना। वायुना। वेविदानः। ताः। अस्य। सन्। धृषजः। न। तिग्माः। सुऽसंशिताः। वक्ष्यः। वक्षणेऽस्थाः॥५॥**

**पदार्थः**-(**क्रीळन्**) (**नः**) अस्मान् (**रश्मे**) रश्मिवद्वर्त्तमान (**आ**) (**भुवः**) भवेः (**सम्**) (**भस्मना**) (**वायुना**) पवनेन (**वेविदानः**) विज्ञापयन् (**ताः**) (**अस्य**) (**सन्**) (**धृषजः**) धाष्टर्याज्जातान् (**न**) इव

**(तिग्मा:)** तीव्रा: **(सुसंशिता:)** सुष्ठु प्रशंसिता: **(वक्ष्य:)** वोढ्य: **(वक्षणेस्था:)** या वाहने तिष्ठन्ति ता:॥५॥

**अन्वय:**-हे रश्मे रश्मिवद्वर्त्तमान विद्वन्! यथा विद्युदग्निर्भस्मना वायुना वेविदानस्ता अस्य धृषजो न तिग्मा: सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्था वहन् सन् सुखं सम्भावयति तथा क्रीळन्नोऽस्मान् सुखकार्य्या भुव:॥५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे विद्वांसो! यथा सूर्य्यस्य रश्मय सर्वत्र प्रसृता: सर्वान् सुखयन्ति तथैव सर्वत्र विहरन्त उपदिशन्त: सर्वानानन्दयन्त्विति॥५॥

अत्र विद्वत्साध्योपदेशविषयवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनविंशं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(रश्मे)** किरणों के सदृश वर्त्तमान विद्वन्! जैसे बिजुलीरूप अग्नि **(भस्मना)** भस्म और **(वायुना)** पवन से **(वेविदान:)** जनाता अर्थात् अपने को प्रकट करता हुआ **(ता:)** उन **(अस्य)** इसकी **(धृषज:)** धृष्टता से उत्पन्न हुओं के **(न)** सदृश **(तिग्मा:)** तीव्र **(सुसंशिता:)** उत्तम प्रकार प्रशंसित **(वक्ष्य:)** ले चलनेवाली और **(वक्षणेस्था:)** वाहन में स्थिर ऐसी लपटों को धारण करता **(सन्)** हुआ सुख की **(सम्)** संभावना कराता है, वैसे **(क्रीळन्)** क्रीड़ा करते हुए आप **(न:)** हम लोगों के सुखकारी **(आ, भुव:)** हूजिये॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे विद्वानो! जैसे सूर्य की किरणें सर्वत्र फैली हुई सब को सुख देती हैं, वैसे ही सब स्थानों में भ्रमण तथा उपदेश करते हुए आप सब को आनन्द दीजिये॥५॥

इस सूक्त में विद्वानों के सिद्ध करने योग्य उपदेश विषय का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उन्नीसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य विंशतितमस्य सूक्तस्य प्रयस्वन्त अत्रय ऋषयः। अग्निर्देवता। १, ३ विराडनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथाग्निपदवाच्यविद्वद्विषयमाह॥***

अब चार ऋचा वाले बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**यमग्ने वाजसातम त्वं चिन्मन्यसे रयिम्।**

**तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम्॥१॥**

**यम्। अग्ने। वाजऽसातम। त्वम्। चित्। मन्यसे। रयिम्। तम्। नः। गीःऽभिः। श्रवाय्यम्। देवऽत्रा। पनय। युजम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**अग्ने**) विद्वन् (**वाजसातम**) अतिशयेन वाजानां विज्ञानादिपदार्थानां विभाजक (**त्वम्**) (**चित्**) अपि (**मन्यसे**) (**रयिम्**) श्रियम् (**तम्**) (**नः**) अस्मान् (**गीर्भिः**) सूपदिष्टाभिर्वाग्भिः (**श्रवाय्यम्**) श्रोतुं योग्यम् (**देवत्रा**) देवेषु (**पनया**) व्यवहारेण प्रापय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**युजम्**) यो युनक्ति तम्॥१॥

**अन्वयः**-हे वाजसातमाग्ने! त्वं गीर्भिर्यं देवत्रा श्रवाय्यं युजं रयिं स्वार्थं मन्यसे तं चिन्नः पनया॥१॥

**भावार्थः**-अयमेव धर्म्यो व्यवहारो यादृशीच्छा स्वार्था भवति तादृशीमेव परार्थां कुर्याद्यथा प्राणिनः स्वार्थं दुःखं नेच्छन्ति सुखं च प्रार्थयन्ते तथैवान्यार्थमपि तैर्वर्त्तितव्यम्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वाजसातम**) अतिशय विज्ञान आदि पदार्थों के विभाजक (**अग्ने**) विद्वन्! (**त्वम्**) आप (**गीर्भिः**) उत्तम प्रकार उपदेशरूप हुई वाणियों से (**यम्**) जिस (**देवत्रा**) विद्वानों में (**श्रवाय्यम्**) सुनने योग्य (**युजम्**) योग करने वाले (**रयिम्**) धन को अपने लिये (**मन्यसे**) स्वीकार करते हो (**तम्**) उसको (**चित्**) भी (**नः**) हम लोगों को (**पनया**) व्यवहार से प्राप्त कराइये॥१॥

**भावार्थः**-यही धर्मयुक्त व्यवहार है कि जैसे इच्छा अपने लिये होती है, वैसे ही दूसरे के लिये करे और जैसे प्राणी अपने लिये दुःख की नहीं इच्छा करते हैं और सुख की प्रार्थना करते हैं, वैसे ही अन्य के लिये भी उनको वर्त्तावं करना चाहिये॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः।**

**अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे॥२॥**

**ये। अग्ने। न। ईरयन्ति। ते। वृद्धाः। उग्रस्य। शवसः। अप। द्वेषः। अप। ह्वरः। अन्यऽव्रतस्य। सश्चिरे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**अग्ने**) विद्वन् (**न**) निषेधे (**ईरयन्ति**) (**ते**) तव (**वृद्धाः**) विद्यावयोभ्यां स्थविराः (**उग्रस्य**) उत्कृष्टस्य (**शवसः**) बलस्य (**अप**) (**द्वेषः**) ये द्विषन्ति ते (**अप**) (**ह्वरः**) कुटिलाचरणाः (**अन्यव्रतस्य**) धर्म्मविरुद्धाचरणस्य (**सश्चिरे**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये वृद्धा ते उग्रस्य शवसः सश्चिरे द्वेषोऽप सश्चिरेऽन्यव्रतस्य ह्वरोऽप सश्चिरे ते दुःखं नेरयन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-त एव वृद्धा ये सत्यं वदन्ति सर्वानुपकृत्य स्वात्मवत्सुखयन्ति कदाचिद्धर्म्मविरुद्धं नाचरन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् (**ये**) जो (**वृद्धाः**) विद्या और अवस्था से वृद्ध जन (**ते**) आपके (**उग्रस्य**) उत्तम (**शवसः**) बल के सम्बन्ध में (**सश्चिरे**) गमन करने वाले हैं और (**द्वेषः**) द्वेष करने वाले (**अप**) दूर जाते हैं (**अन्यव्रतस्य**) धर्म से विरुद्ध आचरण वाले के सम्बन्ध में (**ह्वरः**) कुटिल आचरण वाले (**अप**) अलग जाते हैं, वे दुःख की (**न**) नहीं (**ईरयन्ति**) प्रेरणा करते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-वे ही वृद्ध हैं, जो सत्य बोलते और सब का उपकार करके अपने सदृश सुख देते और कभी धर्म्म से विरुद्ध आचरण नहीं करते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**होतारं त्वा वृणीमहेऽग्ने दक्षस्य साधनम्।**

**यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे॥ ३॥**

**होतारम्। त्वा। वृणीमहे। अग्ने। दक्षस्य। साधनम्। यज्ञेषु। पूर्व्यम्। गिरा। प्रयस्वन्तः। हवामहे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**होतारम्**) दातारम् (**त्वा**) त्वाम् (**वृणीमहे**) स्वीकुर्महे (**अग्ने**) विद्वन् (**दक्षस्य**) बलस्य (**साधनम्**) (**यज्ञेषु**) (**पूर्व्यम्**) पूर्वैराप्तैः कृतम् (**गिरा**) वाण्या (**प्रयस्वन्तः**) प्रयतमानाः (**हवामहे**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा प्रयस्वन्तो वयं गिरा यज्ञेषु दक्षस्य पूर्व्यं साधनं हवामहे होतारमग्निं वृणीमहे तथा त्वा स्वीकुर्य्याम॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मनुष्याः परोपकारिणं प्रीत्या बहु मन्यन्ते तथैव विद्वद्भिः सर्वाण्युत्तमानि कर्म्माणि क्रियन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वान्! जैसे (**प्रयस्वन्तः**) प्रयत्न करते हुए लोग (**गिरा**) वाणी से (**यज्ञेषु**) यज्ञों में (**दक्षस्य**) बल के (**पूर्व्यम्**) प्राचीन यथार्थवक्ता पुरुषों से किये गये (**साधनम्**) साधन को (**हवामहे**) देते और (**होतारम्**) दाता अग्नि को (**वृणीमहे**) स्वीकार करते हैं, वैसे (**त्वा**) आपको स्वीकार करें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मनुष्य परोपकारी का प्रीति से बहुत आदर करते हैं, वैसे ही विद्वान् जनों से सब उत्तम कर्म्म किये जाते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**इ॒त्था यथा॑ त ऊ॒तये॒ सह॑सावन् दि॒वेदि॑वे।**

**रा॒य ऋ॒ताय॑ सुक्रतो॒ गोभि॑: ष्याम सध॒मादो॑ वी॒रैः स्या॑म सध॒माद॑:॥४॥१२॥**

**इ॒त्था। यथा॑। ते॒। ऊ॒तये॑। सह॑साऽवन्। दि॒वेऽदि॑वे। रा॒ये। ऋ॒ताय॑। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। गोभि॑:। स्या॒म॒:। स॒ध॒ऽमाद॑:। वी॒रैः। स्या॒म॒। स॒ध॒ऽमाद॑:॥४॥**

**पदार्थः**-**(इत्था)** अस्माद्धेतोः **(यथा)** **(ते)** तव **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(सहसावन्)** बलेन तुल्य **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम् **(राये)** धनाय **(ऋताय)** धर्म्यव्यवहारेण प्राप्ताय **(सुक्रतो)** सुष्ठुप्रज्ञ **(गोभिः)** वाग्भिः **(स्याम)** **(सधमादः)** सहस्थानाः **(वीरैः)** शूरवीरैः **(स्याम)** **(सधमादः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे सहसावन् सुक्रतो! यथा त ऊतये दिवेदिवे ऋताय राये वयं गोभिः सधमादः स्याम वीरैः सधमादः स्यामेत्था त्वं भव॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये साहसेन पुरुषार्थयन्तः वीरसेनां गृहीत्वैश्वर्य्यप्राप्तये प्रयतन्ते त एव सुखिनो भवन्तीति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति विंशतितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहसावन्)** बल से तुल्य **(सुक्रतो)** उत्तम बुद्धि से युक्त! **(यथा)** जैसे **(ते)** आपके **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(ऋताय)** धर्मयुक्त व्यवहार से प्राप्त **(राये)** धन के लिये हम लोग **(गोभिः)** वाणियों से **(सधमादः)** साथ स्थान वाले **(स्याम)** होवें **[(वीरैः)** शूरवीरों से **(सधमादः)** साथ स्थान वाले **(स्याम)** होवें**]** **(इत्था)** इस कारण से आप हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो साहस से पुरुषार्थ करते हुए वीर जनों की सेना को ग्रहण करके ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, वे ही सुखी होते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ चतुर्ऋचस्यैकाधिकविंशतितमस्य सूक्तस्य सस आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिगुष्णिक्। ३ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब चार ऋचा वाले इक्कीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**मनुष्वत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि।**

**अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज॥ १॥**

**मनुष्वत्। त्वा। नि। धीमहि। मनुष्वत्। सम्। इधीमहि। अग्ने। मनुष्वत्। अङ्गिरः। देवान्। देवऽयते। यज॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मनुष्वत्**) मनुष्येण तुल्यम् (**त्वा**) त्वाम् (**नि**) (**धीमहि**) निधिमन्तो भवेम (**मनुष्वत्**) (**सम्**) (**इधीमहि**) प्रकाशितान् कुर्याम (**अग्ने**) विद्वन् (**मनुष्वत्**) (**अङ्गिरः**) प्राणा इव प्रिय (**देवान्**) दिव्यविद्वद्विपश्चितः (**देवयते**) देवान् दिव्यगुणान् कामयमानाय (**यज**) सङ्गच्छस्व॥१॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरोऽग्ने! यथा वयं कार्यसिद्धयेऽग्निं मनुष्यवन्नि धीमहि देवयते देवान् मनुष्वत् समिधीमहि तथा त्वा सत्यक्रियायां निधीमहि त्वं मनुष्वद्यज॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये नरा मननशीला भूत्वा दिव्यान् गुणान् कामयन्ते ते अग्न्यादिपदार्थविद्यां विजानन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्गिरः**) प्राणों के सदृश प्रिय (**अग्ने**) विद्वन्! जैसे हम लोग कार्य्य की सिद्धि के लिये अग्नि को (**मनुष्वत्**) मनुष्य को जैसे वैसे (**नि, धीमहि**) निरन्तर धारण होवें और (**देवयते**) श्रेष्ठ गुणों की कामना करते हुए के लिये (**देवान्**) श्रेष्ठ विद्यायुक्त विद्वानों को (**मनुष्वत्**) मनुष्यों के समान (**सम्, इधीमहि**) प्रकाशित करें वैसे (**त्वा**) आपको उत्तम कर्म्म में स्थित करें और आप (**मनुष्वत्**) मनुष्य के तुल्य (**यज**) मिलिये अर्थात् कार्य्यों को प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य विचारशील होकर श्रेष्ठ गुणों की कामना करते हैं, वे अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को जानें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे।**

**स्रुचस्त्वा यन्त्यानुषक् सुजात सर्पिरासुते॥ २॥**

**त्वम्। हि। मानुषे। जने। अग्ने। सुऽप्रीतः। इध्यसे। स्रुचः। त्वा। यन्ति। आनुषक्। सुऽजात। सर्पिःऽआसुते॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**हि**) (**मानुषे**) (**जने**) प्रसिद्धे (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**सुप्रीतः**) सुष्ठु प्रसन्नः (**इध्यसे**) प्रदीप्यसे (**स्रुचः**) यज्ञसाधनानि पात्राणि (**त्वा**) त्वाम् (**यन्ति**) (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**सुजात**) सुष्ठुजात (**सर्पिरासुते**) सर्पिषा समन्तात् प्रदीपिते॥२॥

**अन्वयः**-हे सुजाताग्ने! यथाऽग्निः सर्पिरासुते प्रदीप्यते तथा हि त्वं मानुषे जने सुप्रीत इध्यसे यथा त्वा स्रुच आनुषक् यन्ति तथैव त्वं सर्वान् प्रत्यनुकूलो भव॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथाग्निरिन्धनघृतादीनि प्राप्य वर्धते तथैव विद्यां शुभगुणाँश्च प्राप्य सततं वर्धन्ताम्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**सुजात**) उत्तम प्रकार उत्पन्न (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रताप से वर्त्तमान! जैसे अग्नि (**सर्पिरासुते**) घृत से सब ओर से प्रकाशित हुए में प्रकाशित किया जाता है, वैसे (**हि**) ही (**त्वम्**) आप (**मानुषे, जने**) प्रसिद्ध मनुष्य में (**सुप्रीतः**) उत्तम प्रकार प्रसन्न हुए (**इध्यसे**) प्रकाशित होते हो और जैसे (**त्वा**) आपको (**स्रुचः**) यज्ञ के साधन पात्र (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं, वैसे ही आप सबके प्रति अनुकूल हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जैसे अग्नि इन्धन और घृत आदिकों को प्राप्त होकर वृद्धि को प्राप्त होता है, वैसे ही विद्या और उत्तम गुणों को प्राप्त होकर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हूजिये॥२॥

**अथ शिल्पविद्याविद्विषयमाह॥**

अब शिल्पविद्यावेत्ता विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत।**

**सपर्यन्तस्त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते॥३॥**

**त्वाम्। विश्वे। सऽजोषसः। देवासः। दूतम्। अक्रत। सपर्यन्तः। त्वा। कवे। यज्ञेषु। देवम्। ईळते॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**विश्वे**) सर्वे (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेविनः (**देवासः**) विद्वांसः (**दूतम्**) दूतवद्वर्त्तमानवह्निम् (**अक्रत**) कुर्वते (**सपर्यन्तः**) परिचरन्तः (**त्वा**) त्वाम् (**कवे**) विपश्चित् (**यज्ञेषु**) सत्सङ्गेषु (**देवम्**) दिव्यगुणम् (**ईळते**) स्तुवन्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे कवे! यथा विश्वे सजोषसो देवासो देवं दूतमक्रत सपर्यन्तो यज्ञेषु देवमीळते तथा त्वां वयं सेवेमहि त्वा सत्कुर्य्याम॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्निं दूतकर्म कारयन्ति ते सर्वत्र प्रशंसितैश्वर्य्या जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**कवे**) विद्वन्! जैसे (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**सजोषसः**) तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले (**देवासः**) विद्वान् जन् (**देवम्**) श्रेष्ठ गुण वाले (**दूतम्**) दूत के सदृश वर्त्तमान अग्नि को (**अक्रत**) करते हैं

और **(सपर्यन्तः)** सेवा करते हुए जन **(यज्ञेषु)** सत्संगो में श्रेष्ठ गुणों वाले विद्वान् की **(ईळते)** स्तुति करते हैं, वैसे **(त्वाम्)** आपकी हम लोग सेवा करें और **(त्वा)** आपका सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन अग्नि से दूतकर्म अर्थात् नौकर के सदृश काम कराते हैं, वे सब स्थानों में प्रशंसित ऐश्वर्य वाले होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**देवं वो देवयज्ययाग्निमीळीत मर्त्यः।**

**समिद्धः शुक्र दीदिह्यृतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः॥४॥१३॥**

**देवम्। वः। देवऽयज्यया। अग्निम्। ईळीत। मर्त्यः। सम्ऽइद्धः। शुक्र। दीदिहि। ऋतस्य। योनिम्। आ। असदः। ससस्य। योनिम्। आ। असदः॥४॥**

**पदार्थः**-**(देवम्)** **(वः)** युष्माकम् **(देवयज्यया)** देवानां विदुषां सङ्गत्या **(अग्निम्)** **(ईळीत)** प्रशंस्येत् **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(समिद्धः)** **(शुक्र)** शक्तिमन् **(दीदिहि)** प्रकाशय **(ऋतस्य)** सत्यस्य परमाण्वादेः **(योनिम्)** कारणम् **(आ)** **(असदः)** जानीयाः **(ससस्य)** कार्य्यस्य **(योनिम्)** कारणम् **(आ, असदः)** समन्ताज्जानीहि॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! वो देवयज्यया मर्त्यो देवमग्निमीळीत हे शुक्र समिद्धस्त्वं दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वत्सङ्गेन कार्यकारणात्मिकां सृष्टिं विज्ञाय कार्य्यसिद्धिं समाचरन्ति ते सृष्टिक्रमं विज्ञाय दुःखं कदाचिन्न भजन्त इति॥४॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाधिकविंशतितमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(वः)** आप लोगों के **(देवयज्यया)** विद्वानों के मेल से **(मर्त्यः)** मनुष्य **(देवम्)** प्रकाशित **(अग्निम्)** अग्नि की **(ईळीत)** प्रशंसा करे। हे **(शुक्र)** सामर्थ्य वाले **(समिद्धः)** उत्तम गुणों से प्रकाशित! आप **(दीदिहि)** प्रकाश कराओ और **(ऋतस्य)** सत्य परमाणु आदि के **(योनिम्)** कारण को **(आ, असदः)** सब प्रकार जानिये और **(ससस्य)** कार्य्य के **(योनिम्)** कारण को **(आ, असदः)** सब प्रकार जानिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों के संग से कार्य्य और कारणस्वरूप सृष्टि अर्थात् सत्त्व, रज और तमोगुण को साम्यावस्थारूप प्रधान को जान के कार्य को सिद्ध करते हैं, वे सृष्टि के क्रम को जान के दु:ख को कभी नहीं प्राप्त होते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इक्कीसवां सूक्त और त्रयोदशवां वर्ग सम्पात हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य द्वाविंशतितमस्य सूक्तस्य विश्वसामात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ३ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब चार ऋचा वाले बाईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा पावकशोचिषे।**

**यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि॥ १॥**

**प्र। विश्वऽसामन्। अत्रिऽवत्। अर्च। पावकऽशोचिषे। यः। अध्वरेषु। ईड्यः। होता। मन्द्रऽतमः। विशि॥ १॥**

**पदार्थः-(प्र) (विश्वसामन्)** विश्वानि सामानि यस्य तत्सम्बुद्धौ **(अत्रिवत्)** व्यापकविद्यावत् **(अर्चा)** सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(पावकशोचिषे)** पावकस्य शोचः प्रकाश इव प्रकाशो यस्य तस्मै **(यः) (अध्वरेषु) (ईड्यः)** प्रशंसनीयः **(होता)** दाता **(मन्द्रतमः)** अतिशयेनानन्दयुक्तः **(विशि)** प्रजायाम्॥ १॥

**अन्वयः-**हे विश्वसामन्! योऽध्वरेष्वीड्यो होता विशि मन्द्रतमो भवेत् तस्मै पावकशोचिषेऽत्रिवत् प्रार्चा॥ १॥

**भावार्थः-**मनुष्यैर्धार्मिकाणामेव सत्कारः कर्त्तव्यो नान्येषाम्॥ १॥

**पदार्थः-**हे **(विश्वसामन्)** सम्पूर्ण सामों वाले **(यः)** जो **(अध्वरेषु)** यज्ञों में **(ईड्यः)** प्रशंसा करने योग्य **(होता)** दाता **(विशि)** प्रजा में **(मन्द्रतमः)** अतिशय आनन्द युक्त होवे उस **(पावकशोचिषे)** अग्नि के प्रकाश के सदृश प्रकाश वाले पुरुष के लिये **(अत्रिवत्)** व्यापक विद्या वाले के सदृश **(प्र, अर्चा)** सत्कार कीजिये॥ १॥

**भावार्थः-**मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक जनों का ही सत्कार करें, अन्य जनों का नहीं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न्य१ग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम्।**

**प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः॥ २॥**

**नि। अग्निम्। जातऽवेदसम्। दधात। देवम्। ऋत्विजम्। प्र। यज्ञः। एतु। आनुषक्। अद्य। देवव्यचःऽतमः॥ २॥**

**पदार्थः-(नि) (अग्निम्)** पावकम् **(जातवेदसम्)** जातेषु विद्यमानम् **(दधाता)** धरत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(देवम्)** दिव्यगुणकर्मस्वभावम् **(ऋत्विजम्)** य ऋतुषु यजति तद्वद्वर्त्तमानम् **(प्र)**

**(यज्ञः)** सङ्गन्तव्यः **(एतु)** प्राप्नोतु **(आनुषक्)** आनुकूल्येन **(अद्या)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(देवव्यचस्तमः)** यो देवान् पृथिव्यादीन् धरति भिनत्ति च सोऽतिशयितः॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो देवव्यचस्तमो यज्ञ आनुषगद्यास्मानेतु तमृत्विजमिव जातवेदसं देवमग्निं प्र णि दधाता॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथर्त्विजो यज्ञं पूर्णं कुर्वन्ति तथैवाग्निः शिल्पविद्याकृत्यसिद्धिमलङ्करोति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(देवव्यचस्तमः)** पृथिव्यादिकों का धारण करने और अति तोड़ने वाला **(यज्ञः)** मिलने योग्य **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(अद्या)** आज हम लोगों को **(एतु)** प्राप्त हो उस **(ऋत्विजम्)** ऋतुओं में यज्ञ करने वाले के सदृश **(जातवेदसम्)** उत्पन्न हुओं में विद्यमान **(देवम्)** श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(अग्निम्)** अग्नि को **(प्र, नि, दधाता)** उत्तमता से निरन्तर धारण करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यज्ञ करने वाले यज्ञ को पूर्ण करते हैं, वैसे ही अग्नि शिल्पविद्या के कृत्य की सिद्धि को पूर्ण करता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चिकित्विन्मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये।**

**वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि॥३॥**

**चिकित्वित्ऽमनसम्। त्वा। देवम्। मर्तासः। ऊतये। वरेण्यस्य। ते। अवसः। इयानासः। अमन्महि॥३॥**

**पदार्थः**-**(चिकित्विन्मनसम्)** चिकित्वितं विज्ञानवतां मन इव मनो यस्य तम् **(त्वा)** त्वाम् **(देवम्)** विद्वांसम् **(मर्त्तासः)** मनुष्याः **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(वरेण्यस्य)** वरितुमर्हस्य **(ते)** तव **(अवसः)** कमनीयस्य **(इयानासः)** प्राप्नुवन्तः **(अमन्महि)** विजानीयाम॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वरेण्यस्याऽवसस्ते सङ्गेनेयानासो मर्त्तासो वयमूतये चिकित्विन्मनसं देवं त्वाऽग्निमिवामन्महि॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदैव विद्वत्सङ्गेन पदार्थविद्यान्वेषणीया॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(वरेण्यस्य)** स्वीकार करने और **(अवसः)** कामना करने योग्य **(ते)** आपके सङ्ग से **(इयानासः)** प्राप्त होते हुए **(मर्त्तासः)** मनुष्य हम लोग **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(चिकित्विन्मनसम्)** विज्ञानयुक्त पुरुषों के मन के सदृश मन से युक्त **(देवम्)** विद्वान् **(त्वा)** आपको अग्नि के सदृश **(अमन्महि)** विशेष करके जानें॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा ही विद्वानों के संग से पदार्थविद्या का खोज करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॑ चिकि॒द्ध्य१॒॑स्य न॑ इ॒दं वच॑: सहस्य।**

**तं त्वा॑ सुशिप्र दम्पते॒ स्तोमै॑र्वर्ध॒न्त्यत्र॑यो गी॒र्भिः शु॑म्भ॒न्त्यत्र॑य:॥४॥१४॥**

**अग्ने॑। चि॒कि॒द्धि। अ॒स्य। न॒:। इ॒दम्। वच॑:। स॒ह॒स्य॒। तम्। त्वा। सु॒ऽशि॒प्र॒। द॒म्ऽप॒ते॒। स्तोमै॑:। व॒र्ध॒न्ति॒। अत्र॑य:। गी॒:ऽभि:। शु॒म्भ॒न्ति॒। अत्र॑य:॥४॥**

**पदार्थ:**-(**अग्ने**) विद्वन् (**चिकिद्धि**) विजानीहि (**अस्य**) (**न:**) अस्माकम् (**इदम्**) (**वच:**) (**सहस्य**) सहसि बले साधो (**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**सुशिप्र**) शोभनहनुनासिक (**दम्पते**) स्त्रीपुरुष (**स्तोमै:**) प्रशंसितैर्व्यवहारै: वाग्भि: (**वर्धन्ति**) (**अत्रय:**) अविद्यमानत्रिविधदु:खा (**गीर्भि:**) (**शुम्भन्ति**) पवित्रयन्ति (**अत्रय:**) त्रिभि: कामक्रोधलोभदोषै रहिता:॥४॥

**अन्वय:**-हे सहस्य सुशिप्र दम्पतेऽग्ने! त्वं यथाऽत्रय: स्तोमैर्वर्धन्ति यथाऽत्रयो गीर्भि: शुम्भन्ति तथा न इदं वचोऽस्य च चिकिद्धि तं त्वा वयं सत्कुर्य्याम॥४॥

**भावार्थ:**-यथा पुरुषार्थिनो मनुष्या सर्वान् वर्धयन्त्युपदेशका: सर्वान् पवित्रयन्ति तथैव सर्वे मनुष्या आचरन्त्विति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशतितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे (**सहस्य**) बल में श्रेष्ठ (**सुशिप्र**) सुन्दर ठुड्डी और नासिका वाले (**दम्पते**) स्त्री और पुरुष (**अग्ने**) विद्वन्! आप जैसे (**अत्रय:**) तीन प्रकार के दु:खों से रहित जन (**स्तोमै:**) प्रशंसित व्यवहारों से (**वर्धन्ति**) वृद्धि को प्राप्त होते हैं और जैसे (**अत्रय:**) काम, क्रोध, और लोभ इन तीन दोषों से रहित जन (**गीर्भि:**) वाणियों से (**शुम्भन्ति**) पवित्र करते हैं, वैसे (**न:**) हम लोगों के (**इदम्**) इस (**वच:**) वचन को और (**अस्य**) इसके वचन को (**चिकिद्धि**) जानिये (**तम्**) उन (**त्वा**) आपका हम लोग सत्कार करें॥४॥

**भावार्थ:**-जैसे पुरुषार्थी मनुष्य सबकी वृद्धि करते हैं और उपदेशक जन सब जनों को पवित्र करती हैं, वैसे ही सब मनुष्य आचरण करें॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बाईसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य त्रयोविंशतितमस्य सूक्तस्य द्युम्नो विश्वचर्षणिर्ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्निपदवाच्यवीरगुणानाह॥*

अब चार ऋचा वाले तेईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य वीर के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम्।**

**विश्वा यश्चर्षणीरभ्या३सा वाजेषु सासहत्॥ १॥**

**अग्ने। सहन्तम्। आ। भर। द्युम्नस्य। प्रऽसहा। रयिम्। विश्वाः। यः। चर्षणीः। अभि। आसा। वाजेषु। ससहत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) वीरपुरुष (**सहन्तम्**) (**आ**) (**भर**) (**द्युम्नस्य**) धनस्य यशसो वा (**प्रासहा**) याः प्रकर्षेण शत्रुबलानि सहन्ते ताः सेनाः। अत्रा**न्येषामपी**त्यादिना दीर्घः। (**रयिम्**) धनम् (**विश्वाः**) अखिलाः (**यः**) (**चर्षणीः**) प्रकाशमाना मनुष्यसेनाः (**अभि**) (**आसा**) आस्येन (**वाजेषु**) संग्रामेषु (**सासहत्**) भृशं सहेत। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने वीर! यो विश्वाः प्रासहा चर्षणीर्वाजेषु सासहदासाभ्युपदिशेत्तं शत्रुबलं सहन्तं द्युम्नस्य रयिं त्वमा भर॥१॥

**भावार्थः**-यस्य विजयेच्छा स्यात् स शूरवीरसेनां सुशिक्षितां रक्षेत् वीररसोपदेशेनोत्साह्य शत्रुभिः सह योधयेत्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) वीरपुरुष! (**यः**) जो (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**प्रासहा**) अत्यन्त शत्रुओं के बलों को सहने वाली (**चर्षणीः**) पराक्रम से प्रकाशमान मनुष्यों की सेनाओं को (**वाजेषु**) संग्रामों में (**सासहत्**) अत्यन्त सहे और (**आसा**) मुख से (**अभि**) सब प्रकार से उपदेश देवे, उस शत्रुओं के बल को (**सहन्तम्**) सहते हुए (**द्युम्नस्य**) धन वा यश के सम्बन्ध में (**रयिम्**) धन को आप (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करो॥१॥

**भावार्थः**-जिसकी विजयी की इच्छा होवे, यह शूरवीरों की सेना उत्तम प्रकार शिक्षा की गई रक्खे और वीररस के उपदेश से उत्साह दिलाकर शत्रुओं के साथ लड़ावे॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर।**

**त्वं हि स॒त्यो अद्भु॑तो दा॒ता वाज॑स्य॒ गोम॑तः॥२॥**

**तम्। अ॒ग्ने॒। पृ॒त॒ना॒ऽसह॑म्। र॒यिम्। स॒ह॒स्व॒ः। आ। भ॒र॒। त्वम्। हि। स॒त्यः। अद्भु॑तः। दा॒ता। वाज॑स्य। गोऽम॑तः॥२॥**

**पदार्थः-(तम्) (अग्ने)** राजन् **(पृतनाषहम्)** यः पृतनां सेनां सहते तम् **(रयिम्)** धनम् **(सहस्वः)** बहु सहो बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(आ) (भर) (त्वम्) (हि) (सत्यः)** सत्सु साधुः **(अद्भुतः)** आश्चर्य्यगुणकर्मस्वभावः **(दाता) (वाजस्य)** सुखधनादेः **(गोमतः)** बह्व्यो गावो धेनुपृथिव्यादयो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्य॥२॥

**अन्वयः**-हे सहस्वोऽग्ने! यो हि सत्योऽद्भुतो गोमतो वाजस्य दाता भवेत्तं पृतनाषहं रयिं च त्वमा भर॥२॥

**भावार्थः**-यो राजा सत्यवादिनो विदुषो विचित्रविद्यान् दृढानुदाराञ्छूरान् वीरान् बिभृयात् स एव विजयं श्रियं च लभेत॥२॥

**पदार्थः**-हे **(सहस्वः)** बहुत बल से युक्त **(अग्ने)** राजन्! जो **(हि)** निश्चय से **(सत्यः)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ **(अद्भुतः)** आश्चर्य्ययुक्त गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला जन **(गोमतः)** बहुत धेनु और पृथिव्यादिकों से युक्त **(वाजस्य)** सुख और धन आदि का **(दाता)** देने वाला होवे **(तम्)** उस **(पृतनाषहम्)** सेना सहने वाले को और **(रयिम्)** धन को **(त्वम्)** आप **(आ, भर)** सब ओर से धारण कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो राजा सत्यवादी विद्वानों और विचित्र विद्यायुक्त दृढ़ और उदार अर्थात् उत्तम आशययुक्त शूरवीरों का धारण पोषण करे, वही विजय और लक्ष्मी को प्राप्त होवे॥२॥

**पुनर्वीरगुणानाह॥**

फिर वीर गुणों को कहते हैं॥

**विश्वे॒ हि त्वा॑ स॒जोष॑सो॒ जना॑सो वृ॒क्तब॑र्हिषः।**

**होता॑रं॒ सद्म॑सु प्रि॒यं व्यन्ति॒ वार्या॑ पु॒रु॥३॥**

**विश्वे॑। हि। त्वा॒। स॒ऽजोष॑सः। जना॑सः। वृ॒क्तऽब॑र्हिषः। होता॑रम्। सद्म॑ऽसु। प्रि॒यम्। व्यन्ति॑। वार्या॑। पु॒रु॥३॥**

**पदार्थः-(विश्वे)** सर्वे **(हि) (त्वा)** त्वाम् राजानम् **(सजोषसः)** समानप्रीतिसेवनाः **(जनासः)** प्रसिद्धशुभाचरणाः **(वृक्तबर्हिषः)** श्रोत्रिया ऋत्विज इव सर्वविद्यासु कुशलाः **(होतारम्)** दातारम् **(सद्मसु)** राजगृहेषु **(प्रियम्)** कमनीयम् **(व्यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(वार्य्या)** वर्त्तुमर्हाणि धनादीनि **(पुरु)** बहूनि॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये विश्वे सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषो इव हि सद्मसु होतारं प्रियं त्वाश्रयन्ति ते पुरु वार्य्या व्यन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये राज्योन्नतिप्रिया धर्म्मिष्ठा भृत्यास्त्वां प्राप्नुयुस्तान् सर्वान् सत्कृत्य सततं रक्षेः॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(सजोषसः)** तुल्य प्रीति के सेवने वाले **(जनासः)** प्रसिद्ध उत्तम आचरणों से युक्त **(वृक्तबर्हिषः)** अग्निहोत्र करने वाले और यज्ञ करने वाले के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं में कुशल जन **(हि)** ही **(सद्मसु)** राजगृहों अर्थात् राजदर्बारों में **(होतारम्)** दाता और **(प्रियम्)** सुन्दर **(त्वा)** आपका आश्रय करते हैं, वे **(पुरु)** बहुत **(वार्य्या)** स्वीकार करने योग्य धन आदिकों को **(व्यन्ति)** प्राप्त होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो राज्य की उन्नति में प्रीति करने वाले और धर्म्मिष्ठ भृत्य आपको प्राप्त होवें, उन सबका सत्कार करके निरन्तर रक्षा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दुधे।**

**अग्न एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि॥४॥१५॥**

**सः। हि स्म। विश्वऽचर्षणिः। अभिऽमाति। सहः। दुधे। अग्ने। एषु। क्षयेषु। आ। रेवत्। नः। शुक्र। दीदिहि। द्युऽमत्। पावक। दीदिहि॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(हि)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य** चेति दीर्घः। **(विश्वचर्षणिः)** अखिलविद्याप्रकाशः **(अभिमाति)** अभिमन्यते येन **(सहः)** बलम् **(दधे)** दधाति **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(एषु)** **(क्षयेषु)** निवासेषु **(आ)** **(रेवत्)** प्रशस्तधनयुक्तम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(शुक्र)** शक्तिमन् **(दीदिहि)** देहि **(द्युमत्)** प्रकाशमत् **(पावक)** पवित्र **(दीदिहि)** प्रकाशय॥४॥

**अन्वयः**-हे शुक्राग्ने! यो विश्वचर्षणिरेषु क्षयेष्वभिमाति सहो दधे स हि ष्मा विजेता भवति तेन त्वं नो रेवद्दीदिहि। हे पावक! पवित्राचरणेनाऽस्मभ्यं द्युमदा दीदिहि॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पूर्णं शरीरात्मबलं दधति ते सर्वेभ्यः सुखं दातुं शक्नुवन्तीति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोविंशतितमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शुक्र)** सामर्थ्ययुक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान! जो **(विश्वचर्षणिः)** सम्पूर्ण विद्याओं का प्रकाश **(एषु)** इन **(क्षयेषु)** निवास स्थानों में **(अभिमाति)** अभिमान जिससे हो उस **(सहः)** बल को **(दधे)** धारण करता **(सः, हि)** वही **(स्मा)** निश्चय से जीतने वाला होता है, इससे आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(रेवत्)** प्रशस्त धन से युक्त पदार्थ को **(दीदिहि)** दीजिये और हे **(पावक)** पवित्र, पवित्राचरण से हम लोगों के लिये **(द्युमत्)** प्रकाशयुक्त का **(आ, दीदिहि)** प्रकाश कीजिये॥४॥

**भावार्थः-**जो मनुष्य पूर्ण शरीर और आत्मा के बल को धारण करते हैं, वे सब के लिये सुख दे सकते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेईसवाँ सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य चतुर्विंशतितमस्य सूक्तस्य बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गोपायना लौपायना वा ऋषयः। अग्निर्देवता। १, २ पूर्वार्द्धस्य साम्नी बृहत्युत्तरार्द्धस्य भुरिक् साम्नी बृहती। ३, ४ पूर्वार्द्धस्योत्तरार्द्धस्य च भुरिक् साम्नी बृहती छन्दसी। मध्यमः स्वरः॥**

***अथाग्निपदवाच्यराजविषयमाह॥***

अब चार ऋचा वाले चौबीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य राजविषय को कहते हैं॥

**अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।**

**वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः॥१॥२॥**

**अग्ने। त्वम्। नः। अन्तमः। उत। त्राता। शिवः। भव। वरूथ्यः। वसुः। अग्निः। वसुऽश्रवाः। अच्छ। नक्षि। द्युमतऽतमम्। रयिम्। दाः॥१॥२॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) राजन् (**त्वम्**) (**नः**) अस्मानस्मभ्यं वा (**अन्तमः**) समीपस्थः (**उत**) (**त्राता**) रक्षकः (**शिवः**) मङ्गलकारी (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वरूथ्यः**) वरूथेषुत्तमेषु गृहेषु भवः (**वसुः**) वासयिता (**अग्निः**) पावकः (**वसुश्रवाः**) धनधान्ययुक्तः (**अच्छा**) (**नक्षि**) व्याप्नुहि (**द्युमत्तमम्**) (**रयिम्**) धनम् (**दाः**) देहि॥१॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं नोऽन्तमः शिवो वरूथ्यो वसुर्वसुश्रवा अग्निरिव शिव उत त्राता भवा य द्युमत्तमं रयिं त्वमच्छा नक्षि तमस्मभ्यं दाः॥१॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा परमात्मा सर्वाभिव्याप्तः सर्वरक्षकः सर्वेभ्यो मङ्गलप्रदः सर्वपदार्थदाता सुखकारी वर्त्तते तथैव राज्ञा भवितव्यम्॥१॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! (**त्वम्**) आप (**नः**) हम लोगों के हम लोगों को वा हम लोगों के लिये (**अन्तमः**) समीप में वर्त्तमान (**शिवः**) मङ्गलकारी (**वरूथ्यः**) उत्तम गृहों में उत्पन्न (**वसुः**) वसाने वाले (**वसुश्रवाः**) धन और धान्य से युक्त (**अग्निः**) अग्नि के सदृश मङ्गलकारी (**उत**) और (**त्राता**) रक्षक (**भवा**) हूजिये और जिस (**द्युमत्तमम्**) अत्यन्त प्रकाशयुक्त (**रयिम्**) धन को आप (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**नक्षि**) व्याप्त हूजिये और उसको हम लोगों के लिये (**दाः**) दीजिये॥१॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे परमात्मा सब में अभिव्याप्त सबका रक्षक और सबके लिये मङ्गलदाता, सब पदार्थों का दाता और सुखकारी है, वैसे ही राजा को होना चाहिये॥१॥२॥

**अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

अब अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो अघायतः समस्मात्।**

**तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः॥३॥४॥१६॥**

**सः। नः। बोधि। श्रुधि। हवम्। उरुष्य। नः। अघऽयतः। समस्मात्। तम्। त्वा। शोचिष्ठ। दीदिऽवः। सुम्नाय। नूनम्। ईमहे। सखिऽभ्यः॥३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**बोधि**) बोधय (**श्रुधी**) शृणु (**हवम्**) पठितम् (**उरुष्या**) रक्ष। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अघायतः**) आत्मनोऽघमाचरतः (**समस्मात्**) सर्वस्मात् (**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**शोचिष्ठ**) अतिशयेन शोधक (**दीदिवः**) सत्यप्रद्योतक (**सुम्नाय**) सुखाय (**नूनम्**) निश्चितम् (**ईमहे**) याचामहे (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः॥३॥४॥

**अन्वयः**-हे शोचिष्ठ दीदिवोऽग्निरिव राजन्! स त्वं नो बोधि नो हवं श्रुधी समस्मादघायतो न उरुष्या तं त्वा सखिभ्यः सुम्नाय वयं नूनमीमहे॥३॥४॥

**भावार्थः**-सर्वैः प्रजाराजजनै राजानं प्रत्येवं वाच्यं भवान् सर्वेभ्योऽपराधेभ्यः स्वयम्पृथग्भूत्वाऽस्मान् रक्षयित्वा विद्याप्रचारं धार्मिकेभ्यो मित्रेभ्यः सुखं वर्धयित्वा दुष्टान् सततं दण्डयेदिति॥३॥४॥

अत्राग्नीश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्विंशतितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**शोचिष्ठ**) अत्यन्त शुद्ध करने और (**दीदिवः**) सत्य के जनाने वाले अग्नि के सदृश तेजस्विजन! (**सः**) वह आप (**नः**) हम लोगों को (**बोधि**) बोध दीजिये और (**नः**) हम लोगों के (**हवम्**) पढ़े हुए विषय को (**श्रुधी**) सुनिये (**समस्मात्**) सब (**अघायतः**) आत्मा से पाप के आचरण करते हुए हम लोगों की (**उरुष्या**) रक्षा कीजिये (**तम्**) उन (**त्वा**) आप को (**सखिभ्यः**) मित्रों से (**सुम्नाय**) सुख के लिये हम लोग (**नूनम्**) निश्चित (**ईमहे**) याचना करते हैं॥३॥४॥

**भावार्थः**-सब प्रजा और राजजनों को चाहिये कि राजा के प्रति यह कहें कि आप सब अपराधों से स्वयं पृथक् हो के और हम लोगों की रक्षा करके विद्या का प्रचार और धार्मिक मित्रों के लिये सुख की वृद्धि करके दुष्टों को निरन्तर दण्ड दीजिये॥३॥४॥

इस सूक्त में अग्निपदवाच्य ईश्वर अर्थात् राजा और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौबीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य पञ्चविंशतितमस्य सूक्तस्य वसूयव आत्रेया ऋषयः। अग्निर्देवता। १, ८ निचृदनुष्टुप् २, ५, ६, ९ अनुष्टुप्। ३, ७ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब नव ऋचा वाले पच्चीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः।**

**रासत्पुत्र ऋषूणामृतावा पर्षति द्विषः॥ १॥**

**अच्छ। वः। अग्निम्। अवसे। देवम्। गासि। सः। नः। वसुः। रासत्। पुत्रः। ऋषूणाम्। ऋतऽवा। पर्षति। द्विषः॥ १॥**

**पदार्थः-(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वः)** युष्माकम् **(अग्निम्)** पावकम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(देवम्)** देदीप्यमानम् **(गासि)** प्रशंससि **(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(वसुः)** द्रव्यप्रदः **(रासत्)** ददाति **(पुत्रः)** अपत्यम् **(ऋषूणाम्)** मन्त्रार्थविदाम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन इकारस्य स्थान उत्वम् **(ऋतावा)** सत्यस्य विभाजकः **(पर्षति)** पारयति **(द्विषः)** शत्रून्॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वं यं देवमग्निं वोऽवसेऽच्छा गासि स वसुर्ऋषूणामृतावा पुत्रो द्विषः पर्षतीव नो रासत्॥१॥

**भावार्थः**-यथा विदुषां सत्पुत्रो विद्वान् भूत्वा लोभादीन् दोषान्निवार्य्य पित्रादीन् सुखयति तथैवाऽग्निः संसाधितः सन् सर्वान् सुखयति॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप जिस **(देवम्)** प्रकाशमान **(अग्निम्)** अग्नि की **(वः)** आप लोगों के **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(गासि)** प्रशंसा करते हो **(सः)** वह **(वसुः)** द्रव्यदाता **(ऋषूणाम्)** वेदमन्त्रार्थ जानने वालों के **(ऋतावा)** सत्य का विभाग करने वाला **(पुत्रः)** सन्तानरूप **(द्विषः)** शत्रुओं के **(पर्षति)** पार जाता है अर्थात् उनको जीतता है, वैसे ही **(नः)** हम लोगों के लिये **(रासत्)** देता है अर्थात् विजय दिलाता है॥१॥

**भावार्थः**-जैसे विद्वानों का श्रेष्ठ पुत्र विद्वान् होकर तथा लोभ आदि दोषों का त्याग करके पितृ आदिकों को सुख देता है, वैसे ही अग्नि उत्तम प्रकार सिद्धि किया गया सबको सुख देता है॥१॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे।**

**होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम्॥ २॥**

**सः। हि। सत्यः। यम्। पूर्वे। चित्। देवासः। चित्। यम्। ईधिरे। होतारम्। मन्द्रजिह्वम्। इत्। सुदीतिऽभिः। विभावसुम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) (**सत्यः**) सत्सु साधुः (**यम्**) (**पूर्वे**) प्राचीनाः (**चित्**) अपि (**देवासः**) विद्वांसः (**चित्**) (**यम्**) (**ईधिरे**) प्रदीपयन्ति (**होतारम्**) दातारम् (**मन्द्रजिह्वम्**) मन्द्रा प्रशंसनीया जिह्वा यस्य तम् (**इत्**) एव (**सुदीतिभिः**) सुष्ठु दीप्तिभिस्सहितम् (**विभावसुम्**) प्रकाशयुक्तं वसु धनं यस्य तम्॥ २॥

**अन्वयः**-पूर्वे देवासो यं होतारं मन्द्रजिह्वं सुदीतिभिस्सह वर्त्तमानं चिद् विभावसुमग्निमिव वर्त्तमानं यं राजानं चिदिदीधिरे स हि सत्यो राज्यं कर्त्तुमर्हति॥ २॥

**भावार्थः**-यं राजानमाप्ताः सत्कुर्युः स एव सततं राज्यं रक्षितुं वर्धितुं योग्यः स्यात्॥ २॥

**पदार्थः**-(**पूर्वे**) प्राचीन (**देवासः**) विद्वान् जन (**यम्**) जिस (**होतारम्**) देने वाले (**मन्द्रजिह्वम्**) प्रशंसनीय जिह्वा से युक्त (**सुदीतिभिः**) उत्तम प्रकाशों के सहित वर्त्तमान को (**चित्**) और (**विभावसुम्**) प्रकाशित धन से युक्त अग्नि के सदृश वर्त्तमान (**यम्**) जिस राजा को (**चित्**) निश्चय से (**इत्**) ही (**ईधिरे**) प्रकाशित करते हैं (**सः, हि**) वही (**सत्यः**) सज्जनों में श्रेष्ठ पुरुष राज्य करने को योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-जिस राजा का यथार्थवक्ता जन सत्कार करें, वही निरन्तर राज्य की रक्षा और वृद्धि करने को योग्य हो॥ २॥

**अथाग्निसादृश्येन विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निसादृश्य से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या।**

**अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य॥ ३॥**

**सः। नः। धीती। वरिष्ठया। श्रेष्ठया। च। सुऽमत्या। अग्ने। रायः। दिदीहि। नः। सुवृक्तिऽभिः। वरेण्य॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**धीती**) धीत्या धारणवत्या (**वरिष्ठया**) अतिशयेन स्वीकर्त्तव्यया (**श्रेष्ठया**) अत्युत्तमया (**च**) (**सुमत्या**) शोभनया प्रज्ञया (**अग्ने**) (**रायः**) धनानि (**दिदीहि**) देहि (**नः**) अस्मभ्यम् (**सुवृक्तिभिः**) सुष्ठु वृक्तिर्वर्जनं यासां क्रियाभिः (**वरेण्य**) स्वीकर्त्तुमर्ह॥ ३॥

**अन्वयः**-हे वरेण्याग्ने! स त्वं धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया सुमत्या नो रायो दिदीहि सुवृक्तिभिश्च नः सततं वर्धय॥ ३॥

**भावार्थः**-ये उत्तमां प्रज्ञां चेच्छन्ति त एव सर्वैः सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**वरेण्य**) स्वीकार करने योग्य (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! (**सः**) वह आप (**धीती**) धारणावाली (**वरिष्ठया**) अत्यन्त स्वीकार करने योग्य (**श्रेष्ठया**) अति उत्तम (**सुमत्या**) सुन्दर बुद्धि

से **(नः)** हम लोगों के लिये **(रायः)** धनों को **(दिदीहि)** दीजिये **(सुवृक्तिभिः)** उत्तम वर्जनवाली क्रियाओं से **(च)** भी **(नः)** हम लोगों की निरन्तर वृद्धि कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-जो उत्तम बुद्धि की इच्छा करते वा उत्तम बुद्धि को अन्य जनों के लिये देते हैं, वे ही सब लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मर्तेष्वाविशन्।**
**अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत॥४॥**

अग्निः। देवेषु। राजति। अग्निः। मर्तेषु। आऽविशन्। अग्निः। नः। हव्यऽवाहनः। अग्निम्। धीभिः। सपर्यत॥४॥

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावक इव वर्त्तमानो विद्वान् **(देवेषु)** विद्वत्सु पृथिव्यादिषु वा **(राजति)** प्रकाशते **(अग्निः)** विद्युत् **(मर्त्तेषु)** मरणधर्मेषु मनुष्यादिषु **(आविशन्)** आविष्टः सन् **(अग्निः)** सूर्य्यादिरूपः **(नः)** अस्मान् **(हव्यवाहनः)** यो हव्यानि वहति सः **(अग्निम्)** पावकम् **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः **(सपर्य्यत)** सेवध्वम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्देवेषु योऽग्निर्मर्त्तेषु यो हव्यवाहनोऽग्निर्न आविशन् राजति तमग्निं धीभिर्यूयं सपर्य्यत॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यद्यनेकविधोऽग्निर्युष्माभिर्विज्ञायेत तर्हि किं किं सुखं न लभ्येत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान तेजस्वी विद्वान् **(देवेषु)** विद्वानों वा पृथिवी आदिकों में और जो **(अग्निः)** बिजुलीरूप अग्नि **(मर्त्तेषु)** मरणधर्म्म वाले मनुष्य आदिकों में और जो **(हव्यवाहनः)** हवन करने योग्य पदार्थों को धारण करने वाला **(अग्निः)** सूर्य्यादिरूप अग्नि **(नः)** हम लोग में **(आविशन्)** प्रविष्ट हुआ **(राजति)** प्रकाशित होता है, उस **(अग्निम्)** अग्नि को **(धीभिः)** बुद्धियों से आप लोग **(सपर्य्यत)** सेवो अर्थात् कार्य्य में लाओ॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो अनेक प्रकार का अग्नि आप लोगों से जाना जाये अर्थात् अनेक प्रकार के अग्नि का आप लोगों को परिज्ञान हो तो क्या-क्या सुख न पाया जाये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम्।**
**अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे॥५॥१७॥**

**अग्निः। तुविश्र्वःऽतमम्। तुविऽब्रह्माणम्। उत्ऽतमम्। अतूर्तम्। श्रवयत्ऽपतिम्। पुत्रम्। ददाति। दाशुषे॥५॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) विद्वान् (**तुविश्रवस्तमम्**) अतिशयेन बह्वन्नश्रवणयुक्तम् (**तुविब्रह्माणम्**) बहवो ब्रह्माणश्चतुर्वेदविदो विद्वांसो यस्य तम् (**उत्तमम्**) अतिशयेन श्रेष्ठम् (**अतूर्त्तम्**) अहिंसितम् (**श्रावयत्पतिम्**) श्रावयन्पतिर्यस्य तम् (**पुत्रम्**) (**ददाति**) (**दाशुषे**) दानशीलाय॥५॥

**अन्वयः**-यो अग्निरिव दाशुषे तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तममतूर्त्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति स एव पूजनीयतमो भवति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यास्तेषामेव यूयं सत्कारं कुरुत ये सर्वान् विदुषो धार्मिकान् कुर्वन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जो (**अग्निः**) अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान् (**दाशुषे**) दानशील जन के लिये (**तुविश्रवस्तमम्**) अत्यन्त बहुत अन्न और श्रवण से युक्त और (**तुविब्रह्माणम्**) चार वेद के जानने वाले बहुत विद्वानों के युक्त (**उत्तमम्**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**अतूर्त्तम्**) नहीं हिंसित और (**श्रावयत्पतिम्**) सुनाते हुए पालन करने वाले से युक्त (**पुत्रम्**) सन्तान को (**ददाति**) देता है, वही अत्यन्त आदर करने योग्य होता है॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! उन लोगों का ही आप लोग सत्कार करो, जो सबको विद्वान् और धार्मिक करते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः।**

**अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपराजितम्॥६॥**

**अग्निः। ददाति। सत्ऽपतिम्। ससाह। यः। युधा। नृऽभिः। अग्निः। अत्यम्। रघुऽस्यदम्। जेतारम्। अपराऽजितम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) परमेश्वरो विद्वान् वा (**ददाति**) (**सत्पतिम्**) सतां पालकम् (**सासाह**) सहते। अत्र लडर्थे लिट्। **तुजादीनामित्यभ्यासदैर्घ्यम्।** (**यः**) (**युधा**) युध्यमानेन सैन्येन (**नृभिः**) नायकैर्मनुष्यैः (**अग्निः**) पावकः (**अत्यम्**) अतति व्याप्नोत्यध्वानमत्यमश्वम् (**रघुष्यदम्**) लघुगमनम् (**जेतारम्**) अपराजितम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सोऽग्निः सत्पतिं ददाति योऽग्निर्युधा नृभी रघुष्यदं जेतारमपराजितं राजानमत्यमिव सासाह॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथेश्वरो धर्मिष्ठेभ्यो धर्म्मात्मानं राजानं ददाति यथा सुसेना विद्वांसं शूरवीरं धर्म्मात्मानं सेनाध्यक्षं प्राप्य शत्रून् विजयते तथैव स सर्वैर्बहु मन्तव्यः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! वह **(अग्निः)** परमेश्वर वा विद्वान् **(सत्पतिम्)** श्रेष्ठों के पालन करने वाले को **(ददाति)** देता है **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि **(युधा)** युद्ध करती हुई सेना और **(नृभिः)** नायक अर्थात् अग्रणी मनुष्यों से **(रघुष्यदम्)** लघुगमनवान् **(जेतारम्)** जीतने और **(अपराजितम्)** नहीं हारने वाले राजा को **(अत्यम्)** मार्ग्ग को व्याप्त होते घोड़े को जैसे वैसे **(सासाह)** सहता है॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे ईश्वर धर्म्मिष्ठ जनों के लिये धर्म्मात्मा राजा को देता है और जैसे उत्तम सेना विद्वान् शूरवीर और धर्म्मात्मा सेनाध्यक्ष को प्राप्त होकर शत्रुओं को जीतती है, वैसे ही वह सब लोगों को आदर करने योग्य है॥६॥

**अथाग्निपदवाच्यराजदृष्टान्तेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निपदवाच्य राजदृष्टान्त से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यद्वाहिंष्ठं तदुग्नयें बृहदंर्च विभावसो।**

**महिंषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदींरते॥७॥**

**यत्। वाहिंष्ठम्। तत्। अग्नयें। बृहत्। अर्च। विभावसो इतिं विभाऽवसो। महिंषीऽइव। त्वत्। रयिः। त्वत्। वाजाः। उत्। ईरते॥७॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यम् **(वाहिष्ठम्)** अतिशयेन वोढारम् **(तत्)** तम् **(अग्नये)** राज्ञे **(बृहत्)** **(अर्च)** सत्कुरु **(विभावसो)** स्वप्रकाश **(महिषीव)** ज्येष्ठा राज्ञीव **(त्वत्)** **(रयिः)** धनम् **(त्वत्)** **(वाजाः)** अन्नाद्याः **(उत्)** **(ईरते)** उत्कृष्टतया जायन्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे विभावसो! यद्यं वाहिष्ठमग्नये बृहदर्च तत्तम्महिषीव सेवस्व यस्त्वद्रयिस्त्वद् वाजा उदीरते तान् वयं लभेमहि॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रता राज्ञी स्वपतिं सततं सत्करोति तस्माज्जातं पुष्कलसुखं लभते तथैव मनुष्या विदुषः संसेव्य तेभ्यो जातां प्रज्ञां प्राप्य सततं सुखयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे **(विभावसो)** स्वयं प्रकाशित! **(यत्)** जिस **(वाहिष्ठम्)** अतिशय प्राप्त करने वाले का **(अग्नये)** राजा के लिये **(बृहत्)** बड़ा **(अर्च)** सत्कार करो **(तत्)** उसकी **(महिषीव)** बड़ी अर्थात् पटरानी के सदृश सेवा करो और जो **(त्वत्)** आपसे **(रयिः)** धन और **(त्वत्)** आपसे **(वाजाः)** अन्न आदि **(उत्, ईरते)** उत्तमता से उत्पन्न होते हैं, उनको हम लोग प्राप्त होवें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता रानी अपने पति का निरन्तर सत्कार करती और उससे उत्पन्न हुए अत्यन्त सुख को प्राप्त होती है, वैसे ही मनुष्य विद्वानों का आदर करके उनसे उत्पन्न हुई अर्थात् उनके सम्बन्ध से प्रकट हुई बुद्धि को प्राप्त होकर निरन्तर सुखी हो॥७॥

**अथ मेघदृष्टान्तेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब मेघदृष्टान्त से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**तवं द्युमन्तों अर्चयो ग्रावेंवोच्यते बृहत्।**

**उतो तें तन्यतुर्यथा स्वानो अर्त त्मनां दिवः॥८॥**

**तवं। द्युऽमन्तंः। अर्चयंः। ग्रावांऽइव। उच्यते। बृहत्। उतो इति। ते। तन्यतुः। यथा। स्वानः। अर्त। त्मनां। दिवः॥८॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**द्युमन्तः**) बहुप्रकाशवन्तः (**अर्चयः**) किरणाः (**ग्रावेव**) मेघ इव (**उच्यते**) (**बृहत्**) महत्सत्यम् (**उतो**) अपि (**ते**) तव (**तन्यतुः**) विद्युत् (**यथा**) (**स्वानः**) शब्दः (**अर्त**) प्राप्नुत (**त्मना**) आत्मना (**दिवः**) कामयमानान् पदार्थान्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्तव द्युमन्तो येऽर्चयः सन्ति ताभिर्यद् ग्रावेव बृहदुच्यत उतो ते यथा तन्यतुस्तथा स्वानो वर्त्तते ततस्त्मना दिवो यूयं सर्वेऽर्त्त॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मेघवद् गम्भीरशब्देन गूढार्थानुपदिशन्ति विद्युद्वत्पुरुषार्थयन्ति ते सर्वाणि सुखानि लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**तव**) आपके (**द्युमन्तः**) बहुत प्रकाश वाली (**अर्चयः**) किरणें हैं उनसे जो (**ग्रावेव**) मेघ के सदृश (**बृहत्**) बहुत सत्य (**उच्यते**) कहा जाता (**उतो**) और (**ते**) आपका (**यथा**) जैसे (**तन्यतुः**) बिजुली वैसे (**स्वानः**) शब्द वर्त्तमान है, इस कारण (**त्मना**) आत्मा से (**दिवः**) प्रकाशयुक्त पदार्थों को तुम सब लोग (**अर्त्त**) प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मेघ के सदृश गम्भीर शब्द से गूढ़ अर्थों के उपदेश देते और बिजुली के सदृश पुरुषार्थ करते हैं, वे सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवाँ अग्निं वंसूयवंः सहसानं ववन्दिम।**

**स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः॥९॥१८॥**

**एव। अग्निम्। वसुऽयवंः। सहसानम्। ववन्दिम। सः। नः। विश्वाः। अति। द्विषः। पर्षत्। नावाऽइंव। सुऽक्रतुः॥९॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) निश्चये (**अग्निम्**) विद्युतमिव विद्वांसम् (**वसूयवः**) आत्मनो वस्विच्छवः (**सहसानम्**) यः सर्वं सहते तम् (**ववन्दिम**) प्रशंसेम (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**विश्वाः**) समग्राः (**अति**) (**द्विषः**) द्वेषयुक्ताः क्रियाः (**पर्षत्**) पारयेत् (**नावेव**) यथा नौकया समुद्रम् (**सुक्रतुः**) सुष्ठुप्रज्ञः सुकर्मा वा॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वसूयवो वयमग्निमिव सहसानं त्वां ववन्दिम स एवा सुक्रतुर्भवान्नावेव नो विश्वा

द्विषोऽति पर्षत्॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा महत्या नौकया समुद्रादिपारं सुखेन गच्छन्ति तथैव विद्वत्सङ्गेन सर्वेभ्यो दोषेभ्यस्सहजतया दूरं प्राप्नुवन्तीति॥९॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चविंशतितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(वसूयवः)** अपने धन की इच्छा करते हुए हम लोग **(अग्निम्)** बिजुली के सदृश तेजस्वी विद्वान् और **(सहसानम्)** सबको सहने वाले आपकी **(ववन्दिम)** प्रशंसा करें **(सः, एवा)** वही **(सुक्रतुः)** उत्तम बुद्धि वा उत्तम कर्मों से युक्त आप **(नावेव)** जैसे नौका से समुद्र के वैसे **(न)** हम लोगों की **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(द्विषः)** द्वेषयुक्त क्रियाओं के **(अति, पर्षत्)** पार करें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे बड़ी नौका से समुद्र आदि के पार सुखपूर्वक जाते हैं, वैसे ही विद्वानों के संग से सब दोषों से साधारणापन से दूर को प्राप्त होते हैं॥९॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पच्चीसवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य षड्विंशतितमस्य सूक्तस्य वसूयव आत्रेया ऋषयः। अग्निर्देवाता। १, ४, ९ गायत्री। २, ३, ५, ६, ८ निचृद्गायत्री। ७ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥***

अब नव ऋचा वाले छब्बीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

### अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥१॥

**अग्ने। पावक। रोचिषा। मन्द्रया। देव। जिह्वया। आ। देवान्। वक्षि। यक्षि। च॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**पावक**) पवित्रशुद्धिकर्त्तः (**रोचिषा**) अतिरुचियुक्तया (**मन्द्रया**) विज्ञानानन्दप्रदया (**देव**) विद्याप्रदातः (**जिह्वया**) वाण्या (**आ**) समन्तात् (**देवान्**) विदुषो दिव्यगुणान् पदार्थान् वा (**वक्षि**) प्राप्नोषि प्रापयसि वा (**यक्षि**) सत्करोषि सङ्गच्छसे (**च**)॥१॥

**अन्वयः**-हे पावक देवाग्ने! यतस्त्वं रोचिषा मन्द्रया जिह्वयाऽत्र देवाना वक्षि यक्षि च तस्मादर्चनीयोऽसि॥१॥

**भावार्थः**-ये प्रीत्या सत्योपदेशान् कृत्वा विदुषो दिव्यान् गुणांश्च प्राप्य प्रापयन्ति त एव पूजनीया भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**पावक**) पवित्र और शुद्धि करने तथा (**देव**) विद्या के देने वाले (**अग्ने**) विद्वन्! जिससे आप (**रोचिषा**) अति प्रीति से युक्त (**मन्द्रया**) विज्ञान और आनन्द देने वाली (**जिह्वया**) वाणी से इस संसार में (**देवान्**) विद्वानों और श्रेष्ठ गुणों वा पदार्थों को (**आ, वक्षि**) सब ओर से प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हो तथा (**यक्षि**) सत्कार करते और मिलते (**च**) भी हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१॥

**भावार्थः**-जो प्रीति से सत्य उपदेशों को कर और विद्वान् तथा श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होकर अन्यों को प्राप्त कराते हैं, वे ही आदर करने योग्य होते हैं॥१॥

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब अग्निगुणों को कहते हैं॥

### तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह॥२॥

**तम्। त्वा। घृतस्नो इति घृतऽस्नो। ईमहे। चित्रभानो इति चित्रऽभानो। स्वःऽदृशम्। देवान्। आ। वीतये। वह॥२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**घृतस्नो**) यो घृतं स्नाति शुन्धति तत्सम्बुद्धौ (**ईमहे**) याचामहे (**चित्रभानो**) अद्भुतदीप्ते (**स्वर्दृशम्**) यः स्वरादित्येन दृश्यते तम् (**देवान्**) दिव्यगुणान् विदुषो वा (**आ**) (**वीतये**) प्राप्तये (**वह**)॥२॥

**अन्वयः**-हे घृतस्नो चित्रभानो विद्वन्! यथा घृतशोधको विचित्रप्रकाशोऽग्निर्वीतये स्वर्दृशं त्वाऽऽवहति तं वयमीमहे तथा त्वं देवाना वह॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि बहूत्तमगुणमग्निं मनुष्या विजानीयुस्तर्हि पुष्कलं सुखं लभन्ताम्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**घृतस्नो**) घृत को शुद्ध करने वाले (**चित्रभानो**) अद्भुतप्रकाशयुक्त विद्वन्! जैसे घृत को स्वच्छ करने वाला और अद्भुतप्रकाश से युक्त अग्नि (**वीतये**) प्राप्ति के लिये (**स्वर्दृशम्**) जो सूर्य्य से देखे गये उन (**त्वा**) आपको धारण करता है (**तम्**) उसको हम लोग (**ईमहे**) याचते हैं, वैसे आप (**देवान्**) दिव्य गुण वा विद्वानों को (**आ, वह**) सब ओर से प्राप्त कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बहुत उत्तम गुणयुक्त अग्नि को मनुष्य विशेष करके जानें तो बहुत सुख को प्राप्त हों॥२॥

**पुनरग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥**

फिर अग्नि के सादृश्य से विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**वी॒तिहो॑त्रं त्वा कवे द्यु॒मन्तं॒ समि॑धीमहि। अग्ने॑ बृ॒हन्त॑मध्व॒रे॥३॥**

**वी॒ति॒ऽहो॑त्रम्। त्वा॒। क॒वे॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। सम्। इ॒धी॒म॒हि॒। अग्ने॑। बृ॒हन्त॑म्। अ॒ध्व॒रे॥३॥**

**पदार्थः**-(**वीतिहोत्रम्**) वीतेर्व्याप्तेर्होत्रं ग्रहणं यस्मात् तम् (**त्वा**) (**कवे**) विद्वन् (**द्युमन्तम्**) प्रकाशवन्तम् (**सम्**) (**इधीमहि**) सम्यक् प्रकाशयेम (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**बृहन्तम्**) महान्तम् (**अध्वरे**) अहिंसायज्ञे॥३॥

**अन्वयः**-हे कवे अग्ने! वयमध्वरे [**वीतिहोत्रं**] द्युमन्तमग्निमिव यं बृहन्तं त्वा समिधीमहि स त्वमस्माञ्छुद्धविद्यया प्रकाशय॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः शिल्पविद्यासिद्धयेऽग्निसम्प्रयोगोऽवश्यं कार्य्यः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**कवे**) विद्वन् (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! हम लोग (**अध्वरे**) अहिंसारूप यज्ञ में (**वीतिहोत्रम्**) व्याप्ति का ग्रहण जिससे उस (**द्युमन्तम्**) प्रकाश वाले अग्नि के सदृश जिन (**बृहन्तम्**) महान् (**त्वा**) आपको (**सम्, इधीमहि**) उत्तम प्रकार प्रकाशित करें, वह आप हम लागों को शुद्ध विद्या से प्रकाशित करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि शिल्पविद्या की सिद्धि के लिये अग्नि का सम्प्रयोग अवश्य करें॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॒ विश्वे॑भि॒रा ग॑हि दे॒वेभि॑र्ह॒व्यदा॑तये। होता॑रं त्वा वृणीमहे॥४॥**

**अग्ने॑। विश्वे॑भिः। आ। ग॒हि॒। दे॒वेभिः॑। ह॒व्यऽदा॑तये। होता॑रम्। त्वा॒। वृ॒णी॒म॒हे॒॥४॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**विश्वेभिः**) समग्रैः (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**देवेभिः**) विद्वद्भिः (**हव्यदातये**) दातव्यदानाय (**होतारम्**) (**त्वा**) (**वृणीमहे**)॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यं होतारं त्वा वयं वृणीमहे स त्वं हव्यदातये विश्वेभिर्देवेभिः सहा गहि॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विदुषां स्वीकारं कृत्वा त आह्वातव्या, विद्वांसश्च विद्वद्भिः सहागत्य सततं सत्यमुपदिशन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जिन (**होतारम्**) देने वाले (**त्वा**) आपका हम लोग (**वृणीमहे**) स्वीकार करते हैं, वह आप (**हव्यदातये**) देने योग्य दान के लिये (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**देवेभिः**) विद्वानों के साथ (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों का सत्कार कर उन्हें बुलावें और विद्वान् जन भी विद्वानों के साथ प्राप्त होकर निरन्तर सत्य का उपदेश करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यज॑मानाय सु॒न्व॒त आग्ने॑ सु॒वीर्यं॑ वह। दे॒वैरा स॑त्सि ब॒र्हिषि॑॥५॥१९॥**

**यज॑मानाय। सु॒न्व॒ते। आ। अ॒ग्ने॒। सु॒ऽवीर्य॑म्। व॒ह॒। दे॒वैः। आ। स॒त्सि॒। ब॒र्हिषि॑॥५॥**

**पदार्थः**-(**यजमानाय**) दात्रे (**सुन्वते**) यज्ञं निष्पादयते (**आ**) (**अग्ने**) विद्वन् (**सुवीर्यम्**) (**वह**) प्राप्नुहि (**देवैः**) विद्वद्भिः (**आ**) (**सत्सि**) सभायाम् (**बर्हिषि**) अत्युत्तमायाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं देवैः सह बर्हिषि सत्सि सुन्वते यजमानाय सुवीर्यमा वह यज्ञमा यज॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पालकाय जनाय यूयं सुखं सदैव दत्त सर्वेषां सभया सर्वान् व्यवहारान् निश्चिनुत॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**देवैः**) विद्वानों के साथ (**बर्हिषि**) अति उत्तम (**सत्सि**) सभा में (**सुन्वते**) यज्ञ करते हुए (**यजमानाय**) दाता जन के लिये (**सुवीर्यम्**) उत्तम पराक्रम को (**आ, वह**) प्राप्त हूजिये और यज्ञ को (**आ**) अच्छे प्रकार करिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पालन करने वाले जन के लिये आप लोग सुख सदा ही दीजिये और सब [प्रजा] की सभा से सब व्यवहारों का निश्चय कीजिये॥५॥

**पुनरग्निसादृश्येन विद्वद्विषयमाह॥**

फिर अग्निसादृश्य से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**स॒मि॒धा॒नः स॑हस्रजिद॒ग्ने धर्मा॑णि पुष्यसि। दे॒वानां॑ दू॒त उ॒क्थ्यः॑॥६॥**

**स॒म्ऽइ॒धा॒नः। स॒ह॒स्र॒ऽजि॒त्। अग्ने॑। धर्मा॑णि। पु॒ष्य॒सि॒। दे॒वाना॑म्। दू॒तः। उ॒क्थ्यः॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**समिधानः**) देदीप्यमानः (**सहस्रजित्**) असङ्ख्यानां विजेता (**अग्ने**) अग्निरिव दुष्टदाहक (**धर्म्माणि**) धर्म्याणि कर्माणि (**पुष्यसि**) (**देवानाम्**) (**दूतः**) यो दुनोति समाचारं दूरं दूराद्वा गमयत्यागमयति (**उक्थ्यः**) प्रशंसनीयः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा समिधानः पावको देवानां दूतोऽस्ति तथा सहस्रजिदुक्थ्यो देवानां समिधानो दूतः सन् यतो धर्म्माणि पुष्यसि तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्या विद्यया विज्ञाय कार्यसिद्धये यमग्निं सम्प्रयुञ्जते सोऽग्निर्मनुष्यवत् कार्यसिद्धिं करोति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश दुष्टों के जलाने वाले! जैसे (**समिधानः**) निरन्तर प्रकाशित हुआ अग्नि (**देवानाम्**) विद्वानों के (**दूतः**) समाचार को दूर व्यवहरता वा दूर पहुँचाता और ले आता है, वैसे (**सहस्रजित्**) असङ्ख्यों के जीतने वाले (**उक्थ्यः**) प्रशंसा करने योग्य विद्वानों का निरन्तर प्रकाश करने, समाचार को दूर व्यवहरने वा दूर पहुँचाने और लाने वाले होते हुए जिससे (**धर्म्माणि**) धर्म्मसम्बन्धी कर्म्मों को (**पुष्यसि**) पुष्ट करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य विद्या से अग्नि के गुणों को जान के कार्य्य की सिद्धि के लिये जिस अग्नि का सम्प्रयोग करते हैं, वह अग्नि मनुष्य के तुल्य कार्य्य की सिद्धि को करता है॥६॥

**अथाग्निधारणविषयमाह॥**

अब अग्निधारणविषय को कहते हैं॥

**न्य१॒॑ग्निं जा॒तवे॑दसं होत्र॒वाहं॒ यवि॑ष्ठ्यम्। दधा॑ता दे॒वमृ॒त्विज॑म्॥७॥**

**नि। अ॒ग्निम्। जा॒तऽवे॑दसम्। हो॒त्र॒ऽवाह॑म्। यवि॑ष्ठ्यम्। दधा॑त। दे॒वम्। ऋ॒त्विज॑म्॥७॥**

**पदार्थः**-(**नि**) (**अग्निम्**) पावकम् (**जातवेदसम्**) जातेषु विद्यमानम् (**होत्रवाहम्**) यो होत्राणि हुतानि द्रव्याणि वहति (**यविष्ठ्यम्**) योऽतिशयितेषु युवसु भवम् (**दधाता**) धरत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**देवम्**) दिव्यगुणम् (**ऋत्विजम्**) यज्ञसाधकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यविष्ठ्यमृत्विजं देवमिव जातवेदसं होत्रवाहमग्निं नि दधाता॥७॥

**भावार्थः**-यथा शिल्पिनः स्वकार्य्यं साध्नुवन्ति तथैवाग्न्यादयोऽपि कार्य्यसिद्धिं कुर्वन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग **(यविष्ठ्यम्)** अतिशयित युवा जनों में प्रसिद्ध हुए **(ऋत्विजम्)** यज्ञसाधक और **(देवम्)** दिव्य **[गुण]** वाले के सदृश **(जातवेदसम्)** उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान **(होत्रवाहम्)** हवन की हुई वस्तुओं को धारण करने वाले **(अग्निम्)** अग्नि को **(नि, दधात)** निरन्तर धारण करो॥७॥

**भावार्थः**-जैसे शिल्पविद्या के जानने वाले जन अपने कार्य्य को सिद्ध करते हैं, वैसे ही अग्नि आदि भी कार्य की सिद्धि करते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिरासदे॥८॥**

**प्र। यज्ञः। एतु। आनुषक्। अद्य। देवव्यचःऽतमः। स्तृणीत। बर्हिः। आऽसदे॥८॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(यज्ञः)** सत्यः सङ्गतो व्यवहारः **(एतु)** प्राप्नोतु **(आनुषक्)** आनुकूल्येन **(अद्या)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(देवव्यचस्तमः)** यो देवेषु दिव्येषु पदार्थेष्वतिशयेन व्याप्तः **(स्तृणीत)** आच्छादयत **(बर्हिः)** अन्तरिक्षम् **(आसदे)** समन्तात् स्थित्यर्थं गमनार्थं वा॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो देवव्यचस्तमो यज्ञोऽद्याऽऽसदे बर्हिरानुषगेतु तं यूयं प्र स्तृणीत॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्सङ्गतिं कृत्वा शिल्पोन्नतिं विदधति ते सर्वहितैषिणो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(देवव्यचस्तमः)** उत्तम पदार्थों में अतिशय करके व्याप्त **(यज्ञः)** सत्य और संगत व्यवहार **(अद्या)** आज **(आसदे)** सब प्रकार से ठहरने वा जाने के अर्थ **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष को **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(एतु)** प्राप्त हो, उसको आप लोग **(प्र, स्तृणीत)** अच्छे प्रकार आच्छादित करो अर्थात् सुरक्षित रक्खो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य श्रेष्ठों की संगति करके शिल्पविद्या की उन्नति करते हैं, वे सबके हितैषी होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा॥९॥२०॥**

**आ। इदम्। मरुतः। अश्विना। मित्रः। सीदन्तु। वरुणः। देवासः। सर्वया। विशा॥९॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(इदम्)** आसनम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(मित्रः)** सखा **(सीदन्तु)** आसताम् **(वरुणः)** सर्वोत्तमः **(देवासः)** विद्वांसः **(सर्वया)** **(विशा)** प्रजया॥९॥

**अन्वयः**-मरुतो मित्रो वरुणोऽश्विना देवासः सर्वया विशेदमा सीदन्तु॥९॥

**भावार्थः**-राजा सभ्या जनाश्च न्यायासनमधिष्ठायान्यायं पक्षपातं विहाय न्यायं कृत्वा प्रजानां प्रिया भवन्त्विति॥९॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षड्विंशतितमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-(**मरुतः**) मनुष्य (**मित्रः**) मित्र (**वरुण**) सब में उत्तम (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक तथा (**देवासः**) विद्वान् जन (**सर्वया**) सम्पूर्ण (**विशा**) प्रजा से (**इदम्**) इस आसन पर (**आ, सीदन्तु**) विराजें॥९॥

**भावार्थः**-राजा और श्रेष्ठ जन न्यायासन पर विराज के अन्याय और पक्षपात का त्याग और न्याय करके प्रजाओं के प्रिय होवें॥९॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छब्बीसवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ षड्चस्य सप्तविंशतितमस्य सूक्तस्य त्र्यरुणस्त्रैवृष्णस्त्रसदस्युश्च पौरुकुत्स्य अश्वमेधश्च भारतोऽत्रिर्वा ऋषयः। १-५ अग्निः। ६ इन्द्राग्नी देवते। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५, ६ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथाग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥***

अब छः ऋचा वाले सत्ताईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निसादृश्य से विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः।**

**त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत॥ १॥**

**अनस्वन्ता। सत्ऽपतिः। ममहे। मे। गावा। चेतिष्ठः। असुरः। मघोनः। त्रैवृष्णः। अग्ने। दशऽभिः। सहस्रैः। वैश्वानर। त्रिऽअरुणः। चिकेत॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अनस्वन्ता**) उत्तमशकटादियुक्तः (**सत्पतिः**) सतां पालकः (**मामहे**) सत्कुर्याम् (**मे**) (**गावा**) (**चेतिष्ठः**) अतिशयेन चेतिता ज्ञापकः (**असुरः**) असुषु प्राणेषु रममाणः (**मघोनः**) परमधनयुक्तान् (**त्रैवृष्णः**) यस्त्रिषु वर्षति स एव (**अग्ने**) (**दशभिः**) (**सहस्रैः**) (**वैश्वानर**) विश्वेषु राजमान (**त्र्यरुणः**) त्रयोऽरुणा गुणा यस्य सः (**चिकेत**) जानीयात्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने! सत्पतिर्दशभिः सहस्रैरनस्वन्ता गावा सह चेतिष्ठोऽसुरस्त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः संस्त्वं मे मघोनश्चिकेत तमहं मामहे॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शकटादियानचालनकुशला अनेकैः सहस्रैः पुरुषैः सह सन्धिं कुर्वन्ति ते धनधान्यपशुयुक्ता जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वैश्वानर**) सब में प्रकाशमान (**अग्ने**) अग्नि के सदृश! (**सत्पतिः**) श्रेष्ठ जनों के पालने वाले (**दशभिः**) दश (**सहस्रैः**) सहस्रों के साथ (**अनस्वन्ता**) उत्तम शकट आदि वाहनों से युक्त (**गावा**) गौ अर्थात् वाणी के साथ (**चेतिष्ठः**) अत्यन्तता से बोध देने वाले (**असुरः**) प्राणों में रमते हुए (**त्रैवृष्णः**) जो तीन में वर्षते वही (**त्र्यरुणः**) तीन गुणों से युक्त हुए आप (**मे**) मेरे (**मघोनः**) अत्यन्त धनयुक्त पुरुषों को (**चिकेत**) जानें, उनका मैं (**मामहे**) सत्कार करूं॥ १॥

**भावार्थः**-जो पुरुष शकट आदि वाहनों के चलाने में चतुर और अनेक सहस्रों पुरुषों के साथ मेल करते हैं, वे धन-धान्य और पशुओं से युक्त होते हैं॥ १॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**यो मे॑ श॒ता च॑ विंश॒तिं च॒ गोनां॒ हरी॑ च यु॒क्ता सु॒धुरा॒ ददा॑ति।**

**वैश्वा॑नर॒ सुष्टु॑तो वावृधा॒नोऽग्ने॒ यच्छ॒ त्र्य॑रुणाय॒ शर्म॑॥ २॥**

यः। मे॒। श॒ता। च॒। विं॒श॒तिम्। च॒। गोना॑म्। हरी॒ इति॑। च॒। यु॒क्ता। सु॒ऽधु॒रा॑। ददा॑ति। वैश्वा॑नर। सु॒ऽस्तु॒तः। व॒वृ॒धा॒नः। अग्ने॑। यच्छ॑। त्रिऽअ॑रुणाय। शर्म॑॥ २॥

**पदार्थः**-(**यः**) (**मे**) (**शता**) शतानि (**च**) (**विंशतिम्**) (**च**) (**गोनाम्**) (**हरी**) हरणशीलावश्वौ (**च**) (**युक्ता**) युक्तौ (**सुधुरा**) शोभना धूर्ययोस्तौ (**ददाति**) (**वैश्वानर**) विश्वस्मिन् राजमान (**सुष्टुतः**) शोभनप्रशंसित: (**वावृधानः**) अत्यन्तं वर्धमान: (**अग्ने**) विद्वन् (**यच्छ**) देहि (**त्र्यरुणाय**) (**शर्म्म**) गृहं सुखं वा॥ २॥

**अन्वयः**-हे वैश्वनराऽग्ने! यस्सुष्टुतो वावृधानो मे गोनां शता च विंशतिं **[च]** युक्ता सुधुरा हरी च ददाति तस्मै त्र्यरुणाय त्वं शर्म्म यच्छ॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये गवाश्वहस्त्यादीनां पशूनां पालका: स्युस्तेभ्यो यथायोग्यां भृतिं प्रयच्छन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वैश्वानर**) सब में प्रकाशमान (**अग्ने**) विद्वन् (**यः**) जो (**सुष्टुतः**) उत्तम प्रकार प्रशंसा किया गया (**वावृधानः**) अत्यन्त बढ़ता अर्थात् वृद्धि को प्राप्त होता हुआ (**मे**) मेरे (**गोनाम्**) गौओं के (**शता**) सैकड़ौं (**च**) और (**विंशतिम्**) बीसों संख्या वाले समूह को (**च**) और (**युक्ता**) युक्त (**सुधुरा**) उत्तम धुरा जिनमें उन (**हरी**) ले चलने वाले घोड़ों को (**च**) भी (**ददाति**) देता है उस (**त्र्यरुणाय**) तीन गुणों वाले पुरुष के लिये आप (**शर्म्म**) गृह वा सुख को (**यच्छ**) दीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो गौ, घोड़ा और हस्ति आदि पशुओं के पालन करने वाले होवें, उनके लिये यथायोग्य मासिक [वृत्ति] दीजिये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ए॒वा ते॑ अग्ने सु॒म॒तिं च॑का॒नो नवि॑ष्ठाय नव॒मं त्र॒सद॑स्युः।**

**यो मे॒ गिर॑स्तुवि॒जा॒तस्य॑ पू॒र्वीर्यु॒क्तेना॒भि त्र्य॑रुणो गृणाति॑॥ ३॥**

ए॒व। ते॒। अ॒ग्ने॒। सु॒ऽम॒तिम्। च॒का॒नः। नवि॑ष्ठाय। न॒व॒मम्। त्र॒सद॑स्युः। यः। मे॒। गिरः॑। तु॒वि॒ऽजा॒तस्य॑। पू॒र्वीः। यु॒क्तेन॑। अ॒भि। त्रिऽअ॑रुणः। गृ॒णाति॑॥ ३॥

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घ:। (**ते**) तव (**अग्ने**) (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**चकानः**) कामयमान: (**नविष्ठाय**) अतिशयेन नवीनाय (**नवमम्**) नवानां पूरणम् (**त्रसदस्युः**) त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात्स: (**यः**) (**मे**)) मम (**गिरः**) (**तुविजातस्य**) (**पूर्वीः**) सनातनी: (**युक्तेन**) कृतयोगाभ्यासेन मनसा (**अभि**) (**त्र्यरुणः**) त्रीणि मन:शरीरात्मसुखान्यृच्छति (**गृणाति**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्ते सुमतिं तुविजातस्य मे गिरश्चकानो नविष्ठाय नवमं चकानस्त्रसदस्युर्युक्तेन त्र्यरुणः सन् पूर्वीगिरोऽभि गृणाति तमेवा त्वमहं च सततं सत्कुर्य्याव॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमहं च य आवयोः सकाशाद् गुणान् ग्रहीतुमिच्छति तमावां विद्यां ग्राहयेव॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान्! **(यः)** जो **(ते)** आपकी **(सुमतिम्)** सुन्दर बुद्धि को और **(तुविजातस्य)** बहुतों में प्रकट हुए **(मे)** मेरी **(गिरः)** वाणियों की **(चकानः)** कामना करता तथा **(नविष्ठाय)** अतिशय नवीन जन के लिये **(नवमम्)** नव के पूर्ण करने वाले की कामना करता हुआ **(त्रसदस्युः)** त्रसदस्यु अर्थात् जिससे चोर डरते ऐसा **(युक्तेन)** किया योगाभ्यास जिससे ऐसे मन से **(त्र्यरुणः)** तीन मन, शरीर और आत्मा के सुखों को प्राप्त होता हुआ जन **(पूर्वीः)** अनादि काल से सिद्ध वाणियों को **(अभि, गृणाति)** सब ओर से कहता है **(एवा)** उसी का आप और हम निरन्तर सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप और मैं जो हमारे समीप से गुणों के ग्रहण करने की इच्छा करता है, उसको हम दोनों विद्याग्रहण करावें॥३॥

**अथोपदेशविषयमाह॥**

अब उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये। ददृचा सनिं यते ददन्मेधामृतायते॥४॥

**यः। मे। इति। प्रऽवोचति। अश्वऽमेधाय। सूरये। ददत्। ऋचा। सनिम्। यते। ददत्। मेधाम्। ऋतऽयते॥४॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(मे)** मह्यम् **(इति)** अनेन प्रकारेण **(प्रवोचति)** उपदिशति **(अश्वमेधाय)** आशुपवित्राय **(सूरये)** विदुषे **(ददत्)** दद्यात् **(ऋचा)** ऋग्वेदादिना **(सनिम्)** सेवनीयां सत्याऽसत्ययो-र्विभाजिकां वाणीम् **(यते)** यत्नशीलाय **(ददत्)** दद्यात् **(मेधाम्)** प्रज्ञाम् **(ऋतायते)** ऋतं कामयमानाय॥४॥

**अन्वयः**-योऽश्वमेधाय सूरये म ऋचा सनिं दददृतायते यते मे मेधां ददत् तस्य सत्कारं त्वं कुर्विति मां प्रति यः प्रवोचति तस्योपकारमहं मन्ये॥४॥

**भावार्थः**-उपदेशका यद्वाऽन्यान् प्रत्युपदिशेयुस्तदैव वेदशास्त्रेषूक्तमाप्तैराचरितमिदं वयं युष्मभ्यमुपदिशामेति प्रत्युपदेशं ब्रूयुः॥४॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अश्वमेधाय)** शीघ्र पवित्र **(सूरये)** विद्वान् **(मे)** मेरे लिये **(ऋचा)** ऋग्वेदादि से **(सनिम्)** सेवन करने योग्य तथा सत्य और असत्य की विभाग करने वाली वाणी को **(ददत्)** देवे और **(ऋतायते)** सत्य की कामना करते हुए **(यते)** यत्न करने वाले मेरे लिये **(मेधाम्)** बुद्धि को **(ददत्)** देवे, उसका सत्कार आप करो **(इति)** इस प्रकार से मेरे प्रति जो **(प्रवोचति)** उपदेश देता है, उसका उपकार मैं मानता हूं॥४॥

**भावार्थ:**-उपदेशक जन जब अन्य जनों के प्रति उपदेश देवें, तब इस प्रकार वेद और शास्त्रों में कहे और यथार्थवक्ताओं से आचरण किये गये इस विषय का हम आप लोगों के लिये उपदेश देवें, इस प्रकार प्रत्युपदेश कहें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्या॑ मा प॒रुषा॑: श॒तमु॑द्धर्षय॑न्त्यु॒क्षण॑:। अश्व॑मेधस्य॒ दाना॒: सोमा॑इव॒ त्र्या॑शिर:॥५॥**

**यस्या॑। मा॒। प॒रुषा॑:। श॒तम्। उ॒त्ऽह॒र्षय॑न्ति। उ॒क्षण॑:। अश्व॑ऽमेधस्य। दाना॑:। सोमा॑:ऽइव। त्रिऽआ॑शिर:॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यस्य)** **(मा)** माम् **(परुषा:)** कठोरा: **(शतम्)** असङ्ख्या: **(उद्धर्षयन्ति)** उत्साहयन्ति **(उक्षण:)** मधुरैरुपदेशै: सेचमाना: **(अश्वमेधस्य)** चक्रवर्तिराज्यपालनस्य विद्याया: **(दाना:)** ददाना: **(सोमाइव)** सोमलतादय इव **(त्र्याशिर:)** यास्त्रिभिर्जीवाग्निवायुभिरश्यन्ते भुज्यन्ते ता:॥५॥

**अन्वय:**-यस्याश्वमेधस्य शतं परुषा उक्षण: सोमाइव दानास्त्र्याशिरो मा मामुद्धर्षयन्ति ता वाचो मया सोढव्या:॥५॥

**भावार्थ:**-ये विद्यामिच्छेयुस्ते सर्वेषां मर्मच्छिदो वाच: सहन्ताम्। चन्द्रवच्छान्ता भूत्वा विद्याविनयौ गृह्णन्तु॥५॥

**पदार्थ:**-**(यस्य)** जिस **(अश्वमेधस्य)** चक्रवर्त्तिराज्यपालन की विद्या की **(शतम्)** असङ्ख्य **(परुषा:)** कठोर **(उक्षण:)** मधुर उपदेशों से सींचती और **(सोमाइव)** सोमलतादिकों के सदृश **(दाना:)** देती हुई **(त्र्याशिर:)** जीव, अग्नि और पवनों से भोगी गईं **(मा)** मुझ को **(उद्धर्षयन्ति)** उत्साहित करती हैं, वे वाणियाँ मुझ से सहने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थ:**-जो विद्या की इच्छा करें, वे सबकी मर्म्म भेदने वाली वाणियों को सहें और चन्द्रमा के सदृश शान्त होके विद्या और विनय को ग्रहण करें॥५॥

**अथोपदेशविषये राज्योपदेशविषयमाह॥**

अब उपदेशविषय में राज्योपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी श॒तदा॒व्न्यश्व॑मेधे सु॒वीर्य॑म्।**

**क्ष॒त्रं धा॑रयतं बृ॒हद्दि॒वि सूर्य॑मिवा॒जर॑म्॥६॥२१॥**

**इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। श॒त॒ऽदा॒व्नि। अश्व॑ऽमेधे। सु॒ऽवीर्य॑म्। क्ष॒त्रम्। धा॒र॒य॒त॒म्। बृ॒ह॒त्। दि॒वि। सूर्य॑म्ऽइव। अ॒जर॑म्॥६॥**

**पदार्थ:**-**(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युताविवाध्यापकोपदेशकौ **(शतदाव्नि)** असङ्ख्यदाने **(अश्वमेधे)** राज्यपालनाख्ये व्यवहारे **(सुवीर्य्यम्)** सुष्ठु वीर्य्यं पराक्रमो बलं च यस्मिंस्तत् **(क्षत्रम्)** क्षत्रियकुलं राष्ट्रं वा **(धारयतम्)** **(बृहत्)** महत् **(दिवि)** प्रकाशयुक्तेऽन्तरिक्षे **(सूर्य्यमिव)** **(अजरम्)** नाशरहितम्॥६॥

**अन्वय:**-हे इन्द्राग्नी इव वर्त्तमानावध्यापकौपदेशकौ! शतदाव्न्यश्वमेधे दिवि सूर्य्यमिव सुवीर्य्यमजरं

बृहत् क्षत्रं धारयतं यथावदुपदिशेतम्॥६॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जनाः! प्रयत्नेन भवन्त आप्तानध्यापकोपदेशकान् बहून् स्वपरराज्ये प्रचारयन्तु यतो युष्माकं राज्यमक्षयं भवेदिति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तविंशतितमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! **(शतदाव्नि)** असङ्ख्य पदार्थों को देने वाले **(अश्वमेधे)** राज्यपालन व्यवहार और **(दिवि)** प्रकाशयुक्त अन्तरिक्ष में **(सूर्य्यमिव)** सूर्य्य के सदृश **(सुवीर्य्यम्)** उत्तम पराक्रम तथा बलयुक्त और **(अजरम्)** नाश से रहित **(बृहत्)** बड़े **(क्षत्रम्)** क्षत्रियों के कुल वा राज्यदेश को **(धारयतम्)** धारण करो अर्थात् यथायोग्य उपदेश दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि जनो! प्रयत्न से आप लोग यथार्थवक्ता, बहुत अध्यापक और उपदेशकों को अपने और दूसरे के राज्य में प्रचार कराइये जिससे आप लोगों का राज्य नाशरहित होवे॥६॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और राजा के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्ताईसवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्याष्टविंशतितमस्य सूक्तस्य विश्ववारात्रेयी ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप्। २ स्वराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५, ६ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*अथाग्निगुणानाह॥*

अब छः ऋचा वाले अट्ठाईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के गुणों को कहते हैं॥

**समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत् प्रत्यङ्ङुषसमुर्विया वि भाति।**
**एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची॥१॥**

**सम्ऽइद्धः। अग्निः। दिवि। शोचिः। अश्रेत्। प्रत्यङ्। उषसम्। उर्विया। वि। भाति। एति। प्राची। विश्वऽवारा। नमःऽभिः। देवान्। ईळाना। हविषा। घृताची॥१॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धः**) प्रदीप्तः (**अग्निः**) पावकः (**दिवि**) प्रकाशे (**शोचिः**) विद्युद्रूपां दीप्तिम् (**अश्रेत्**) श्रयति (**प्रत्यङ्**) प्रत्यञ्चतीति (**उषसम्**) प्रभातम् (**उर्विया**) बहुरूपया दीप्त्या (**वि**) (**भाति**) (**एति**) प्राप्नोति (**प्राची**) पूर्वा दिक् (**विश्ववारा**) या विश्वं वृणोति सा (**नमोभिः**) अन्नादिभिस्सह (**देवान्**) दिव्यगुणान् (**ईळाना**) प्रशंसन्ती (**हविषा**) दानेन (**घृताची**) रात्रिः। **घृताचीति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१. ७)॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्समिद्धोऽग्निर्दिवि शोचिरश्रेदुर्वियोषसं प्रत्यङ् वि भाति विश्ववारा देवानीळाना घृताची प्राची च हविषा नमोभिश्चैति तं तां च यूयं विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽयं सूर्य्यो दृश्यते सोऽनेकैस्तत्त्वैरीश्वरेण निर्मितो विद्युतमाश्रितोऽस्ति यस्य प्रभावेन प्राच्यादयो दिशो विभज्यन्ते रात्रयश्च जायन्ते तमग्निरूपं विज्ञाय सर्वकृत्यं साध्नुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**समिद्धः**) प्रज्वलित किया गया (**अग्निः**) अग्नि (**दिवि**) प्रकाश में (**शोचिः**) बिजुलीरूप प्रकाश का (**अश्रेत्**) आश्रय करता है और (**उर्विया**) अनेक रूप वाले प्रकाश से (**उषसम्**) प्रभातकाल के (**प्रत्यङ्**) प्रति चलने वाला (**वि, भाति**) विशेष करके शोभित होता है और (**विश्ववारा**) संसार को प्रकट करने वाली (**देवान्**) श्रेष्ठ गुणों को (**ईळाना**) प्रशंसित करती हुई (**घृताची**) रात्रि और (**प्राची**) पूर्व दिशा (**हविषा**) दान और (**नमोभिः**) अन्नादि पदार्थों के साथ (**एति**) प्राप्त होती है, उस अग्नि को और उस विश्ववारा को आप लोग विशेष करके जानो॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यह सूर्य्य देख पड़ता है, वह अनेक तत्त्वों के द्वारा ईश्वर से बनाया गया और बिजुली के आश्रित है और जिसके प्रभाव से पूर्व आदि दिशायें विभक्त की जाती हैं और रात्रियां होती हैं, उस अग्निरूप सूर्य को जान के सम्पूर्ण कृत्य सिद्ध करो॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये।**

**विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमग्ने नि च धत्त इत्पुरः॥२॥**

**सम्ऽइध्यमानः। अमृतस्य। राजसि। हविः। कृण्वन्तम्। सचसे। स्वस्तये। विश्वम्। सः। धत्ते। द्रविणम्। यम्। इन्वसि। आतिथ्यम्। अग्ने। नि। च। धत्ते। इत्। पुरः॥२॥**

**पदार्थः**-(**समिध्यमानः**) सम्यग्देदीप्यमानः (**अमृतस्य**) कारणस्योदकस्य मध्ये वा (**राजसि**) प्रकाशसे (**हविः**) अत्तव्यं वस्तु (**कृण्वन्तम्**) कुर्वन्तम् (**सचसे**) समवैषि (**स्वस्तये**) सुखाय (**विश्वम्**) सर्वम् (**सः**) (**धत्ते**) धरति (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**यम्**) (**इन्वसि**) व्याप्नोति। **व्यत्ययो बहुलमि**ति लकारव्यत्ययः। (**आतिथ्यम्**) अतिथिसत्कारम् (**अग्ने**) विद्वन् (**नि**) (**च**) (**धत्ते**) (**इत्**) एव (**पुरः**) पुरस्तात्॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतस्समिध्यमानस्त्वममृतस्य मध्ये राजसि स्वस्तये हविष्कृण्वन्तं सचसे भवान् विश्वं द्रविणं धत्ते यमातिथ्यमिन्वसि पुरश्च नि धत्ते तस्मात् स इत् त्वं भूजनीयोऽसि॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमाना अतिथयस्सन्तः सर्वत्र भ्रमित्वा सर्वान् सत्यमुपदिशन्तः कीर्तिं प्रसारयत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जिससे (**समिध्यमानः**) उत्तम प्रकार निरन्तर प्रकाशमान आप (**अमृतस्य**) कारण वा जल के मध्य में (**राजसि**) प्रकाशित होते हो और (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**हविः**) खाने योग्य वस्तु को (**कृण्वन्तम्**) करते हुए का (**सचसे**) सम्बन्ध करते हो और आप (**विश्वम्**) सम्पूर्ण (**द्रविणम्**) धन वा यश का (**धत्ते**) धारण करते हो तथा (**यम्**) जिनको (**आतिथ्यम्**) अतिथि सत्कार (**इन्वसि**) व्याप्त होता है और (**पुरः**) पहिले (**च**) भी आप (**नि, धत्ते**) निरन्तर धारण करते हो इससे (**सः, इत्**) वही आप सत्कार करने योग्य हो॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग विद्या और विनय से प्रकाशमान अतिथियों की दशा को धारण किये हुए सब स्थानों में भ्रमण करके सम्पूर्ण जनों के लिये सत्य का उपदेश देते हुए यश को निरन्तर पसारिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।**

**सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि॥३॥**

**अग्ने॑। शर्ध॑। म॒हते॑। सौभ॑गाय। तव॑। द्यु॒म्नानि॑। उ॒त्ऽत॒मानि॑। स॒न्तु॒। सम्। जा॒ःऽप॒त्यम्। सु॒ऽयम॑म्। आ। कृ॒णु॒ष्व॒। श॒त्रु॒ऽय॒ताम्। अ॒भि। ति॒ष्ठ॒। महां॑सि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**शर्ध**) प्रशंसितबलयुक्त (**महते**) (**सौभगाय**) शोभनैश्वर्याय (**तव**) (**द्युम्नानि**) यशांसि धनानि वा (**उत्तमानि**) (**सन्तु**) (**सम्**) (**जास्पत्यम्**) जायायाः पतित्वम् (**सुयमम्**) शोभनो यमः सत्याचरणनिग्रहो यस्मिँस्तम् (**आ**) (**कृणुष्व**) (**शत्रूयताम्**) शत्रूणामिवाचरताम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**तिष्ठा**) (**महांसि**) महान्ति सैन्यानि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे शर्धाग्ने! तव महते सौभगायोत्तमानि द्युम्नानि सन्तु त्वं सुयमं जास्पत्यमा कृणुष्व शत्रूयतां महांसि समभितिष्ठा॥ ३॥

**भावार्थः**-हे धर्मिष्ठौ! वयं त्वदर्थं महदैश्वर्य्यमिच्छेम युवां स्त्रीपुरुषौ जितेन्द्रियौ धर्म्मात्मानौ बलिष्ठौ पुरुषार्थिनो भूत्वा सर्वां दुष्टसेनां विजयेथाम्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**शर्ध**) प्रशंसित बल से युक्त (**अग्ने**) विद्वन्! (**तव**) आपके (**महते**) बड़े (**सौभगाय**) सुन्दर ऐश्वर्य्य के लिये (**उत्तमानि**) श्रेष्ठ (**द्युम्नानि**) यश वा धन (**सन्तु**) हों और तुम (**सुयमम्**) सुन्दर सत्य आचरणों का ग्रहण जिसमें ऐसे (**जास्पत्यम्**) स्त्री के पतिपन को (**आ, कृणुष्व**) अच्छे प्रकार करिये और (**शत्रूयताम्**) शत्रु के सदृश आचरण करते हुओं की (**महांसि**) बड़ी सेनाओं के (**सम्, अभि, तिष्ठा**) सन्मुख स्थित हूजिये॥ ३॥

**भावार्थः**-हे धर्म्मिष्ठो! हम लोग आपके लिये बड़े ऐश्वर्य्य की इच्छा करें और आप दोनों स्त्री और पुरुष जितेन्द्रिय, धर्म्मात्मा, बलवान् और पुरुषार्थी होकर सम्पूर्ण दुष्टों की सेना को जीतिये॥ ३॥

**अथ विद्वद्विषये राज्यप्रकारमाह॥**

अब विद्वद्विषय में राज्यप्रकार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समि॑द्धस्य॒ प्रम॑हसोऽग्ने॒ वन्दे॒ तव॒ श्रिय॑म्।**

**वृ॒ष॒भो द्यु॒म्नवाँ॑ असि॒ सम॑ध्व॒रेष्वि॑ध्यसे॥ ४॥**

**सम्ऽइ॑द्धस्य। प्रऽम॑हसः। अग्ने॑। वन्दे॑। तव॑। श्रिय॑म्। वृ॒ष॒भः। द्यु॒म्नऽवा॑न्। अ॒सि॒। सम्। अ॒ध्व॒रेषु॑। इ॒ध्य॒से॒॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धस्य**) प्रकाशमानस्य (**प्रमहसः**) प्रकृष्टस्य महतः (**अग्ने**) राजन् (**वन्दे**) प्रशंसामि सत्करोमि वा (**तव**) (**श्रियम्**) धनम् (**वृषभः**) बलिष्ठ उत्तमो वा (**द्युम्नवान्**) यशस्वी (**असि**) (**सम्**) (**अध्वरेषु**) राज्यपालनादिषु व्यवहारेषु (**इध्यसे**) प्रदीप्यसे॥ ४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! यस्त्वं वृषभो द्युम्नवानस्यध्वरेषु समिध्यसे तस्य समिद्धस्य प्रमहसस्तव श्रियमहं वन्दे॥ ४॥

**भावार्थः**-यो राजा अग्न्यादिगुणयुक्तः सन्न्यायं यथावत्करोति स यज्ञेषु पावक इव सर्वत्र प्रकाशितकीर्त्तिर्भवति॥ ४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! जो तुम **(वृषभः)** बलिष्ठ वा उत्तम और **(द्युम्नवान्)** यशस्वी **(असि)** हो और **(अध्वरेषु)** राज्य के पालन आदि व्यवहारों में **(सम्, इध्यसे)** प्रकाशित किये जाते हो उन **(समिद्धस्य)** प्रकाशमान और **(प्रमहसः)** और प्रकृष्ट बड़े **(तव)** आपके **(श्रियम्)** धन की मैं **(वन्दे)** प्रशंसा वा सत्कार करता हूँ॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा अग्नि आदि के गुणों से युक्त हुआ अच्छे न्याय को यथावत् करता है, वह यज्ञों में अग्नि के सदृश सर्वत्र प्रकट यश वाला होता है॥४॥

**पुनरग्निदृष्टान्तेन पूर्वोक्तविषयमाह॥**

फिर अग्निदृष्टान्त से पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर। त्वं हि हव्यवाळसि॥५॥**

**सम्ऽइद्धः। अग्ने। आऽहुत। देवान्। यक्षि। सुऽअध्वर। त्वम्। हि। हव्यऽवाट्। असि॥५॥**

**पदार्थः**-**(समिद्धः)** प्रदीप्तः **(अग्ने)** पावक इव **(आहुत)** सत्कृत **(देवान्)** दिव्यान् गुणान् विदुषो वा **(यक्षि)** पूजयसि **(स्वध्वर)** सुष्ठु अहिंसायुक्त **(त्वम्)** **(हि)** यतः **(हव्यवाट्)** पृथिव्यादिवोढा **(असि)**॥५॥

**अन्वयः**-हे स्वध्वराहुताऽग्ने! यथा समिद्धो हि हव्यवाडग्निरस्ति तथा त्वं देवान् यक्षि पालकोऽसि तस्मादुत्तमोऽसि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यादिरूपेणाग्निः सर्वान् रक्षति तथैव राजा भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(स्वध्वरः)** उत्तम प्रकार अहिंसा से युक्त **(आहुत)** सत्कृत **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! जिस प्रकार से **(समिद्धः)** प्रज्वलित किया गया **(हि)** जिस कारण **(हव्यवाट्)** पृथिव्यादिकों की प्राप्ति करने वाला अग्नि है, वैसे **(त्वम्)** आप **(देवान्)** श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों का **(यक्षि)** सत्कार करते हो और पालन करने वाले **(असि)** हो, इससे श्रेष्ठ हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य आदि रूप से अग्नि सब की रक्षा करता है, वैसा ही राजा होता है॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे। वृणीध्वं हव्यवाहनम्॥६॥२२॥**

**आ। जुहोत। दुवस्यत। अग्निम्। प्रऽयति। अध्वरे। वृणीध्वम्। हव्यऽवाहनम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(जुहोता)** दत्त। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(दुवस्यत)** परिचरत **(अग्निम्)** पावकम् **(प्रयति)** प्रयत्नसाध्ये **(अध्वरे)** शिल्पादिव्यवहारे **(वृणीध्वम्)** स्वीकुरुत **(हव्यवाहनम्)** उत्तम-पदार्थप्रापकम्॥६॥

**अन्वयः**:-हे विद्वांसो! यूयं प्रयत्यध्वरे हव्यवाहनमग्निं दुवस्यत वृणीध्वमन्येभ्य आ जुहोता॥६॥

**भावार्थः**:-विद्यार्थिनो, यथा विद्वांसः शिल्पविद्यां स्वीकुर्वन्ति तथैव स्वयमपि कुर्युरिति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाविंशतितमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**:-हे विद्वानो! आप लोग **(प्रयति)** प्रयत्न से साध्य **(अध्वरे)** शिल्पादि व्यवहार में **(हव्यवाहनम्)** उत्तम पदार्थों को प्राप्त कराने वाले **(अग्निम्)** अग्नि का **(दुवस्यत)** परिचरण करो अर्थात् युक्ति से उसको कार्य्य में लगाओ और **(वृणीध्वम्)** स्वीकार करो तथा अन्य जनों के लिये **(आ, जुहोता)** आदान करो अर्थात ग्रहण करो॥६॥

**भावार्थः**:-विद्यार्थिजन, जैसे विद्वान् जन शिल्पविद्या को स्वीकार करते हैं, वैसे ही स्वयं भी स्वीकार करें॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठाईसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकोनत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य १-१५ गौरिवीतिः शाक्त्य ऋषिः। १-८, ९[२]-, १५ इन्द्रः। ९[१]- इन्द्र उशना वा देवता। १ भुरिक् पङ्क्तिः। ८ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, ७ त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, ९, १०, ११ निचृत् त्रिष्टुप्। १२, १३, १४, १५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले उनतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त।**

**अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षास्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः॥१॥**

त्री। अर्यमा। मनुषः। देवऽताता। त्री। रोचना। दिव्या। धारयन्त। अर्चन्ति। त्वा। मरुतः। पूतऽदक्षाः। त्वम्। एषाम्। ऋषिः। इन्द्र। असि। धीरः॥ १॥

**पदार्थः**-(**त्री**) त्रीणि (**अर्यमा**) व्यवस्थापकः (**मनुषः**) मनुष्याः (**देवताता**) विद्वत्कर्त्तव्ये व्यवहारे (**त्री**) त्रीणि (**रोचना**) प्रकाशकानि (**दिव्या**) दिव्यानि (**धारयन्त**) (**अर्चन्ति**) सत्कुर्वन्ति (**त्वा**) त्वाम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**पूतदक्षाः**) पवित्रबलाः (**त्वम्**) (**एषाम्**) (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययोजक (**असि**) (**धीरः**)॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! ये मनुषो देवताता दिव्या त्री रोचना धारयन्ताऽर्यमा त्री सुखानि धरति ये पूतदक्षा मरुतस्त्वार्चन्त्येषां त्वमृषिर्धीरोऽसि॥१॥

**भावार्थः**-ये त्रीणि कर्मोपासनाज्ञानानि धृत्वा पवित्रा जायन्ते त एव बलवतो भूत्वा सत्कृता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त करने वाले राजन्! जो (**मनुषः**) मनुष्य (**देवताता**) विद्वानों से करने योग्य व्यवहार में (**दिव्या**) श्रेष्ठ (**त्री**) तीन (**रोचना**) प्रकाशकों को (**धारयन्त**) धारण करते हैं (**अर्यमा**) व्यवस्थापक अर्थात् किसी कार्य्य को रीति से संयुक्त करने वाला (**त्री**) तीन सुखों को धारण करता है और जो (**पूतदक्षाः**) पवित्र बल से संयुक्त करने वाला (**त्री**) तीन सुखों को धारण करता है और जो (**पूतदक्षाः**) पवित्र बल वाले (**मरुतः**) मनुष्य (**त्वा**) आपका (**अर्चन्ति**) सत्कार करते हैं (**एषाम्**) इनके (**त्वम्**) आप (**ऋषिः**) मन्त्र और अर्थों के जानने वाले (**धीरः**) धीर (**असि**) हो॥१॥

**भावार्थः**-जो तीन कर्म्म, उपासना और ज्ञान को धारण करके पवित्र होते हैं, वे ही बलवान् होकर सत्कृत होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनु यदीं मरुतो मन्दसानमार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य।**
**आदत्त वज्रमभि यदहिं हन्नपो यह्वीरसृजत्सर्तवा उ॥ २॥**

अनु। यत्। ईम्। मरुतः। मन्दसानम्। आर्चन्। इन्द्रम्। पपिऽवांसम्। सुतस्य। आ। अदत्त। वज्रम्। अभि। यत्। अहिम्। हन्। अपः। यह्वीः। असृजत्। सर्तवै। ऊम् इति॥ २॥

**पदार्थः**-(**अनु**) (**यत्**) यम् (**ईम्**) सर्वतः (**मरुतः**) मनुष्याः (**मन्दसानम्**) स्तूयमानम् (**आर्चन्**) सत्कुर्युः (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवन्तम् (**पपिवांसम्**) रक्षकम् (**सुतस्य**) प्राप्तस्य राज्यस्य (**आ**) (**अदत्त**) ददाति (**वज्रम्**) (**अभि**) आभिमुख्ये (**यत्**) यम् (**अहिम्**) मेघम् (**हन्**) हन्ति (**अपः**) जलानि (**यह्वीः**) महतीर्नदीः (**असृजत्**) सृजति (**सर्त्तवै**) सर्त्तुं गन्तुम् (**उ**) वितर्के॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यन्मरुतो मन्दसानं सुतस्य पपिवांसं यदिन्द्रं त्वामार्चस्तान् भवान् सोऽन्वादत्त यथा सूर्यो वज्रमभि हत्वाहिं हन्त्सर्त्तवै यह्वीरपोऽसृजत् तथेमु त्वं न्यायं कुर्य्याः॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या राजानं सत्कुर्वन्ति तान् राजापि सत्कुर्याद् यथेन्द्रो मेघं हत्वा जलं प्रवाह्य सर्वं जगद्रक्षति तथा राजा दुष्टान् हत्वा श्रेष्ठान् रक्षेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यत्**) जो (**मरुतः**) मनुष्य (**मन्दसानम्**) स्तुति किये गये (**सुतस्य**) प्राप्त राज्य की (**पपिवांसम्**) रक्षा करने वाले (**यत्**) जिन (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त आपका (**आर्चन्**) सत्कार करें, उनका वह आप (**अनु, आ, अदत्त**) अनुकूलता से ग्रहण करते हैं और जैसे सूर्य (**वज्रम्**) वज्ररूप किरण का (**अभि**) सम्मुख ताड़न करके (**अहिम्**) मेघ का (**हन्**) नाश करता है तथा (**सर्त्तवै**) जाने के लिये (**यह्वीः**) बड़ी नदियों को और (**अपः**) जलों को (**असृजत्**) उत्पन्न करता है, वैसे (**ईम्**) सब ओर से (**उ**) तर्क-वितर्क पूर्वक तुम न्याय करो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य राजा का सत्कार करते हैं, उनका राजा भी सत्कार करे और जैसे सूर्य मेघ का नाश कर और जल का प्रवाह करके सर्व जगत् की रक्षा करता है, वैसे राजा दुष्टों का नाश करके श्रेष्ठ की रक्षा करे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः।**
**तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्ददहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य॥ ३॥**

उत। ब्रह्माणः। मरुतः। मे। अस्य। इन्द्रः। सोमस्य। सुऽसुतस्य। पेयाः। तत्। हि। हव्यम्। मनुषे। गाः। अविन्दत्। अहन्। अहिम्। पपिऽवान्। इन्द्रः। अस्य॥ ३॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**ब्रह्माणः**) चतुर्वेदविदः (**मरुतः**) मनुष्याः (**मे**) मम (**अस्य**) (**इन्द्रः**) राजमानः (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्यकारकस्य (**सुषुतस्य**) सुष्ठुतया साधुकृतस्य (**पेयाः**) पिबेः (**तत्**) (**हि**) किल (**हव्यम्**) अत्तुमर्हम् (**मनुषे**) जनाय (**गाः**) (**अविन्दत्**) लभेत (**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) मेघम् (**पपिवान्**) पानकरः सूर्यः (**इन्द्रः**) सूर्यः (**अस्य**) राष्ट्रस्य॥३॥

**अन्वयः**-यथेन्द्रः सूर्यो रसं पिबति तथा हे राजन् इन्द्रस्त्वं मेऽस्य च तद्धि सुषुतस्य हव्यं पेया येन मनुषे भवान् गा अविन्दद् यथा पपिवानहिमहँस्तथा भवानस्य राज्यस्य पालनं कुर्य्यादुत ब्रह्माणो मरुतो यूयमप्याचरत॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वान् वेदानधीत्याऽभक्ष्याऽपेयं वर्जयित्वा न्यायाधीशवन्न्यायं सूर्य्यवत्सत्यासत्यप्रकाशं कुर्वन्ति ते महाशया भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जिस प्रकार (**इन्द्रः**) सूर्य्य रस को पीता है, वैसे हे राजन् (**इन्द्रः**) प्रकाशमान! आप (**मे**) मेरे (**अस्य**) और इसके भी (**तत्, हि**) उसी (**सुषुतस्य**) अच्छे प्रकार श्रेष्ठ बनाये (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्यकारक पदार्थ के (**हव्यम्**) खाने योग्य भाग को (**पेया**) पीजिये जिससे (**मनुषे**) मनुष्यमात्र के लिये आप (**गाः**) गौ वा उत्तम वाणियों को (**अविन्दत्**) प्राप्त हों और जैसे (**पपिवान्**) भूमिस्थजलादि को पान करने वाला सूर्य्य (**अहिम्**) मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे आप (**अस्य**) इस राज्य के पालन को करिये (**उत**) इसी प्रकार हे (**ब्रह्माणः**) चार वेदों के जानने वाले (**मरुतः**) मनुष्यो! तुम लोग भी आचरण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब वेदों को पढ़कर नहीं खाने और नहीं पीने योग्य वस्तु का वर्ज्जन करके न्यायाधीश के सदृश न्याय और सूर्य्य के सदृश सत्य और असत्य का प्रकाश करते हैं, वे महाशय होते हैं॥३॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### आद्रोदसी वितरं वि ष्कभायत् संविव्यानश्चिद्भियसे मृगं कः।
### जिगर्तिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन्॥४॥

**आत्। रोदसी इति। विऽतरम्। वि। स्कभायत्। सम्ऽविव्यानः। चित्। भियसे। मृगम्। कः। जिगर्तिम्। इन्द्रः। अपऽजर्गुराणः। प्रति। श्वसन्तम्। अव। दानवम्। हन्॥४॥**

**पदार्थः**-(**आत्**) आनन्तर्ये (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**वितरम्**) विशेषेण प्लवनम् (**वि**) (**स्कभायत्**) विशेषेण स्कभ्नाति (**संविव्यानः**) सम्यग्व्याप्नुवन् (**चित्**) अपि (**भियसे**) भयाय (**मृगम्**) (**कः**) करोति (**जिगर्त्तिम्**) प्रशंसां निगलनं वा (**इन्द्रः**) सूर्य्यः (**अपजर्गुराणः**) आच्छादनात् पृथक्कुर्वन् (**प्रति**) (**श्वसन्तम्**) प्राणन्तम् (**अव**) (**दानवम्**) दुष्टप्रकृतिम् (**हन्**) हन्यात्॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रः सूर्य्यो रोदसी वितरं वि ष्कभायदात्संविव्यानः सन् भियसे चिन्मृगं को

जिगर्त्तिमपजर्गुराणस्स दानवमव हन् तथा प्रतिश्वसन्तं प्राणिनं सततं प्रतिपालय॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजानः सूर्य्यवद्राज्यं धरन्ति ते सिंहो मृगमिव दुष्टानुद्वेजयन्ति तथैव वर्त्तित्वा यशः प्रथयेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(वितरम्)** विशेष उलांघना जैसे हो, वैसे **(वि, स्कभायत्)** विशेष करके आकर्षित करता है **(आत्)** और **(संविव्यानः)** उत्तम प्रकार व्याप्त होता हुआ **(भियसे)** भय के लिये **(चित्)** भी **(मृगम्)** हरिण को **(कः)** करता तथा **(जिगर्त्तिम्)** प्रशंसा वा निगलने को **(अपजर्गुराणः)** आच्छादन से अलग करता हुआ **[वह]** **(दानवम्)** दुष्टप्रकृति मनुष्य को **(अव, हन्)** हनन करे, वैसे **(प्रति, श्वसन्तम्)** श्वास लेते हुए प्राणी का निरन्तर प्रतिपालन करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य्य के सदृश राज्य को धारण करते हैं, जैसे सिंह मृग को व्याकुल करता है, वैसे दुष्टों को व्याकुल करते हैं, वैसा ही बर्त्ताव करके यश को प्रकट करें॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अध क्रत्वा मघवन् तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम्।**
**यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः॥५॥२३॥**

**अध। क्रत्वा। मघऽवन्। तुभ्यम्। देवाः। अनु। विश्वे। अददुः। सोमऽपेयम्। यत्। सूर्यस्य। हरितः। पतन्तीः। पुरः। सतीः। उपराः। एतशे। करिति कः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(तुभ्यम्)** **(देवाः)** विद्वांसः **(अनु)** **(विश्वे)** सर्वे **(अददुः)** ददति **(सोमपेयम्)** सोमस्य पातव्यं रसम् **(यत्)** यः **(सूर्य्यस्य)** **(हरितः)** हरितवर्णाः किरणाः **(पतन्तीः)** गच्छन्तीः **(पुरः)** पालिकाः पुरस्ताद्वा **(सतीः)** विद्यमानाः **(उपराः)** समीपे रममाणाः **(एतशे)** अश्वेऽश्विक इव **(कः)** करोति॥५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! यत्सूर्यस्य पतन्तीः पुरः सतीरुपरा हरित एतशे कस्तस्य विद्यया तुभ्यं ये विश्वे देवाः सोमपेयमन्वददुस्तेऽध क्रत्वा विज्ञानिनो भवन्ति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सूर्य्यमण्डलेऽनेकेषां तत्त्वानां विद्यमानत्वादेनकानि रूपाणि दृश्यन्त इति विज्ञेयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त! **(यत्)** जो **(सूर्यस्य)** सूर्य्य के **(पतन्तीः)** चलती हुई **(पुरः)** पालने वाली वा आगे से **(सतीः)** विद्यमान **(उपराः)** समीप में रमती हुई **(हरितः)** हरिद्वर्ण किरणों को **(एतशे)** घोड़े पर घोड़े के चढ़ने वाले के सदृश **(कः)** करता है, उसकी विद्या से **(तुभ्यम्)**

आपके लिये जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवा:)** विद्वान् जन **(सोमपेयम्)** सोम ओषधि के पान करने योग्य रस को **(अनु, अददु:)** अनुकूल देते हैं, वे **(अध)** इसके अनन्तर **(क्रत्वा)** बुद्धि से विशेष ज्ञानी होते हैं॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! सूर्य्यमण्डल में अनेक तत्त्वों के विद्यमान होने से अनेक रूप देख पड़ते हैं, यह जानना चाहिये॥५॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नव यदस्य नवतिं च भोगान्त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत्।**

**अर्चन्तीन्द्रं मरुत: सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम्॥६॥**

**नव। यत्। अस्य। नवतिम्। च। भोगान्। साकम्। वज्रेण। मघऽवा। विऽवृश्चत्। अर्चन्ति। इन्द्रम्। मरुत:। सधऽस्थे। त्रैस्तुभेन। वचसा। बाधत। द्याम्॥६॥**

**पदार्थ:**-**(नव)** **(यत्)** यान् **(अस्य)** सूर्य्यस्य **(नवतिम्)** **(च)** **(भोगान्)** **(साकम्)** **(वज्रेण)** **(मघवा)** बहुधनयुक्त: **(विवृश्चत्)** छिनत्ति **(अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तम् **(मरुत:)** मनुष्या: **(सधस्थे)** सहस्थाने **(त्रैष्टुभेन)** त्रिधा स्तुतेन **(वचसा)** **(बाधत)** **(द्याम्)** कामनाम्॥६॥

**अन्वय:**-हे राजन्! मघवा त्वं यथा सूर्य्यो वज्रेण साकमस्य जगतो मध्ये यद्यान् नव नवतिं भोगाञ्जनयत्यन्धकारादिकं विवृश्चद्यथा मरुत: सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसेन्द्रमर्चन्ति द्यां च बाधत तथैव दु:खदारिद्र्यं विनाशय॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे राजँस्त्वं कामासक्तिं विहाय न्यायेन सर्वान् सत्कृत्याऽसङ्ख्यान् भोगान् प्रजाभ्यो धेहि॥६॥

**पदार्थ:**-हे राजन् **(मघवा)** बहुत धन से युक्त आप जैसे सूर्य्य **(वज्रेण)** वज्र के **(साकम्)** साथ **(अस्य)** इस सूर्य्य और जगत् के मध्य में **(यत्)** जिन **(नव)** नव और **(नवतिम्)** नब्बे **(भोगान्)** भोगों को उत्पन्न करता और अन्धकार आदि का **(विवृश्चत्)** नाश करता है तथा जैसे **(मरुत:)** मनुष्य **(सधस्थे)** समान स्थान में **(त्रैष्टुभेन)** तीन प्रकार स्तुति किये गये **(वचसा)** वचन से **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले का **(अर्चन्ति)** सत्कार करते हैं, और **(द्याम्)** कामना की **(च)** भी **(बाधत)** बाधा करते हैं, वैसे ही दु:ख और द्रारिद्र्य का नाश करो॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप काम की आसक्ति का त्याग करके और न्याय से सबका सत्कार करके असङ्ख्य भोगों को प्रजाओं के लिये धारण कीजिये॥६॥

**पुन: सूर्य्यदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

फिर सूर्य्यदृष्टान्त से राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि।**

**त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम्॥७॥**

**सखा। सख्ये। अपचत्। तूयम्। अग्निः। अस्य। क्रत्वा। महिषा। त्री। शतानि। त्री। साकम्। इन्द्रः। मनुषः। सरांसि। सुतम्। पिबत्। वृत्रऽहत्याय। सोमम्॥७॥**

**पदार्थः-(सखा)** मित्रम् **(सख्ये)** **(अपचत्)** पचति **(तूयम्)** तूर्णम् **(अग्निः)** पावकः **(अस्य)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्म्मणा वा **(महिषा)** महिषाणां महताम् पशूनाम् **(त्री)** त्रीणि **(शतानि)** **(त्री)** **(साकम्)** **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(मनुषः)** मनुषस्य **(सरांसि)** तडागान् **(सुतम्)** वर्षितम् **(पिबत्)** पिबति **(वृत्रहत्याय)** मेघस्य हननाय **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम्॥७॥

**अन्वयः**-यथाग्निरिन्द्रस्तूयमस्य जगतो मध्ये त्री भुवनानि प्रकाशयन् सरांसि पिबद् वृत्रहत्याय सुतं सोममपचत् तथा सखा क्रत्वा सख्ये साकं मनुषो महिषा त्री शतानि रक्षेत्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्य ऊर्ध्वाऽधोमध्यस्थान् स्थूलान् पदार्थान् प्रकाशयति तथोत्तममध्याऽधमान् व्यवहारान् राजा प्रकटीकुर्य्यात् सर्वैः सह सुहृद्वर्तेत॥७॥

**पदार्थः**-जैसे **(अग्निः)** अग्नि और **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(तूयम्)** शीघ्र **(अस्य)** इस जगत् के मध्य में **(त्री)** तीन भुवनों को प्रकाशित करता हुआ **(सरांसि)** तडागों का **(पिबत्)** पान करता है और **(वृत्रहत्याय)** मेघ के नाश करने के लिये **(सुतम्)** वर्षाये गये **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(अपचत्)** पचाता है, वैसे **(सखा)** मित्र **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से **(सख्ये)** मित्र के लिये **(साकम्)** सहित **(मनुषः)** मनुष्य के **(महिषा)** बड़े पशुओं के **(त्री)** तीन **(शतानि)** सैकड़ों की रक्षा करे॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य ऊपर, नीचे और मध्यभाग में वर्त्तमान स्थूल पदार्थों का प्रकाश करता है, वैसे उत्तम, मध्यम और अधम व्यवहारों को राजा प्रकट करे और सबके साथ मित्र के सदृश वर्त्ताव करे॥७॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्री यच्छता महिषाणामघो मास्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः।**
**कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान॥८॥**

**त्री। यत्। शता। महिषाणाम्। अघः। माः। त्री। सरांसि। मघऽवा। सोम्या। अपाः। कारम्। न। विश्वे। अह्वन्त। देवाः। भरम्। इन्द्राय। यत्। अहिम्। जघान॥८॥**

**पदार्थः-(त्री)** **(यत्)** यः **(शता)** शतानि **(महिषाणाम्)** महतां पदार्थनाम् **(अघः)** अहन्तव्यः **(माः)** रचयेः **(त्री)** **(सरांसि)** मेघमण्डलभूम्यन्तरिक्षस्थानि **(मघवा)** बहुधनवान् **(सोम्या)** सोमगुणसम्पन्न **(अपाः)** पाहि **(कारम्)** कर्त्तारम् **(न)** इव **(विश्वे)** सर्वे **(अह्वन्त)** आह्वयन्ति **(देवाः)** विद्वांसः **(भरम्)** पालनम् **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्याय **(यत्)** यथा **(अहिम्)** मेघम् **(जघान)** हन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यद्यस्त्वमघः सन् महिषाणां त्री शता माः। हे सोम्या! मघवा सँस्त्री सरांसि सूर्य इव प्रजा अपाः सूर्यो यदहिं जघान यथा विश्वे देवा इन्द्राय कारं न भरमह्वन्त तथेन्द्राय प्रयतस्व॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पुरुषार्थिनं जनं सर्वे स्वीकुर्वन्ति तथैव सूर्य्य ईश्वरनियमनियतं जलरसं गृह्णाति यथा जना महतां पदार्थानां सकाशाच्छतशः कार्याणि साध्नुवन्ति तथैव राजा मनुष्येभ्यः पुरुषेभ्यो महद्राजकार्य्यं साध्नुयात्॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यत्)** जो आप **(अघः)** नहीं मारने योग्य होते हुए **(महिषाणाम्)** बड़े पदार्थों के **(त्री)** तीन **(शता)** सैकड़ों को **(माः)** रचिये और हे **(सोम्या)** चन्द्रमा के गुणों से सम्पन्न! **(मघवा)** बहुत धनवान् होते हुए **(त्री)** तीन **(सरांसि)** मेघमण्डल, भूमि और अन्तरिक्ष में स्थित पदार्थों को सूर्य के सदृश प्रजाओं का **(अपाः)** पालन कीजिये और सूर्य्य **(यत्)** जैसे **(अहिम्)** मेघ का **(जघान)** नाश करता है और जैसे **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(कारम्)** कर्त्ता के **(न)** सदृश **(भरम्)** पालन को **(अह्वन्त)** कहते हैं, वैसे ऐश्वर्य्य के लिये प्रयत्न कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पुरुषार्थी जन को सब स्वीकार करते हैं, वैसे ही सूर्य ईश्वरीय नियमों से नियत जलरस का ग्रहण करता है, जैसे जन बड़े पदार्थों की उत्तेजना से सैकड़ों काम सिद्ध करते हैं, वैसे ही राजा प्रजाजनों से बड़े राजकार्य्य को सिद्ध करे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उशना यत्सहस्यै३रयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः।**

**वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम्॥९॥**

**उशना। यत्। सहस्यैः। अयातम्। गृहम्। इन्द्र। जूजुवानेभिः। अश्वैः। वन्वानः। अत्र। सऽरथम्। ययाथ। कुत्सेन। देवैः। अवनोः। ह। शुष्णम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(उशना)** कामयमानः **(यत्)** **(सहस्यैः)** सहस्सु बलेषु भवैः **(अयातम्)** प्राप्नुतम् **(गृहम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(जूजुवानेभिः)** वेगवद्भिः। अत्र **तुजादीनामित्यभ्यासदैर्घ्यम्।** **(अश्वैः)** तुरङ्गैरग्न्यादिभिर्वा **(वन्वानः)** याचमानः **(अत्र)** अस्मिन् जगति **(सरथम्)** रथेन सह वर्त्तमानम् **(ययाथ)** प्राप्नुत **(कुत्सेन)** वज्रेणेव दृढेन कर्मणा **(देवैः)** विद्वद्भिः **(अवनोः)** रक्ष **(ह)** किल **(शुष्णम्)** बलम्॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र त्वमुशना च! युवां सहस्यैः सह जूजुवानेभिरश्वैश्चालिते याने स्थित्वा यद् गृहमयातमत्र ह वन्वानस्त्वं कुत्सेन देवैः शुष्णमवनोः। हे मनुष्या! यूयमेताभ्यां सह सरथं ह ययाथ॥९॥

**भावार्थः**-ये राजादयो मनुष्याः सुसभ्याः स्युस्ते विमानादीनि निर्मातुं शक्नुयुर्दुष्टान् हन्तुं समर्था भवेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन् आप और **(उशना)** कामना करता हुआ जन! तुम दोनों **(सहस्यैः)** बलों में उत्पन्न हुए पदार्थों के साथ **(जूजुवानेभिः)** वेग वाले **(अश्वैः)** घोड़ों वा अग्नि आदिकों से चलाये गये वाहन पर स्थित हो के **(यत्)** जिस **(गृहम्)** गृह को **(अयातम्)** प्राप्त हूजिये और **(अत्र)** इस जगत् में **(ह)** निश्चय से **(वन्वानः)** याचना करते हुए आप **(कुत्सेन)** वज्र के सदृश दृढ़ कर्म्म से **(देवैः)** विद्वानों से **(शुष्णम्)** बल की **(अवनोः)** रक्षा करिये और हे मनुष्यो! आप लोग इन दोनों के साथ **(सरथम्)** रथ के साथ वर्त्तमान जैसे हो, वैसे निश्चय से **(यथाय)** प्राप्त होओ॥९॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य उत्तम प्रकार श्रेष्ठ होवें, वे विमान आदि वाहनों को बना सकें और दुष्ट जनों के मारने को समर्थ होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवेऽकः।**
**अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचः॥१०॥२४॥**

**प्र। अन्यत्। चक्रम्। अवृहः। सूर्यस्य। कुत्साय। अन्यत्। वरिवः। यातवे। अकरित्यकः। अनासः। दस्यून्। अमृणः। वधेन। नि। दुर्योणे। अवृणक्। मृध्रऽवाचः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(अन्यत्)** **(चक्रम्)** **(अवृहः)** वर्धय **(सूर्य्यस्य)** **(कुत्साय)** वज्राय **(अन्यत्)** **(वरिवः)** परिचरणम् **(यातवे)** यातुं गन्तुम् **(अकः)** कुर्य्याः **(अनासः)** अविद्यमानास्यान् **(दस्यून्)** दुष्टान् चोरान् **(अमृणः)** हिंस्याः **(वधेन)** **(नि)** नितराम् **(दुर्य्योणे)** गृहनयने **(आवृणक्)** वृङ्धि **(मृध्रवाचः)** हिंस्रावाचो जनान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वं सूर्य्यस्येवाऽन्यच्चक्रं प्रावृहः कुत्सायाऽन्यद्वरिवो यातवेऽकरनासो दस्यून् वधेनामृणो दुर्य्योणे मृध्रवाचो जनान् न्यावृणक्॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा सूर्य्यः स्वं चक्रमाकर्षणेन वर्त्तयति तथैव विमानादियानै राज्यमनुवर्त्तय दस्यून् दुष्टवाचश्च हत्वा राज्येऽचोरान् श्रेष्ठवचनांश्च सम्पादय॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप **(सूर्यस्य)** सूर्य के सदृश **(अन्यत्)** अन्य **(चक्रम्)** चक्र की **(प्र, अवृहः)** उत्तम वृद्धि करिये और **(कुत्साय)** वज्र के लिये **(अन्यत्)** अन्य **(वरिवः)** सेवन को **(यातवे)** प्राप्त होने को **(अकः)** करिये तथा **(अनासः)** मुखरहित **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का **(वधेन)** वध से **(अमृणः)** नाश करिये और **(दुर्य्योणे)** गृह के प्राप्त होने में **(मृध्रवाचः)** कुत्सित वाणियों वाले जनों को **(नि, आवृणक्)** निरन्तर वर्जिये॥१०॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जैसे सूर्य्य अपने चक्र का आकर्षण से वर्त्ताव करता है, वैसे ही विमान आदि वाहनों से राज्य का अनुवर्त्तन करो और चोर तथा दुष्ट वाणीवालों का नाश करके राज्य में नहीं चोरी करने वाले और श्रेष्ठ वचनों वाले जनों का सम्पादन कीजिये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्तोमा॑सस्त्वा गौरि॑वीतेरवर्धन्नर॑न्धयो वैदथि॒नाय॒ पिप्रु॑म्।**

**आ त्वामृ॒जिश्वा॑ स॒ख्याय॑ च॒क्रे पच॑न् प॒क्तीरपि॑बः॒ सोम॑मस्य॥११॥**

**स्तोमा॑सः। त्वा॒। गौरि॑ऽवीतेः। अ॒व॒र्ध॒न्। अर॑न्धयः। वै॒द॒थि॒नाय॑। पिप्रु॑म्। आ। त्वाम्। ऋ॒जिश्वा॑। स॒ख्याय॑। च॒क्रे। पच॑न्। प॒क्तीः। अपि॑बः। सोम॑म्। अ॒स्य॒॥ ११॥**

**पदार्थ:**-**(स्तोमास:)** प्रशंसिता: **(त्वा)** त्वाम् **(गौरिवीते:)** यो गौरीं वाचं व्येति स:। **गौरीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(अवर्धन्)** वर्धन्तम् **(अरन्धय:)** हिंसय **(वैदथिनाय)** विदिथिना स-ामकर्त्रा निर्मिताय **(पिप्रुम्)** व्यापकम् **(आ)** **(त्वाम्)** **(ऋजिश्वा)** ऋजि: सरलश्चासौ श्वा च **(सख्याय)** मित्रत्वाय **(चक्रे)** **(पचन्)** **(पक्ती:)** पाकान् **(अपिब:)** पिब: **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यमोषधिरसं वा **(अस्य)** जगतो मध्ये॥११॥

**अन्वय:**-हे राजन्! गौरिवीतेस्तव सङ्गेन स्तोमासोऽवर्धंस्तै: सह वैदथिनाय शत्रूनरन्धय:। य ऋजिश्वेव पिप्रुं त्वा सख्यायाऽऽचक्रे तेन सहास्य पक्ती: पचंस्त्वं सोममपिबो ये त्वां पालयेयुस्तान् सर्वांस्त्वं सत्कुर्या:॥११॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे राजन्! ये शुभैर्गुणैस्त्वां वर्धयन्ति मित्रं जानन्ति तान् सखीकृत्य त्वमैश्वर्य्यं वर्धय॥११॥

**पदार्थ:**-हे राजन् **(गौरिविते:)** वाणी को विशेष प्राप्त अर्थात् जानने वाले आपके संग से **(स्तोमास:)** प्रशंसित **(अवर्धन्)** वृद्धि को प्राप्त हों, उनके साथ **(वैदथिनाय)** संग्राम करने वाले से बनाये गये के लिये शत्रुओं का **(अरन्धय:)** नाश करो और जो **(ऋजिश्वा)** सरल कुत्ते के सदृश ही मनुष्य **(पिप्रुम्)** व्यापक **(त्वा)** आपको **(सख्याय)** मित्रपने के लिये **(आ, चक्रे)** अच्छे प्रकार कर चुका, उसके साथ **(अस्य)** इस जगत् के मध्य में **(पक्ती:)** पाकों का **(पचन्)** पाक करते हुए आप **(सोमम्)** ऐश्वर्य वा ओषधि के रस का **(अपिब:)** पान करिये और जो **(त्वाम्)** आपकी रक्षा करें, उन सबका आप सत्कार करिये॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो उत्तम गुणों से आपकी वृद्धि करते और आपको मित्र जानते हैं, उनको मित्र करके आप ऐश्वर्य की वृद्धि करो॥११॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नव॑ग्वासः सु॒तसो॑मास॒ इन्द्रं॒ दश॑ग्वासो अ॒भ्य॑र्चन्त्य॒र्कैः।**

**गव्यं॑ चिदू॒र्वम॑पि॒धान॑वन्तं॒ तं चि॒न्नरः॑ शशमा॒ना अप॑ व्रन्॥ १२॥**

**नव॑ऽग्वासः। सु॒तसो॑मासः। इन्द्र॑म्। दश॑ऽग्वासः। अ॒भि। अ॒र्च॒न्ति॒। अ॒र्कैः। गव्य॑म्। चि॒त्। ऊ॒र्वम्। अ॒पि॒धान॑ऽवन्तम्। तम्। चि॒त्। नरः॑। श॒श॒मा॒नाः। अप॑। व्रन्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**नवग्वासः**) नवीनगतयः (**सुतसोमासः**) निष्पादितैश्वर्यौषधयः (**इन्द्रम्**) विद्यैश्वर्ययुक्तम् (**दशग्वासः**) दश गाव इन्द्रियाणि जितानि यैस्ते (**अभि**) सर्वतः (**अर्चन्ति**) सत्कुर्वन्ति (**अर्कैः**) मन्त्रैर्विचारैः (**गव्यम्**) गोरिदम् (**चित्**) अपि (**ऊर्वम्**) अविद्याहिंसकम् (**अपिधानवन्तम्**) आच्छादनयुक्तम् (**तम्**) (**चित्**) (**नरः**) नेतारः (**शशमानाः**) अविद्या उल्लङ्घमानाः (**अप**) (**व्रन्**) वृण्वन्ति॥ १२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! सुतसोमासो नवग्वासो दशग्वासः शशमाना नरो यं गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तमिन्द्रमर्कैरभ्यर्चन्ति तस्याऽविद्यामप व्रँस्तं चित् त्वमपि शिक्षय॥ १२॥

**भावार्थः**-ये नूतनविद्याजिघृक्षव ऐश्वर्य्यमिच्छुका जितेन्द्रिया विद्वांसोऽज्ञानिनः प्रबोध्य विदुषः कुर्वन्ति त एव पूजनीया भवन्ति॥ १२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**सुतसोमासः**) संपादन की ऐश्वर्य और ओषधियां जिन्होंने (**नवग्वासः**) जो नवीन गति वाले (**दशग्वासः**) जिन्होंने दशों इन्द्रियों को जीता ऐसे (**शशमानाः**) अविद्याओं का उल्लंघन करते हुए (**नरः**) नायक जिन जिस (**गव्यम्**) गोसम्बन्धी (**चित्**) निश्चित (**ऊर्वम्**) अविद्या के नाश करने वाले (**अपिधानवन्तम्**) आच्छादन से युक्त गुप्त (**इन्द्रम्**) विद्या और ऐश्वर्य्यवान् का (**अर्कैः**) मन्त्र वा विचारों से (**अभि**) सब प्रकार (**अर्चन्ति**) सत्कार करते और उसकी अविद्या का (**अप, व्रन्**) अस्वीकार करते हैं (**तम्**) उसको (**चित्**) भी आप शिक्षा दीजिये॥ १२॥

**भावार्थः**-जो नवीन विद्या का ग्रहण करना चाहते और ऐश्वर्य्य की इच्छा करने और इन्द्रियों के जीतने वाले विद्वान् जन अज्ञानी जनों को बोध देकर विद्वान् करते हैं, वे ही सत्कार करने योग्य होते हैं॥ १२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क॒थो नु ते॒ परि॑ चराणि वि॒द्वान् वी॒र्या॑ मघव॒न् या च॒कर्थ॑।**

**या चो॒ नु नव्या॑ कृ॒णवः॑ शविष्ठ॒ प्रेदु॒ ता ते॑ वि॒दथे॑षु ब्रवाम॥ १३॥**

**कथो इति। नु। ते। परि। चराणि। विद्वान्। वीर्या। मघऽवन्। या। चकर्थ। या। चो इति। नु। नव्या। कृणवः। शविष्ठ। प्र। इत्। ऊँ इति। ता। ते। विदथेषु। ब्रवाम॥१३॥**

**पदार्थः**-(**कथो**) कथम् (**नु**) (**ते**) तव (**परि**) सर्वतः (**चराणि**) गतिमन्ति प्राप्तव्यानि वा (**विद्वान्**) (**वीर्या**) वीर्ययुक्तानि सैन्यानि (**मघवन्**) पूजितधनयुक्त (**या**) यानि (**चकर्थ**) करोषि (**या**) यानि (**चो**) च (**नु**) (**नव्या**) नवेषु भवानि (**कृणवः**) करोषि (**शविष्ठ**) अतिशयेन बलिष्ठ (**प्र**) (**इत्**) एव (**उ**) (**ता**) तानि (**ते**) तव (**विदथेषु**) स- ामेषु (**ब्रवाम**) उपदिशेम॥१३॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! या ते परि चराणि वीर्या कथो नु चकर्थ विद्वांस्त्वं या चो नव्या नु कृणवः। हे शविष्ठ! ते यानि विदथेषु वयं प्र ब्रवाम ता तानीदु त्वं गृहाण॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सदैव नवीना नवीना विद्या नूतनं नूतनं कार्य्यं संसाध्यैश्वर्य्यं प्राप्नुयुरेवमन्यान् प्रत्युपदिशन्तु॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) श्रेष्ठ धन से युक्त! (**या**) जो (**ते**) आपकी (**परि**) सब ओर से (**चराणि**) चलने वाली और प्राप्त होने योग्य (**वीर्या**) पराक्रमयुक्त सेनाओं को (**कथो**) किस प्रकार (**नु**) निश्चय से (**चकर्थ**) करते हो तथा (**विद्वान्**) विद्वान् आप (**या**) जिनको (**चो**) और (**नव्या**) नवीनों में उत्पन्नों को (**नु**) निश्चय से (**कृणवः**) सिद्ध करते हो। हे (**शविष्ठ**) अतिशय करके बलिष्ठ! (**ते**) आपके जिनको (**विदथेषु**) स- ामों में हम लोग (**प्र, ब्रवाम**) उपदेश करें (**ता**) उनको (**इत्**) निश्चय से (**उ**) भी आप ग्रहण करो॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा ही नवीन-नवीन विद्या और नवीन-[नवीन] कार्य्य को सिद्ध करके ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें, इसी प्रकार अन्यों के प्रति उपदेश करें॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण।**

**या चिन्नु वज्रिन् कृणवो दधृष्वान्न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः॥१४॥**

**एता। विश्वा। चकृऽवान्। इन्द्र। भूरि। अपरिऽइतः। जनुषा। वीर्येण। या। चित्। नु। वज्रिन्। कृणवः। दधृष्वान्। न। ते। वर्ता। तविष्याः। अस्ति। तस्याः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**एता**) एतानि (**विश्वा**) सर्वाणि (**चकृवान्**) कृतवान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् (**भूरि**) बहूनि बलानि (**अपरीतः**) अवर्जितः (**जनुषा**) द्वितीयेन जन्मना (**वीर्य्येण**) पराक्रमेण (**या**) यानि (**चित्**) अपि (**नु**) सद्यः (**वज्रिन्**) प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्त (**कृणवः**) कुर्य्याः (**दधृष्वान्**) धर्षितवान् (**न**) निषेधे (**ते**) तव (**वर्त्ता**) स्वीकर्त्ता (**तविष्याः**) बलयुक्तायाः सेनायाः (**अस्ति**) (**तस्याः**)॥१४॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्रापरीतस्त्वं जनुषा वीर्य्येण चिदेता विश्वा चकृवान् या च भूरि कृणवो हे राजँस्ते

चित् तस्यास्तविष्या दधृष्वान्नु वर्त्ता वोऽपि नास्ति॥१४॥

**भावार्थः**-ये राजादयो जनास्ते ब्रह्मचर्य्येण विद्याः प्राप्य चत्वारिंशद्वर्षायुष्कास्सन्तः समावर्त्य स्वयंवरं विवाहं विधाय सेनां वर्धयित्वा प्रजायाः सर्वतोऽभिरक्षणं कुर्य्युः॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) उत्तम शस्त्र और अस्त्रों से और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! (**अपरीतः**) नहीं वर्जित आप (**जनुषा**) दूसरे जन्म से और (**वीर्य्येण**) पराक्रम से (**चित्**) भी (**एता**) इन (**विश्वा**) सब को (**चकृवान्**) किये हुए हो और (**या**) जिन (**भूरि**) बहुत बलों को (**कृणवः**) करिये। हे राजन्! (**ते**) आपकी निश्चित (**तस्याः**) उस (**तविष्याः**) बलयुक्त सेना का (**दधृष्वान्**) धृष्ट अर्थात् हर्षित किया हुआ (**नु**) शीघ्र (**वर्त्ता**) स्वीकार करने वाला कोई भी (**न**) नहीं (**अस्ति**) है॥१४॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि जन हैं, वे ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को प्राप्त होकर चवालीस वर्ष की अवस्था से युक्त हुए समावर्त्तन करके अर्थात् गृहस्थाश्रम को विधिपूर्वक ग्रहण कर स्वयंवर विवाह कर और सेना की वृद्धि करके प्रजा की सब प्रकार से रक्षा करें॥१४॥

**अथ विद्वद्विषये पुरुषार्थरक्षणविषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय में पुरुषार्थरक्षणविषय को कहते हैं॥

### इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म।
### वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्॥१५॥२५॥

**इन्द्र। ब्रह्म। क्रियमाणा। जुषस्व। या। ते। शविष्ठ। नव्याः। अकर्म। वस्त्राऽइव। भद्रा। सुऽकृता। वसुऽयुः। रथम्। न। धीरः। सुऽअपाः। अतक्षम्॥१५॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्ययुक्त (**ब्रह्म**) अन्नानि धनानि वा। **ब्रह्मेत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) (**क्रियमाणा**) वर्त्तमानेन पुरुषार्थेन सिद्धानि (**जुषस्व**) सेवस्व (**या**) यानि (**ते**) तव (**शविष्ठ**) अतिशयेन बलयुक्त (**नव्याः**) नवीनाः श्रियः (**अकर्म**) कुर्य्याम (**वस्त्रेव**) यथा वस्त्राणि प्राप्यन्ते तथा (**भद्रा**) कल्याणकराणि (**सुकृता**) धर्म्येण निष्पादितानि (**वसूयुः**) आत्मनो धनमिच्छुः (**रथम्**) रमणीयम् (**न**) इव (**धीरः**) ध्यानवान् योगी (**स्वपाः**) सत्यभाषणादिकर्मा (**अतक्षम्**) प्राप्नुयाम्॥१५॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठेन्द्र! यस्य ते नव्याः श्रियो वयकर्म या क्रियमाणा ब्रह्म त्वं जुषस्व ता भद्रा सुकृता वस्त्रेव स्वपा धीरो वसूयू रथं न भद्रा सुकृता अहमतक्षम्॥१५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! गोत्रधनस्याशया यूयमालस्येन पुरुषार्थं मा त्यजत, किन्तु नित्यं पुरुषार्थवर्धनेनैश्वर्यं वर्धयित्वा वस्त्रवद्रथवत्सुखं भुक्त्वा नूतनं यशः प्रथयतेति॥१५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनत्रिंशत्तमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शविष्ठ)** अतिशय करके बल से और **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! जिन **(ते)** आपके **(नव्याः)** नवीन धनों को हम लोग **(अकर्म)** करें और **(या)** जिन **(क्रियमाणा)** वर्त्तमान पुरुषार्थ से सिद्ध हुए **(ब्रह्म)** अन्न वा धनों का आप **(जुषस्व)** सेवन करो उन **(भद्रा)** कल्याणकारक **(सुकृता)** धर्म्म से उत्पन्न किये हुओं को **(वस्त्रेव)** जैसे वस्त्र प्राप्त होते वैसे तथा **(स्वपाः)** सत्यभाषण आदि कर्म्म करने वाला **(धीरः)** ध्यानवान् योगी और **(वसूयूः)** अपने को धन की इच्छा करने वाला **(रथम्)** उत्तम वाहन को **(न)** जैसे वैसे कल्याणकारक और धर्म्म जैसे उत्पन्न किये गयों को मैं **(अतक्षम्)** प्राप्त होऊँ॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! वंश और धन की आशा से आप लोग आलस्य से पुरुषार्थ का न त्याग करो, किन्तु नित्य पुरुषार्थ की वृद्धि से ऐश्वर्य्य की वृद्धि करके वस्त्र और रथ से जैसे वैसे सुख का भोग करके नवीन यश प्रकट करो॥१५॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इनसे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनतीसवां सूक्त और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य बभ्रुरात्रेय ऋषिः। इन्द्र ऋणञ्चयश्च देवता। १, २, ३, ४, ५, ८, ९ निचृत् त्रिष्टुप्। १० विराट् त्रिष्टुप्। ७, ११ १२ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ६, १३ पङ्क्तिः। १४ स्वराट् पङ्क्तिः। १५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रविषयमाह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के विषय को कहते हैं॥

**क्व१॒ स्य वी॒रः को अ॑पश्यु॒दिन्द्रं॑ सु॒खर॑थ॒मीय॑मानं॒ हरि॑भ्याम्।**

**यो रा॒या व॒ज्री सु॒तसो॑म॒मि॒च्छन् तदोको॒ गन्ता॑ पुरुहू॒त ऊ॒ती॥१॥**

**क्व॑। स्यः। वी॒रः। कः। अ॒प॒श्य॒त्। इन्द्र॑म्। सु॒खऽर॑थम्। ईय॑मानम्। हरि॑ऽभ्याम्। यः। रा॒या। व॒ज्री। सु॒तऽसो॑म॑म्। इ॒च्छन्। तत्। ओकः। गन्ता॑। पु॒रु॒ऽहू॒तः। ऊ॒ती॥१॥**

**पदार्थः**-(**क्व**) कस्मिन् (**स्यः**) सः (**वीरः**) शूरः (**कः**) (**अपश्यत्**) पश्यति (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**सुखरथम्**) सुखाय रथस्सुखरथस्तम् (**ईयमानम्**) गच्छन्तम् (**हरिभ्याम्**) वेगाकर्षणाभ्याम् (**यः**) (**राया**) धनेन (**वज्री**) शस्त्रास्त्रयुक्तः (**सुतसोमम्**) सुतः सोम ऐश्वर्यं यस्मिँस्तम् (**इच्छन्**) (**तत्**) (**ओकः**) गृहम् (**गन्ता**) (**पुरुहूतः**) बहुभिः स्तुतः (**ऊती**) रक्षणाद्याय॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! को वीर इन्द्रमपश्यत् क्व हरिभ्यां सुखरथमीयमानमपश्यत् यो वज्री गन्ता पुरुहूतः सतुसोमं तदोक इच्छन्नूती रायेन्द्रमपश्यत् स्यः सुखरथं प्राप्नुयात्॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! के विद्युदादिविद्यां प्राप्तुमधिकारिणः सन्तीति पृच्छामि ये विदुषां सङ्गेनाप्तरीत्या विद्यां हस्तक्रियां गृहीत्वा नित्यं प्रयतेरन्नित्युत्तरम्॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**कः**) कौन (**वीरः**) शूर (**इन्द्रम्**) बिजुली को (**अपश्यत्**) देखता है (**क्व**) किसमें (**हरिभ्याम्**) वेग और आकर्षण से (**सुखरथम्**) सुख के अर्थ (**ईयमानम्**) चलते हुए रथ को देखता है (**यः**) जो (**वज्री**) शस्त्र और अस्त्रों में युक्त (**गन्ता**) जाने वाला (**पुरुहूतः**) बहुतों से स्तुति किया गया (**सुतसोमम्**) इकट्ठा किया ऐश्वर्य्य जिसमें (**तत्**) उस (**ओकः**) गृह की (**इच्छन्**) इच्छा करता हुआ (**ऊती**) रक्षण आदि के लिये (**राया**) धन से बिजुली को देखता है (**स्यः**) वह सुख के लिये रथ को प्राप्त हो॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! कौन बिजुली आदि की विद्या के प्राप्त होने को अधिकारी हैं, इस प्रकार पूछता हूँ, जो विद्वानों के सङ्ग से यथार्थवक्ता जनों की रीति से विद्या और हस्तक्रिया को ग्रहण करके नित्य प्रयत्न करें, यह उत्तर है॥१॥

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अवाचचक्षं पदमस्य सस्वरुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन्।**
**अपृच्छमन्याँ उत ते म आहुरिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम॥२॥**

अव। अचचक्षम्। पदम्। अस्य। सस्वः। उग्रम्। निऽधातुः। अनु। आयम्। इच्छन्। अपृच्छम्। अन्यान्। उत। ते। मे। आहुः। इन्द्रम्। नरः। बुबुधानाः। अशेम॥२॥

**पदार्थः**-(**अव**) (**अचचक्षम्**) कथयेयम् (**पदम्**) प्रापणीयं विज्ञानम् (**अस्य**) शिल्पस्य (**सस्वः**) गुप्तम् (**उग्रम्**) उग्रगुणकर्मस्वभावम् (**निधातुः**) धरतुः (**अनु**) (**आयम्**) प्राप्नुयाम् (**इच्छन्**) (**अपृच्छम्**) पृच्छेयम् (**अन्यान्**) विदुषः (**उत**) (**ते**) विद्वांसः (**मे**) मह्यम् (**आहुः**) कथयन्तु (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**नरः**) नायकाः (**बुबुधानाः**) सम्बोधयुक्ताः (**अशेम**) प्राप्नुयाम॥२॥

**अन्वयः**-शिल्पविद्यामिच्छन्नहं यावन्यान् विदुषोऽपृच्छं ते बुबुधाना नरो म इन्द्रमाहुस्तमस्य निधातुः सस्वरुग्रं पदमन्वायमन्यान् प्रत्यवाचचक्षमेवमुत मित्रवद्वर्त्तमाना वयं साङ्गोपाङ्गाः शिल्पविद्या अशेम॥२॥

**भावार्थः**-यदा जिज्ञासवो विदुषः प्रति पृच्छेयुस्तदा तान् प्रति यथार्थमुत्तरं प्रदद्युरेवं सखायः सन्तो विद्युदादिविद्यामुन्नयेयुः॥२॥

**पदार्थः**-शिल्पविद्या की (**इच्छन्**) इच्छा करता हुआ मैं जिन (**अन्यान्**) अन्य विद्वानों को (**अपृच्छम्**) पूछूं (**ते**) वे (**बुबुधानाः**) सम्बोधयुक्त (**नरः**) नायक जन विद्वान् (**मे**) मेरे लिये (**इन्द्रम्**) बिजुली को (**आहुः**) कहें, उसको (**अस्य**) इस शिल्पविद्या के (**निधातुः**) धारण करने वाले के (**सस्वः**) गुप्त (**उग्रम्**) उग्र गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**पदम्**) प्राप्त होने योग्य विज्ञान को (**अनु, आयम्**) अनुकूल प्राप्त होऊं और अन्यों के प्रति (**अव, अचचक्षम्**) निश्शेष कहूँ, इस प्रकार (**उत**) भी मित्र के सदृश वर्त्तमान हम लोग अङ्ग और उपाङ्गों के सहित शिल्पविद्याओं को (**अशेम**) प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-जब शिल्प आदि के जानने कि इच्छा करने वाले जन विद्वानों के प्रति पूछें, तब उनके प्रति यथार्थ उत्तर देवें, इस प्रकार परस्पर मित्र हुए बिजुली आदि की विद्या की उन्नति करें॥२॥

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र नु वयं सुते या ते कृतानीन्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः।**
**वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः॥३॥**

प्र। नु। वयम्। सुते। या। ते। कृतानि। इन्द्र। ब्रवाम। यानि। नः। जुजोषः। वेदत्। अविद्वान्। शृणवत्। च। विद्वान्। वहते। अयम्। मघऽवा। सर्वऽसेनः॥१॥

**पदार्थः**-(**प्र**) (**नु**) सद्यः (**वयम्**) (**सुते**) उत्पन्ने जगति (**या**) यानि (**ते**) तव (**कृतानि**) (**इन्द्र**) विद्वन् (**ब्रवाम**) उपदिशेम (**यानि**) (**नः**) अस्माकम् (**जुजोषः**) जुषसे (**वेदत्**) विजानीयात् (**अविद्वान्**) (**शृणवत्**) शृणुयात् (**च**) विद्वान् (**वहते**) प्राप्नोति प्रापयति वा (**अयम्**) (**मघवा**) बहुधनवान् (**सर्वसेनः**) सर्वाः सेना यस्य सः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या ते सुते कृतानि नः यानि त्वं जुजोषस्तानि वयं नु प्र ब्रवाम यदाऽयं मघवा सर्वसेनो विद्वान् विद्यां वहते तदायमविद्वाञ्छृणवद्वेदच्च॥३॥

**भावार्थः**-द्वावुपायौ विद्याप्राप्तये वेदितव्यौ तत्राद्यो विद्याऽध्यापक आप्तो भवेच्छ्रोताऽध्येता च पवित्रो निष्कपटी पुरुषार्थी स्यात्। द्वितीयः सतां विदुषां क्रियां दृष्ट्वा स्वयमपि तादृशीं कुर्य्यादेवं कृते सर्वेषां विद्यालाभो भवेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्वन्! (**या**) जिन (**ते**) आपके (**सुते**) उत्पन्न हुए संसार में (**कृतानि**) किये हुए कार्य्यों का (**नः**) हम लोगों के (**यानि**) जिन कार्य्यों को (**जुजोषः**) आप सेवते हो उनका (**वयम्**) हम लोग (**नु**) शीघ्र (**प्र, ब्रवाम**) उपदेश देवें और जब (**अयम्**) यह (**मघवा**) बहुत धन वाला और (**सर्वसेनः**) सम्पूर्ण सेनाओं से युक्त (**विद्वान्**) विद्वान् जन विद्या को (**वहते**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता है, तब यह (**अविद्वान्**) विद्या से रहित जन (**शृणवत्**) श्रवण करे और (**वेदत्**) विशेष करके जाने (**च**) भी॥३॥

**भावार्थः**-दो उपाय विद्या की प्राप्ति के लिए जानने चाहियें, उनमें प्रथम उपाय यह कि विद्या का अध्यापक यथार्थवक्ता होवे तथा सुनने और पढ़ने वाला पवित्र, कपटरहित और पुरुषार्थी होवे। दूसरा उपाय यह है कि श्रेष्ठ विद्वानों का कर्म्म देख कर आप भी वैसा ही कर्म्म करे, ऐसा करने पर सब को विद्या का लाभ होवे॥३॥

**अथ वीरकर्म्माह॥**

अब वीरों के कर्म्म को कहते हैं॥

**स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्।**

**अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्रियाणाम्॥४॥**

**स्थिरम्। मनः। चकृषे। जातः। इन्द्रः। वेषि। इत्। एकः। युधये। भूयसः। चित्। अश्मानम्। चित्। शवसा। दिद्युतः। वि। विदः। गवाम्। ऊर्वम्। उस्रियाणाम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**स्थिरम्**) निश्चलम् (**मनः**) अन्तःकरणम् (**चकृषे**) करोति (**जातः**) प्रकटः सन् (**इन्द्र**) योगैश्वर्यमिच्छुक (**वेषि**) व्याप्नोषि (**इत्**) एव (**एकः**) (**युधये**) युद्धाय (**भूयसः**) बहून् (**चित्**) अपि (**अश्मानम्**) मेघम् (**चित्**) अपि (**शवसा**) बलेन (**दिद्युतः**) प्रकाशयतः (**वि**) (**विदः**) वेदय (**गवाम्**) गन्तॄणाम् (**ऊर्वम्**) हिंसकम् (**उस्रियाणाम्**) रश्मीनाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथैकः सूर्य्यो युधये शवसाऽश्मानं भूयसश्चिद् घनाँश्च गवामुस्रियाणामूर्वं चकृषे द्वौ चिद्वि दिद्युतस्तथा त्वं विजयं विदः। एको जातस्त्वं यतो मनः स्थिरं चकृषे तस्मादिद् राज्यं वेषि॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यमेघौ युद्ध्येते तथा राजा शत्रुणा सह सङ्ग्रामं कुर्य्याद्यथा सूर्य्यः किरणैः सर्वं कार्यं साध्नोति तथा राजा सेनाऽमात्यैः सर्वं राजकृत्यं साधयेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** योगजन्य ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले जन! जिस प्रकार **(एकः)** एक सूर्य्य **(युधये)** युद्ध के लिये **(शवसा)** बल से **(अश्मानम्)** मेघ को और **(भूयसः)** बहुत **(चित्)** भी मेघों को तथा **(गवाम्)** चलने वाले **(उस्रियाणाम्)** किरणों के **(ऊर्वम्)** नाश करने वालों को **(चकृषे)** करता और दोनों **(चित्)** निश्चित **(वि, दिद्युतः)** प्रकाश करते हैं, वैसे आप विजय को **(विदः)** जनाइये, एक **(जातः)** प्रकट हुए आप जिससे **(मनः)** अन्तःकरण को **(स्थिरम्)** निश्चल करते हो **(इत्)** इसी से राज्य को **(वेषि)** प्राप्त होते हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य और मेघ परस्पर युद्ध करते हैं, वैसे राजा शत्रु के साथ संग्राम करे और जैसे सूर्य्य किरणों से सब कार्य्य को सिद्ध करता है, वैसे राजा सेना और मन्त्रीजनों से सम्पूर्ण राजकृत्य सिद्ध करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### पुरो यत्त्वं पुरम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत्।
### अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद्दासपत्नीः॥५॥२६॥

**पुरः। यत्। त्वम्। पुरमः। आऽजनिष्ठाः। पराऽवति। श्रुत्यम्। नाम। बिभ्रत्। अतः। चित्। इन्द्रात्। अभयन्त। देवाः। विश्वाः। अपः। अजयत्। दासऽपत्नीः॥५॥**

**पदार्थः**-**(परः)** उत्कृष्टः **(यत्)** यः **(त्वम्)** **(परमः)** अतीव श्रेष्ठः **(आजनिष्ठाः)** समन्ताज्जायसे **(परावति)** दूरे देशे **(श्रुत्यम्)** श्रुतौ श्रवणे भवम् **(नाम)** संज्ञाम् **(बिभ्रत्)** **(अतः)** **(चित्)** अपि **(इन्द्रात्)** विद्युतः **(अभयन्त)** **(देवाः)** विद्वांसः **(विश्वाः)** सर्वाः **(अपः)** जलानि **(अजयत्)** जयति **(दासपत्नीः)** यो जलं ददाति स दासो मेघः स पतिः पालको यासां ताः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यत्त्वं परः परमः श्रुत्यं नाम बिभ्रत्सन्नाजनिष्ठाः स यथा परावति देशे स्थितः सूर्य्यो विश्वा दासपत्नीरपोऽजयद्यथा देवा इन्द्रादभयन्त तथा वर्त्तमानेऽतश्चित्सुखं वर्धय॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा दूरस्थोऽपि सूर्य्यः स्वप्रकाशेन प्रख्यातो वर्त्तते तथैव दूरे सन्तोऽप्याप्ताः प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यत्)** जो **(त्वम्)** आप **(परः)** उत्तम **(परमः)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(श्रुत्यम्)** श्रवण में उत्पन्न **(नाम)** संज्ञा को **(बिभ्रत्)** धारण करते हुए **(आजनिष्ठाः)** सब प्रकार से प्रकट होते हो, वह

जैसे (**परावति**) दूर देश में स्थित सूर्य्य (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**दासपत्नीः**) जल का देने वाला मेघ जिनका पालनकर्त्ता ऐसे (**अपः**) जलों को (**अजयत्**) जीतता है और जैसे (**देवाः**) विद्वान् जन (**इन्द्रात्**) बिजुली से (**अभयन्त**) नहीं डरते हैं, वैसे वर्त्तमान होने पर (**अतः**) इससे (**चित्**) भी सुख की वृद्धि करिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे दूरस्थित भी सूर्य्य अपने प्रकाश से प्रसिद्ध होता है, वैसे ही दूर वर्त्तमान भी यथार्थवक्ता जन प्रकाशित यश वाले होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः।**
**अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः॥६॥**

**तुभ्य। इत्। एते। मरुतः। सुऽशेवाः। अर्चन्ति। अर्कम्। सुन्वन्ति। अन्धः। अहिम्। ओहानम्। अपः। आऽशयानम्। प्र। मायाभिः। मायिनम्। सक्षत्। इन्द्रः॥६॥**

**पदार्थः**-(**तुभ्य**) तुभ्यम्। अत्र विभक्तेर्लुक् (**इत्**) एव (**एते**) (**मरुतः**) ऋत्विजः (**सुशेवाः**) सुष्ठुसुखाः (**अर्चन्ति**) सत्कुर्वन्ति (**अर्कम्**) सत्करणीयम् (**सुन्वन्ति**) निष्पादयन्ति (**अन्धः**) अन्नम् (**अहिम्**) मेघम् (**ओहानम्**) त्यजन्तम् (**अपः**) जलानि (**आशयानम्**) यः समन्ताच्छेते तम् (**प्र**) (**मायाभिः**) प्रज्ञाभिः (**मायिनम्**) कुत्सिता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् (**सक्षत्**) समवैति (**इन्द्रः**) विद्युत्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथेन्द्रो मायाभिराशयानं मायिनमोहानमहिं सक्षद्धत्वाऽपो भूमौ निपातयति यथैते तुभ्य सुशेवा मरुतोऽर्कमर्चन्त्यन्धः सुन्वन्ति तथेत् तुभ्यं सर्वे विद्वांसस्सुखं प्र यच्छन्तु॥६॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसो जगतः सुखकरा भवन्ति ये सूर्य्यमेघवज्जगतः सुखकराः सन्ति स्वात्मवदन्येषां सुखकरा भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**इन्द्रः**) बिजुली (**मायाभिः**) बुद्धियों से (**आशयानम्**) चारों ओर शयन करते हुए (**मायिनम्**) निकृष्ट बुद्धि वाले और (**ओहानम्**) त्याग करते हुए (**अहिम्**) मेघ को (**सक्षत्**) प्राप्त होता और ताड़न करके (**अपः**) जलों को भूमि में गिराता है और जैसे (**एते**) ये (**तुभ्य**) आपके लिये (**सुशेवाः**) उत्तम सुख वाले (**मरुतः**) ऋत्विक् मनुष्य (**अर्कम्**) सत्कार करने योग्य का (**अर्चन्ति**) सत्कार करते हैं और (**अन्धः**) अन्न को (**सुन्वन्ति**) उत्पन्न करते हैं, वैसे (**इत्**) ही आपके लिये सम्पूर्ण विद्वान् जन सुख (**प्र**) देवें॥६॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् जन जगत् के सुख करने वाले होते हैं, जो सूर्य्य और मेघ के समान जगत् के सुख करने वाले हैं तथा अपने समान दूसरों के सुख करने वाले होते हैं॥६॥

**अथवीरविषयमाह॥**

अब वीर विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि षू मृधो॑ जनुषा॒ दान॒मिन्व॒न्नह॒न् गवा॑ मघवन्त्संचका॒नः।**
**अत्रा॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेः शिरो॒ यदव॑र्तयो॒ मन॑वे गा॒तुमि॒च्छन्॥७॥**

**वि। सु। मृधः॑। ज॒नुषा॑। दान॑म्। इन्व॑न्। अह॑न्। गवा॑। म॒घ॒ऽव॒न्। स॒म्ऽच॒का॒नः। अत्र॑। दा॒सस्य॑। नमु॑चेः। शिरः॑। यत्। अव॑र्तयः। मन॑वे। गा॒तुम्। इ॒च्छन्॥७॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**सु**) शोभने (**मृधः**) स-ामान् (**जनुषा**) जन्मना (**दानम्**) (**इन्वन्**) प्राप्नुवन् (**अहन्**) हन्ति (**गवा**) किरणेन (**मघवन्**) धनैश्वर्य्याढ्य (**सञ्चकानः**) सम्यक् कामयमानः (**अत्रा**) अस्मिन् व्यवहारे। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**दासस्य**) सेवकवद् वर्त्तमानस्य मेघस्य (**नमुचेः**) यः स्वं रूपं न मुञ्चति तस्य (**शिरः**) उत्तमाङ्गम् (**यत्**) (**अवर्त्तयः**) वर्त्तये: (**मनवे**) मननशीलाय धार्मिकाय मनुष्याय (**गातुम्**) भूमिं वाणीं वा (**इच्छन्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे मघवन् राजंस्त्वं जनुषा दानमिन्वन् सन् यथा सूर्य्यो गवा मेघमहंस्तथा मृधो जहि। सञ्चकानः सन् यथात्रा सूर्य्यो नमुचेर्दासस्य मेघस्य शिरो व्यहँस्तथा त्वं मनवे यद्यां गातुमिच्छंस्तदर्थं शत्रुशिरः स्ववर्त्तयः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजानो! यः सूर्यो मेघं जित्वा जगत्सुखयति तथा दुष्टाञ्छत्रून् विजित्य प्रजाः सुखयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) धन और ऐश्वर्य से युक्त राजन्! आप (**जनुषा**) जन्म से (**दानम्**) दान को (**इन्वन्**) प्राप्त होते हुए जैसे सूर्य्य (**गवा**) किरण से मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे (**मृघः**) संग्रामों को जीतिये और (**सञ्चकानः**) उत्तम प्रकार कामना करते हुए जैसे (**अत्रा**) इस व्यवहार में सूर्य (**नमुचेः**) अपने स्वरूप को नहीं त्यागने वाले (**दासस्य**) सेवक के सदृश वर्त्तमान मेघ के (**शिरः**) उत्तम अङ्ग का (**वि**) विशेष करके नाश करता है, वैसे आप (**मनवे**) विचारशील धार्मिक मनुष्य के लिये (**यत्**) जिस (**गातुम्**) भूमि वा वाणी की (**इच्छन्**) इच्छा करते हुए हो, उसके लिये शत्रु के शिर को (**सु**) उत्तम प्रकार (**अवर्त्तयः**) नाश करिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजजनो! जो सूर्य मेघ को जीत कर जगत् को सुख देता है, वैसे दुष्ट शत्रुओं को जीत कर प्रजाओं को सुख दीजिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**युजं॒ हि मामकृ॑था आदिदि॑न्द्र॒ शिरो॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेर्मथा॒यन्।**
**अश्मा॑नं चित्स्व॒र्यं१ वर्त॑मानं॒ प्र च॒क्रिये॑व॒ रोद॑सी म॒रुद्भ्यः॑॥८॥**

**युजम्। हि। माम्। अकृथाः। आत्। इत्। इन्द्र। शिरः। दासस्य। नमुचेः। मथायन्। अश्मानम्। चित्। स्वर्यम्। वर्तमानम्। प्र। चक्रियाऽइव। रोदसी इति। मरुत्ऽभ्यः॥८॥**

**पदार्थः**-(**युजम्**) युक्तम् (**हि**) (**माम्**) (**अकृथाः**) कुर्याः (**आत्**) (**इत्**) (**इन्द्र**) राजन् (**शिरः**) शिरोवद्वर्त्तमानं धनम् (**दासस्य**) जलस्य दातुः (**नमुचेः**) प्रवाहरूपेणाऽविनाशिनो मेघस्य (**मथायन्**) मन्थनं कुर्वन् (**अश्मानम्**) अश्नुवन्तं मेघम् (**चित्**) अपि (**स्वर्यम्**) स्वरेषु शब्देषु साधुः (**वर्तमानम्**) (**प्र**) (**चक्रियेव**) यथा चक्राणि तथा (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**मरुद्भ्यः**) वायुभ्यः॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्यो नमुचेर्दासस्य शिरो मथायञ्चिदपि स्वर्यं वर्त्तमानमश्मानं पृथिव्या सह युनक्ति चक्रियेव मरुद्भ्यो रोदसी भ्रामयति तथादिन्मां हि युजं प्राकृथाः॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजानो! यूयं यथा सूर्यो मेघं वर्षयित्वा जगत्सुखं वायुना भूगोलान् भ्रामयित्वाऽहर्निशं च करोति तथैव विद्याविनयौ राज्ये प्रवेश्य स्वे स्वे कर्मणि सर्वांश्चालयित्वा सुखविजयौ तनयत॥८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! जैसे सूर्य्य (**नमुचेः**) प्रवाहरूप से नहीं नाश होने और (**दासस्य**) जल देने वाले मेघ के (**शिरः**) शिर के सदृश वर्त्तमान कठिन अङ्ग का (**मथायन्**) मन्थन करता हुआ (**चित्**) भी (**स्वर्यम्**) शब्दों में श्रेष्ठ (**वर्त्तमानम्**) वर्त्तमान (**अश्मानम्**) व्याप्त होते हुए मेघ को पृथिवी के साथ युक्त करता और (**चक्रियेव**) जैसे चक्र वैसे (**मरुद्भ्यः**) पवनों से (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को घुमाता है, वैसे (**आत्**) अनन्तर (**इत्**) ही (**माम्**) मुझ को (**हि**) ही (**युजम्**) युक्त (**प्र, अकृथाः**) अच्छे प्रकार करिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजजनो! आप लोग जैसे सूर्य्य मेघ को वर्षाय जगत् के सुख को और पवन से भूगोलों को घुमा के दिन रात्रि करता है, वैसे ही विद्या और विनय की राज्य में वृष्टि कर अपने-अपने कर्म में सब को चलाय के सुख और विजय को उत्पन्न करो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः।**

**अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद्युधये दस्युमिन्द्रः॥९॥**

**स्त्रियः। हि। दासः। आयुधानि। चक्रे। किम्। मा। करन्। अबलाः। अस्य। सेनाः। अन्तः। हि। अख्यत्। उभे इति। अस्य। धेने इति। अथ। उप। प्र। ऐत्। युधये। दस्युम्। इन्द्रः॥९॥**

**पदार्थः**-(**स्त्रियः**) (**हि**) (**दासः**) सेवक इव मेघः (**आयुधानि**) अस्यादीनि शस्त्राणीव (**चक्रे**) करोति (**किम्**) (**मा**) माम् (**करन्**) कुर्य्यात् (**अबलाः**) अविद्यमानं बलं यासां ताः (**अस्य**) (**सेनाः**)

**(अन्तः)** **(हि)** किल **(अख्यत्)** प्रकटयति **(उभे)** मन्दतीव्रे **(अस्य)** मेघस्य **(धेने)** वाचौ **(अथ)** **(उप)** **(प्र)** **(ऐत्)** प्राप्नोति **(युधये)** स- ामाय **(दस्युम्)** **(इन्द्रः)** सूर्य इव राजा॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा दासः स्त्रिय आयुधानि चक्रेऽस्याबलाः सेनाः सन्तीन्द्रो हि मा किं करन् योऽन्तरख्यद् यस्यास्योभे धेने वर्त्तेतेऽथ यमिन्द्रो युधय उप प्रैत् तद्वद्वर्त्तमानं हि दस्युं राजा वशं करेत्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव दासा येषां स्त्रिय एव शत्रुवद्विजयप्रदा वर्त्तेरन् यथा सूर्य्यमेघयोः स- ामो वर्त्तते तथैव दुष्टैः सह राज्ञः स- ामो वर्त्तताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(दासः)** सेवक के सदृश मेघ **(स्त्रियः)** स्त्रियों को **(आयुधानि)** तलवार आदि शस्त्रों के सदृश **(चक्रे)** करता है **(अस्य)** इसकी **(अबलाः)** बल से रहित **(सेनाः)** सेनायें है **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश राजा **(हि)** ही **(मा)** मुझ को **(किम्)** क्या **(करन्)** करे और जो **(अन्तः)** अन्तःकरण में **(अख्यत्)** प्रकट करता है और जिस **(अस्य)** इस मेघ की **(उभे)** दोनों अर्थात् मन्द और तीव्र **(धेने)** वाणी वर्तमान हैं **(अथ)** अनन्तर जिसको सूर्य्य **(युधये)** संग्राम के लिये **(उप, प्र, ऐत्)** समीप प्राप्त होता है, उसके सदृश वर्त्तमान **(हि)** निश्चित **(दस्युम्)** दुष्ट डाकू को राजा वश में करे॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही जन दास हैं कि जिनकी स्त्रियाँ ही शत्रु के सदृश विजय को देने वाली वर्त्तमान होवें और जैसे सूर्य्य और मेघ का स- ाम है, वैसे ही दुष्टजनों के साथ राजा का स- ाम हो॥९॥

**अथ विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

अब विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

**समत्र गावोऽभितोऽनवन्तेहेह वत्सैर्वियुता यदासन्।**

**सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकैर्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन्॥१०॥२७॥**

**सम्। अत्र। गावः। अभितः। अनवन्त। इहऽइह। वत्सैः। विऽयुताः। यत्। आसन्। सम्। ताः। इन्द्रः। असृजत्। अस्य। शाकैः। यत्। ईम्। सोमासः। सुऽसुताः। अमन्दन्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** **(अत्र)** **(गावः)** किरणाः **(अभितः)** **(अनवन्त)** स्तुवन्तु **(इहेह)** अस्मिञ्जगति **(वत्सैः)** **[(वियुताः)]** वियुक्ताः **(यत्)** याः **(आसन्)** भवन्ति **(सम्)** **(ताः)** **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(असृजत्)** सृजति **(अस्य)** मेघस्य **(शाकैः)** शक्तिभिः **(यत्)** ये **(ईम्)** सर्वतः **(सोमासः)** पदार्था ऐश्वर्यवन्तो जीवाः **(सुषुताः)** सुष्ठु निष्पन्नाः **(अमन्दन्)** आनन्दन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यदेहेह गावो वत्सैर्वियुता अभित आसँस्ता भवन्तोऽनवन्त। या अस्य शाकैरत्रेन्द्रो गाः समसृजदीं सुषुताः सोमासो यदमन्दँस्तानिन्द्रः समसृजत्॥१०॥

**भावार्थः**-यथा विवत्सा गावो न शोभन्ते तथैवापत्यवद्वर्त्तमानैर्घनैर्वियुक्तो मेघो न शोभते॥१०॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(इहेह)** इस जगत् में **(गाव:)** किरणें **(वत्सै:)** बछड़ों से **(वियुता:)** वियुक्त **(अभित:)** चारों ओर से **(आसन्)** होती हैं **(ता:)** उनकी आप लोग **(अनवन्त)** स्तुति प्रशंसा करें और जिसको **(अस्य)** इस मेघ के **(शाकै:)** सामर्थ्यों से **(अत्र)** इस संसार में **(इन्द्र:)** सूर्य्य **(सम्)** अच्छे प्रकार **(असृजत्)** उत्पन्न करता है वा **(ईम्)** सब ओर से **(सुषुता:)** उत्तम प्रकार उत्पन्न **(सोमास:)** पदार्थ वा ऐश्वर्य्य वाले जीव **(यत्)** जो **(अमन्दन्)** आनन्दित होते हैं, उनको सूर्य्य **(सम्)** एक साथ उत्पन्न करता है॥१०॥

**भावार्थ:**-जैसे बछड़ों से वियुक्त गौएं नहीं शोभित होती हैं, वैसे ही सन्तानों के सदृश वर्त्तमान सघन अवयवों से रहित मेघ नहीं शोभित होता है॥१०॥

**अथ वीरराजविषयमाह॥**

अब वीरराजविषय को कहते हैं॥

**यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्दन्नरोरवीद् वृषभ: सादनेषु।**
**पुरंदर: पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्रियाणाम्॥११॥**

**यत्। ईम्। सोमा:। बभ्रुऽधूता:। अमन्दन्। अरोरवीत्। वृषभ:। सदनेषु। पुरम्ऽदर:। पपिऽवान्। इन्द्र:। अस्य। पुन:। गवाम्। अददात्। उस्रियाणाम्॥११॥**

**पदार्थ:**-**(यत्)** यत: **(ईम्)** सर्वत: **(सोमा:)** सोमौषधिवद्वर्त्तमाना: **(बभ्रुधूता:)** बभ्रुभिर्धृतविद्यै-र्धूता: पवित्रीकृता: **(अमन्दन्)** आनन्दन्ति। **(अरोरवीत्)** भृशं शब्दायते **(वृषभ:)** वर्षक: **(सादनेषु)** स्थानेषु। अत्रा**न्येषामपी**ति दीर्घ:। **(पुरन्दर:)** य: पुराणि दृणाति स: **(पपिवान्)** य पिबति स: **(इन्द्र:)** सूर्य: **(अस्य)** **(पुन:)** **(गवाम्)** **(अददात्)** ददाति **(उस्रियाणाम्)** किरणानाम्॥११॥

**अन्वय:**-हे राजन्! यथेन्द्रोऽस्य मेघस्य सादनेषु पपिवान् पुरन्दर उस्रियाणां गवां पुनस्तेजोऽददाद् वृषभ: सन्नरोरवीद् यद्येन बभ्रुधूता: सोमा ईं जायन्ते यत: प्राणिनोऽमन्दँस्तथा त्वं प्रजासु वर्त्तस्व॥११॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यो राजा सूर्यमेघस्वभाव: सन्नष्टौ मासान् प्रजाभ्य: करं गृह्णाति चतुरो मासान् यथेष्टान् पदार्थान् ददात्येवं सकला: प्रजा रञ्जयति स एव सर्वत ऐश्वर्य्यवान् भवति॥११॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! जैसे **(इन्द्र:)** सूर्य **(अस्य)** इस मेघ के **(सादनेषु)** स्थानों में **(पपिवान्)** पीवने और **(पुरन्दर:)** पुरों को नाश करने वाला **(उस्रियाणाम्)** किरणों और **(गवाम्)** गौओं के **(पुन:)** फिर तेज को **(अददात्)** देता है **(वृषभ:)** वृष्टि करने वाला हुआ **(अरोरवीत्)** अत्यन्त शब्द करता है **(यत्)** जिससे **(बभ्रुधूता:)** विद्या को धारण किये हुओं से पवित्र किये गये **(सोमा:)** सोम ओषधि के सदृश वर्त्तमान पदार्थ **(ईम्)** सब ओर से उत्पन्न होते हैं, जिससे प्राणी **(अमन्दन्)** आनन्दित होते हैं, वैसे आप प्रजाओं में वर्त्ताव कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य्य [और] मेघ के स्वभाव के सदृश स्वभाव वाला हुआ धर्म्मशास्त्र में कहे हुए अष्ट मास परिमाण परिमित प्रजाओं से कर लेता है और चार मास यथेष्ट पदार्थों को देता है, इस प्रकार सब प्रजाओं को प्रसन्न करता है, वही सब प्रकार से ऐश्वर्यवान् होता है॥११॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा।**

**ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्॥१२॥**

**भद्रम्। इदम्। रुशमाः। अग्ने। अक्रन्। गवाम्। चत्वारि। ददतः। सहस्रा। ऋणम्ऽचयस्य। प्रऽयता। मघानि। प्रति। अग्रभीष्म। नृऽतमस्य। नृणाम्॥१२॥**

**पदार्थः**-(**भद्रम्**) कल्याणम् (**इदम्**) (**रुशमाः**) ये रुशान् हिंसकान् मिन्वति (**अग्ने**) पावकवद्राजन् (**अक्रन्**) कुर्वन्ति (**गवाम्**) किरणानाम् (**चत्वारि**) (**ददतः**) (**सहस्रा**) सहस्राणि (**ऋणञ्चयस्य**) ऋणं चिनोति येन तस्य (**प्रयता**) प्रयत्नेन (**मघानि**) धनानि (**प्रति**) (**अग्रभीष्म**) गृह्णीयाम (**नृतमस्य**) (**नृणाम्**)॥१२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्यर्णञ्चयस्य गवां चत्वारि सहस्रा ददतः सूर्यस्येदं भद्रं रुशमा अक्रँस्तद्वद्वर्त्तमानस्य तस्य नृणां नृतमस्य तव मघानि वयं प्रयता प्रत्यग्रभीष्म॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यः सहस्राणि किरणान् प्रदाय सर्वं जगदानन्दयति तथैव राजाऽसङ्ख्याञ्छुभान् गुणान् दत्वा प्रजाः सततं हर्षयेत्॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! जिस (**ऋणञ्चयस्य**) अर्थात् जिससे ऋण बटोरता है उसके और (**गवाम्**) किरणों के (**चत्वारि**) चार (**सहस्रा**) हजार को (**ददतः**) देते हुए सूर्य के (**इदम्**) इस (**भद्रम्**) कल्याण को (**रुशमाः**) हिंसा करने वालों के फेंकने वाले (**अक्रन्**) करते हैं, उसके सदृश वर्त्तमान उस (**नृणाम्**) मनुष्यों के (**नृतमस्य**) नृतम् अर्थात् अत्यन्त मनुष्यपनयुक्त श्रेष्ठ आपके (**मघानि**) धनों को हम लोग (**प्रयता**) प्रयत्न से (**प्रति, अग्रभीष्म**) प्रतीति से ग्रहण करें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य सहस्रों किरणों को देकर सम्पूर्ण जगत् को आनन्दित करता है, वैसे ही राजा असंख्य उत्तम गुणों को देकर प्रजाओं को निरन्तर प्रसन्न करे॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने।**

**तीव्रा इन्द्रममन्दुः सुतासोऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः॥१३॥**

**सुऽपेशसम्। मा। अव। सृजन्ति। अस्तम्। गवाम्। सहस्रैः। रुशमासः। अग्ने। तीव्राः। इन्द्रम्। अममन्दुः। सुतासः। अक्तोः। विऽउष्टौ। परिऽतक्म्यायाः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**सुपेशसम्**) अतीवसुन्दररूपम् (**मा**) माम् (**अव**) (**सृजन्ति**) (**अस्तम्**) गृहम् (**गवाम्**) किरणानाम् (**सहस्रैः**) (**रुशमासः**) हिंसकहिंसकाः (**अग्ने**) (**तीव्राः**) तीक्ष्णस्वभावाः (**इन्द्रम्**) सूर्यमिव राजानम् (**अममन्दुः**) आनन्दयेयुः (**सुतासः**) विद्यादिशुभगुणैर्निष्पन्नाः (**अक्तोः**) रात्रेः (**व्युष्टौ**) प्रभातवेलायाम् (**परितक्म्यायाः**) परितः सर्वतस्तकन्ति हसन्ति यैः कर्म्मभिस्तेषु भवायाः॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये गवां सहस्रै रुशमासस्तीव्राः सुतासः परितक्म्याया अक्तोर्व्युष्टौ सुपेशसं माऽस्तं गृहमिवाव सृजन्तीन्द्रमममन्दुस्ताँस्त्वं विज्ञाय यथावत् सेवस्व॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि विद्युत्सूर्यरूपोऽग्निर्युक्त्या युष्माभिः सेव्येत तर्ह्यहर्निशं सुखेनैव गच्छेत्॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! जो (**गवाम्**) किरणों के (**सहस्रैः**) सहस्रों समूहों से (**रुशमासः**) हिंसकों के नाश करने वाले (**तीव्राः**) तीक्ष्ण स्वभावयुक्त जो (**सुतासः**) विद्या आदि उत्तम गुणों से उत्पन्न हुए (**परितक्म्यायाः**) सब प्रकार हंसते हैं, जिन कर्म्मों से उनमें हुई (**अक्तोः**) रात्रि की (**व्युष्टौ**) प्रभातवेला में (**सुपेशसम्**) अत्यन्त सुन्दर रूप वाले (**मा**) मुझे को (**अस्तम्**) गृह के सदृश (**अव, सृजन्ति**) उत्पन्न करते हैं और (**इन्द्रम्**) सूर्य्य के सदृश तेजस्वी राजा को (**अममन्दुः**) आनन्दित करें, उनको आप जान के यथावत् सेवा करो॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली और सूर्यरूप अग्नि युक्तिपूर्वक आप लोगों से सेवन किया जाये तो दिन और रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत होवे॥१३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**औच्छत्सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणंचये राजनि रुशमानाम्।**
**अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा॥१४॥**

**औच्छत्। सा। रात्री। परिऽतक्म्या। या। ऋणम्ऽचये। राजनि। रुशमानाम्। अत्यः। न। वाजी। रघुः। अज्यमानः। बभ्रुः। चत्वारि। असनत्। सहस्रा॥१४॥**

**पदार्थः**-(**औच्छत्**) निवासयति (**सा**) (**रात्री**) (**परितक्म्या**) आनन्दप्रदा (**या**) (**ऋणञ्चये**) ऋणं चिनोति यस्मात्तस्मिन् (**राजनि**) (**रुशमानाम्**) हिंसकमन्त्रीणाम् (**अत्यः**) अतति मार्गं व्याप्नोति सः (**न**) इव (**वाजी**) वेगवान् (**रघुः**) लघुः (**अज्यमानः**) चाल्यमानः (**बभ्रुः**) धारकः पोषको वा (**चत्वारि**) (**असनत्**) विभजति (**सहस्रा**) सहस्राणि॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या रुशमानामृणञ्चये राजनि रघुरज्यमानो बभ्रुरत्यो वाजी न चत्वारि सहस्रासनत् सा परितक्म्या रात्री सर्वानौच्छदिति विजानन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं रात्रिदिनकृत्यानि विज्ञाय स्वयमनुष्ठाय सुपरीक्ष्य राजादिभ्य उपदिशत यत एते सर्वे सुखिनः स्युर्यथा सद्योगाम्यश्वो धावति तथैवाऽहर्निशं धावतीति विज्ञेयम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(रुशमानाम्)** हिंसा करने वाले मन्त्रियों के **(ऋणञ्चये)** ऋण को इकट्ठा करता है, जिससे उस **(राजनि)** राजा में **(रघुः)** छोटा **(अज्यमानः)** चलाया गया **(बभ्रुः)** धारण वा पोषण करने वाले और **(अत्यः)** मार्ग को व्याप्त होने वाले **(वाजी)** वेगयुक्त के **(न)** सदृश **(चत्वारि)** चार **(सहस्रा)** सहस्रों का **(असनत्)** विभाग करता है **(सा)** वह **(परितक्म्या)** आनन्द देने वाली **(रात्री)** रात्री सम्पूर्णों को **(औच्छत्)** निवास देती है, यह जानो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वानो! आप लोग रात्रि और दिन के कृत्यों को जान कर और स्वयं करके, उत्तम परीक्षा करके राजा आदिकों के लिये उन कृत्यों का उपदेश दीजिये, जिससे ये सब सुखी हों और जैसे शीघ्र चलने वाला घोड़ा दौड़ता है, वैसे ही दिन और रात्रि व्यतीत होता है, यह जानना चाहिये॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चतुःसहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्ने।**

**घर्मश्चित्तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्वादाम विप्राः॥१५॥२८॥**

**चतुःऽसहस्रम्। गव्यस्य। पश्वः। प्रति। अग्रभीष्म। रुशमेषु। अग्ने। घर्मः। चित्। तप्तः। प्रऽवृजे। यः। आसीत्। अयस्मयः। तम्। ऊँ इति। आदाम। विप्राः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(चतुःसहस्रम्)** चत्वारि सहस्राणि सङ्ख्या यस्य तम् **(गव्यस्य)** गवां किरणानां विकारस्य **(पश्वः)** पशोः **(प्रति)** **(अग्रभीष्म)** प्रतिगृह्णीयाम **(रुशमेषु)** हिंसकमन्त्रिषु **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान राजन् **(घर्मः)** प्रतापः **(चित्)** अपि **(तप्तः)** **(प्रवृजे)** प्रवृजते यस्मिँस्तस्मिन् **(यः)** **(आसीत्)** अस्ति **(अयस्मयः)** हिरण्यमिव तेजोमयः **(तम्)** **(उ)** **(आदाम)** समन्ताद् दद्याम **(विप्राः)** मेधाविनः॥१५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! योऽयस्मयस्तप्तो घर्मः प्रवृजे रुशमेष्वासीत्तं चतुःसहस्रं गव्यस्य पश्वो यथा वयं प्रत्यग्रभीष्म तथा त्वं गृहाण। हे विप्रा! युष्मभ्यं तमु वयमादाम तमस्मभ्यं यूयं चिद् दत्त॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः शीतोष्णसेवनं युक्त्या कर्त्तुं जानन्त्येतद्विद्यां परस्परं ददति ते सर्वदाऽरोगा भवन्तीति॥१५॥

अत्रेन्द्रवीराग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! (**यः**) जो (**अयस्मयः**) सुवर्ण के सदृश तेजःस्वरूप (**तप्तः**) तापयुक्त (**घर्मः**) प्रताप (**प्रवृजे**) अच्छे प्रकार त्याग करते हैं जिसमें उसमें और (**रुशमेषु**) हिंसक मन्त्रियों में (**आसीत्**) वर्त्तमान है (**तम्**) उस (**चतुःसहस्रम्**) चार हजार संख्या युक्त को (**गव्यस्य**) किरणों के विकार और (**पश्वः**) पशु के सम्बन्ध में जैसे हम लोग (**प्रति, अग्रभीष्म**) ग्रहण करें, वैसे आप ग्रहण करो और हे (**विप्राः**) बुद्धिमान् जनो! आप लोगों के लिये उस (**उ**) ही को हम लोग (**आदाम**) सब प्रकार से देवें, उसको हम लोगों के लिये आप लोग (**चित्**) भी दीजिये॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य शीत और उष्ण का सेवन युक्ति से करने को जानते हैं और इसकी विद्या को परस्पर देते हैं, वे सर्वदा रोगरहित होते हैं॥१५॥

इस सूक्त में राजा, वीर, अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ त्रयोदशर्चस्यैकाधिकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अवस्युरात्रेय ऋषिः। १-८[२], १०-१३ इन्द्रः। ८[३] इन्द्रः कुत्सो वा। ८[४] इन्द्र उशना वा। ९ इन्द्रः कुत्सश्च देवताः। १, २, ५, ७, ९, ११ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ४, १० त्रिष्टुप्। ६ भुरिक् त्रिष्टुप्। १३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८, १२ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब तेरह ऋचा वाले इकतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रगुणों को कहते हैं॥

**इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम्।**

**यूथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्टो याति प्रथमः सिषासन्॥१॥**

**इन्द्रः। रथाय। प्रऽवतम्। कृणोति। यम्। अधिऽअस्थात्। मघऽवा। वाजऽयन्तम्। यूथाऽइव। पश्वः। वि। उनोति। गोपाः। अरिष्टः। याति। प्रथमः। सिसासन्॥१॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) सूर्य्य इव सेनेशः (**रथाय**) (**प्रवतम्**) निम्नं स्थलम् (**कृणोति**) करोति (**यम्**) (**अध्यस्थात्**) अधितिष्ठति (**मघवा**) परमपूजितधननिमित्तः (**वाजयन्तम्**) भूगोलान् गमयन्तम् (**यूथेव**) समूहानिव (**पश्वः**) पशूनाम् (**वि**) विशेषेण (**उनोति**) प्रेरयति (**गोपाः**) गवां पालकः (**अरिष्टः**) अहिंसितः (**याति**) गच्छति (**प्रथमः**) (**सिषासन्**) इच्छन्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽरिष्टः प्रथमः सिषासन् मघवेन्द्रो गोपाः पश्वो यूथेव लोकान् व्युनोति वाजयन्तं याति यं लोकमध्यस्थात् तेन रथाय प्रवतं कृणोति तथा भवानाचरतु॥१॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यो राजा रथादिगमनाय मार्गान्निर्माय रथादीनि यानान्यारुह्य गत्वाऽऽगत्य पशुपालः पशूनिव शत्रून्निरोध्य प्रजा सततं पालयति स एव सर्वतो वर्धते॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अरिष्टः**) नहीं मारा गया (**प्रथमः**) प्रथम (**सिषासन्**) इच्छा करता हुआ (**मघवा**) अत्यन्त श्रेष्ठ धनरूप कारणयुक्त (**इन्द्रः**) सूर्य्य के सदृश सेना का ईश (**गोपाः**) गौओं का पालन करने वाला (**पश्वः**) पशुओं के (**यूथेव**) समूहों के सदृश लोकों की (**वि**) विशेष करके (**उनोति**) प्रेरणा करता और (**वाजयन्तम्**) भूगोलों को चलाते हुए को (**याति**) जाता है और (**यम्**) जिस लोक का (**अध्यस्थात्**) अधिष्ठित होता, उससे (**रथाय**) वाहन के लिये (**प्रवतम्**) नीचे स्थल को (**कृणोति**) करता है, वैसे आप आचरण करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में [उपमा और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा रथ आदि के चलने के लिये मार्गों को सुडौल बनाय के उन मार्गों से रथ आदि वाहनों पर चढ़ के तथा जाय और आय के पशुओं का पालन करने वाला पशुओं को जैसे वैसे शत्रुओं को रोक के प्रजाओं का निरन्तर पालन करता है, वही सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व।**

**नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्यमेनांश्चिज्जनिवतश्चकर्थ॥ २॥**

आ। प्र। द्रव। हरिऽवः। मा। वि। वेनः। पिशङ्गऽराते। अभि। नः। सचस्व। नहि। त्वत्। इन्द्र। वस्यः। अन्यत्। अस्ति। अमेनान्। चित्। जनिऽवतः। चकर्थ॥ २॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**प्र**) (**द्रव**) धाव (**हरिवः**) प्रशस्ताश्वयुक्त (**मा**) (**वि**) (**वेनः**) कामयेः (**पिशङ्गराते**) यः पिशङ्गं सुवर्णादिकं राति ददाति तत्सम्बुद्धौ (**अभि**) (**नः**) अस्मान् (**सचस्व**) (**नहि**) (**त्वत्**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**वस्यः**) वसीयान् (**अन्यत्**) अन्यः (**अस्ति**) (**अमेनान्**) अविद्यमाना मेना प्रक्षेपकर्त्र्यः स्त्रियो येषां तान् (**चित्**) (**जनिवतः**) जन्मवतः (**चकर्थ**) कुरु॥ २॥

**अन्वयः**-हे हरिवः पिशङ्गरात इन्द्र राजँस्त्वं मा वि वेनः कामी मा भवेरमेनांश्चिज्जनिवतश्चकर्थ नोऽभि सचस्व शत्रुविजयाय प्रा द्रव यतस्त्वद्वस्योऽन्यन्नह्यस्ति स त्वमस्मान् सुखेन सम्बध्नीहि॥ २॥

**भावार्थः**-यो दीर्घं जीवितुं बलमुन्नेतुं राज्यं कर्त्तुं वर्धितुं च प्रयतते स एव कृतकृत्यो जायते॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त (**पिशङ्गराते**) सुवर्ण आदि के और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन्! आप (**मा, वि, वेनः**) कामना मत करें अर्थात् कामी न हों और (**अमेनान्**) नहीं विद्यमान हैं, प्रक्षेप करने वाली स्त्रियाँ जिनकी उनको (**चित्**) उन्हीं (**जनिवतः**) जन्म वाले (**चकर्थ**) करें और (**नः**) हम लोगों का (**अभि, सचस्व**) सब ओर से सम्बन्ध करें और शत्रु के विजय के लिये (**प्र, आ, द्रव**) अच्छे प्रकार दौड़े जिससे (**त्वत्**) आपसे (**वस्यः**) अत्यन्त वसने वाला (**अन्यत्**) दूसरा (**नहि**) नहीं (**अस्ति**) है, वह आप हम लोगों को सुख से सम्बन्ध कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-जो अतिकालपर्य्यन्त जीवने, बल बढ़ाने, राज्य करने और वृद्धि करने के लिये यत्न करता है, वही कृतकृत्य होता है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उद्यत्सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा।**

**प्राचोदयत् सुदुघा वव्रे अन्तर्वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमोऽवः॥ ३॥**

उत्। यत्। सहः। सहसः। आ। अजनिष्ट। देदिष्टे। इन्द्रः। इन्द्रियाणि। विश्वा। प्र। अचोदयत्। सुऽदुघाः। वव्रे। अन्तः। वि। ज्योतिषा। संऽववृत्वत्। तमः। अवरित्यवः॥ ३॥

**पदार्थः**-(**उत्**) (**यत्**) (**सहः**) बलम् (**सहसः**) बलात् (**आ**) (**अजनिष्ट**) जनयति (**देदिष्टे**) दिशत्युपदिशति (**इन्द्रः**) योगैश्वर्य्ययुक्तः (**इन्द्रियाणि**) श्रोत्रादीनि धनानि वा (**विश्वा**) सर्वाणि (**प्र, अचोदयत्**) प्रेरयति (**सुदुघाः**) सुष्ठा कामप्रपूरिकाः क्रियाः (**वव्रे**) वृणाति (**अन्तः**) मध्ये (**वि**) (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**संववृत्वत्**) संवरणशीलम् (**तमः**) रात्री (**अवः**) रक्ष॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रः सूर्य्यः सहसो यत्सह उदाजनिष्ट विश्वा इन्द्रियाणि देदिष्टे प्राचोदयत् सुदुघा वव्रे तथाऽन्तर्ज्योतिषा संववृत्वत्तमो व्यवः॥३॥

**भावार्थः**-यो राजा बलाद् बलं धनाद्धनं जनयित्वा न्यायप्रकाशेनाऽन्यायाऽन्धकारं निवार्य्य पूर्णकामाः प्रजाः कृत्वा विद्यादिशुभगुणग्रहणाय प्रेरयति स एवाऽखण्डैश्वर्य्यः सदा भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**इन्द्रः**) योगरूप ऐश्वर्य से युक्त सूर्य्य (**सहसः**) बल से जिस (**सहः**) बल को (**उत्, आ, अजनिष्ट**) उत्पन्न करता (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**इन्द्रियाणि**) श्रोत्र आदि इन्द्रियों वा धनों का (**देदिष्टे**) उपदेश देता और (**प्र, अचोदयत्**) प्रेरणा करता और (**सुदुघाः**) उत्तम प्रकार कामनाओं को पूर्ण करने वाली क्रियाओं का (**वव्रे**) स्वीकार करता है, वैसे (**अन्तः**) मध्य में (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**संववृत्वत्**) घेरने वाली (**तमः**) रात्रि की (**वि**) विशेष करके (**अवः**) रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-जो राजा बल से बल और धन से धन को उत्पन्न करके, न्याय के प्रकाश से अन्यायरूप अन्धकार का निवारण कर, पूर्ण मनोरथों से युक्त प्रजाओं को करके विद्या आदि उत्तम गुणों के ग्रहण के लिये प्रेरणा करता है, वही अखण्ड ऐश्वर्य्य वाला सदा होता है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्।**

**ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ॥४॥**

**अनवः। ते। रथम्। अश्वाय। तक्षन्। त्वष्टा। वज्रम्। पुरुऽहूत। द्युऽमन्तम्। ब्रह्माणः। इन्द्रम्। महयन्तः। अर्कैः। अवर्धयन्। अहये। हन्तवै। ऊँ इति॥४॥**

**पदार्थः**-(**अनवः**) मनुष्याः। **अनव इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) (**ते**) तव (**रथम्**) (**अश्वाय**) सद्योगमनाय (**तक्षन्**) रचयन्तु (**त्वष्टा**) सर्वतो विद्यया प्रदीप्तः (**वज्रम्**) शस्त्रास्त्रसमूहम् (**पुरुहूत**) बहुभिः स्तुत (**द्युमन्तम्**) (**ब्रह्माणः**) चतुर्वेदविदः (**इन्द्रम्**) अखण्डैश्वर्यं राजानम् (**महयन्तः**) पूजयन्तः (**अर्कैः**) सत्कारसाधकतमैर्विचारैर्वचनैः कर्मभिर्वा (**अवर्धयन्**) वर्धयन्ति (**अहये**) मेघाय (**हन्तवै**) हन्तुम् (**उ**) वितर्के॥४॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत राजन्! येऽनवस्तेऽश्वाय रथं तक्षन् त्वष्टा द्युमन्तं वज्रं निपातयति महयन्तो ब्रह्माणोऽर्कैस्त्वामिन्द्रमवर्धयन्नहये हन्तवैऽवर्धयंस्तानु त्वं सततं सत्कुरु॥४॥

**भावार्थः**-राज्ञां योग्यतास्ति येऽन्तःकरणेन राज्योन्नतिं कर्त्तुमिच्छेयुस्ते राज्ञा सदैव माननीयाः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से स्तुति किये गये राजन्! जो **(अनवः)** मनुष्य **(ते)** आपके **(अश्वाय)** शीघ्र गमन के लिये **(रथम्)** वाहन को **(तक्षन्)** रचें और **(त्वष्टा)** सब प्रकार से विद्या से प्रदीप्तजन **(द्युमन्तम्)** प्रकाशयुक्त **(वज्रम्)** शस्त्र और अस्त्र के समूह को गिराता है और **(महयन्तः)** प्रशंसा करते हुए **(ब्रह्माणः)** चारों वेदों के जानने वाले विद्वान् **(अर्कैः)** सत्कार के अत्यन्त सिद्ध करने वाले विचारों वचनों वा कर्मों से आप **(इन्द्रम्)** अखण्ड ऐश्वर्य्ययुक्त राजा की **(अवर्धयन्)** वृद्धि करते हैं और **(अहये)** मेघ के लिये **(हन्तवै)** नाश करने की वृद्धि करते हैं उनका **(उ)** तर्क पूर्वक आप निरन्तर सत्कार करिये॥४॥

**भावार्थः**-राजाओं की योग्यता है कि जो अन्तःकरण से राज्य की उन्नति करने की इच्छा करें, वे सदा ही सत्कार करने योग्य हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वृष्णे यत्ते वृषणो अर्कमर्चानिन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः।**

**अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्॥५॥२९॥**

**वृष्णे। यत्। ते। वृषणः। अर्कम्। अर्चान्। इन्द्र। ग्रावाणः। अदितिः। सऽजोषाः। अनश्वासः। ये। पवयः। अरथाः। इन्द्रऽइषिताः। अभि। अवर्तन्त। दस्यून्॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृष्णे)** वृष्टिकराय **(यत्)** यस्मै **(ते)** तुभ्यम् **(वृषणः)** वृष्टिनिमित्ताः **(अर्कम्)** पूजनीयम् **(अर्चान्)** पूजयन्तु **(इन्द्र)** दुष्टदलहर **(ग्रावाणः)** मेघाः **(अदितिः)** अन्तरिक्षम् **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(अनश्वासः)** अविद्यमाना अश्वा येषु ते **(ये)** **(पवयः)** चक्राणि **(अरथाः)** अविद्यमाना रथा येषान्ते **(इन्द्रेषिताः)** इन्द्रेण स्वामिना प्रेरिताः **(अभि)** **(अवर्त्तन्त)** वर्त्तन्ते **(दस्यून्)** दुष्टाञ्चोरान्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यद्यस्मै वृष्णे तेऽर्कं प्रजाजना अर्चान् स यथा वृषणो ग्रावाणः सजोषा अदितिश्च वर्त्तन्ते तथा भव येऽरथा अनश्वास इन्द्रेषिताः पवयो दस्यूनभ्यवर्त्तन्त तांस्त्वं सततं सत्कुर्याः॥५॥

**भावार्थः**-ये राजानो मेघवत्सुखवर्षका आकाशवदक्षोभा अग्न्यादियानानि रचयित्वेतस्ततो भ्रमणं विधाय दस्यून् हत्वा प्रजाः प्रसादयेयुस्ते भाग्यशालिनो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्ट दलों के नाश करने वाले राजन्! **(यत्)** जिन **(वृष्णे)** वृष्टि करने वाले **(ते)** आपके लिये **(अर्कम्)** सत्कार करने योग्य का प्रजाजन **(अर्चान्)** सत्कार करें वह जैसे **(वृषणः)** वर्षा के निमित्त **(ग्रावाणः)** मेघ और **(सजोषाः)** समान प्रीति का सेवन करने वाला और **(अदितिः)** अन्तरिक्ष वर्त्तमान हैं, वैसे हूजिये और **(ये)** जो **(अरथाः)** वाहनों से रहित **(अनश्वासः)** घोड़ों से रहित

**(इन्द्रेषिताः)** स्वामी से प्रेरणा किये गये **(पवयः)** चक्र **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों के **(अभि)** सन्मुख **(अवर्त्तन्त)** वर्त्तमान हैं, उनका आप निरन्तर सत्कार कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजाजन मेघ के सदृश सुख वर्षाने और आकाश के सदृश नहीं हिलने वाले, अग्नि आदिकों के वाहनों को रच के इधर-उधर भ्रमण करके दुष्ट चोरों का नाश करके प्रजाओं को प्रसन्न करें, वे भाग्यशाली होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकर्थ।**
**शक्तीवो यद्विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः॥६॥**

**प्र। ते। पूर्वाणि। करणानि। वोचम्। प्र। नूतना। मघऽवन्। या। चकर्थ। शक्तिऽवः। यत्। विऽभराः। रोदसी इति। उभे इति। जयन्। अपः। मनवे। दानुऽचित्राः॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(ते)** तुभ्यम् **(पूर्वाणि)** प्राचीनानि **(करणानि)** कुर्वन्ति यैस्तानि साधनानि **(वोचम्)** उपदिशेयम् **(प्र)** **(नूतना)** नवीनानि **(मघवन्)** पूजितैश्वर्य **(या)** यानि **(चकर्थ)** करोषि **(शक्तीवः)** शक्तिर्बहुविधं सामर्थ्यं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(यत्)** यथा **(विभराः)** ये विशेषेण विभरन्ति पोषयन्ति ते **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(उभे)** **(जयन्)** **(अपः)** सूर्यो जलानीव शत्रुप्राणान् **(मनवे)** मनुष्याय **(दानुचित्राः)** चित्राण्यद्भुतानि दानानि येषान्ते॥६॥

**अन्वयः**-हे शक्तीवो मघवन् राजन्! विपश्चितो यथा पूर्वाणि करणानि या नूतना प्र साध्नुवन्ति तान्यहं ते तथा प्र वोचं ये विभरा दानुचित्रा विद्वांसो मनव उभे रोदसी विज्ञापयन्ति तैः सह त्वं मनवेऽपो जयँस्तेषां सुखाय सत्कारं चकर्थ॥६॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना! ये विद्वांसो युष्मान् सनातनीं राजनीतिं विजयोपायाँश्च शिक्षेरँस्तान् स्वात्मवद्भवन्तः सत्कुर्वन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(शक्तीवः)** बहुत प्रकार **[की]** सामर्थ्य से युक्त **(मघवन्)** श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य वाले राजन्! बुद्धिमान् जन **(यत्)** जैसे **(या)** जिन **(पूर्वाणि)** प्राचीन **(करणानि)** साधनों और जिन **(नूतना)** नवीनों को **(प्र)** सिद्ध करते हैं, उन साधनों का मैं **(ते)** आपके लिये वैसे **(प्र, वोचम्)** उपदेश करूं और जो **(विभराः)** विशेष करके पोषण करने और **(दानुचित्राः)** अद्भुत दान वाले विद्वान् जन **(मनवे)** मनुष्य के लिये **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को जनाते हैं, उनके साथ आप मनुष्य के लिये **(अपः)** सूर्य्य जैसे जलों को वैसे शत्रुओं के प्राणों को **(जयन्)** जीतते हुए उनके सुख के लिये सत्कार को **(चकर्थ)** करते हैं॥६॥

**भावार्थ:**-हे राजा आदि जनो! जो विद्वान् जन आप लोगों के लिये अनादिकाल से सिद्ध राजनीति और विजय के उपायों की शिक्षा करें, उनको अपने आत्मा के सदृश आप लोग सत्कार करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तदिन्नु ते करणं दस्म विप्राहिं यद् घ्नन्नोजो अत्रामिमीथाः।**

**शुष्णस्य चित्परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूँरसेधः॥७॥**

**तत्। इत्। नु। ते। करणम्। दस्म। विप्र। अहिम्। यत्। घ्नन्। ओजः। अत्र। अमिमीथाः। शुष्णस्य। चित्। परि। मायाः। अगृभ्णाः। प्रऽपित्वम्। यन्। अप। दस्यून्। असेधः॥७॥**

**पदार्थ:**-(**तत्**) (**इत्**) एव (**नु**) (**ते**) तव (**करणम्**) करोति येन तत् (**दस्म**) उपक्षेत: (**विप्र**) मेधाविन् (**अहिम्**) मेघमिव दोषान् (**यत्**) (**घ्नन्**) विनाशयन् (**ओजः**) जलमिव बलम् (**अत्र**) अस्मिन् जगति (**अमिमीथाः**) निर्माणं कुर्याः (**शुष्णस्य**) बलस्य (**चित्**) अपि (**परि**) (**मायाः**) प्रज्ञाः (**अगृभ्णाः**) गृहाण (**प्रपित्वम्**) प्राप्तिम् (**यन्**) (**अप**) (**दस्यून्**) दुष्टान् (**असेधः**) निवारयतु॥७॥

**अन्वय:**-हे दस्म विप्र! भवान् सूर्योऽहिं हन्ति अत्रौजो यन्निपातयति तत्करणं यथा तथा शत्रुबलं घ्नन्नत्र त्वं शुष्णस्य वृद्धिममिमीथाश्चिदपि मायाः पर्यगृभ्णाः प्रपित्वं यन् दस्यूनपासेधस्तस्मै ते तुभ्यं न्वित् सुखं प्राप्नुयात्॥७॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! यथेश्वरेण सूर्य्यमेघसम्बन्धी निर्मित- स्तथैवान्येऽपि बहवः सम्बन्धा रचिता इति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थ:**-हे (**दस्म**) उपेक्षा करने वाले (**विप्र**) बुद्धिमान्! आप सूर्य्य (**अहिम्**) जैसे मेघ को वैसे दोषों को नाश करते हैं (**अत्र**) वा इस जगत् में (**ओजः, यत्**) जल के सदृश जो बल को गिराते हैं (**तत्**) वह (**करणम्**) साधन जैसे हो, वैसे शत्रु के बल का (**घ्नन्**) नाश करते हुए इस जगत् में तुम (**शुष्णस्य**) बल की वृद्धि का (**अमिमीथाः**) निर्माण करो (**चित्**) और (**मायाः**) बुद्धियों का (**परि, अगृभ्णाः**) सब ओर से ग्रहण करो और (**प्रपित्वम्**) प्राप्ति को (**यन्**) प्राप्त होते हुए (**दस्यून्**) दुष्टों का (**अप, असेधः**) निवारण करें उन (**ते**) आपके लिये (**नु**) तर्क-वितर्क के साथ (**इत्**) ही सुख प्राप्त होवे॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वन्! जैसे ईश्वर ने सूर्य्य और मेघ का सम्बन्ध रचा वैसे ही अन्य भी बहुत सम्बन्ध रचे, यह जानना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वमपो यदवे तुर्वशायारमयः सुदुघाः पार इन्द्र।**

**उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद्वामुशनारन्त देवाः॥८॥**

**त्वम्। अपः। यदवे। तुर्वशाय। अरमयः। सुऽदुघाः। पारः। इन्द्र। उग्रम्। अयातम्। अवहः। ह। कुत्सम्। सम्। ह। यत्। वाम्। उशना। अरन्त। देवाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अपः)** जलानीव कर्माणि **(यदवे)** मनुष्याय **(तुर्वशाय)** सद्यो वशीकरणसमर्थाय **(अरमयः)** रमय **(सुदुघाः)** सुष्ठु दोग्धुमर्हाः **(पारः)** यः पारयिता **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(उग्रम्)** दुर्जयम् **(अयातम्)** अप्राप्तम् **(अवहः)** प्राप्नुहि **(ह)** किल **(कुत्सम्)** **(सम्)** **(ह)** **(यत्)** **(वाम्)** युवाम् **(उशना)** कामयमानाः **(अरन्त)** रमन्ताम् **(देवाः)** विद्वांसः॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! पारः सँस्त्वं तुर्वशाय यदेव सुदुघा अपोऽरमय उग्रमयातं कुत्सं ह समवहः यद् यत्रोशना देवा अरन्त तत्र ह वां रमयेयुः॥८॥

**भावार्थः**-ऐश्वर्य्यवान् मनुष्योऽन्येभ्यो धनधान्यादिकं दद्याद्यत्र विद्वांसो रमेरंस्तत्रैव सर्वे क्रीडेरन्॥८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यदाता! **(पारः)**पार लगाने वाले होते हुए **(त्वम्)** आप **(तुर्वशाय)** शीघ्र वश करने में समर्थ **(यदवे)** मनुष्य के लिये **(सुदुघाः)** उत्तम प्रकार पूर्ण करने योग्य **(अपः)** जलों के सदृश कर्म्मों को **(अरमयः)** रमावें और **(उग्रम्)** बड़े कष्ट से जिसको जीत सकें उस **(अयातम्)** न आये हुए **(कुत्सम्)** कुत्सित को **(ह)** निश्चय **(सम्, अवहः)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवें तथा **(यत्)** जिसमें **(उशना)** कामना करते हुए **(देवाः)** विद्वान् जन **(अरन्त)** रमें, उसमें **(ह)** निश्चय **(सम्, अवहः)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवें तथा **(यत्)** जिसमें **(उशना)** कामना करते हुए **(देवाः)** विद्वान् जन **(अरन्त)** रमें उसमें **(ह)** निश्चय **(वाम्)** आप दोनों अर्थात् आप को और पूर्वोक्त मनुष्य को रमावें॥८॥

**भावार्थः**-ऐश्वर्य्य वाला मनुष्य अन्य जनों के लिये धन और धान्य आदिक देवें और जहाँ विद्वान् रमें, वहाँ ही सम्पूर्ण जन क्रीड़ा करें॥८॥

**अथ यन्त्रकलाविषयं शिल्पकर्माह॥**

अब यन्त्रकलाविषय शिल्पकर्म को कहते हैं॥

**इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना वामत्या अपि कर्णे वहन्तु।**
**निः षीमद्भ्यो धमथो निः षधस्थान्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि॥९॥**

**इन्द्राकुत्सा। वहमाना। रथेन। आ। वाम्। अत्याः। अपि। कर्णे। वहन्तु। निः। सीम्। अत्ऽभ्यः। धमथः। निः। सधऽस्थात्। मघोनः। हृदः। वरथः। तमांसि॥९॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्राकुत्सा)** इन्द्रश्चकुत्सश्चेन्द्राकुत्सौ विद्युदाघातौ **(वहमाना)** प्रापयन्तौ **(रथेन)** यानेन **(आ)** **(वाम्)** युवयोः **(अत्याः)** सततं गामिनोऽश्वाः **(अपि)** **(कर्णे)** कुर्वन्ति येन तस्मिन् **(वहन्तु)** गमयन्तु **(निः)** नितराम् **(सधस्थात्)** सह स्थानात् **(मघोनः)** धनाढ्यान् **(हृदः)** हृद इव प्रियान् **(वरथः)** स्वीकुरुथः **(तमांसि)** रात्रीः॥९॥

**अन्वयः**:-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथेन्द्राकुत्सा रथेन वहमाना स्तः विद्वांसः कर्णे वामा वहन्तु तथाऽत्या अपि सर्वान् वोढुं शक्नुवन्ति यदि विद्युदग्नी अद्भ्यो निर्धमथस्तर्हि तौ सधस्थात् सीमावहतो यदि हृदो मघोनो निर्वरथस्तर्हि सुखेन तमांसि गमयितुं शक्नुयातम्॥९॥

**भावार्थः**:-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यद्यग्निजलसंयोगं कृत्वा सन्धम्य बाष्पेन यन्त्रकलाः संहत्य यानादीनि चालयेयुस्तर्हि स्वयं सखींश्च धनाढ्यान् कृत्वा दुःखेभ्यः पारं गच्छेयुर्गमयेयुश्च॥९॥

**पदार्थः**:-हे अध्यापको और उपदेशको! जैसे **(इन्द्राकुत्सा)** बिजुली और बिजुली का आघात **(रथेन)** वाहन से **(वहमाना)** प्राप्त कराते हुए वर्त्तमान हैं वा विद्वान् जन **(कर्णे)** करते हैं जिससे उसमें **(वाम्)** आप दोनों को **(आ, वहन्तु)** पहुंचावें वैसे **(अत्याः)** निरन्तर चलने वाले घोड़े **(अपि)** भी सब को प्राप्त कराने को समर्थ होते हैं और जो बिजुली और अग्नि **(अद्भ्यः)** जलों से **(निः, धमथः)** शब्द करते हैं तो वे दोनों **(सधस्थात्)** तुल्य स्थान से **(सीम्)** सब प्रकार प्राप्त कराते और जो **(हृदः)** हृदयों के सदृश प्रिय **(मघोनः)** धनाढ्य पुरुषों का **(निः)** अत्यन्त **(वरथः)** स्वीकार करते हैं तो सुख से **(तमांसि)** अन्धकारों को हटाने को समर्थ होओ॥९॥

**भावार्थः**:-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो अग्नि और जल का संयोग कर शब्द कर और भाफ से यन्त्र कलाओं को ताड़ित करके वाहनादिकों को चलावें तो आप अपने को और मित्रों को धन से युक्त करके दुःखों के पार जावें और अन्यों को भी पार करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वातस्य युक्तान्त्सुयुजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः।**

**विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्॥१०॥३०॥**

**वातस्य। युक्तान्। सुऽयुजः। चित्। अश्वान्। कविः। चित्। एषः। अजगन्। अवस्युः। विश्वे। ते। अत्र। मरुतः। सखायः। इन्द्र। ब्रह्माणि। तविषीम्। अवर्धन्॥१०॥**

**पदार्थः**:-**(वातस्य)** वायोर्वेगेन **(युक्तान्)** **(सुयुजः)** ये सुष्ठु युञ्जते तान् **(चित्)** अपि **(अश्वान्)** आशुगामिनोऽग्न्यादीन् **(कविः)** मेधावी **(चित्)** अपि **(एषः)** वर्त्तमानः **(अजगन्)** गमयेयुः **(अवस्युः)** आत्मनोऽवो रक्षणमिच्छुः **(विश्वे)** सर्वे **(ते)** तव **(अत्र)** अस्मिञ्छिल्पविद्याकर्मणि **(मरुतः)** ऋत्विजो विद्वांसः **(सखायः)** सुहृदः **(इन्द्र)** विद्वन् **(ब्रह्माणि)** धनान्यन्नानि वा **(तविषीम्)** सेनाम् **(अवर्धन्)** वर्धयन्ति॥१०॥

**अन्वयः**:-हे इन्द्र! ये तेऽत्र सखायो विश्वे मरुतो ब्रह्माणि तविषीं चावर्धन् वातस्य युक्तान् सुयुजश्चिदश्वानजगन् गमयेयुस्तानेषोऽवस्युः कविश्चिद्भवान् सततं सत्कुर्यात्॥१०॥

**भावार्थ:**-हे ऐश्वर्यमिच्छुक! येऽग्न्यादिपदार्थविद्ययाऽद्भुतानि यानादिकार्य्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति तैः सह मैत्रीं कृत्वा विद्यां प्राप्याभीष्टानि कार्य्याणि साधयन् भवान् महदैश्वर्य्यं प्राप्नुयात्॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** विद्वन्! जो **(ते)** आपके **(अत्र)** इस शिल्पविद्या के जाननेरूप कार्य्य में **(सखायः)** मित्र **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(मरुतः)** ऋतु-ऋतु में यज्ञ करने वाले विद्वान् जन **(ब्रह्माणि)** धनों वा अन्नों की और **(तविषीम्)** सेना की **(अवर्धन्)** वृद्धि करते हैं और **(वातस्य)** वायु के वेग से **(युक्तान्)** युक्त हुए **(सुयुजः)** उत्तम प्रकार पदार्थों के मेल करने वाले **(चित्)** निश्चित **(अश्वान्)** शीघ्रगामी अर्थात् तीव्र वेगयुक्त अग्नि आदि पदार्थों को **(अजगन्)** चलावें उनको **(एषः)** यह वर्तमान **(अवस्युः)** अपने को रक्षण की इच्छा रखने वाले **(कविः, चित्)** निश्चित बुद्धिमान् आप निरन्तर सत्कार करें॥१०॥

**भावार्थ:**-हे ऐश्वर्य्य की इच्छा रखने वाले पुरुष! जो अग्नि आदि पदार्थों की विद्या से विचित्र आश्चर्य्यजनक वाहन आदि कार्य्यों की सिद्धि कर सकते हैं, उनके साथ मित्रता करके और उनसे विद्या को प्राप्त हो अभीष्ट कार्य्यों को सिद्धि करते हुए आप अत्यन्त ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सूर॑श्चिद्रथं॒ परि॑तक्म्यायां॒ पूर्वं॑ कर॒दुप॑रं जूजु॒वांस॑म्।**

**भर॑च्च॒क्रमेत॑शः॒ सं रि॑णाति पु॒रो दध॑त् सनिष्यति॒ क्रतुं॑ नः॥११॥**

**सूरः॑। चि॒त्। रथ॑म्। परि॑ऽतक्म्यायाम्। पूर्व॑म्। क॒रत्। उप॑रम्। जूजु॒ऽवांस॑म्। भर॑त्। च॒क्रम्। एत॑शः। सम्। रि॒णा॒ति॒। पु॒रः। दध॑त्। स॒नि॒ष्य॒ति॒। क्रतु॑म्। नः॒॥११॥**

**पदार्थ:**-**(सूरः)** सूर्य्यः **(चित्)** इव **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(परितक्म्यायाम्)** परितः सर्वतस्तक्मानि भवन्ति यस्यां तस्यां रात्रौ **(पूर्वम्)** प्रथमम् **(करत्)** कुर्य्यात् **(उपरम्)** मेघमिव। **उपरमिति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(जूजुवांसम्)** अतिशयेन वेगवन्तम् **(भरत्)** धरेत् **(चक्रम्)** कलाचालकम् **(एतशः)** अश्वोऽश्विकमिव **(सम्)** **(रिणाति)** गच्छति **(पुरः)** पुरस्तात् **(दधत्)** दधाति **(सनिष्यति)** सम्भजेत् **(क्रतुम्)** प्रज्ञां कर्माणि वा **(नः)** अस्माकम्॥११॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यः सूरश्चित्परितक्म्यायां पूर्वं रथमुपरमिव करज्जूजुवांसं चक्रमेतश इवा भरत् पुरश्चक्रं सं रिणाति यानं दधन्नः क्रतुं सनिष्यति तं सर्वथा सत्कुर्य्याः॥११॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यदि मनुष्या कलाकौशलेन यानयन्त्राणि विधाय जलाग्निप्रयोगेण चक्राणि सञ्चाल्य कार्याणि साध्नुयुस्तर्हि सूर्यवायु मेघमिव बहुभारं यानमन्तरिक्षे जले स्थले च गमयितुं शक्नुयुः॥११॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जो **(सूरः)** सूर्य्य के **(चित्)** सदृश **(परितक्म्यायाम्)** सर्व ओर से हर्ष होते हैं जिस रात्रि में उसमें **(पूर्वम्)** प्रथम **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(उपरम्)** मेघ के सदृश **(करत्)** करे और

**(जूजुवांसम्)** अत्यन्त वेग से युक्त **(चक्रम्)** कलाओं के चलाने वाले चक्र को **(एतशः)** जैसे घोड़ा घोड़े वाले को वैसे सब प्रकार **(भरत्)** धारण करे **(पुरः)** पहिले चक्र को **(सम्, रिणाति)** प्राप्त होता, वाहन को **(दधत्)** धारण करता और **(नः)** हम लोगों की **(क्रतुम्)** बुद्धि वा कर्म्मों का **(सनिष्यति)** सेवन करे, उसका आप सब प्रकार सत्कार करें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य कलाकौशल से वाहनों के यन्त्रों को रच के जल और अग्नि के अत्यन्त योग से चक्रों को उत्तम प्रकार चलाय कार्य्यों को सिद्ध करें तो जैसे सूर्य्य और पवन मेघ को वैसे बहुत भारयुक्त वाहन को अन्तरिक्ष जल और स्थल में पहुंचाने को समर्थ होवें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन्।**
**वदन् ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति॥१२॥**

**आ। अयम्। जनाः। अभिऽचक्षे। जगाम। इन्द्रः। सखायम्। सुतऽसोमम्। इच्छन्। वदन्। ग्रावा। अव। वेदिम्। भ्रियाते। यस्य। जीरम्। अध्वर्यवः। चरन्ति॥१२॥**

**पदार्थः**-**(आ) (अयम्) (जनाः)** प्रसिद्धा विद्वांसः **(अभिचक्षे)** अभितः ख्यातुम् **(जगाम)** गच्छेत् **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यवान् **(सखायम्)** मित्रम् **(सुतसोमम्)** निष्पादितपदार्थविद्यम् **(इच्छन्) (वदन्)** उपदिशन् **(ग्रावा)** गर्जनायुक्तो मेघ इव **(अव) (वेदिम्)** अग्निस्थानम् **(भ्रियाते)** धरेताम् **(यस्य) (जीरम्)** वेगम् **(अध्वर्यवः)** विद्यायज्ञसम्पादकाः **(चरन्ति)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे जना! योऽयमिन्द्रोऽभिचक्षे सुतसोमं सखायमिच्छन् ग्रावेव वदन् वेदिमवा जगाम यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति यौ द्वौ शिल्पविद्यां भ्रियाते तौ सदैव भवन्तः सत्कुर्वन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्याप्राप्तये विद्यादानाय वा सर्वैः सह मैत्रीं कृत्वा सङ्गच्छेरँस्ते सर्वां विद्यां प्राप्तुं शक्नुयुः॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(जनाः)** प्रसिद्ध विद्वान् जनो! जो **(अयम्)** यह **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्य वाला **(अभिचक्षे)** सब ओर से प्रसिद्ध होने को **(सुतसोमम्)** संपन्न की पदार्थविद्या जिसने ऐसे **(सखायम्)** मित्र की **(इच्छन्)** इच्छा करता और **(ग्रावा)** गर्जना से युक्त मेघ के सदृश **(वदन्)** उपदेश देता हुआ जन **(वेदिम्)** अग्नि के स्थान को **(अव, आ, जगाम)** प्राप्त होवे **(यस्य)** जिसके **(जीरम्)** वेग को **(अध्वर्यवः)** विद्यारूप यज्ञ के सम्पादक अर्थात् उक्त यज्ञ को प्रसिद्ध करने वाले जन **(चरन्ति)** प्राप्त होते हैं और जो दो शिल्पविद्या को **(भ्रियाते)** धारण करें, उन दोनों का सदा ही आप लोग सत्कार करें॥१२॥

**भावार्थः**-जो जन विद्या की प्राप्ति तथा विद्या देने के लिये सम्पूर्ण जनों के साथ मित्रता करके मिलें, वे सम्पूर्ण विद्या के प्राप्त होने को समर्थ होवें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन्।**

**वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम॥१३॥३१॥**

**ये। चाकनन्त। चाकनन्त। नु। ते। मर्ताः। अमृत। मो इति। ते। अंहः। आ। अरन्। ववन्धि। यज्यून्। उत। तेषु। धेहि। ओजः। जनेषु। येषु। ते। स्याम॥१३॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**चाकनन्त**) कामयन्ते (**चाकनन्त**) (**नू**) सद्यः (**ते**) (**मर्त्ताः**) मनुष्याः (**अमृत**) आत्मस्वरूपेण मरणधर्मरहित (**मो**) (**ते**) (**अंहः**) अपराधम् (**आ**) (**अरन्**) समन्तात् प्राप्नुयुः (**वावन्धि**) बध्नन्ति (**यज्यून्**) सत्यभाषणादियज्ञानुष्ठातॄन् (**उत**) अपि (**तेषु**) (**धेहि**) (**ओजः**) पराक्रमम् (**जनेषु**) सत्याचरणेषु मनुष्येषु (**येषु**) (**ते**) तव (**स्याम**) भवेम॥१३॥

**अन्वयः**-हे अमृत विद्वन्! ये विद्याविनयसत्याचाराश्चाकनन्तान्यार्थमपि चाकनन्त ते मर्त्ताः सत्यं नू चाकनन्त तेंऽहो मो आरन् त उत यज्यून् वावन्धि येषु जनेषु वयं ते तव सखायः स्याम तेष्वस्मासु त्वमोजो धेहि॥१३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ये विद्यासत्याचरणपरोपकारानधर्म्माचरणराहित्यं च कामयित्वा सर्वोपकारमिच्छेयुस्ते धन्याः सन्तु वयमपीदृशाः स्यामेतीच्छामेति॥१३॥

अत्रेन्द्रविद्वच्छिल्पगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकत्रिंशत्तमं सूक्तमेकत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अमृत**) आत्मस्वरूप से मरणधर्म्मरहित विद्वान्! (**ये**) जो विद्या, विनय और सत्य आचरणों की (**चाकनन्त**) कामना करते हैं तथा अन्यों के लिये भी (**चाकनन्त**) कामना करते हैं, (**ते**) वे (**मर्त्ताः**) मनुष्य सत्य की (**नू**) शीघ्र कामना करते हैं और (**ते**) वे (**अंहः**) अपराध को (**मो**) नहीं (**आ, अरन्**) सब प्रकार से प्राप्त हों और वे (**उत**) ही (**यज्यून्**) सत्यभाषण आदि यज्ञ के अनुष्ठान करने वाले जनों को (**वावन्धि**) बन्धनयुक्त करते हैं तथा (**येषु**) जिन (**जनेषु**) सत्य आचरण करने वाले मनुष्यों में हम लोग (**ते**) आपके मित्र (**स्याम**) होवें (**तेषु**) उन हम लोगों में आप (**ओजः**) पराक्रम को (**धेहि**) धारण कीजिये॥१३॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो जन विद्या, सत्य आचरण तथा परोपकार की और अधर्म्म आचरण के त्याग की कामना करके सब के उपकार की इच्छा करें, वे धन्यवादयुक्त होवें और हम लोग भी ऐसे होवें, ऐसी इच्छा करें॥१३॥

इस सूक्त में इन्द्र और शिल्पविद्या के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इकतीसवां सूक्त और इकतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य गातुरात्रेय ऋषिः। इन्द्रो देवता।१, ७, ९, ११ त्रिष्टुप्। २, ३, ४, १०, १२, निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ८ स्वराट् पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब बारह ऋचा वाले बत्तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**अदर्दुरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः।**

**महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्॥१॥**

**अदर्दः। उत्सम्। असृजः। वि। खानि। त्वम्। अर्णवान्। बद्बधानान्। अरम्णाः। महान्तम्। इन्द्र। पर्वतम्। वि। यत्। वरिति वः। सृजः। वि। धाराः। अव। दानवम्। हन्निति हन्॥१॥**

**पदार्थः**-(**अदर्दः**) विदृणाति (**उत्सम्**) कूपमिव (**असृजः**) सृजति (**वि**) (**खानि**) इन्द्रियाणि (**त्वम्**) (**अर्णवान्**) नदीः समुद्रान् वा (**बद्बधानान्**) प्रबद्धान् (**अरम्णाः**) रमय (**महान्तम्**) (**इन्द्र**) शत्रूणां दारयिता राजन् (**पर्वतम्**) पर्वताकारं मेघम् (**वि**) (**यत्**) यः (**वः**) युष्मभ्यम् (**सृजः**) सृजति (**वि**) (**धाराः**) जलप्रवाहा इव वाचः (**अव**) (**दानवम्**) दुष्टजनम् (**हन्**) सन्ति॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य उत्समिव महान्तं पर्वतं हत्वा बद्बधानानदर्दोऽर्णवान् सृजस्तथा त्वं खानि वि सृजास्मान् व्यरम्णा यद्यः सूर्य्यो धारा इव दानवमव हन् वो व्यसृजस्तं सत्कुरु॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजा यथा सूर्य्यो निपातितमेघेन नदीसमुद्रादीन् पिपर्ति कूलानि विदारयति तथैवाऽन्यायं निपात्य न्यायेन प्रजाः प्रपूर्य दुष्टाञ्छिन्द्यात्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) शत्रुओं के नाश करने वाले राजन्! जिस प्रकार सूर्य्य (**उत्सम्**) कूप के समान (**महान्तम्**) बड़े (**पर्वतम्**) पर्वताकार मेघ का नाश करके (**बद्बधानान्**) अत्यन्त बंधे हुओं को (**अदर्दः**) नाश कता है और (**अर्णवान्**) नदियों वा समुद्रों का (**सृजः**) त्याग करता है, वैसे (**त्वम्**) आप (**खानि**) इन्द्रियों को (**वि**) विशेष करके त्याग कीजिये और हम लोगों का (**वि, अरम्णाः**) विशेष रमण कराइये और (**यत्**) जो सूर्य्य (**धाराः**) जल के प्रवाहों के सदृश वाणियों का और (**दानवम्**) दुष्ट जन का (**अव, हन्**) नाश करता है (**वः**) आप लोगों के लिये (**वि, असृजः**) विशेषकर त्यागता अर्थात् जलादि का त्याग करता है, उसका सत्कार प्रशंसा उत्तम किया कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा जैसे सूर्य्य गिराये हुए मेघ से नदी और समुद्र आदिकों को पूर्ण करता और तटों को तोड़ता है, वैसे ही अन्याय को गिरा और न्याय से प्रजा का पालन करके दुष्टों का नाश करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्धानाँ अरंहु ऊधः पर्वतस्य वज्रिन्।**

**अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः॥ २॥**

त्वम्। उत्सान्। ऋतुऽभिः। बद्धानान्। अरंह। ऊधः। पर्वतस्य। वज्रिन्। अहिम्। चित्। उग्र। प्रऽयुतम्। शयानम्। जघन्वान्। इन्द्र। तविषीम्। अधत्थाः॥ २॥

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**उत्सान्**) कूपानिव (**ऋतुभिः**) वसन्तादिभिः (**बद्धानान्**) सम्बद्धान् (**अरंहः**) गमयति (**ऊधः**) जलाधारं घनसमूहम् (**पर्वतस्य**) मेघस्य (**वज्रिन्**) प्रशस्तवज्रवन् (**अहिम्**) मेघम् (**चित्**) (**उग्र**) तेजस्विन् (**प्रयुतम्**) बहुविधम् (**शयानम्**) शयानमिवाचरन्तम् (**जघन्वान्**) हन्ति (**इन्द्र**) सूर्यवद्वर्त्तमान (**तविषीम्**) बलयुक्तां सेनाम् (**अधत्थाः**) दध्याः॥ २॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्नुग्रेन्द्र राजँस्त्वं यथा कृषीबला ऋतुभिर्बद्धानानुत्सानरंहो यथा सूर्य्यः पर्वतस्योधश्चित् प्रयुतं शयानमहिं जघन्वाँस्तथा त्वं तविषीमधत्थाः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कृषीबलाः कूपेभ्यो जलं क्षेत्राणि नीत्वा शस्यानुत्पाद्य सर्वर्त्तुषु सुखैश्वर्यमुन्नयन्ति तथैव त्वं प्रजा उन्नय॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) अच्छे वज्र वाले और (**उग्र**) तेजस्वी (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान राजन्! (**त्वम्**) आप, जैसे खेती करने वाले जन (**ऋतुभिः**) वसन्त आदि ऋतुओं से (**बद्धानान्**) अत्यन्त बद्ध हुओं को (**उत्सान्**) कूपों के सदृश (**अरंहः**) चलाता है और जैसे सूर्य्य (**पर्वतस्य**) मेघ के (**ऊधः**) जलाधार घनसमूह को (**चित्**) और (**प्रयुतम्**) बहुत प्रकार (**शयानम्**) शयन करते हुए के सदृश आचरण करते हुए (**अहिम्**) मेघ का (**जघन्वान्**) नाश करता है, वैसे आप (**तविषीम्**) बलयुक्त सेना का (**अधत्थाः**) धारण करिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे खेती करने वाले जन कूपों से जल को क्षेत्रों के प्रति प्राप्त कर अन्न उत्पन्न करके सब ऋतुओं में सुख और ऐश्वर्य्य की वृद्धि करते हैं, वैसे ही आप प्रजाओं की उन्नति कीजिये॥ २॥

**अथ धनुर्वेदविद्राजगुणानाह॥**

अब इन्द्रपदवाच्य धनुर्वेदवित् राजगुणों को कहते हैं॥

**त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः।**

**य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान्॥ ३॥**

**त्यस्य॑। चि॒त्। म॒हतः॑। निः। मृ॒गस्य॑। वधः॑। ज॒घान॑। तवि॑षीभिः। इन्द्रः॑। यः। एकः॑। इत्। अ॒प्र॒तिः। मन्य॑मानः। आत्। अ॒स्मा॒त्। अ॒न्यः। अ॒ज॒नि॒ष्ट॒। तव्या॑न्॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्यस्य**) तस्य (**चित्**) (**महतः**) (**निः**) (**मृगस्य**) सद्योगामिनः (**वधः**) घ्नन्ति यस्मिन् सः (**जघान**) हन्ति (**तविषीभिः**) सेनादिबलैः (**इन्द्रः**) सेनेशः (**यः**) (**एकः**) (**इत्**) (**अप्रतिः**) अविद्यमाना प्रतिः प्रतीतिर्यस्य सः (**मन्यमानः**) (**आत्**) (**अस्मात्**) (**अन्यः**) भिन्नः (**अजनिष्ट**) जनयति (**तव्यान्**) ये तविषि बले भवास्तान्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति सलोपः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! य एकोऽप्रतिर्मन्यमानस्त्वं तविषीभिर्यथेन्द्रस्त्यस्य महतो मृगस्य मेघस्य वधर्जघान तथाऽस्मांश्चिज्जनयादस्माद्यथाऽन्यो निरजनिष्ट तथेत्त्वमस्मान् तव्यान्निज्जनय॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो मेघं विजित्य स्वप्रभावं जनयित्वा सर्वान् प्राणिनः पालयति तथैव धनुर्वेदविदेकोऽप्यनेकान् विजित्य प्रजाः पालयेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**एकः**) एक (**अप्रतिः**) नहीं है विश्वास जिनके वह (**मन्यमानः**) आदर किये गये आप (**तविषीभिः**) सेना आदि बलों से जैसे (**इन्द्रः**) सेना का स्वामी (**त्यस्य**) उस (**महतः**) बड़े (**मृगस्य**) शीघ्र चलने वाले मेघ का (**वधः**) नाश करते हैं जिसमें तदनुकूल (**जघान**) नाश करता है, वैसे हम लोगों को (**चित्**) भी प्रकट कीजिये (**आत्**) अनन्तर (**अस्मात्**) इससे जैसे (**अन्यः**) भिन्न और जन (**निः**) अत्यन्त (**अजनिष्ट**) उत्पन्न करता है, वैसे (**इत्**) ही आप (**तव्यान्**) बलों में उत्पन्न हम लोगों को ही उत्पन्न कीजिये अर्थात् प्रकट कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ को जीतकर अपने प्रताप को प्रकट करके सब प्राणियों का पालन करता है, वैसे ही धनुर्वेद की विद्या को जानने वाला एक भी अनेकों को जीतकर प्रजाओं का पालन करे॥३॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्यं चि॑दे॒षां स्व॒धया॒ मद॑न्तं मि॒हो नपा॑तं सु॒वृधं॑ तमो॒गाम्।**

**वृष॑प्रभर्मा दान॒वस्य॒ भामं॒ वज्रे॑ण व॒ज्री नि ज॑घान॒ शुष्ण॑म्॥४॥**

**त्यम्। चि॒त्। ए॒षाम्। स्व॒धया॑। मद॑न्तम्। मि॒हः। नपा॑तम्। सु॒ऽवृध॑म्। त॒मः॒ऽगाम्। वृष॑ऽप्रभर्मा। दा॒न॒वस्य॑। भाम॑म्। वज्रे॑ण। व॒ज्री। नि। ज॒घा॒न॒। शुष्ण॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्यम्**) तम् (**चित्**) इव (**एषाम्**) वीराणां मध्ये (**स्वधया**) अन्नादिना (**मदन्तम्**) हर्षन्तम् (**मिहः**) वृष्टेः (**नपातम्**) अपतनशीलम् (**सुवृधम्**) सुष्ठुवर्धमानम् (**तमोगाम्**) प्राप्ताऽन्धकारम् (**वृषप्रभर्मा**) यो वर्षणशीलं मेघं प्रबिभर्ति सः (**दानवस्य**) दुष्टजनस्य (**भामम्**) क्रोधम् (**वज्रेण**) तीव्रेण शस्त्रेण (**वज्री**) प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्तः (**नि**) (**जघान**) निहन्यात् (**शुष्णम्**) शोषकं बलवन्तम्॥४॥

**अन्वय:**-हे सेनेश वीर! भवानेषां स्वधया मदन्तं त्यं चित् यथा वृषप्रभर्मा सूर्यो मिहो नपातं सुवृधं तमोगां जघान तथा वज्री सन् वज्रेण दानवस्य शुष्णं भामं नि जघान॥४॥

**भावार्थ:**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजन्! यथा सूर्योऽतिविस्तीर्णं मेघं विच्छिद्य भूमौ निपात्य जगद्रक्षति तथैवाऽतिप्रबलानापि शत्रून् विदार्याऽधो निपात्य न्यायेन प्रजा: पालय॥४॥

**पदार्थ:**-हे सेना के ईश वीरपुरुष! आप **(एषाम्)** इन वीरों के मध्य में **(स्वधया)** अन्न आदि से **(मदन्तम्)** प्रसन्न होता हुआ जो जीव **(त्यम्)** उसके **(चित्)** समान जैसे **(वृषप्रभर्मा)** वर्षने वाले मेघ को धारण करने वाला सूर्य्य **(मिह:)** वृष्टि के **(नपातम्)** नहीं गिरने वाले **(सुवृधम्)** सुन्दर बढ़ते हुए **(तमोगाम्)** अन्धकार को प्राप्त अर्थात् सघनघन मेघ को **(जघान)** नाश करे, वैसे **(वज्री)** उत्तम शस्त्र और अस्त्रों से युक्त होते हुए **(वज्रेण)** तीव्र शस्त्र से **(दानवस्य)** दुष्टजन के **(शुष्णम्)** सुखाने वाले बलवान् **(भामम्)** क्रोध को **(नि)** निरन्तर नाश करिये॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में **[**उपमा और**]** वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! जैसे सूर्य्य अति विस्तारयुक्त मेघ का नाश कर भूमि में गिरा के जगत् की रक्षा करता है, वैसे ही अतिप्रबल भी शत्रुओं का नाश कर नीचे गिरा के न्याय से प्रजाओं का पालन कीजिये॥४॥

**अथ शिल्पविद्याविद्गुणानाह॥**

अब शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तममर्मणो विददिदस्य मर्म।**

**यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धा:॥५॥**

**त्यम्। चित्। अस्य। क्रतुऽभि:। निऽसत्तम्। अमर्मण:। विदत्। इत्। अस्य। मर्म। यत्। ईम्। सुऽक्षत्र। प्रऽभृता। मदस्य। युयुत्सन्तम्। तमसि। हर्म्ये। धा:॥५॥**

**पदार्थ:**-**(त्यम्)** तम् **(चित्)** अपि **(अस्य)** शत्रो: **(क्रतुभि:)** प्रज्ञाभि: कर्मभिर्वा **(निषत्तम्)** निषण्णम् **(अमर्मण:)** अविद्यमानानि मर्माणि यस्य तस्य **(विदत्)** विन्देत **(इत्)** एव **(अस्य)** मेघस्य **(मर्म)** गुह्यावयवम् **(यत्)** यम् **(ईम्)** **(सुक्षत्र)** शोभनं क्षत्रं क्षत्रियकुलं धनं वा यस्य तत्सबुद्धौ। **क्षत्रमिति धननामसु पठितम्।** (निघं०२।१०) **(प्रभृता)** प्रकर्षेण धारणे पोषणे वा **(मदस्य)** हर्षस्य **(युयुत्सन्तम्)** योद्धुमिच्छन्तम् **(तमसि)** रात्रौ **(हर्म्ये)** प्रासादे **(धा:)** धेहि॥५॥

**अन्वय:**-हे सुक्षत्र राजन्! भवानस्यामर्मण: क्रतुभिर्निषत्तं त्यं चिदस्य मदस्य प्रभृता यन्मर्मेद्विदत्तमीं युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये त्वं धा:॥५॥

**भावार्थ:**-ये पदार्थानां गुप्तानि स्वरूपाणि विज्ञाय प्रज्ञया शिल्पविद्यां वर्धयन्ति ते सुराज्यैश्वर्या भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सुक्षत्र)** श्रेष्ठ क्षत्रियकुल वा धन से युक्त राजन्! आप **(अस्य)** इस **(अमर्मणः)** मर्म की बातों से रहित शत्रु की **(क्रतुभिः)** बुद्धि वा कर्म्मों से **(निषत्तम्)** स्थित **(त्यम्)** उसको **(चित्)** तथा **(अस्य)** इस मेघ के और **(मदस्य)** आनन्द के **(प्रभृता)** अत्यन्त धारण करने वा पोषण करने में **(यत्)** जिस **(मर्म)** गुप्त अवयव को **(इत्)** ही **(विदत्)** प्राप्त होवे, उसको **(ईम्)** सब प्रकार प्राप्त हुए **(युयुत्सन्तम्)** युद्ध करने की इच्छा करते हुए को **(तमसि)** रात्रि में **(हर्म्ये)** प्रासाद के ऊपर आप **(धाः)** धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो पदार्थों के गुप्त स्वरूपों को जान के बुद्धि से शिल्पविद्या की वृद्धि करते हैं, वे उत्तम राज्य और ऐश्वर्य्ययुक्त होते हैं॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**त्यं चिदित्था कत्पयं शयानमसूर्ये तमसि वावृधानम्।**

**तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान॥६॥३२॥**

**त्यम्। चित्। इत्था। कत्पयम्। शयानम्। असूर्ये। तमसि। ववृधानम्। तम्। चित्। मन्दानः। वृषभः। सुतस्य। उच्चैः। इन्द्रः। अपऽगूर्य। जघान॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्यम्)** तम् **(चित्)** अपि **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(कत्पयम्)** कतिपयम्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो** वेतीलोपः। **(शयानम्)** **(असूर्ये)** अविद्यमानः सूर्यो यस्मिँस्तस्मिन् **(तमसि)** रात्रौ **(वावृधानम्)** **(तम्)** **(चित्)** **(मन्दानः)** आनन्दन् **(वृषभः)** श्रेष्ठः **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य पदार्थस्य **(उच्चैः)** **(इन्द्रः)** सेनेशः **(अपगूर्या)** उद्यम्य **(जघान)** हन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्र उच्चैरपगूर्या सुतस्य मन्दानो वृषभस्तं चित्कत्पयमसूर्ये तमसि शयानं वावृधानं चिन्मेघं जघानेत्था त्यं विच्छत्रु हन्यात्॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्येण मेघो हन्यते तमो निवार्य, तथैव राज्ञा दुष्टा हन्तव्याः श्रेष्ठाः पालनीयाः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रः)** सेना का ईश **(उच्चैः)** उच्चता के साथ **(अपगूर्या)** उद्यम कर **(सुतस्य)** उत्पन्न हुए पदार्थ का **(मन्दानः)** आनन्द करता हुआ **(वृषभः)** श्रेष्ठ पुरुष **(तम्)** उसको **(चित्)** भी **(कत्पयम्)** कितने को तथा **(असूर्ये)** जिसमें सूर्य्य विद्यमान नहीं उस **(तमसि)** रात्री में **(शयानम्)** शयन करते और **(वावृधानम्)** निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते हुए को **(चित्)** वा मेघ को **(जघान)** नाश करता है **(इत्था)** इस प्रकार से **(त्यम्)** उस शत्रु का भी नाश करे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करता है अन्धकार का वारण करके, वैसे ही राजा को चाहिये कि दुष्टों का नाश और श्रेष्ठों का पालन करे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम्।**

**यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार॥७॥**

**उत्। यत्। इन्द्रः। महते। दानवाय। वधः। यमिष्ट। सहः। अप्रतिऽइतम्। यत्। ईम्। वज्रस्य। प्रऽभृतौ। ददाभ। विश्वस्य। जन्तोः। अधमम्। चकार॥७॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**यत्**) यम् (**इन्द्रः**) (**महते**) (**दानवाय**) दानकर्त्रे (**वधः**) वधम् (**यमिष्ट**) नियच्छेत् (**सहः**) बलम् (**अप्रतीतम्**) अधर्मिभिरप्राप्तम् (**यत्**) यः (**ईम्**) सर्वतः (**वज्रस्य**) शस्त्रप्रहारस्य (**प्रभृतौ**) प्रकृष्टधारणे (**ददाभ**) हिनस्ति (**विश्वस्य**) समग्रस्य (**जन्तोः**) जीवमात्रस्य मध्ये (**अधमम्**) (**चकार**) करोति॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यद्य इन्द्रो महते दानवाय वधरुद्यमिष्ट यदप्रतीतं सह ईं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार तं विज्ञाय संप्रयुङ्क्ष्व॥७॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना यूयं सूर्य्यवद्वर्त्तित्वा राज्यस्याऽधमां दिशां निवारयत॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यत्**) जो (**इन्द्रः**) राजा (**महते**) बड़े (**दानवाय**) दान करने वाले के लिये (**वधः**) वध को (**उत्, यमिष्ट**) उत्तम नियम करे और (**यत्**) जिस (**अप्रतीतम्**) अधर्मिजनों से नहीं प्राप्त हुए (**सहः**) बल को (**ईम्**) सब ओर से (**वज्रस्य**) शस्त्रप्रहार के (**प्रभृतौ**) उत्तम प्रकार धारण करने में (**ददाभ**) नाश करता और (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण (**जन्तोः**) जीवमात्र के मध्य में (**अधमम्**) नीचा (**चकार**) करता अर्थात् जो सब पर अपना आक्रमण करता है, उसको जान के उत्तम प्रकार प्रयोग करो अर्थात् उससे प्रयोजन सिद्ध करो॥७॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि जनो! आप लोग सूर्य्य के सदृश वर्त्ताव करके राज्य की अधमदशा का निवारण करें॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मह्याददुग्रः।**

**अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचम्॥८॥**

**त्यम्। चित्। अर्णम्। मधुऽपम्। शयानम्। असिन्वम्। वव्रम्। महि। आदत्। उग्रः। अपादम्। अत्रम्। महता। वधेन। नि। दुःऽयोने। अवृणक्। मृध्रऽवाचम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**त्यम्**) (**चित्**) (**अर्णम्**) जलम् (**मधुपम्**) यन्मधूनि पाति तम् (**शयानम्**) शयानमिव वर्त्तमानम् (**असिन्वम्**) अबद्धम् (**वव्रम्**) वरणीयम् (**महि**) महत् (**आदत्**) आदद्यात् (**उग्रः**) तेजस्वी (**अपादम्**) अविद्यमानपादम् (**अत्रम्**) योऽतति सर्वत्र व्याप्नोति तम् (**महता**) (**वधेन**) (**नि**) नितराम् (**दुर्योणे**) गृहे (**आवृणक्**) वृणोति। अत्र **तुजादीनामिति** दीर्घः। (**मृध्रवाचम्**) हिंसितवाचम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथोग्रः सूर्य्यो महता वधेन दुर्योणे त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रमपादमत्रं मृध्रवाचं मेघं मह्यादन्न्यावृणक् तथा त्वं वर्त्तस्व॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युता मेघो भूमौ निपात्यते तथा भवन्तो दुष्टानधो निपातयन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**उग्रः**) तेजस्वी सूर्य्य (**महता**) बड़े (**वधेन**) वध से (**दुर्योणे**) गृह में (**त्यम्**) उस (**चित्**) निश्चित (**अर्णम्**) जल का (**मधुपम्**) मधुर पदार्थों की रक्षा करने वाले का (**शयानम्**) और सोते हुए के सदृश वर्त्तमान (**असिन्वम्**) नहीं बद्ध (**वव्रम्**) स्वीकार करने योग्य (**अपादम्**) पादों से रहित और (**अत्रम्**) सर्वत्र व्याप्त होने वाले (**मृध्रवाचम्**) हिंसित वाणी से युक्त मेघ का (**महि**) अतीव (**आदत्**) ग्रहण करे वा (**नि**) अत्यन्त (**आवृणक्**) स्वीकार करता है, वैसे आप वर्त्ताव कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्य! जैसे बिजुली मेघ को भूमि में गिराती है, वैसे आप दुष्टों के [=को] नीच दशा को प्राप्त करिये [=कराइये]॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः।**

**इमे चिदस्य ज्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते॥९॥**

**कः। अस्य। शुष्मम्। तविषीम्। वराते। एकः। धना। भरते। अप्रतिऽइतः। इमे इति। चित्। अस्य। ज्रयसः। नु। देवी इति। इन्द्रस्य। ओजसः। भियसा। जिहाते इति॥९॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**अस्य**) (**शुष्मम्**) बलम् (**तविषीम्**) सेनाम् (**वराते**) वृणुयाताम् (**एकः**) (**धना**) धनानि (**भरते**) (**अप्रतीतः**) अप्रत्यक्षः (**इमे**) (**चित्**) (**अस्य**) (**ज्रयसः**) (**नु**) (**देवी**) देदीप्यमाने (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**ओजसः**) बलस्य (**भियसा**) धारणेन (**जिहाते**) गच्छतः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! कोऽस्य शुष्मन्तविषीं धरेदिमे देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा नु जिहाते। अनयोरेको धना भरतेऽपरोऽप्रतीतोऽस्य चिज्ज्रयसो धर्त्ता वर्त्तते ताविमौ सर्वं वराते [यतो हि] इमे सर्वे ताभ्यां धृताः सन्ति॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो द्विविधोऽग्निरेकः प्रसिद्धः सूर्य्यभौमरूपो द्वितीयो गुप्तो विद्युद्रूप इमावेव सर्वं जगद्धृत्वा गमयतः॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(कः)** कौन **(अस्य)** इसके **(शुष्मम्)** बल को और **(तविषीम्)** सेना को धारण करे और **(इमे)** ये **(देवी)** प्रकाशमान दो अग्नि **(इन्द्रस्य)** बिजुली के **(ओजसः)** बल के **(भियसा)** धारण से **(नु)** शीघ्र **(जिहाते)** चलते हैं, इन दोनों के मध्य में **(एकः)** एक तो **(धना)** धनों को **(भरते)** धारण करता है और दूसरा **(अप्रतीतः)** नहीं प्रत्यक्ष हुआ **(अस्य)** [इसके] **(चित्)** भी **(त्रयसः)** वेगवान् का धारण करने वाला वर्त्तमान है, वे ये दोनों सब को **(वराते)** स्वीकार को प्राप्त होवें, क्योंकि ये सब पदार्थ उन दोनों से धारण किये गये हैं॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो दो प्रकार का अग्नि- एक तो प्रसिद्ध सूर्य्य पृथ्वी में प्रसिद्धरूप और दूसरा गुप्त बिजुलीरूप ये ही दोनों सब जगत् को धारण करके चलाते हैं॥९॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे।**

**सं यदोजो युवते विश्वमाभिरनु स्वधाव्ने क्षितयो नमन्त॥१०॥**

**नि। अस्मै। देवी। स्वऽधितिः। जिहीते। इन्द्राय। गातुः। उशतीऽइव। येमे। सम्। यत्। ओजः। युवते। विश्वम्। आभिः। अनु। स्वधाऽव्ने। क्षितयः। नमन्त॥१०॥**

**पदार्थः**-**(नि)** **(अस्मै)** **(देवी)** **(स्वधितिः)** वज्र इव **(जिहीते)** गमयेते **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्याय **(गातुः)** भूमिः **(उशतीव)** कामयमाना स्त्रीव **(येमे)** **(सम्)** **(यत्)** यथा **(ओजः)** वीर्य्यम् **(युवते)** प्राप्तयुवावस्थे **(विश्वम्)** सर्वम् **(आभिः)** क्रियाभिः **(अनु)** **(स्वधाव्ने)** यः स्वं दधाति तस्मै **(क्षितयः)** मनुष्याः **(नमन्त)** नमन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे युवते! स्वधितिरिव देवी त्वमस्मा इन्द्राय गातुरिवोशतीव इमे यदोजः सङ्गृह्य सन्नि येमे। आभिः स्वधाव्ने विश्वमनु जिहीते यथा वा क्षितयो नमन्त तथा त्वं भव॥१०॥

**भावार्थः**-यथा कृतब्रह्मचर्य्या ब्रह्मचारिणी पूर्णचतुर्विंशतिवर्षा पतिं कामयमाना सदृशं हृद्यं स्वामिनं गृह्णाति तथैव विद्युदादिरूपोऽग्निः सर्वं विश्वं धरति यथा गुणवतो जनान् मनुष्या नमन्ति तथैव सुलक्षणौ स्त्रीपुरुषौ सर्वे जना नमन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(युवते)** युवावस्था को प्राप्त हुई **(स्वधितिः)** वज्र के सदृश **(देवी)** विदुषी तुम **(अस्मै)** इस **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये यह दो स्त्रियाँ **(गातुः)** भूमि और **(उशतीव)** कामना करती हुई स्त्री के समान **(यत्)** जैसे **(ओजः)** वीर्य को उत्तम प्रकार ग्रहण करके **(सम्, नि, येमे)** अच्छे प्रकार नियम में रखती और **(आभिः)** इन क्रियाओं से **(स्वधाव्ने)** धन को धारण करने वाले के लिये **(विश्वम्)** समस्त व्यवहार को **(अनु, जिहीते)** अनुकूल चलाती हैं तथा जैसे **(क्षितयः)** मनुष्य **(नमन्त)** नम्र होते हैं, वैसे आप होइये॥१०॥

**भावार्थः**-जैसे बह्मचर्य्य को धारण को हुई ब्रह्मचारिणी कन्या पूर्ण चौबीस वर्ष की अवस्था से युक्त हुई पति की कामना करती हुई गुण, कर्म्म और स्वभाव के सदृश और प्रिय स्वामी का ग्रहण करती है, वैसे ही बिजुली आदि रूप अग्नि सम्पूर्ण संसार को धारण करता है और जैसे गुणवान् जनों को मनुष्य नमते हैं, वैसे ही उत्तम लक्षणों से युक्त स्त्री-पुरुषों को सम्पूर्ण जन नमते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु।**
**तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्॥ ११॥**

**एकम्। नु। त्वा। सत्ऽपतिम्। पाञ्चऽजन्यम्। जातम्। शृणोमि। यशसम्। जनेषु। तम्। मे। जगृभ्रे। आऽशसः। नविष्ठम्। दोषा। वस्तोः। हवमानासः। इन्द्रम्॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**एकम्**) असहायम् (**नु**) सद्यः (**त्वा**) त्वाम् (**सत्पतिम्**) सतां पालकम् (**पाञ्चजन्यम्**) पञ्चजनाः प्राणा बलवन्तो यस्य तदपत्यम् (**जातम्**) प्रसिद्धम् (**शृणोमि**) (**यशसम्**) यशस्विनम् (**जनेषु**) (**तम्**) (**मे**) मम (**जगृभ्रे**) गृह्णन्तु (**आशसः**) काममिच्छन्तः (**नविष्ठम्**) अतिशयेन नवम् (**दोषा**) रात्रीः (**वस्तोः**) दिनम् (**हवमानासः**) आदातुमिच्छन्तः (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यम्॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! कृताष्टाचत्वारिंशद् ब्रह्मचर्य्यमेकं सत्पतिं पाञ्चजन्यं जनेषु जातं यशसं त्वा त्वां शृणोमि तमिन्द्रं नविष्ठं मे स्वामिनं हवमानास आशसो जना दोषा वस्तोर्नु जगृभ्रे॥११॥

**भावार्थः**-ब्रह्मचारिणी प्रसिद्धकीर्त्तिं सत्पुरुषं सुशीलं शुभगुणरूपसमन्वितं प्रीतिमन्तं पतिं ग्रहीतुमिच्छेत्तथैव ब्रह्मचार्य्यपि स्वसदृशीमेव ब्रह्मचारिणीं स्त्रियं गृह्णीयात्॥११॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! किया है अड़तालीस वर्ष ब्रह्मचर्य्य जिसने ऐसे (**एकम्**) द्वितीय सहाय से रहित (**सत्पतिम्**) श्रेष्ठों के पालन करने वाले (**पाञ्चजन्यम्**) प्राण आदि पांच पवन बलवान् जिसके उसके पुत्र और (**जनेषु**) मनुष्यों में (**जातम्**) प्रसिद्ध और (**यशसम्**) यशस्वी (**त्वा**) आपको (**शृणोमि**) सुनती हूं (**तम्**) उन (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त (**नविष्ठम्**) अत्यन्त नवीन (**मे**) मेरे स्वामी की (**हवमानासः**) ग्रहण करने की इच्छा करते और (**आशसः**) मनोरथ की इच्छा करते हुए जन (**दोषा**) रात्रियों और (**वस्तोः**) दिन का (**नु**) शीघ्र (**जगृभ्रे**) ग्रहण करें॥११॥

**भावार्थः**-ब्रह्मचर्य्य को वेदोक्त समयानुसार धारण किये हुई कन्या प्रसिद्ध जिसका यश ऐसे श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम स्वभाव वाले और उत्तम गुण और रूप से युक्त, प्रीति करने वाले स्वामी के अर्थात् पति के ग्रहण करने की इच्छा करे, वैसे ही ब्रह्मचारी भी अपने सदृश ही जो ब्रह्मचारिणी स्त्री उसका ग्रहण करे॥११॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि।**
**किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः काममिन्द्र॥१२॥३३॥१॥२॥**

**एव। हि। त्वाम्। ऋतुऽथा। यातयन्तम्। मघा। विप्रेभ्यः। ददतम्। शृणोमि। किम्। ते। ब्रह्माणः। गृहते। सखायः। ये। त्वाऽया। निऽदधुः। कामम्। इन्द्र॥१२॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**हि**) (**त्वाम्**) (**ऋतुथा**) ऋतोर्ऋतोर्मध्ये (**यातयन्तम्**) सन्तानाय प्रयतन्तम् (**मघा**) मघानि धनानि (**विप्रेभ्यः**) मेधाविभ्यः (**ददतम्**) (**शृणोमि**) (**किम्**) (**ते**) तव (**ब्रह्माणः**) चतुर्वेदविदः (**गृहते**) गृह्णन्ति (**सखायः**) सुहृदः (**ये**) (**त्वाया**) त्वयि। अत्र विभक्तेः **सुपां सुलुगि**ति याजादेशः। (**निदधुः**) निदधति (**कामम्**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! विद्यैश्वर्ययुक्त पतिकामाहं हि विप्रेभ्यो मघा ददतमृतुथा यातयन्तं त्वामेवा शृणोमि ते तव ये ब्रह्माणः सखायस्ते त्वाया किं गृहते कं कामं निदधुः॥१२॥

**भावार्थः**-स्त्री ऋतुगामिकाममूर्द्ध्वरेतसं सुशीलं विद्वांसं प्रसिद्धकीर्त्तिं जनं पतित्वाय गृह्णीयात् तेन सह यथावद्वर्त्तित्वाऽलंकामा सौभाग्याढ्या भवेदिति॥१२॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वात्रिंशत्तमं सूक्तं त्रयस्त्रिंशो वर्गश्चतुर्थाष्टके प्रथमोऽध्यायः पञ्चमे मण्डले द्वितीयोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

अस्मिन्नध्यायेऽग्निविद्वदिन्द्रादिगुणवर्णनादेतदध्यायोक्तार्थानां पूर्वाऽध्यायोक्तार्थैः सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त! विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त पति की कामना करती हुई मैं (**हि**) निश्चय से (**विप्रेभ्यः**) बुद्धिमान् जनों के लिये (**मघा**) धनों को (**ददतम्**) देते और (**ऋतुथा**) ऋतु-ऋतु के मध्य में (**यातयन्तम्**) सन्तान के लिये प्रयत्न करते हुए (**त्वाम्**) आप को (**एवा**) ही (**शृणोमि**) सुनती हैं और (**ते**) आपके (**ये**) जो (**ब्रह्माणः**) चार वेद के जानने वाले (**सखायः**) मित्र वे (**त्वाया**) आप में (**किम्**) क्या (**गृहते**) ग्रहण करते और किस (**कामम्**) मनोरथ को (**निदधुः**) धारण करते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-स्त्री, ऋतु-ऋतु के मध्य में जाने की कामना वाला है वीर्य्य जिसका ऐसे ऊर्ध्वरेता वीर्य्य को वृथा न छोड़ने वाले, ब्रह्मचर्य्य को धारण किये हुए, उत्तम स्वभाव वाले और विद्यायुक्त उत्तम यश वाले जन को पतिपने के लिये स्वीकार करे, उसके साथ यथावत् वर्त्ताव करके, पूर्ण मनोरथ करने वाली और सौभाग्य से युक्त होवे॥१२॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बत्तीसवां सूक्त और तेतीसवां वर्ग, चौथे अष्टक में प्रथम अध्याय और पञ्चम मण्डल में द्वितीय अनुवाक समाप्त हुआ॥**

इस अध्याय में अग्नि विद्वान् और इन्द्रादिकों के गुणों का वर्णन होने से इस अध्याय में कहे हुए अर्थों की पहिले अध्यायों में कहे हुए अर्थों के साथ सङ्गति है ऐसा जानना चाहिये॥

॥ओ३म्॥

## अथ द्वितीयाऽध्यायारम्भः॥

**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ दशर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य संवरणः प्राजापत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ७ पङ्क्तिः। ३ निचृत्पङ्क्तिः। ४, १० भुरिक् पङ्क्तिः। ५, ६ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ८ त्रिष्टुप्। ९ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब दूसरे अध्याय का प्रारम्भ है। दश ऋचा वाले तेतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुण को कहते हैं॥

**महि महे तवसे दीध्ये नॄनिन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान्।**
**यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश्चिकेत॥ १॥**

**महि। महे। तवसे। दीध्ये। नॄन्। इन्द्राय। इत्था। तवसे। अतव्यान्। यः। अस्मै। सुऽमतिम्। वाजऽसातौ। स्तुतः। जने। सऽमर्यः। चिकेत॥ १॥**

**पदार्थः**-(**महि**) महतः (**महे**) महते (**तवसे**) बलाय (**दीध्ये**) प्रकाशये (**नॄन्**) मनुष्यान् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्याय (**इत्था**) (**तवसे**) बलिने (**अतव्यान्**) यतमानः (**यः**) (**अस्मै**) (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**वाजसातौ**) स-ग्रामे (**स्तुतः**) (**जने**) (**समर्यः**) स-ग्राममिच्छुः (**चिकेत**) जानीयात्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽतव्यान् स्तुतो जने समर्यो वाजसातौ सुमतिं महे तवसे चिकेतास्मै तवसे इन्द्रायेत्था महि नॄनहं दीध्ये॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो मनुष्यो यस्मै सुखमुपकुर्य्यात् स तस्मै प्रत्युपकारं सततं कुर्यात्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अतव्यान्**) प्रयत्न करता हुआ (**स्तुतः**) स्तुति किया गया (**जने**) मनुष्यों के समूह में (**समर्यः**) संग्राम की इच्छा करता हुआ (**वाजसातौ**) संग्राम में (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धि को (**महे**) बड़े (**तवसे**) बल के लिये (**चिकेत**) जाने (**अस्मै**) इस (**तवसे**) बली (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त के लिये (**इत्था**) इस प्रकार (**महि**) बड़े (**नॄन्**) मनुष्यों का मैं (**दीध्ये**) प्रकाश करता हूं॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य जिस मनुष्य के लिये सुखविषयक उपकार करे, वह उसके लिये प्रत्युपकार निरन्तर करे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कैर्हरीणां वृषन् योक्त्रमश्रेः।**

**या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः सक्षि जनान्॥२॥**

**सः। त्वम्। नः। इन्द्र। धियसानः। अर्कैः। हरीणाम्। वृषन्। योक्त्रम्। अश्रेः। याः। इत्था। मघऽवन्। अनु। जोषम्। वक्षः। अभि। प्र। अर्यः। सक्षि। जनान्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**त्वम्**) (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**धियसानः**) ध्यानं कुर्वन् (**अर्कैः**) विचारैः (**हरीणाम्**) मनुष्याणाम् (**वृषन्**) सुखवृष्टिं कुर्वन् (**योक्त्रम्**) योजनम् (**अश्रेः**) सेवरेः (**याः**) (**इत्था**) (**मघवन्**) अत्युत्तमधनयुक्त (**अनु**) (**जोषम्**) प्रीतिम् (**वक्षः**) प्राप्नुहि (**अभि**) (**प्र**) (**अर्यः**) स्वामी राजा (**सक्षि**) सम्बध्नासि (**जनान्**) मनुष्यान्॥२॥

**अन्वयः**-हे वृषन् मघवन्निन्द्र! स धियसानोऽर्यस्त्वमर्कैर्नोऽस्माकमस्मान् वा हरीणां योक्त्रमश्रेः। या उत्तमा नीतयः सन्ति तासां जोषमनु वक्षो इत्था जनानाभि प्र सक्षि॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एवोत्तमो विद्वान् यो मनुष्यान् प्रज्ञा योगाभ्यासादिना वर्धयेत् सर्वदा नीत्यनुसारं कर्म्म कृत्वा प्रजाः प्रसादयेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**वृषन्**) सुख की वृष्टि करते हुए (**मघवन्**) अत्युत्तम धन से युक्त और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले (**सः**) वह (**धियसानः**) ध्यान करता हुआ (**अर्यः**) स्वामी राजा (**त्वम्**) आप (**अर्कैः**) विचारों से (**नः**) हम लोगों के वा हम लोगों को (**हरीणाम्**) मनुष्यों के सम्बन्ध में (**योक्त्रम्**) एकत्र करने का (**अश्रेः**) सेवन कीजिये और (**याः**) जो उत्तम नीतियां हैं उनकी (**जोषम्**) प्रीति को (**अनु, वक्षः**) अनुकूल प्राप्त हूजिये (**इत्था**) इस प्रकार से (**जनान्**) मनुष्यों को (**अभि, प्र, सक्षि**) अच्छे प्रकार सम्बन्धित करते हो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही उत्तम विद्वान् है, जो मनुष्यों की बुद्धि को योगाभ्यास आदि से बढ़ावे और सब काल में नीति के अनुसार कर्म्म करके प्रजाओं को प्रसन्न करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न ते त इन्द्राभ्य१स्मदृष्वायुक्तासो अब्रह्मता यदसन्।**

**तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता रश्मिं देव यमसे स्वश्वः॥३॥**

**न। ते। ते। इन्द्र। अभि। अस्मत्। ऋष्व। अयुक्तासः। अब्रह्मता। यत्। असन्। तिष्ठ। रथम्। अधि। तम्। वज्रऽहस्त। आ। रश्मिम्। देव। यमसे। सुऽअश्वः॥३॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**ते**) (**ते**) तव (**इन्द्र**) राजन् (**अभि**) आभिमुख्ये (**अस्मत्**) (**ऋष्व**) महापुरुष (**अयुक्तासः**) योगरहिताः (**अब्रह्मता**) अधनता (**यत्**) यदा (**असन्**) भवन्ति (**तिष्ठा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ**

इति दीर्घः। **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(अधि)** उपरि **(तम्)** **(वज्रहस्त)** शस्त्रास्त्रबाहो **(आ)** **(रश्मिम्)** किरणम् **(देव)** दातः **(यमसे)** निगृह्णासि **(स्वश्वः)** शोभना अश्वा अस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे वज्रहस्त ऋष्व देवेन्द्र! ये तेऽब्रह्मताऽयुक्तासो नाभ्यसन्। यद्यदा तेऽस्मद्दूरे निवसन्ति तदा स्वश्वस्त्वं रश्मिमिव तं रथमा यमसे तस्मादेतमधि तिष्ठा॥३॥

**भावार्थः**-हे ऐश्वर्य्ययुक्त! येऽयुक्तव्यवहाराः स्युस्तेऽस्मत्त्वच्च दूरे वसन्तु, यदि त्वं यानचालनविद्यां विजानीयास्तर्हि युद्धेऽपि सामर्थ्यं प्राप्नुयाः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रहस्त)** शस्त्र और अस्त्रों को बाहुओं में धारण करने वाले **(ऋष्व)** महापुरुष **(देव)** दानशील **(इन्द्र)** राजन्! जो **(ते)** आपकी **(अब्रह्मता)** निर्धनता **(अयुक्तासः)** और योग से रहित पुरुष **(न)** नहीं **(अभि)** सम्मुख **(असन्)** होते हैं **(यत्)** जब **(ते)** वे **(अस्मत्)** हम लोगों से दूर वसते हैं तब **(स्वश्वः)** उत्तम घोड़ों से युक्त आप **(रश्मिम्)** किरण के सदृश **(तम्)** उस **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(आ, यमसे)** विस्तृत करते हो, इससे इसके **(अधि)** ऊपर **(तिष्ठा)** स्थित हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे ऐश्वर्य्य से युक्त! जो अयोग्य व्यवहार वाले होवें वे हम लोगों के और आपके दूर वसें और आप वाहनों के चलाने की विद्या को विशेष करके जानें तो युद्ध में भी सामर्थ्य को प्राप्त होवें॥३॥

**पुनरिन्द्रगुणानाह॥**

फिर इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**पुरु यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन्।**

**ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्॥४॥**

**पुरु। यत्। ते। इन्द्र। सन्ति। उक्था। गवे। चकर्थ। उर्वरासु। युध्यन्। ततक्षे। सूर्याय। चित्। ओकसि। स्वे। वृषा। समत्ऽसु। दासस्य। नाम। चित्॥४॥**

**पदार्थः**-**(पुरु)** बहूनि **(यत्)** यानि **(ते)** तव **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त **(सन्ति)** **(उक्था)** प्रशंसितानि कर्म्माणि **(गवे)** गवादिपशुहिताय **(चकर्थ)** कुर्याः **(उर्वरासु)** भूमिषु **(युध्यन्)** **(ततक्षे)** तनूकरोषि **(सूर्य्याय)** सूर्यायेव वर्त्तमानाय **(चित्)** **(ओकसि)** गृहे **(स्वे)** स्वकीये **(वृषा)** बलिष्ठ सन् **(समत्सु)** स- ग्मेषु **(दासस्य)** **(नाम)** संज्ञाम् **(चित्)** अपि॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वृषा त्वं ते यत्पुरूक्था गवे सन्ति तान्युर्वरासु समत्सु युध्यन् सँश्चकर्थ शत्रूँस्ततक्षे सूर्य्याय चिदिव स्वे ओकसि दासस्य चिन्नाम प्रकटय॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यावत्य उत्तमाः सामग्र्यः स्युस्ताः सेनायां युद्धाय स्थापय यानि च गृहार्थानि वस्तूनि भवेयुस्तानि गृहे निधेहि॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त **(वृषा)** बलिष्ठ होते हुए आप **(ते)** आपके **(यत्)** जो **(पुरु)** बहुत **(उक्था)** प्रशंसित कर्म्म **(गवे)** गौ आदि पशुओं के हित के लिये **(सन्ति)** हैं उनको **(उर्वरासु)** भूमियों में और **(समत्सु)** स-ग्रामों में **(युध्यन्)** युद्ध करते हुए **(चकर्थ)** करें और शत्रुओं को **(ततक्षे)** सूक्ष्म अर्थात् निर्बल करते हो और **(सूर्य्याय)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान के लिये **(चित्)** भी **(स्वे)** अपने **(ओकसि)** गृह में **(दासस्य)** दास के **(चित्)** निश्चित **(नाम)** नाम को प्रकट कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जितनी उत्तम सामग्रियां होवें, उनको सेना में युद्ध के लिये स्थापित कीजिये और जो गृह के लिये वस्तु होवें, उनको गृह में स्थापित कीजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः।**

**आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः॥५॥ १॥**

**वयम्। ते। ते। इन्द्र। ये। च। नरः। शर्धः। जज्ञानाः। याताः। च। रथाः। आ। अस्मान्। जगम्यात्। अहिऽशुष्म। सत्वा। भगः। न। हव्यः। प्रऽभृथेषु। चारुः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(ते)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** राजन् **(ये)** **(च)** **(नरः)** नायकाः **(शर्धः)** बलानि **(जज्ञानाः)** जायमानाः **(याताः)** ये प्राप्तास्ते **(च)** **(रथाः)** यानादयः **(आ)** **(अस्मान्)** **(जगम्यात्)** यथावत्प्राप्नुयात् **(अहिशुष्म)** योऽहिं मेघं शोषयति स सूर्य्यस्तद्वद्वर्त्तमान **(सत्वा)** यः सीदति **(भगः)** ऐश्वर्य्ययोगः **(न)** इव **(हव्यः)** आदातुं योग्यः **(प्रभृथेषु)** प्रकर्षेण धर्त्तव्येषु **(चारुः)** सुन्दरः॥५॥

**अन्वयः**-हे अहिशुष्मेन्द्र! ये ते शर्धो जज्ञाना याता नरो रथाश्च सन्ति तेऽस्मान् प्राप्नुवन्तु। यो भगो न प्रभृथेषु हव्यश्चारुः सत्वा भवानस्माना जगम्यात्तं भवन्तं वयं च प्राप्नुयाम॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदा वयं तव त्वमस्माकं मित्रं भवेस्तदैवास्माकमैश्वर्य्यं प्रवर्धेत यथैश्वर्य्यं सर्वेषां प्रियं वर्त्तते तथैव धर्मः प्रियः सदा रक्षणीयः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अहिशुष्म)** मेघ को सुखाने वाले सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान **(इन्द्र)** राजन्! **(ये)** जो **(ते)** आपके **(शर्धः)** बल और **(जज्ञानाः)** उत्पन्न तथा **(याताः)** प्राप्त हुए **(नरः)** नायक **(रथाः, च)** और वाहन आदि हैं **(ते)** वे **(अस्मान्)** हम लोगों को प्राप्त होवें और जो **(भगः)** ऐश्वर्य्य के योग के **(न)** सदृश **(प्रभृथेषु)** अत्यन्त धारण करने योग्यों में **(हव्यः)** ग्रहण करने योग्य **(चारुः)** सुन्दर **(सत्वा)** स्थिर होने वाले आप हम लोगों को **(आ, जगम्यात्)** यथावत् प्राप्त होवें, उन आप को **(वयम्)** हम लोग **(च)** भी प्राप्त होवें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जब हम लोग आपके और आप हम लोगों के मित्र होवें, तभी हम लोगों का ऐश्वर्य्य बड़े और जैसे ऐश्वर्य्य सब का प्रिय है, वैसे ही धर्म्म, प्रिय [=प्रिय धर्म] सदा रक्षा करने योग्य है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः।**
**स नः एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्॥६॥**

**पपृक्षेण्यम्। इन्द्र। त्वे इति। हि। ओजः। नृम्णानि। च। नृतमानः। अमर्तः। सः। नः। एनीम्। वसवानः। रयिम्। दाः। प्र। अर्यः। स्तुषे। तुविऽमघस्य। दानम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**पपृक्षेण्यम्**) प्रष्टुं योग्यम् (**इन्द्र**) विद्वन् (**त्वे**) त्वयि (**हि**) यतः (**ओजः**) पराक्रमः (**नृम्णानि**) नरै रमणीयानि धनानि (**च**) (**नृतमानः**) नृत्यन्। अत्र विकरणव्यत्ययेन शः। (**अमर्त्तः**) आत्मत्वेन मरणधर्मरहितः (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**एनीम्**) प्राप्तुं योग्याम् (**वसवानः**) निवासयन् (**रयिम्**) धनम् (**दाः**) दद्याः (**प्र**) (**अर्यः**) स्वामी (**स्तुषे**) प्रशंससि (**तुविमघस्य**) बहुधनस्य (**दानम्**)॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो नृतमानोऽमर्त्तस्त्वे पपृक्षेण्यमोजो नृम्णानि च दध्यात् स एनीं वसवानो रयिं दाः। हि यतस्तुविमघस्याऽर्यः सन्दानं प्र स्तुषे स त्वं नोऽस्मभ्यं सुखं प्रयच्छ॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो विदुषः प्रति प्रष्टव्यान् प्रश्नान् कृत्वा बलं वर्धयित्वैश्वर्य्यमुन्नीय सन्मार्गे दानं दत्त्वा प्रशंसितविद्याचरणा भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्वन्! जो (**नृतमानः**) नृत्य करता हुआ (**अमर्त्तः**) आत्मभाव से मरणधर्म्म-रहित जन (**त्वे**) आप में (**पपृक्षेण्यम्**) पूंछने योग्य (**ओजः**) पराक्रम (**नृम्णानि, च**) और मनुष्यों से रमने योग्य धनों को धारण करे (**सः**) वह (**एनीम्**) प्राप्त होने योग्य को (**वसवानः**) वसाता हुआ (**रयिम्**) धन को (**दाः**) दीजिये (**हि**) जिससे (**तुविमघस्य**) बहुत धन के (**अर्यः**) स्वामी होते हुए (**दानम्**) दान की (**प्र, स्तुषे**) प्रशंसा करते हो (**सः**) वह आप (**नः**) हम लोगों के लिये सुख दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के प्रति पूंछने योग्य प्रश्नों को कर, बल को बढ़ाय और ऐश्वर्य्य की वृद्धि करके उत्तम मार्ग में दान देकर प्रशंसित विद्या और आचरणयुक्त होवें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून्।**

**उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः॥७॥**

**एव। नः। इन्द्र। ऊतिऽभिः। अव। पाहि। गृणतः। शूर। कारून्। उत। त्वचम्। ददतः। वाजऽसातौ। पिप्रीहि। मध्वः। सुऽसुतस्य। चारोः॥७॥**

**पदार्थः-(एवा)** निश्चये। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र) (ऊतिभिः)** अन्वेक्षणादिरक्षादिभिः **(अव)** रक्ष **(पाहि) (गृणतः)** उपदेशकान् **(शूर)** निर्भय **(कारून्)** शिल्पिनः **(उत)** अपि **(त्वचम्)** त्वगाच्छादकं रक्षकवर्म **(ददतः) (वाजसातौ)** स-ामे **(पिप्रीहि)** प्राप्नुहि **(मध्वः)** मधुरस्य **(सुषुतस्य)** सम्यक्संस्कृतस्य **(चारोः)** उत्तमस्य॥७॥

**अन्वयः-**हे इन्द्र! त्वमूतिभिरेवा गृणतः कारून्नोऽस्मानव। हे शूर! वाजसातौ त्वचं ददतः सुषुतस्य मध्वश्चारोर्जनस्यैश्वर्य्यं पाहि उत पिप्रीहि॥७॥

**भावार्थः-**हे राजँस्त्वं शूरान् प्राज्ञाञ्छिल्पिनो जनान् रक्षित्वा प्रजाः सततं सम्पाल्य स-ामे शत्रूञ्जित्वा प्राप्नुहि॥७॥

**पदार्थः-**हे **(इन्द्र)** राजन्! आप **(ऊतिभिः)** अन्वेक्षण आदि रक्षा आदिकों से **(एवा)** ही **(गृणतः)** उपदेशक **(कारून्)** शिल्पी **(नः)** हम लोगों की **(अव)** रक्षा कीजिये और हे **(शूर)** भय से रहित! **(वाजसातौ)** स-ाम में **(त्वचम्)** त्वचा को आच्छादन करने और रक्षा करने वाले कवच को **(ददतः)** देते हुए **(सुषुतस्य)** उत्तम प्रकार संस्कार किये गये **(मध्वः)** मधुर और **(चारोः)** उत्तम जन के ऐश्वर्य्य का **(पाहि)** पालन कीजिये और **(उत)** भी **(पिप्रीहि)** प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः-**हे राजन्! आप शूरवीर विद्वान् शिल्पीजनों की रक्षा कर प्रजाओं का निरन्तर पालन करके स-ाम में शत्रुओं को जीत कर प्राप्त हूजिये॥७॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः।**

**वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु सश्चे॥८॥**

**उत। त्ये। मा। पौरुऽकुत्स्यस्य। सूरेः। त्रसदस्योः। हिरणिनः। रराणाः। वहन्तु। मा। दश। श्येतासः। अस्य। गैरिऽक्षितस्य। क्रतुऽभिः। नु। सश्चे॥८॥**

**पदार्थः-(उत)** अपि **(त्ये)** ते **(मा)** माम् **(पौरुकुत्स्यस्य)** बहुवज्रादिशस्त्राऽस्त्रविदोऽपत्यस्य **(सूरेः)** मेधाविनः **(त्रसदस्योः)** त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् **(हिरणिनः)** हिरण्यादिधनयुक्तस्य **(रराणाः)** रममाणा ददमाना वा **(वहन्तु) (मा)** माम् **(दश) (श्येतासः)** श्वेतवर्णा अश्वाः **(अस्य) (गैरिक्षितस्य)** गिरौ पर्वते क्षितं निवसनं यस्य तस्य **(क्रतुभिः)** प्रज्ञाकर्मभिः **(नु)** सद्यः **(सश्चे)** सम्बध्नामि॥८॥

**अन्वयः**:-पौरुकुत्स्यस्य त्रसदस्योर्हिरणिनोऽस्य गैरिक्षितस्य सूरेः क्रतुभिस्सह रराणा मा वहन्तूत त्ये दश श्येतास इव मा वहन्तु तानहं नु सश्चे॥८॥

**भावार्थः**:-ये सत्यसन्धाः सत्पुरुषमित्राः प्रज्ञां वर्धयन्तो दुष्टान्निवारयन्ति तैः सहाहमनुबध्नामि॥८॥

**पदार्थः**:-**(पौरुकुत्स्यस्य)** बहुत वज्र आदि शस्त्र और अस्त्रों को जानने वाले के सन्तान **(त्रसदस्योः)** जिससे डाकू चोर आदि डरते हैं ऐसे **(हिरणिनः)** सुवर्ण धन आदि से युक्त **(अस्य)** इस **(गैरिक्षितस्य)** पर्वत में रहने वाले **(सूरेः)** बुद्धिमान् जन की **(क्रतुभिः)** बुद्धि और कर्मों के साथ **(रराणाः)** रमते वा देते हुए **(मा)** मुझ को **(वहन्तु)** प्राप्त हों **(उत)** और भी **(त्ये)** वे **(दश)** दश संख्या परिमित **(श्येतासः)** श्वेत वर्ण वाले घोड़े के सदृश **(मा)** मुझ को प्राप्त हों, उनका मैं **(नु)** शीघ्र **(सश्चे)** सम्बन्ध करता हूं॥८॥

**भावार्थः**:-जो सत्य धारण करने वाले और सत्पुरुष जिनके मित्र ऐसे जन बुद्धि को बढ़ाते हुए दुष्टों का निवारण करते हैं, उनके साथ मैं मेल करता हूं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ।**

**सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत्॥९॥**

**उत। त्ये। मा। मारुतऽअश्वस्य। शोणाः। क्रत्वाऽमघासः। विदथस्य। रातौ। सहस्रा। मे। च्यवतानः। ददानः। आनूकम्। अर्यः। वपुषे। न। आर्चत्॥९॥**

**पदार्थः**:-**(उत)** अपि **(त्ये)** ते **(मा)** माम् **(मारुताश्वस्य)** मरुतामिवाश्वानामयं तस्य **(शोणाः)** रक्तगुणविशिष्टा अग्न्यादयः **(क्रत्वामघासः)** क्रतुः प्रज्ञा कर्म्मैव मघं धनं येषां ते **(विदथस्य)** लब्धुं योग्यस्य **(रातौ)** दाने **(सहस्रा)** सहस्राणि **(मे)** मम मह्यं वा **(च्यवतानः)** च्यावयन् सन् **(ददानः)** **(आनूकम्)** आनुकूल्यम् **(अर्य्यः)** स्वामी **(वपुषे)** सुरूपाय शरीराय **(न)** निषेधे **(आर्चत्)** सत्कुर्यात्॥९॥

**अन्वयः**:-ये क्रत्वामघासः शोणा मारुताश्वस्य विदथस्य मे रातौ सहस्रा च्यवतानश्चोत सुखयितुं शक्नुयुस्त्ये यश्च ददानो वपुषे मा मामानूकमार्चत् सोऽर्य्यश्चाऽभितस्तिरस्कृतो न भवति॥९॥

**भावार्थः**:-हे मनुष्या! येऽस्माकमभीष्टं साध्नुवन्ति तेषामभीष्टं वयमपि साध्नुयाम एवं स्वामिसेवका अपि वर्त्तेरन्॥९॥

**पदार्थः**:-जो **(क्रत्वामघासः)** बुद्धि वा कर्म्म ही है धन जिनका वे **(शोणाः)** रक्त गुण से विशिष्ट जन और **(मारुताश्वस्य)** पवनों के सदृश घोड़ों के सम्बन्धी **(विदथस्य)** प्राप्त होने योग्य **(मे)** मेरे वा मेरे लिये **(रातौ)** दान में **(सहस्रा)** हजारों को **(च्यवतानः)** प्राप्त होता हुआ जन **(उत)** भी सुख देने को समर्थ हों **(त्ये)** वे और जो **(ददानः)** देता हुआ **(वपुषे)** सुन्दर शरीर के लिये **(मा)** मुझ को **(आनूकम्)**

अनुकूलतापूर्वक **(आर्चत्)** आदरयुक्त करे वह **(अर्य्यः)** स्वामी भी सब प्रकार से तिरस्कृत **(न)** नहीं होता है॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो हम लोगों के अभीष्ट की सिद्धि करते हैं, उनके अभीष्ट की हम लोग भी सिद्धि करें, इस प्रकार स्वामी और सेवक भी वर्त्ताव करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः।**
**मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन्॥१०॥२॥**

**उत। त्ये। मा। ध्वन्यस्य। जुष्टाः। लक्ष्मण्यस्य। सुऽरुचः। यतानाः। मह्ना। रायः। सम्ऽवरणस्य। ऋषेः। व्रजम्। न। गावः। प्रऽयताः। अपि। ग्मन्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(त्ये)** **(मा)** माम् **(ध्वन्यस्य)** ध्वनिषु कुशलस्य **(जुष्टाः)** प्रीताः **(लक्ष्मण्यस्य)** सुलक्षणेषु भवस्य **(सुरुचः)** सुष्ठुप्रीतिमत्यः **(यतानाः)** **(मह्ना)** महत्त्वेन **(रायः)** धनस्य **(संवरणस्य)** स्वीकृतस्य **(ऋषेः)** मन्त्रार्थविदः **(व्रजम्)** व्रजन्ति यस्मिन् **(न)** इव **(गावः)** धेनवः **(प्रयताः)** प्रयतमानाः **(अपि)** **(ग्मन्)** गच्छन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-ये ध्वन्यस्य संवरणस्य रायो मह्नोत लक्ष्मण्यस्यर्षेः प्रयतास्त्ये गावो व्रजन्नापि ग्मन् तथा मह्ना मा मामपि ग्मन्। या यतानाः सुरुचो मा जुष्टाः सन्ति ताः सर्वे प्राप्नुवन्तु॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः प्रयत्नेनाऽप्राप्तस्य प्राप्तिं लब्धस्य रक्षणं कुर्वन्ति ते वत्सान् गाव इव धनमाप्नुवन्तीति॥१०॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयस्त्रिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(ध्वन्यस्य)** ध्वनियों में कुशल और **(संवरणस्य)** स्वीकार किये हुए **(रायः)** धन के **(मह्ना)** महत्त्व से **(उत)** और **(लक्ष्मण्यस्य)** श्रेष्ठ लक्षणों में उत्पन्न **(ऋषेः)** मन्त्रों के अर्थ जानने वाले के सम्बन्ध में **(प्रयताः)** प्रयत्न करते हुए जन हैं **(त्ये)** वे **(गावः)** गौवें **(व्रजम्)** गोष्ठ को **(न)** जैसे **(अपि)** निश्चित **(ग्मन्)** जाती हैं, वैसे महत्त्व से **(मा)** मुझ को भी प्राप्त होते हैं और जो **(यतानाः)** यत्न करती हुई **(सुरुचः)** उत्तम प्रीति वाली मुझ को **(जुष्टाः)** प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त हैं, उनको सब प्राप्त होवें॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्रयत्न से नहीं प्राप्त हुए की प्राप्ति और प्राप्त हुए की रक्षा करते हैं, वे जैसे बछड़ों को गौवें वैसे धन को प्राप्त होते हैं॥१०॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेंतीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य संवरणः प्राजापत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ भुरिक् त्रिष्टुप्। ९ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ निचृज्जगती। ३, ७ जगती। ६, ८ विराड् जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणयुक्तदम्पतीविषयमाह॥***

अब नव ऋचा वाले चौंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रगुणयुक्त स्त्री-पुरुष का वर्णन करते हैं॥

**अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता दस्ममीयते।**
**सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन॥ १॥**

**अजातऽशत्रुम्। अजरा। स्वःऽवती। अनु। स्वधा। अमिता। दस्मम्। ईयते। सुनोतन। पचत। ब्रह्मऽवाहसे। पुरुऽस्तुताय। प्रऽतरम्। दधातन॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अजातशत्रुम्**) न जाताः शत्रवो यस्य तम् (**अजरा**) जरारहिता (**स्वर्वती**) सुखवती (**अनु**) (**स्वधा**) या स्वं दधाति सा (**अमिता**) अतुलशुभगुणा (**दस्मम्**) दुष्टोपक्षेतारम् (**ईयते**) प्राप्नोति (**सुनोतन**) (**पचत**) (**ब्रह्मवाहसे**) धनप्रापकाय (**पुरुष्टुताय**) बहुभिः प्रशंसिताय (**प्रतरम्**) प्रतरन्ति दुःखं येन तम् (**दधातन**) धरत॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स्वर्वत्यमिता स्वधाजरा युवतिः स्त्री यमजातशत्रुं दस्ममन्वीयते तस्मै पुरुष्टुताय ब्रह्मवाहसे जनाय प्रतरं सुनोतन उत्तममन्नं पचत धनादिकं दधातन॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यो निर्वैरोऽमितशुभगुणः सर्वहितकारी पुरुषोऽथवेदृशी स्त्री भवेत्तयोः सत्कारः कर्त्तव्यः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**स्वर्वती**) सुखवाली (**अमिता**) अतुल उत्तम गुणों से युक्त (**स्वधा**) धन को धारण करने वाली (**अजरा**) वृद्धावस्था से रहित युवती स्त्री जिस (**अजातशत्रुम्**) शत्रुओं से रहित (**दस्मम्**) दुष्टों के नाश करने वाले जन को (**अनु, ईयते**) अनुकूलता से प्राप्त होती है, उस (**पुरुष्टुताय**) बहुतों से प्रशंसा किये गये (**ब्रह्मवाहसे**) धन प्राप्त कराने वाले के लिये (**प्रतरम्**) अच्छे प्रकार पार होते हैं, दुःख के जिससे उसको (**सुनोतन**) उत्पन्न करो और उत्तम अन्न का (**पचत**) पाक करो और धन आदि को (**दधातन**) धारण करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वैररहित अत्यन्त उत्तम गुणों से युक्त और सब का हितकारी पुरुष अथवा इस प्रकार की स्त्री हो, उन दोनों का निरन्तर सत्कार करना योग्य है॥ १॥

**अथ विद्वद्विषये पाकगुणानाह॥**

अब विद्वद्विषय में पाक के गुणों को कहते हैं॥

**आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामन्दत मघवा मध्वो अन्धसः।**

**यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत्॥२॥**

**आ। यः। सोमेन। जठरम्। अपिप्रत। अमन्दत। मघऽवा। मध्वः। अन्धसः। यत्। ईम्। मृगाय। हन्तवे। महाऽवधः। सहस्रऽभृष्टिम्। उशना। वधम्। यमत्॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यः**) (**सोमेन**) सोमलतोद्भवेन (**जठरम्**) उदराग्निम् (**अपिप्रत**) पूरयेत् (**अमन्दत**) आनन्देत् (**मघवा**) बहुधनः (**मध्वः**) मधुरादिगुणयुक्तस्य (**अन्धसः**) अन्नादेः (**यत्**) यः (**ईम्**) सर्वतः (**मृगाय**) मृगम् (**हन्तवे**) हन्तुम् (**महावधः**) महान् वधो नाशनं येन (**सहस्रभृष्टिम्**) भृष्टयो भञ्जनानि दहनानि यस्मात्तम् (**उशना**) कामयमानः (**वधम्**) (**यमत्**) नियच्छेत्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य उशना मघवा सोमेन जठरमापिप्रत मध्वोऽन्धसो भुक्त्वामन्दत यद्यो महावधो मृगाय हन्तवे सहस्रभृष्टिं वधमीं यमत् सः सर्वं सुखं लभते॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वैद्यकशास्त्ररीत्या सोमलताद्योषधिरसेन सह संस्कृतान्यन्नानि भुञ्जते तेऽतुलं सुखमाप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**उशना**) कामना करता हुआ (**मघवा**) बहुत धन से युक्त (**सोमेन**) सोमलता से उत्पन्न रस से (**जठरम्**) उदर की अग्नि को (**आ, अपिप्रत**) अच्छे प्रकार पूर्ण करे और (**मध्वः**) मधुर आदि गुणों से युक्त (**अन्धसः**) अन्न आदि का भोग करके (**अमन्दत**) आनन्द करे और (**यत्**) जो (**महावधः**) अत्यन्त नाश करने वाला (**मृगाय**) हरिण को (**हन्तवे**) मारने के लिये (**सहस्रभृष्टिम्**) हजारों दहन जिससे उस (**वधम्**) वध को (**ईम्**) सब प्रकार से (**यमत्**) देवे, वह सब सुख को प्राप्त होता है॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलता आदि ओषधियों के रस के साथ संस्कारयुक्त किये गये अन्नों का भोग करते हैं, वे अतुल सुख को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह।**

**अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः॥३॥**

**यः। अस्मै। घ्रंसे। उत। वा। यः। ऊधनि। सोमम्। सुनोति। भवति। द्युऽमान्। अह। अपऽअप। शक्रः। ततनुष्टिम्। ऊहति। तनूऽशुभ्रम्। मघऽवा। यः। कवऽसखः॥३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**अस्मै**) (**घ्रंसे**) दिने। **घ्रंस इत्यहर्नामसु पठितम्।** (निघं०१।९) (**उत**) अपि (**वा**) पक्षान्तरे (**यः**) (**ऊधनि**) उषः समये (**सोमम्**) जलम् (**सुनोति**) पिबति (**भवति**) (**द्युमान्**)

बहुविद्याप्रकाशः **(अह)** विशेषेण ग्रहणे **(अपाप)** दूरीकरणे **(शक्रः)** शक्तिमान् **(ततनुष्टिम्)** विस्तारम् **(ऊहति)** वितर्कयति **(तनूशुभ्रम्)** शुभ्रा शुद्धा तनूर्यस्य तम् **(मघवा)** प्रशंसितधनवान् **(यः)** **(कवासखः)** कविः सखा यस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽस्मै घ्रंस उत वोधनि सोमं सुनोत्यह द्युमान् भवति यः शक्रः ततनुष्टि- मूहति यः कवासखो मघवा तनूशुभ्रमूहति स सततं दुःखमपापोहति॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अहर्निशं पुरुषार्थयन्ति ते सततं सुखिनो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अस्मै)** इसके लिये **(घ्रंसे)** दिन में **(उत)** भी **(वा)** अथवा **(ऊधनि)** प्रभातसमय में **(सोमम्)** जल का **(सुनोति)** पान करता और **(अह)** विशेष करके ग्रहण करने में **(द्युमान्)** बहुत विद्या प्रकाश वाला **(भवति)** होता तथा **(यः)** जो **(शक्रः)** शक्तिमान् **(ततनुष्टिम्)** विस्तार की **(ऊहति)** तर्कना करता और **(यः)** जो **(कवासखः)** विद्वान् जन मित्र जिसके ऐसा **(मघवा)** प्रशंसित धनयुक्त पुरुष **(तनूशुभ्रम्)** शुद्ध शरीर वाले की तर्कना करता है, वह निरन्तर दुःख को **(अपाप)** दूर करने की तर्कना करता है॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दिन और रात्रि पुरुषार्थ करते हैं, वे निरन्तर सुखी होते हैं॥३॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते।**

**वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकरः॥४॥**

**यस्य। अवधीत्। पितरम्। यस्य। मातरम्। यस्य। शक्रः। भ्रातरम्। न। अतः। ईषते। वेति। इत्। ऊँ इति। अस्य। प्रऽयता। यतम्ऽकरः। न। किल्बिषात्। ईषते। वस्वः। आऽकरः॥४॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** **(अवधीत्)** **(पितरम्)** **(यस्य)** **(मातरम्)** जननीम् **(यस्य)** **(शक्रः)** शक्तिमान् **(भ्रातरम्)** सहोदरम् **(न)** निषेधे **(अतः)** **(ईषते)** हिनस्ति **(वेति)** कामयते **(इत्)** (उ) **(अस्य)** **(प्रयता)** प्रकर्षेण दत्तानि **(यतङ्करः)** यः प्रयत्नं करोति **(न)** इव **(किल्विषात्)** पापात् **(ईषते)** **(वस्वः)** वसुनो धनस्य **(आकरः)** समूहः॥४॥

**अन्वयः**-शक्रो यस्य पितरं यस्य मातरं यस्य भ्रातरं नावधीदतोऽस्य नेषतेऽस्य यतङ्करो न प्रयता वेति उ वस्व आकरः किल्विषात् पृथगिदीषते प्राप्नोति॥४॥

**भावार्थः**-ये पितामाताभ्रात्रादयः पालयेयुस्तेषां पुत्रादिभिः सततं सत्कारः कर्त्तव्यो ये पापाचरणं विहाय धर्म्ममाचरन्ति ते सर्वदा सुखिनो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-**(शक्रः)** सामर्थ्यवान् जन **(यस्य)** जिसके **(पितरम्)** पिता का **(यस्य)** जिसकी **(मातरम्)** माता का और **(यस्य)** जिसके **(भ्रातरम्)** भ्राता का **(न)** नहीं **(अवधीत्)** नाश करे **(अतः)**

इससे इसका **(न)** नहीं **(ईषते)** नाश करता और **(अस्य)** इसके **(यतङ्करः)** प्रयत्न करने वाले के **(न)** सदृश **(प्रयता)** अत्यन्त दिये हुओं की **(वेति)** कामना करता है (उ) और **(वस्वः)** धन का **(आकरः)** समूह **(किल्विषात्)** पाप से पृथक् **(इत्)** ही **(ईषते)** प्राप्त होता है॥४॥

**भावार्थः**-जो पिता, माता और भ्रातृ आदि पालन करें, उनके पुत्र आदि को चाहिये कि निरन्तर सत्कार करें और जो पापाचरण का त्याग करके धर्म्म का आचरण करते हैं, वे सब काल में सुखी होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न प॒ञ्चभि॑र्द॒शभि॑र्वष्ट्या॒रभं॒ नासु॑न्वता सचते॒ पुष्य॑ता च॒न।**
**जि॒नाति॒ वेद॑मु॒या हन्ति॒ वा धु॒नि॒रा दे॑व॒युं भ॑जति॒ गोम॑ति व्र॒जे॥५॥३॥**

न। प॒ञ्चऽभि॑ः। द॒शऽभि॑ः। व॒ष्टि। आ॒ऽरभ॑म्। न। असु॑न्वता। स॒च॒ते॒। पुष्य॑ता। च॒न। जि॒नाति॑। वा॒। इ॒त्। अ॒मु॒या। हन्ति॑। वा॒। धु॒नि॑ः। आ। दे॒व॒ऽयुम्। भ॒ज॒ति॒। गोऽम॑ति। व्र॒जे॥५॥

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(पञ्चभिः)** इन्द्रियैः **(दशभिः)** प्राणैः **(वष्टि)** कामयते **(आरभम्)** आरब्धुम् **(न)** निषेधे **(असुन्वता)** अपुरुषार्थिना **(सचते)** सम्बध्नाति **(पुष्यता)** पुष्टिमाचरता **(चन)** अपि **(जिनाति)** अभिभवति **(वा)** **(इत्)** **(अमुया)** **(हन्ति)** **(वा)** **(धुनिः)** कम्पकः **(आ)** समन्तात् **(देवयुम्)** देवान् कामयमानम् **(भजति)** **(गोमति)** बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् **(व्रजे)** गवां स्थित्यधिकरणे॥५॥

**अन्वयः**-योऽसुन्वता पञ्चभिर्दशभिरारभं न वष्टि स पुष्यता न सचते जिनाति चन वामुया हन्ति वा यो धुनिर्गोमति व्रजे देवयुमा भजति स सर्वमित् सुखमश्नुते॥५॥

**भावार्थः**-येऽलसा पुरुषार्थं न कुर्वन्ति तेऽभीष्टसिद्धिं न लभन्ते॥५॥

**पदार्थः**-जो **(असुन्वता)** नहीं पुरुषार्थ करने वाले से **(पञ्चभिः)** पांच इन्द्रियों और **(दशभिः)** दश प्राणों से **(आरभम्)** आरम्भ करने की **(न)** नहीं **(वष्टि)** कामना करता वह **(पुष्यता)** पुष्टि को करने वाले से **(न)** नहीं **(सचते)** सम्बन्धित होता **(जिनाति, चन)** और अपमान को प्राप्त होता है **(वा)** वा **(अमुया)** इससे **(हन्ति)** नाश करता है **(वा)** वा जो **(धुनिः)** कंपने वाला **(गोमति)** बहुत गौवें विद्यमान जिसमें उस **(व्रजे)** गौवों के ठहरने के स्थान में **(देवयुम्)** विद्वानों की कामना करने वाले का **(आ)** सब प्रकार से **(भजति)** आदर करता और वह सब **(इत्)** ही सुख का भोग करता है॥५॥

**भावार्थः**-जो आलस्ययुक्त जन पुरुषार्थ को नहीं करते हैं, वे अभीष्ट सिद्धि को नहीं प्राप्त होते हैं॥५॥

**अथेन्द्रसादृश्येन राजगुणानाह॥**

अब इन्द्र के सादृश्य से राजगुणों को कहते हैं॥

**वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजोऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः।**
**इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः॥६॥**

**विऽत्वक्षणः। सम्ऽऋतौ। चक्रऽआसजः। असुन्वतः। विषुणः। सुन्वतः। वृधः। इन्द्रः। विश्वस्य। दमिता। विऽभीषणः। यथाऽवशम्। नयति। दासम्। आर्यः॥६॥**

**पदार्थः**-(**वित्वक्षणः**) विशेषेण दुःखस्य विच्छेता (**समृतौ**) संग्रामे (**चक्रमासजः**) यो चक्रस्य मासकालस्य मासास्तेभ्यो जातः (**असुन्वतः**) अयजमानस्य (**विषुणः**) व्याप्तविद्यस्य (**सुवन्तः**) यज्ञं कुर्वतः (**वृधः**) वर्धकः (**इन्द्रः**) विद्युदिव राजा (**विश्वस्य**) सर्वस्य जगतः (**दमिता**) (**विभीषणः**) भयप्रदः (**यथावशम्**) वशमनतिक्रम्य करोति (**नयति**) (**दासम्**) सेवकं शूद्रम् (**आर्यः**) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यवर्णः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वृधः इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणोऽस्ति तथा वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजो विषुणः सुन्वतोऽसुन्वतश्च दमिता सन्नार्यो राजा यथावशं दासं नयति॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानामार्याणां शुभगुणकर्म्मयुक्तानां शूद्रः सेवको भवति तथा शुभगुणकर्मयुक्तस्य राज्ञः प्रजा सेविका भवति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**वृधः**) बढ़ाने वाला (**इन्द्रः**) बिजुली के सदृश राजा (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण जगत् का (**दमिता**) दमन करने और (**विभीषणः**) भय देने वाला है, वैसे (**वित्वक्षणः**) विशेष करके दुःख का नाश करने वाला (**समृतौ**) संग्राम में (**चक्रमासजः**) कालरूप चक्र के महीनों से उत्पन्न हुआ जन (**विषुणः**) विद्या में व्याप्त और (**सुन्वतः**) यज्ञ करने और (**असुन्वतः**) नहीं यज्ञ करने वाले का दमन करने वाला होता हुआ (**आर्यः**) ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य वर्ण आर्य्य राजा (**यथावशम्**) यथाशक्ति (**दासम्**) सेवक शूद्र को (**नयति**) प्राप्त करता है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य आर्यों तथा उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वालों का शूद्र सेवक होता है, वैसे ही उत्तम गुण और कर्म्म से युक्त राजा की प्रजा सेवन करने वाली होती है॥६॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु।**
**दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुक्रुधत्॥७॥**

**सम्। ईम्। पणेः। अजति। भोजनम्। मुषे। वि। दाशुषे। भजति। सूनरम्। वसु। दुःऽगे। चन। ध्रियते। विश्वः। आ। पुरु। जनः। यः। अस्य। तविषीम्। अचुक्रुधत्॥७॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) सम्यक् (**ईम्**) सर्वतः (**पणेः**) स्तूयमानस्य (**अजति**) प्राप्नोति (**भोजनम्**) पालनमन्नादिकं वा (**मुषे**) चोराय (**वि**) (**दाशुषे**) दानशीलाय (**भजति**) (**सूनरम्**) शोभना नरा यस्मिँस्तत् (**वसु**) धनम् (**दुर्गे**) दुःखेन गन्तुं योग्ये प्रकोटे वा (**चन**) (**ध्रियते**) (**विश्वः**) सर्वः (**आ**) (**पुरु**) बहु (**जनः**) मनुष्यः (**यः**) (**अस्य**) जनस्य (**तविषीम्**) बलम् (**अचुक्रुधत्**) भृशं क्रोधयति॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यः पणेर्भोजनमजति मुषे दण्डं दाशुषे दानं चन सं वि भजति योऽस्य शत्रोस्तविषीमचुक्रुधत् स ईं विश्वो जनो दुर्गे पुरु सूनरं वस्वा भजति राज्ञा ध्रियते॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा दस्य्वादिभ्यः कठिनं दण्डं श्रेष्ठेभ्यः प्रतिष्ठां प्रयच्छति तस्य राज्यं धनादियुक्तं सद्वर्धते तस्येह यशोऽमुत्र सुखं च जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**पणेः**) स्तुति किये गये के (**भोजनम्**) पालन वा अन्न आदि को (**अजति**) प्राप्त होता और (**मुषे**) चोर के लिये दण्ड को और (**दाशुषे**) दानशील के लिये दान (**चन**) भी (**सम्**) उत्तम प्रकार (**वि, भजति**) बांटता है तथा (**यः**) जो (**अस्य**) इस शत्रुजन की (**तविषीम्**) सेना को (**अचुक्रुधत्**) अत्यन्त क्रुद्धित करता है वह (**ईम्**) सब प्रकार से (**विश्वः**) सम्पूर्ण (**जनः**) मनुष्य (**दुर्गे**) दुःख से प्राप्त होने योग्य व्यवहार वा उत्तम कोट में (**पुरु**) बहुत (**सूनरम्**) उत्तम मनुष्य जिसमें उस (**वसु**) धन का (**आ**) सेवन करता है और राजा से (**ध्रियते**) धारण किया जाता है॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा चोर, डाकू आदि जनों के लिये कठिन दण्ड और श्रेष्ठ जनों के लिये प्रतिष्ठा देता है, उसका राज्य धन आदि से युक्त हुआ वृद्धि को प्राप्त होता और उसका इस संसार में यश और परलोक में सुख होता है॥७॥

**पुनः पूर्वोक्तविषयमाह॥**

फिर पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसाववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु।**
**युजं ह्य१न्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः॥८॥**

**सम्। यत्। जनौ। सुऽधनौ। विश्वऽशर्धसौ। अवेत्। इन्द्रः। मघऽवा। गोषु। शुभ्रिषु। युजम्। हि। अन्यम्। अकृत। प्रऽवेपनी। उत्। ईम्। गव्यम्। सृजते। सत्वऽभिः। धुनिः॥८॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**यत्**) यौ (**जनौ**) (**सुधनौ**) धर्मेण जातश्रेष्ठधनौ (**विश्वशर्धसौ**) समग्रबलयुक्तौ (**अवेत्**) प्राप्नुयात् (**इन्द्रः**) राजा (**मघवा**) परमपूजितबहुधनः (**गोषु**) धेनुपृथिव्यादिषु (**शुभ्रिषु**) शुभगुणेषु (**युजम्**) युक्तम् (**हि**) यतः (**अन्यम्**) (**अकृत**) करोति (**प्रवेपनी**) गच्छन्ती (**उत्**) (**ईम्**) उदकम् (**गव्यम्**) गोभ्यो हितम् (**सृजते**) (**सत्वभिः**) पदार्थैः (**धुनिः**) कम्पकः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो धुनिर्मघवेन्द्रो यत्सुधनौ विश्वशर्धसौ जनौ समवेच्छुभ्रिषु गोषु हि युजमन्यमकृत प्रवेपनी सती गव्यमीं सत्वभिरुत्सृजते स सुखकरो जायते॥८॥

**भावार्थः**-राज्ञा स्वराज्य उत्तमान् धनिनो विदुषोऽध्यापकोपदेशकाँश्च संरक्ष्यैतैर्व्यवहारधन-विद्योन्नतिः कार्य्या॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(धुनिः)** कंपने वाला **(मघवा)** अत्यन्त श्रेष्ठ बहुत धन से युक्त **(इन्द्रः)** राजा और **(यत्)** जो **(सुधनौ)** धर्म्म से उत्पन्न हुए श्रेष्ठ धन से तथा **(विश्वशर्धसौ)** सम्पूर्ण बल से युक्त **(जनौ)** दो जनों को **(सम्, अवेत्)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवे और **(शुभ्रिषु)** उत्तम गुण वाले **(गोषु)** धेनु और पृथिवी आदिकों में **(हि)** जिससे **(युजम्)** युक्त **(अन्यम्)** अन्य को **(अकृत)** करता है और **(प्रवेपनी)** चलती हुई **(गव्यम्)** गौओं के लिये हितकारक **(ईम्)** जल को **(सत्वभिः)** पदार्थों से **(उत्, सृजते)** उत्पन्न करता है, वह सुख करने वाला होता है॥८॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि अपने राज्य में उत्तम धनी, विद्वान् तथा अध्यापक और उपदेशकों की उत्तम प्रकार रक्षा करके उनसे व्यवहार धन और विद्या की उन्नति करे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सहस्रसामाग्निंवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः।**
**तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रममवत्त्वेषमस्तु॥९॥४॥**

**सहस्रऽसाम्। आग्निंऽवेशिम्। गृणीषे। शत्रिम्। अग्ने। उपऽमाम्। केतुम्। अर्यः। तस्मै। आपः। संऽयतः। पीपयन्त। तस्मिन्। क्षत्रम्। अमऽवत्। त्वेषम्। अस्तु॥९॥**

**पदार्थः**-**(सहस्रसाम्)** यः सहस्रानसंख्यातान् पदार्थान् सनति विभजति तम् **(आग्निवेशिम्)** योऽग्निं प्रवेशयति तम् **(गृणीषे)** स्तौषि **(शत्रिम्)** दुःखविच्छेदकम् **(अग्ने)** पावक इव **(उपमाम्)** दृष्टान्तम् **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(अर्यः)** स्वामी **(तस्मै)** **(आपः)** जलानीव प्रजाः **(संयतः)** संयमयुक्ताः **(पीपयन्त)** तर्पयन्ति **(तस्मिन्)** **(क्षत्रम्)** धनं राज्यं वा **(अमवत्)** गृहेण तुल्यम् **(त्वेषम्)** प्रकाशयुक्तम् **(अस्तु)**॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! अर्यस्त्वं सहस्रसामाग्निवेशिं शत्रिमुपमां केतुं गृणीषे तस्मै त आप इव संयतः प्रजाः पीपयन्त तस्मिंस्त्वयि राज्ञि अमवत्त्वेषं क्षत्रमस्तु॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजा भवितुमिच्छेत्तर्हि सर्वशास्त्रविशारदीं शुभगुणाढ्यां प्रज्ञां प्राप्य पितृवत्प्रजाः पालयेदेवं कृते सति प्रशस्तं राष्ट्रं वर्धेतेति॥९॥

अत्रेन्द्रविद्वत्प्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! **(अर्यः)** स्वामी आप **(सहस्रसाम्)** असङ्ख्य पदार्थों के विभाग करने **(आग्निवेशिम्)** अग्नि को प्रवेश कराने और **(शत्रिम्)** दुःख के नाश करने वाले **(उपमाम्)** दृष्टान्त और **(केतुम्)** बुद्धि की **(गृणीषे)** स्तुति करते हो **(तस्मै)** उन आपके लिये **(आपः)**

जलों के सदृश प्रजायें **(संयतः)** इन्द्रियों के निग्रह से युक्त हुईं **(पीपयन्त)** तृप्ति करती हैं **(तस्मिन्)** उन आप राजा में **(अमवत्)** गृह के तुल्य **(त्वेषम्)** प्रकाश से युक्त **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य **(अस्तु)** होवे॥९॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा होने की इच्छा करे तो सर्व शास्त्रों में प्रविष्ट हुई स्वच्छ और उत्तम गुणों से युक्त बुद्धि को प्राप्त होकर जैसे पितृजन पुत्रों का पालन करते वैसे प्रजाओं का पालन करे, ऐसा करने पर श्रेष्ठ राज्य बढ़े॥९॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौंतीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथाष्टर्चस्य पञ्चत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रभूवसुराङ्गिरसो ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृदनुष्टुप्। ३ विराडनुष्टुप्। ७ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिगुष्णिक्। ४, ५ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ८ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले पैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों का वर्णन करते हैं॥

**यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर।**

**अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम्॥ १॥**

**यः। ते। साधिष्ठः। अवसे। इन्द्र। क्रतुः। तम्। आ। भर। अस्मभ्यम्। चर्षणिऽसहम्। सस्निम्। वाजेषु। दुस्तरम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**साधिष्ठः**) अतिशयेन साधुः (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**इन्द्र**) सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशित राजन् (**क्रतुः**) प्रज्ञा (**तम्**) (**आ**) (**भर**) धर (**अस्मभ्यम्**) (**चर्षणीसहम्**) मनुष्याणां सोढारम् (**सस्निम्**) ब्रह्मचर्य्यव्रतविद्याग्रहणाभ्यां पवित्रम् (**वाजेषु**) स- ग्रामेषु (**दुष्टरम्**) दुःखेनोल्लङ्घयितुं योग्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्तेऽवसे साधिष्ठः क्रतुरस्ति तं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरमस्मभ्यमा भर॥ १॥

**भावार्थः**-स एव राजोत्तमः स्याद्यो दीर्घेण ब्रह्मचर्य्येणाप्तेभ्यो विद्याविनयौ गृहीत्वा न्यायेन राज्यं शिष्यात्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश न्याय से प्रकाशित राजन् (**यः**) जो (**ते**) आपकी (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**साधिष्ठः**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**क्रतुः**) बुद्धि है (**तम्**) उस (**चर्षणीसहम्**) मनुष्यों को सहने वाले (**सस्निम्**) ब्रह्मचर्य्यव्रत और विद्या के ग्रहण से पवित्र (**वाजेषु**) और संग्रामों में (**दुष्टरम्**) दुःख से उल्लंघन करने योग्य को (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-वही राजा उत्तम होवे जो दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से यथार्थवक्ता जनों से विद्या और विनय को ग्रहण करके न्याय से राज्य की शिक्षा देवे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः।**

**यद्वा पञ्च क्षितीनामवस्तत्सु न आ भर॥ २॥**

**यत्। इन्द्र। ते। चतस्रः। यत्। शूर। सन्ति। तिस्रः। यत्। वा। पञ्च। क्षितीनाम्। अवः। तत्। सु। नः। आ। भर॥२॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) याः (**इन्द्र**) राजन् (**ते**) तव (**चतस्रः**) सामदामदण्डभेदाख्या वृत्तयः (**यत्**) (**शूर**) (**सन्ति**) (**तिस्रः**) सुशिक्षिता सभा सेना प्रजा (**यत्**) (**वा**) (**पञ्च**) भूम्यादीनि पञ्चतत्त्वानि (**क्षितीनाम्**) मनुष्याणाम् (**अवः**) रक्षणादिकम् (**तत्**) (**सु**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर पुष्णीहि वा॥२॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र राजन्! यत्ते चतस्रो यत्तिस्रः पञ्च च सन्ति वा यत् क्षितीनामवोऽस्ति तन्नः स्वा भर॥२॥

**भावार्थः**-स एव राज्यं वर्धयितुं शक्नुयाद्यो राज्याङ्गानि सर्वाणि पूर्णानि सङ्गृह्णीयात्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) वीर (**इन्द्र**) राजन्! (**यत्**) जो (**ते**) आपकी (**चतस्रः**) चार साम, दाम, दण्ड और भेद नामक वृत्ति और (**यत्**) जो (**तिस्रः**) तीन उत्तम प्रकार शिक्षित सभा, सेना और प्रजा और (**पञ्च**) पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश पांच तत्त्व (**सन्ति**) हैं (**वा**) वा (**यत्**) जो (**क्षितीनाम्**) मनुष्यों का (**अवः**) रक्षण आदि है (**तत्**) उसको (**नः**) हम लोगों के लिये (**सु**) उत्तमता से (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करो वा पुष्ट करो॥२॥

**भावार्थः**-वही राज्य बढ़ाने को समर्थ होवे कि जो राज्य के अङ्ग सब पूर्ण उत्तम प्रकार ग्रहण करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

## आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे।
## वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः॥३॥

**आ। ते। अवः। वरेण्यम्। वृषन्ऽतमस्य। हूमहे। वृषऽजूतिः। हि। जज्ञिषे। आऽभूभिः। इन्द्र। तुर्वणिः॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**अवः**) रक्षणादिकं कर्म्म (**वरेण्यम्**) अतीवोत्तमम् (**वृषन्तमस्य**) अतिशयेन बलिष्ठस्य (**हूमहे**) स्वीकुर्महे (**वृषजूतिः**) वृषस्येव जूतिर्वेगो यस्य सः (**हि**) यतः (**जज्ञिषे**) जायसे (**आभूभिः**) ये विद्याविनये समन्ताद्भवन्ति तैः सह (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् (**तुर्वणिः**) यस्तुरः शीघ्रकारिणः शुभगुणानमात्यान् याचते सः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि यतो वृषजूतिस्तुर्वणिस्त्वमाभूभिस्सह जज्ञिषे तस्य वृषन्तमस्य ते वरेण्यमवो वयमा हूमहे॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यतो भवान् शुभगुणकर्मस्वभावोऽस्ति पितृवदस्मान् पालयति तस्माद्भवन्तं राजानं वयं मन्यामहे॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! **(हि)** जिससे **(वृषजूति:)** वृष के वेग से युक्त **(तुर्वणि:)** शीघ्रकारी और श्रेष्ठ गुणों से युक्त मंत्रियों की याचना करने वाले आप **(आभूभि:)** जो विद्या और विनय में सब ओर से प्रकट होते हैं, उनके साथ **(जज्ञिषे)** प्रकट होते हो, उन **(वृषन्तमस्य)** अत्यन्त बलिष्ठ **(ते)** आपके **(वरेण्यम्)** अतीव उत्तम **(अव:)** रक्षण आदि कर्म्म को हम लोग **(आ, हूमहे)** उत्तम प्रकार से स्वीकार करते हैं॥३॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जिससे आप उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले हो और पितृजन जैसे सन्तानों को वैसे हम लोगों का पालन करते हो, इससे आपको राजा हम लोग मानते हैं॥३॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शव:।**

**स्वक्षत्रं ते धृषन्मन: सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्॥४॥**

**वृषा। हि। असि। राधसे। जज्ञिषे। वृष्णि। ते। शव:। स्वक्षत्रम्। ते। धृषत्। मन:। सत्राऽहम्। इन्द्र। पौंस्यम्॥४॥**

**पदार्थ:**-**(वृषा)** बलिष्ठ: सुखवर्षको वा **(हि)** यत: **(असि)** **(राधसे)** धनैश्वर्य्याय **(जज्ञिषे)** **(वृष्णि)** सुखवर्षकम् **(ते)** तव **(शव:)** बलम् **(स्वक्षत्रम्)** स्वं राज्यं स्वस्य क्षत्रियकुलं वा **(ते)** तव **(धृषत्)** प्रगल्भम् **(मन:)** चित्तम् **(सत्राहम्)** सत्यधर्म्माचरणदिनम् **(इन्द्र)** बलिष्ठ **(पौंस्यम्)** पुम्भ्यो हितं बलम्॥४॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! हि यतस्त्वं वृषासि राधसे जज्ञिषे यस्य ते वृष्णि: शव: स्वक्षत्रं यस्य ते धृषन्मनो यस्य ते सत्राहं पौंस्यं चास्ति तं त्वां वयं राजानं मन्यामहे॥४॥

**भावार्थ:**-प्रजाभिर्यो बलिष्ठ: पूर्णविद्याविनयबल: शौर्य्यादिगुणैर्धृष्ट: सदा न्यायधर्म्माचरणो भवेत्स एव राजा मन्तव्य:॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** बलवान् पुरुष! **(हि)** जिससे आप **(वृषा)** बलिष्ठ वा सुख के वर्षाने वाले **(असि)** हैं और **(राधसे)** धनरूप ऐश्वर्य्य के लिये **(जज्ञिषे)** प्रकट होते हो, जिन **(ते)** आपका **(वृष्णि:)** सुख वर्षाने वाले **(शव:)** बल और **(स्वक्षत्रम्)** अपना राज्य वा अपना क्षत्रियकुल जिन **(ते)** आपका **(धृषत्)** प्रगल्भ अर्थात् धृष्ट **(मन:)** चित्त जिन आपका **(सत्राहम्)** सत्य धर्म्म के आचरण का प्रकट करने वाला दिन और **(पौंस्यम्)** पुरुषों के लिये हितकारक बल है, उन आप को हम लोग राजा मानते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-प्रजाओं को चाहिये कि जो बलवान्, पूर्ण विद्या, विनय और बल से युक्त, शूरता आदि गुणों से धृष्ट, सदा न्याय और धर्म्माचरणयुक्त हो, उसी को राजा मानें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं तमिन्द्र मर्त्यममित्रयन्तमद्रिवः।**

**सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते॥५॥५॥**

**त्वम्। तम्। इन्द्र। मर्त्यम्। अमित्रऽयन्तम्। अद्रिऽवः। सर्वऽरथा। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। नि। याहि। शवसः। पते॥५॥**

**पदार्थः-(त्वम्) (तम्) (इन्द्र)** ऐश्वर्य्यमिच्छुक प्रजाजन **(मर्त्यम्)** मनुष्यशरीरधारिणम् **(अमित्रयन्तम्)** शत्रुवदाचरन्तम् **(अद्रिवः)** मेघयुक्तसूर्य्यवद्राजमान **(सर्वरथा)** सर्वे रथा यानानि यस्य सः **(शतक्रतो)** अमितप्रज्ञ **(नि)** नितराम् **(याहि)** गच्छ **(शवसः)** बलस्य सैन्यस्य **(पते)** पालक सेनेश॥५॥

**अन्वयः**-हे शवसस्पते! शतक्रतोऽद्रिव इन्द्र! सर्वरथा त्वं तममित्रयन्तं मर्त्यं विजयाय नि याहि॥५॥

**भावार्थः**- हे राजन्! यो ह्यन्यायेन तव शत्रुर्भवेत् तच्छासनाय सबलस्त्वं नित्यं गच्छेः॥५॥

**पदार्थः-(शवसः)** बल अर्थात् सेना के **(पते)** पालक सेना के स्वामिन्! **(शतक्रतो)** अमित बुद्धि वाले **(अद्रिवः)** मेघयुक्त सूर्य्य के सदृश राजमान **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करने वाले प्रजाजन! **(सर्वरथा)** सम्पूर्ण वाहनों से युक्त **(त्वम्)** आप **(तम्)** उस **(अमित्रयन्तम्)** शत्रु के सदृश आचरण करते हुए **(मर्त्यम्)** मनुष्यशरीरधारी को विजय करने के लिये **(नि)** अत्यन्त **(याहि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो अन्याय से आपका शत्रु होवे, उसके शासन के लिये बल के सहित आप नित्य प्राप्त हूजिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वामिद्वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः।**

**उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं हवन्ते वाजसातये॥६॥**

**त्वाम्। इत्। वृत्रहन्ऽतम। जनासः। वृक्तऽबर्हिषः। उग्रम्। पूर्वीषु। पूर्व्यम्। हवन्ते। वाजऽसातये॥६॥**

**पदार्थः-(त्वाम्) (इत्) (वृत्रहन्तम)** यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ **(जनासः)** प्रसिद्धाः पुण्यात्मानः **(वृक्तबर्हिषः)** वृक्तं विदीर्णीकृतं हुतपदार्थैरन्तरिक्षं यैस्त ऋत्विजः **(उग्रम्)** दुष्टेषु कठिनस्वभावम् **(पूर्वीषु)** प्राचीनासु प्रजासु **(पूर्व्यम्)** पूर्वै राजभिः कृतसत्कारम् **(हवन्ते)** स्तुवन्ति गृह्णन्ति वा **(वाजसातये)** स- ग्रामायान्नादीनां विभागाय वा॥६॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्तम राजन्! वृक्तबर्हिषो जनासो वाजसातय उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं त्वां हवन्ते स त्वं तान् सर्वदेत्संरक्ष॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः प्रतिष्ठितक्षत्रियकुलजो विद्याविनयादिसम्पन्नः प्रजापालनतत्परेच्छो भवेत्तं राजानं मन्यध्वम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्तम)** अतिशय करके धन को प्राप्त होने वाले राजन्! **(वृक्तबर्हिषः)** विदीर्ण किया है हवन किये हुए पदार्थों से अन्तरिक्ष को जिन्होंने ऐसे ऋत्विक् **(जनासः)** प्रसिद्ध पुण्यात्मा जन **(वाजसातये)** संग्राम वा अन्न आदि के विभाग के लिये **(उग्रम्)** दुष्टों में कठिन स्वभाव वाले और **(पूर्वीषु)** प्राचीन प्रजाओं में **(पूर्व्यम्)** पूर्व राजाओं से किया गया सत्कार जिनका ऐसे **(त्वाम्)** आपकी **(हवन्ते)** स्तुति करते वा ग्रहण करते हैं, वह आप उनकी सर्वदा **(इत्)** ही उत्तम प्रकार रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रतिष्ठित क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न हुआ, विद्या और विनय आदि से युक्त और प्रजा के पालन में तत्पर इच्छा जिसकी ऐसा होवे, उसको राजा मानो॥६॥

**पुनः प्रजाविषयमाह॥**

फिर प्रजाविषय को कहते हैं॥

**अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु।**

**सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम्॥७॥**

**अस्माकम्। इन्द्र। दुस्तरम्। पुरःऽयावानम्। आजिषु। सऽयावानम्। धनेऽधने। वाजऽयन्तम्। अव। रथम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(दुष्टरम्)** शत्रुभिर्दुःखेन तरितुं योग्यम् **(पुरोयावानम्)** नगरम् यान्तम् **(आजिषु)** स-ामेषु **(सयावानम्)** सेनादिना सह गच्छन्तम् **(धनेधने)** **(वाजयन्तम्)** कृताऽन्वेक्षणम् **(अवा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(रथम्)** रमणीयं यानम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमस्माकं दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु धनेधने सयावानं वाजयन्तं रथञ्चाऽवा॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वमस्माकं पुरं राष्ट्रं च यथावद्रक्षितुं शक्नुयास्तर्ह्यस्माकं राजा भव॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! आप **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(दुष्टरम्)** शत्रुओं से दुःख से पार होने योग्य **(पुरोयावानम्)** नगर को चलते हुए **(आजिषु)** संग्रामों में **(धनेधने)** धन-धन में **(सयावानम्)** सेना आदि के साथ चलते हुए **(वाजयन्तम्)** किया अन्वेक्षण जिसका ऐसे **(रथम्)** सुन्दर वाहन की **(अवा)** रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप लोग हम लोगों के नगर और राज्य की यथावत् रक्षा करने को समर्थ होवें तो हम लोगों के राजा होवें॥७॥

**अथ राजद्वारा विद्वद्विषयमाह॥**

अब राजद्वारा विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या।**

**वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे॥८॥६॥**

**अस्माकम्। इन्द्र। आ। इहि। नः। रथम्। अव। पुरम्ऽध्या। वयम्। शविष्ठ। वार्यम्। दिवि। श्रवः। दधीमहि। दिवि। स्तोमम्। मनामहे॥८॥**

**पदार्थः**-(**अस्माकम्**) (**इन्द्र**) (**आ, इहि**) प्राप्नुहि (**नः**) अस्मान् (**रथम्**) बहुविधं यानम् (**अव**) पाहि (**पुरन्ध्या**) बहुविद्याधरित्र्या प्रज्ञया (**वयम्**) (**शविष्ठ**) अतिशयेन बलयुक्त (**वार्य्यम्**) वरणीयम् (**दिवि**) कमनीये राष्ट्रे (**श्रवः**) श्रवणमन्नं वा (**दधीमहि**) धरेम (**दिवि**) प्रशंसनीये राज्ये (**स्तोमम्**) सकलशास्त्राध्ययनाऽध्यापनम् (**मनामहे**) विजानीयाम॥८॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठेन्द्र! त्वं पुरन्ध्याऽस्माकं रथमेहि नोऽस्माँश्च सततमव येन वयं दिवि वार्य्यं श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे॥८॥

**भावार्थः**-स एव प्रजाप्रियो भवति यो राजा न्यायेन प्रजाः सम्पाल्य विद्यासुशिक्षे प्रजासु प्रवर्त्तयेदिति॥८॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**शविष्ठ**) अत्यन्त बल से युक्त (**इन्द्र**) राजन्! आप (**पुरन्ध्या**) बहुत विद्या को धारण करने वाली बुद्धि से (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**रथम्**) बहुत प्रकार के वाहन को (**आ, इहि**) प्राप्त हूजिये और (**नः**) हम लोगों का निरन्तर (**अव**) पालन कीजिये जिससे (**वयम्**) हम लोग (**दिवि**) मनोहर राज्य में (**वार्य्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**श्रवः**) श्रवण वा अन्न को (**दधीमहि**) धारण करें और (**दिवि**) प्रशंसा करने योग्य राज्य में (**स्तोमम्**) सम्पूर्ण शास्त्र के पढ़ने और पढ़ाने को (**मनामहे**) जानें॥८॥

**भावार्थः**-वही प्रजा का प्रिय होता है, जो राजा न्याय से प्रजाओं का उत्तम प्रकार पालन करके विद्या और उत्तम शिक्षा की प्रजाओं में प्रवृत्ति करे॥८॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतीसवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रभूवसुराङ्गिरस ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४, ५ निचृत् त्रिष्टुप्। २, ६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथेन्द्रपदवाच्यराजविषयमाह॥*

अब छः ऋचा वाले छत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजविषय को कहते हैं॥

**स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद्दातुं दामनो रयीणाम्।**
**धन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम्॥ १॥**

**सः। आ। गमत्। इन्द्रः। यः। वसूनाम्। चिकेतत्। दातुम्। दामनः। रयीणाम्। धन्वऽचरः। न। वंसगः। तृषाणः। चकमानः। पिबतु। दुग्धम्। अंशुम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**आ**) समन्तात् (**गमत्**) गच्छेत् (**इन्द्रः**) दाता (**यः**) (**वसूनाम्**) द्रव्याणाम् (**चिकेतत्**) जानाति (**दातुम्**) (**दामनः**) दात्रीः (**रयीणाम्**) (**धन्वचरः**) यो धन्वन्यन्तरिक्षे चरति (**न**) इव (**वंसगः**) यो वंसान् सत्याऽसत्यविभाजकान् गच्छति (**तृषाणः**) तृषातुर इव (**चकमानः**) कामयमानः (**पिबतु**) (**दुग्धम्**) (**अंशुम्**) प्राणप्रदम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रो वसूनां दातुं चिकेतद्रयीणां दामनश्चिकेतत्स तृषाणो धन्वचरो न वंसगश्चकमानोऽस्माना गमदंशुं दुग्धं पिबतु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यो धनप्रदो विवेचकः सत्यं कामयमान इष्टमर्य्यादो जनो भवेत् स एव राजा भावनीयः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**इन्द्रः**) दाता (**वसूनाम्**) द्रव्यों के (**दातुम्**) देने को (**चिकेतत्**) जानता और (**रयीणाम्**) धनों की (**दामनः**) देने वालियों को जानता है (**सः**) वह (**तृषाणः**) पिपासा से व्याकुल के सदृश और (**धन्वचरः**) अन्तरिक्ष में चलने वाले के (**न**) सदृश (**वंसगः**) सत्य और असत्य के विभाग करने वालों को प्राप्त होने वाला और (**चकमानः**) कामना करता हुआ हम लोगों को (**आ**) सब प्रकार से (**गमत्**) प्राप्त होवे और (**अंशुम्**) प्राणों के देने वाले (**दुग्धम्**) दुग्ध का (**पिबतु**) पान करे॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जो धन देने, विचार करने, सत्य की कामना करने और मर्य्यादा को चाहने वाला होवे, उसी को राजा मानें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत्सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे।**

**अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे॥२॥**

**आ। ते। हनू इति। हरिऽवः। शूर। शिप्रे इति। रुहत्। सोमः। न। पर्वतस्य। पृष्ठे। अनु। त्वा। राजन्। अर्वतः। न। हिन्वन्। गीःऽभिः। मदेम। पुरुऽहूत। विश्वे॥२॥**

**पदार्थः-(आ)** **(ते)** तव **(हनू)** मुखनासिके **(हरिवः)** प्रशस्तमनुष्ययुक्त **(शूर)** शत्रूणां हिंसक **(शिप्रे)** सुशोभिते **(रुहत्)** रोहति **(सोमः)** सोमलता **(न)** इव **(पर्वतस्य)** शैलस्य **(पृष्ठे)** उपरि **(अनु)** **(त्वा)** त्वाम् **(राजन्)** **(अर्वतः)** अश्वान् **(न)** इव **(हिन्वन्)** गमयन् **(गीर्भिः)** सत्योज्ज्वलाभिर्वाग्भिः **(मदेम)** आनन्देम **(पुरुहूत)** बहुभिः कृतसत्कार **(विश्वे)** सर्वे॥२॥

**अन्वयः**-हे हरिवः शूर पुरुहूत राजन्! यस्य ते शिप्रे हनू गीर्भिर्हिन्वन्नर्वतो न पर्वतस्य पृष्ठे सोमो न व्यवहार आ रुहत् तं त्वा विश्वे वयमनु मदेम त्वमस्मानानन्दय॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा सत्सङ्गं विदधाति स पर्वते सोमलतेव सर्वतो वर्धते॥२॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** अच्छे मनुष्यों से युक्त **(शूर)** शत्रुओं के नाश करने वाले **(पुरुहूत)** बहुतों से सत्कार किये गये **(राजन्)** राजन्! जिन **(ते)** आप को **(शिप्रे)** उत्तम प्रकार शोभित **(हनू)** मुख और नासिका **(गीर्भिः)** सत्य से उज्ज्वल वाणियों से **(हिन्वन्)** चलवाता हुआ **(अर्वतः)** घोड़ों के **(न)** सदृश और **(पर्वतस्य)** पर्वत के **(पृष्ठे)** ऊपर **(सोमः)** सोमलता के **(न)** सदृश व्यवहार **(आ, रुहत्)** प्रकट होता है उन **(त्वा)** आप को **(विश्वे)** सब हम लोग **(अनु, मदेम)** आनन्दित करें तथा आप हम लोगों को आनन्दित करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा सत्सङ्ग करता है, वह पर्वत में सोमलता के सदृश सब ओर से वृद्धि को प्राप्त होता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः।**

**रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन् पुरूवसुः॥३॥**

**चक्रम्। न। वृत्तम्। पुरुऽहूत। वेपते। मनः। भिया। मे। अमतेः। इत्। अद्रिऽवः। रथात्। अधि। त्वा। जरिता। सदाऽवृध। कुवित्। नु। स्तोषत्। मघऽवन्। पुरुऽवसुः॥३॥**

**पदार्थः-(चक्रम्)** **(न)** इव **(वृत्तम्)** **(पुरुहूत)** बहुषु सत्कृत **(वेपते)** कम्पते **(मनः)** चित्तम् **(भिया)** भयेन **(मे)** मम **(अमतेः)** निर्बुद्धेः **(इत्)** एव **(अद्रिवः)** मेघवत्सूर्य इव **(रथात्)** यानात् **(अधि)**

**(त्वा)** त्वाम् **(जरिता)** स्तावक: **(सदावृध)** सदैव वर्धक **(कुवित्)** महान् **(नु)** **(स्तोषत्)** स्तुयात् **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(पुरूवसु:)** असङ्ख्यधन:॥३॥

**अन्वय:**-हे अद्रिव: पुरुहूत मघवन् सदावृध राजन्! यस्मादमतेर्म इन्मनो रथाद् वृत्तं चक्रं न भिया वेपते तं त्वं निवारय य: कुवित्पुरूवसुर्जरिता त्वा न्वधि स्तोषत् तं त्वं सत्कुर्य्या:॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। यदि राजा चोरान् साहसिकादीन् प्रयत्नेन न निरुन्ध्याच्छ्रेष्ठान् न सत्कुर्यात्तर्हि भयोद्भवेन प्रजा उद्विग्ना: स्यु:॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(अद्रिव:)** मेघ और सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान **(पुरुहूत)** बहुतों में सत्कार पाये हुए **(मघवन्)** बहुत धनों से युक्त **(सदावृध)** सदा वृद्धि करने वाले राजन्! जिस कारण **(अमते:, मे)** मुझ निर्बुद्धि का **(इत्)** ही **(मन:)** चित्त **(रथात्)** वाहन से **(वृत्तम्)** वर्त्ते हुए **(चक्रम्)** चक्र के **(न)** सदृश **(भिया)** भय से **(वेपते)** कंपता है, उस कारण का आप निवारण कीजिये और जो **(कुवित्)** महान् **(पुरूवसु:)** असंख्यधन से युक्त **(जरिता)** स्तुति करने वाला **(त्वा)** आपको **(नु)** निश्चय **(अधि, स्तोषत्)** स्तुति करे उसका आप सत्कार करें॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा चोर और साहस करने वाले जनों का प्रयत्न से न निवारण करे और श्रेष्ठ जनों का न सत्कार करे तो भय के उद्भव से प्रजायें व्याकुल होवें॥३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रेयर्ति वाचं बृहदाशुषाण:।**

**प्र सव्येन मघवन् यंसि राय: प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेन:॥४॥**

**एष:। ग्रावाऽइव। जरिता। ते। इन्द्र। इयर्ति। वाचम्। बृहत्। आशुषाण:। प्र। सव्येन। मघऽवन्। यंसि। राय:। प्र। दक्षिणित्। हरिऽव:। मा। वि। वेन:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(एष:)** **(ग्रावेव)** मेघ इव **(जरिता)** सकलविद्याप्रशंसक: **(ते)** तव **(इन्द्र)** शत्रुविदारक राजन्! **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(वाचम्)** सुशिक्षितां वाणीम् **(बृहत्)** महत् **(आशुषाण:)** व्याप्नुवन् सन् **(प्र)** **(सव्येन)** वामपार्श्वेन **(मघवन्)** धनाढ्य **(यंसि)** प्राप्नोषि नियच्छसि वा **(राय:)** धनस्य **(प्र, दक्षिणित्)** दक्षिणेन पार्श्वेनैति गच्छतीति **(हरिव:)** उत्तमाऽमात्ययुक्त **(मा)** **(वि)** विगतार्थे **(वेन:)** कामयमान:॥४॥

**अन्वय:**-हे हरिवो मघवन्निन्द्र! यस्त एष जरिता ग्रावेव वाचमियर्त्ति स बृहदाशुषाण: सव्येन प्र दक्षिणित् सन् राय: प्र यंसि स त्वं वि वेनो मा भव॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! ये महान्तो विद्वांसो वाचं गृहीत्वा ग्राहयित्वा संयतेन्द्रिया भवन्ति ते निष्कामा न भवन्ति, किन्तु सत्यकामा असत्यद्वेषिण: सततं वर्त्तन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** उत्तम मन्त्रियों से और **(मघवन्)** धन से युक्त **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाश करने वाले राजन्! जो **(ते)** आपका **(एषः)** यह **(जरिता)** सम्पूर्ण विद्याओं की प्रशंसा करने वाला **(ग्रावेव)** मेघ के सदृश **(वाचम्)** उत्तम शिक्षायुक्त वाणी को **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है, वह **(बृहत्)** बड़े को **(आशुषाणः)** व्याप्त होता हुआ **(सव्येन)** वाम ओर से **(प्र, दक्षिणित्)** उत्तम प्रकार दहिने भाग से चलने वाला **(रायः)** धन के **(प्र, यंसि)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने वा नियम करने वाले हो वह आप **(वि)** विशेष करके **(वेनः)** कामना करने वाले **(मा)** न हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बड़े विद्वान् जन वाणी को ग्रहण कर वा ग्रहण कराय के इन्द्रियों के निग्रह करने वाले होते हैं, वे निष्फल मनोरथ वाले नहीं होते हैं, किन्तु सत्यकाम और असत्य के द्वेषी निरन्तर वर्त्तमान हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम्।**

**स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः॥५॥**

**वृषा। त्वा। वृषणम्। वर्धतु। द्यौः। वृषा। वृषऽभ्याम्। वहसे। हरिऽभ्याम्। सः। नः। वृषा। वृषऽरथः। सुऽशिप्र। वृषक्रतो इति वृषऽक्रतो। वृषा। वज्रिन्। भरे। धाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृषा)** सुखवर्षकः **(त्वा)** त्वाम् **(वृषणम्)** बलिष्ठम् **(वर्धतु)** वर्धताम् **(द्यौः)** सत्यकामः **(वृषा)** वृष इव बलिष्ठः **(वृषभ्याम्)** बलयुक्ताभ्याम् **(वहसे)** प्राप्नोषि प्रापयसि वा **(हरिभ्याम्)** हरणशीलाभ्यां हस्ताभ्याम् **(सः)** **(नः)** अस्मान् **(वृषा)** दुष्टानां शक्तिबन्धकः **(वृषरथः)** बलिष्ठा वृषभा रथे यस्य **(सुशिप्र)** सुमुखारविन्द **(वृषक्रतो)** वृषाणां बलवतां प्रज्ञाकर्म्माणीव प्रज्ञाकर्म्माणि यस्य सः **(वृषा)** विद्यावर्षकः **(वज्रिन्)** शस्त्रास्त्रवित् **(भरे)** स- ामे **(धाः)** धर॥५॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्र वृषक्रतो वज्रिन्निन्द्र राजन्! यो वृषा वृषणं त्वा वर्धतु यो वृषा त्वं द्यौरिव वृषभ्यां हरिभ्यां वहसे स वृषा त्वं च वृषरथो वृषा नो भरे धाः॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो युष्मान् सर्वदा वर्धयन्ति तांस्त्वं स- ामे विजयाय प्रेर्ष्व॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सुशिप्र)** उत्तम कमल के समान मुख वाले **(वृषक्रतो)** बलवानों की बुद्धि और कर्म्मों के सदृश बुद्धि और कर्म्म जिसके वह **(वज्रिन्)** शस्त्र और अस्त्र के ज्ञान से युक्त राजन्! जो **(वृषा)** सुख वर्षाने वाला **(वृषणम्)** बलिष्ठ **(त्वा)** आप को **(वर्धतु)** बढ़ावे और जो **(वृषा)** वृष के समान बलवान् आप **(द्यौः)** सत्य कामना वाले के सदृश **(वृषभ्याम्)** बल से युक्त **(हरिभ्याम्)** हरणशील हस्तों से **(वहसे)** प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हो **(सः)** वह **(वृषा)** दुष्टों की शक्ति रोकने वाला और आप

**(वृषरथः)** बलिष्ठ बैल रथ में जिनके ऐसे **(वृषा)** विद्या के वर्षाने वाले **(नः)** हम लोगों को **(भरे)** संग्राम में **(धाः)** धरिये धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् तुम लोगों को सर्वदा बढ़ाते हैं, उनको आप संग्राम में विजय के लिये प्रेरणा दीजिये॥५॥

**अथ शिल्पिकार्य्यविषयमाह॥**

अब शिल्पिकार्य्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो रोहि॑तौ वा॒जिनौ॑ वा॒जिनी॑वान् त्रि॒भिः श॒तैः सच॑माना॒वदि॑ष्ट।**

**यू॒ने सम॑स्मै क्षि॒तयो॑ नमन्तां श्रु॒तर॑थाय मरुतो दुवो॒या॥६॥७॥**

**यः। रोहि॑तौ। वा॒जिनौ॑। वा॒जिनी॑ऽवान्। त्रि॒ऽभिः। श॒तैः। सच॑मानौ। अदि॑ष्ट। यू॒ने। सम्। अ॒स्मै। क्षि॒तयः। न॒म॒न्ता॒म्। श्रु॒तऽर॑थाय। म॒रु॒तः। दु॒व॒ःऽया॥६॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(रोहितौ)** विद्युत्प्रसिद्धवह्नी **(वाजिनौ)** अतिवेगवन्तौ **(वाजिनीवान्)** वेगक्रिया-ज्ञानयुक्तः **(त्रिभिः)** **(शतैः)** **(सचमानौ)** सम्बद्धौ **(अदिष्ट)** दिशेत् **(यूने)** पूर्णयुवावस्थाय **(सम्)** **(अस्मै)** **(क्षितयः)** मनुष्याः **(नमन्ताम्)** **(श्रुतरथाय)** श्रुता रथा यस्य **(मरुतः)** मनुष्याः **(दुवोया)** यौ दुवः परिचरणं यातस्तौ॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो वाजिनीवाँस्त्रिभिः शतैरस्मै यूने सचमानौ दुवोया वाजिनौ रोहतावदिष्ट तस्मै श्रुतरथाय क्षितयः सन्नमन्ताम्॥६॥

**भावार्थः**-ये विमानादियानकार्य्येष्वग्न्यादिपदार्थान् संप्रयोजयन्ति ते यावता त्रिभिः शतैरश्वैर्यानं सद्यो नयन्ति तावद्बलं तस्यां कलायां भवति। य एव शिल्पविद्याकृत्येषु प्रसिद्धा जायन्ते तेषां सत्कारः सर्वे कुर्वन्तीति॥६॥

अत्रेन्द्रविद्वच्छिल्पिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यः)** जो **(वाजिनीवान्)** वेग की क्रिया का जानने वाला **(त्रिभिः)** तीन **(शतैः)** सैकड़ों से **(अस्मै)** इस **(यूने)** युवा पुरुष के लिये **(सचमानौ)** मिले हुए **(दुवोया)** जो परिचरण को प्राप्त होते हैं उन **(वाजिनौ)** बड़े वेग वाले **(रोहितौ)** बिजुली और प्रसिद्ध अग्नि का **(अदिष्ट)** उपदेश देवे उस **(श्रुतरथाय)** सुने गये वाहन जिसके उसके लिये **(क्षितयः)** मनुष्य **(सम्, नमन्ताम्)** अच्छे प्रकार नम्र होवें॥६॥

**भावार्थः**-जो विमान आदि वाहन के कार्य्यों में अग्नि आदि पदार्थों का संप्रयोग करते हैं, वे जितने तीन सौ घोड़ों से वाहन शीघ्र पहुंचाते हैं, उतना बल उस कला में होता है और जो इस प्रकार शिल्पविद्या के कृत्यों में प्रसिद्ध होते हैं, उनका सत्कार सब करते हैं॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और शिल्पी के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छत्तीसवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथेन्द्रविषयमाह॥*

अब पांच ऋचा वाले सैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रविषय को कहते हैं॥

**सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः।**

**तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह॥ १॥**

**सम्। भानुना। यतते। सूर्यस्य। आऽजुह्वानः। घृतऽपृष्ठः। सुऽअञ्चाः। तस्मै। अमृध्राः। उषसः। वि। उच्छान्। यः। इन्द्राय। सुनवाम। इति। आह॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**भानुना**) किरणेन (**यतते**) (**सूर्य्यस्य**) (**आजुह्वानः**) कृताह्वानः (**घृतपृष्ठः**) घृतमुदकं पृष्ठे यस्य सः (**स्वञ्चाः**) यः सुष्ठ्वञ्चति (**तस्मै**) (**अमृध्राः**) अहिंसिकाः (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**वि**) (**उच्छान्**) विवासयेत् (**यः**) (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्ययुक्ताय जनाय (**सुनवाम**) निष्पादयेत् (**इति**) (**आह**) उपदिशति॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य आजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चा अग्निः सूर्य्यस्य भानुना सं यतते योऽमृध्रा उषसो व्युच्छान् य एतद्विद्यां जानाति तस्मा इन्द्राय य आहेति वयं तं सुनवाम॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत्सूर्य्यप्रकाशेन सह वर्त्तते तदादिविद्यां य उपदिशेत् सोऽस्माकमुन्नतिकरो भवतीति वयं विजानीमः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**आजुह्वानः**) आह्वान किया गया (**घृतपृष्ठः**) जल जिसके पीठ पर ऐसा (**स्वञ्चाः**) उत्तम प्रकार चलने वाला अग्नि (**सूर्य्यस्य**) सूर्य्य की (**भानुना**) किरण से (**सम्**) उत्तम प्रकार (**यतते**) प्रयत्न करता और जो (**अमृध्राः**) नहीं हिंसा करनेवाली (**उषसः**) प्रभातवेलाओं को (**वि, उच्छान्**) वसावे और जो इस विद्या को जानता है (**तस्मै**) उस (**इन्द्राय**) ऐश्वर्यंयुक्त जन के लिये जो (**आह**) उपदेश देता है (**इति**) इस प्रकार हम लोग उसको (**सुनवाम**) उत्पन्न करें॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली, सूर्य्य के प्रकाश के साथ वर्त्तमान है, उसको आदि लेकर विद्या का जो उपदेश देवे, वह हम लोगों की उन्नति करने वाला होता है, यह हम लोग जानें॥ १॥

**अथ शिल्पिविद्वद्विषयमाह॥**

अब शिल्पी विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते।**

**ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्ययदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम्॥ २॥**

**समिद्धऽअग्निः। वनवत्। स्तीर्णऽबर्हिः। युक्तऽग्रावा। सुतऽसोमः। जराते। ग्रावाणः। यस्य। इषिरम्। वदन्ति। अयत्। अध्वर्युः। हविषा। अव। सिन्धुम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धाग्निः**) प्रदीप्तः पावकः (**वनवत्**) सम्भजते (**स्तीर्णबर्हिः**) स्तीर्णमाच्छादितं बर्हिरन्तरिक्षं येन सः (**युक्तग्रावा**) युक्तो ग्रावा मेघो येन (**सुतसोमः**) सुतः सोमो यस्मात् (**जराते**) स्तौति (**ग्रावाणः**) मेघाः (**यस्य**) (**इषिरम्**) गमनम् (**वदन्ति**) (**अयत्**) गच्छति (**अध्वर्युः**) अध्वरं शिल्पविद्यां कामयमानः (**हविषा**) अग्नौ प्रक्षेप्य सामग्र्या (**अव**) (**सिन्धुम्**) समुद्रम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यः स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमः समिद्धाग्निः सर्वान् पदार्थान् वनवद् यस्येषिरं ग्रावाणो वदन्ति यमध्वर्युर्हविषा सिन्धुमवायज्जराते च तमग्निं कार्य्येषु संप्रयुङ्क्ष्व॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! योऽग्निः सर्वेषु पदार्थेषु व्याप्तो बहूत्तमगुणक्रियावान् वर्त्तते तं विज्ञाय कार्य्याणि साध्नुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**स्तीर्णबर्हिः**) अर्थात् आच्छादित किया अन्तरिक्ष जिसने ऐसा और (**युक्तग्रावा**) युक्त मेघ जिससे (**सुतसोमः**) तथा प्रकट हुआ चन्द्रमा जिससे (**समिद्धाग्निः**) वह प्रदीप्त हुआ अग्नि सम्पूर्ण पदार्थों का (**वनवत्**) सम्भोग करता है (**यस्य**) जिसके (**इषिरम्**) गमन को (**ग्रावाणः**) मेघ (**वदन्ति**) शब्द से सूचित करते हैं, जिसको (**अध्वर्युः**) शिल्पविद्या की कामना करता हुआ जन (**हविषा**) अग्नि में छोड़ने योग्य सामग्री से (**सिन्धुम्**) समुद्र को (**अव, अयत्**) प्राप्त होता और (**जराते**) स्तुति करता है, उस अग्नि का कार्य्यों में संप्रयोग करो॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो अग्नि सम्पूर्ण पदार्थों में व्याप्त और बहुत उत्तम गुण और क्रियावान् है, उसको जानकर कार्य्यों को सिद्ध करो॥ २॥

**अथ युवावस्थाविवाहविषयमाह॥**

अब युवावस्थाविवाहविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीमिषिराम्।**

**आस्य श्रवस्याद्रथ आ च घोषात्पुरू सहस्रा परि वर्तयाते॥ ३॥**

**वधूः। इयम्। पतिम्। इच्छन्ती। एति। यः। ईम्। वहाते। महिषीम्। इषिराम्। आ। अस्य। श्रवस्यात्। रथः। आ। च। घोषात्। पुरु। सहस्रा। परि। वर्तयाते॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**वधूः**) भार्य्या (**इयम्**) (**पतिम्**) (**इच्छन्ती**) (**एति**) प्राप्नोति (**यः**) (**ईम्**) उदकं सर्वान् पदार्थान् वा (**वहाते**) वहेताम् (**महिषीम्**) महाशुभगुणाम् (**इषिराम्**) प्राप्नुवन्तीम् (**आ**) (**अस्य**) (**श्रवस्यात्**) य आत्मनः श्रव इच्छति तस्मात् (**रथः**) (**आ**) (**च**) (**घोषात्**) शब्दद्वारया (**पुरू**) बहूनि (**सहस्रा**) सहस्राणि (**परि**) सर्वतः (**वर्त्तयाते**) वर्त्तयेत। लेट् प्रथमैकवचन आडागमे णिजन्तस्य वर्त्तेः प्रयोगः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेयं पतिमिच्छन्ती वधूरीद्यं स्वामिनमेति यो हि वधूयुः प्रियामिषिरां महिषीमेति यथा तौ सर्वं गृहकृत्यं वहाते तथेमग्निं संप्रयुक्तो रथो वाहयति सोऽस्याश्रवस्याद् घोषाच्च पुरू सहस्रा पर्या वर्त्तयाते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कृतब्रह्मचर्य्यौ स्त्रीपुरुषौ परस्परं पतिभार्य्ये इच्छतः परस्परं संप्रीतौ हृद्यौ संयुक्तौ सन्तौ गृहाश्रमव्यवहारमलंकुरुतस्तथैव जलाग्नी संप्रयुक्तौ सर्वं व्यवहारं साधयतो बहुभ्यः क्रोशेभ्य आमुहूर्त्तादपि रथादिकं सद्यो गमयत इति सर्वैर्वेद्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(इयम्)** यह **(पतिम्)** पति की **(इच्छन्ती)** इच्छा करती हुई **(वधूः)** स्त्री प्रिय स्वामी को **(एति)** प्राप्त होती है और **(यः)** जो स्त्री को प्राप्त होने वाला प्रिय **(इषिराम्)** प्राप्त होती हुई **(महिषीम्)** बहुत श्रेष्ठ गुणवाली स्त्री को प्राप्त होता है और जैसे वे दोनों सम्पूर्ण गृहकृत्य को **(वहाते)** चलावें वैसे **(ईम्)** जल वा सम्पूर्ण पदार्थों को अग्नि से चलाया गया **(रथः)** वाहन चलाता है वह **(अस्य)** इसके **(आ, श्रवस्यात्)** आत्मा के श्रवण की इच्छा करने वाले से **(घोषात् च)** और शब्दद्वारा से **(पुरू)** बहुतों और **(सहस्रा)** हजारों के **(परि)** सब ओर **(आ, वर्त्तयाते)** अच्छे प्रकार वर्त्तमान है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री और पुरुष परस्पर पति और स्त्रीभाव की इच्छा करते हैं तथा परस्पर प्रसन्न प्रिय होकर संयुक्त हुए गृहाश्रम के व्यवहार को उत्तम रीति से पूर्ण करते हैं, वैसे ही जल और अग्नि संप्रयुक्त किये गये सम्पूर्ण व्यवहार को सिद्ध करते हैं और बहुत कोशों से भी मुहूर्त्तमात्र से वाहन आदि को शीघ्र पहुंचाते हैं, यह सब को जानना चाहिये॥३॥

**अथ सद्यो यानचालनविषयमाह॥**

अब शीघ्र यानचालनविषय को कहते हैं॥

**न स राजा॑ व्यथते॒ यस्मि॒न्निन्द्र॒स्ती॒व्रं सोमं॒ पिब॑ति॒ गोस॑खायम्।**

**आ स॑त्व॒नैरज॑ति॒ हन्ति॑ वृ॒त्रं क्षेति॑ क्षि॒तीः सु॒भगो॒ नाम॒ पुष्य॑न्॥४॥**

**न। सः। राजा॑। व्य॒थ॒ते॒। यस्मि॑न्। इन्द्रः॑। ती॒व्रम्। सोम॑म्। पिब॑ति। गोऽस॑खायम्। आ। स॒त्व॒नैः। अज॑ति। हन्ति॑। वृ॒त्रम्। क्षेति॑। क्षि॒तीः। सु॒ऽभगः॑। नाम॑। पुष्य॑न्॥४॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(सः)** **(राजा)** **(व्यथते)** भयं पीडां प्राप्नोति **(यस्मिन्)** **(इन्द्रः)** विद्युत् **(तीव्रम्)** **(सोमम्)** जलम् **(पिबति)** **(गोसखायम्)** गौर्भूगोलः सखा यस्य तम् **(आ)** **(सत्वनैः)** रथादिद्रव्यैः **(अजति)** गच्छति **(हन्ति)** नाशयति **(वृत्रम्)** मेघम् **(क्षेति)** निवासयत्यैश्वर्य्यं करोति वा **(क्षितीः)** मनुष्यान् **(सुभगः)** शोभनो भग ऐश्वर्य्यं यस्मात्तम् **(नाम)** प्रसिद्धिम् **(पुष्यन्)**॥४॥

**अन्वयः**-यस्मिन् राजनीन्द्रो गोसखायं तीव्रं सोमं पिबति सत्वनैराजति वृत्रं हन्ति स राजा सुभगो नाम

पुष्यन् क्षितीः क्षेति न व्यथते॥४॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञो वशे भूमिजलाग्निवायवो वर्त्तन्ते यस्य राज्ञः कुतश्चिदर्य्यादिर्भयं कदाचिन्न जायते यशस्वी प्रसिद्धश्चाऽस्मिञ्जगति भवति॥४॥

**पदार्थः**-**(यस्मिन्)** जिस राजा में **(इन्द्रः)** बिजुली **(गोसखायम्)** भूगोल है मित्र जिसका उस **(तीव्रम्)** तीव्र **(सोमम्)** जल का **(पिबति)** पान करती **(सत्वनैः)** और रथ आदि द्रव्यों से **(आ, अजति)** आती और **(वृत्रम्)** मेघ का **(हन्ति)** नाश करती है **(सः)** वह **(राजा)** राजा **(सुभगः)** सुन्दर ऐश्वर्य्य जिससे उस **(नाम)** प्रसिद्धि को **(पुष्यन्)** पुष्ट करता हुआ **(क्षितीः)** मनुष्यों को **(क्षेति)** वसाता है वा ऐश्वर्य्य करता और **(न)** न **(व्यथते)** भय वा पीड़ा को प्राप्त होता है॥४॥

**भावार्थः**-जिस राजा के वश में भूमि, जल, अग्नि और पवन हैं, उस राजा को किसी शत्रु आदि से भय कभी नहीं होता और वह राजा यशस्वी और प्रसिद्ध इस जगत् में होता है॥४॥

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब विद्युद्विद्याविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुष्यात् क्षेमे अभि योगे भवात्युभे वृतौ संयती सं जयाति।**

**प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत्॥५॥८॥**

**पुष्यात्। क्षेमे। अभि। योगे। भवाति। उभे इति। वृतौ। संयती इति सम्ऽयती। सम्। जयाति। प्रियः। सूर्ये। प्रियः। अग्ना। भवाति। यः। इन्द्राय। सुतऽसोमः। ददाशत्॥५॥**

**पदार्थः**-**(पुष्यात्)** पुष्टिं कुर्य्यात् **(क्षेमे)** रक्षणे **(अभि)** आभिमुख्ये **(योगे)** अप्राप्तस्य प्राप्तिलक्षणे **(भवाति)** भवेत् **(उभे)** **(वृतौ)** संवृतौ आच्छादने **(संयती)** सम्मिलिते **(सम्)** **(जयाति)** जयेत् **(प्रियः)** **(सूर्य्ये)** सवितरि **(प्रियः)** कामयमानः **(अग्ना)** अग्नौ **(भवाति)** भवेत् **(यः)** **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्योन्नतये **(सुतसोमः)** निष्पादितैश्वर्य्यः **(ददाशत्)** दद्यात्॥५॥

**अन्वयः**-यः सूर्य्ये प्रियोऽग्ना प्रियो भवाति क्षेमे योगेऽभि पुष्याद् वृतावुभे संयती विज्ञाय भवाति सुतसोमः सन्निन्द्राय ददाशत् स जनः शत्रून् सं जयाति॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्न्यादिविद्यां कामयमाना योगक्षेमसाधने कुशला दातारो न्यायप्रिया भवेयुस्त एव दुष्टाञ्जेतुं शक्नुयुरिति॥५॥

अत्रेन्द्रशिल्पिविद्वद्युवावस्थाविवाहवर्णनं सद्यो यानचालनं विद्युद्विद्यावर्णनं च कृतमत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(सूर्य्ये)** सूर्य में **(प्रियः)** कामना करने वाला **(अग्ना)** अग्नि में **(प्रियः)** कामना करता हुआ **(भवाति)** प्रसिद्ध होवे तथा **(क्षेमे)** रक्षण में और **(योगे)** अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति के

लक्षण में **(अभि)** सन्मुख **(पुष्यात्)** पुष्टि करे तथा **(वृतौ)** आच्छादन करने में **(उभे)** दोनों **(संयती)** मिली हुइयों का जानकर **(भवाति)** प्रसिद्ध होवे और **(सुतसोम:)** एकत्र किया ऐश्वर्य्य जिसने ऐसा जन **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य की वृद्धि के लिये **(ददाशत्)** देवे वह जन शत्रुओं को **(सम्, जयाति)** अच्छे प्रकार जीते॥५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य अग्नि आदि विद्या की कामना करते हुए योगक्षेम के साधन में चतुर, दाता और न्याय में प्रीति करने वाले होवें, वे ही दुष्टों को जीतने को समर्थ होवें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, शिल्पी, विद्वान् और युवावस्था में विवाह का वर्णन, शीघ्र वाहन का चलाना और बिजुली की विद्या का वर्णन किया, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सैतीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ अनुष्टुप्। २, ३, ४ निचृदनुष्टुप्। ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब पांच ऋचा वाले अड़तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो।**
**अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय॥१॥**

उरोः। ते। इन्द्र। राधसः। विऽभ्वी। रातिः। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। अध। नः। विश्वऽचर्षणे। द्युम्ना। सुऽक्षत्र। मंहय॥१॥

**पदार्थः**-(**उरोः**) बहोः (**ते**) तव (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**राधसः**) धनस्य (**विभ्वी**) व्यापिका (**रातिः**) दानम् (**शतक्रतो**) अमितप्रज्ञ (**अधा**) आनन्तर्य्ये। अत्र **निपातस्य** चेति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**विश्वचर्षणे**) समस्तद्रष्टव्यदर्शन (**द्युम्ना**) यशसा धनेन वा (**सुक्षत्र**) शोभनं क्षयं द्रव्यं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**मंहय**) महतः कुरु॥१॥

**अन्वयः**-हे विश्वचर्षणे शतक्रतो सुक्षत्रेन्द्र! यस्य त उरो राधसो विभ्वी रातिरस्त्यधा न्यायेन प्रजाः पालयसि स त्वं नोऽस्मान् द्युम्ना मंहय॥१॥

**भावार्थः**-यः पूर्णविद्योऽसंख्य[धन]प्रदः सर्वव्यवहारवित्परमैश्वर्य्यः सुशीलो विनयवान् भवेत् स राजा प्रजाः पालयितुं शक्नुयात्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वचर्षणे**) सम्पूर्ण देखने योग्य पदार्थों के देखने वाले (**शतक्रतो**) अनन्त बुद्धि से युक्त और (**सुक्षत्र**) सुन्दर क्षत्र वा द्रव्य वाले (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! जिन (**ते**) आपके (**उरोः**) बहुत (**राधसः**) धन का (**विभ्वी**) व्याप्त होने वाला (**रातिः**) दान है (**अधा**) इसके अनन्तर न्याय से प्रजाओं का पालन करते हो वह आप (**नः**) हम लोगों को (**द्युम्ना**) यश वा धन से (**मंहय**) बड़े करिये॥१॥

**भावार्थः**-जो पूर्णविद्या से युक्त, असंख्य धन देने और सम्पूर्ण व्यवहारों को जाननेवाला, अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त उत्तम स्वभाव और नम्रता से युक्त होवे, वह राजा प्रजाओं के पालन करने को समर्थ होवे॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं शविष्ठ दधिषे।**

**पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम्॥ २॥**

**यत्। ईम्। इन्द्र। श्रवाय्यम्। इषम्। शविष्ठ। दधिषे। पप्रथे। दीर्घश्रुत्ऽतमम्। हिरण्यऽवर्ण। दुस्तरम्॥ २॥**

**पदार्थः-(यत्)** यः **(ईम्)** प्राप्तव्यम् **(इन्द्र)** दुःखविदारक **(श्रवाय्यम्)** श्रोतुं योग्यम् **(इषम्)** अन्नादिकम् **(शविष्ठ)** अतिबल**[**युक्त**]** **(दधिषे)** **(पप्रथे)** प्रथते **(दीर्घश्रुत्तमम्)** यो दीर्घेण कालेन शृणोति सोऽतिशयितस्तम् **(हिरण्यवर्ण)** यो हिरण्यं वृणोति तत्सम्बुद्धौ **(दुष्टरम्)** दुःखेन तरितुं योग्यम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठ हिरण्यवर्णेन्द्र! यद्यः श्रवाय्यं दुष्टरमिषं पप्रथे तमीं दुष्टरं दीर्घश्रुत्तमं त्वं दधिषे॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यः पूर्णविद्यो धनधान्यपशुप्रजानां वर्धको ब्रह्मचर्येण महावीर्य्योऽस्ति तमेव राजकर्मचारिणं कुरु॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(शविष्ठ)** अतिबलयुक्त और **(हिरण्यवर्ण)** सुवर्ण को स्वीकार करने वाले **(इन्द्र)** दुःख के नाश करनेवाले! **(यत्)** जो **(श्रवाय्यम्)** सुनने के योग्य और **(दुष्टरम्)** दुःख से तरने योग्य **(इषम्)** अन्न आदि को **(पप्रथे)** प्रकट करता है उस **(ईम्)** प्राप्त होने योग्य और दुःख से तरने योग्य **(दीर्घश्रुत्तमम्)** अतिकाल से अधिकतर सुनने वाले को आप **(दधिषे)** धारण करते हो॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो पूर्णविद्या से युक्त, धन-धान्य, पशु और प्रजाओं का बढ़ाने और ब्रह्मचर्य्य से बड़ा पराक्रम वाला है, उसी को राजकर्मचारी कीजिये॥ २॥

**अथ राजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

अब राजप्रजाधर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः।**

**उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः॥ ३॥**

**शुष्मासः। ये। ते। अद्रिऽवः। मेहना। केतऽसापः उभा। देवौ। अभिष्टये। दिवः। च। ग्मः। च। राजथः॥ ३॥**

**पदार्थः-(शुष्मासः)** अतिबलवन्तः **(ये)** **(ते)** **(अद्रिवः)** अद्रयो मेघा इव शैला वर्त्तन्ते यस्य राज्ये तत्सम्बुद्धौ **(मेहना)** वर्षणेन **(केतसापः)** ये केतेन प्रज्ञया सपन्ति ते **(उभा)** उभौ **(देवौ)** दिव्यगुणकर्मस्वभावौ **(अभिष्टये)** इष्टसिद्धये **(दिवः)** अन्तरिक्षस्य **(च)** **(ग्मः)** पृथिव्याः **(च)** **(राजथः)** प्रकाशेते॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो राजन्! यथोभा सूर्य्याचन्द्रमसौ देवौ दिवश्च ग्मश्च मध्ये राजेते तथा ये शुष्मासः केतसापस्तेऽभिष्ट्ये मेहना प्रजासु सन्ति सा प्रजा त्वं च सततं राजथः॥ ३॥

**भावार्थः**-यथा सूर्य्याचन्द्रमसौ सर्वं जगत्प्रकाशयतस्तथैव प्रजाराजानौ मिलित्वा सर्वं राजधर्म्मं दीपयेताम्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे **(अद्रिवः)** मेघों के सदृश पर्वत हैं जिसके राज्य में ऐसे राजन्! जैसे **(उभा)** दोनों सूर्य और चन्द्रमा **(देवौ)** उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(दिवः)** अन्तरिक्ष **(च)** और **(ग्मः)** पृथिवी के **(च)** भी मध्य में प्रकाशित हैं, वैसे **(ये)** जो **(शुष्मासः)** अधिक बलयुक्त **(केतसापः)** बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाले जन **(ते)** वे **(अभिष्टये)** इष्टसिद्धि के लिये **(मेहना)** वर्षण से प्रजाओं में हैं, वह प्रजा और आप निरन्तर **(राजथः)** प्रकाशित होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य्य और चन्द्रमा सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही प्रजा और राजा मिल के सम्पूर्ण राजधर्म्म को प्रकाशित करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उतो नो अस्य कस्य चिद्दक्षस्य तव वृत्रहन्।**

**अस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यं नृमणस्यसे॥४॥**

**उतो इति। नः। अस्य। कस्य। चित्। दक्षस्य। तव। वृत्रऽहन्। अस्मभ्यम्। नृम्णम्। आ। भर। अस्मभ्यम्। नृऽमनस्यसे॥४॥**

**पदार्थः**-**(उतो)** अपि **(नः)** अस्माकम् **(अस्य)** **(कस्य)** **(चित्)** अपि **(दक्षस्य)** **(तव)** **(वृत्रहन्)** यथा सूर्य्यो वृत्रं हन्ति तद्वद्वर्त्तमान **(अस्मभ्यम्)** **(नृम्णम्)** नरो रमन्ते यस्मिँस्तद्धनम् **(आ)** भर **(अस्मभ्यम्)** **(नृमणस्यसे)** आत्मनो नृम्णमिच्छसि॥४॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्! तव नोऽस्माकमुतो अस्य कस्यचिद्दक्षस्य नृमणस्यसे स त्वमस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यमभयं देहि॥४॥

**भावार्थः**-स एव नरोत्तमः स्याद्यो राष्ट्रस्य रक्षणे तत्परो भूत्वा वर्तेत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्)** जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करता है, उसके सदृश वर्तमान **(तव)** आपका और **(नः)** हम लोगों के **(उतो)** भी **(अस्य)** इसके **(कस्य)** किसके **(चित्)** भी **(दक्षस्य)** बलसम्बन्धी **(नृमणस्यसे)** अपने धन की इच्छा करते हो वह आप **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(नृम्णम्)** मनुष्य रमते हैं जिसमें उस धन का **(आ, भर)** धारण कीजिये और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये अभय दीजिये॥४॥

**भावार्थः**-वही श्रेष्ठ मनुष्यों में मुख्य हो जो राज्य के रक्षण में तत्पर होकर वर्त्ताव करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**नू त आभिरभिष्टिभिस्तव शर्मञ्छतक्रतो।**

**इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः॥५॥९॥**

**नु। ते। आभिः। अभिष्टिऽभिः। तव। शर्मन्। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। इन्द्र। स्याम। सुऽगोपाः। शूर। स्याम। सुऽगोपाः॥५॥**

**पदार्थः**-(**नू**) (**ते**) तव (**आभिः**) वर्त्तमानाभिः (**अभिष्टिभिः**) इष्टेच्छाभिः (**तव**) (**शर्मन्**) शर्म्मणि गृहे (**शतक्रतो**) अतुलप्रज्ञ (**इन्द्र**) राजन् (**स्याम**) (**सुगोपाः**) सुष्ठु रक्षकाः (**शूर**) निर्भय (**स्याम**) (**सुगोपाः**) यथावत्प्रजापालकाः॥५॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! त आभिरभिष्टिभिस्तव शर्मन् वयं सुगोपाः स्याम। हे शूर! तव राज्ये स-ामे वा वयं सुगोपा नू स्याम॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! वयं सत्यप्रतिज्ञया प्रीत्या च तव गृहस्य शरीरस्य राज्यस्य सेनायाश्च सदैव रक्षका भूत्वा कृतकृत्या भवेमेति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टात्रिंशत्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**शतक्रतो**) अत्यन्त बुद्धि वाले (**इन्द्र**) राजन्! (**ते**) आपकी (**आभिः**) इन वर्त्तमान (**अभिष्टिभिः**) इष्ट पदार्थों की इच्छाओं से (**तव**) आपके (**शर्मन्**) गृह में हम लोग (**सुगोपाः**) उत्तम प्रकार रक्षा करने वाले (**स्याम**) होवें। और हे (**शूर**) भय से रहित राजन्! आपके राज्य वा संग्राम में हम लोग (**सुगोपाः**) यथावत् प्रजा के पालन करने वाले (**नू**) निश्चय (**स्याम**) होवें॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! हम लोग सत्य प्रतिज्ञा और प्रीति से आपके गृह, शरीर, राज्य और सेना के सदा ही रक्षक होके कृतकृत्य होवें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तीसवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराडनुष्टप्। २, ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथेन्द्रगुणानाह॥*

अब पांच ऋचा वाले उनचालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः।**

**राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर॥१॥**

यत्। इन्द्र। चित्र। मेहना। अस्ति। त्वाऽदातम्। अद्रिऽवः। राधः। तत्। नः। विदद्वसो इति विदत्ऽवसो। उभयाहस्ति। आ। भर॥१॥

**पदार्थः**-(**यत्**) (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्ययुक्त (**चित्र**) अद्भुतगुणकर्मस्वभाव (**मेहना**) वृष्टिः (**अस्ति**) (**त्वादातम्**) त्वया शोधितम् (**अद्रिवः**) सूर्य्य इव विद्याप्रकाशक (**राधः**) द्रव्यम् (**तत्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**विदद्वसो**) लब्धधन (**उभयाहस्ति**) उभये हस्ता प्रवर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (**आ, भर**)॥१॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो विदद्वसो चित्रेन्द्र! यत्त्वादातं राधो मेहनेवास्ति तदुभयाहस्ति न आ भर॥१॥

**भावार्थः**-स एव राजा धनाढ्यो वा सुकृती स्याद्यो वृष्टिवदन्येषां कामान् वर्षेत्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) सूर्य के सदृश विद्या के प्रकाश करने वाले (**विदद्वसो**) धन को प्राप्त हुए (**चित्र**) अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! (**यत्**) जो (**त्वादातम्**) आपसे शुद्ध किया (**राधः**) द्रव्य (**मेहना**) वृष्टि के सदृश (**अस्ति**) है (**तत्**) उस (**उभयाहस्ति**) उभयाहस्ति अर्थात् दो प्रकार के हाथ प्रवृत्त होते हैं जिसमें ऐसे को (**नः**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार धारण कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-वही राजा धन से युक्त वा कुशली होवे, जो वृष्टि के सदृश अन्यों के मनोरथों को वर्षावे॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।**

**विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने॥२॥**

यत्। मन्यसे। वरेण्यम्। इन्द्र। द्युक्षम्। तत्। आ। भर। विद्याम। तस्य। ते। वयम्। अकूपारस्य। दावने॥२॥

**पदार्थः**-(**यत्**) (**मन्यसे**) (**वरेण्यम्**) वरितुमर्हम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**द्युक्षम्**) धर्मविद्याप्रकाशयुक्तम् (**तत्**) (**आ**) (**भर**) (**विद्याम**) जानीयाम (**तस्य**) (**ते**) (**वयम्**) (**अकूपारस्य**) अकुत्सितः पारो यस्य तस्य (**दावने**) दात्रे॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं यद्वरेण्यं द्युक्षं मन्यसे तदस्मभ्यमा भर यतोऽकूपारस्य तस्य ते दावने वयं प्रयत्नं विद्याम॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वंस्त्वं यद्यदुत्तमं जानासि तदस्मान् प्रत्युपदिश येन वयं तव राजकार्य्यमलंकर्त्तुं शक्नुयाम॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! आप (**यत्**) जिस (**वरेण्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**द्युक्षम्**) धर्म्म और विद्या के प्रकाश से युक्त को (**मन्यसे**) मानते हो (**तत्**) उसको हम लोगों के लिये (**आ, भर**) धारण कीजिये जिससे (**अकूपारस्य**) श्रेष्ठ है पार जिनका (**तस्य**) उन (**ते**) आपके (**दावने**) दाता के लिये (**वयम्**) हम लोग प्रयत्न को (**विद्याम**) जानें॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप जिस-जिस उत्तम विषय को जानते हैं, उसका हम लोगों के प्रति उपदेश कीजिये, जिससे हम लोग आपके राजकार्य्य को पूर्णरूप से करने को समर्थ होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्ते॑ दि॒त्सु प्र॒राध्यं॒ मनो॒ अस्ति॑ श्रु॒तं बृ॒हत्।**

**तेन॑ दृ॒ळ्हा चि॑दद्रिव॒ आ वाजं॑ दर्षि सा॒तये॑॥३॥**

**यत्। ते॒। दि॒त्सु। प्र॒ऽराध्य॑म्। मनः॑। अस्ति॑। श्रु॒तम्। बृ॒हत्। तेन॑। दृ॒ळ्हा। चि॒त्। अ॒द्रि॒ऽवः॒। आ। वाज॑म्। द॒र्षि॒। सा॒तये॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**ते**) तव (**दित्सु**) दातुमिच्छु (**प्राध्यम्**) प्रकर्षेण साद्धुं योग्यम् (**मनः**) चित्तम् (**अस्ति**) (**श्रुतम्**) (**बृहत्**) महत् (**तेन**) (**दृळ्हा**) दृढानि (**चित्**) (**अद्रिवः**) सुशोभितशैलयुक्त (**आ**) (**वाजम्**) स-ग्रामम् (**दर्षि**) विदृणासि (**सातये**) धर्म्माधर्म्मविभागाय॥३॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो विद्वंस्ते यद्दित्सु प्राध्यं श्रुतं बृहन्मनोऽस्ति तेन चित्त्वं दृळ्हा रक्षसि सातये वाजमा दर्षि॥३॥

**भावार्थः**-यतो मनुष्यो ब्रह्मचर्य्यविद्यायोगाभ्याससत्यभाषणाद्याचरणेन सर्वविद्यायुक्तं मनः सम्पाद्य धर्मेण सार्वजनिकहिताय दुष्टान् दण्डयति तस्मात् सोऽत्युत्तमोऽस्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) उत्तम प्रकार शोभित पर्वत से युक्त विद्वन्! (**ते**) आपके (**यत्**) जो (**दित्सु**) देने की इच्छा करने वाला (**प्राध्यम्**) अत्यन्त साधने योग्य (**श्रुतम्**) श्रवण और (**बृहत्**) बड़ा (**मनः**)

चित्त **(अस्ति)** है **(तेन)** इससे **(चित्)** भी आप **(दृळ्हा)** दृढ़ वस्तुओं की रक्षा करते हो और **(सातये)** धर्म और अधर्म के **[**विभाग के**]** लिये **(वाजम्)** संग्राम का **(आ, दर्षि)** भङ्ग करते हो॥३॥

**भावार्थः**-जिससे मनुष्य ब्रह्मचर्य्य, विद्या, योगाभ्यास और सत्यभाषण आदि के आचरण से सम्पूर्ण विद्याओं से युक्त मन को सिद्ध कर धर्म से सम्पूर्ण जनों के हित के लिये दुष्टों को दण्ड देता है, इससे वह अति उत्तम है॥३॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अब राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम्।**

**इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः॥४॥**

**मंहिष्ठम्। वः। मघोनाम्। राजानम्। चर्षणीनाम्। इन्द्रम्। उप। प्रऽशस्तये। पूर्वीभिः। जुजुषे। गिरः॥४॥**

**पदार्थः**-**(मंहिष्ठम्)** अतिशयेन महान्तम् **(वः)** युष्माकम् **(मघोनाम्)** बह्वैश्वर्य्ययुक्तानाम् **(राजानम्)** **(चर्षणीनाम्)** मनुष्याणाम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यप्रदम् **(उप)** **(प्रशस्तये)** प्रशंसायै **(पूर्वीभिः)** प्राचीनाभिः प्रजाभिः सह **(जुजुषे)** सेवसे प्रीणासि वा **(गिरः)** वाणीः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं वो मघोनां चर्षणीनां मंहिष्ठमिन्द्रं राजानं प्रशस्तये पूर्वीभिः सनातनीभिः सह गिर उप जुजुषे ते स च सर्वत्र सुखिनो जायन्ते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये राजानो याः प्रजाश्च परस्परमानुकूल्ये वर्त्तन्ते ते सदैवाऽऽनन्दिता भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(वः)** आप लोगों और **(मघोनाम्)** बहुत ऐश्वर्यों से युक्त **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों के **(मंहिष्ठम्)** अत्यन्त बड़े और **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले **(राजानम्)** राजा को **(प्रशस्तये)** प्रशंसा के लिये **(पूर्वीभिः)** प्राचीन प्रजाओं के साथ **(गिरः)** वाणियों को **(उप, जुजुषे)** समीप से सेवते वा प्रसन्नता करते हो, वे और वह सर्वत्र सुखी होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा और जो प्रजाजन परस्पर अनुकूलता अर्थात् प्रीतिपूर्वक वर्त्ताव रखते, वे सदा आनन्दित होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अस्मा इत्काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम्।**

**तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः॥५॥१०॥**

**अस्मै। इत्। काव्यम्। वचः। उक्थम्। इन्द्राय। शंस्यम्। तस्मै। ऊँ इति। ब्रह्मऽवाहसे। गिरः। वर्धन्ति। अत्रयः। गिरः। शुम्भन्ति। अत्रयः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अस्मै**) (**इत्**) (**काव्यम्**) कविभिः कमनीयम् (**वचः**) (**उक्थम्**) प्रशंसितम् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्याय (**शंस्यम्**) स्तोतुं योग्यम् (**तस्मै**) (**उ**) (**ब्रह्मवाहसे**) यो ब्रह्माणि धनानि वहति प्राप्नोति सः (**गिरः**) (**वर्धन्ति**) वर्धन्ते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**अत्रयः**) अविद्यमानत्रिविधदुःखाः (**गिरः**) वाण्यः (**शुम्भन्ति**) शुभाचरणयन्ति (**अत्रयः**) अविद्यमानत्रिविधगुणानां दोषा येषु॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्राय काव्यमुक्थं शंस्यं वचः प्रयुङ्क्ते अस्मा इत्तस्मै ब्रह्मवाहसे जनायाऽत्रयो गिरो वर्धन्त्यु अत्रयो गिरः शुम्भन्ति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो गिरः शोधयन्ति ते कवित्वमैश्वर्य्यं च प्राप्नुवन्तीति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के लिये (**काव्यम्**) कवियों विद्वानों से कामना करने योग्य (**उक्थम्**) प्रशंसित (**शंस्यम्**) स्तुति करने योग्य (**वचः**) वचन का प्रयोग करता है (**अस्मै**) इसके लिये (**इत्**) और (**तस्मै**) उस (**ब्रह्मवाहसे**) धनों को प्राप्त होने वाले जन के लिये (**अत्रयः**) नहीं है तीन प्रकार के दुःख जिनमें वे (**गिरः**) वाणियां (**वर्धन्ति**) बढ़ती हैं (**उ**) और (**अत्रयः**) नहीं हैं तीन प्रकार के गुणों के दोष जिनमें व (**गिरः**) वाणियां (**शुम्भन्ति**) उत्तम आचरण कराती हैं॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन वाणियों को विद्याभ्यास से शुद्ध करते हैं, वे कवित्व और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनचालीसवां सूक्त और दशम वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। १-४ इन्द्रः। ५ सूर्य्यः। ६-९ अत्रिर्देवता। १ निचृदुष्णिक्। २, ३ उष्णिक्। ५, ९ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ त्रिष्टुप्। ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब नव ऋचा वाले चालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब।**

**वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ १॥**

**आ। याहि। अद्रिऽभिः। सुतम्। सोमम्। सोमऽपते। पिब। वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**याहि**) आगच्छ (**अद्रिभिः**) मेघैः (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**सोमम्**) सोमलतादिरसम् (**सोमपते**) ऐश्वर्य्यपालक (**पिब**) (**वृषन्**) वृष इवाचरन् (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यमिच्छुक (**वृषभिः**) बलिष्ठैस्सह (**वृत्रहन्तम**) यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे सोमपते वृषन् वृत्रहन्तमेन्द्र! वृषभिस्सहितस्त्वमद्रिभिः सुतं सोमं पिब स-ममा याहि॥ १॥

**भावार्थः**-य ऐश्वर्यमिच्छेयुस्तेऽवश्यं बलबुद्धिं वर्धयेयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सोमपते**) ऐश्वर्य्य के स्वामिन् (**वृषन्**) बैल के सदृश आचरण करते हुए (**वृत्रहन्तम**) अत्यन्त धन को प्राप्त होने और (**इन्द्र**) ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले जन! (**वृषभिः**) बलिष्ठों के साथ आप (**अद्रिभिः**) मेघों से (**सुतम्**) उत्पन्न हुए (**सोमम्**) सोमलता आदि ओषधियों के रस को (**पिब**) पान करिये और स-मम को (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो ऐश्वर्य्य की इच्छा करें, वे अवश्य बल और बुद्धि की वृद्धि करें॥ १॥

**अथ मेघविषयमाह॥**

अब मेघविषय को कहते हैं॥

**वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः।**

**वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ २॥**

**वृषा। ग्रावा। वृषा। मदः। वृषा। सोमः। अयम्। सुतः। वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) वृष्टिकरः (**ग्रावा**) मेघः (**वृषा**) आनन्दकरः (**मदः**) हर्षः (**वृषा**) सुखवर्षकः (**सोमः**) ओषधिगणः (**अयम्**) (**सुतः**) निष्पादितः (**वृषन्**) बलमिच्छन् (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**वृषभिः**) मेघादिभिः (**वृत्रहन्तम**) अतिशयेन शत्रुविनाशक॥ २॥

**अन्वयः**-हे वृषन् वृत्रहन्तमेन्द्र! योऽयं वृषा वृषा ग्रावा मदो वृषा सोमः सुतोऽस्ति तैर्वृषभिः कार्य्याणि

साध्नुहि॥२॥

**भावार्थः**-ये मेघादयः पदार्थाः सन्ति तैर्मनुष्या बहूनि कार्य्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-**(वृषन्)** बल की इच्छा करते हुए **(वृत्रहन्तम)** अतिशय करके शत्रुओं के और **(इन्द्र)** दुःखों के नाश करने वाले जन! जो **(अयम्)** यह **(वृषा)** आनन्द को उत्पन्न करने और **(वृषा)** वृष्टि करने वाला **(ग्रावा)** मेघ और **(मदः)** आनन्द तथा **(वृषा)** सुख का वर्षाने वाला **(सोमः)** ओषधियों का समूह **(सुतः)** उत्पन्न किया गया है उन **(वृषभिः)** मेघादिकों से कार्य्यों को सिद्ध कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो मेघ आदि पदार्थ हैं, उनसे मनुष्य बहुत कार्य्यों को सिद्ध कर सकते हैं॥२॥

**पुनरिन्द्रपदवाच्यराजविषयमाह॥**

फिर इन्द्रपदवाच्य राजा के गुणों को कहते हैं॥

**वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः।**

**वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥**

**वृषा। त्वा। वृषणम्। हुवे। वज्रिन्। चित्राभिः। ऊतिऽभिः। वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम॥३॥**

**पदार्थः**-**(वृषा)** वृष्टिकरः **(त्वा)** त्वाम् **(वृषणम्)** बलिष्ठम् **(हुवे)** **(वज्रिन्)** बहुशस्त्रास्त्रायुक्त **(चित्राभिः)** अद्भुताभिः **(ऊतिभिः)** रक्षादिभिः क्रियाभिः **(वृषन्)** सुखकर **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यमिच्छुक **(वृषभिः)** दुष्टशक्तिबन्धकैः **(वृत्रहन्तम)** अतिशयेन दुष्टविनाशक॥३॥

**अन्वयः**-हे वृषन् वज्रिन् वृत्रहन्तमेन्द्र! वृषाहं चित्राभिरूतिभिर्वृषभिश्च सह वर्त्तमानं वृषणं त्वा हुवे॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सूर्य्यवद्वर्त्तमानः सर्वथा गुणसम्पन्नो बलिष्ठो न्यायकारी राजा स्वीकार्यो येन सर्वथा रक्षा स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वृषन्)** सुख करने वाले **(वज्रिन्)** बहुत शस्त्र और अस्त्रों से युक्त **(वृत्रहन्तम)** अत्यन्त दुष्टों के नाश करने वाले **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाले! **(वृषा)** वृष्टि करने वाला मैं **(चित्राभिः)** अद्भुत **(ऊतिभिः)** रक्षादि क्रियाओं और **(वृषभिः)** दुष्टों के सामर्थ्य को बांधने वालों के साथ वर्त्तमान **(वृषणम्)** बलिष्ठ **(त्वा)** आप को **(हुवे)** बुलाता हूं॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान और सब प्रकार गुणों से सम्पन्न बलिष्ठ, न्यायकारी राजा को स्वीकार करें, जिससे सब प्रकार से रक्षा होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा।**

**युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्माध्यंदिने सवने मत्सदिन्द्रः॥४॥**

**ऋजीषी। वज्री। वृषभः। तुराषाट्। शुष्मी। राजा। वृत्रऽहा। सोमऽपावा। युक्त्वा। हरिऽभ्याम्। उप। यासत्। अर्वाङ्। माध्यंदिने। सवने। मत्सत्। इन्द्रः॥४॥**

**पदार्थः**-(**ऋजीषी**) सरलादियुक्तः (**वज्री**) शस्त्रास्त्राभृत् (**वृषभः**) बलिष्ठः (**तुराषाट्**) तुरान् हिंसकान् शत्रून् सहते (**शुष्मी**) शुष्मं बलिष्ठं सैन्यं विद्यते यस्य सः (**राजा**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानः (**वृत्रहा**) दुष्टशत्रुहन्ता (**सोमपावा**) श्रेष्ठौषधिरसस्य पाता (**युक्त्वा**) (**हरिभ्याम्**) अश्वाभ्याम् (**उप**) (**यासत्**) उपागच्छेत् (**अर्वाङ्**) पश्चात् (**माध्यन्दिने**) मध्याह्ने (**सवने**) भोजनसमये (**मत्सत्**) आनन्देत् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यकर्त्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य ऋजीषी वज्री वृषभः शुष्मी तुराषाट् सोमपावा वृत्रहेन्द्रो राजा हरिभ्यां यानं युक्त्वाऽर्वाङुप यासन्माध्यन्दिने सवने मत्सत्तमेवाऽधिष्ठातारं कुर्वन्तु॥४॥

**भावार्थः**-स एव राजा प्रशस्तः स्याद्यो राज्याङ्गानि विद्याश्च गृहीत्वा प्रजापालनाय प्रयतेत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**ऋजीषी**) सरल आदि से युक्त (**वज्री**) शस्त्र और अस्त्रों का धारण करने वाला (**वृषभः**) बलिष्ठ (**शुष्मी**) बलिष्ठ सेना से युक्त (**तुराषाट्**) हिंसा करने वाले शत्रुओं को सहने (**सोमपावा**) श्रेष्ठ ओषधियों के रस को पीने (**वृत्रहा**) दुष्ट शत्रुओं के नाश करने और (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य का करने वाला (**राजा**) विद्या और विनय से प्रकाशमान (**हरिभ्याम्**) घोड़ों से वाहन को (**युक्त्वा**) युक्त करके (**अर्वाङ्**) पीछे (**उप, यासत्**) समीप प्राप्त होवे और (**माध्यन्दिने**) मध्याह्न में (**सवने**) भोजन के समय (**मत्सत्**) आनन्दित होवे, उसी को अधिष्ठाता करो॥४॥

**भावार्थः**-वही राजा प्रशंसित होवे जो राज्य के अङ्गों और विद्याओं को ग्रहण करके प्रजापालन के लिये प्रयत्न करे॥४॥

**अथ सूर्य्यविषयमाह॥**

अब सूर्य्यविषय को कहते हैं॥

**यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।**
**अक्षेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥५॥११॥**

**यत्। त्वा। सूर्य। स्वःऽभानुः। तमसा। अविध्यत्। आसुरः। अक्षेत्रऽवित्। यथा। मुग्धः। भुवनानि। अदीधयुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**त्वा**) त्वाम् (**सूर्य्य**) सूर्य्य इव वर्त्तमान (**स्वर्भानुः**) यः स्वरादित्यं भाति स विद्युद्रूपः (**तमसा**) रात्र्यन्धकारेण (**अविध्यत्**) युक्तो भवति (**आसुरः**) अनुद्भूतरूपः (**अक्षेत्रवित्**) यः क्षेत्रं रेखागणितं न वेत्ति (**यथा**) (**मुग्धः**) मूढः (**भुवनानि**) लोकान् (**अदीधयुः**) दृश्यन्ते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥५॥

**अन्वयः**-हे सूर्य्य! यथाऽक्षेत्रविन्मुग्धः किमपि कर्त्तुं न शक्नोति तथा यद्यः स्वर्भानुरासुरस्तमसाविध्यद्

येन सूर्य्येण भुवनान्यदीधयुस्तं विदन्तं त्वा वयमाश्रयेम॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युद् गुप्ता सत्यन्धकारे न प्रकाशते तथैवाऽविदुषो मूढस्यात्मा न प्रदीप्यते यथा सूर्य्यप्रकाशेन सर्वे लोकाः प्रकाश्यन्ते तथैव विदुष आत्मा सर्वान्त्सत्याऽसत्यव्यवहारान् प्रकाशयति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सूर्य्य)** सूर्य्य के सदृश वर्तमान! **(यथा)** जैसे **(अक्षेत्रवित्)** क्षेत्र अर्थात् रेखागणित को नहीं जानने वाला **(मुग्धः)** मूर्ख कुछ भी नहीं कर सकता है, वैसे **(यत्)** जो **(स्वर्भानुः)** सूर्य्य से प्रकाशित होने वाला बिजुलीरूप **(आसुरः)** जिसका प्रकट रूप नहीं वह **(तमसा)** रात्रि के अन्धकार से **(अविध्यत्)** युक्त होता है, जिस सूर्य्य से **(भुवनानि)** लोक **(अदीधयुः)** देखे जाते हैं, उसके जानने वाले **(त्वा)** आपका हम लोग आश्रयण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे बिजुली गुप्त हुई अन्धकार में नहीं प्रकाशित होती है, वैसे ही विद्यारहित मूर्खजन का आत्मा नहीं प्रकाशित होता है और जैसे सूर्य्य के प्रकाश से सम्पूर्ण लोक प्रकाशित होते हैं, वैसे ही विद्वान् का आत्मा सम्पूर्ण सत्य और असत्य व्यवहारों को प्रकाशित करता है॥५॥

**पुनः सूर्यविषयमाह॥**

फिर सूर्य्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्व॑र्भानो॒रध॒ यदि॑न्द्र मा॒या अ॒वो दि॒वो वर्त॑माना अ॒वाह॑न्।**

**गू॒ळ्हं सूर्यं॒ तम॒साप॑व्रतेन तु॒रीये॑ण॒ ब्रह्म॑णाविन्द॒दत्रिः॑॥६॥**

**स्वः॑ऽभानोः। अध॑। यत्। इ॒न्द्र॒। मा॒याः। अ॒वः। दि॒वः। वर्त॑मानाः। अ॒व॒ऽअह॑न्। गू॒ळ्हम्। सूर्य॑म्। तम॑सा। अप॑ऽव्रतेन। तु॒रीये॑ण। ब्रह्म॑णा। अ॒वि॒न्द॒त्। अत्रिः॑॥६॥**

**पदार्थः**-**(स्वर्भानोः)** आदित्यप्रकाशस्य **(अध)** आनन्तर्य्ये **(यत्)** याः **(इन्द्र)** विद्वन् **(मायाः)** प्रज्ञाः **(अवः)** अधस्थात् **(दिवः)** प्रकाशमानाः **(वर्त्तमानाः)** **(अवाहन्)** वहन्ति **(गूळ्हम्)** गुप्तं विद्युदाख्यम् **(सूर्य्यम्)** सवितुः सवितारम् **(तमसा)** अन्धकारेण **(अपव्रतेन)** अन्यथा वर्त्तमानेन **(तुरीयेण)** चतुर्थेन **(ब्रह्मणा)** धनेन **(अविन्दत्)** लभते **(अत्रिः)** सततं गामी॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्या स्वर्भानोर्दिवो वर्त्तमाना माया अपव्रतेन तमसा तुरीयेण ब्रह्मणा गूळ्हं सूर्य्यमवोऽवाहन्नधात्रिरविन्दत् तास्त्वं विजानीहि॥६॥

**भावार्थः**-यथा गुप्ता विद्युदीप्तयो महत्कार्य्यं साध्नुवन्ति तथैव विदुषां प्रज्ञाः सर्वाणि प्रज्ञानकृत्यानि साध्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्वन्! **(यत्)** जो **(स्वर्भानोः)** सूर्य्य के प्रकाशक के सम्बन्ध में **(दिवः)** प्रकाशमान **(वर्त्तमानाः)** स्थित **(मायाः)** बुद्धियां **(अपव्रतेन)** अन्यथा वर्त्तमान **(तमसा)** अन्धकार से और

**(तुरीयेण)** चौथे **(ब्रह्मणा)** धन से **(गूळहम्)** गुप्त बिजलीनामक **(सूर्यम्)** सूर्य के उत्पन्न करने वाले को **(अव:)** नीचे **(अवाहन्)** प्राप्त करती हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(अत्रि:)** निरन्तर चलने वाला **(अविन्दत्)** प्राप्त होता है, उनको आप जानिये॥६॥

**भावार्थ:**-जैसे गुप्त बिजुली के प्रकाश बड़े कार्य को सिद्ध करते हैं, वैसे ही विद्वानों की बुद्धियां सम्पूर्ण विज्ञान कार्य्यों को सिद्ध करती हैं॥६॥

**अथोक्तविषये राजविषयमाह॥**

अब उक्तविषय में राजविषय को कहते हैं॥

**मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुग्धो भियसा नि गारीत्।**
**त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा॥७॥**

**मा। माम्। इमम्। तव। सन्तम्। अत्रे। इरस्या। द्रुग्ध:। भियसा। नि। गारीत्। त्वम्। मित्र:। असि। सत्यऽराधा:। तौ। मा। इह। अवतम्। वरुण:। च। राजा॥७॥**

**पदार्थ:**-**(मा)** निषेधे **(माम्)** **(इमम्)** **(तव)** **(सन्तम्)** **(अत्रे)** अविद्यमानत्रिविधदु:ख **(इरस्या)** अन्नेच्छया **(द्रुग्ध:)** प्राप्तद्रोह: **(भियसा)** भयेन **(नि)** **(गारीत्)** निगलेत् **(त्वम्)** **(मित्र:)** सखा **(असि)** **(सत्यराधा:)** सत्याचरणेन सत्यं वा राधो धनं यस्य **(तौ)** **(मा)** माम् **(इह)** **(अवतम्)** रक्षतम् **(वरुण:)** वर: सेनेश: **(च)** **(राजा)** सर्वाधिष्ठाता॥७॥

**अन्वय:**-हे अत्रे! इरस्या भियसा दुग्ध इमं तवाश्रितं सन्तं मां मा नि गारीद्यस्त्वं मित्र: सत्यराधा असि स त्वं राजा वरुणश्चताविह मावतम्॥७॥

**भावार्थ:**-हे धर्मिष्ठौ राजसेनाध्यक्षावन्यायेन कस्यापि पदार्थं मा गृह्णीयातां भयन्यायप्रचालनाभ्यां राजधर्म्मान्मा चलेतां सदैव सत्यधर्मप्रियौ सन्तौ मित्रवत्प्रजा: पालयेताम्॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(अत्रे)** तीन प्रकार के दु:खों से रहित! **(इरस्या)** अन्न की इच्छा से तथा **(भियसा)** भय से **(द्रुग्ध:)** द्रोह को प्राप्त **(इमम्)** इसको और **(तव)** आपके आश्रित **(सन्तम्)** हुए **(माम्)** मुझ को **(मा)** नहीं **(नि, गारीत्)** निगलिये और जो **(त्वम्)** आप **(मित्र:)** मित्र **(सत्यराधा:)** सत्य आचरण से वा सत्यधन जिनका ऐसे **(असि)** हो वह आप राजा सब के अधिष्ठाता और **(वरुण:)** श्रेष्ठ सेना का ईश **(च)** भी **(तौ)** वे दोनों **(इह)** इस संसार में **(मा)** मेरी **(अवतम्)** रक्षा करो॥७॥

**भावार्थ:**-हे धर्मिष्ठ राजा और सेना के स्वामी! अन्याय से किसी के पदार्थ को भी न ग्रहण करें, भय और न्याय के अच्छे प्रकार चलाने से राजधर्म से पृथक् न होवें और सदा ही सत्य धर्म में प्रिय हुए मित्र के सदृश प्रजाओं का पालन करो॥७॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन् कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन्।**

**अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अघुक्षत्॥८॥**

**ग्राव्णः। ब्रह्मा। युयुजानः। सपर्यन्। कीरिणा। देवान्। नमसा। उपऽशिक्षन्। अत्रिः। सूर्यस्य। दिवि। चक्षुः। आ। अधात्। स्वःऽभानोः। अप। मायाः। अघुक्षत्॥८॥**

**पदार्थः**-(**ग्राव्णः**) मेघात् (**ब्रह्मा**) चतुर्वेदवित् (**युयुजानः**) (**सपर्यन्**) सेवमानः (**कीरिणा**) सकलविद्यास्तावकेन। **कीरिरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६) (**देवान्**) विदुषः (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**उपशिक्षन्**) उपगतां विद्यां ग्राहयन् (**अत्रिः**) सकलविद्याव्यापकः (**सूर्यस्य**) (**दिवि**) प्रकाशे (**चक्षुः**) (**आ, अधात्**) आदध्यात् (**स्वर्भानोः**) स्वरादित्यस्य भानुर्दीप्तिर्यस्य तस्य (**अप**) (**मायाः**) प्रज्ञाः (**अघुक्षत्**) अपशब्दयेत्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो ब्रह्मा कीरिणा युयुजानो नमसा देवान् सपर्यन् विद्यार्थिन उपशिक्षन्नत्रिः सन् स्वर्भानोर्ग्राव्णः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात् स मायाः प्राप्नुयादविद्या अपाघुक्षत्॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो विद्वत्सेवी योगी विद्याप्रचारप्रियो विद्वान् भवेत्स यथा विद्युत्सूर्यमेघसम्बन्धेन सृष्टेः पालनं दुःखनिवारणं च भवति तथैवाऽध्यापकाध्येतृसम्बन्धेन विद्यारक्षणमविद्यानिवारणं च करोति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ब्रह्मा**) चारों वेदों का जानने वाला (**कीरिणा**) सम्पूर्ण विद्याओं की स्तुति करने वाले से (**युयुजानः**) मिलता हुआ (**नमसा**) सत्कार वा अन्न आदि से (**देवान्**) विद्वानों की (**सपर्यन्**) सेवा करता और विद्यार्थियों को (**उपशिक्षन्**) समीप प्राप्त विद्या को ग्रहण कराता हुआ (**अत्रिः**) सम्पूर्ण विद्याओं में व्यापक (**स्वर्भानोः**) सूर्य्य की कान्ति के सदृश कान्ति जिसकी उसके (**ग्राव्णः**) मेघ से (**सूर्यस्य**) सूर्य के (**दिवि**) प्रकाश में (**चक्षुः**) नेत्र का (**आ, अधात्**) स्थापन करे वह (**मायाः**) बुद्धियों को प्राप्त होवे और अविद्याओं को (**अप, अघुक्षत्**) अपशब्दित करे॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वानों की सेवा करने वाला, योगी, विद्या के प्रचार में प्रिय, विद्वान् होवे, वह जैसे बिजुली सूर्य और मेघ के सम्बन्ध से सृष्टि की पालना और दुःख का निवारण होता है, वैसे ही अध्यापक और अध्येता के सम्बन्ध से विद्या की रक्षा और अविद्या का निवारण करता है॥८॥

**अथ सूर्यान्धकारदृष्टान्तेन विद्वदविद्वद्विषयमाह॥**

अब सूर्य और अन्धकार के दृष्टान्त से विद्वान् और अविद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।**

**अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्य१न्ये अशक्नुवन्॥९॥१२॥**

**यम्। वै। सूर्यम्। स्वःऽभानुः। तमसा। अविध्यत्। आसुरः। अत्रयः। तम्। अनु। अविन्दन्। नहि। अन्ये। अशक्नुवन्॥९॥**

**पदार्थः-(यम्) (वै)** निश्चये **(सूर्यम्)** सवितारम् **(स्वर्भानुः)** आदित्येन प्रकाशितः **(तमसा)** अन्धकारेण **(अविध्यत्)** विध्यति **(आसुरः)** आसुरो मेघ एव **(अत्रयः)** विद्याविशालाः **(तम्) (अनु) (अविन्दन्)** लभेरन् **(नहि) (अन्ये) (अशक्नुवन्)** शक्नुयुः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! स्वर्भानुरासुरस्तमसा यं सूर्यमविध्यत् तं वै अत्रयोऽन्वविन्दन्नह्यन्य एतं ज्ञातुमशक्नुवन्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा मेघः सूर्यमावृत्याऽन्धकारं जनयति तथैवाऽविद्यात्मानमावृत्याऽज्ञानं जनयति यथा सूर्यो मेघं हत्वाऽन्धकारं निवार्य प्रकाशमाविष्करोति तथैव प्राप्ता विद्याऽविद्यां विनाश्य विज्ञानप्रकाशं जनयति। एतद्विवेचनं विद्वांसो जानन्ति नेतर इति॥९॥

अत्रेन्द्रमेघसूर्यविद्वदविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(स्वर्भानुः)**! सूर्य से प्रकाशित **(आसुरः)** मेघ ही **(तमसा)** अन्धकार से **(यम्)** जिस **(सूर्यम्)** सूर्य्य को **(अविध्यत्)** ताड़ित करता है **(तम्)** उसको **(वै)** निश्चय करके **(अत्रयः)** विद्या में दक्ष जन **(अनु, अविन्दन्)** अनुकूल प्राप्त होवें **(नहि)** नहीं **(अन्ये)** अन्य इसके जानने को **(अशक्नुवन्)** समर्थ होवें॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मेघ सूर्य्य को ढाप के अन्धकार को उत्पन्न करता है, वैसे ही अविद्या आत्मा का आवरण करके अज्ञान को उत्पन्न करती है और जैसे सूर्य मेघ का नाश और अन्धकार का निवारण करके प्रकाश करता है, वैसे ही प्राप्त हुई विद्या अविद्या का नाश करके विज्ञान के प्रकाश को उत्पन्न करती है, इस विवेचन को विद्वान् जन जानते हैं, अन्य नहीं॥९॥

इस सूक्त में इन्द्र मेघ सूर्य विद्वान् अविद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चालीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ विंशत्यृचस्यैकचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ६, १५, १८ त्रिष्टुप्। ४, १३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, १४, १९ पङ्क्तिः। ५, ९, १०, ११, १२ भुरिक्पङ्क्तिः। ७, ८ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। २० याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १६ जगती। १७ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ विश्वदेवगुणानाह॥***

अब बीस ऋचा वाले एकचालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विश्वदेवों के गुणों को कहते हैं॥

**को नु वां मित्रावरुणावृतायन् दिवो वां महः पार्थिवस्य वा दे।**
**ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान्॥ १॥**

**कः। नु। वाम्। मित्रावरुणौ। ऋतऽयन्। दिवः। वा। महः। पार्थिवस्य। वा। दे। ऋतस्य। वा। सदसि। त्रासीथाम्। नः। यज्ञऽयते। वा। पशुऽसः। न। वाजान्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**नु**) सद्यः (**वाम्**) युवाम् (**मित्रावरुणौ**) प्राणोदानाविवाध्यापकाध्येतारौ (**ऋतायन्**) ऋतमाचरन् (**दिवः**) प्रकाशान् (**वा**) (**महः**) (**पार्थिवस्य**) पृथिव्यां विदितस्य (**वा**) (**दे**) देदीप्यमानौ देवौ। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति वलोपः, **सुपां सुलुगि**ति विभक्तेर्लुक्। (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**वा**) (**सदसि**) सभायाम् (**त्रासीथाम्**) रक्षतम् (**नः**) अस्मान् (**यज्ञायते**) यज्ञं कामयमानाय (**वा**) (**पशुषः**) पशून् (**न**) इव (**वाजान्**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! वां दिवः क ऋतायन् वा पार्थिवस्य महः को नु विजानीयाद्वा दे ऋतस्य सदसि त्रासीथां वा यज्ञायते नस्त्रासीथां वा पशुषो वाजान्नोऽस्मान् भोगान् प्रापयतम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यदि भवन्तः पृथिव्यादिपदार्थविद्यां जानन्ति तर्ह्यस्मभ्यमुपदिशन्तु सभायां निषद्य सत्यं न्यायं कुर्वन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणौ**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान पढ़ने और पढ़ाने वाले जनो! (**वाम्**) आप दोनों और (**दिवः**) प्रकाशों को (**कः**) कौन (**ऋतायन्**) सत्य का आचरण करता हुआ (**वा**) वा (**पार्थिवस्य**) पृथिवी में विदितजन के (**महः**) तेज को कौन (**नु**) शीघ्र जाने (**वा**) वा (**दे**) प्रकाशमान विद्वान् जनो (**ऋतस्य**) सत्य की (**सदसि**) सभा में (**त्रासीथाम्**) रक्षा करो (**वा**) वा (**यज्ञायते**) यज्ञ की कामना करते हुए के लिये (**नः**) हम लोगों की रक्षा करिये (**वा**) वा (**पशुषः**) पशुओं और (**वाजान्**) अन्नों के (**न**) सदृश हम लोगों के लिये भोगों को प्राप्त कराइये॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो आप लोग पृथिवी आदि पदार्थों की विद्या को जानते हैं, तो हम लोगों को उपदेश देवें और सभा में बैठ के सत्य न्याय को करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त।**
**नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः॥२॥**

**ते। नः। मित्रः। वरुणः। अर्यमा। आयुः। इन्द्रः। ऋभुक्षाः। मरुतः। जुषन्त। नमःऽभिः। वा। ये। दधते। सुऽवृक्तिम्। स्तोमम्। रुद्राय। मीळ्हुषे। सऽजोषाः॥२॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**मित्रः**) सखा (**वरुणः**) श्रेष्ठाचारः (**अर्य्यमा**) न्यायेशः (**आयुः**) जीवनम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**ऋभुक्षाः**) महान् विद्वान् (**मरुतः**) मनुष्याः (**जुषन्त**) सेवन्ते (**नमोभिः**) सत्कारान्नादिभिः (**वा**) (**ये**) (**दधते**) (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठुवर्जनम् (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**रुद्राय**) दुष्टाचाराणां रोदकाय (**मीळ्हुषे**) सुखं सिञ्चते (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेविनः। अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम्॥२॥

**अन्वयः**-ये मरुतो नमोभिर्मीळ्हुषे रुद्राय सजोषाः सन्तः सुवृक्तिं स्तोमं दधते वा जुषन्त ते मित्रो वरुणोऽर्य्यमेन्द्र ऋभुक्षाश्च न आयुर्जुषन्त॥२॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांस उत्तमा विज्ञेया ये स्वात्मवत्सर्वेषु प्राणिषु वर्त्तेरन्॥२॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**मरुतः**) मनुष्य (**नमोभिः**) सत्कार और अन्नादिकों से (**मीळ्हुषे**) सुख का सेचन करते हुए (**रुद्राय**) दुष्ट आचरणों के करने वाले जनों के रुलाने वाले के लिये (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले हुए (**सुवृक्तिम्**) उत्तम प्रकार वर्जन होता है जिससे उस (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**दधते**) धारण करते (**वा**) वा (**जुषन्त**) सेवन करते हैं (**ते**) वे (**मित्रः**) मित्र (**वरुणः**) श्रेष्ठ आचरण करने वाला (**अर्य्यमा**) न्याय का ईश और (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**ऋभुक्षाः**) बड़ा विद्वान् (**नः**) हम लोगों के लिये (**आयुः**) जीवन का सेवन करें॥२॥

**भावार्थः**-उन्हीं विद्वानों को उत्तम समझना चाहिये जो अपने सदृश सब प्राणियों में वर्त्ताव करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैंह॥

**आ वां येष्ठाश्विना हुवध्यै वातस्य पत्मन् रथ्यस्य पुष्टौ।**
**उत वा दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम्॥३॥**

**आ। वाम्। येष्ठा। अश्विना। हुवध्यै। वातस्य। पत्मन्। रथ्यस्य। पुष्टौ। उत। वा। दिवः। असुराय। मन्म। प्र। अन्धाँसिऽइव। यज्यवे। भरध्वम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**येष्ठा**) अतिशयेन नियन्तारौ (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**हुवध्यै**) ग्रहणाय (**वातस्य**) वायोः (**पत्मन्**) पत्मनि मार्गे (**रथ्यस्य**) रथे याने भवस्य (**पुष्टौ**) पोषणे (**उत**) (**वा**) (**दिवः**) कामयमानस्य (**असुराय**) मेघाय (**मन्म**) विज्ञानम् (**प्र**) (**अन्धांसीव**) यथान्नीदीनि (**यज्यवे**) यज्ञानुष्ठानाय यजमानाय वा (**भरध्वम्**)॥३॥

**अन्वयः**-हे येष्ठाश्विना! यथा वां रथ्यस्य वातस्य पत्मन् पुष्टौ उत वाऽसुराय दिवोऽन्धांसीव यज्यवे निमित्ते भवतस्तथा हुवध्यै मन्म प्रा भरध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽध्येताध्यापकौ विद्याप्रचाराय प्रयतेते तथैव सर्वैर्मनुष्यैः सततं प्रयततिव्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**येष्ठा**) अत्यन्त नियम के निर्वाहक (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे (**वाम्**) आप दोनों (**रथ्यस्य**) रथ में उत्पन्न हुए (**वातस्य**) पवन के (**पत्मन्**) मार्ग में और (**पुष्टौ**) पोषण करने में (**उत, वा**) अथवा (**असुराय**) मेघ के लिये (**दिवः**) कामना करते हुए के (**अन्धांसीव**) अन्न आदिकों के सदृश (**यज्यवे**) यज्ञारम्भ वा यजमान के लिये कारण होते हो, वैसे (**हुवध्यै**) ग्रहण करने के लिये (**मन्म**) विज्ञान का (**प्र, आ, भरध्वम्**) प्रारम्भ करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पढ़ने और पढ़ाने वाले विद्या के प्रचार के लिये प्रयत्न करते हैं, वैसे ही सब मनुष्यों को चाहिये कि निरन्तर प्रयत्न करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।**

**पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः॥४॥**

**प्र। सक्षणः। दिव्यः। कण्वऽहोता। त्रितः। दिवः। सऽजोषाः। वातः। अग्निः। पूषा। भगः। प्रऽभृथे। विश्वऽभोजाः। आजिम्। न। जग्मुः। आश्वश्वऽतमाः॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सक्षणः**) सोढा (**दिव्यः**) शुद्धव्यवहारः (**कण्वहोता**) कण्वो मेधावी चासौ होता दाता च (**त्रितः**) त्रिषु क्षित्युदकान्तरिक्षेषु वर्धमानः (**दिवः**) दिव्याः कामनाः (**सजोषाः**) सहैव सेवमानः (**वातः**) वायुः (**अग्निः**) पावकः (**पूषा**) पुष्टिकर्ता (**भगः**) ऐश्वर्य्यप्रदः (**प्रभृथे**) शुद्धकरणे व्यवहारे (**विश्वभोजाः**) यो विश्वं भुनक्ति पालयति सः (**आजिम्**) स-ममम् (**न**) इव (**जग्मुः**) प्राप्नुवन्ति (**आश्वश्वतमाः**) आशवः सद्योगामिनो अश्वा विद्यन्ते येषान्ते॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! दिव्यः कण्वहोतेव यः सक्षणस्त्रितो दिवः कामयमानः सजोषा वातोऽग्निः प्रभृथे पूषा भगो विश्वभोजा आश्वश्वतमा आजिं जग्मुर्न प्र यत्यते स एव पुष्कलं भोगं प्रापयति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यूयमग्न्यादिकपदार्थैर्दारिद्र्यं विच्छिद्य श्रीमन्तो भवेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(दिव्यः)** शुद्ध व्यवहारयुक्त **(कण्वहोता)** बुद्धिमान् तथा देने और ग्रहण करने वाले के सदृश जो **(सक्षणः)** सहने वाला **(त्रितः)** तीन पृथिवी, जल और अन्तरिक्ष में बढ़ता **(दिवः)** श्रेष्ठ कामनाओं की इच्छा करता और **(सजोषाः)** साथ ही सेवन **(वातः)** वायु और **(अग्निः)** अग्नि **(प्रभृथे)** शुद्ध करने वाले व्यवहार में **(पूषा)** पुष्टि करने वा **(भगः)** ऐश्वर्य का देने वा **(विश्वभोजाः)** संसार का पालन करने वाला और **(आश्वश्वतमाः)** शीघ्र चलने वाले घोड़े जिसके विद्यमान वे **(आजिम्)** सङ्ग्राम को **(जग्मुः)** जैसे प्राप्त होते हैं **(न)** वैसे **(प्र)** प्रयत्न किया जाता है, वही बहुत भोग की प्राप्ति कराता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थों से दारिद्र्य का नाश करके धनवान् हूजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः।**

**सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा मरुतस्तुराणाम्॥५॥१३॥**

**प्र। वः। रयिम्। युक्तऽअश्वम्। भरध्वम्। रायः। एषे। अवसे। दधीत। धीः। सुऽशेवः। एवैः। औशिजस्य। होता। ये। वः। एवाः। मरुतः। तुराणाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(युक्ताश्वम्)** युक्ता अश्वा येन तत् **(भरध्वम्)** **(रायः)** धनानि **(एषे)** एतुं प्राप्तुम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(दधीत)** धरत **(धीः)** प्रज्ञाः **(सुशेवः)** शोभनं सुखं यस्य सः **(एवैः)** प्रापणैः **(औशिजस्य)** कामयमानस्यापत्यस्य **(होता)** **(ये)** **(वः)** युष्माकम् **(एवाः)** कामयमानाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(तुराणाम्)** हिंसकानाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मरुतो मनुष्या! यूयं धीर्दधीत वो युक्ताश्वं रयिं प्रभरध्वम्। अवस एषे सुशेव एवैरौशिजस्य रायः होता भवति ये वस्तुराणां हिंसका एवाः सन्ति तान् यूयं सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमग्न्यादिपदार्थविद्यया श्रीमन्तो भूत्वा सत्यतयाऽनाथान् सर्वान् पालयत दुष्टान् ताडयत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(धीः)** बुद्धियों को **(दधीत)** धारण करो और **(वः)** आप लोगों के लिये अर्थात् आप अपने लिये **(युक्ताश्वम्)** युक्त घोड़े जिससे उस **(रयिम्)** धन को **(प्र, भरध्वम्)** अत्यन्त धारण करो। तथा **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(एषे)** प्राप्त होने को **(सुशेवः)** सुन्दर सुख से युक्त जन **(एवैः)** गमनों से **(औशिजस्य)** कामना करने वाले सन्तान का और **(रायः)** धनों का **(होता)** देने वाला होता है और **(ये)** जो **(वः)** आप लोगों के **(तुराणाम्)** नाश करनेवालों के नाश करने वाले **(एवाः)** और कामना करने वाले हैं, उनका आप लोग सत्कार करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थों की विद्या से धनवान् होकर सत्यता से सब अनाथों का पालन करो और दुष्टों का ताड़न करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमर्कैः।**

**इषुध्यवं ऋतसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः॥६॥**

**प्र। वः। वायुम्। रथऽयुजम्। कृणुध्वम्। प्र। देवम्। विप्रम्। पनितारम्। अर्कैः। इषुध्यवः। ऋतऽसापः। पुरम्ऽधीः। वस्वीः। नः। अत्र। पत्नीः। आ। धिये। धुरिति धुः॥६॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**वायुम्**) वेगवन्तम् (**रथयुजम्**) रथेन युक्तम् (**कृणुध्वम्**) (**प्र**) (**देवम्**) विद्वांसम् (**विप्रम्**) मेधाविनम् (**पनितारम्**) स्तावकं धर्म्मेण व्यवहर्त्तारम् (**अर्कैः**) अर्चनीयैः पदार्थैः (**इषुध्यवः**) य इषुभिर्युध्यन्ते (**ऋतसापः**) सत्यसम्बन्धाः (**पुरन्धीः**) द्यावापृथिव्यौ। **पुरन्धी इति द्यावापृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०३.३०)। (**वस्वीः**) बहुपदार्थयुक्ताः (**नः**) अस्मभ्यम् (**अत्र**) अस्मिञ्जगति (**पत्नीः**) पत्नीवद्वर्त्तमानाः (**आ**) (**धिये**) प्रज्ञायै (**धुः**) दध्युः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽत्र इषुध्यव ऋतसापो विद्वांसो वो रथयुजं वायुं धुर्युष्मभ्यं नोऽस्मभ्यं पत्नीरिव धिये वस्वीः पुरन्धीरा धुस्तत्सङ्गेन वायुं रथयुजं प्र कृणुध्वमर्कैः पनितारं विप्रं देवं प्र कृणुध्वम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथा पतिव्रता पत्न्यः पत्यादीन् सुखयन्ति तथैव वायुवद्वेगयुक्तं रथं धार्मिकान् विदुषश्च धृत्वा सर्वान् सुखयेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अत्र**) इस संसार में (**इषुध्यवः**) बाणों के द्वारा युद्ध करने वा (**ऋतसापः**) सत्य सम्बन्ध रखने वाले विद्वान् जन (**वः**) आप लोगों के लिये (**रथयुजम्**) वाहन से युक्त (**वायुम्**) वेग वाले वायु को (**धुः**) धारण करें वा आप लोगों और (**नः**) हम लोगों के लिये (**पत्नीः**) स्त्रियों के सदृश वर्त्तमानों को और (**धिये**) बुद्धि के लिये (**वस्वीः**) बहुत पदार्थों से युक्त (**पुरन्धीः**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**आ**) सब प्रकार धारण करें उनके संग से वेगयुक्त वाहन से युक्त को (**प्र, कृणुध्वम्**) अच्छे प्रकार सिद्ध करें (**अर्कैः**) प्रशंसनीय पदार्थों से (**पनितारम्**) स्तुति करने और धर्म्म से व्यवहार करने वाले (**विप्रम्**) बुद्धिमान् (**देवम्**) विद्वान् को (**प्र**) अच्छे प्रकार प्रकट करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे पतिव्रता पत्नी पति आदि को सुख देती हैं, वैसे ही वायु के समान वेगयुक्त रथ को और धार्मिक विद्वानों को धारण कर सब को सुखयुक्त करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उप व एषे वन्द्येभिः शूषैः प्र यह्वी दिवश्चितयद्भिरर्कैः।**
**उषासानक्ता विदुषीव विश्वमा हा वहतो मर्त्याय यज्ञम्॥७॥**

**उप। वः। एषे। वन्द्येभिः। शूषैः। प्र। यह्वी इति। दिवः। चितयत्ऽभिः। अर्कैः। उषासानक्ता। विदुषीऽइवेति विदुषीव। विश्वम्। आ। ह। वहतः। मर्त्याय। यज्ञम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**उप**) (**वः**) युष्मान् (**एषे**) एतुं प्राप्तुम् (**वन्द्येभिः**) वन्दितुं स्तोतुं योग्यैः (**शूषैः**) बलैः (**प्र**) (**यह्वी**) महती (**दिवः**) विद्याप्रकाशान् (**चितयद्भिः**) ज्ञापयद्भिः (**अर्कैः**) पूजनीयैर्विद्वद्भिस्सह (**उषसानक्ता**) रात्रिदिने (**विदुषीव**) पूर्णविद्या स्त्रीव (**विश्वम्**) सर्वम् (**आ**) समन्तात् (**हा**) किल। अत्र **निपातस्य** चेति दीर्घः। (**वहतः**) धरतः (**मर्त्याय**) मनुष्यसुखाय (**यज्ञम्**) विद्याप्रचारादिकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! दिवश्चितयद्भिरर्कैर्वन्द्येभिः शूषैश्च सह यह्वी विदुषीव ये उषासानक्ता व उपैषे मर्त्याय विश्वं यज्ञं हा प्रा वहतस्तत्सेवनविद्यां यूयं विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा महाविदुषी स्त्री सर्वत्र विदुषीषु विद्वत्सु च सत्कृता भूत्वा सर्वानुत्तमान् गुणान् धृत्वा विदुषः पत्यादीनुन्नयति तथैव रात्रिदिने सर्वान् व्यवहारान् धृत्वा सर्वं जगद्वर्धयतः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**दिवः**) विद्या के प्रकाशों के (**चितयद्भिः**) जनाते हुए (**अर्कैः**) सत्कार करने योग्य विद्वानों के साथ और (**वन्द्येभिः**) स्तुति करने योग्य (**शूषैः**) बलों के साथ (**यह्वी**) बड़ी (**विदुषीव**) पूर्णविद्यायुक्त स्त्री के तुल्य जो (**उषसानक्ता**) रात्रि और दिन (**वः**) आप लोगों के (**उप, एषे**) समीप प्राप्त होने को (**मर्त्याय**) मनुष्य के सुख के लिये (**विश्वम्**) सम्पूर्ण (**यज्ञम्**) विद्या के प्रचार आदि को (**हा**) निश्चय (**प्र, आ, वहतः**) सब प्रकार धारण करते हैं, उनकी सेवन की विद्या को आप लोग जानें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे बड़ी विद्यायुक्त स्त्री सब जगह विद्यायुक्त स्त्रियों और विद्वानों में सत्कारयुक्त हो और सम्पूर्ण उत्तम गुणों को धारण करके विद्यायुक्त पति आदि की वृद्धि करती है, वैसे ही रात्रि और दिन सब व्यवहारों को धारण करके सब जगत् की वृद्धि करते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन् वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः।**
**धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीँरोषधी राय एषे॥८॥**

**अभि। वः। अर्चे। पोष्याऽवतः। नॄन्। वास्तोः। पतिम्। त्वष्टारम्। रराणः। धन्या। सऽजोषाः। धिषणा। नमःऽभिः। वनस्पतीन्। ओषधीः। रायः। एषे॥८॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**वः**) युष्मान् (**अर्चे**) सत्करोमि (**पोष्यावतः**) बहवः पोष्याः पोषणीया विद्यन्ते येषान्तान् (**नॄन्**) मनुष्यान् (**वास्तोः**) निवासस्थानस्य (**पतिम्**) पालकम् (**त्वष्टारम्**) तेजस्विनम् (**रराणः**) दाता (**धन्या**) धनं लब्ध्री (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेविनी (**धिषणा**) प्रज्ञा (**नमोभिः**) सत्कारैरन्नादिभिर्वा (**वनस्पतीन्**) अश्वत्थादीन् (**ओषधीः**) यवसोमलतादीन् (**रायः**) धनानि (**एषे**) प्राप्तुम्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीनोषधी राय एषे प्रभवति तथा वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणोऽहं पोष्यावतो वो नॄन्नभ्यर्चे॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा तीव्रया प्रज्ञया विद्यया च युक्ता नरो वैद्यकविद्यां विज्ञाय मनुष्यादीन् पालयन्ति तथैव सर्वहितमिच्छुकान् जनान् सदैव सत्कुर्वन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**धन्या**) धन को प्राप्त हुई (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति की सेवने वाली (**धिषणा**) बुद्धि (**नमोभिः**) सत्कारों वा अन्न आदिकों से (**वनस्पतीन्**) अश्वत्थ आदि और (**ओषधीः**) यव सोमलतादिकों को तथा (**रायः**) धनों को (**एषे**) प्राप्त होने के लिये समर्थ होती है, वैसे (**वास्तोः**) निवास के स्थान के (**पतिम्**) पालने वाले (**त्वष्टारम्**) तेजस्वीजन को (**रराणः**) दाता मैं (**पोष्यावतः**) बहुत पोषण करने योग्य पदार्थ जिनके विद्यमान उन (**वः**) आप (**नॄन्**) मनुष्यों का (**अभि, अर्चे**) प्रत्यक्ष सत्कार करता हूँ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे तीव्र बुद्धि और विद्या से युक्त मनुष्य वैद्यक विद्या को जान कर मनुष्य आदिकों का पालन करते हैं, वैसे ही सब के हित की इच्छा करने वाले मनुष्यों का सदा ही सत्कार करिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः।**

**पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धान्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ॥९॥**

**तुजे। नः। तने। पर्वताः। सन्तु। स्वऽएतवः। ये। वसवः। न। वीराः। पनितः। आप्त्यः। यजतः। सदा। नः। वर्धात्। नः। शंसम्। नर्यः। अभिष्टौ॥९॥**

**पदार्थः**-(**तुजे**) दाने (**नः**) अस्मभ्यम् (**तने**) विस्तीर्णे (**पर्वताः**) जलप्रदा मेघा इव (**सन्तु**) (**स्वैतवः**) सुष्ठुगमनाः (**ये**) (**वसवः**) पृथिव्यादयः (**न**) इव (**वीराः**) प्रज्ञाशरीरबलयुक्ताः (**पनितः**) प्रशंसितः (**आप्त्यः**) आप्तेषु भवः (**यजतः**) सङ्गन्ता पूजनीयः (**सदा**) (**नः**) अस्मान् (**वर्धात्**) वर्धयेत् (**नः**) अस्मान् (**शंसम्**) प्रशंसाम् (**नर्यः**) नृषु साधुः (**अभिष्टौ**) इष्टसिद्धौ॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये स्वैतवो वसवो वीरा न तने तुजे नः पर्वता मेघा दातार इव सन्तु योऽभिष्टौ पनित

आप्त्यो यजतो नः सदा वर्धाद्यो नर्य्यो नः शंसं प्रापयेत्तान् सर्वान् वयं सत्कुर्याम॥९॥

**भावार्थः-**अत्रोपमालङ्कारः। ये वीरवच्छत्रुनिवारका मेघवद्दातारो वायुवद्वेगवन्तो विद्वांसोऽस्मान्नित्यं वर्धयेयुस्तान् वयमपि वर्धयेमहि॥९॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(स्वैतवः)** उत्तम गमन वाले **(वसवः)** पृथिवी आदि **(वीराः)** बुद्धि और शरीर के बल से युक्त जनों के **(न)** सदृश **(तने)** विस्तीर्ण **(तुजे)** दान में **(वः)** हम लोगों के लिये **(पर्वताः)** जल के देने वाले मेघ और दाता जनों के सदृश **(सन्तु)** होवें और जो **(अभिष्टौ)** इष्ट की सिद्धि में **(पनितः)** प्रशंसित **(आप्त्यः)** यथार्थवक्ता जनों में उत्पन्न **(यजतः)** मिलने वा सत्कार करने योग्य जन **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(वर्धात्)** वृद्धि करे और जो **(नर्य्यः)** मनुष्यों में श्रेष्ठ **(नः)** हम लोगों को **(शंसम्)** प्रशंसा को प्राप्त करावें, उन सब का हम लोग सत्कार करें॥९॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जन वीरजनों के सदृश शत्रुओं के निवारण करने, मेघ के सदृश देने वाले और वायु के सदृश वेगयुक्त विद्वान् हम लोगों की नित्य वृद्धि करें, उनकी हम लोग भी वृद्धि करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति।**

**गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना॥१०॥१४॥**

**वृष्णः। अस्तोषि। भूम्यस्य। गर्भम्। त्रितः। नपातम्। अपाम्। सुऽवृक्ति। गृणीते। अग्निः। एतरि। न। शूषैः। शोचिःऽकेशः। नि। रिणाति। वना॥१०॥**

**पदार्थः-(वृष्णः)** सुखवर्षकान् **(अस्तोषि)** प्रशंससि **(भूम्यस्य)** भूमौ भवस्य **(गर्भम्)** **(त्रितः)** त्रिषु वर्द्धकः **(नपातम्)** न विद्यते पातो यस्य तम् **(अपाम्)** प्राणिनां जनानामिव **(सुवृक्ति)** सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिंस्तम् **(गृणीते)** स्तौति **(अग्निः)** पावक इव **(एतरी)** प्राप्नुवन्ती **(न)** इव **(शूषैः)** बलैः **(शोचिष्केशः)** प्रदीप्तविज्ञानः **(नि)** **(रिणाति)** गच्छति प्राप्नोति वा **(वना)** किरणान्॥१०॥

**अन्वयः-**हे विद्वँस्त्वं वृष्णोऽस्तोषि त्रितोऽपां नपातं भूम्यस्य गर्भं सुवृक्ति गृणीत एवं योऽग्निरेतरी शोचिष्केशो न शूषैर्वना नि रिणाति स एव सर्वं सृष्टिजन्यं सुखं प्राप्नोति॥१०॥

**भावार्थः-**स एव पुरुषो बहुधनं मान्यं च लभते यः सृष्टिक्रमविद्यां विज्ञाय कार्यसिद्धये प्रयतते॥१०॥

**पदार्थः-**हे विद्वन्! आप **(वृष्णः)** सुख की वृष्टि करनेवालों की **(अस्तोषि)** प्रशंसा करते हो **(त्रितः)** तीनों में वृद्धिकरने वाला **(अपाम्)** मनुष्यों के सदृश प्राणियों के **(नपातम्)** नहीं पतन जिसका उस **(भूम्यस्य)** पृथ्वी में हुए **(गर्भम्)** गर्भ की **(सुवृक्ति)** उत्तम गमन के सहित **(गृणीते)** स्तुति करता है, इस प्रकार जो **(अग्निः)** पवित्र करने वाले अग्नि के **(एतरी)** प्राप्त होती हुई के और **(शोचिष्केशः)**

प्रकाशित विज्ञान वाले के **(न)** सदृश **(शूषैः)** बलों से **(वना)** किरणों को **(नि, रिणाति)** जाता वा प्राप्त होता है, वही सम्पूर्ण सृष्टि में उत्पन्न हुए सुख को प्राप्त होता है॥१०॥

**भावार्थः**-वही पुरुष बहुत धन और आदर को प्राप्त होता है कि जो सृष्टिक्रम की विद्या को जान कर कार्य्य की सिद्धि के लिये यत्न करता है॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद्राये चिकितुषे भगाय।**
**आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः॥११॥**

**कथा। महे। रुद्रियाय। ब्रवाम। कत्। राये। चिकितुषे। भगाय। आपः। ओषधीः। उत। नः। अवन्तु। द्यौः। वना। गिरयः। वृक्षऽकेशाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(कथा)** केन प्रकारेण **(महे)** महते **(रुद्रियाय)** रुद्रैर्लब्धाय **(ब्रवाम)** उपदिशेम **(कत्)** कदा **(राये)** धनाय **(चिकितुषे)** ज्ञातव्याय **(भगाय)** ऐश्वर्याय **(आपः)** जलानि **(ओषधीः)** सोमलताद्याः **(उत)** **(नः)** अस्मान् **(अवन्तु)** **(द्यौः)** सूर्य्यः **(वना)** किरणानीव **(गिरयः)** मेघाः **(वृक्षकेशाः)** वृक्षाः केशा इव येषां शैलानां ते॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! मनुष्या आप ओषधीर्वृक्षकेशा गिरय उत द्यौर्वनेव नोऽवन्तु तत्सहायेन वयं महे चिकितुषे रुद्रियाय कथा ब्रवाम राये भगाय कद् ब्रवाम॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्याः स्वेषामन्येषां च रक्षणाय विदुषः सङ्गत्य प्रश्नोत्तराभ्यां सत्या विद्याः प्राप्यान्येभ्य उपदिश्यैश्वर्य्यवृद्धिं कदा करिष्याम इति नित्यं प्रोत्साहेरन्॥११॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! मनुष्य **(आपः)** जल **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियां **(वृक्षकेशाः)** वृक्ष हैं केशों के समान जिनके वे पर्वत **(गिरयः)** मेघ **(उत)** और **(द्यौः)** सूर्य्य **(वना)** किरणों के सदृश **(नः)** हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें, उनके सहाय से हम लोग **(महे)** बड़े **(चिकितुषे)** जानने योग्य और **(रुद्रियाय)** रुलाने वाले से प्राप्त हुए के लिये **(कथा)** किस प्रकार से **(ब्रवाम)** उपदेश देवें और **(राये)** धन और **(भगाय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(कत्)** कब उपदेश देवें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्य अपने और अन्यों के रक्षण के लिये विद्वानों को मिल के प्रश्न और उत्तर से सत्य विद्याओं को प्राप्त हो और अन्यों के लिये उपदेश देकर ऐश्वर्य्य की वृद्धि कब करें, इस प्रकार नित्य उत्साह करें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः स नभस्तरीयाँ इषिरः परिज्मा।**

**शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्रा परि स्रुचो बबृहाणस्याद्रेः॥१२॥**

**शृणोतु। नः। ऊर्जाम्। पतिः। गिरः। सः। नभः। तरीयान्। इषिरः। परिऽज्मा। शृण्वन्तु। आपः। पुरः। न। शुभ्राः। परि। स्रुचः। बबृहाणस्य। अद्रेः॥१२॥**

**पदार्थः-(शृणोतु)** **(नः)** अस्माकम् **(ऊर्जाम्)** बलयुक्तानां सेनानामन्नादीनां वा **(पतिः)** स्वामी पालकः **(गिरः)** सुशिक्षिता वाचः **(सः)** **(नभः)** जलम्। **नभ इति साधारणनामसु पठितम्।** (निघं०१.४) **(तरीयान्)** तरणीयः **(इषिरः)** गन्तव्यः **(परिज्मा)** यः परितः सर्वतो गच्छति सः **(शृण्वन्तु)** **(आपः)** जलानीव व्याप्तविद्या विद्वांसः **(पुरः)** नगराणि **(न)** इव **(शुभ्राः)** श्वेताः **(परि)** सर्वतः **(स्रुचः)** गमनशीलाः **(बबृहाणस्य)** प्रवृद्धस्य **(अद्रेः)** मेघस्य॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! स नभस्तरीयां इषिरः परिज्मोर्जां पतिर्नो गिरः शृणोतु शुभ्राः पुरो नापो नोऽस्माकं गिरः शृण्वन्तु बबृहाणस्याऽद्रेः स्रुच इवास्माकं वाचः विद्वांसः परि शृण्वन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो भवितुमर्हन्ति ये विद्वद्भ्योऽधीतपरीक्षां प्रसन्नतया ददति त एवाऽध्यापका विद्यार्थिनो विदुषः कर्त्तुं शक्नुवन्ति ये प्रीत्या सम्यगध्याप्य विरोधिवत्परीक्षयन्ति। य एवमुभये प्रयतन्ते ते नद्योन्नतिवत् प्रवर्धन्ते॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सः)** वह **(नभः)** जल **(तरीयान्)** तैरने और **(इषिरः)** प्राप्त होने योग्य **(परिज्मा)** सर्वत्र प्राप्त होने वाला **(ऊर्जाम्)** बल से युक्त सेनाओं वा अन्नादिकों का **(पतिः)** स्वामी पालन करने वाला **(नः)** हम लोगों की **(गिरः)** उत्तम शिक्षा से युक्त वाणियों को **(शृणोतु)** सुने तथा **(शुभ्राः)** श्वेत वर्ण वाले **(पुरः)** नगरों के **(न)** सदृश **(आपः)** और जलों के सदृश विद्याओं से व्याप्त विद्वान् जन **(नः)** हम लोगों की वाणियों को सुनें **(बबृहाणस्य)** उत्तम प्रकार बढ़े **(अद्रेः)** मेघ के **(स्रुचः)** चलनेवालों के सदृश हम लोगों की वाणियों को विद्वान् जन **(परि, शृण्वण्तु)** सुनें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही जन विद्वान् होने योग्य हैं जो विद्वानों से पढ़ी हुई विद्या की परीक्षा को प्रसन्नता से देते हैं और वे ही अध्यापक विद्यार्थियों को विद्वान् कर सकते हैं, जो प्रीति से उत्तम प्रकार पढ़ा के विरोधियों के सदृश परीक्षा लेते हैं। जो इस प्रकार दोनों प्रयत्न करते हैं, वे नदी की उन्नति के समान अच्छे प्रकार बढ़ते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः।**
**वयश्चन सुभ्व१ आव यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्नैः॥१३॥**

**विद। चित्। नु। महान्तः। ये। वः। एवाः। ब्रवाम। दस्माः। वार्यम्। दधानाः। वयः। चन। सुऽभ्वः। आ। अव। यन्ति। क्षुभा। मर्तम्। अनुऽयतम्। वधऽस्नैः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**विदा**) विजानीत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**नु**) सद्यः (**महान्तः**) (**ये**) (**वः**) युष्मान् (**एवाः**) (**ब्रवाम**) वदेम (**दस्माः**) दुःखोपक्षेतारः (**वार्य्यम्**) वरणीयं सुखम् (**दधानाः**) (**वयः**) जीवनम् (**चन**) अपि (**सुभ्वः**) ये शोभनेषु कर्म्मसु भवन्ति (**आ**) (**अव**) (**यन्ति**) गच्छन्ति (**क्षुभा**) संचलनेन (**मर्त्तम्**) मनुष्यम् (**अनुयतम्**) आनुकूल्येन यतन्तम् (**वधस्नैः**) ये वधेन स्नान्ति पवित्रा भवन्ति ते॥१३॥

**अन्वयः**-हे दस्मा महान्तो जना! ये वार्य्यं वयश्चन दधानाः सुभ्वो वयं यद्वो ब्रवाम तदेवाश्चिन्नु यूयं विदा। ये वधस्नैः क्षुभाऽनुयतं मर्त्तमाव यन्ति तान् यूयं शिक्षध्वम्॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसः शुभकर्माचरेयुरुपदिशेयुश्च तथैव यूयमाचरत ये मनुष्यान् क्षोभयन्ति तान् दण्डयत॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**दस्माः**) दुःख की उपेक्षा करने वाले (**महान्तः**) बड़े श्रेष्ठ जनो! (**ये**) जो (**वार्य्यम्**) स्वीकार करने योग्य सुख और (**वयः**) जीवन को (**चन**) भी (**दधानाः**) धारण करते हुए (**सुभ्वः**) श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रवृत्त होने वाले हम लोग जो (**वः**) आप लोगों को (**ब्रवाम**) कहें, उसके (**एवाः**) ही (**चित्**) निश्चय (**नु**) शीघ्र आप लोग (**विदा**) जानिये जो (**वधस्नैः**) ताड़न से स्नान करते अर्थात् पवित्र होते हैं, उनके साथ (**क्षुभा**) उत्तम प्रकार चलने से (**अनुयतम्**) अनुकूलता से प्रयत्न करते हुए (**मर्त्तम्**) मनुष्य को (**आ, अव, यन्ति**) उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं, उनको आप लोग शिक्षा करो॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन शुभ कर्म्म को करें और उपदेश देवें, वैसे ही आप लोग आचरण करो और जो मनुष्य को क्लेश देते हैं, उनको दण्ड दीजिये॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छा सुमखाय वोचम्।
### वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः॥१४॥

**आ। दैव्यानि। पार्थिवानि। जन्म। अपः। च। अच्छ। सुऽमखाय। वोचम्। वर्धन्ताम्। द्यावः। गिरः। चन्द्रऽअग्राः। उदा। वर्धन्ताम्। अभिऽसाताः। अर्णाः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**दैव्यानि**) देवेषु दिव्येषु गुणेषु भवानि (**पार्थिवानि**) पृथिव्यां विदितानि (**जन्म**) जन्मानि (**अपः**) अपांसि कर्म्माणि (**च**) (**अच्छा**) सुष्ठु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**सुमखाय**) शोभना मखा यज्ञा यस्य तस्मै (**वोचम्**) उपदिशेयम् (**वर्धन्ताम्**) (**द्यावः**) सत्याः कामाः (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**चन्द्राग्राः**) चन्द्रं सुवर्णमानन्दो वाऽग्रे यासां ताः (**उदा**) उदकेन (**वर्धन्ताम्**) (**अभिषाताः**) अभितो विभक्ताः (**अर्णाः**) समुद्राः॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहं यानि दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छाऽऽवोचं येनोदा अर्णा इवाऽस्माकं

चन्द्राग्रा अभिषाता द्यावो गिरश्च वर्धन्ताम् यतः सुमखाय प्राणिनो वर्धन्ताम्॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र [वाचकलुप्तो]पमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं धर्म्याणि कर्म्माणि शुभान् गुणांश्च गृहीत्वा स्वकीयाः कामना वाणीं चाऽलं कुरुत यथोदकेन नद्यः समुद्राश्च वर्धन्ते तथैव धर्म्मयुक्तेन पुरुषार्थेन मनुष्या वर्धन्ते॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! मैं जिन **(दैव्यानि)** श्रेष्ठ गुणों में हुए **(पार्थिवानि)** पृथिवी में विदित **(जन्म)** जन्मों और **(अपः)** कर्म्मों को **(च)** भी **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(आ, वोचम्)** सब ओर से उपदेश करूं जिस **(उदा)** जल से **(अर्णाः)** समुद्रों के सदृश हम लोगों की **(चन्द्राग्राः)** सुवर्ण वा आनन्द अग्र अर्थात् परिणाम दशा में जिनके उन **(अभिषाताः)** चारों ओर से बँटी हुई **(द्यावः)** सत्य कामनाओं को और **(गिरः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों की **(वर्धन्ताम्)** वृद्धि कीजिये जिससे **(सुमखाय)** शोभन यज्ञों वाले के लिये प्राणियों की **(वर्धन्ताम्)** वृद्धि हो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में [वाचकलुप्तो]पमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग धर्म्मयुक्त कर्म्मों और श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करके अपनी कामनाओं और वाणी को शोभित करो, जैसे जल से नदियां और समुद्र बढ़ते हैं, वैसे ही धर्म्मयुक्त पुरुषार्थ से मनुष्य बढ़ते हैं॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च।**

**सिषक्तु माता मही रसा नः स्मत् सूरिभिर्ऋजुहस्त ऋजुवनिः॥१५॥१५॥**

**पदेऽपदे। मे। जरिमा। नि। धायि। वरूत्री। वा। शक्रा। या। पायुऽभिः। च। सिसुक्तु। माता। मही। रसा। नः। स्मत्। सूरिऽभिः। ऋजुऽहस्ता। ऋजुऽवनिः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(पदेपदे)** प्राप्तव्ये प्राप्तव्ये वेदितव्ये वेदितव्ये गन्तव्ये गन्तव्ये वा पदार्थे **(मे)** मम **(जरिमा)** स्ताविका **(नि)** नितराम् **(धायि)** निधीयते **(वरूत्री)** वरसुखप्रदा **(वा)** **(शक्रा)** शक्तिनिमित्ता **(या)** **(पायुभिः)** रक्षणैः **(च)** **(सिष्क्तु)** सम्बध्नातु **(माता)** जननी **(महा)** महती वाग्भूमिर्वा **(रसा)** रसादिगुणयुक्ता **(नः)** अस्मान् **(स्मत्)** एव **(सूरिभिः)** विद्वद्भिः **(ऋजुहस्ता)** ऋजू सरलौ हस्तौ यस्या यस्यां वा सा **(ऋजुवनिः)** ऋजूनामकुटिलानां पदार्थानां संविभाजिका॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! सूरिभिः पायुभिश्च या मे पदेपदे वरूत्री जरिमा वा शक्रा माता रसा मही ऋजुहस्ता ऋजुवनिर्नः सिषक्तु सा स्मन्निधायि॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा माताऽपत्यानि रक्षति तथैव विद्वत्सङ्गेन लब्धा सुशिक्षिता विद्या विदुषः सर्वतो रक्षति॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**सूरिभिः**) विद्वानों और (**पायुभिः**) रक्षकों से (**च**) और (**या**) जो (**मे**) मेरे (**पदेपदे**) प्राप्त होने प्राप्त होने, जानने जानने वा जाने जाने योग्य पदार्थ में (**वरूत्री**) श्रेष्ठ सुख की देने (**जरिमा**) और स्तुति कराने वाली (**वा**) वा (**शक्रा**) सामर्थ्य में कारण (**माता**) माता (**रसा**) रस आदि गुणों से युक्त (**मही**) बड़ी वाणी वा भूमि (**ऋजुहस्ता**) ऋजु अर्थात् सरल हस्त जिसके वा जिसमें वह (**ऋजुवनिः**) ऋजु अर्थात् नहीं जो कुटिल उन पदार्थों के विभक्त करने वाली (**नः**) हम लोगों को (**सिषक्तु**) सम्बन्धित करे वह (**स्मत्**) ही (**नि**) निरन्तर (**धायि**) स्थित की जाती है॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे माता सन्तानों की रक्षा करती है, वैसे ही विद्वानों के संग से प्राप्त और उत्तम प्रकार शिक्षित विद्या विद्वानों की सब प्रकार रक्षा करती है॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क॒था दा॑शेम॒ नम॑सा सु॒दानू॑नेव॒या म॒रुतो॒ अच्छो॑क्तौ॒ प्रश्र॑वसो म॒रुतो॒ अच्छो॑क्तौ।**
**मा नोऽहि॒र्बु॒ध्न्यो॑ रि॒षे धा॑द॒स्माकं॑ भूदुपमाति॒वनिः॑॥१६॥**

**क॒था। दा॒शे॒म॒। नम॑सा। सु॒ऽदानू॑न्। ए॒व॒ऽया। म॒रुतः॑। अच्छ॑ऽउक्तौ। प्रऽश्र॑वसः। म॒रुतः॑। अच्छ॑ऽउक्तौ। मा। नः॒। अहिः॑। बु॒ध्न्यः॑। रि॒षे। धा॒त्। अ॒स्माक॑म्। भू॒त्। उ॒प॒मा॒ति॒ऽवनिः॑॥१६॥**

**पदार्थः**-(**कथा**) केन प्रकारेण (**दाशेम**) दद्याम (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**सुदानून्**) उत्तमदानान् (**एवया**) गमनक्रियया (**मरुतः**) मनुष्याः (**अच्छोक्तौ**) सत्योक्तौ (**प्रश्रवसः**) प्रकृष्टं श्रवः श्रवणमन्नं वा येषान्ते (**मरुतः**) वायवः (**अच्छोक्तौ**) सम्यग्वचने (**मा**) निषेधे (**नः**) अस्मान् (**अहिः**) मेघः (**बुध्न्यः**) अन्तरिक्षे भवः (**रिषे**) अन्नाय (**धात्**) दध्यात् (**अस्माकम्**) (**भूत्**) भवेत् (**उपमातिवनिः**) उपमातेर्विभाजकः॥१६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! प्रश्रवसो मरुतो वयमेवयाच्छोक्तौ नमसा सुदानून् कथा दाशेम यथा मरुतोच्छोक्तौ प्रवर्त्तयन्ति तथा नोऽस्मानत्र प्रवर्त्तयत। यथा बुध्न्योऽहिरस्माकमुपमातिवनिर्भूत् रिषेऽस्मान् मा धात्तथा यूयमप्यस्मान् हिंसायां मा प्रवर्त्तयत॥१६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं विदुषः प्रति पृष्ट्वा वयं कि दद्याम कस्मात् किं गृह्णीयामेति निश्चित्य व्यवहरत यथा मेघः स्वयं छिन्नो भिन्नो भूत्वाऽन्यान् रक्षति तथैव विद्वांसस्स्वयं पराऽपकारेण छिन्नो भिन्ना भूत्वाप्यन्यान् सदैवोपकुर्वन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**प्रश्रवसः**) उत्तम श्रवण वा अन्न जिनका वे (**मरुतः**) मनुष्य हम लोग (**एवया**) गमन क्रिया से (**अच्छोक्तौ**) सत्य कथन में (**नमसा**) सत्कार वा अन्न आदि से (**सुदानून्**) उत्तम दानों को (**कथा**) कैसे (**दाशेम**) देवें जैसे (**मरुतः**) पवन (**अच्छोक्तौ**) उत्तम वचन में प्रवृत्त कराते हैं, वैसे (**नः**) हम लोगों को इस विषय में प्रवृत्त करिये। जैसे (**बुध्न्यः**) अन्तरिक्ष में हुआ (**अहिः**) मेघ

**(अस्माकम्)** हम लोगों का **(उपमातिवनिः)** उपमा का विभाग करने वाला **(भूत्)** हो और **(रिषे)** अन्न के लिये हम लोगों को **(मा)** नहीं **(धात्)** धारण करे, वैसे आप लोग भी हम लोगों को हिंसा में न प्रवृत्त कीजिये॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के प्रति प्रश्न करके कि हम लोग क्या देवें और किससे क्या ग्रहण करें, ऐसा निश्चय करके व्यवहार करो और जैसे मेघ स्वयं छिन्न-भिन्न होके अन्यों की रक्षा करता है, वैसे ही विद्वान् जन स्वयं दूसरे से अपकार किये हुये से छिन्न-भिन्न होकर भी अन्यों का सदा उपकार करते हैं॥१६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवासो वनते मर्त्यो वः।**
**अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत॥१७॥**

**इति। चित्। नु। प्रऽजायै। पशुऽमत्यै। देवासः। वनते। मर्त्यः। वः। आ। देवासः। वनते। मर्त्यः। वः। अत्र। शिवाम्। तन्वः। धासिम्। अस्याः। जराम्। चित्। मे। निःऽऋतिः। जग्रसीत॥१७॥**

**पदार्थः**-**(इति)** अनेन प्रकारेण **(चित्)** निश्चयेन **(नु)** सद्यः **(प्रजायै)** **(पशुमत्यै)** बहवः पशवो विद्यन्ते यस्यां तस्यै **(देवासः)** विद्वांसः **(वनते)** सम्भजसि **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(वः)** युष्मान् **(आ)** समन्तात् **(देवासः)** विद्वांसः **(वनते)** सम्भजति **(मर्त्यः)** **(वः)** युष्माकम् **(अत्रा)** अस्यां प्रजायाम्। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(शिवाम्)** मङ्गलमयीम् **(तन्वः)** शरीरस्य **(धासिम्)** अन्नम् **(अस्याः)** प्रजायाः **(जराम्)** वृद्धावस्थाम् **(चित्)** निश्चयेन **(मे)** मम **(निर्ऋतिः)** भूमिः। **निर्ऋतिरिति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१।१) **(जग्रसीत)** ग्रसते॥१७॥

**अन्वयः**-हे देवासो! यो मर्त्यो वः पशुमत्यै प्रजायै धासिं वनते यश्चिदित्यस्याः प्रजायास्तन्वः शिवां जरामा वनते यो मर्त्यश्चिन्मे तन्वः शिवां जरां वनते निर्ऋतिरिवात्रा वो धासिं जग्रसीतेति, हे देवासो! यूयमस्मभ्यमेतन्नु साध्नुत॥१७॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमीदृशं प्रयत्नं कुरुत येन मनुष्याणामायुर्वर्द्धेत यावन्मनुष्या वृद्धा न भवन्ति तावदेते परीक्षका अपि न जायन्ते॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(देवासः)** विद्वान् जनो! जो **(मर्त्यः)** मनुष्य **(वः)** आप लोगों को **(पशुमत्यै)** बहुत पशु विद्यमान जिसमें उस **(प्रजायै)** प्रजा के लिये **(धासिम्)** अन्न की **(वनते)** सेवा करता है और जो **(चित्)** निश्चय से **(इति)** इस प्रकार से **(अस्याः)** इस प्रजा के **(तन्वः)** शरीर की **(शिवाम्)** मंगलस्वरूप **(जराम्)** वृद्धावस्था की **(आ, वनते)** अच्छे प्रकार सेवा करता है और जो **(मर्त्यः)** मनुष्य **(चित्)** निश्चय से **(मे)** मेरे शरीर की मंगलस्वरूप वृद्धावस्था का सेवन करता है और **(निर्ऋतिः)** भूमि के सदृश

**(अत्रा)** इस प्रजा में **(वः)** आप लोगों के अन्न को **(जग्रसीत)** खाता है, इस प्रकार हे **(देवासः)** विद्वान्! आप लोग हम लोगों के लिये इसको **(नु)** शीघ्र सिद्ध कीजिये॥१७॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग ऐसा प्रयत्न करो जिससे मनुष्यों की अवस्था बढ़े, जब तक मनुष्य वृद्ध नहीं होते, तब तक ये परीक्षक भी नहीं होते हैं॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः।**
**सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः॥१८॥**

**ताम्। वः। देवाः। सुऽमतिम्। ऊर्जयन्तीम्। इषम्। अश्याम। वसवः। शसा। गोः। सा। नः। सुऽदानुः। मृळयन्ती। देवी। प्रति। द्रवन्ती। सुविताय। गम्याः॥१८॥**

**पदार्थः**-**(ताम्)** **(वः)** युष्मान् **(देवाः)** धार्मिका विद्वांसः **(सुमतिम्)** श्रेष्ठां प्रज्ञाम् **(ऊर्जयन्तीम्)** पराक्रमादिदानेनोन्नयन्तीम् **(इषम्)** अन्नम् **(अश्याम)** भुञ्जीमहि **(वसवः)** शुभगुणेषु कृतनिवासाः **(शसा)** प्रशंसया **(गोः)** पृथिव्या मध्ये **(सा)** **(नः)** अस्मान् **(सुदानुः)** उत्तमदाना **(मृळयन्ती)** सुखयन्ती **(देवी)** विदुषी **(प्रति)** **(द्रवन्ती)** जानन्ती गच्छन्ती वा **(सुविताय)** ऐश्वर्य्याय **(गम्याः)** प्राप्नुयाः॥१८॥

**अन्वयः**-हे देवा या सुदानुर्मृळयन्ती प्रति द्रवन्ती देवी सुविताय वो याति तामूर्जयन्तीं सुमतिमिषं च वयमश्याम। हे वसवो! या गोः शसा सह वर्त्तते सा नोऽस्मान् प्राप्नोतु। हे विदुषि स्त्रि! त्वमेतान् प्रति गम्याः॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सदा सुसंस्कृतं बुद्धिबलवर्धकमन्नं सदाऽदन्तु येन प्रज्ञा कीर्त्तिर्धनं च वर्धेत॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** धार्मिक विद्वान् जनो! जो **(सुदानुः)** उत्तम दान से युक्त **(मृळयन्ती)** सुख देती **([प्रति] द्रवन्ती)** जानती वा चलती हुई **(देवी)** विद्यायुक्त स्त्री **(सुविताय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(वः)** आप लोगों को प्राप्त होती है **(ताम्)** उसको **(ऊर्जयन्तीम्)** तथा पराक्रम आदि के दान से वृद्धि कराती हुई **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को और **(इषम्)** अन्न को हम लोग **(अश्याम)** भोगें। हे **(वसवः)** उत्तम गुणों में निवास किये हुए जनो! जो **(गोः)** पृथिवी के मध्य में **(शसा)** प्रशंसा के साथ वर्त्तमान है **(सा)** वह **(नः)** हम लोगों को प्राप्त हो। और हे विद्यायुक्त स्त्री! आप इन जनों के **(प्रति)** प्रति **(गम्याः)** प्राप्त हूजिये॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्य सदा उत्तम प्रकार घृत आदि के संस्कार से युक्त बुद्धि और बल के बढाने वाले अन्न का सदा भोग करें, जिससे बुद्धि यश और धन बढ़े॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु।**
**उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोः॥१९॥**

**अभि। नः। इळा। यूथस्य। माता। स्मत्। नदीभिः। उर्वशी। वा। गृणातु। उर्वशी। वा। बृहत्ऽदिवा। गृणाना। अभिऽऊर्ण्वाना। प्रऽभृथस्य। आयोः॥१९॥**

**पदार्थः-(अभि) (नः)** अस्मान् **(इळा)** प्रशंसनीया वाग्भूमिर्वा **(यूथस्य)** समूहस्य **(माता)** मान्यकर्त्री जननीव **(स्मत्)** एव **(नदीभिः)** सद्भिरिव नाडीभिः **(उर्वशी)** उरवो बहवो वशे भवन्ति यया सा वाणी। **उर्वशीति पदनामसु पठितम्।** (निघं०४.२) **(वा) (गृणातु)** स्तौतु **(उर्वशी)** बहुवशकर्त्री प्रज्ञा **(वा) (बृहद्दिवा)** बृहती द्यौः प्रकाशो यस्याः सा **(गृणाना)** स्ताविका **(अभ्यूर्ण्वाना)** आभिमुख्येनार्थानाच्छादयन्ती **(प्रभृथस्य)** प्रकर्षेण ध्रियमाणस्य **(आयोः)** जीवनस्य॥१९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येळा यूथस्य मातेव नोऽस्मानभि गृणातु वायोरुर्वशी नदीभिस्स्मद् गृणातु वा बृहद्दिवा गृणानोर्वश्यभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोर्गृणातु॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं यदि सत्यभाषणयुक्तां वाणीं धरत तर्हि युष्माकमायुर्वर्धेत॥१९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इळा)** प्रशंसा करने योग्य वाणी वा भूमि **(यूथस्य)** समूह की **(माता)** आदर करने वाली माता के सदृश **(नः)** हम लोगों की **(अभि, गृणातु)** सब ओर से स्तुति करे **(वा)** वा **(आयोः)** जीवन की **(उर्वशी)** बहुत वश में होते हैं, जिससे ऐसी वाणी **(नदीभिः)** श्रेष्ठों के सदृश नाड़ियों से **(स्मत्)** ही स्तुति करे **(वा)** वा **(बृहद्दिवा)** बड़ा प्रकाश जिसका ऐसी **(गृणाना)** स्तुति करने वाली **(उर्वशी)** और बहुतों को वश में करने वाली बुद्धि **(अभ्यूर्ण्वाना)** संमुखता से अर्थों को ढांपती हुई **(प्रभृथस्य)** प्रकर्षता से धारण किये गये जीवन की स्तुति करे॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जो सत्यभाषण से युक्त वाणी को धारण करें तो आप लोगों की अवस्था बढ़े॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः॥२०॥१६॥**

**सिषक्तु। नः। ऊर्जव्यस्य। पुष्टेः॥२०॥**

**पदार्थः-(सिषक्तु)** परिचरतु **(नः)** अस्मान् **(ऊर्जव्यस्य)** बहुबलप्राप्तस्य **(पुष्टेः)**॥२०॥

**अन्वयः**-यो विद्वान् भवेत् स न ऊर्जव्यस्य पुष्टेर्योगं सिषक्तु॥२०॥

**भावार्थः**-यो जगदुपकारी भवति स एव सर्वविद्यासम्बन्धं कर्त्तुमर्हति॥२०॥

अत्र विश्वेषां देवानां गुणवर्णनं कृतमतोऽस्य सूक्तस्यार्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो विद्वान् होवे वह **(नः)** हम लोगों को **(ऊर्जव्यस्य)** बहुत बल से प्राप्त **(पुष्टेः)** पुष्टि के योग का **(सिषक्तु)** सेवन करे॥२०॥

**भावार्थः**-जो जगत् का उपकार करने वाला होता है, वही सम्पूर्ण विद्याओं के सम्बन्ध करने योग्य होता है॥२०॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतालीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथाष्टादशर्चस्य द्विचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ४, ६, ९, ११, १२, १८ निचृत्त्रिष्टुप्। २, १५ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ५, ७, ८, १०, १३, १४, १६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १७ याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विश्वेदेवगुणानाह॥***

अब अठारह ऋचा वाले बयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विश्वेदेवों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र शंतमा वरुणं दीधिती गीर्मित्रं भगमदितिं नूनमंश्याः।**

**पृषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्वतूर्तपन्था असुरो मयोभुः॥ १॥**

**प्र। शम्ऽतमा। वरुणम्। दीधिती। गीः। मित्रम्। भगम्। अदितिम्। नूनम्। अश्याः। पृषत्ऽयोनिः। पञ्चऽहोता। शृणोतु। अतूर्तऽपन्थाः। असुरः। मयःऽभुः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**शन्तमा**) अतिशयेन सुखकरी (**वरुणम्**) उदानम् (**दीधिती**) प्रकाशयन्ती (**गीः**) वाक् (**मित्रम्**) प्राणम् (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम् (**अदितिम्**) आकाशं भूमिं वा (**नूनम्**) (**अश्याः**) प्राप्नुयाः (**पृषद्योनिः**) पृषतिर्वृष्टिर्योनिर्यस्याः सा (**पञ्चहोता**) पञ्च प्राणा होता आदातारो यस्याः सा (**शृणोतु**) (**अतूर्त्तपन्थाः**) अतूर्त्तोऽहिंसितः पन्था यस्य सः। (**असुरः**) प्रकाशाऽऽवरको मेघः (**मयोभुः**) सुखं भावुकः॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! या वरुणं दीधिती शन्तमा पृषद्योनिः पञ्चहोता गीर्वर्त्तते तां मित्रं भगमदितिं च नूनं प्राश्याः। योऽतूर्त्तपन्थाः मयोभुरसुरो मेघोऽस्ति तत्रस्था या वाक् तां भवाञ्छृणोतु॥ १॥

**भावार्थः**-सर्वेषु चराचरेषु पदार्थेष्वाकाशसंयोगाद् वाणी वर्त्तते तां विद्वांस एव ज्ञातुं कार्य्येषु व्यवहर्त्तुं च शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**वरुणम्**) उदान वायु को (**दीधिती**) प्रकाशित करती हुई (**शन्तमा**) अत्यन्त सुख करने वाली (**पृषद्योनिः**) वृष्टि है कारण जिसका ऐसी तथा (**पञ्चहोता**) पांच प्राण ग्रहण करने वाले जिसके ऐसी (**गीः**) वाणी वर्त्तमान है उसको (**मित्रम्**) प्राण (**भगम्**) ऐश्वर्य और (**अदितिम्**) आकाश वा भूमि को (**नूनम्**) निश्चय करके (**प्र, अश्याः**) प्राप्त होवे और जो (**अतूर्त्तपन्थाः**) नहीं हिंसित है मार्ग जिसका ऐसा (**मयोभुः**) सुखकारक (**असुरः**) प्रकाश का आवरण करने वाले मेघ है, उसमें स्थित जो वाणी उसको आप (**शृणोतु**) सुनिये॥ १॥

**भावार्थः**-सब चर और अचर पदार्थों में आकाश के संयोग से वाणी वर्त्तमान है, उसको विद्वान् ही जान और कार्य्यों में व्यवहार में ला सकते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात् सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम्।**
**ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्यहं मित्रे वरुणे यन्मयोभु॥२॥**

**प्रति। मे। स्तोमम्। अदितिः। जगृभ्यात्। सूनुम्। न। माता। हृद्यम्। सुऽशेवम्। ब्रह्म। प्रियम्। देवऽहितम्। यत्। अस्ति। अहम्। मित्रे। वरुणे। यत्। मयःऽभु॥२॥**

**पदार्थः-(प्रति) (मे)** मम **(स्तोमम्)** स्तुतिम् **(अदितिः)** अखण्डसुखप्रदा **(जगृभ्यात्)** भृशं गृह्णीयात् **(सूनुम्)** अपत्यम् **(न)** इव **(माता) (हृद्यम्)** हृदयस्य प्रियम् **(सुशेवम्)** सुसुखकरम् **(ब्रह्म)** सच्चिदानन्दलक्षणं चेतनम् **(प्रियम्)** कमनीयं प्रीतिकरम् **(देवहितम्)** देवेभ्यो विद्वद्भ्यो हितकारि **(यत्) (अस्ति) (अहम्) (मित्रे)** प्राणे **(वरुणे)** उदाने **(यत्) (मयोभुः)** सुखं भावुकम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अदितिर्माता हृद्यं सूनुं न यो मे स्तोमं प्रति जगृभ्याद्यत्सुशेवं प्रियं देवहितं ब्रह्मास्ति यच्च मित्रे वरुणे मयोभ्वस्ति तदहमिष्टं मन्ये तथा यूयमपि मन्यध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः प्रेमभावेन स्तुतस्तदाऽऽज्ञासेवनं कृतं चेत्तर्हि स यथा कृपायमाणा माता सद्यो जातं बालकमिव धार्मिकमुपासकमनुगृह्णाति, यो जगदीश्वरः सर्वत्र व्याप्तोऽपि प्राणादिषु प्राप्यते तं सर्वदा सुखप्रदं वयमुपास्महि॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अदितिः)** पूर्ण सुख की देने वाली **(माता)** माता **(हृद्यम्)** हृदय के प्रिय **(सूनुम्)** सन्तान के **(न)** सदृश जो **(मे)** मेरी **(स्तोमम्)** स्तुति को **(प्रति, जगृभ्यात्)** अत्यन्त ग्रहण करे और **(यत्)** जिस **(सुशेवम्)** उत्तम प्रकार सुख देने वाले **(प्रियम्)** सुन्दर और प्रीतिकारक तथा **(देवहितम्)** देव अर्थात् विद्वानों के लिये हितकारक **(ब्रह्म)** सत्, चित् और आनन्दस्वरूप चेतन **(अस्ति)** है और **(यत्)** जो **(मित्रे)** प्राणवायु और **(वरुणे)** उदान वायु में **(मयोभु)** सुखकारक है, उसको **(अहम्)** मैं इष्ट मानता हूं, वैसे आप लोग भी मानिये॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर प्रेमभाव से स्तुति किया गया और जो उसकी आज्ञा का सेवन किया हो तो वह जैसे कृपा करनेवाली माता शीघ्र उत्पन्न हुए बालक पर वैसे धार्मिक उपासक जन पर दया करता है, जो जगदीश्वर सर्वत्र व्याप्त हुआ भी प्राणादिकों में पाया जाता है, उस सब काल में सुख देने वाले परमात्मा की हम उपासना करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उदीरय कवितमं कवीनामुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन।**
**स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति॥३॥**

**उत्। ईरय। कविऽतमम्। कवीनाम्। उनत्त। एनम्। अभि। मध्वा। घृतेन। सः। नः। वसूनि। प्रऽयता। हितानि। चन्द्राणि। देवः। सविता। सुवाति॥३॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**ईरय**) प्रेरयत (**कवितमम्**) अतिशयेन मेधाविनम् (**कवीनाम्**) मेधाविनाम् (**उनत्त**) विद्यासुशिक्षाभ्यां सिञ्चत (**एनम्**) (**अभि**) आभिमुख्ये (**मध्वा**) मधुरेण (**घृतेन**) उदकेनेव (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**वसूनि**) द्रव्याणि (**प्रयता**) प्रयत्नसाध्यानि (**हितानि**) हितकराणि (**चन्द्राणि**) आनन्दप्रदानि सुवर्णादीनि (**देवः**) विद्वान् (**सविता**) विद्यैश्वर्य्यकारकः (**सुवाति**) सुवेत् प्रयच्छेत्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा कृषीवला मध्वा घृतेन क्षेत्रादीनि सिक्त्वा शस्यादीनि लभन्ते तथैवैनं कवीनां कवितममुदीरयाभ्युदयायोनत्त। हे विद्वांसो! यं कवीनां कवितममुदीरय स सविता देवो नो प्रयता चन्द्राणि हितानि वसूनि सुवाति॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसोऽध्यापका यो हि सर्वेभ्य उत्तमोऽखिलविद्योऽनूचानो विद्वान् भवेत्तं गृहाश्रमं मा कुर्वित्युपदिशत। येन संसारस्थमनुष्याणां महत्सुखं वर्धेत, कुतो यो हि पूर्णविद्यो भूत्वा गृहाश्रमं बहुव्यापारवत्त्वेन वीर्य्यादिक्षयादल्पायुर्भूत्वा सततं मनुष्यहितं कर्त्तुं न शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे खेत बोने वाले जन (**मध्वा**) मधुर (**घृतेन**) जल से क्षेत्र आदि सींच कर अन्नादिकों को प्राप्त होते हैं, वैसे ही (**एनम्**) इस (**कवीनाम्**) बुद्धिमानों के मध्य में (**कवितमम्**) अत्यन्त बुद्धिमान् को (**उत्, ईरय**) उत्तमता से प्रेरणा देओ तथा (**अभि, उनत्त**) अभ्युदय के अर्थ विद्या और उत्तम शिक्षा से सींचो और हे विद्वन्! जिस कवियों के मध्य में श्रेष्ठ कवि की प्रेरणा करो (**सः**) वह (**सविता**) विद्या और ऐश्वर्य्य का करने वाला (**देवः**) विद्वान् (**नः**) हम लोगों के लिये (**प्रयता**) प्रयत्न से सिद्ध होने योग्य (**चन्द्राणि**) आनन्द के देने वाले सुवर्ण आदि (**हितानि**) हितकारक (**वसूनि**) द्रव्यों को (**सुवाति**) देवे॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् अध्यापक पुरुषो! आप लोग जो निश्चय करके सब से उत्तम, सम्पूर्ण विद्याओं से युक्त, श्रेष्ठ विद्वान् होवे, उसको गृहाश्रम न कर, ऐसा उपदेश दीजिये। जिससे संसार में वर्त्तमान मनुष्यों का बड़ा सुख बढ़े, क्योंकि जो निश्चय करके पूर्ण विद्यायुक्त होकर गृहाश्रम को करे, वह बहुत व्यापारवान् होने से, वीर्य्य आदि के नाश होने से, थोड़ी अवस्थायुक्त होकर निरन्तर मनुष्यों के हित करने को नहीं समर्थ होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति।**
**सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम्॥४॥**

**सम्। इन्द्र। नः। मनसा। नेषि। गोभिः। सम्। सूरिऽभिः। हरिऽवः। सम्। स्वस्ति। सम्। ब्रह्मणा। देवऽहितम्। यत्। अस्ति। सम्। देवानाम्। सुऽमत्या। यज्ञियानाम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) उत्तमप्रकारेण (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्यसम्पन्न (**नः**) अस्मान् (**मनसा**) विज्ञानेन (**नेषि**) नयसि (**गोभिः**) इन्द्रियैर्वाग्भिर्वा (**सम्**) (**सूरिभिः**) विद्वद्भिस्सह (**हरिवः**) प्रशस्तमनुष्ययुक्त (**सम्**) (**स्वस्ति**) सुखम् (**सम्**) (**ब्रह्मणा**) वेदेन धनेनाऽन्नेन वा (**देवहितम्**) (**यत्**) (**अस्ति**) (**सम्**) (**देवानाम्**) विदुषाम् (**सुमत्या**) श्रेष्ठया प्रज्ञया (**यज्ञियानाम्**) यज्ञकर्तॄणाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यतस्त्वं यद् गोभिः सह सं स्वस्त्यस्ति तन्नो मनसा सन्नेषि। हे हरिवो! यत्सूरिभिः सह स्वस्त्यस्ति तन्नः सन्नेषि। यद् ब्रह्मणा सह देवहितं स्वस्त्यस्ति तन्न सन्नेषि। यद्यज्ञियानां देवानां सुमत्या सह देवहितं स्वस्त्यस्ति तन्नः सन्नेषि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सत्यवाचा विद्वत्सङ्गेन वेदविद्यया श्रेष्ठप्रज्ञया च सहिताः सुभूषिताः सन्तोऽभीष्टं सुखं लभध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त जिससे आप (**यत्**) जो (**गोभिः**) इन्द्रियों वा वाणियों के साथ (**सम्, स्वस्ति**) उत्तम सुख (**अस्ति**) है वह (**नः**) हम लोगों को (**मनसा**) विज्ञान के साथ (**सम्, नेषि**) अच्छे प्रकार प्राप्त करते हैं और हे (**हरिवः**) श्रेष्ठ मनुष्यों से युक्त! जो (**सूरिभिः**) विद्वानों के साथ सुख है, वह हम लोगों को (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं और जो (**ब्रह्मणा**) वेद, धन वा अन्न के साथ (**देवहितम्**) विद्वानों का हितकारक सुख है, वह हम लोगों को (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं और जो (**यज्ञियानाम्**) यज्ञ करने वाले (**देवानाम्**) विद्वानों की (**सुमत्या**) श्रेष्ठ बुद्धि के साथ विद्वानों का हितकारक सुख है, वह हम लोगों के लिये (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं, इससे सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सत्यवाणी, विद्वानों का सङ्ग, वेदविद्या और श्रेष्ठ बुद्धि के सहित उत्तम प्रकार शोभित हुए अभीष्ट सुख को प्राप्त हूजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम्।**
**ऋभुक्षा वाज उत वा पुरंधिरवन्तु नो अमृतासस्तुरासः॥५॥१७॥**

**देवः। भगः। सविता। रायः। अंशः। इन्द्रः। वृत्रस्य। सम्ऽजितः। धनानाम्। ऋभुक्षाः। वाजः। उत। वा। पुरम्ऽधिः। अवन्तु। नः। अमृतासः। तुरासः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**देवः**) दाता (**भगः**) ऐश्वर्य्यसम्पन्नः (**सविता**) प्रेरकः (**रायः**) धनानि (**अंशः**) विभागः (**इन्द्रः**) सूर्यः (**वृत्रस्य**) मेघस्य (**संजितः**) सम्यग्जेता (**धनानाम्**) (**ऋभुक्षाः**) महान् (**वाजः**) ज्ञानवान्

**(उत)** अपि **(वा)** **(पुरन्धिः)** पूर्वी बह्वी धीर्यस्य सः। **(अवन्तु)** **(नः)** अस्मान् **(अमृतासः)** स्वरूपेणाऽविनाशिनः **(तुरासः)** शीघ्रकारिणस्त्वरिताः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवो भगः सविता रायोंऽशो वृत्रस्य धनानां संजित इन्द्र ऋभुक्षा वाज उत वा पुरन्धिस्तुरासोऽमृतासो नोऽस्मानवन्तु तथैते युष्मानपि रक्षन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः स्वात्मवदन्येषां सुखदुःखहानिलाभप्रतिष्ठाऽप्रतिष्ठा मन्यन्ते त एव प्रशंसार्हा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(देवः)** दाता **(भगः)** ऐश्वर्य्य से सम्पन्न **(सविता)** प्रेरणा करने वाला **(रायः)** धनों का **(अंशः)** विभाग तथा **(वृत्रस्य)** मेघ और **(धनानाम्)** धनों का **(संजितः)** उत्तम प्रकार जीतने वाला **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(ऋभुक्षाः)** बड़ा **(वाजः)** ज्ञानवान् **(उत)** भी **(वा)** वा **(पुरन्धिः)** बहुत बुद्धिमान् और **(तुरासः)** शीघ्र कार्य्य करने वाले तथा **(अमृतासः)** अपने रूप में नहीं नाश होने वाले **(नः)** हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें, वैसे ये आप लोगों की भी रक्षा करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अपने सदृश अन्यों के भी सुख-दुःख, हानि-लाभ, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा को मानते हैं, वे ही प्रशंसा के योग्य होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोरजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि।**
**न ते पूर्वे मघवन्नापरासो न वीर्यं१ नूतनः कश्चनाप॥६॥**

**मरुत्वतः। अप्रतिऽइतस्य। जिष्णोः। अजूर्यतः। प्र। ब्रवाम। कृतानि। न। ते। पूर्वे। मघऽवन्। न। अपरासः। न। वीर्यम्। नूतनः। कः। चन। आप॥६॥**

**पदार्थः**-**(मरुत्वतः)** प्रशंसितविद्वद्युक्तस्य **(अप्रतीतस्य)** प्रतीत्यविषयस्य **(जिष्णोः)** जयशीलस्य **(अजूर्य्यतः)** अप्राप्तजीर्णावस्थस्य **(प्र)** **(ब्रवामा)** उपदिशेम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(कृतानि)** अनुष्ठितानि **(न)** **(ते)** तव **(पूर्वे)** प्राचीनाः **(मघवन्)** परमपूजितधनयुक्त **(न)** **(अपरासः)** पश्चाद्भूताः **(न)** **(वीर्य्यम्)** पराक्रमं बलम् **(नूतनः)** **(कः)** **(चन)** अपि **(आप)** व्याप्नोति॥६॥

**अन्वयः**-हे मघवन्नतुलविद्य विद्वन्नतिबल राजन् वा! मरुत्वतोऽप्रतीतस्याऽजूर्य्यतो जिष्णोस्ते तव यानि कृतानि वयं प्र ब्रवामा तानि न पूर्वे नापरासो व्याप्नुवन्ति तथा नूतनः कश्चन तव वीर्य्यं नाप॥६॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिस्तेषामेव प्रशंसितकर्म्मणां कृत्यान्यन्येभ्य उपदेश्यानि येषामप्रतिहतानि सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त और अत्यन्त विद्या वाले विद्वान् वा अतिबलवान् राजन्! **(मरुत्वतः)** प्रशंसित विद्वानों से युक्त **(अप्रतीतस्य)** प्रतीति के अविषय **(अजूर्य्यतः)** जिसको जीर्ण अवस्था नहीं प्राप्त हुई ऐसे **(जिष्णोः)** जीतने वाले **(ते)** आपके जिन **(कृतानि)** कृत्यों का हम लोग

**(प्र, ब्रवामा)** उपदेश देवें उनको **(न)** न **(पूर्वे)** प्राचीनजन **(न)** न **(अपरासः)** पीछे से हुए जन व्याप्त होते हैं और **(नूतनः)** नवीन **(कः, चन)** कोई भी, आपके **(वीर्य्यम्)** पराक्रम को **(न)** नहीं **(आप)** व्याप्त होता है॥६॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि उन्हीं प्रशंसित कर्म वालों के कृत्यों को अन्य जनों के लिये उपदेश देवें, जिनके कर्म अप्रतिहत अर्थात् नष्ट नहीं होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

फिर विद्वानों के उपदेशविषय को कहते हैं॥

**उप॑ स्तुहि प्र॒थ॒मं र॑त्न॒धेयं॒ बृह॒स्पतिं॑ सनि॒तारं॑ धना॑नाम्।**

**यः शंस॑ते स्तुव॒ते शंभ॑विष्ठः पुरू॒वसु॑रा॒गम॒ज्जोहु॑वानम्॥७॥**

**उप॑। स्तु॒हि॒। प्र॒थ॒मम्। र॒त्न॒ऽधेय॑म्। बृह॒स्पति॑म्। स॒नि॒तार॑म्। धना॑नाम्। यः। शंस॑ते। स्तु॒व॒ते। शम्ऽभ॑विष्ठः। पु॒रु॒ऽवसुः॑। आ॒ऽगम॑त्। जोहु॑वानम्॥७॥**

**पदार्थः**-(उप) **(स्तुहि)** **(प्रथमम्)** आदिमम् **(रत्नधेयम्)** रत्नानि धेयानि तेन तम् **(बृहस्पतिम्)** बृहतां पालकम् **(सनितारम्)** संविभाजकम् **(धनानाम्)** **(यः)** **(शंसते)** प्रशंसकाय **(स्तुवते)** प्रशंसां कुर्वते **(शम्भविष्ठः)** योऽतिशयेन शम्भावयति सः **(पुरूवसुः)** पुरूणि बहूनि वसूनि धनानि यस्य सः **(आगमत्)** आगच्छेत् **(जोहुवानम्)** आहूयमानमाह्वयितारं वा॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्यैश्वर्य्ययुक्त! यः पुरूवसुः शम्भविष्ठो जनः शंसते स्तुवते प्रथमं रत्नधेयं जोहुवानं बृहस्पतिं धनानां सनितारमागमत् तं त्वमुप स्तुहि॥७॥

**भावार्थः**-त एव प्रशंसनीया भवन्ति ये सर्वं सम्भज्य भुञ्जते॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! **(यः)** जो **(पुरूवसुः)** बहुत धनों से युक्त **(शम्भविष्ठः)** अत्यन्त सुखकारक जन **(शंसते)** प्रशंसा करने वाले और **(स्तुवते)** स्तुति करने वाले के लिये **(प्रथमम्)** पहिले **(रत्नधेयम्)** रत्न धरने योग्य जिससे उस **(जोहुवानम्)** पुकारे गये वा पुकारने वाले के लिये **(बृहस्पतिम्)** बड़ों के पालन करने और **(धनानाम्)** धनों के **(सनितारम्)** उत्तम प्रकार विभाग करने वाले को **(आगमत्)** प्राप्त हो, उसकी आप **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति करो॥७॥

**भावार्थः**-वे ही जन प्रशंसा करने योग्य होते हैं, जो सब पदार्थ बांट अर्थात् विभाग करके खाते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तवो॒तिभिः॒ सच॑माना॒ अरि॑ष्टा॒ बृह॑स्पते म॒घवा॑नः सु॒वीराः॑।**

**ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः॥८॥**

**तव। ऊतिऽभिः। सचमानाः। अरिष्टाः। बृहस्पते। मघऽवानः। सुऽवीराः। ये। अश्वऽदाः। उत। वा। सन्ति। गोऽदाः। ये। वस्त्रऽदाः। सुऽभगाः। तेषु। रायः॥८॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः सह (**सचमानाः**) सम्बध्नन्तः (**अरिष्टाः**) अहिंसिताः (**बृहस्पते**) विद्याद्युत्तमपदार्थानां पालक (**मघवानः**) परमपूजितधनाः (**सुवीराः**) शोभनाश्च ते वीराश्च ते (**ये**) (**अश्वदाः**) अश्वानग्न्यादींस्तुरङ्गान् वा ददति (**उत**) अपि (**वा**) (**सन्ति**) (**गोदाः**) ये गाः सुशिक्षिता वाचो धेनुं ददति (**ये**) (**वस्त्रदाः**) ये वस्त्राणि ददति (**सुभगाः**) सुष्ठु भग ऐश्वर्य्यं धनं वा येषान्ते (**तेषु**) (**रायः**) धनानि॥८॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते! ये तवोतिभिररिष्टाः सचमाना मघवानः सुवीरा अश्वदा उत वा ये गोदा वस्त्रदाः सुभगाः सन्ति तेषु रायो भवन्ति॥८॥

**भावार्थः**-ये धार्मिका राज्ञा रक्षिताः प्रशंसितधनयुक्ता दातारः सन्ति त एव यशस्विनो भूत्वा धनाढ्या जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे (**बृहस्पते**) बृहत् अर्थात् विद्या आदि उत्तम पदार्थों की रक्षा करनेवाले! (**ये**) जो (**तव**) आपकी (**ऊतिभिः**) रक्षा आदिकों के साथ (**अरिष्टाः**) नहीं हिंसा किये गये (**सचमानाः**) सम्बन्ध करते हुए (**मघवानः**) अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त (**सुवीराः**) उत्तम वीरजन (**अश्वदाः**) अग्नि आदि वा घोड़ों को देने वाले (**उत**) भी (**वा**) वा (**ये**) जो (**गोदाः**) सुशिक्षित वाणी वा गौवों के देने वाले (**वस्त्रदाः**) वस्त्रों के देने वाले और (**सुभगाः**) सुन्दर ऐश्वर्य्य वा धन से युक्त (**सन्ति**) हैं (**तेषु**) उनमें (**रायः**) धन होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो धार्मिक राजा से रक्षा किये गये प्रशंसित धनों से युक्त दाताजन हैं, वे ही यशस्वी होके धनाढ्य होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**विसर्माणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः।**
**अपव्रतान् प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विषः सूर्याद् यावयस्व॥९॥**

**विऽसर्माणम्। कृणुहि। वित्तम्। एषाम्। ये। भुञ्जते। अपृणन्तः। नः। उक्थैः। अपऽव्रतान्। प्रऽसवे। ववृधानान्। ब्रह्मऽद्विषः। सूर्यात्। यवयस्व॥९॥**

**पदार्थः**-(**विसर्माणम्**) यो विसृजति तम् (**कृणुहि**) (**वित्तम्**) धनं भोगं वा (**एषाम्**) (**ये**) (**भुञ्जते**) (**अपृणन्तः**) अपूर्णा अपालयन्तो वा (**नः**) अस्माकम् (**उक्थैः**) उत्तमैर्वाक्यैः (**अपव्रतान्**)

ब्रह्मचर्यसत्यभाषणादिव्रताचाररहितान् **(प्रसवे)** उत्पन्ने जगति **(वावृधानान्)** विवर्धमानान् **(ब्रह्मद्विषः)** ये ब्रह्म वेदं परमात्मानं वा द्विषन्ति **(सूर्यात्)** सवितुः **(यावयस्व)** अमिश्रितान् कुरु॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! येऽपृणन्तो भुञ्जते न उक्थैः प्रसवे वावृधानानपव्रतान् ब्रह्मद्विषो निवारयन्त्येषां विसर्म्माणं वित्तं कृणुहि सूर्यात्तान् यावयस्व॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽनाचारान् साचारानविदुषो विदुषः कृत्वा नास्तिकान् निरुध्याधर्माचरणात् पृथग्भूत्वा सततं सुखयन्ति ते माननीया भवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(ये)** जो **(अपृणन्तः)** नहीं पूर्ण वा नहीं पालन करते हुए **(भुञ्जते)** भोगते हैं और **(नः)** हमारे **(उक्थैः)** उत्तम वाक्यों से **(प्रसवे)** उत्पन्न हुए जगत् में **(वावृधानान्)** अत्यन्त बढ़ते हुए **(अपव्रतान्)** ब्रह्मचर्य्य, सत्यभाषणादि व्रताचाररहित **(ब्रह्मद्विषः)** वेद वा परमात्मा से द्वेष करने वालों को रोकते हैं **(एषाम्)** इन लोगों के **(विसर्म्माणम्)** उत्पन्न करने वाले **(वित्तम्)** धन वा भोग को **(कृणुहि)** करो और **(सूर्य्यात्)** सूर्य्य से उनको **(यावयस्व)** अमिश्रित करो॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग शुद्ध आचरणों से रहितों को शुद्ध आचरणों के सहित और अविद्वानों को विद्वान् करके नास्तिकों को रोक के अधर्म्म के आचरण से पृथक् होके निरन्तर सुखी करते, वे निरन्तर आदर करने योग्य होते हैं॥९॥

**पुनः शिक्षाविषयमाह॥**

फिर शिक्षाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यः ओहते रक्षसो देववीतावचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात।**

**यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात् तुच्छ्यान् कामान् करते सिष्विदानः॥१०॥१८॥**

**यः। ओहते। रक्षसः। देवऽवीतौ। अचक्रेभिः। तम्। मरुतः। नि। यात। यः। वः। शमीम्। शशमानस्य। निन्दात्। तुच्छ्यान्। कामान्। करते। सिस्विदानः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(ओहते)** वहति प्राप्नोति **(रक्षसः)** दुष्टाचारान् मनुष्यान् **(देववीतौ)** देवैर्विद्वद्भिर्व्याप्तायां क्रियायाम् **(अचक्रेभिः)** अविद्यमानचक्रैः **(तम्)** **(मरुतः)** मनुष्याः **(नि)** **(यात)** प्राप्नुत **(यः)** **(वः)** युष्माकम् **(शमीम्)** कर्म्म **(शशमानस्य)** प्रशंसितस्य **(निन्दात्)** निन्देत् **(तुच्छ्यान्)** तुच्छेषु क्षुद्रेषु भवान् **(कामान्)** **(करते)** कुर्य्यात् **(सिष्विदानः)** स्निह्यमानः॥१०॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो देववीतौ रक्षस ओहते यो वः शशमानस्य च शमीं निन्दात् सिष्विदानः सँस्तुच्छ्यान् कामान् करते तमचक्रेभिर्दण्डेन नि यात॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजादयो मनुष्या भवन्तो ये कुशिक्षया मनुष्यान् दूषयन्ति निन्दायां विषयासक्तौ च प्रवर्त्तयन्ति तान् भृशं दण्डयन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यः)** जो **(देववीतौ)** देव अर्थात् विद्वानों से व्याप्त क्रिया में **(रक्षसः)** दुष्ट आचरणयुक्त मनुष्यों को **(ओहते)** प्राप्त कराता है **(यः)** जो **(वः)** आप लोगों और **(शशमानस्य)** प्रशंसा किये गये के **(शमीम्)** कर्म्म की **(निन्दात्)** निन्दा करे और **(सिष्विदानः)** संलग्न हुआ **(तुच्छ्यान्)** क्षुद्रों में हुए **(कामान्)** मनोरथों को **(करते)** करे **(तम्)** उसको **(अचक्रेभिः)** चक्रों से रहितों के द्वारा दण्ड से **(नि, यात)** निरन्तर प्राप्त हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यो! जो बुरी शिक्षा से मनुष्यों को दूषित करते और निन्दा तथा विषयों की आसक्ति में प्रवृत्त कराते हैं, उनको निरन्तर दण्ड दीजिये॥१०॥

**अथ रुद्रविषयमाह॥**

अब रुद्रविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।**
**यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य॥११॥**

**तम्। ऊँ इति। स्तुहि। यः। सुऽइषुः। सुऽधन्वा। यः। विश्वस्य। क्षयति। भेषजस्य। यक्ष्व। महे। सौमनसाय। रुद्रम्। नमःऽभिः। देवम्। असुरम्। दुवस्य॥११॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(उ)** **(स्तुहि)** **(यः)** **(स्विषुः)** शोभना इषवो यस्य सः **(सुधन्वा)** शोभनं धनुर्यस्य सः **(यः)** **(विश्वस्य)** समग्रस्य जगतः **(क्षयति)** निवसति निवासयति वा **(भेषजस्य)** औषधस्य **(यक्ष्वा)** सङ्गमय प्राप्नुहि वा। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(महे)** महते **(सौमनसाय)** शोभनस्य मनसो भावाय **(रुद्रम्)** दुष्टाना रोदयितारम् **(नमोभिः)** अन्नादिभिः **(देवम्)** दिव्यगुणम् **(असुरम्)** मेघम् **(दुवस्य)** सेवस्व॥११॥

**अन्वयः**-हे राजन् विद्वन् वा! यः स्विषुः सुधन्वा शत्रूञ्जयति यो विश्वस्य मध्ये भेषजस्य प्रवृत्तिं क्षयति निवासयति तं महे सौमनसाय स्तुहि सत्कर्माणि यक्ष्वा तमु देवं रुद्रमसुरं च महे सौमनसाय नमोभिर्दुवस्य॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये शस्त्रास्त्रप्रक्षेपणाय युद्धविद्यायां कुशला वैद्यविद्यायां निपुणा दुष्टानां दण्डप्रदाश्च जनाः स्युस्तान् स्तुत्वा सत्कर्म्मसु नियोज्य सम्यक् परिचर्य सर्वाणि राजकृत्यान्यलङ्कुर्य्याः॥११॥

**पदार्थः**-हे राजन् अथवा विद्वान्! **(यः)** जो **(स्विषुः)** सुन्दर वाणों से युक्त **(सुधन्वा)** उत्तम धनुष् वाला शत्रुओं को जीतता है और **(यः)** जो **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण जगत् के मध्य में **(भेषजस्य)** ओषधि की प्रवृति का **(क्षयति)** निवास करता वा निवास कराता है **(तम्)** उसकी **(महे)** बड़े **(सौमसनाय)** श्रेष्ठ मन के भाव के लिये **(स्तुहि)** स्तुति कीजिये और श्रेष्ठ कर्म्मों को **(यक्ष्वा)** मिलाइये वा प्राप्त हूजिये उस **(उ)** ही **(देवम्)** श्रेष्ठ गुणों से युक्त **(रुद्रम्)** और दुष्टों के रुलाने वाले **(असुरम्)** मेघ को बड़े श्रेष्ठ मन के भाव के लिये **(नमोभिः)** अन्नादिकों से **(दुवस्य)** सेवन कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो शस्त्र और अस्त्रों के चलाने के लिये युद्धविद्या में चतुर, वैद्यविद्या में निपुण और दुष्टों के दण्ड देने वाले जन होवें, उनकी स्तुति कर अच्छे कर्म्मों में नियुक्त कर और अच्छे प्रकार सेवन कर समस्त राजकृत्यों को पूर्ण करो॥११॥

**अथ विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षाविषयमाह॥**

अब विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षविषय को कहते हैं॥

**दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः।**
**सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः॥१२॥**

**दमूनसः। अपसः। ये। सुऽहस्ताः। वृष्णः। पत्नीः। नद्यः। विभ्वऽतष्टाः। सरस्वती। बृहत्ऽदिवा। उत। राका। दशस्यन्तीः। वरिवस्यन्तु। शुभ्राः॥१२॥**

**पदार्थः**-(**दमूनसः**) दान्ताः (**अपसः**) सुकर्म्माणः (**ये**) (**सुहस्ताः**) शोभनेषु कर्म्मसु येषान्ते (**वृष्णः**) वीर्यवन्तः (**पत्नीः**) भार्याः (**नद्यः**) नद्य इव (**विभ्वतष्टाः**) विभुनेश्वरेण निर्मिताः (**सरस्वती**) विज्ञानवती वाक् (**बृहद्दिवा**) बृहती द्यौर्विद्याप्रकाशो यस्यां सा (**उत**) (**राका**) राति ददाति सुखं या सा। **राकेति पदनामसु पठितम्।** (निघं०५.५) (**दशस्यन्तीः**) इष्टान् कामान् कामान् ददति (**वरिवस्यन्तु**) सेवन्ताम् (**शुभ्राः**) शुद्धस्वरूपाचाराः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽपसो दमूनसः सुहस्ता वृष्णो विभ्वतष्टा नद्य इव उत बृहद्दिवा राका सरस्वतीव दशस्यन्तीः शुभ्राः पत्नीर्वरिवस्यन्तु तेऽतुलं सुखमाप्नुवन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। कन्या वराश्च यदा ब्रह्मचर्य्येण विद्याः पूर्णा युवावस्था च परस्परस्य परीक्षा च भवेत्तदा स्वयंवरेण विवाहेन पतिपत्न्यौ भूत्वा सौभाग्यवन्तो भवन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**अपसः**) उत्तम कर्म्म करने (**दमूनसः**) देने (**सुहस्ताः**) और उत्तम कर्म्मों में हाथ लगाने वाले (**वृष्णः**) पराक्रम से युक्त और (**विभ्वतष्टाः**) व्यापक ईश्वर से रचे गये जन (**नद्यः**) नदियों के सदृश (**उत**) और (**बृहद्दिवा**) बड़ा विद्या का प्रकाश जिसमें ऐसी (**राका**) सुख को देनेवाली (**सरस्वती**) विज्ञानयुक्त वाणी के सदृश (**दशस्यन्तीः**) अभीष्ट मनोरथ-मनोरथ को देती हुई और (**शुभ्राः**) सुन्दर स्वरूप तथा उत्तम आचरण करने वाली (**पत्नीः**) विवाहित स्त्रियों का (**वरिवस्यन्तु**) सेवन करें, वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। कन्या और वर जब ब्रह्मचर्य्य से विद्यायें पूर्ण, युवावस्था और परस्पर की परीक्षा होवे, तब स्वयंवर विवाह से पति और पत्नी होकर सौभाग्यवान् होते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र सू मुहे सुंशरुणायं मेधां गिरं भरे नव्यंसीं जायंमानाम्।**

**य आंहुना दुंहितुर्वक्षणांसु रूपा मिंनानो अकृणोदिदं नंः॥१३॥**

**प्र। सु। मुहे। सुऽशुरुणायं। मेधाम्। गिरंम्। भरे। नव्यंसीम्। जायंमानाम्। यः। आहुना। दुहितुः। वक्षणांसु। रूपा। मिनानः। अकृणोत्। इदम्। नः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सू**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**महे**) महते (**सुशरणाय**) शोभनायाऽऽश्रयाय (**मेधाम्**) प्रज्ञाम् (**गिरम्**) वाचम् (**भरे**) धरामि (**नव्यसीम्**) अतिशयेन नूतनाम् (**जायमानाम्**) प्रसिद्धाम् (**यः**) (**आहनाः**) या आहन्यन्ते ताः (**दुहितुः**) कन्यायाः (**वक्षणासु**) वहमानासु नदीषु (**रूपा**) सुन्दराणि रूपाणि (**मिनानः**) मानं कुर्वाणः (**अकृणोत्**) कुर्यात् (**इदम्**) वर्त्तमानं सुखम् (**नः**) अस्मान्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो मनुष्यो वक्षणासु दुहितू रूपा आहना मिनानो न इदं प्राप्तानकृणोत्। तेनाहं महे सुशरणाय नव्यसीं जायमानां मेधां गिरं च प्र सू भरे॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सरूपां दुहितरं दृष्ट्वैतस्याः सदृशं पतिं कारयित्वेव प्रज्ञां शिक्षितां वाचं वर्द्धयित्वा गृहाश्रमजन्यं सुखं सर्वान् मनुष्यान् यूयं प्रापयत॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो मनुष्य (**वक्षणासु**) बहती हुई नदियों के निमित्त (**दुहितुः**) कन्या के (**रूपा**) सुन्दर रूपों (**आहनाः**) और जो सब और से ताड़ित होती उनका (**मिनानः**) मान करता हुआ (**नः**) हम लोगों को (**इदम्**) इस वर्त्तमान सुख में पाये हुए (**अकृणोत्**) करे उसके साथ मैं (**महे**) बड़े (**सुशरणाय**) उत्तम आश्रय के लिये (**नव्यसीम्**) अत्यन्त नवीन (**जायमानाम्**) प्रसिद्ध (**मेधाम्**) उत्तम बुद्धि और (**गिरम्**) वाणी को (**प्र, सू, भरे**) उत्तम प्रकार धारण करता हूँ॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! समान रूप वाली कन्या को देखके ही उसका सदृश पति कराने के समान बुद्धि और शिक्षित वाणी को बढ़ाय के गृहाश्रम से उत्पन्न हुए सुख को सब मनुष्यों के लिये आप लोग प्राप्त कराओ॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र सुंष्टुतिः स्तुनयंन्तं रुवन्तंमिळस्पतिं जरितर्नूनमंश्याः।**

**यो अब्दिमाँ उंदनिमाँ इयर्ति प्र विद्युता रोदंसी उक्षमांणः॥१४॥**

**प्र। सुऽस्तुतिः। स्तुनयंन्तम्। रुवन्तंम्। इळः। पतिंम्। जुरितः। नूनम्। अश्याः। यः। अब्दिऽमान्। उदनिऽमान्। इयर्ति। प्र। विऽद्युता। रोदंसी इति। उक्षमांणः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) प्रकर्षेण (**सुष्टुतिः**) शोभना प्रशंसा (**स्तनयन्तम्**) गर्जनां कुर्वन्तम् (**रुवन्तम्**) शब्दयन्तम् (**इळः**) पृथिव्याः (**पतिम्**) पालकम् (**जरितः**) स्तावकः (**नूनम्**) निश्चयेन (**अश्याः**) प्राप्नुयाः

**(यः)** **(अब्दिमान्)** जलदवान् **(उदनिमान्)** बहूदकः **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(प्र)** **(विद्युता)** तडिता सह **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(उक्षमाणः)** सिञ्चमानः॥१४॥

**अन्वयः**-हे जरितस्त्वं योऽब्दिमानुदनिमान् रोदसी उक्षमाणो विद्युता सह मेघ इयर्त्ति यस्सुष्टुतिरस्ति तं स्तनयन्तं नूनं प्राश्यास्त्वं रुवन्तमिळस्पतिं प्र ज्ञापयेः॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो मेघो भूमिस्थानां जीवानां पालकस्तथा विद्युता सह वर्षयञ्छब्दयन् भूमिं प्राप्नोति तं विदित्वाऽन्यान् विज्ञापयत॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(जरितः)** स्तुति करने वाले! आप **(यः)** जो **(अब्दिमान्)** मेघों से युक्त और **(उदनिमान्)** बहुत जल वाला **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(उक्षमाणः)** सींचता हुआ **(विद्युता)** बिजली के साथ मेघ **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है और जो **(सुष्टुतिः)** उत्तम प्रशंसायुक्त है उस **(स्तनयन्तम्)** गर्जना करते हुए को **(नूनम्)** निश्चय से **(प्र, अश्याः)** प्राप्त होओ और आप **(रुवन्तम्)** शब्द करते हुए **(इळः)** पृथिवी के **(पतिम्)** पालन करने वाले की **(प्र)** उत्तम प्रकार जनाइये॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेघ भूमि में वर्त्तमान जीवों का पालन करनेवाला, बिजुली के साथ वृष्टि करता और शब्द करता हुआ भूमि को प्राप्त होता है, उसको जान के अन्यों को जनाइये॥१४॥

**अथ रुद्रविषयकं विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षाविषयमाह॥**

अब रुद्रविषयक विद्वत्कर्त्तव्य शिक्षाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूँरुदश्याः।**

**कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः॥ १५॥**

**एषः। स्तोमः। मारुतम्। शर्धः। अच्छ। रुद्रस्य। सूनून्। युवन्यून्। उत्। अश्याः। कामः। राये। हवते। मा। स्वस्ति। उप। स्तुहि। पृषत्ऽअश्वान्। अयासः॥ १५॥**

**पदार्थः**-**(एषः)** **(स्तोमः)** श्लाघाविषयः **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(शर्धः)** बलम् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(रुद्रस्य)** प्राणादिरूपस्य वायोः **(सूनून्)** प्रसवगुणान् **(युवन्यून्)** आत्मनो मिश्रितानमिश्रितान् पदार्थानिच्छून् **(उत्)** **(अश्याः)** प्राप्नुयाः **(कामः)** इच्छा **(राये)** धनाय **(हवते)** गृह्णाति **(मा)** माम् **(स्वस्ति)** सुखम् **(उप)** **(स्तुहि)** **(पृषदश्वान्)** सिञ्चकानाशुगामिनः पदार्थान् वा **(अयासः)** गच्छन्तः॥१५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यः कामो मा राये स्वस्ति हवते तमुपस्तुहि येऽयासः पृषदश्वान् प्राप्नुवन्ति तान् युवन्यूँस्त्वमुदश्याः। य एषः स्तोमो मारुतं शर्धो हवते तं रुद्रस्य सूनूनच्छोदश्याः॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं वह्निमेघविद्यां विज्ञायालङ्कामा भवत॥१५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(कामः)** इच्छा **(मा)** मुझ को **(राये)** धन के लिये **(स्वस्ति)** सुख को **(हवते)** ग्रहण करती है उसकी **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति प्रशंसा कीजिये और जो **(अयासः)** चलते

हुए **(पृषदश्वान्)** सींचने वाले तथा शीघ्र चले वाले पदार्थों को प्राप्त होते हैं उन **(युवन्यून्)** अपने मिले और नहीं मिले हुए पदार्थों की इच्छा करते हुओं को आप **(उत्, अश्याः)** अत्यन्त प्राप्त हूजिये और जो **(एषः)** यह **(स्तोमः)** प्रशंसा का विषय **(मारुतम्)** मनुष्यों के इस **(शर्धः)** बल को ग्रहण करता है उस **(रुद्रस्य)** प्राण आदि है रूप जिसका ऐसे वायु के **(सूनून्)** उत्पत्ति के गुणों को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग वह्नि और मेघविद्या को जानकर पूर्ण मनोरथ वाले हूजिये॥१५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रैष स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतींरोषधी राये अश्याः।**

**देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्॥१६॥**

**प्र। एषः। स्तोमः। पृथिवीम्। अन्तरिक्षम्। वनस्पतीन्। ओषधीः। राये। अश्याः। देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्॥१६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(एषः)** **(स्तोमः)** श्लाघनीयो मेघो वह्निर्वा **(पृथिवीम्)** भूमिम् **(अन्तरिक्षम्)** आकाशम् **(वनस्पतीन्)** वटाऽश्वत्थादीन् **(ओषधीः)** यवाद्याः **(राये)** धनाय **(अश्याः)** प्राप्नुयाः **(देवोदेवः)** विद्वान्विद्वान् **(सुहवः)** सुष्ठुग्रहणदानः **(भूतु)** भवतु **(मह्यम्)** **(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(माता)** जननीव पालिका **(पृथिवी)** **(दुर्मतौ)** दुष्टायां बुद्धौ **(धात्)** दध्यात्॥१६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! देवोदेवस्सुहवस्त्वं य एषः स्तोमो राये पृथिवीमन्तरिक्षमोषधीर्वनस्पतींश्च प्राप्नोति तं त्वं प्राश्याः स मह्यं सुखकरो भूतु यत् इयं पृथिवी मातेव नो दुर्म्मतौ मा धात्॥१६॥

**भावार्थः**-सर्वे स्त्रीपुरुषा विद्वांसो भूत्वा विद्युन्मेघादिविद्यां गृह्णीयुर्यत इयं युष्मान् मातृवत् पालयेद्यथा माता सुशिक्षया स्वसन्तानानुत्तमान् करोति तथैव मेघवृष्टिविद्यया युक्ता भूमिरुत्तमानि शस्यादीनि जनयति॥१६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(देवोदेवः)** विद्वान् विद्वान् **(सुहवः)** उत्तम प्रकार ग्रहण करने वाले और दाता आप और जो **(एषः)** यह **(स्तोमः)** प्रशंसा करने योग्य मेघ वा वह्नि **(राये)** धन के लिये **(पृथिवीम्)** भूमि **(अन्तरिक्षम्)** आकाश और **(ओषधीः)** यव आदि औषधियां तथा **(वनस्पतीन्)** वट और अश्वत्थ आदि वनस्पतियों को प्राप्त होता है उसको आप **(प्र, अश्याः)** अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये वह **(मह्यम्)** मेरे लिये सुखकारक **(भूतु)** होवे जिससे यह **(पृथिवी)** पृथिवी **(माता)** माता के सदृश पालन करने वाली **(नः)** हम लोगों को **(दुर्मतौ)** दुष्टबुद्धि में **(मा)** नहीं **(धात्)** धारण करे॥१६॥

**भावार्थः**-सब स्त्री और पुरुष विद्वान् होकर बिजुली और मेघ आदि की विद्या को ग्रहण करें जिससे यह विद्या आप लोगों की माता के सदृश पालना करे और जैसे माता उत्तम शिक्षा से अपने

सन्तानों को उत्तम करती है, वैसे ही मेघवृष्टिविद्या से युक्त भूमि उत्तम अन्न आदिकों को उत्पन्न करती है॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उरौ देवा अनिबाधे स्याम॥१७॥**

**उरौ। देवाः। अनिऽबाधे। स्याम॥१७॥**

**पदार्थः**-(**उरौ**) बहुसुखकरे (**देवाः**) विद्वांसः (**अनिबाधे**) निर्विघ्ने सति (**स्याम**) भवेम॥१७॥

**अन्वयः**-हे देवा! यथा वयमनिबाध उरौ विद्वांसः स्याम तथा यूयं विधत्त॥१७॥

**भावार्थः**-अध्यापकैर्विद्वद्भिः सर्वान् विद्याप्रतिबन्धकान् निवार्य सर्वे विद्वांसः सम्पादनीयाः॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**देवाः**) विद्वान् जनो! जैसे हम लोग (**अनिबाधे**) विघ्नरहित होने पर (**उरौ**) बहुत सुख करने वाले कार्य्य में विद्वान् (**स्याम**) होवें, वैसे आप लोग करिये॥१७॥

**भावार्थः**-अध्यापक विद्वान् जनों को चाहिये कि सम्पूर्ण विद्या के प्रतिबन्धकों का निवारण करके सम्पूर्ण जनों को विद्वान् करें॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**

**आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि॥१८॥१९॥**

**सम्। अश्विनोः। अवसा। नूतनेन। मयःऽभुवा। सुऽप्रनीती। गमेम। आ। नः। रयिम्। वहतम्। आ। उत। वीरान्। आ। विश्वानि। अमृता। सौभगानि॥१८॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**अश्विनोः**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अवसा**) रक्षणेन (**नूतनेन**) (**मयोभुवा**) सुखं भावुकौ (**सुप्रणीती**) सुष्ठु प्रगता नीतिर्याभ्यां तौ (**गमेम**) प्राप्नुयाम (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**रयिम्**) श्रियम् (**वहतम्**) प्रापयतम् (**आ**) (**उत**) अपि (**वीरान्**) श्रेष्ठान् शूरान् शौर्यादिगुणोपेतान् (**आ**) (**विश्वानि**) समग्राणि (**अमृता**) नित्यानि (**सौभगानि**) शोभनानामैश्वर्याणां भावरूपाणि॥१८॥

**अन्वयः**-हे मयोभुवा सुप्रणीती अध्यापकोपदेशकौ! यौ युवां नो रयिमा वहतमुत वीराना वहतमपि च विश्वान्यमृता सौभगान्या वहतं तयोरश्विनोर्नूतनेनावसा वयं विश्वान्यमृता सौभगानि सङ्गमेम॥१८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वद्रक्षिता बोधिताः सन्तो यूयं श्रियमुत्तममनुष्यसहायेन सर्वाण्यैश्वर्य्याणि प्राप्नुतेति॥१८॥

अत्र विश्वेदेवरुद्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मयोभुवा)** सुख के करनेवालो **(सुप्रणीती)** उत्तम प्रकार वर्त्ती गई नीति जिनसे ऐसे अध्यापक और उपदेशक जनो! जो आप दोनों **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** लक्ष्मी को **(आ, वहतम्)** प्राप्त कराइये **(उत)** भी **(वीरान्)** श्रेष्ठ शूरता आदि गुणों से युक्त शूरवीर जनों को **(आ)** प्राप्त कराइये और भी **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(अमृता)** नित्य **(सौभगानि)** सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावरूप को **(आ)** प्राप्त कराइये उन **(अश्विनोः)** अध्यापक और उपदेशकों के **(नूतनेन)** नवीन **(अवसा)** रक्षण से हम लोग सम्पूर्ण नित्य सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावरूपों को **(सम्, गमेम)** उत्तम प्रकार प्राप्त होवें॥१८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वानों से रक्षित और बोध को प्राप्त हुए आप लोग लक्ष्मी और मनुष्यों के सहाय से सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों को प्राप्त हूजिये॥१८॥

इस सूक्त में विश्वेदेव, रुद्र और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बयालीसवां सूक्त और उन्नीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ सप्तदशर्चस्य त्रिचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः॥ विश्वेदेवा देवताः। १, ३, ६, ८, ९, १७ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४, ५, १०, ११, १२, १५ त्रिष्टुप्। ७, १३, विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १४ भुरिक्पङ्क्तिः। १६ याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब सत्रह ऋचा वाले तेंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा।**

**महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति॥१॥**

**आ। धेनवः। पयसा। तूर्णिऽअर्थाः। अमर्धन्तीः। उप। नः। यन्तु। मध्वा। महः। राये। बृहतीः। सप्त। विप्रः। मयःऽभुवः। जरिता। जोहवीति॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**धेनवः**) गाव इव वाचः (**पयसा**) दुग्धदानेन (**तूर्ण्यर्थाः**) तूर्णयः सद्योगामिनोऽर्था यासु ताः (**अमर्धन्तीः**) अहिंसन्त्यः (**उप**) (**नः**) अस्मान् (**यन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**मध्वा**) मधुरादिगुणेन सह (**महः**) महते (**राये**) धनाय (**बृहतीः**) महत्यः (**सप्त**) सप्तविधाः (**विप्रः**) मेधावी (**मयोभुवः**) सुखं भावुकाः (**जरिता**) सकलविद्याः स्तावकः (**जोहवीति**) भृशमुपदिशति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जरिता विप्रो महो राये सप्त बृहतीर्गिरो जोहवीति तत्प्रेरिता मध्वा पयसा सहाऽमर्धन्तीस्तूर्ण्यर्था मयोभुवो धेनवो न उपायन्तु॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तविद्वत्सङ्गेन सर्वशास्त्रविषया वाचो गृहीत्वैताः कृपयाऽन्येभ्योऽप्युपदिशेयुस्तेऽऽप्याप्ता जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जरिता**) सम्पूर्ण विद्याओं की स्तुति करने वाला (**विप्रः**) बुद्धिमान् जन (**महः**) बड़े (**राये**) धन के लिये (**सप्त**) सात प्रकार की (**बृहतीः**) बड़ी वाणियों का (**जोहवीति**) वार-वार उपदेश करता है और उससे प्रेरणा किये गये (**मध्वा**) मधुर आदि गुणों के साथ और (**पयसा**) दुग्धदान के साथ (**अमर्धन्तीः**) नहीं हिंसा करती हुई और (**तूर्ण्यर्थाः**) शीघ्र चलने वाले अर्थ जिनमें ऐसी (**मयोभुवः**) सुख की भावना कराने वाली (**धेनवः**) गौओं के सदृश वाणियां (**नः**) हम लोगों को (**उप, आ, यन्तु**) समीप में उत्तम प्रकार प्राप्त होवें॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों के सङ्ग से शास्त्रों के विषय से युक्त वाणियों को ग्रहण करके उनकी कृपा से अन्यों के लिये उपदेश देवें, वे भी श्रेष्ठ होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।**

**पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्॥२॥**

**आ। सुऽस्तुती। नमसा। वर्तयध्यै। द्यावा। वाजाय। पृथिवी इति। अमृध्रे इति। पिता। माता। मधुऽवचाः। सुऽहस्ता। भरेऽभरे। नः। यशसौ। अविष्टाम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**सुष्टुती**) श्रेष्ठया प्रशंसया (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**वर्त्तयध्यै**) वर्त्तयितुम् (**द्यावा**) द्यौः (**वाजाय**) विज्ञानाय (**पृथिवी**) भूमी (**अमृध्रे**) अहिंसिते (**पिता**) जनक इव (**माता**) जननीव (**मधुवचाः**) मधुवचो यस्य यस्या वा स सा (**सुहस्ता**) शोभना हस्ता वर्त्तन्ते ययोस्ते (**भरेभरे**) स- ामे स- ामे (**नः**) अस्मान् (**यशसौ**) कीर्तिधनयुक्ते (**अविष्टाम्**) प्राप्नुयाताम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्वाजाय सुष्टुती नमसाऽमृध्रे सुहस्ता यशसौ द्यावा पृथिवी मधुवचाः पिता माता चेव भरेभरे नोऽस्मानविष्टां ते आ वर्त्तयध्या अविष्टाम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा मातापितरौ स्वसन्तानान् सुशिक्ष्य वर्धयित्वा विजयकारिणः सम्पादयतस्तथैव प्राप्ता सूर्य्यपृथिवीविद्या सर्वत्र विजयं प्रापयति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों से (**वाजाय**) विज्ञान के लिये (**सुष्टुती**) श्रेष्ठ प्रशंसा से (**नमसा**) सत्कार वा अन्न आदि आदि से (**अमृध्रे**) नहीं हिंसा किये गये में (**सुहस्ता**) सुन्दर हस्त जिनके वे (**यशसौ**) यश और धन से युक्त (**द्यावा**) अन्तरिक्ष और (**पृथिवी**) पृथिवी (**मधुवचाः**) मधुर वचन जिसका ऐसा वा (**पिता**) पिता और (**माता**) माता के सदृश (**भरेभरे**) संग्राम संग्राम में (**नः**) हम लोगों को (**अविष्टाम्**) प्राप्त होवें, वे (**आ, वर्त्तयध्यै**) उत्तम प्रकार वर्त्ताव करने को प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे माता और पिता अपने सन्तानों को उत्तम प्रकार शिक्षा देकर और वृद्धि करके विजयकारी करते हैं, वैसे ही प्राप्त हुई सूर्य्य और पृथिवी की विद्या सर्वत्र विजय को प्राप्त होती हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।**

**होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय॥३॥**

**अध्वर्यवः। चकृऽवांसः। मधूनि। प्र। वायवे। भरत। चारु। शुक्रम्। होताऽइव। नः। प्रथमः। पाहि। अस्य। देव। मध्वः। ररिम। ते। मदाय॥३॥**

**पदार्थः**-(**अध्वर्य्यवः**) आत्मनोऽध्वरमहिंसामिच्छवः (**चकृवांसः**) कुर्वन्तः (**मधूनि**) विज्ञानानि (**प्र**) (**वायवे**) वायुविद्यायै (**भरत**) (**चारु**) सुन्दरम् (**शुक्रम्**) उदकम्। **शुक्रमित्युदकनामसु पठितम्।**

(निघं०१।१२) **(होतेव)** यथा दाता **(नः)** अस्मान् **(प्रथमः)** **(पाहि)** **(अस्य)** **(देव)** विद्वन् **(मध्वः)** मधुरस्य **(ररिमा)** रमेमहि। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(ते)** तव **(मदाय)** आनन्दाय॥३॥

**अन्वयः**-हे देव! प्रथमस्त्वं होतेवाऽस्य मध्वो मध्ये नः पाहि यतो वयं ते मदाय ररिम। हे चक्रिवांसोऽध्वर्यवो! यूयं वायवे मधूनि चारु शुक्रं च प्र भरत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा होता होमेन सर्वहितं साध्नोति तथैव सर्वहिताय वायुजलविद्यां प्रसारयत येन सर्वे वयमानन्दिता वर्त्तेमहि॥३॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्वन् **(प्रथमः)** पहिले आप **(होतेव)** दाता जन के सदृश **(अस्य)** इस **(मध्वः)** मधुर के मध्य में **(नः)** हम लोगों की **(पाहि)** रक्षा करिये, जिससे हम लोग **(ते)** आपके **(मदाय)** आनन्द के लिये **(ररिमा)** क्रीड़ा करें। हे **(चक्रिवांसः)** कार्य्य करते हुए और **(अध्वर्यवः)** अपनी अहिंसा की इच्छा करते हुए आप लोग **(वायवे)** वायुविद्या के लिये **(मधूनि)** विज्ञानों और **(चारु)** सुन्दर **(शुक्रम्)** जल को **(प्र, भरत)** उत्तम प्रकार धारण कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे हवन करने वाला होम से सब के हित को सिद्ध करता है, वैसे ही सब के हित के लिये वायु और जल की विद्या को विस्तारिये, जिससे सब हम लोग आनन्दित हुए वर्त्ताव करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारा सुहस्ता।**

**मध्वो रसं सुगभस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशुः॥४॥**

**दश। क्षिपः। युञ्जते। बाहू इति। अद्रिम्। सोमस्य। या। शमितारा। सुऽहस्ता। मध्वः। रसम्। सुऽगभस्तिः। गिरिऽस्थाम्। चनिश्चदत्। दुदुहे। शुक्रम्। अंशुः॥४॥**

**पदार्थः**-**(दश)** दशसंख्याकाः **(क्षिपः)** क्षिपन्ति प्रेरयन्ति याभिस्ता अङ्गुलयः। **क्षिप इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं०२.५) **(युञ्जते)** **(बाहू)** भुजौ **(अद्रिम्)** मेघम् **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्यस्य **(या)** यौ **(शमितारा)** शान्त्या यज्ञकर्मकर्त्तारौ **(सुहस्ता)** शोभनौ हस्तौ ययोस्तौ **(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(रसम्)** **(सुगभस्तिः)** शोभना गभस्तयः किरणा यस्य सूर्यस्य सः। **(गिरिष्ठाम्)** गिरौ मेघे स्थितम्। **गिरिरिति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(चनिश्चदत्)** आह्लादयति **(दुदुहे)** दोग्धि **(शुक्रम्)** उदकम् **(अंशुः)** किरणः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुगभस्तिरंशुश्चनिश्चदत् सन् मध्वः सोमस्य गिरिष्ठामद्रिं रसं शुक्रं दुदुहे तथा या दश क्षिपो या शमितारा सुहस्ता बाहू युञ्जते ताभिर्धर्म्याणि कृत्यानि कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मनुष्यादयः प्राणिनोऽङ्गुलिभिः पदार्थान् गृह्णन्ति त्यजन्ति तथैव सूर्य्यः किरणैर्भूमेस्तलाज्जलं गृहीत्वा प्रक्षिपतीति वेद्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सुगभस्तिः)** सुन्दर किरणें जिसकी वह सूर्य्य और **(अंशुः)** किरण **(चनिश्चदत्)** प्रसन्न करता है और **(मध्वः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्य के सम्बन्धी **(गिरिष्ठाम्)** मेघ में वर्त्तमान **(अद्रिम्)** मेघ को **(रसम्)** रस को और **(शुक्रम्)** जल को **(दुदुहे)** दुहता है, वैसे जो **(दश)** दश संख्यावाली **(क्षिपः)** प्रेरणा करते हैं जिनसे वे अङ्गुलियां और **(या)** जो **(शमितारा)** शान्ति से यज्ञकर्म्म के करने वाले और **(सुहस्ता)** अच्छे हाथों वाले **(बाहू)** भुजाओं को **(युञ्जते)** युक्त करते हैं, उनसे धर्मसम्बन्धी कार्य्यों को करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मनुष्य आदि प्राणी अङ्गुलियों से पदार्थों को ग्रहण करते और त्यागते हैं, वैसे ही सूर्य्य किरणों से भूमि के नीचे से जल को ग्रहण करके फेंकता अर्थात् वृष्टि करता है, ऐसा जानो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**असावि ते जुजुषाणाय सोमः क्रत्वे दक्षाय बृहते मदाय।**

**हरी रथे सुधुरा योगे अर्वागिन्द्र प्रिया कृणुहि हूयमानः॥५॥२०॥**

**असावि। ते। जुजुषाणाय। सोमः। क्रत्वे। दक्षाय। बृहते। मदाय। हरी इति। रथे। सुऽधुरा। योगे। अर्वाक्। इन्द्र। प्रिया। कृणुहि। हूयमानः॥५॥**

**पदार्थः**-**(असावि)** सूयते **(ते)** तुभ्यम् **(जुजुषाणाय)** प्रीत्या सेवमानाय **(सोमः)** महौषधिरस ऐश्वर्य्यं वा **(क्रत्वे)** प्रज्ञानाय **(दक्षाय)** चातुर्य्याय बलाय **(बृहते)** महते **(मदाय)** आनन्दाय **(हरी)** हरणशीलावश्वौ **(रथे)** याने **(सुधुरा)** शोभना धूर्ययोस्तौ **(योगे)** संयोजने **(अर्वाक्)** योऽर्वागधोगच्छतः **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त **(प्रिया)** सेवनीयानि कमनीयानि वस्तूनि सुखानि वा **(कृणुहि)** **(हूयमानः)** स्पर्धमानः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र विद्वन्! यस्ते बृहते जुजुषाणाय क्रत्वे दक्षाय मदाय सोमोऽसावि तेषां योगे सत्यर्वाक् सुधुरा हरी रथे युक्त्वा हूयमानः सन् प्रिया कृणुहि॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन प्रज्ञाबलाऽऽनन्दपुरुषार्था वर्धेरन्नग्नितुरङ्गादिचालनविद्या प्राप्नुयात् तत्कर्म्म सदाऽनुष्ठेयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त विद्वान्! जिनसे **(ते)** आपके **(बृहते)** बड़े **(जुजुषाणाय)** प्रीति से सेवन किये गये **(क्रत्वे)** प्रज्ञान तथा **(दक्षाय)** चातुर्य्य बल और **(मदाय)** आनन्द के लिये **(सोमः)** बड़ी ओषधियों का रस वा ऐश्वर्य्य **(असावि)** उत्पन्न किया जाये और उनके **(योगे)**

संयोग होने पर **(अर्वाक्)** नीचे वाले **(सुधुरा)** सुन्दर धुरा जिनकी ऐसे **(हरी)** हरणशील घोड़ों को **(रथे)** वाहन में जोड़ के **(हूयमानः)** स्पर्द्धा किये गये आप **(प्रिया)** सेवन करने योग्य सुन्दर वस्तुओं वा सुखों को **(कृणुहि)** सिद्ध करिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिससे बुद्धि, बल, आनन्द और पुरुषार्थ बढ़े और अग्नि और घोड़े आदि के चलाने की विद्या प्राप्त होवे, वह कर्म्म सदा करना चाहिये॥५॥

**पुनस्तमेव विद्वद्विषयमाह॥**

फिर उसी विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**आ नो महीमरमतिं सजोषा ग्नां देवीं नमसा रातहव्याम्।**
**मधोर्मदाय बृहतीमृतज्ञामाग्ने वह पथिभिर्देवयानैः॥६॥**

**आ। नः। महीम्। अरमतिम्। सऽजोषाः। ग्नाम्। देवीम्। नमसा। रातऽहव्याम्। मधोः। मदाय। बृहतीम्। ऋतऽज्ञाम्। आ। अग्ने। वह। पथिऽभिः। देवऽयानैः॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** अस्मान् **(महीम्)** महतीं वाचम् **(अरमतिम्)** विषयेष्वरममाणाम् **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(ग्नाम्)** गच्छन्ति ज्ञानं यया ताम् **(देवीम्)** देदीप्यमानां कमनीयाम् **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(रातहव्याम्)** रातानि हव्यानि दातव्यानि दानानि यया ताम् **(मधोः)** मधुरादिगुणयुक्तात् **(मदाय)** आनन्दाय **(बृहतीम्)** बृहत्पदार्थविषयाम् **(ऋतज्ञाम्)** ऋतं सत्यं जानाति यया ताम् **(आ)** **(अग्ने)** विद्वन् **(वह)** प्रापय **(पथिभिः)** मार्गैः **(देवयानैः)** देवा आप्ता विद्वांसो गच्छन्ति येषु तैः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! आ सजोषास्त्वं नमसा पथिभिर्देवयानैर्मधोर्मदाय नोऽरमतिं रातहव्यां ग्नामृतज्ञां बृहतीं देवीं महीं न आ वह॥६॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसो जायन्ते ये सर्वथा सर्वदा विद्यां याचन्ते त एव विद्वांसो ये धर्म्यात् पथो विरुद्धं किमप्याचरणं न कुर्वन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(आ)** सब ओर से **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले आप **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(देवयानैः)** यथार्थवक्ता विद्वान् चलते हैं जिनसे उन **(पथिभिः)** मार्गों से **(मधोः)** मधुर आदि गुण युक्त से **(मदाय)** आनन्द के लिये **(नः)** हम लोगों को **(अरमतिम्)** विषयों में नहीं रमण करती हुई **(रातहव्याम्)** देने योग्य दान जिससे **(ग्नाम्)** प्राप्त होते हैं ज्ञान को जिससे तथा **(ऋतज्ञाम्)** सत्य को जानता है जिससे उस **(बृहतीम्)** बड़े पदार्थों के विषय से युक्त **(देवीम्)** देदीप्यमान मनोहर **(महीम्)** बड़ी वाणी को हम लोगों के लिये **(आ, वह)** प्राप्त कराइये॥६॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् होते हैं जो सब प्रकार से सब काल में विद्या की याचना करते हैं और वे ही विद्वान् हैं, जो धर्मयुक्त मार्ग से विरुद्ध कुछ भी आचरण नहीं करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा वपावन्तं नाग्निना तपन्तः।**

**पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो अग्निमृतयन्नसादि॥७॥**

**अञ्जन्ति। यम्। प्रथयन्तः। न। विप्राः। वपाऽवन्तम्। न। अग्निना। तपन्तः। पितुः। न। पुत्रः। उपसि। प्रेष्ठः। आ। घर्मः। अग्निम्। ऋतयन्। असादि॥७॥**

**पदार्थः**-(**अञ्जन्ति**) कामयन्ते प्रकटयन्ति वा (**यम्**) (**प्रथयन्तः**) प्रख्यापयन्तः (**न**) इव (**विप्राः**) मेधाविनः (**वपावन्तम्**) विद्याबीजं विस्तरन्तम् (**न**) इव (**अग्निना**) पावकेनेव ब्रह्मचर्य्येण (**तपन्तः**) सन्तापदुःखं सहमानाः (**पितुः**) जनकस्य (**न**) इव (**पुत्रः**) (**उपसि**) समीपे (**प्रेष्ठः**) अतिशयेन प्रियः (**आ**) समन्तात् (**घर्मः**) यज्ञस्तापो वा (**अग्निम्**) (**ऋतयन्**) सत्यमिवाचरन् (**असादि**) सीदेत्॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिन्! यं वपावन्तं न त्वामग्निना तपन्ती वपावन्तं न प्रथयन्तो विप्रा नाऽग्निना तपन्तोऽञ्जन्ति यः पितुः पुत्रो नोपसि प्रेष्ठो घर्मोऽग्निमृतयन्नासादि ताँस्तञ्च त्वं सततं सेवित्वा विद्यामुपादत्स्व॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे अध्यापकविद्वांसो यूयं ये जितेन्द्रिया आप्तस्वभावाः शीतोष्णसुख-दुःखहर्षशोकनिन्दास्तुत्यादिद्वन्द्वं सोढारो निरभिमानिनो निर्मोहाः सत्याचरणपरोपकारप्रिया ब्रह्मचारिणो विद्यार्थिनः स्युस्तान् पुरुषार्थेन विदुषः कुरुत॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्यार्थिन्! (**यम्**) जिस (**वपावन्तम्**) विद्या के बीज के विस्तार को करते हुए के (**न**) सदृश आप को (**अग्निना**) अग्नि के सदृश ब्रह्मचर्य्य से (**तपन्तः**) संताप दुःख को सहते और विद्या के बीज का विस्तार करते हुए के (**न**) सदृश (**प्रथयन्तः**) प्रसिद्ध करते हुए (**विप्राः**) बुद्धिमान जनों के (**न**) सदृश अग्नि के समान ब्रह्मचर्य्य से सन्ताप दुःख को सहते हुए (**अञ्जन्ति**) कामना करते वा प्रकट करते हैं और जो (**पितुः**) पिता के (**पुत्रः**) पुत्र के सदृश (**उपसि**) समीप में (**प्रेष्ठः**) अत्यन्त प्रिय (**घर्मः**) यज्ञ वा तप (**अग्निम्**) अग्नि को (**ऋतयन्**) सत्य के सदृश आचरण करते हुए (**आ, असादि**) उत्तम प्रकार स्थित होवे, उनको और उसको आप निरन्तर सेवन करके विद्या को ग्रहण करिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे अध्यापक विद्वानो! तुम लोग जो जितेन्द्रिय उत्तम स्वभावयुक्त शीत-उष्ण, सुख-दुःख, आनन्द, शोक, निन्दा-स्तुति आदि द्वन्द्व को सहने वाले अभिमान और मोह से रहित सत्य आचरणकर्त्ता और परोपकारप्रिय ब्रह्मचारी विद्यार्थी होवें, उनको पुरुषार्थ से विद्वान् करिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अच्छा मही बृहती शंतमा गीर्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्यै।**

**म॒यो॒भुवा॑ स॒रथा या॑तम॒र्वाग्ग॒न्तं नि॒धिं धुर॑मा॒णिर्न नाभि॑म्॥८॥**

**अच्छ॑। म॒ही। बृ॒ह॒ती। शम्ऽत॑मा। गीः। दू॒तः। न। ग॒न्तु॒। अ॒श्विना॑। हु॒वध्यै॑। म॒यः॒ऽभुवा॑। स॒ऽरथा॑। आ। या॒त॒म्। अ॒र्वाक्। ग॒न्त॒म्। नि॒ऽधिम्। धुर॑म्। आ॒णिः। न। नाभि॑म्॥८॥**

**पदार्थः**-(**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**मही**) महती (**बृहती**) बृहद्ब्रह्मादिवस्तुप्रकाशिका (**शन्तमा**) अतिशयेन कल्याणकारिणी (**गीः**) गायन्ति पदार्थान् यया सा (**दूतः**) धार्म्मिको विद्वान् दक्षो राजदूतः (**न**) इव (**गन्तु**) प्राप्नोतु (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**हुवध्यै**) आह्वातुम् (**मयोभुवा**) सुखं भावुकौ (**सरथा**) रथादिभिः सह वर्त्तमानौ (**आ**) (**यातम्**) गच्छतम् (**अर्वाक्**) सत्यधर्ममनु (**गन्तम्**) गच्छन्तम् (**निधिम्**) (**धुरम्**) यानाधारकाष्ठम् (**आणिः**) कीलकम् (**न**) इव (**नाभिम्**) मध्यम्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या बृहती शन्तमा मही गीर्मयोभुवा सरथाऽश्विना हुवध्यै दूतो न गन्तु ययाऽश्विना नाभिं धुरमाणिर्नार्वाग्गन्तं निधिमच्छाऽऽयातं तां यूयं प्राप्नुत॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव मनुष्या यान् राजानं दूत इव सर्वशास्त्रप्रवीणा वाक् प्राप्नुयात् त एव भाग्यवन्तो यान् धर्म्येण पुरुषार्थेनातुलमैश्वर्य्यमीयात्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**बृहती**) बड़े ब्रह्म आदि वस्तु को प्रकाश करने वाली और (**शन्तमा**) अत्यन्त कल्याणकारिणी (**मही**) बड़ी (**गीः**) गाते हैं पदार्थों को जिससे ऐसी वाणी और (**मयोभुवा**) सुख को उत्पन्न करने वाले (**सरथा**) वाहन आदिकों के साथ वर्त्तमान (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनों को (**हुवध्यै**) बुलाने को जैसे (**दूतः**) धार्म्मिक विद्वान् चतुर राजा का दूत (**न**) वैसे (**गन्तु**) प्राप्त हूजिये तथा जिससे अध्यापक और उपदेशक जन (**नाभिम्**) मध्य (**धुरम्**) वाहन के आधार काष्ठ को (**आणिः**) कीले के (**न**) सदृश और (**अर्वाक्**) सत्य धर्म्म के पीछे (**गन्तम्**) चलते हुए (**निधिम्**) द्रव्यपात्र को (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**आ, यातम्**) प्राप्त हूजिये, उसको आप लोग प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही मनुष्य हैं जिनको जैसे राजा को दूत वैसे सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रवीण वाणी प्राप्त होवे और वे ही भाग्यशाली हैं, जिनको धर्मयुक्त पुरुषार्थ से अतुल ऐश्वर्य्य प्राप्त होवे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र तव्य॑सो॒ नम॑उक्तिं तु॒रस्या॒हं पू॒ष्ण उ॒त वा॒योर॑दिक्षि।**
**या राध॑सा चोदि॒तारा॑ मती॒नां या वाज॑स्य द्रविणो॒दा उ॒त त्मन्॥९॥**

**प्र। तव्य॑सः। नम॑ःऽउक्तिम्। तु॒रस्य॑। अ॒हम्। पू॒ष्णः। उ॒त। वा॒योः। अ॒दि॒क्षि॒। या। राध॑सा। चो॒दि॒तारा॑। म॒ती॒नाम्। या। वाज॑स्य। द्र॒वि॒णः॒ऽदौ। उ॒त। त्मन्॥९॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**तव्यसः**) बलस्य (**नमउक्तिम्**) नमस्सत्कारस्यान्नाऽऽदेर्वा वचनम् (**तुरस्य**) शीघ्रकारिणः (**अहम्**) (**पूष्णः**) पुष्टिकरस्य (**उत**) अपि (**वायोः**) (**अदिक्षि**) उपदिशामि (**या**) यौ (**राधसा**) धनेन (**चोदितारा**) प्रेरकौ (**मतीनाम्**) मनुष्याणाम् (**या**) यौ (**वाजस्य**) विज्ञानस्याऽन्नस्य वा (**द्रविणोदौ**) यौ द्रविणसौ दत्तस्तौ (**उत**) अपि (**त्मन्**) आत्मनि॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽहं तुरस्य तव्यस उत पूष्णो वायोर्न्नमउक्तिमदिक्षि उत त्मन्या राधसा मतीनां प्र चोदितारा या वाजस्य द्रविणोदौ वर्त्तेते तावदिक्षि तथा यूयमप्युपदिशत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसो विद्योपदेशदानाभ्यां मनुष्यान् सुशिक्षितान् कुर्वन्ति तथैव यूयमप्यनुतिष्ठत॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे (**अहम्**) मैं (**तुरस्य**) शीघ्र कार्य्य करने वाले (**तव्यसः**) बलयुक्त (**उत**) और (**पूष्णः**) पुष्टिकारक (**वायोः**) वायु के (**नमउक्तिम्**) सत्कार वा अन्न आदि के वचन का (**अदिक्षि**) उपदेश करता हूं और (**उत**) भी (**त्मन्**) आत्मा में (**या**) जो (**राधसा**) धन से (**मतीनाम्**) मनुष्यों के (**प्र, चोदितारा**) अत्यन्त प्रेरणा करने वाले और (**या**) जो (**वाजस्य**) विज्ञान वा अन्न के (**द्रविणोदौ**) बल से देने वाले वर्त्तमान हैं, उनको उपदेश देता हूं, वैसे आप लोग भी उपदेश दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन विद्या के उपदेश और दान से मनुष्यों को उत्तम प्रकार शिक्षित करते हैं, वैसे ही तुम लोग भी करो॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः।**

**यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती॥१०॥२१॥**

आ। नामऽभिः। मरुतः। वक्षि। विश्वान्। आ। रूपेभिः। जातऽवेदः। हुवानः। यज्ञम्। गिरः। जरितुः। सुऽस्तुतिम्। च। विश्वे। गन्त। मरुतः। विश्वे। ऊती॥१०॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नामभिः**) संज्ञाभिः (**मरुतः**) मनुष्यान् (**वक्षि**) आवह (**विश्वान्**) समग्रान् (**आ**) (**रूपेभिः**) रूपैः (**जातवेदः**) प्रजातप्रज्ञः (**हुवानः**) ददन् (**यज्ञम्**) सङ्गतिकरणम् (**गिरः**) वाचः (**जरितुः**) स्तावकस्य (**सुष्टुतिम्**) स्तावकस्य उत्तमां प्रशंसाम् (**च**) (**विश्वे**) सर्वे (**गन्त**) गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु (**मरुतः**) मनुष्यान् (**विश्वे**) सर्वे (**ऊती**) ऊत्या रक्षणादिक्रियया॥१०॥

**अन्वयः**-हे जातवेदो हुवानस्त्वं नामभी रूपेभिर्विश्वान् मरुत आ वक्षि जरितुः सुष्टुतिं गिरो यज्ञञ्च विश्वे गन्त विश्वे मरुत ऊत्याऽऽगन्त॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! भवान् सर्वैर्नामभी रूपादिभिश्चाऽखिलान् पदार्थान् सर्वान् मनुष्यान् साक्षात्कारयतु येन सर्वे मनुष्याः प्रशंसिता भूत्वा सर्वान् प्रशस्तविद्यान् सम्पादयन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** बुद्धि से युक्त **(हुवानः)** दान करते हुए आप **(नामभिः)** संज्ञाओं और **(रूपेभिः)** रूपों से **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(मरुतः)** मनुष्यों को **(आ)** सब प्रकार **(वक्षि)** प्राप्त हूजिये **(जरितुः)** स्तुति करने वाले की **(सुष्टुतिम्)** स्तुति करने वाले की उत्तम प्रशंसा को **(गिरः)** वाणियों को **(यज्ञम्, च)** और संगति करने को **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(गन्त)** प्राप्त होवें तथा **(विश्वे)** समस्त **(मरुतः)** मनुष्यों को **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया से **(आ)** प्राप्त होवें॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप सम्पूर्ण नाम और रूप आदिकों से सम्पूर्ण पदार्थों को सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये साक्षात् कराओ, जिससे सब मनुष्य प्रशंसित होकर सब को प्रशंसित विद्यायुक्त सम्पादित करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः पर्व॑ता॒दा सर॑स्वती यज॒ता ग॑न्तु य॒ज्ञम्।**

**हवं॑ दे॒वी जु॑जुषा॒णा घृ॒ताची॑ श॒ग्मां नो॒ वाच॑मुश॒ती शृ॑णोतु॥११॥**

आ। नः॒। दि॒वः। बृ॒ह॒तः। पर्व॑तात्। आ। सर॑स्वती। य॒ज॒ता। ग॒न्तु। य॒ज्ञम्। हव॑म्। दे॒वी। जु॒जु॒षा॒णा। घृ॒ताची॑। श॒ग्माम्। नः॒। वाच॑म्। उ॒श॒ती। शृ॒णो॒तु॥११॥

**पदार्थः**-**(आ) (नः)** अस्मान् **(दिवः)** कामयमानान् **(बृहतः)** महाशयान् **(पर्वतात्)** मेघात् **(आ) (सरस्वती)** विज्ञानयुक्ता वाक् **(यजता)** सङ्गन्तव्या **(गन्तु)** प्राप्नोतु **(यज्ञम्)** विद्याव्यवहारम् **(हवम्)** वक्तव्यं श्रोतव्यं वा **(देवी)** दिव्यगुणशास्त्रबोधयुक्ता **(जुजुषाणा)** सम्यक् सेवमाना **(घृताची)** या घृतमुदकमञ्चति **(शग्माम्)** सुखमयीम् **(नः)** अस्माकम् **(वाचम्)** वाणीम् **[(उशती)]** कामयमाना **(शृणोतु)**॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिनो! यथेयं यजता सरस्वती दिवो बृहतो नोऽस्मान् पर्वताज्जलमिवाऽऽगन्तु घृताची जुजुषाणा देव्युशती कामयमाना विदुषी स्त्री नो यज्ञं हवं शग्मां वाचं नोऽस्मांश्चाऽऽशृणोतु तथैव युष्मानपि प्राप्ता सतीयं युष्माकं कृत्यं शृणुयात्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। तानेव दिव्या वाक् प्राप्नोति ये सत्यकामा महाशयाः परोपकारप्रिया धर्मिष्ठा विद्यार्थिनां परीक्षकाः स्युः॥११॥

**पदार्थः**-हे विद्यार्थी जनो! जैसे यह **(यजता)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने योग्य **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त वाणी **(दिवः)** कामना करते हुए **(बृहतः)** महदाशययुक्त **(नः)** हम लोगों को **(पर्वतात्)** मेघ से जल के सदृश **(आ, गन्तु)** सब प्रकार प्राप्त होवे **(घृताची)** घृत को प्राप्त होने वाली **(जुजुषाणा)**

उत्तम प्रकार से सेवन की गई **(देवी)** श्रेष्ठ गुण और शास्त्र के बोध से युक्त **(उशती)** कामना करती हुई विद्यायुक्त स्त्री **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** विद्याव्यवहार को **(हवम्)** कहने-सुनने योग्य व्यवहार को वा **(शग्माम्)** सुखमयी **(वाचम्)** वाणी को और हम लागों को **(आ, शृणोतु)** अच्छे प्रकार सुने, वैसे आप लोगों को भी प्राप्त हुई यह आप लोगों के कृत्य को सुने॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। उन्हीं को श्रेष्ठ वाणी प्राप्त होती है, जो सत्य की कामना करने वाले, महाशय, परोपकारप्रिय, धर्मिष्ठ और विद्यार्थियों के परीक्षक होवें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ वे॒धसं॒ नील॑पृष्ठं बृ॒हन्तं॒ बृह॒स्पतिं॒ सद॑ने सादयध्वम्।**
**सा॒दद्यो॑निं॒ दम॒ आ दी॑दि॒वांसं॒ हिर॑ण्यवर्णमरु॒षं स॑पेम॥१२॥**

**आ। वे॒धस॑म्। नील॑ऽपृष्ठम्। बृ॒हन्त॑म्। बृह॒स्पति॑म्। सद॑ने। सा॒द॒य॒ध्व॒म्। सा॒दत्ऽयो॑निम्। दमे॑। आ। दी॒दि॒ऽवांस॑म्। हिर॑ण्यऽवर्णम्। अ॒रु॒षम्। स॒पे॒म॥१२॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(वेधसम्)** मेधाविनम् **(नीलपृष्ठम्)** नीलसदृशं पृष्ठं यस्य तम् **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(बृहस्पतिम्)** महतां पतिम् **(सदने)** सभास्थाने **(सादयध्वम्)** स्थापयत **(सादद्योनिम्)** सीदन्तं धर्म्ये कारणे **(दमे)** गृहे **(आ)** **(दीदिवांसम्)** देदीप्यमानं दातारम् **(हिरण्यवर्णम्)** तेजस्विनम् **(अरुषम्)** मर्मविद्यायां सीदन्तम् **(सपेम)** सपथैर्नियमयेम॥१२॥

**अन्वयः**-हे धीमन्तो जना! यूयं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं वेधसं सदन आ सादयध्वम्। वयं सादद्योनिं तं दीदिवांसं हिरण्यवर्णमरुषं दमे सभास्थान आ सपेम॥१२॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या राज्यं कर्त्तुं वर्धयितुं च शक्नुयुर्ये धर्मिष्ठान् कृतज्ञान् कुलीनान् विदुषः सभायां स्थापयेयुस्तत्र स्थापनसमये सपथैर्यूयमन्यायं कदाचिन्मा करिष्यथेति प्रलम्भयेयुः॥१२॥

**पदार्थः**-हे बुद्धिमान् जनो! आप लोग **(नीलपृष्ठम्)** नीलगुण से युक्त पृष्ठ जिसका उस **(बृहन्तम्)** बड़े **(बृहस्पतिम्)** बड़ों के स्वामी **(वेधसम्)** बुद्धिमान् को **(सदने)** सभा के स्थान में **(आ, सादयध्वम्)** उत्तम प्रकार स्थित कीजिये। और हम लोग **(सादद्योनिम्)** धर्मसम्बन्धी कारण में स्थित होते और **(दीदिवांसम्)** निरन्तर प्रकाशमान देने वाले **(हिरण्यवर्णम्)** तेजस्वी **(अरुषम्)** मर्मविद्या में स्थित होते हुए को **(दमे)** गृह में अर्थात् सभास्थान में **(आ, सपेम)** अच्छे प्रकार सपथों से नियत करावें॥१२॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य राज्य करने और बढ़ाने को समर्थ होवें, जो धर्मिष्ठ और किये हुए उपकारों को जानने वाले, कुलीन विद्वानों को सभा में स्थित करें तथा वहाँ स्थापनसमय में सपथों से आप लोग अन्याय को कभी मत करो, ऐसा प्रलम्भन करावें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः।**
**ग्ना वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः॥ १३॥**

**आ। धर्णसिः। बृहत्ऽदिवः। रराणः। विश्वेभिः। गन्तु। ओमऽभिः। हुवानः। ग्नाः। वसानः। ओषधीः। अमृध्रः। त्रिधातुऽशृङ्गः। वृषभः। वयःऽधाः॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**धर्णसिः**) धर्त्ता (**बृहद्दिवः**) बृहतः प्रकाशस्य (**रराणः**) ददन् (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**गन्तु**) प्राप्नोतु (**ओमभिः**) रक्षणादिकारकैः सह (**हुवानः**) आददानः (**ग्नाः**) वाचः। **ग्नेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**वसानः**) आच्छादयन् (**ओषधीः**) सोमलताद्याः (**अमृध्रः**) अहिंसकः (**त्रिधातुशृङ्गः**) त्रयो धातवो शुल्करक्तकृष्णगुणाः शृङ्गवद्यस्य सः (**वृषभः**) वर्षकः (**वयोधाः**) यो वयः कमनीयमायुर्दधाति सः॥ १३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिरोमभिर्हुवानो ग्ना वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वयोधा वृषभस्सूर्यो जगदुपकारी वर्त्तते तथैव भवान् जगदुपकारायाऽऽगन्तु॥ १३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः त्रिगुणयुक्तप्रकृतिबोधका वाग्विज्ञापका अहिंस्रा औषधै रोगनिवारका ब्रह्मचर्य्यादिबोधेनायुर्वर्धका भवन्ति त एव जगत्पूज्या जायन्ते॥ १३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**धर्णसिः**) धारण करने वाला (**बृहद्दिवः**) बड़े प्रकाश का (**रराणः**) दान करता हुआ (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**ओमभिः**) रक्षण आदि के करने वालों के साथ (**हुवानः**) ग्रहण करता और (**ग्नाः**) वाणियों को (**वसानः**) आच्छादित करता हुआ (**ओषधीः**) सोमलता आदि का (**अमृध्रः**) नहीं नाश करने वाला (**त्रिधातुशृङ्गः**) तीन धातु अर्थात् शुक्ल, रक्त, कृष्ण गुण शृङ्गों के सदृश जिसके और (**वयोधाः**) सुन्दर आयु को धारण करने वाला (**वृषभः**) वृष्टिकारक सूर्य्य संसार का उपकारी है, वैसे ही आप संसार के उपकार के लिये (**आ, गन्तु**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥ १३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् तीन गुणों से युक्त प्रकृति के जानने, वाणी के जानने, नहीं हिंसा करने, औषधों से रोगों के निवारने और ब्रह्मचर्य्य आदि के बोध से अवस्था के बढ़ाने वाले होते हैं, वे ही संसार के पूज्य होते हैं॥ १३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मातुष्पदे परमे शुक्र आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो अग्मन्।**
**सुशेव्यं नमसा रातहव्याः शिशुं मृजन्त्यायवो न वासे॥ १४॥**

**मातुः। पदे। परमे। शुक्रे। आयोः। विपन्यवः। रास्पिरासः। अग्मन्। सुऽशेव्यम्। नमसा। रातऽहव्याः। शिशुम्। मृजन्ति। आयवः। न। वासे॥ १४॥**

**पदार्थः-(मातुः)** जननीव वर्त्तमानाया भूमेः **(पदे)** प्रापणीये **(परमे)** उत्कृष्टे **(शुक्रे)** शुद्धे **(आयोः)** जीवनस्य **(विपन्यवः)** विशेषेण स्तावकाः **(रास्पिरासः)** ये रा दानानि स्पृणन्ति ते **(अग्मन्)** गच्छन्ति **(सुशेव्यम्)** सुष्ठु सुखेषु भवम् **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(रातहव्याः)** दत्तदातव्याः **(शिशुम्)** शासनीयं बालकम् **(मृजन्ति)** शोधयन्ति **(आयवः)** मनुष्याः **(न)** इव **(वासे)**॥ १४॥

**अन्वयः-**हे मनुष्या! ये शुक्रे परमे मातुष्पद आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो रातहव्या नमसा वास आयवः शिशुं मृजन्ति न सुशेव्यमग्मन् ते सुशेव्या जायन्ते॥ १४॥

**भावार्थः-**अत्रोपमालङ्कारः। यथा माता सद्योजातं बालकं संशोध्य सुवासे रक्षति तथैव ये योगाभ्यासे चित्तं शोधयन्ति ते सैश्वर्य्यं सुखं प्राप्नुवन्ति॥ १४॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! जो **(शुक्रे)** शुद्ध **(परमे)** उत्तम **(मातुः)** माता के सदृश वर्त्तमान भूमि के **(पदे)** प्राप्त होने योग्य स्थान में **(आयोः)** जीवन के **(विपन्यवः)** विशेषतया स्तुति करने और और **(रास्पिरासः)** दोनों की प्रीति करने वाले **(रातहव्याः)** दिये हुओं के देने योग्य **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(वासे)** वसने में **(आयवः)** मनुष्य **(शिशुम्)** शासन करने योग्य बालक को **(मृजन्ति)** शुद्ध करते हैं **(न)** जैसे वैसे **(सुशेव्यम्)** उत्तम सुखों में हुए व्यवहार को **(अग्मन्)** प्राप्त होते हैं, वे उत्तम प्रकार सुखों से युक्त होते हैं॥ १४॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे माता शीघ्र उत्पन्न हुए बालक को उत्तम प्रकार शुद्ध करके उत्तम स्थान में रक्षा करती है, वैसे ही जो योगाभ्यास में चित्त को शुद्ध करते हैं, वे ऐश्वर्य्य के सहित सुख को प्राप्त होते हैं॥ १४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**बृहद्वयो बृहते तुभ्यमग्ने धियाजुरो मिथुनासः सचन्त।**
**देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्॥ १५॥**

**बृहत्। वयः। बृहते। तुभ्यम्। अग्ने। धियाऽजुरः। मिथुनासः। सचन्त। देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्॥ १५॥**

**पदार्थः-(बृहत्)** महत् **(वयः)** जीवनम् **(बृहते)** वृद्धाय **(तुभ्यम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(धियाजुरः)** धिया प्रज्ञया कर्म्मणा वा प्राप्तजरावस्थाः **(मिथुनासः)** सपत्नीकाः **(सचन्त)** समवयन्ति **(देवोदेवः)** विद्वान् विद्वान् **(सुहवः)** सुष्ठुप्रशंसनीयः **(भूतु)** भवतु **(मह्यम्)** **(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(माता)** जननी **(पृथिवी)** भूमिरिव **(दुर्मतौ)** दुष्टायां प्रज्ञायाम् **(धात्)** दध्यात्॥ १५॥

**अन्वयः**:-हे अग्ने! ये धियाजुरो मिथुनासो बृहते तुभ्यं बृहद्वयः सचन्त सुहवो देवोदेवो मह्यं सुखकारी भूतु पृथिवीव माता नोऽस्मान् दुर्म्मतौ मा धात्॥१५॥

**भावार्थः**:-हे मनुष्या! ये वयोविद्यावृद्धा युष्मान् विद्याभिः सह सम्बध्नन्ति मातृवत् कृपया रक्षन्ति ते युष्माकं पूज्या भवन्तु॥१५॥

**पदार्थः**:-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(धियाजुरः)** बुद्धि वा कर्म्म से प्राप्त हुई वृद्धावस्था जिनको ऐसे **(मिथुनासः)** स्त्रियों के सहित वर्त्तमान जन **(बृहते)** वृद्ध **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(बृहत्)** बड़े **(वयः)** जीवन को **(सचन्त)** उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं और **(सुहवः)** उत्तम प्रकार प्रशंसा करने योग्य **(देवोदेवः)** विद्वान् विद्वान् **(मह्यम्)** मेरे लिये सुखकारी **(भूतु)** हो और **(पृथिवी)** भूमि के सदृश **(माता)** माता **(नः)** हम लोगों को **(दुर्म्मतौ)** दुष्ट बुद्धि में **(मा)** नहीं **(धात्)** धारण करे॥१५॥

**भावार्थः**:-हे मनुष्यो! जो अवस्था और विद्या में वृद्ध आप लोगों को विद्याओं से सम्बन्धित करते हैं और माता के सदृश कृपा से रक्षा करते हैं, वे आप लोगों के पूज्य हों॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### उरौ देवा अनिबाधे स्याम॥१६॥

**उरौ। देवाः। अनिऽबाधे। स्याम॥१६॥**

**पदार्थः**:-**(उरौ)** बहौ **(देवाः)** विद्वांसः **(अनिबाधे)** व्यवहारे **(स्याम)** भवेम॥१६॥

**अन्वयः**:-हे देवा! यूयं यथा वयमुरावनिबाधे स्याम तथा विदधत॥१६॥

**भावार्थः**:-विद्वद्भिः सर्वे मनुष्या यथा निर्विघ्नाः स्युस्तथा विधेयम्॥१६॥

**पदार्थः**:-हे **(देवाः)** विद्वान् जनो! आप लोग जैसे हम लोग **(उरौ)** बहु **(अनिबाधे)** व्यवहार में **(स्याम)** होवें वैसे करिये॥१६॥

**भावार्थः**:-विद्वानों को चाहिये कि सब मनुष्य जैसे विघ्नरहित होवें, वैसा करें॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।
### आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि॥१७॥२२॥

**सम्। अश्विनोः। अवसा। नूतनेन। मयःऽभुवा। सुऽप्रनीती। गमेम। आ। नः। रयिम्। वहतम्। आ। उत। वीरान्। आ। विश्वानि। अमृता। सौभगानि॥१७॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**अश्विनोः**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अवसा**) रक्षणाद्येन (**नूतनेन**) नवीनेन (**मयोभुवा**) सुखंभावुकौ (**सुप्रणीती**) धर्म्यनीतियुक्तौ (**गमेम**) प्राप्नुयाम (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**रयिम्**) धनम् (**वहतम्**) प्रापयेतम् (**आ**) (**उत**) अपि (**वीरान्**) अत्युत्तमान् पुत्रपौत्रादीन् (**आ**) (**विश्वानि**) समग्राणि (**अमृता**) नाशरहितानि (**सौभगानि**) शोभनैश्वर्य्याणां भावान्॥१७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यौ मयोभुवा सुप्रणीती युवां नो रयिमुतापि वीराना वहतं ययोरश्विनोर्नूतनेनावसा वयं विश्वान्यमृता सौभगानि वयं सोमा गमेम तावस्माभिः सदैवा सेवनीयौ स्तः॥१७॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकोपदेशकाः सर्वान् मनुष्यान् नूतनयाऽनूतनया विद्यया युक्तान् कृत्वैश्वर्य्यं प्रापयन्ति ते सदैव प्रशंसिता भवन्तीति॥१७॥

अत्र विश्वदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे अध्यापकोपदेशको! जो (**मयोभुवाः**) सुख के उत्पन्न करने वाले (**सुप्रणीती**) धर्मसन्बधी नीति से युक्त आप (**नः**) हम लोगों को (**रयिम्**) धन (**उत**) और (**वीरान्**) अति उत्तम पुत्र-पौत्र आदिकों को (**आ, वहतम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त करावें और जिन (**अश्विनोः**) अध्यापक और उपदेशकों के (**नूतनेन**) नवीन (**अवसा**) रक्षण आदि से हम लोग (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**अमृता**) नाश से रहित (**सौभगानि**) सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावों को हम लोग (**सम, आ गमेम**) उत्तम प्रकार प्राप्त होवें, वे दोनों हम लोगों से सदा (**आ**) उत्तम प्रकार सेवन करने योग्य हैं॥१७॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक जन सब मनुष्यों को नवीन और प्राचीन विद्या से युक्त कर ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराते हैं, वे सदा ही प्रशंसित होते हैं॥१७॥

इस सूक्त में सम्पूर्ण विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह तेतालीसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

### ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य अवत्सारः काश्यप अन्ये च ऋषयो दृष्टलिङ्गाः। विश्वेदेवा देवताः। १, ३, १३, विराड्जगती। २, ४, ५, ६, १२ निचृज्जगती। ८, ९ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ भुरिक् त्रिष्टुप्। १०, ११ स्वराट् त्रिष्टुप्। १४ विराट् त्रिष्टुप्। १५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सूर्यरूपतया राजगुणानाह॥***

अब पंद्रह ऋचा वाले चवालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्यरूपता से राजगुणों को कहते हैं॥

**तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम्।**

**प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिराशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे॥१॥**

**तम्। प्रत्नऽथा। पूर्वऽथा। विश्वऽथा। इमऽथा ज्येष्ठऽतातिम्। बर्हिऽसदम्। स्वःऽविदम्। प्रतीचीनम्। वृजनम्। दोहसे। गिरा। आशुम्। जयन्तम्। अनु। यासु। वर्धसे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**प्रत्नथा**) प्रत्नमिव (**पूर्वथा**) पूर्वमिव (**विश्वथा**) विश्वमिव (**इमथा**) इममिव (**ज्येष्ठतातिम्**) ज्येष्ठमेव (**बर्हिषदम्**) बर्हिष्युत्तमासनेऽन्तरिक्षे वा सीदन्तम् (**स्वर्विदम्**) स्वः सुखं विदन्ति येन तम् (**प्रतीचीनम्**) अस्मान् प्रत्यभिमुखं प्राप्नुवन्तम् (**वृजनम्**) बलम् (**दोहसे**) पिपरसि (**गिरा**) वाण्या (**आशुम्**) शीघ्रकारिणं स- ामम् (**जयन्तम्**) विजयमानम् (**अनु**) (**यासु**) (**वर्धसे**)॥१॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्त्वं गिरा प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदं प्रतीचीनं वृजनमाशुं जयन्तं दोहसे तं त्वां यास्वनु वर्धसे ताः सेना प्रजाश्च वयं सततं वर्धयेम॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये सनातनरीत्या पूर्वोत्तमराजवत्पितृवद् राष्ट्रं सम्पाल्य पूर्णबलां सेनां कृत्वा सद्योविजयमानाः प्रजाः सुखानुकूला वर्त्तयन्तु तानेवोत्तमाऽधिकारे नियोजयत यतो राजप्रजानां सततं सुखं वर्धेत॥१॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप (**गिरा**) वाणी से (**प्रत्नथा**) पुराने के सदृश (**पूर्वथा**) पूर्व के सदृश (**विश्वथा**) सम्पूर्ण संसार के सदृश (**इमथा**) इसके सदृश (**ज्येष्ठतातिम्**) जेठे ही को (**बर्हिषदम्**) उत्तम आसन वा अन्तरिक्ष में स्थित होने वाले (**स्वर्विदम्**) सुख को जानते जिससे उस (**प्रतीचीनम्**) हम लोगों के सम्मुख प्राप्त होते हुए (**वृजनम्**) बल को तथा (**आशुम्**) शीघ्रकारी संग्राम को (**जयन्तम्**) जीतते हुए को (**दोहसे**) पूर्ण करते हो (**तम्**) उन आपको और (**यासु**) जिनमें (**अनु, वर्धसे**) वृद्धि को प्राप्त होते हो, उन सेनाओं और उन प्रजाओं की हम लोग निरन्तर वृद्धि करें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो प्राचीन रीति से प्राचीन उत्तम राजाओं के तुल्य पिता के सदृश राज्य का उत्तम प्रकार पालन करके पूर्ण बलयुक्त सेना को कर शीघ्र विजय को

प्राप्त हुई प्रजाओं को सुख के अनुकूल वर्त्तावें, उन्हीं को उत्तम अधिकार में नियुक्त करिये, जिससे राजा और प्रजा का निरन्तर सुख बढ़े॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रि॒ये सु॒दृशी॑रु॒प॑रस्य॒ याः स्व॑र्वि॒रोच॑मानः क॒कुभा॑मचो॒दते॑।**

**सु॒गो॒पा अ॑सि॒ न दभा॑य सुक्रतो प॒रो मा॒याभि॑र्ऋ॒त आ॑स॒ नाम॑ ते॥ २॥**

**श्रि॒ये। सु॒ऽदृशीः॑। उ॒प॑रस्य। याः। स्वः॑। वि॒ऽरोच॑मानः। क॒कुभा॑म्। अ॒चो॒दते॑। सु॒ऽगो॒पाः। अ॒सि॒। न। दभा॑य। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। प॒रः। मा॒याभिः॑। ऋ॒ते। आ॒स॒। नाम॑। ते॒॥ २॥**

**पदार्थः**-(**श्रिये**) धनाय शोभायै वा (**सुदृशीः**) शोभनं दृग्दर्शनं यासां ताः (**उपरस्य**) मेघस्य (**याः**) (**स्वः**) आदित्यः (**विरोचमानः**) प्रकाशमानः (**ककुभाम्**) दिशाम् (**अचोदते**) अप्रेरकाय (**सुगोपाः**) सुष्ठु रक्षकः (**असि**) (**न**) निषेधे (**दभाय**) हिंसकाय (**सुक्रतो**) उत्तमकर्म्मप्रज्ञायुक्त (**परः**) प्रकृष्टः (**मायाभिः**) प्रज्ञाभिः (**ऋते**) सत्ये (**आस**) वर्त्तते (**नाम**) (**ते**) तव॥२॥

**अन्वयः**-हे सुक्रतो विद्वँस्त्वं यथा विरोचमानः स्वः ककुभामुपरस्य प्रकाशक आस तथा श्रिये याः सुदृशीः प्रेरितवान् परः सुगोपा अस्यचोदते दभाय मायाभिर्न वर्त्तसे यस्य त ऋते नामाऽऽस तस्य ताः प्रजाः सर्वतो वर्धन्ते॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो दिशाप्रकाशकः सन् सर्वाः प्रजाः शोभनाय वृष्टिकरो भवति, तथैव सर्वाः प्रजा न्यायेन प्रकाश्य विद्यासु वर्धको राजा भवेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**सुक्रतो**) उत्तम कर्म्म और बुद्धि से युक्त विद्वान्! आप जैसे (**विरोचमानः**) प्रकाशमान (**स्वः**) सूर्य्य (**ककुभाम्**) दिशाओं और (**उपरस्य**) मेघ का प्रकाशमान [=प्रकाशक] (**आस**) वर्त्तमान है, वैसे (**श्रिये**) धन वा शोभा के लिये (**याः**) जिन (**सुदृशीः**) दर्शनों वालियों को प्रेरणा करने वाले और (**परः**) उत्तम से उत्तम (**सुगोपाः**) उत्तम प्रकार रक्षा करने वाले (**असि**) हो और (**अचोदते**) नहीं प्रेरणा करने और (**दभाय**) हिंसा करने वाले जन के लिये (**मायाभिः**) बुद्धियों के साथ (**न**) नहीं वर्त्तमान हो जिन (**ते**) आपके (**ऋते**) सत्य में (**नाम**) नाम वर्त्तमान है, उसकी वे प्रजायें सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होती हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य दिशाओं का प्रकाशक हुआ सब प्रजाओं को सुख देने के लिये वृष्टि करने वाला होता है, वैसे ही सब प्रजाओं को न्याय से प्रकाशित करके विद्या और सुख का बढ़ाने वाला राजा होता है॥२॥

**अथ मेघविषयेण राजगुणानाह॥**

अब मेघविषय से राजगुणों को कहते हैं॥

**अत्यं हविः सचते सच्च धातु चारिष्टगातुः स होता सहोभरिः।**
**प्रसर्स्राणो अनु बर्हिर्वृषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः॥३॥**

**अत्यम्। हविः। सचते। सत्। च। धातु। च। अरिष्टऽगातुः। सः। होता। सहःऽभरिः। प्रऽसर्स्राणः। अनु। बर्हिः। वृषा। शिशुः। मध्ये। युवा। अजरः। विऽस्रुहा। हितः॥३॥**

**पदार्थः**-(**अत्यम्**) अतति व्याप्नोति तत्र भवम् (**हविः**) होतव्यं द्रव्यम् (**सचते**) सम्बध्नाति (**सत्**) यद्वर्त्तते तत् (**च**) (**धातु**) यद्धाति तत् (**च**) (**अरिष्टगातुः**) अरिष्टा अहिंसिता गातुर्वाग्यस्य सः (**सः**) (**होता**) दाता (**सहोभरिः**) यः सहो बलं बिभर्ति (**प्रसर्स्राणः**) प्रकर्षेण भृशं गच्छन् (**अनु**) (**बर्हिः**) अन्तरिक्षम् (**वृषा**) बलिष्ठः (**शिशुः**) बालकः (**मध्ये**) (**युवा**) प्राप्तयौवनावस्थः (**अजरः**) वृद्धावस्था-रहितः (**विस्रुहा**) यो विस्रून् रोगान् हन्ति (**हितः**) हितकारी॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽरिष्टगातुः सहोभरिर्होता प्रसर्स्राणो वृषा युवाजरो विस्रुहा हितो बर्हिरनु सच्च धातु चात्यं हविः सचते स शिशुर्मातरमिव जगतो मध्ये पुण्येन युज्यते॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा होता सुगन्ध्यादियुक्तेनाग्नौ हुतेन द्रव्येण वायुवृष्टिजलशुद्धिद्वारा जगति सुखमुपकरोति तथा न्यायकीर्तिवासनया दत्तया विद्यया च राष्ट्रं सुखी कुरु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अरिष्टगातुः**) ऐसा है कि जिसकी नहीं हिंसित वाणी वह (**सहोभरिः**) बल को धारण करने वाला (**होता**) दाताजन (**प्रसर्स्राणः**) प्रकर्षता से अत्यन्त चलता हुआ (**वृषा**) बलिष्ठ (**युवा**) यौवन अवस्था को प्राप्त (**अजरः**) वृद्ध अवस्था से रहित (**विस्रुहा**) रोगों का नाश करने वाला (**हितः**) हितकारी (**बर्हिः**) अन्तरिक्ष को (**अनु**) पश्चात् (**सत्**) वर्त्तमान को (**च**) और (**धातु**) धारण करने वाले (**च**) और (**अत्यम्**) व्याप्त होने वाले में उत्पन्न (**हविः**) हवन करने योग्य द्रव्य को (**सचते**) सम्बन्धित करता है (**सः**) वह (**शिशुः**) बालक माता को जैसे वैसे संसार के (**मध्ये**) बीच में पुण्य से युक्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे हवन करने वाला सुगन्धि आदि से युक्त, अग्नि में हवन किये हुए द्रव्य से वायु, वृष्टि और जल की शुद्धि के द्वारा संसार में सुख का उपकार करता है, वैसे न्याय और कीर्ति की वासना से युक्त दी हुई विद्या से राज्य देश को सुखी करिये॥३॥

**अथ सूर्यसंयोगतो मेघदृष्टान्तेन राजगुणानाह॥**

अब सूर्य्यसंयोग से मेघदृष्टान्त से राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र वं एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्य ऋतावृधः।**
**सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति॥४॥**

**प्र। वः। एते। सुऽयुजः। यामन्। इष्टये। नीचीः। अमुष्मै। यम्यः। ऋतऽवृधः। सुयन्तुऽभिः। सर्वऽशासैः। अभीशुऽभिः। क्रिविः। नामानि। प्रवणे। मुषायति॥४॥**

**पदार्थः-(प्र)** **(वः)** युष्माकम् **(एते)** राजादयो जनाः **(सुयुजः)** ये सुष्ठु धर्मेण युञ्जते **(यामन्)** यामनि मार्गे **(इष्टये)** इष्टसुखाय **(नीचीः)** निम्नगताः **(अमुष्मै)** परोक्षाय सुखाय **(यम्यः)** यमाय न्यायकारिणे हिताः **(ऋतावृधः)** या ऋतं सत्यं वर्धयन्ति ताः **(सुयन्तुभिः)** सुष्ठु यन्तारो नियन्तारो येषु तैः **(सर्वशासैः)** ये सर्वं राज्यं शासन्ति तैः **(अभीशुभिः)** रश्मिभिः। **अभीशव इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं०१.५) **(क्रिविः)** प्रजापालनकर्त्ता **(नामानि)** जलानि **(प्रवणे)** निम्ने देशे **(मुषायति)** चोरयति॥४॥

**अन्वयः**-यथा क्रिविः सूर्योऽभीशुभिः प्रवणे नामानि प्र मुषायति तथैव हे मनुष्य! ये सुयुज एते व इष्टये यामन्नमुष्मै सुयन्तुभिः सर्वशासैर्यम्य ऋतावृधो नीचीः प्रजाः सम्पादयन्तु॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यः सर्वसुखाय जलमाकर्षति तथैव राजा न्यायमार्गेण सर्वाः प्रजा ग्मन् सुष्ठु विज्ञानयुक्तैर्भृत्यैः सहितः सार्वजनिकहितं सम्पादयति॥४॥

**पदार्थः**-जैसे **(क्रिविः)** प्रजा का पालन करने वाला सूर्य्य **(अभीशुभिः)** किरणों से **(प्रवणे)** नीचे स्थल में **(नामानि)** जलों को **(प्र, मुषायति)** अत्यन्त चुराता है, वैसे ही हे मनुष्यो! जो **(सुयुजः)** अच्छे धर्म से युक्त होते वे **(एते)** राजा आदि जन **(वः)** आप लोगों के **(इष्टये)** इष्ट सुख के लिये **(यामन्)** मार्ग में और **(अमुष्मै)** परोक्ष सुख के लिये **(सुयन्तुभिः)** उत्तम नियन्ता जिनमें उन **(सर्वशासैः)** सम्पूर्ण राज्य के शासन करने वालों से **(यम्यः)** न्यायकारी के लिये हितकारक **(ऋतावृधः)** सत्य को बढ़ाने वाली **(नीचीः)** नीची हुई प्रजाओं को सम्पन्न करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य सब के सुख के लिये जल को खींचता है, वैसे ही राजा न्यायमार्ग से सम्पूर्ण प्रजाओं को चलाता हुआ उत्तम विज्ञान से युक्त भृत्यों के सहित सब मनुष्यों के हित का सम्पादन करता है॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**संजर्भुराणस्तरुभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः।**

**धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे॥५॥२३॥**

**सम्ऽजर्भुराणः। तरुऽभिः। सुतेऽगृभम्। वयाकिनम्। चित्तऽगर्भासु। सुऽस्वरुः। धारऽवाकेषु। ऋजुऽगाथ। शोभसे। वर्धस्व। पत्नीः। अभि। जीवः। अध्वरे॥५॥**

**पदार्थः-(सञ्जर्भुराणः)** सम्यक् पालयन् धरन् **(तरुभिः)** वृक्षैः **(सुतेगृभम्)** उत्पन्ने जगति गृहीतम् **(वयाकिनम्)** व्यापिनम् **(चित्तगर्भासु)** चित्तं चेतनत्वं गर्भो यासु तासु **(सुस्वरुः)** सुष्ठूपदेशकः **(धारवाकेषु)** शास्त्रवागुपदेशकेषु **(ऋजुगाथ)** य ऋजुं सरलं व्यवहारं गाति स्तौति तत्सम्बुद्धौ **(शोभसे)**

शोभां प्राप्नुयाः **(वर्धस्व)** **(पत्नीः)** स्त्रियः **(अभि)** आभिमुख्ये **(जीवः)** **(अध्वरे)** अहिंसायुक्ते व्यवहारे॥५॥

**अन्वयः**-हे ऋजुगाथ! त्वं तरुभिस्सञ्जर्भुराणो धारवाकेषु चित्तगर्भासु सुतेगृभं वयाकिनं प्रजासु सुस्वरुः सन्नध्वरे शोभसे जीवः सन् पत्नीरिव प्रजा अभि वर्धस्व॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः स्थावरजङ्गमाभ्यः प्रजाभ्य उपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुस्ते सदैवानन्दिता भवेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(ऋजुगाथ)** सरल व्यवहार के स्तुति करने वाले! आप **(तरुभिः)** वृक्षों से **(सञ्जर्भुराणः)** उत्तम प्रकार पालन और धारण करते हुए **(धारवाकेषु)** शास्त्रवाणी के उपदेश करने वालों में और **(चित्तगर्भासु)** चेतनतारूप गर्भ जिनमें उनके निमित्त **(सुतेगृभम्)** उत्पन्न जगत् में ग्रहण किये गये **(वयाकिनम्)** व्यापी को, प्रजाओं में **(सुस्वरुः)** उत्तम प्रकार उपदेश करने वाले हुए **(अध्वरे)** अहिंसायुक्त व्यवहार में **(शोभसे)** शोभा को प्राप्त हूजिये और **(जीवः)** जीवते हुए **(पत्नीः)** स्त्रियों को जैसे वैसे प्रजाओं के **(अभि)** सन्मुख **(वर्धस्व)** वृद्धि को प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य स्थावर, जङ्गमरूप प्रजाओं से उपकार ग्रहण कर सकें, वे सदा ही आनन्दित होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायया दधिरे सिध्रयाप्स्वा।**

**महीमस्मभ्यमुरुषामुरु ज्रयो बृहत्सुवीरमनपच्युतं सहः॥६॥**

**यादृक्। एव। ददृशे। तादृक्। उच्यते। सम्। छायया। दधिरे। सिध्रया। अप्ऽसु। आ। महीम्। अस्मभ्यम्। उरुऽसाम्। उरु। ज्रयः। बृहत्। सुऽवीरम्। अनपऽच्युतम्। सहः॥६॥**

**पदार्थः**-**(यादृक्)** **(एव)** **(ददृशे)** दृश्यते **(तादृक्)** **(उच्यते)** **(सम्)** **(छायया)** **(दधिरे)** दधति **(सिध्रया)** मङ्गलया **(अप्सु)** जलेषु प्राणेषु वा **(आ)** **(महीम्)** महतीं वाचम् **(अस्मभ्यम्)** **(उरुषाम्)** यो बहून् सनति विभजति तम् **(उरु)** बहु **(ज्रयः)** वेगवन्तः **(बृहत्)** महत् **(सुवीरम्)** शोभना वीरा यस्मात्तम् **(अनपच्युतम्)** ह्रासरहितम् **(सहः)** बलम्॥६॥

**अन्वयः**-ये ज्रयः सिध्रया छाययाप्स्वस्मभ्यमुरुषां महीमुरु बृहत्सुवीरमनपच्युतं सहः समा दधिरे यैर्यादृग्ददृशे तादृगेवोच्यते तेऽस्माभिः सततं सत्कर्त्तव्याः॥६॥

**भावार्थः**-येऽन्येषु विद्याबलं धनसञ्चयञ्च स्थापयन्ति यैर्यादृशमात्मनि वर्त्तते तादृङ् मनसि यादृङ् मनसि तादृग्वाचा भाष्यते त एव आप्ता विज्ञेयाः॥६॥

**पदार्थः**-जो **(ज्रयः)** वेग वाले **(सिध्रया)** मङ्गलस्वरूप **(छायया)** छाया से **(अप्सु)** जलों वा प्राणों में **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(उरुषाम्)** बहुतों के विभाग करने वाले को **(महीम्)** बड़ी वाणी

और **(उरु)** बहुत **(बृहत्)** बड़े **(सुवीरम्)** सुन्दर वीर पुरुष जिससे उस **(अनपच्युतम्)** नाश से रहित **(सहः)** बल को **(सम्, आ, दधिरे)** उत्तम प्रकार धारण करते हैं और जिन लोगों से **(यादृक्)** जैसा **(ददृशे)** देखा जाता है **(तादृक्)** वैसा **(एव)** ही **(उच्यते)** कहा जाता है, वे हम लोगों से निरन्तर सत्कार करने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो अन्य जनों में विद्या के बल और धन के संचय को स्थापित करते हैं और जिनसे जैसा आत्मा में वर्त्तमान है, वैसा मन में और जैसा मन में वैसा वाणी से कहा जाता है, वे ही यथार्थवक्ता जानने योग्य हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेत्यग्रुर्जनिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः।**
**घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयमस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः॥७॥**

**वेति। अग्रुः। जनिऽवान्। वै। अति। स्पृधः। सऽमर्यता। मनसा। सूर्यः। कविः। घ्रंसम्। रक्षन्तम्। परि। विश्वतः। गयम्। अस्माकम्। शर्म। वनवत्। स्वऽवसुः॥७॥**

**पदार्थः**-**(वेति)** प्राप्नोति **(अग्रुः)** अग्रगन्ता **(जनिवान्)** विद्यायां जन्मवान् **(वै)** निश्चयेन **(अति)** **(स्पृधः)** स्पर्द्धन्ते येषु तान् स-ामान् **(समर्य्यता)** समरमिच्छता **(मनसा)** चित्तेन **(सूर्यः)** सवितेव **(कविः)** क्रान्तप्रज्ञः **(घ्रंसम्)** दिनम् **(रक्षन्तम्)** **(परि)** सर्वतः **(विश्वतः)** सर्वस्मात् **(गयम्)** श्रेष्ठमपत्यं धनं वा **(अस्माकम्)** **(शर्म)** गृहम् **(वनवत्)** संविभाजयेत् **(स्वावसुः)** स्वेषु यो वसति स्वान् वा वासयति॥७॥

**अन्वयः**-यः स्वावसुः सूर्य्य इव कविरग्रुर्जनिवान् विद्वान् समर्य्यता मनसा स्पृधोऽति वेति स वै सूर्य्यो घ्रंसमिवास्माकं विश्वतो रक्षन्तं गयं शर्म च परि वनवत् स वा अस्माभिः सत्कर्त्तव्यः॥७॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो विद्याविनयप्राप्तो दुष्टेषूग्रो धार्मिकेषु शान्तः सदैव दुष्टैः सह युद्धेन प्रजा रक्षन् सुखे वासयेत् स सूर्य्यवत् प्रकाशकीर्तिर्भवेत्॥७॥

**पदार्थः**-जो **(स्वावसुः)** अपनों में बसता वा अपनों को जो बसाता है वह **(सूर्य्यः)** सूर्य्य के सदृश **(कविः)** उत्तम बुद्धिमान् **(अग्रुः)** अग्रगन्ता **(जनिवान्)** विद्या में जन्मवान् विद्यायुक्त पुरुष **(समर्य्यता)** संग्राम की इच्छा करते हुए **(मनसा)** चित्त से **(स्पृधः)** स्पर्द्धा करते हैं जिनमें उन संग्रामो की इच्छा करते हुए **(अति, वेति)** अत्यन्त व्याप्त होता है, वह **(वै)** निश्चय से जैसे सूर्य्य **(घ्रंसम्)** दिन को वैसे **(अस्माकम्)** हम लोगों को **(विश्वतः)** सब से **(रक्षन्तम्)** रक्षा करते हुए **(गयम्)** श्रेष्ठ अपत्य वा धन और **(शर्म)** गृह का **(परि)** सब प्रकार से **(वनवत्)** संविभाग करे, वह हम लोगों से सत्कार करने योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्या और विनय को प्राप्त, दुष्टों में उग्र और धार्मिको में शान्त और सदा ही दुष्टों के साथ युद्ध करने से प्रजाओं की रक्षा करता हुआ सुख में वास करावे, वह सूर्य्य के सदृश प्रकाशित यश वाला हो॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुन ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते।**
**यादृश्मिन् धायि तमपस्यया विदद्य उ स्वयं वहते सो अरं करत्॥८॥**

**ज्यायांसम्। अस्य। यतुनस्य। केतुना। ऋषिऽस्वरम्। चरति। यासु। नाम। ते। यादृश्मिन्। धायि। तम्। अपस्यया। विदत्। यः। ऊँ इति। स्वयम्। वहते। सः। अरम्। करत्॥८॥**

**पदार्थः**-**(ज्यायांसम्)** श्रेष्ठम् **(अस्य)** **(यतुनस्य)** यत्नशीलस्य **(केतुना)** प्रज्ञानेन **(ऋषिस्वरम्)** ऋषीणामुपदेशम् **(चरति)** प्राप्नोति **(यासु)** प्रजासु **(नाम)** **(ते)** तव **(यादृश्मिन्)** यादृशो व्यवहारे **(धायि)** ध्रियते **(तम्)** **(अपस्यया)** आत्मनः कर्मेच्छया **(विदत्)** लभते **(यः)** **(उ)** **(स्वयम्)** **(वहते)** प्राप्नोति **(सः)** **(अरम्)** अलम् **(करत्)** कुर्य्यात्॥८॥

**अन्वयः**-योऽस्य यतुनस्य विदुषः केतुना ज्यायांसमृषिस्वरं चरति यस्य ते यासु नामास्ति यादृश्मिन् योऽन्यैर्धायि तमपस्यया विददु स्वयं वहते सोऽस्मानरं करत्॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तस्य सकाशात् प्राप्तेन बोधेन स्वयमुत्तमा भूत्वाऽन्यान् सुभूषितान् कुर्य्युस्ते सुखं लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अस्य)** इस **(यतुनस्य)** यत्न करने वाले विद्वान् के **(केतुना)** प्रज्ञान से **(ज्यायांसम्)** श्रेष्ठ **(ऋषिस्वरम्)** ऋषियों के उपदेश को **(चरति)** प्राप्त होता है और जिन **(ते)** आपका **(यासु)** जिन प्रजाओं में **(नाम)** नाम है और **(यादृश्मिन्)** जैसे व्यवहार में जो अन्य जनों से **(धायि)** धारण किया जाता है **(तम्)** उसको **(अपस्यया)** अपने कर्म्म की इच्छा से **(विदत्)** प्राप्त होता और **(उ)** भी **(स्वयम्)** स्वयम् **(वहते)** प्राप्त होता है **(सः)** वह हम लोगों को **(अरम्)** समर्थ **(करत्)** करे॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता जन के समीप से प्राप्त हुए बोध से स्वयं उत्तम होकर अन्यों को उत्तम प्रकार भूषित करें, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**समुद्रमासामव तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता।**
**अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी॥९॥**

**समुद्रम्। आसाम्। अव॑। तस्थे। अग्रिमा। न। रिष्यति। सव॑नम्। यस्मि॑न्। आऽय॑ता। अत्र॑। न। हार्दि॑। क्रवणस्य॑। रेजते। यत्र॑। मतिः। विद्यते॑। पूतऽबन्ध॑नी॥९॥**

**पदार्थः-(समुद्रम्)** अन्तरिक्षम् **(आसाम्)** प्रज्ञानाम् **(अव) (तस्थे)** अवतिष्ठते **(अग्रिमा)** अतिश्रेष्ठः **(न)** निषेधे **(रिष्यति)** हिनस्ति **(सवनम्)** ऐश्वर्य्यम् **(यस्मिन्) (आयता)** विस्तृतानि **(अत्रा)** अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(न)** निषेधे **(हार्दि)** हृदयस्येदम् **(क्रवणस्य)** शब्दकर्त्तुः **(रेजते)** चलति **(यत्रा)** अत्रापि **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(मतिः)** प्रज्ञा **(विद्यते) (पूतबन्धनी)** या पूतान् पवित्रान् गुणान् बध्नाति गृह्णाति सा॥९॥

**अन्वयः-**हे विद्वन्! यस्मिन्नग्रिमा सवनं च न रिष्यत्यासां समुद्रमव तस्थे यत्रायता धनानि वर्धन्ते पूतबन्धनी मतिश्च विद्यते नात्रा क्रवणस्य हार्दि रेजते॥९॥

**भावार्थः-**ये प्रजानां मध्येऽन्तरिक्षमिव सुखाऽवकाशदा अहिंस्रा धीमन्त उपदेशका विद्यन्ते त एव सुखयुक्ता भवन्ति॥९॥

**पदार्थः-**हे विद्वन्! **(यस्मिन्)** जिसमें **(अग्रिमा)** अतिश्रेष्ठ **(सवनम्)** ऐश्वर्य्य का **(न)** नहीं **(रिष्यति)** नाश करता है और **(आसाम्)** इन प्रजाओं के बीच **(समुद्रम्)** अन्तिरक्ष को **(अव, तस्थे)** स्थित होता है और **(यत्रा)** जहाँ **(आयता)** बहुत धनों की वृद्धि होती है और **(पूतबन्धनी)** पवित्र गुणों को ग्रहण करने वाली **(मतिः)** बुद्धि **(विद्यते)** विद्यमान है **(न)** नहीं **(अत्रा)** इस में **(क्रवणस्य)** शब्द करने वाले का **(हार्दि)** हृदयसम्बन्धी कार्य **(रेजते)** चलता है॥९॥

**भावार्थः-**जो प्रजाओं के मध्य में अन्तरिक्ष के सदृश सुखरूपी अवकाश देने वाले और नहीं हिंसा करने वाले बुद्धिमान् उपदेशक विद्यमान हैं, वे ही सुखयुक्त होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि क्षत्रस्य॑ मनस॑स्य चित्ति॑भिरेवावदस्य॑ यजतस्य सध्रेः।**

**अवत्सारस्य॑ स्पृणवाम रण्व॑भिः शवि॑ष्ठं वाजं॑ विदुषा॑ चिदर्ध्य॑म्॥१०॥२४॥**

**सः। हि। क्षत्रस्य॑। मनस॑स्य। चित्ति॑ऽभिः। एवऽवदस्य॑। यजतस्य॑। सध्रेः। अवऽत्सारस्य॑। स्पृणवाम। रण्व॑ऽभिः। शवि॑ष्ठम्। वाज॑म्। विदुषा॑। चित्। अर्ध्य॑म्॥१०॥**

**पदार्थः-(सः) (हि) (क्षत्रस्य)** राजकुलस्य राष्ट्रस्य वा **(मनसस्य)** यन्मन्यते तस्य **(चित्तिभिः)** चयनक्रियाभिः **(एवावदस्य)** एवान् प्राप्तान् गुणान् वदन्ति येन तस्य **(यजतस्य)** यजन्ति सङ्गच्छन्ते येन तस्य **(सध्रेः)** सहस्थानस्य **(अवत्सारस्य)** योऽवतो रक्षकान् सरति प्राप्नोति तस्य **(स्पृणवाम)** अभीच्छेम **(रण्वभिः)** रमणीयैः **(शविष्ठम्)** अतिशयेन बलिष्ठम् **(वाजम्)** विज्ञानवन्तम् **(विदुषा) (चित्) (अर्ध्यम्)** अर्द्धं भवम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याश्चित्तिभिर्यस्यैवावदस्य यजतस्याऽवत्सारस्य मनसस्य सध्रेः क्षत्रस्य सम्बन्धं स्पृणवाम विदुषा चिदर्ध्यं रण्वभिः शविष्ठं वाजं स्पृणवाम स ह्यस्मान् स्पृहेत्॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अहर्निशं राज्योन्नतिं चिकीर्षन्ति ते महाराजा जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(चित्तिभिः)** इकट्ठे करनेरूप क्रियाओं से जिस **(एवावदस्य)** एवावद् अर्थात् प्राप्त गुणों को कहते हैं जिससे वा **(यजतस्य)** मिलते हैं जिससे वा जो **(अवत्सारस्य)** रक्षकों को प्राप्त होते और **(मनसस्य)** माना जाता और उस **(सध्रेः)** तुल्य स्थान वाले **(क्षत्रस्य)** राजकुल वा राज्य के सम्बन्ध की **(स्पृणवाम)** इच्छा करें तथा **(विदुषा)** विद्वान् से **(चित्)** भी **(अर्ध्यम्)** अर्द्ध में उत्पन्न की तथा **(रण्वभिः)** रमणीयों से **(शविष्ठम्)** अत्यन्त बलिष्ठ **(वाजम्)** विज्ञानवान् की हम इच्छा करें **(स, हि)** वही हम लोगों की इच्छा करे॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दिन-रात्रि राज्य की उन्नति करने की इच्छा करते हैं, वे महाराज होते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**श्येन आसामदितिः कक्ष्यो३ मदो विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः।**
**समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते॥११॥**

**श्येनः। आसाम्। अदितिः। कक्ष्यः। मदः। विश्ववारस्य। यजतस्य। मायिनः। सम्। अन्यम्ऽअन्यम्। अर्थयन्ति। एतवे। विदुः। विऽसानम्। परिऽपानम्। अन्ति। ते॥११॥**

**पदार्थः**-**(श्येनः)** प्रशंसनीयगतिरश्वः **(आसाम्)** प्रजानाम् **(अदितिः)** अविनाशिनी प्रकृतिः **(कक्ष्यः)** कक्षासु भवः **(मदः)** आनन्दः **(विश्ववारस्य)** समग्रस्वीकरणीयस्य **(यजतस्य)** सङ्गतस्य **(मायिनः)** कुत्सिता माया विद्यन्ते यस्य तस्य **(सम्)** **(अन्यमन्यम्)** **(अर्थयन्ति)** अर्थं कुर्वन्ति **(एतवे)** प्राप्तुम् **(विदुः)** जानन्ति **(विषाणम्)** प्रविष्टम् **(परिपानम्)** परितः सर्वतो पानम् **(अन्ति)** समीपे **(ते)**॥११॥

**अन्वयः**-यो मनुष्यः श्येन इवासामदितिः कक्ष्यो मदश्च विश्ववारस्य यजतस्य मायिनोऽन्यमन्यमर्थयन्त्येतवेऽन्ति परिपानं विषाणं सं विदुस्ते सुखिनो जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसो दुष्टधियः श्रेष्ठप्रज्ञान् कुर्वन्ति श्येनपक्षीव दुष्टान् घ्नन्ति ते जना भद्राः सन्ति॥११॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य **(श्येनः)** प्रशंसनीय गमन वाले घोड़ें के सदृश **(आसाम्)** इन प्रजाओं की **(अदितिः)** नहीं नाश होने वाली प्रकृति और **(कक्ष्यः)** श्रेणियों में उत्पन्न **(मदः)** आनन्द **(विश्ववारस्य)** सम्पूर्ण स्वीकार करने योग्य **(यजतस्य)** मिले हुए **(मायिनः)** निकृष्ट बुद्धि वाले के **(अन्यमन्यम्)** अन्य

अन्य को **(अर्थयन्ति)** अर्थ करते अर्थात् याचते हैं और **(एतवे)** प्राप्त होने को **(अन्ति)** समीप में **(परिपानम्)** सब ओर से पान और **(विषाणम्)** प्रवेश किये हुए को **(सम्, विदुः)** उत्तम प्रकार जानते हैं, **(ते)** वे सुखी होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन दुष्ट बुद्धिवालों को श्रेष्ठ बुद्धियुक्त करते हैं और श्येन पक्षी के सदृश दुष्टों का नाश करते हैं, वे जन कल्याणकारक हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित्तर्यो वः सचा।**
**उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गणं भजते सुप्रयावभिः॥१२॥**

**सदाऽपृणः। यजतः। वि। द्विषः। वधीत्। बाहुऽवृक्तः। श्रुतऽवित्। तर्यः। वः। सचा। उभा। सः। वरा। प्रति। एति। भाति। च। यत्। ईम्। गणम्। भजते। सुप्रयावऽभिः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(सदापृणः)** यः सदा पृणाति तर्पयति सः **(यजतः)** सत्कर्त्ता **(वि)** **(द्विषः)** धर्मद्वेष्टॄन् **(वधीत्)** हन्ति **(बाहुवृक्तः)** यो बाहुभ्यां दुष्टान् वृङ्क्ते छिनत्ति **(श्रुतवित्)** यः श्रुतं वेत्ति **(तर्य्यः)** यस्तीर्यते तरितुं योग्यः **(वः)** युष्मान् **(सचा)** सम्बन्धी **(उभा)** उभौ **(सः)** **(वरा)** श्रेष्ठौ श्रोताश्रावकौ **(प्रति)** **(एति)** प्राप्नोति विजानाति वा **(भाति)** प्रकाशते प्रकाशयति वा **(च)** **(यत्)** यः **(ईम्)** एव **(गणम्)** समूहम् **(भजते)** सेवते **(सुप्रयावभिः)** ये सुष्ठु प्रयान्ति तैः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः श्रुतिवित्तर्य्यः सचा बाहुवृक्तो यजतः सदापृणस्सुप्रयावभिर्द्विषो वि वधीद्यश्च वः प्रत्येति सत्यं भाति गणं भजते स उभा वरे सत्कर्त्तुं शक्नोति॥१२॥

**भावार्थः**-ये बहुश्रुतो न्यायाचरणा दुष्टान् घ्नन्तः श्रेष्ठान् पालयन्ति ते सदा प्रसन्ना भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(श्रुतवित्)** श्रुत को जानने वाला **(तर्य्यः)** जो तैरा जाता वा तैरने के योग्य **(सचा)** सम्बन्धी **(बाहुवृक्तः)** बाहुओं से दुष्टों का नाश करने वाला **(यजतः)** सत्कर्ता **(सदापृणः)** सदा तृप्ति करने वाला **(सुप्रयावभिः)** उत्तम प्रकार चलने वालों से **(द्विषः)** धर्म्म के द्वेष करने वालों का **(वि, वधीत्)** विशेष करके नाश करता है **(च)** और जो **(वः)** आप लोगों को **(प्रति, एति)** प्राप्त होता वा विशेष करके जानता है, सत्य **(भाति)** प्रकाशित होता वा सत्य को प्रकाशित करता और **(गणम्)** समूह का **(भजते)** सेवन करता है **(सः)** वह **(उभा)** दोनों **(वरा)** श्रेष्ठ सुनने और सुनाने वालों का **(ईम्)** ही सत्कार कर सकता है॥१२॥

**भावार्थः**-जो बहुत शास्त्रों को सुननेवाले, न्याय का आचरण करने वाले जन दुष्टों का नाश करते हुए श्रेष्ठों का पालन करते हैं, वे सदा प्रसन्न होते हैं॥१२॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्य्यादित्युपदिश्यते॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिर्विश्वासामूधः स धियामुदञ्चनः।**

**भरद्धेनू रसवच्छिश्रिये पयोऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्॥१३॥**

**सुतम्ऽभरः। यजमानस्य। सत्ऽपतिः। विश्वासाम्। ऊधः। सः। धियाम्। उत्ऽअञ्चनः। भरत्। धेनुः। रसऽवत्। शिश्रिये। पयः। अनुऽब्रुवाणः। अधि। एति। न। स्वपन्॥१३॥**

**पदार्थः**-(**सुतम्भरः**) य उत्पन्नं जगद् बिभर्ति (**यजमानस्य**) सत्कर्त्तुः (**सत्पतिः**) सत्पुरुषाणां पालकः (**विश्वासाम्**) सर्वासाम् (**ऊधः**) ऊर्ध्वं गमयिता (**सः**) (**धियाम्**) प्रज्ञानां कर्म्मणां वा (**उदञ्चनः**) उत्कृष्टतां प्रापकः (**भरत्**) धरति (**धेनुः**) (**रसवत्**) बहुरसयुक्तम् (**शिश्रिये**) श्रयति (**पयः**) दुग्धमिव (**अनुब्रुवाणः**) पठित्वाऽनूपदिशन् (**अधि**) (**एति**) स्मरति (**न**) निषेधे (**स्वपन्**) शयानः सन्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्वान् यजमानस्य सुतम्भरो विश्वासां धियामुदञ्चन ऊधः सत्पती रसवत्पयो धेनुरिव विद्यां भरद्धर्मं शिश्रिये न स्वपन्नन्यान् प्रत्यनुब्रुवाणः सत्यस्याध्येति स एव सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥१३॥

**भावार्थः**-स एवोत्तमः पुरुषोऽस्ति यः कृतज्ञ आप्तसेवाप्रियः समग्रमनुष्येभ्यो बुद्धिप्रदो धेनुवत्सत्योपदेशवर्षकोऽविद्यादिक्लेशेभ्यः पृथग्वर्त्तमानोऽस्ति स एव सर्वैः सङ्गन्तव्यः॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् (**यजमानस्य**) सत्कार करने वाला (**सुतम्भरः**) उत्पन्न जगत् को धारण करने वाला (**विश्वासाम्**) सम्पूर्ण (**धियाम्**) प्रज्ञान और कर्म्मों का (**उदञ्चनः**) उत्कृष्टता को प्राप्त कराने और (**ऊधः**) ऊपर को पहुंचाने और (**सत्पतिः**) सत्पुरुषों का पालन करने वाला (**रसवत्**) बहुत रस से युक्त (**पयः**) दुग्ध को जैसे (**धेनुः**) गौ वैसे विद्या को (**भरत्**) धारण करता और धर्म्म का (**शिश्रिये**) आश्रयण करता और (**न**) न (**स्वपन्**) शयन करता हुआ अन्यों के प्रति (**अनु, ब्रुवाणः**) पढ़कर पीछे उपदेश देता हुआ सत्य का (**अधि, एति**) स्मरण करता है (**सः**) वही सत्कार करने योग्य है॥१३॥

**भावार्थः**-वही उत्तम पुरुष है, जो कृतज्ञ और यथार्थवक्ता जनों की सेवा में प्रिय, सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये बुद्धि देने और गौ के सदृश सत्य उपदेश का वर्षाने वाला और अविद्या आदि क्लेशों से पृथक् वर्त्तमान है, वही सब से मेल करने योग्य है॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।**

**यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥१४॥**

**यः। जागार। तम्। ऋचः। कामयन्ते। यः। जागार। तम्। ऊँ इति। सामानि। यन्ति। यः। जागार। तम्। अयम्। सोमः। आह। तव। अहम्। अस्मि। सख्ये। निऽओकाः॥१४॥**

**पदार्थः-(यः) (जागार)** अविद्यानिद्राया उत्थाय जागर्ति **(तम्) (ऋचः)** ऋच्छतयः **(कामयन्ते) (यः) (जागार) (तम्) (उ) (सामानि)** सामविभागाः **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(यः) (जागार) (तम्) (अयम्) (सोमः)** सोमलताद्योषधिगण ऐश्वर्य्यं वा **(आह)** वदति **(तव) (अहम्) (अस्मि) (सख्ये)** मित्रत्वे **(न्योकाः)** निश्चितस्थानः॥१४॥

**अन्वयः**-यो जागार तमृच इव जनाः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति यो जागार तमयं सोम इव न्योकाः सख्ये तवाहमस्मीत्याह॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये वेदविद्यां प्राप्तुमिच्छन्ति तानेव वेदविद्या प्राप्नोति यो मनुष्यादिभिः सह मैत्रीमाचरति स बहुसुखं लभते॥१४॥

**पदार्थः-(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठ के जागने वाला है **(तम्)** उसको **(ऋचः)** ऋचाओं के सदृश जन **(कामयन्ते)** कामना करते हैं और **(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठ के जागने वाला है **(तम्)** उसको **(उ)** भी **(सामानि)** सामवेद के विभाग **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं और **(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठके जागने वाला **(तम्)** उसको **(अयम्)** यह **(सोमः)** सोमलता आदि ओषधियों का समूह वा ऐश्वर्य्य के सदृश **(न्योकाः)** निश्चित स्थान वाला **(सख्ये)** मित्रत्व में **(तव)** आपका **(अहम्)** मैं **(अस्मि)** हूं, इस प्रकार **(आह)** कहता है॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वेदविद्या को प्राप्त होने की इच्छा करते हैं, उनको ही वेदविद्या प्राप्त होती और जो मनुष्य आदिकों के साथ मित्रता करता है, वह बहुत सुख को प्राप्त होता है॥१४॥

**ये सत्यं कामयन्ते ते प्राप्तसत्या जायन्ते॥**

जो सत्य की कामना करते हैं, वे सत्य को प्राप्त होते हैं॥

**अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।**
**अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥१५॥२५॥३॥**

**अग्निः। जागार। तम्। ऋचः। कामयन्ते। अग्निः। जागार। तम्। ऊँ इति। सामानि। यन्ति। अग्निः। जागार। तम्। अयम्। सोमः। आह। तव। अहम्। अस्मि। सख्ये। निऽओकाः॥१५॥**

**पदार्थः-(अग्निः)** पावक इव **(जागार)** जागृतो भवति **(तम्) (ऋचः)** प्रशंसितबुद्धयो विद्यार्थिनः **(कामयन्ते) (अग्निः)** पावकवद्वर्त्तमानः **(जागार) (तम्) (उ) (सामानि)** सामवेदप्रतिपादितविज्ञानानि **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(अग्निः) (जागार) (तम्) (अयम्) (सोमः)** विद्यैश्वर्य्यमिच्छुः **(आह) (तव) (अहम्) (अस्मि) (सख्ये) (न्योकाः)** निश्चितस्थानः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव जागार तमृचः कामयन्ते योऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति अग्निर्जागार तमयं न्योकाः सोमस्तव सख्येऽहमस्मीत्याह॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या निरलसाः पुरुषार्थिनो धार्मिका जायन्ते जितेन्द्रिया विद्यार्थिनश्च भवन्ति तानेव विद्यासुशिक्षे प्राप्नुतः॥१५॥

अत्र सूर्यमेघविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं तृतीयोऽनुवाकः पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसकी **(ऋचः)** प्रशंसित बुद्धि वाले विद्यार्थी जन **(कामयन्ते)** कामना करते हैं, और जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसको **(उ)** भी **(सामानि)** सामवेद में कहे हुए विज्ञान **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं **(अग्निः)** के सदृश वर्तमान **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसको **(अयम्)** यह **(न्योकाः)** निश्चित स्थान युक्त **(सोमः)** विद्या और ऐश्वर्य्य की इच्छा करने वाला **(तव)** आपकी **(सख्ये)** मित्रता में **(अहम्)** मैं **(अस्मि)** हूं ऐसा **(आह)** कहता है॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य आलस्य से रहित पुरुषार्थी धार्मिक होते और जितेन्द्रिय विद्यार्थी होते हैं, उन्हीं को विद्या और उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है॥१५॥

इस सूक्त में सूर्य, मेघ और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवां सूक्त, तीसरा अनुवाक और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथैकादशर्चस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य सदापृण आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २ पङ्क्तिः। ५, ९, ११ भुरिक् पङ्क्तिः। ८, १०, स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सूर्य्यविषयमाह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले पैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में आदित्य विषय को कहते हैं॥

**विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैरायत्या उषसो अर्चिनो गुः।**
**अपावृत व्रजिनीरुत्स्वर्गाद् वि दुरो मानुषीर्देव आवः॥ १॥**

विदाः। दिवः। विऽस्यन्। अद्रिम्। उक्थैः। आऽयत्याः। उषसः। अर्चिनः। गुः। अप। अवृत। व्रजिनीः। उत्। स्वः। गात्। वि। दुरः। मानुषीः। देवः। आवरित्याव॥ १॥

**पदार्थः**-(**विदाः**) विद्वांसः (**दिवः**) कामयमानाः (**विष्यन्**) व्याप्नुवन्ति (**अद्रिम्**) मेघम् (**उक्थैः**) वेदविद्याजन्यैरुपदेशैः (**आयत्याः**) पश्चाद्भवाः (**उषसः**) प्रभाताः (**अर्चिनः**) सत्कर्त्तारः (**गुः**) गच्छन्ति (**अप**) (**अवृत**) दूरीकुर्वन्ति (**व्रजिनीः**) वर्जनक्रियाः (**उत्**) (**स्वः**) आदित्यः (**गात्**) प्राप्नोति (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**मानुषीः**) मनुष्याणामिमाः (**देवः**) दिव्यगुणः (**आवः**) आवृणोति॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स्वरादित्यो देवो मेघो वा मानुषीर्दुरो वि गादावोऽद्रिं व्रजिनीश्च उदपावृत तथैव दिवो विदा अर्चिन उक्थैरायत्या उषस इव विष्यन् गुस्तान् सततं सेवध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य उषसादित्यवन्मनुष्यप्रजासु विद्याधर्मप्रकाशकाः स्युस्त एवाऽध्यापकोपदेशका भवन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**स्वः, देवः**) श्रेष्ठ गुणों से विशिष्ट सूर्य्य वा मेघ (**मानुषीः**) मनुष्य सम्बन्धी (**दुरः**) द्वारों को (**वि, गात्**) विशेषतया प्राप्त होता और (**आवः**) ढांपता है और (**अद्रिम्**) मेघ को और (**व्रजिनीः**) वर्जन क्रियाओं को (**उद्, अप, अवृत**) अत्यन्त दूर करते हैं, वैसे ही (**दिवः**) कामना करते हुए (**विदाः**) विद्वान् जन (**अर्चिनः**) सत्कार करने वाले (**उक्थैः**) वेदविद्या से उत्पन्न हुए उपदेशों से (**आयत्याः**) पीछे से हुए (**उषसः**) प्रभात कालों के सदृश (**विष्यन्**) व्याप्त होते और (**गुः**) चलते हैं, उनकी निरन्तर सेवा करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो प्रभातकाल और सूर्य्य के सदृश मनुष्यरूप प्रजाओं में विद्या और धर्म्म के प्रकाश करने वाले होवें, वे ही अध्यापक और उपदेशक होवें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादोर्वाद् गवां माता जानती गात्।**
**धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दृंहत द्यौः॥२॥**

**वि। सूर्यः। अमतिम्। न। श्रियम्। सात्। आ। ऊर्वात्। गवाम्। माता। जानती। गात्। धन्वऽअर्णसः। नद्यः। खादःऽअर्णाः। स्थूणाऽइव। सुऽमिता। दृंहत। द्यौः॥२॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**सूर्य्यः**) (**अमतिम्**) रूपम् (**न**) इव (**श्रियम्**) (**सात्**) विभजति (**आ**) (**ऊर्वात्**) बहुरूपात् (**गवाम्**) किरणानाम् (**माता**) जननी (**जानती**) (**गात्**) अगाद् गच्छति (**धन्वर्णसः**) धन्वे स्थलेऽर्णांसि यासां ताः (**नद्यः**) या नदन्ति ताः (**खादोअर्णाः**) खादो भक्षणीयान्यन्नानि वा यान्यर्णांसि यासु ताः (**स्थूणेव**) स्थूणावत् (**सुमिता**) सुष्ठुकृतप्रमाणानि (**दृंहत**) वर्धयति धरति वा (**द्यौः**) कामयमानः॥२॥

**अन्वयः**-यो द्यौः सुमिता स्थूणेव विद्यादिसद्गुणान् दृंहत खादोअर्णा धन्वर्णसो नद्य इव जानती मातेव शिष्यानुपदेश्यान् गात् सूर्य्योऽमतिं न श्रियं वि षाद् गवामूर्वादैश्वर्यमा गात् स एव सर्वान् सुखयितुमर्हेत्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये सूर्यवद्विद्यां जननीवत्कृपां नदीवदुपकारं स्तम्भवद्धारणं कुर्वन्ति त एव श्रीमन्तः सदा सुखिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो (**द्यौः**) कामना करता हुआ (**सुमिता**) उत्तम प्रकार किया प्रमाण जिनका (**स्थूणेव**) स्तम्भ के समान विद्या आदि सद्गुणों को (**दृंहत**) बढ़ाता या धारण करता तथा (**खादोअर्णाः**) भक्षण करने योग्य अन्न और जल जिनमें और (**धन्वर्णसः**) स्थल में जल जिनका ऐसी (**नद्यः**) शब्द करनेवाली नदियों के सदृश वा (**जानती**) जानती हुई (**माता**) माता के सदृश शिष्यों और उपदेश करने योग्यों को (**गात्**) प्राप्त होता है और (**सूर्यः**) सूर्य्य (**अमतिम्**) रूप के (**न**) सदृश (**श्रियम्**) लक्ष्मी का (**वि, सात्**) विशेष करके विभाग करता है (**गवाम्**) किरणों के (**ऊर्वात्**) बहुत रूप से ऐश्वर्य्य को (**आ**) अच्छे प्रकार प्राप्त होता है, वही सब को सुखी करने को योग्य होवे॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो सूर्य्य के सदृश विद्या माता के सदृश कृपा, नदी के सदृश उपकार और खम्भ के सदृश धारणा करते हैं, वे ही श्रीमान् और सदा सुखी होते हैं॥२॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय।**
**वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौराविवासन्तो दसयन्त भूम॥३॥**

**अस्मै। उक्थाय। पर्वतस्य। गर्भः। महीनाम्। जनुषे। पूर्व्याय। वि। पर्वतः। जिहीत। साधत। द्यौः। आऽविवासन्तः। दसयन्त। भूम॥३॥**

**पदार्थः**-(**अस्मै**) (**उक्थाय**) प्रशंसिताय (**पर्वतस्य**) मेघस्य (**गर्भः**) कारणभूतः (**महीनाम्**) भूमीनाम् (**जनुषे**) जन्मने (**पूर्व्याय**) पूर्वेषु भवाय (**वि**) (**पर्वतः**) पक्षीव पर्ववान् मेघः (**जिहीत**) गच्छति (**साधत**) साध्नुवन्तु (**द्यौः**) कामयमान इव (**आविवासन्तः**) सर्वतः परिचरन्तः (**दसयन्त**) दोषानुपक्षयन्तु (**भूम**) भवेम॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो महीनां पर्वतस्य च पूर्व्याय जनुषेऽस्मा उक्थाय गर्भः पर्वत इव द्यौर्वि जिहीत यमाविवासन्तः साधत येन दुःखं दसयन्त तेन तुल्या वयं भूम॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्यार्थिषु विद्याया गर्भं दधति ते मेघवत्सर्वेषां सुखकारका भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**महीनाम्**) भूमियों और (**पर्वतस्य**) मेघ के (**पूर्व्याय**) पूर्वों में उत्पन्न (**जनुषे**) जन्म के लिये तथा (**अस्मै**) इस (**उक्थाय**) प्रशंसित के लिये (**गर्भः**) कारणभूत (**पर्वतः**) पक्षी के समान पर्ववान् मेघ वा (**द्यौः**) कामना करते हुए के सदृश (**वि, जिहीत**) विशेष चलता है और जिसको (**आविवासन्तः**) सब ओर घूमते हुए (**साधत**) सिद्ध करें, जिससे दुःख का और (**दसयन्त**) दोषों का नाश करें, उसके तुल्य हम लोग (**भूम**) होवें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्यार्थियों में विद्या के गर्भ की धारण करते हैं, वे मेघ के सदृश सब के सुखकारक होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्व१ग्नी अवसे हुवध्यै।
### उक्थेभिर्हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति॥४॥

**सुऽउक्तेभिः। वः। वचःऽभिः। देवऽजुष्टैः। इन्द्रा। नु। अग्नी इति। अवसे। हुवध्यै। उक्थेभिः। हि। स्म। कवयः। सुऽयज्ञाः। आऽविवासन्तः। मरुतः। यजन्ति॥४॥**

**पदार्थः**-(**सूक्तेभिः**) सुष्ठूच्यन्ते यानि तैः (**वः**) युष्मान् (**वचोभिः**) सुशिक्षितैर्वचनैः (**देवजुष्टैः**) विद्वद्भिः सेवितैः (**इन्द्रा**) विद्युतम् (**नु**) सद्यः (**अग्नी**) पावकौ (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**हुवध्यै**) ग्रहीतुम् (**उक्थेभिः**) प्रशंसकैः (**हि**) निश्चयेन (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**कवयः**) मेधाविनो विद्वांसः (**सुयज्ञाः**) शोभना यज्ञा विद्याधर्मप्रचारिका क्रिया येषान्ते (**आविवासन्तः**) सत्यं समन्तात् सेवमानाः (**मरुतः**) मनुष्याः (**यजन्ति**) सङ्गच्छन्ते॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा आविवासन्तः सुयज्ञाः कवयो मरुतः सूक्तेभिर्देवजुष्टैरुक्थेभिर्वचोभि-

हीन्द्राग्नी वो युष्मांश्चावसे हुवध्यै नु यजन्ति तथा स्मा यूयमप्येवं यजत॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सर्वार्थं सुखं विद्यां विज्ञानं सेवमाना अग्न्यादिविद्यां सर्वेभ्यः प्रयच्छन्ति त एवोत्तमा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(आविवासन्तः)** सत्य का सब प्रकार से सेवन करते हुए **(सुयज्ञाः)** सुन्दर विद्या और धर्म के प्रचार करने वाली क्रिया जिनकी ऐसे **(कवयः)** बुद्धिमान् विद्वान् **(मरुतः)** मनुष्य **(सूक्तेभिः)** जो उत्तम प्रकार कहे जायें उन **(देवजुष्टैः)** विद्वानों से सेवित और **(उक्थेभिः)** प्रशंसा करने वाले **(वचोभिः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वचनों से **(हि)** निश्चय से **(इन्द्रा)** बिजुली **(अग्नी)** और अग्नि को तथा **(वः)** आप लोगों को **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(हुवध्यै)** ग्रहण करने को **(नु)** शीघ्र **(यजन्ति)** मिलते हैं, वैसे **(स्मा)** ही आप लोग भी इस प्रकार मिलो॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सब के लिये सुख, विद्या और विज्ञान का सेवन करते हुए अग्नि आदि की विद्या को सब के लिये देते हैं, वे ही उत्तम होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतो न्व१॒॑द्य सुध्यो॑३॒ भवा॑म॒ प्र दु॒च्छुना॑ मिनवामा॒ वरी॑यः।**

**आ॒रे द्वेषां॑सि सनु॒तर्द॑धा॒माया॑म॒ प्राञ्चो॒ यज॑मानम॒च्छ॥५॥२६॥**

**ए॒तो इति॑। नु। अ॒द्य। सु॒ऽध्यः॑। भवा॑म। प्र। दु॒च्छुनाः॑। मि॒न॒वा॒म॒। वरी॑यः। आ॒रे। द्वेषां॑सि। स॒नु॒तः। द॒धा॒म॒। अया॑म। प्राञ्चः॑। यज॑मानम्। अच्छ॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(एतो)** एते **(नु)** **(अद्य)** **(सुध्यः)** शोभना धीर्येषान्ते **(भवाम)** **(प्र)** **(दुच्छुनाः)** दुष्टाः श्वान इव वर्त्तमानाः **(मिनवामा)** हिंसेम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वरीयः)** अतिशयेन वरम् **(आरे)** समीपे दूरे वा **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्तानि कर्म्माणि **(सनुतः)** सदा **(दधाम)** **(अयाम)** गमयेम **(प्राञ्चः)** प्राक्तना चिरमायवः **(यजमानम्)** सङ्गन्तारम् **(अच्छ)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽद्यैतो वयं नु सुध्यो भवाम ये दुच्छुनास्तान् प्र मिनवामा द्वेषांस्यार अयाम प्राञ्चो वयं सनुतर्वरीयो यजमानं चाच्छ दधाम तथा यूयमपि धत्त॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विज्ञानं वर्धयन्तो दुष्टान् निवारयन्तो द्वेषादिदोषरहिताः सन्तस्सनातनं सत्यं धरन्ति तेऽतीव प्रशंसनीया भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अद्य)** आज **(एतो)** ये हम लोग **(नु)** शीघ्र **(सुध्यः)** अच्छी बुद्धि वाले **(भवाम)** हों और जो **(दुच्छुनाः)** दुष्ट कुत्तों के सदृश वर्त्तमान उनका **(प्र, मिनवामा)** अत्यन्त नाश करें और **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्त कर्म्मों को **(आरे)** समीप वा दूर में **(अयाम)** प्राप्त करावें **(प्राञ्चः)** प्राचीन काल

में वर्त्तमान अधिक अवस्था वाले हम लोग **(सनुत:)** सदा **(वरीय:)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(यजमानम्)** मिलने वाले को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(दधाम)** धारण करें, वैसे आप लोग भी धारण करो॥५॥

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विज्ञान को बढ़ाते, दुष्टों का निवारण करते और द्वेष आदि दोषों से रहित हुए सनातन सत्य को धारण करते हैं, वे अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं॥

**पुनर्मनुष्यै: प्रज्ञा कथं प्राप्तव्येत्याह॥**

फिर मनुष्यों को उत्तम बुद्धि कैसे प्राप्त होनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता धियं कृणवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गो:।**

**यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम्॥६॥**

**आ। इत। धियम्। कृणवाम। सखाय:। अप। या। माता। ऋणुत। व्रजम्। गो:। यया। मनु:। विशिऽशिप्रम्। जिगाय। यया। वणिक्। वङ्कु:। आप। पुरीषम्॥६॥**

**पदार्थ:-(आ)** समन्तात् **(इता)** प्राप्नुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घ:। **(धियम्)** प्रज्ञानम् **(कृणवामा)** कुर्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घ:। **(सखाय:)** सुहृद: सन्त: **(अप)** **(या)** **(माता)** जननीव **(ऋणुत)** साध्नुत **(व्रजम्)** मेघम् **(गो:)** किरणात् **(यया)** **(मनु:)** मनुष्य: **(विशिशिप्रम्)** विशीशिप्रे शोभने हनुनासिके यस्य तम् **(जिगाय)** जयति **(यया)** **(वणिक्)** व्यापारी वैश्य: **(वङ्कु:)** धनेच्छु: **(आपा)** आप्नोति। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घ:। **(पुरीषम्)** पूर्तिकरमुदकम्। **पुरीषमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१।१२)॥६॥

**अन्वय:-**हे मनुष्या! यथा मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वङ्कुर्वणिक् पुरीषमापा तां धियं सखायो वयं कृणवामा यथा या माता गोर्व्रजं करोति दु:खमप नयति तथैतं यूयमृणुत धियमेता॥६॥

**भावार्थ:-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। मनुष्याणां योग्यमस्त्यन्योऽन्येषु सखायो भूत्वा बुद्धिं वर्धयित्वाऽन्येभ्यो विज्ञानं प्रदद्यु यथा वैश्यो धनं प्राप्यैधते तथा प्रज्ञां प्राप्य वर्द्धन्ताम्॥६॥

**पदार्थ:-**हे मनुष्यो! **(यया)** जिससे **(मनु:)** मनुष्य **(विशिशिप्रम्)** सुन्दर ठुड्डी और नासिका जिसकी उसको **(जिगाय)** जीतता है **(यया)** जिससे **(वङ्कु:)** धन की इच्छा करने वाला **(वणिक्)** व्यापारी वैश्य **(पुरीषम्)** पूर्ण करने वाले जल को **(आपा)** प्राप्त होता है उस **(धियम्)** बुद्धि को **(सखाय:)** मित्र होते हुए हम लोग **(कृणवामा)** करें और जैसे **(या)** जो **(माता)** माता के सदृश **(गो:)** किरण से **(व्रजम्)** मेघ को करता है और दु:ख को **(अप)** दूर करता है, वैसे इसको आप लोग **(ऋणुत)** सिद्ध करिये और बुद्धि को **(आ)** सब प्रकार **(इता)** प्राप्त हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को योग्य है कि परस्पर में मित्र होकर बुद्धि को बढ़ाय औरों के लिये विशेष ज्ञान अच्छे प्रकार देवें, जैसे वैश्य धन को प्राप्त होकर बढ़ता है, वैसे उत्तम बुद्धि को पाकर बढ़े॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिरार्चन् येन दश मासो नवग्वाः।**

**ऋतं यती सरमा गा अविन्दद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार॥७॥**

अनूनोत्। अत्र। हस्तऽयतः। अद्रिः। आर्चन्। येन। दश। मासः। नवऽग्वाः। ऋतम्। यती। सरमा। गाः। अविन्दत्। विश्वानि। सत्या। अङ्गिराः। चकार॥७॥

**पदार्थः**-**(अनूनोत्)** प्रेरयेत् **(अत्र)** **(हस्तयतः)** हस्ता यता निगृहीता वशीभूता यस्य सः **(अद्रिः)** मेघ इव **(आर्चन्)** सत्कुर्वन् **(येन)** **(दश)** **(मासः)** चैत्राद्याः **(नवग्वाः)** नवीनगतयः **(ऋतम्)** सत्यम् **(यती)** यतमाना **(सरमा)** समानरमणा **(गाः)** इन्द्रियाणि **(अविन्दत्)** प्राप्नोति **(विश्वानि)** सर्वाणि **(सत्या)** सत्यानि **(अङ्गिराः)** अङ्गानां रसरूपः प्राण इव **(चकार)** करोति॥७॥

**अन्वयः**-येनात्र नवग्वा दश मासो वर्त्तन्ते हस्तयतोऽद्रिरार्चन्ननूनोद्या सरमा ऋतं यती गा अविन्दत्। यश्चाङ्गिरा विश्वानि सत्या चकार ते सत्कर्त्तुमर्हाः सन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वदा सत्याचारा भूत्वा सर्वोपकारं साध्नुवन्ति तेऽत्र धर्मात्मानो गण्यन्ते॥७॥

**पदार्थः**-**(येन)** जिससे **(अत्र)** इस संसार में **(नवग्वाः)** नवीन गमन वाले **(दश)** दश **(मासः)** चैत्र आदि महीने वर्तमान हैं और **(हस्तयतः)** हाथ निग्रह किये अर्थात् वशीभूत किये जिसके वह **(अद्रिः)** मेघ के सदृश **(आर्चन्)** सत्कार करता हुआ **(अनूनोत्)** प्रेरणा करे और जो **(सरमा)** तुल्य रमनेवाली **(ऋतम्)** सत्य का **(यती)** यत्न करती हुई **(गाः)** इन्द्रियों को **(अविन्दत्)** प्राप्त होती है और जो **(अङ्गिराः)** अङ्गों का रसरूप प्राण के सदृश **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(सत्या)** सत्य कार्य्यों को **(चकार)** करता है, वे सत्कार करने योग्य हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सर्वदा सत्य आचारण से युक्त होकर सब के उपकार को सिद्ध करते हैं, वे इस संसार में धर्मात्मा गिने जाते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्तना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त।**

**उत्सं आसां परमे सधस्थं ऋतस्यं पथा सरमा विदद्गाः॥८॥**

**विश्वे। अस्याः। विऽउषि। माहिनायाः। सम्। यत्। गोभिः। अङ्गिरसः। नवन्त। उत्सः। आसाम्। परमे। सधऽस्थे। ऋतस्य। पथा। सरमा। विदत्। गाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**अस्याः**) उषसः (**व्युषि**) विशिष्टे निवासे (**माहिनायाः**) महत्त्वयुक्तायाः (**सम्**) (**यत्**) यतः (**गोभिः**) किरणैः (**अङ्गिरसः**) वायवः (**नवन्त**) स्तुवन्ति (**उत्सः**) कूप इव (**आसाम्**) उषसाम् (**परमे**) प्रकृष्टे (**सधस्थे**) सहस्थाने (**ऋतस्य**) सत्यस्योदकस्य वा (**पथा**) मार्गेण (**सरमा**) या सरान् प्राप्तान् (**विदत्**) वेत्ति (**गाः**) किरणान्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा विश्वे प्राणिनो माहिनाया अस्या व्युषि गोभिस्सहाङ्गिरसः सन्नवन्त यदासां परमे सधस्थ ऋतस्य पथा उत्स इव सरमा गा विदत् तांस्तांश्च यूयं विजानीत॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यता प्रभातवेलायां प्राणिनो हर्षन्ति तथैव निःसन्देहा भूत्वा मनुष्या आनन्दन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**विश्वे**) सम्पूर्ण प्राणी (**माहिनायाः**) महत्त्व से युक्त (**अस्याः**) प्रातर्वेला के (**व्युषि**) विशिष्ट निवास में (**गोभिः**) किरणों के साथ (**अङ्गिरसः**) पवन (**सम्, नवन्त**) अच्छे प्रकार स्तुति करते हैं (**यत्**) जिससे (**आसाम्**) इन प्रातर्वेलाओं के (**परमे**) प्रकृष्ट (**सधस्थे**) साथ के स्थान में (**ऋतस्य**) सत्य वा जल के (**पथा**) मार्ग से (**उत्सः**) कूप के सदृश (**सरमा**) प्राप्त हुओं का आदर करनेवाली (**गाः**) किरणों को (**विदत्**) जानती है, उन उनको आप लोग विशेष कर जानिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभातवेला में प्राणी प्रसन्न होते हैं, वैसे ही सन्देहरहित होकर मनुष्य आनन्दित होते हैं॥८॥

**पुनः सूर्य्यवन्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्युपदिश्यते॥**

फिर सूर्य्य के समान मनुष्य क्या करें, उसका उपदेश करते हैं॥

**आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे।**

**रघुः श्येन पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन्॥९॥**

**आ। सूर्यः। यातु। सप्तऽअश्वः। क्षेत्रम्। यत्। अस्य। उर्विया। दीर्घऽयाथे। रघुः। श्येनः। पतयत्। अन्धः। अच्छ। युवा। कविः। दीदयत्। गोषु। गच्छन्॥९॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**सूर्य्यः**) सविता (**यातु**) गच्छतु (**सप्ताश्वः**) सप्तविधा अश्वा आशुगामिनः किरणा यस्य सः (**क्षेत्रम्**) निवासस्थानम् (**यत्**) (**अस्य**) (**उर्विया**) पृथिव्याः (**दीर्घयाथे**) यान्ति यस्मिन्त्स याथो मार्गः दीर्घश्चासौ याथस्तस्मिन् (**रघुः**) लघुः (**श्येनः**) अन्तरिक्षस्थः श्येन इव (**पतयत्**) पतिरिवाचरति (**अन्धः**) अन्नादिकम् (**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**युवा**)

मिश्रितामिश्रितकर्त्ता यौवनावस्थः **(कविः)** मेधावी विद्वान् **(दीदयत्)** प्रकाशयति **(गोषु)** पृथिवीषु **(गच्छन्)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सप्ताश्वः सूर्य्यो यत् क्षेत्रमस्योर्विया दीर्घयाथे रघुः श्येन इवान्तरिक्षे याति तथा भवान् सेनाया मध्य आ यातु यथा गोषु गच्छन् दीदयत्तथा युवा कविरच्छान्धः पतयदिति विजानीत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्मिन् सूर्ये सप्त तत्त्वानि सन्ति यः स्वक्षेत्रं विहाय इतस्ततो नो गच्छति तथा बहूनां भूगोलानां मध्य एकः सन् प्रकाशते तथैव सर्वे पुरुषा भवन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सप्ताश्वः)** सात प्रकार शीघ्र चलनेवाली किरणें जिसकी ऐसा **(सूर्य्यः)** सूर्य्य **(यत्)** जिस **(क्षेत्रम्)** निवास के स्थान को **(अस्य)** इस जगत् सम्बन्धिनी **(उर्विया)** पृथिवी के **(दीर्घयाथे)** चलें जिसमें ऐसे बड़े मार्ग में **(रघुः)** लघु **(श्येनः)** अन्तरिक्षस्थ बाज पक्षी के सदृश अन्तरिक्ष में जाता है, वैसे आप सेना के मध्य में **(आ)** सब प्रकार से **(यातु)** प्राप्त हूजिये और जैसे **(गोषु)** पृथिवियों में **(गच्छन्)** चलता हुआ **(दीदयत्)** प्रकाश करता है, वैसे **(युवा)** मिले और नहीं मिले हुए को करने वाले यौवनावस्थायुक्त **(कविः)** बुद्धिमान् विद्वान् **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(अन्धः)** अन्न आदि का **(पतयत्)** स्वामी के सदृश आचरण करता है, यह जानो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस सूर्य्य में सात तत्त्व हैं और जो और जो अपने चक्र को छोड़ के इधर-उधर नहीं जाता है और बहुत भूगोलों के मध्य में एक ही प्रकाशित है, वैसे ही सब पुरुष होवें॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ सूर्यो॑ अरुहच्छु॒क्रमर्णोऽयु॑क्त॒ यद्ध॒रितो॑ वी॒तपृ॑ष्ठाः।**

**उ॒द्ना न नाव॑मनयन्त॒ धीरा॑ आशृ॒ण्वती॒रापो॑ अ॒र्वाग॑तिष्ठन्॥१०॥**

आ। सूर्यः॑। अ॒रु॒ह॒त्। शु॒क्रम्। अर्णः॑। अयु॑क्त। यत्। ह॒रितः॑। वी॒तऽपृ॑ष्ठाः। उ॒द्ना। न। नाव॑म्। अ॒न॒य॒न्त॒। धीराः॑। आ॒ऽशृ॒ण्वतीः॑। आपः॑। अ॒र्वाक्। अ॒ति॒ष्ठ॒न्॥१०॥

**पदार्थः**-**(आ) (सूर्य्यः) (अरुहत्)** रोहति **(शुक्रम्)** वीर्य्यम् **(अर्णः)** उदकम् **(अयुक्त)** युनक्ति **(यत्) (हरितः)** ये हरन्त्युदकादिकम् **(वीतपृष्ठाः)** वीतानि व्याप्तानि लोकलोकान्तराणां पृष्ठानि यैस्ते **(उद्ना)** उदकेन **(न)** इव **(नावम्) (अनयन्त)** नयन्ति **(धीराः)** ध्यानवन्तो मेधाविनः **(आशृण्वतीः)** याः समन्ताच्छृण्वन्ति ताः **(आपः)** प्राणाः **(अर्वाक्)** पश्चात् **(अतिष्ठन्)** तिष्ठन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्सूर्यः शुक्रमारुहदर्णोऽयुक्त वीतपृष्ठा हरितो धीरा उद्ना नावं नानयन्तार्वागाशृण्वतीरापोऽतिष्ठन् तत्सर्वं यूयं विजानीत॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सूर्य्यजलादिविद्यां विज्ञाय नावादिकं चालयेयुस्ते श्रीमन्तो जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(सूर्य्यः)** सूर्य्य **(शुक्रम्)** वीर्य का **(आ, अरुहत्)** आरोहण करता और **(अर्णः)** उदक का **(अयुक्त)** योग करता है और **(वीतपृष्ठाः)** व्याप्त हैं लोकान्तरों के पृष्ठ जिनसे वे **(हरितः)** जल आदि को हरने वाले **(धीराः)** ध्यानवान् बुद्धिमान् जन **(उद्ना)** जल से **(नावम्)** नौका को **(न)** जैसे वैसे **(अनयन्त)** प्राप्त होते अर्थात् व्यवहार को पहुंचते हैं **(अर्वाक्)** पीछे **(आशृण्वतीः)** जो चारों ओर से सुन पड़ते हैं वह **(आपः)** प्राण **(अतिष्ठन्)** स्थित होते हैं, उस सब को आप लोग जानें॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सूर्य्य और जल आदि की विद्याओं को जान के नौका आदि को चलावें, वे लक्ष्मीवान् होते हैं॥१०॥

**ये मनुष्याः प्रज्ञां याचन्ते ते विद्वांसो जायन्त इत्याह॥**

जो मनुष्य उत्तम बुद्धि की याचना करते हैं, वे विद्वान् होते हैं,

इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन् दश मासो नवग्वाः।**

**अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः॥११॥२७॥**

**धियम्। वः। अप्ऽसु। दधिषे। स्वःसाम्। यया। अतरन्। दश। मासः। नवऽग्वाः। अया। धिया। स्याम। देवऽगोपाः। अया। धिया। तुतुर्याम। अति। अंहः॥११॥**

**पदार्थः**-**(धियम्)** प्रज्ञां कर्म वा **(वः)** युष्माकम् **(अप्सु)** **(दधिषे)** धारयेयम् **(स्वर्षाम्)** स्वः सुखं सनति विभजति यया ताम् **(यया)** **(अतरन्)** तरन्ति **(दश)** **(मासः)** **(नवग्वाः)** नवीनगतयः **(अया)** अनया **(धिया)** **(स्याम)** **(देवगोपाः)** देवानां विदुषां रक्षकाः **(अया)** **(धिया)** **(तुतुर्याम)** विनाशयेम **(अति)** **(अंहः)** पापं पापजन्यं दुःखं वा॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यया नवग्वा दश मासोऽतरन्नया धिया वयं देवगोपाः स्यामाऽया धियांऽहोऽति तुतुर्याम वः स्वर्षां तां धियमप्सु प्राणेष्वहं दधिषे॥११॥

**भावार्थः**-ये धीमन्तो धनवन्तो बलाढ्या भूत्वा सर्वान् रक्षन्ति ते दुःखानि तरन्ति॥११॥

अत्र सूर्य्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तं सप्तविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यया)** जिससे **(नवग्वाः)** नवीन गमन वाले **(दश)** दश **(मासः)** महीने **(अतरन्)** पार होते हैं **(अया)** इस **(धिया)** बुद्धि से हम लोग **(देवगोपाः)** विद्वानों के रक्षक **(स्याम)** होवें और **(अया)** इस **(धिया)** बुद्धि से **(अंहः)** पाप वा पाप से उत्पन्न दुःख का **(अति, तुतुर्याम)** अत्यन्त विनाश करें **(वः)** आपकी **(स्वर्षाम्)** सुख का विभाग करता है जिससे उस **(धियम्)** बुद्धि को **(अप्सु)** प्राणों में मैं **(दधिषे)** धारण करूं॥११॥

**भावार्थः**-जो बुद्धिमान्, धनवान् और बल से युक्त होकर सब की रक्षा करते हैं, वे दुःखों के पार होते हैं॥११॥

इस सूक्त में सूर्य्य और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के संगति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतालीसवां सूक्त और सत्ताईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य षट्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिक्षत्र आत्रेय ऋषिः। १-६ विश्वेदेवाः। ७-८ देवपत्न्यो देवताः। १ भुरिग्जगती। ३, ४, ५, ६ निचृज्जगती। ७ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ शिल्पविद्याविद्वान् यानानि निर्माय सुखेन पन्थानं गच्छतीत्याह॥***

अब आठ ऋचा वाले छयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में शिल्पविद्या का विद्वान् रथों को रचकर सुख से मार्ग को जाता है, इस विषय को कहते हैं॥

**हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।**
**नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान् पथः पुरएत ऋजु नेषति॥१॥**

**हयः। न। विद्वान्। अयुजि। स्वयम्। धुरि। ताम्। वहामि। प्रऽतरणीम्। अवस्युवम्। न। अस्याः। वश्मि। विऽमुचम्। न। आऽवृतम्। पुनः। विद्वान्। पथः। पुरःऽएता। ऋजु। नेषति॥१॥**

**पदार्थः**-(**हयः**) सुशिक्षितोऽश्वः (**न**) इव (**विद्वान्**) (**अयुजि**) असंयुक्तायाम् (**स्वयम्**) (**धुरि**) मार्गे (**ताम्**) (**वहामि**) प्राप्नोमि प्रापयामि वा (**प्रतरणीम्**) प्रतरन्ति यया ताम् (**अवस्युवम्**) आत्मनोऽवमिच्छन्तीम् (**न**) (**अस्याः**) (**वश्मि**) कामये (**विमुचम्**) विमुचन्ति येन तम् (**न**) (**आवृतम्**) आच्छादितम् (**पुनः**) (**विद्वान्**) (**पथः**) (**पुरएता**) पूर्वं गन्ता (**ऋजु**) सरलम् (**नेषति**) नयेत्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विद्वानहं स्वयमयुजि धुरि हयो न तां प्रतरणीमवस्युवं वहामि। अस्या विमुचं न वश्मि न आवृतं वश्मि पुनः पुरएता विद्वानृजु पथो नेषति॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विद्वद्भिः सुशिक्षिता अश्वाः कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैव प्राप्तविद्याशिक्षा मनुष्याः कार्यसिद्धिमाप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**विद्वान्**) विद्यायुक्त मैं (**स्वयम्**) आप (**अयुजि**) नहीं संयुक्त (**धुरि**) मार्ग में (**हयः**) उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त घोड़े के (**न**) सदृश (**ताम्, प्रतरणीम्**) पार होते हैं जिससे उस (**अवस्युवम्**) अपनी रक्षा की इच्छा करती हुई को (**वहामि**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता हूं और (**अस्याः**) इसके सम्बन्ध में (**विमुचम्**) त्यागते हैं जिससे उसकी (**न**) नहीं (**वश्मि**) कामना करता हूं और (**न**) नहीं (**आवृतम्**) ढँपे हुए की कामना करता हूं (**पुनः**) फिर (**पुरएता**) प्रथम जाने वाला (**विद्वान्**) विद्यायुक्त जन (**ऋजु**) सरलता जैसे हो, वैसे (**पथः**) मार्गों को (**नेषति**) प्राप्त करावे॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्वानों से उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़े कार्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही प्राप्त हुई विद्या और शिक्षा जिनको ऐसे मनुष्य कार्य्य की सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥१॥

**मनुष्यैर्विद्युदादिविद्यावश्यं स्वीकार्येत्याह॥**

मनुष्यों को विद्युदादि विद्या अवश्य स्वीकार करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो।**
**उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त॥२॥**

**अग्ने। इन्द्र। वरुण। मित्र। देवाः। शर्धः। प्र। यन्त। मारुत। उत। विष्णो इति। उभा। नासत्या। रुद्रः। अध। ग्नाः। पूषा। भगः। सरस्वती। जुषन्त॥२॥**

**पदार्थः-(अग्ने)** विद्वन् **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** सुहृत् **(देवाः)** विद्वांसः **(शर्धः)** बलम् **(प्र) (यन्त)** प्राप्नुवन्ति **(मारुत)** मरुतां मनुष्याणां मध्ये विदित **(उत)** अपि **(विष्णो)** व्यापनशीलम् **(उभा)** उभौ **(नासत्या)** अविद्यमानासत्याचरणौ **(रुद्रः)** दुष्टानां भयङ्करः **(अध) (ग्नाः)** वाणी **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता: वायुः **(भगः)** ऐश्वर्यवान् **(सरस्वती)** सुशिक्षिता वाणी **(जुषन्त)** सेवन्ताम्॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्ने वरुण मित्र मारुत देवा! भवन्तः शर्धः प्र यन्त। उत हे विष्णो! उभा नासत्या रुद्रो भगः पूषाध सरस्वती च ग्ना जुषन्त॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवद्भिर्विद्याशरीरबलयोगवृद्धिं कृत्वाऽग्न्यादिविद्या स्वीकार्य्या॥२॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त **(अग्ने)** विद्वन् **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** मित्र **(मारुत)** मनुष्यों में विदित और **(देवाः)** विद्वानो! आप **(शर्धः)** बल को **(प्र, यन्त)** प्राप्त होते हैं **(उत)** और हे **(विष्णोः)** व्यापनशील! **(उभा)** दो **(नासत्या)** असत्य आचरण से रहित जन **(रुद्रः)** दुष्टों को भयंकर **(भगः)** ऐश्वर्य्यवान् **(पूषा)** पुष्टिकारक वायु **(अध)** इसके अनन्तर **(सरस्वती)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी भी **(ग्नाः)** वाणियों का **(जुषन्त)** सेवन करें॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को चाहिये कि विद्या, शरीर, बल और योग की वृद्धि करके अग्नि आदि विद्या को स्वीकार करें॥२॥

**अत्र सृष्टौ मनुष्यैः किं किं वेदितव्यमित्याह॥**

इस सृष्टि में मनुष्यों को क्या क्या जानना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः।**
**हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये॥३॥**

**इन्द्राग्नी इति। मित्रावरुणा। अदितिम्। स्वरिति स्वः। पृथिवीम्। द्याम्। मरुतः। पर्वतान्। अपः। हुवे। विष्णुम्। पूषणम्। ब्रह्मणः। पतिम्। भगम्। नु। शंसम्। सवितारम्। ऊतये॥३॥**

**पदार्थः-(इन्द्राग्नी)** सूर्य्यविद्युतौ **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानौ **(अदितिम्)** अन्तरिक्षम् **(स्वः)** आदित्यम् **(पृथिवीम्)** भूमिम् **(द्याम्)** प्रकाशम् **(मरुतः)** वायून् मनुष्यान् वा **(पर्वतान्)** मेघान् शैलान् वा **(अपः)** जलानि **(हुवे)** आददे **(विष्णुम्)** व्यापकं धनं जयं वा **(पूषणम्)** पुष्टिकरं व्यानम् **(ब्रह्मणः)**

ब्रह्माण्डस्य **(पतिम्)** पालकं सूत्रात्मानम् **(भगम्)** ऐश्वर्य्यम् **(नु)** सद्यः **(शंसम्)** प्रशंसनीयम् **(सवितारम्)** जगदुत्पादकं परमात्मानम् **(ऊतये)** रक्षादिव्यवहारसिद्धये॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमूतय इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वतानपो विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं शंसं सवितारं हुवे तथा यूयमपि न्वेतानाह्वयत॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्युदादिविद्यावश्यं स्वीकार्य्या॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(ऊतये)** रक्षा आदि व्यवहार की सिद्धि के लिये **(इन्द्राग्नी)** सूर्य्य और बिजुली **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु तथा **(अदितिम्)** अन्तरिक्ष को **(स्वः)** सूर्य्य और **(पृथिवीम्)** भूमि को **(द्याम्)** प्रकाश को **(मरुतः)** पवनों वा मनुष्यों को **(पर्वतान्)** मेघों वा पर्वतों को **(अपः)** जलों को **(विष्णुम्)** व्यापक धन वा जय को **(पूषणम्)** पुष्टिकारक व्यान वायु और **(ब्रह्मणः)** ब्रह्माण्ड के **(पतिम्)** पालन करने वाले सूत्रात्मा को **(भगम्)** ऐश्वर्य और **(शंसम्)** प्रशंसा करने योग्य **(सवितारम्)** संसार के उत्पन्न करने वाले परमात्मा को **(हुवे)** ग्रहण करता हूं, वैसे आप लोग **(नु)** शीघ्र इनको ग्रहण करना चाहिये॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को विद्युद्विद्या अवश्य स्वीकार करनी चाहिये॥३॥

**अवश्यं मनुष्यैरीश्वरादिसेवनं कार्यमित्याह॥**

अवश्य मनुष्यों को ईश्वरादिकों का सेवन करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत नो विष्णुरुत वातो अस्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत्।**

**उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विभ्वानु मंसते॥४॥**

उत। नः। विष्णुः। उत। वातः। अस्रिधः। द्रविणःऽदाः। उत। सोमः। मयः। करत्। उत। ऋभवः। उत। राये। नः। अश्विना। उत। त्वष्टा। उत। विऽभ्वा। अनु। मंसते॥४॥

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्मान् **(विष्णुः)** व्यापकेश्वरः **(उत)** **(वातः)** वायुः **(अस्रिधः)** अहिंसकः **(द्रविणोदाः)** धनप्रदः **(उत)** **(सोमः)** ऐश्वर्य्यवान् **(मयः)** **(करत्)** कुर्य्यात् **(उत)** **(ऋभवः)** मेधाविनः **(उत)** **(राये)** **(नः)** **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(उत)** **(त्वष्टा)** तनूकर्त्ता **(उत)** **(विभ्वा)** विभुना **(अनु)** **(मंसते)** मन्यताम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! नो विष्णुरुत वात उतास्रिधो द्रविणोदा उत सोम उतर्भव उत राये नोऽस्मानुताश्विनोत त्वष्टा विभ्वाऽनु मंसते तैर्विद्वान् मयस्करत्॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ईश्वरादीन् पदार्थान् सेवन्ते ते विदितवेदितव्या जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(नः)** हम लोगों को **(विष्णुः)** व्यापक ईश्वर **(उत)** और **(वातः)** वायु **(उत)** और **(अस्रिधः)** नहीं हिंसा करने और **(द्रविणोदाः)** धन का देने वाला **(उत)** और **(सोमः)** ऐश्वर्य्यवान् **(उत)** और **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(उत)** और **(राये)** धन के लिये **(नः)** हम लोगों को **(उत)** और

**(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जन **(उत)** और **(त्वष्टा)** सूक्ष्म करने वाला **(विभ्वा)** समर्थ से **(अनु, मंसते)** अनुमान करें, उनसे विद्वान् **(मयः)** सुख को **(करत्)** सिद्ध करे॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ईश्वर आदि पदार्थों का सेवन करते हैं, वे जानने योग्य पदार्थों के जानने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद्दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे।**

**बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा॥५॥**

**उत। त्यत्। नः। मारुतम्। शर्धः। आ। गमत्। दिविऽक्षयम्। यजतम्। बर्हिः। आऽसदे। बृहस्पतिः। शर्म। पूषा। उत। नः। यमत्। वरूथ्यम्। वरुणः। मित्रः। अर्यमा॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(त्यत्)** तत् **(नः)** अस्मान् **(मारुतम्)** मरुतां मनुष्याणामिदम् **(शर्धः)** बलम् **(आ)** **(गमत्)** गच्छेत् **(दिविक्षयम्)** दिवि प्रकाशे क्षयो निवासो यस्य तम् **(यजतम्)** सङ्गतम् **(बर्हिः)** उत्तममासनम् **(आसदे)** आसत्तुमुपवेष्टुम् **(बृहस्पतिः)** बृहतां पालकः **(शर्म)** गृहम् **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(उत)** अपि **(नः)** अस्मानस्माकम् वा **(यमत्)** यच्छति **(वरूथ्यम्)** गृहेषु साधु **(वरुणः)** श्रेष्ठ उदान इव उत्तमः **(मित्रः)** प्राण इव प्रियः **(अर्यमा)** न्यायकारी॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यो! दिविक्षयं यजतं त्यन्मारुतं बर्हिः शर्धो न आ गमदुतापि बृहस्पतिः पूषा वरुणो मित्र उताऽऽर्यमाऽऽसदे वरूथ्यं शर्माऽऽसदे नो यमत्॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वायुगुणान् विजानीयुस्ते सर्वतो धनं लभेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(दिविक्षयम्)** जिसका प्रकाश में निवास **(यजतम्)** जो मिलता हुआ **(त्यत्)** वह **(मारुतम्)** मनुष्यसम्बन्धी **(बर्हिः)** उत्तम आसन और **(शर्धः)** बल **(नः)** हम लोगों को **(आ, गमत्)** प्राप्त होवे और **(उत)** भी **(बृहस्पतिः)** बड़ों का पालन करने और **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(वरुणः)** उदानवायु के सदृश उत्तम **(मित्रः)** प्राणवायु के सदृश प्रिय **(उत)** भी **(अर्यमा)** न्यायकारी और **(आसदे)** प्रवेश होने को **(वरूथ्यम्)** गृहों में श्रेष्ठ **(शर्म)** गृह को प्रवेश होने को **(नः)** हम लोगों को **(यमत्)** देता है॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वायु के गुणों को विशेषकर जानें, वे सब प्रकार से धन को प्राप्त होवें॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन्।**

**भगो॑ वि॒भ॒क्ता श॒व॒सा॒व॒सा ग॑मदु॒रु॒व्यचा॒ अदि॑तिः श्रोतु मे॒ हव॑म्॥६॥**

**उ॒त। त्ये। नः॒। पर्व॑तासः। सु॒ऽश॒स्तयः॑। सु॒ऽदी॒तयः॑। न॒द्यः॑। त्राम॑णे। भु॒व॒न्। भगः॑। वि॒ऽभ॒क्ता। शव॑सा। अव॑सा। आ। ग॒म॒त्। उ॒रु॒ऽव्यचाः॑। अदि॑तिः। श्रो॒तु। मे॒। हव॑म्॥६॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**त्ये**) ते (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**पर्वतासः**) मेघा इव (**सुशस्तयः**) शोभनप्रशंसाः (**सुदीतयः**) प्रशंसितप्रकाशाः (**नद्यः**) सरितः (**त्रामणे**) पालनव्यवहाराय (**भुवन्**) भवन्तु (**भगः**) भजनीय ऐश्वर्य्ययोगः (**विभक्ता**) विभज्य दाता (**शवसा**) बलेन (**अवसा**) रक्षणादिना (**आ**) (**गमत्**) आगच्छेत् समन्तात् प्राप्नुयात् (**उरुव्यचाः**) बहुषु व्याप्तः (**अदितिः**) अविद्यमानखण्डनः (**श्रोतु**) शृणोतु (**मे**) मम (**हवम्**) शब्दम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये पर्वतास इव सुशस्तयो नद्य इव सुदीतयो नस्त्रामणे भुवन्। उत उरुव्यचा अदितिर्भगो विभक्ता शवसाऽवसाऽऽगमन्मे हवं श्रोतु त्ये स च सत्कर्त्तव्या भवेयुः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मेघवज्जगत्पालकाः प्रशंसितं न्यायं विधाय सर्वस्याः प्रजाया विनतिं श्रुत्वा न्यायं कुर्य्युस्ते विनयवन्तो भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**पर्वतासः**) मेघों के सदृश (**सुशस्तयः**) उत्तम प्रशंसायुक्त (**नद्यः**) नदियों के सदृश (**सुदीतयः**) प्रशंसित प्रकाश वाले (**नः**) हम लोगों को वा हमारे (**त्रामणे**) पालन व्यवहार के लिये (**भुवन्**) हों (**उत**) और (**उरुव्यचाः**) बहुतों में व्याप्त (**अदितिः**) खण्डन से रहित (**भगः**) आदर करने योग्य ऐश्वर्य का योग (**विभक्ता**) विभाग कर देने वाला (**शवसा**) बल और (**अवसा**) रक्षण आदि से (**आ, गमत्**) सब प्रकार प्राप्त होवे और (**मे**) मेरे (**हवम्**) शब्द को (**श्रोतु**) सुने (**त्ये**) वे और वह सत्कार करने योग्य होवें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मेघ के सदृश संसार के पालन करने वाले प्रशंसित न्याय का विधान कर सम्पूर्ण प्रजा की विनती सुन के न्याय करें, वे विनययुक्त होते हैं॥६॥

**राजवद्राज्ञः स्त्री न्यायं करोत्वित्याह॥**

राजा के समान राजपत्नी न्याय करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वानां॒ पत्नी॑रुश॒तीर॑वन्तु नः॒ प्राव॑न्तु नस्तु॒जये॒ वाज॑सातये।**

**याः पार्थि॑वासो॒ या अ॒पामपि॑ व्र॒ते ता नो॑ देवीः सुहवाः॒ शर्म॑ यच्छत॥७॥**

**दे॒वाना॑म्। पत्नीः॑। उ॒श॒तीः। अ॒व॒न्तु। नः॒। प्र। अ॒व॒न्तु। नः॒। तु॒जये॑। वाज॑ऽसातये। याः। पार्थि॑वासः। याः। अ॒पाम्। अपि॑। व्र॒ते। ताः। नः॒। दे॒वीः॒। सु॒ऽह॒वाः॒। शर्म॑। य॒च्छ॒त॥७॥**

**पदार्थः**-(**देवानाम्**) विदुषाम् (**पत्नीः**) स्त्रियः (**उशतीः**) कामयमानाः (**अवन्तु**) रक्षन्तु (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**प्र, अवन्तु**) (**नः**) अस्मान् (**तुजये**) बलाय (**वाजसातये**) (**याः**) (**पार्थिवासः**)

पृथिव्यां विदिताः **(याः)** अपां जलानाम् **(अपि)** **(व्रते)** शीले **(ताः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(देवीः)** देदीप्यमानाः **(सुहवाः)** शोभनाह्वानाः **(शर्म)** सुखकारकं गृहम् **(यच्छत)** ददत॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या देवानां राज्ञां न्यायमुशतीः पत्नीर्नोऽवन्तु तुजये वाजसातये प्रावन्तु याः पार्थिवासोऽपां व्रतेऽपि देवीः सुहवा नः शर्म प्रदद्युस्ता नो यूयं यच्छत॥७॥

**भावार्थः**-यथा राजानः पुरुषाणां न्यायं कुर्युस्तथैव स्त्रीणां न्यायं राज्यः कुर्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(याः)** जो **(देवानाम्)** विद्वानों वा राजाओं के न्याय की **(उशतीः)** कामना करती हुई **(पत्नीः)** स्त्रियां **(नः)** हम लोगों की वा हमारे सम्बन्धी पदार्थों की **(अवन्तु)** रक्षा करें और **(तुजये)** बल और **(वाजसातये)** संग्राम के लिये **(प्र, अवन्तु)** अच्छे प्रकार रक्षा करें और **(याः)** जो **(पार्थिवासः)** पृथिवी में विदित **(अपाम्)** जलों के **(व्रते)** स्वभाव में **(अपि)** भी **(देवीः)** प्रकाशमान **(सुहवाः)** उत्तम आह्वान वाली **(नः)** हम लोगों को **(शर्म)** सुखकारक गृह देवें और **(ताः)** उनको **(नः)** हम लोगों के लिये आप लोग **(यच्छत)** दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जैसे राजा लोग पुरुषों का न्याय करें, वैसे ही स्त्रियों के न्याय को रानियां करें॥७॥

**राजवद्राज्यः स्त्रीणां न्यायं कुर्युरित्याह॥**

राजा के समान रानी स्त्रियों का न्याय करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्य१ग्नाय्य॒श्विनी राट्।**

**आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥८॥२८॥२॥**

**उत। ग्नाः। व्यन्तु। देवऽपत्नीः। इन्द्राणी। अग्नायी। अश्विनी। राट्। आ। रोदसी। इति। वरुणानी। शृणोतु। व्यन्तु। देवीः। यः। ऋतुः। जनीनाम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(ग्नाः)** वाणी **(व्यन्तु)** व्याप्नुवन्तु **(देवपत्नीः)** देवानां विदुषां स्त्रियः **(इन्द्राणी)** इन्द्रस्य परमैश्वर्ययुक्तस्य स्त्री **(अग्नायी)** अग्नेः पावकवद्वर्त्तमानस्य पत्नी **(अश्विनी)** आशुगामिनः स्त्री **(राट्)** या राजते **(आ)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्याविव **(वरुणानी)** वरस्य भार्य्या **(शृणोतु)** **(व्यन्तु)** कामयन्ताम् **(देवीः)** विदुष्यः **(यः)** **(ऋतुः)** **(जनीनाम्)** जनित्रीणां भार्य्याणाम्॥८॥

**अन्वयः**-यो राडिन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी देवपत्नीर्न्यायकरणाय स्त्रीणां ग्ना व्यन्तु रोदसी इव वरुणानी जनीनां वाच आ शृणोतु उतापि देवीर्ऋतुरिव क्रमेण जनीनां यो न्यायस्तं व्यन्तु॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा राज्ञां समीपे पुरुषा अमात्या भवन्ति तथा राज्ञीनां निकटे स्त्रियो भवन्तु॥८॥

अत्र विद्वदग्न्यादिराजराज्ञीकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां महाविदुषां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये पञ्चमे मण्डले षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं**

**तथा चतुर्थाऽष्टके द्वितीयोऽध्यायोऽष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(यः)** जो **(राट्)** प्रकाशमान **(इन्द्राणी)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष की स्त्री और **(अग्नायी)** अग्नि के सदृश तेजस्वी पुरुष की स्त्री **(अश्विनी)** शीघ्र चलने वाले की स्त्री और **(देवपत्नीः)** विद्वानों की स्त्रियाँ न्याय करने के लिये स्त्रियों की **(ग्नाः)** वाणियों को **(व्यन्तु)** व्याप्त हों और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष तथा पृथिवी के सदृश **(वरुणानी)** श्रेष्ठ जन की स्त्री **(जनीनाम्)** उत्पन्न करनेवाली स्त्रियों की वाणियों को **(आ, शृणोतु)** सब प्रकार से सुने और **(उत)** भी **(देवीः)** विद्यायुक्त स्त्रियाँ **(ऋतुः)** ऋतु के सदृश क्रम से उत्पन्न करनेवाली स्त्रियों का जो न्याय उसकी **(व्यन्तु)** कामना करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपालङ्कार है। जैसे राजाओं के समीप पुरुष मन्त्री होते हैं, वैसे रानियों के समीप स्त्रियाँ मन्त्री होवें॥८॥

**श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महाविद्वान् विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामीजी से रचे हुए, उत्तम प्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य के पांचवें मण्डल में छयालीसवां सूक्त और चतुर्थ अष्टक में द्वितीय अध्याय और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

## अथ तृतीयाऽध्यायारम्भः॥

विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥

**अथ सप्तर्चस्य सप्तचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिरथ आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ४, ७ त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स्त्रीपुरुषगुणानाह॥***

अब सात ऋचा वाले सैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्री पुरुषों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र॒यु॒ञ्ज॒ती दि॒व ए॑ति ब्रुवा॒णा म॒ही मा॒ता दु॑हि॒तुर्बो॒धय॑न्ती।**
**आ॒विवा॑सन्ती युव॒तिर्म॑नी॒षा पि॒तृभ्य॒ आ सद॑ने॒ जोहु॑वाना॥१॥**

**प्र॒ऽयु॒ञ्ज॒ती। दि॒वः। ए॒ति। ब्रु॒वा॒णा। म॒ही। मा॒ता। दु॒हि॒तुः। बो॒धय॑न्ती। आ॒ऽविवा॑सन्ती। यु॒व॒तिः। म॒नी॒षा। पि॒तृऽभ्यः॑। आ। सद॑ने। जोहु॑वाना॥ १॥**

**पदार्थः-(प्रयुञ्जती)** प्रयोगं कुर्वन्ती **(दिवः)** प्रकाशात् **(एति)** गच्छति प्राप्नोति वा **(ब्रुवाणा)** उपदिशन्ती **(मही)** पूजनीया **(माता)** मान्यकारिणी जननी **(दुहितुः)** कन्यायाः **(बोधयन्ती)** **(आविवासन्ती)** समन्तात् सेवमाना **(युवतिः)** युवावस्थायां विद्या अधीत्य कृतविवाहा **(मनीषा)** प्रज्ञया **(पितृभ्यः)** पालकेभ्यः **(आ)** **(सदने)** गृहे **(जोहुवाना)** भृशं प्राप्तप्रशंसा॥१॥

**अन्वयः-**या दिव उषा इव ब्रुवाणा प्रयुञ्जती दुहितुर्बोधयन्ती मही आविवासन्ती सदने जोहुवाना युवतिर्माता मनीषा पितृभ्यः प्राप्तशिक्षा गृहाश्रममेति सा मङ्गलकारिणी भवति॥१॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। या माता आपञ्चमाद्वर्षात् सन्तानान् बोधयित्वा पञ्चमे वर्षे पित्रे समर्पयति पितापि वर्षत्रयं शिक्षित्वाऽऽचार्याय पुत्रानाचार्यायै कन्या ब्रह्मचर्य्येण विद्याग्रहणाय समर्पयति तेऽपि यथाकालं ब्रह्मचर्यं समापयित्वा विद्याः प्रापय्य व्यवहारशिक्षां दत्त्वा समावर्त्तयन्ति ते ताश्च कुलस्य भूषका अलङ्कर्त्र्यश्च स्युः॥१॥

**पदार्थः-**जो **(दिवः)** प्रकाश से प्रातःकाल के सदृश **(ब्रुवाणा)** उपदेश देती **(प्रयुञ्जती)** उत्तम कर्म्म में अच्छे प्रकार योग करती **(दुहितुः)** कन्या का **(बोधयन्ती)** बोध देती और **(मही)** आदर करने योग्य **(आविवासन्ती)** सब प्रकार से सेवती हुई **(सदने)** गृह में **(जोहुवाना)** अत्यन्त प्रशंसा को प्राप्त **(युवतिः)** युवा अवस्था में विद्याओं को पढ़कर विवाह जिसने किया वह **(माता)** आदर करने वाली माता

**(मनीषा)** बुद्धि से **(पितृभ्य:)** पालन करने वालों से शिक्षा को प्राप्त गृहाश्रम को **(आ)** सब प्रकार से **(एति)** जाती वा प्राप्त होती है, वह मंगलकारिणी होती है॥१॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो माता पांचवें वर्ष के प्रारम्भ होने तक सन्तानों को बोध देकर पांचवें वर्ष में पिता को सौंपती है और पिता भी तीन वर्ष पर्य्यन्त शिक्षा देकर आचार्य्य को पुत्रों को और आचार्य्य की स्त्री को कन्याओं को ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण के लिये सौंपता है और वे आचार्यादि भी नियत समयपर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य को समाप्त करा के और विद्याओं को प्राप्त करा के तथा व्यवहार की शिक्षा देकर गृहाश्रम में प्रविष्ट कराते हैं, वे आचार्य और आचार्य्या कुल के भूषक और शोभाकारक होते हैं॥१॥

**अथ मनुष्यै: कार्य्यकारणसन्तताऽनन्तपदार्थान् विज्ञाय कार्य्यसिद्धि: संपादनीया॥**

अब मनुष्यों का कार्य कारण से विस्तृत अनन्त पदार्थों को जान कर कार्यसिद्धि करनी चाहिये॥

**अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम्।**

**अनन्तास उरवो विश्वत: सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्था:॥२॥**

**अजिरास:। तत्ऽअप:। ईयमाना:। आतस्थिऽवांस:। अमृतस्य। नाभिम्। अनन्तास:। उरव:। विश्वत:। सीम्। परि। द्यावापृथिवी इति। यन्ति। पन्था:॥२॥**

**पदार्थ:**-**(अजिरास:)** वेगवन्त: **(तदप:)** तेषां प्राणाम् **(ईयमाना:)** प्राप्नुवन्त: **(आतस्थिवांस:)** समन्तात् स्थिता: **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य कारणस्य **(नाभिम्)** मध्ये **(अनन्तास:)** अविद्यमानोऽन्तो येषान्ते **(उरव:)** बहव: **(विश्वत:)** सर्वत: **(सीम्)** आदित्यप्रकाश इव **(परि)** **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(पन्था:)** मार्ग:॥२॥

**अन्वय:**-येऽजिरास ईयमानास्तदपोऽमृतस्य नाभिमातस्थिवांसोऽनन्तास उरवो विश्वतो द्यावापृथिवी सीमिव परि यन्ति तेषां पन्था विज्ञातव्य:॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। ये आकाशादयोऽनन्ता: पदार्थास्तत्रस्था असङ्ख्या परमाणवश्च कारणध्ये कारणतो जाता आदित्यप्रकाशवद्विस्तीर्णा: सन्ति॥२॥

**पदार्थ:**-जो **(अजिरास:)** वेग से युक्त **(ईयमाना:)** प्राप्त होते हुए **(तदप:)** उनके प्राणों को **(अमृतस्य)** नाश से रहित कारण के **(नाभिम्)** मध्य में **(आतस्थिवांस:)** सब ओर से स्थित **(अनन्तास:)** नहीं विद्यमान अन्त जिनका वे **(उरव:)** बहुत **(विश्वत:)** सब ओर **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि **(सीम्)** सूर्य्य के प्रकाश के सदृश **(परि)** चारों ओर **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं उनका **(पन्था:)** मार्ग जानना चाहिये॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो आकाश आदि अनन्त पदार्थ है, उनमें वर्त्तमान असंख्य परमाणु और [वे] कारण के मध्य में कारण से उत्पन्न हुए सूर्य्य और प्रकाश के सदृश विस्तीर्ण हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒क्षा स॑मु॒द्रो अ॑रु॒षः सु॑प॒र्णः पूर्व॑स्य॒ योनिं॑ पि॒तुरा वि॑वेश।**

**मध्ये॑ दि॒वो निहि॑तः॒ पृश्नि॒रश्मा॒ वि च॑क्रमे॒ रज॑सस्पा॒त्यन्तौ॑॥३॥**

उ॒क्षा। स॒मु॒द्रः। अ॒रु॒षः। सु॒ऽप॒र्णः। पूर्व॑स्य। योनि॑म्। पि॒तुः। आ। वि॒वे॒श॒। मध्ये॑। दि॒वः। निऽहि॑तः। पृश्नि॑ः। अश्मा॑। वि। च॒क्र॒मे॒। रज॑सः। पा॒ति॒। अन्तौ॑॥३॥

**पदार्थ:**-(**उक्षा**) सेचकः (**समुद्रः**) सागरः (**अरुषः**) सुखप्रापकः (**सुपर्णः**) शोभनानि पर्णानि पालनानि यस्य सः (**पूर्वस्य**) पूर्णस्याऽऽकाशादेः (**योनिम्**) कारणम् (**पितुः**) पालकस्य (**आ**) (**विवेश**) प्रविशति (**मध्ये**) (**दिवः**) प्रकाशस्य (**निहितः**) स्थापितः (**पृश्निः**) अन्तरिक्षम् (**अश्मा**) मेघः (**वि**) (**चक्रमे**) क्रमते (**रजसः**) लोकजातस्य (**पाति**) (**अन्तौ**) समीपे॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः समुद्रोऽरुषः सुपर्णो दिवो मध्ये निहितः पृश्निरश्मोक्षा पूर्वस्य पितुर्योनिमा विवेश रजसो वि चक्रमेऽन्तौ पाति स सर्वैर्वेदितव्यः॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यूयं कार्य्यकारणे विज्ञाय तत्संयोगजन्यानि वस्तूनि कार्य्येषूपयुज्य स्वाभीष्टसिद्धिं सम्पादयत॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**समुद्रः**) सागर (**अरुषः**) सुख को प्राप्त कराने वाला (**सुपर्णः**) सुन्दर पालन जिसके ऐसा और (**दिवः**) प्रकाश के (**मध्ये**) मध्य में (**निहितः**) स्थापित किया गया (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष और (**अश्मा**) मेघ (**उक्षा**) सींचने वाला (**पूर्वस्य**) पूर्ण आकाश आदि और (**पितुः**) पालन करने वाले के (**योनिम्**) कारण को (**आ, विवेश**) सब प्रकार प्रविष्ट होता है और (**रजसः**) लोक में उत्पन्न हुए का (**वि, चक्रमे**) विशेष करके क्रमण करता और (**अन्तौ**) समीप में (**पाति**) रक्षा करता है, वह सब को जानने योग्य है॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग कार्य्य और कारण को जानकर उनके संयोग से उत्पन्न हुए वस्तुओं को कार्य्यों में उपयुक्त करके अपने अभीष्ट की सिद्धि करें॥३॥

**मनुष्यैः पृथिव्यादीनि तत्वानि जगत्पालनानि सन्तीति वेद्यमित्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि पृथिवी आदि तत्त्व जगत् के पालक हैं, ऐसा जानें,
इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**च॒त्वारि॑ ईं बिभ्रति क्षेम॒यन्तो॒ दश॒ गर्भं॑ च॒रसे॑ धापयन्ते।**

**त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान्॥४॥**

**चत्वारः। ईम्। बिभ्रति। क्षेमऽयन्तः। दश। गर्भम्। चरसे। धापयन्ते। त्रिऽधातवः। परमाः। अस्य। गावः। दिवः। चरन्ति। परि। सद्यः। अन्तान्॥४॥**

**पदार्थः**-(**चत्वारः**) पृथिव्यादयः (**ईम्**) सर्वतः (**बिभ्रति**) धरन्ति (**क्षेमयन्तः**) रक्षयन्तः (**दश**) दिशः (**गर्भम्**) सर्वजगदुत्पत्तिस्थानम् (**चरसे**) चरितुं गन्तुम् (**धापयन्ते**) धारयन्ति (**त्रिधातवः**) त्रयः सत्त्वरजस्तमांसि धातवो धारका येषान्ते (**परमाः**) प्रकृष्टाः (**अस्य**) गावः किरणाः (**दिवः**) प्रकाशस्य मध्ये (**चरन्ति**) गच्छन्ति (**परि**) (**सद्यः**) शीघ्रम् (**अन्तान्**) समीपस्थान् देशान्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अस्य जगतो मध्ये चरसे क्षेमयन्तः परमास्त्रिधातवश्चत्वार ईं गर्भं बिभ्रति दश धापयन्ते सद्यो दिवोऽन्तान् गावः परि चरन्तीति वि जानीत॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्य जगतो धारकाः पृथिव्यप्तेजोवायवः सन्ति ते च कारणादुत्पद्य उपयुक्ता भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अस्य**) इस संसार के मध्य में (**चरसे**) चलने को (**क्षेमयन्तः**) रक्षा करते हुए (**परमाः**) प्रकृष्ट (**त्रिधातवः**) तीन सत्त्व, रज और तमोगुण धारण करने वाले जिनके वे और (**चत्वारः**) चार पृथिवी आदि (**ईम्**) सब ओर से (**गर्भम्**) समस्त जगत् उत्पत्ति के स्थान को (**बिभ्रति**) धारण करते हैं तथा (**दश**) दश दिशाओं को (**धापयन्ते**) धारण कराते हैं और (**सद्यः**) शीघ्र (**दिवः**) प्रकाश के मध्य में (**अन्तान्**) समीपवर्ती देशों के (**गावः**) किरणें (**परि, चरन्ति**) चारों और चलते हैं, ऐसा जानिये॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्यो! इस संसार के धारण करने वाले पृथिवी, जल, तेज और पवन हैं और वे कारण से उत्पन्न हो के उपयुक्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः।**
**द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्या३ सबन्धू॥५॥**

**इदम्। वपुः। निऽवचनम्। जनासः। चरन्ति। यत्। नद्यः। तस्थुः। आपः। द्वे इति। यत्। ईम्। बिभृतः। मातुः। अन्ये इति। इहऽइह। जाते इति। यम्या। सबन्धू इति सऽबन्धू॥५॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**वपुः**) शरीरम् (**निवचनम्**) निश्चितं वचनं यस्य तत् (**जनासः**) विद्वांसः (**चरन्ति**) (**यत्**) ये (**नद्यः**) सरित इव (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**आपः**) जलानि (**द्वे**) (**यत्**) ये (**ईम्**) उदकम् (**बिभृतः**) (**मातुः**) जनन्याः (**अन्ये**) (**इहेह**) (**जाते**) (**यम्या**) रात्रिदिने (**सबन्धू**) समानो बन्धुर्ययोस्तद्वद्वर्त्तमाने॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेहेह द्वे यम्या सबन्धू मातुरन्ये जाते ईं बिभृतो यद्ये जगदुपकुरुतो यद्ये जनासो नद्य आप इवेदं निवचनं वपुश्चरन्ति तस्थुस्तथैतानि विजानीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथा रात्रिदिने क्रमेण व्यवहरतस्थैव क्रमेणाहारविहारौ कृत्वा शरीरं संरक्षणीयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(इहेह)** इसी संसार में **(द्वे)** दो **(यम्या)** रात्रि और दिन **(सबन्धू)** तुल्य बन्धु जिनका उनके सदृश वर्त्तमान और **(मातुः)** माता से **(अन्ये)** अन्य **(जाते)** उत्पन्न हुए **(ईम्)** जल को **(बिभृतः)** धारण करते हैं और **(यत्)** जो संसार का उपकार करते हैं और **(यत्)** जो **(जनासः)** विद्वान् जन जैसे **(नद्यः)** नदियां **(आपः)** जलों को वैसे **(इदम्)** इस **(निवचनम्)** निश्चित वचन जिसका उस **(वपुः)** शरीर को **(चरन्ति)** प्राप्त होते और **(तस्थुः)** स्थित होते हैं, वैसे इनको विशेष कर जानिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जैसे रात्रि-दिन क्रम से व्यवहार करते हैं, वैसे क्रम से आहार-विहार करके शरीर की रक्षा करनी चाहिये॥५॥

**मनुष्यैर्युवावस्थायामेव स्वयंवरो विवाहः कर्त्तव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि युवा अवस्था ही में स्वयंवर विवाह करें, इस विषय को कहते हैं॥

**वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति।**
**उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ॥६॥**

**वि। तन्वते। धियः। अस्मै। अपांसि। वस्त्रा। पुत्राय। मातरः। वयन्ति। उपऽप्रक्षे। वृषणः। मोदमानाः। दिवः। पथा। वध्वः। यन्ति। अच्छ॥६॥**

**पदार्थः**-**(वि)** **(तन्वते)** विस्तारयन्ति **(धियः)** प्रज्ञाः **(अस्मै)** व्यवहारसिद्धाय **(अपांसि)** कर्म्माणि **(वस्त्रा)** वस्त्राणि **(पुत्राय)** **(मातरः)** **(वयन्ति)** निर्मिमते **(उपप्रक्षे)** सम्पर्के **(वृषणः)** यूनः **(मोदमानाः)** आनन्दन्त्यः **(दिवः)** कामयमानाः **(पथा)** गृहाश्रममार्गेण वर्त्तमानाः **(वध्वः)** युवत्यः स्त्रियः **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(अच्छ)**॥६॥

**अन्वयः**-या दिवो मोदमाना वध्वः स्त्रियः पथोपप्रक्षे वृषणोऽच्छ यन्ति ता मातरोऽस्मै पुत्राय धियोऽपांसि वि तन्वते वस्त्रा वयन्ति॥६॥

**भावार्थः**-ये स्त्रीपुरुषा ब्रह्मचर्य्येण विद्या अधीत्य युवावस्थास्थाः सन्तो गृहाश्रमं कामयमानाः परस्परस्मिन् प्रीत्या स्वयंवरं विवाहं विधाय धर्म्येण सन्तानानुत्पाद्य सुशिक्ष्य शरीरात्मबलं विस्तृणन्ति वस्त्रैः शरीरमिव गृहाश्रमव्यवहारमाच्छाद्यानन्दन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जो **(दिवः)** कामना और **(मोदमानाः)** आनन्द करती हुई **(वध्वः)** युवावस्थायुक्त स्त्रियां **(पथा)** गृहाश्रम के मार्ग से वर्त्तमान **(उपप्रक्षे)** सम्बन्ध में **(वृषणः)** युवा पुरुषों को **(अच्छ)** उत्तम

प्रकार **(यन्ति)** प्राप्त होती हैं, वे **(मातरः)** माता **(अस्मै)** इस व्यवहार से सिद्ध **(पुत्राय)** पुत्र के लिये **(धियः)** बुद्धियों और **(अपांसि)** कर्म्मों को **(वि, तन्वते)** विस्तार करती हैं और **(वस्त्रा)** वस्त्रों को **(वयन्ति)** बनाती हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो स्त्री और पुरुष ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को पढ़ कर युवावस्था में वर्त्तमान गृहाश्रम की कामना करते हुए परस्पर प्रीति से स्वयंवर विवाह करके धर्म से सन्तानों को उत्पन्न कर और उत्तम प्रकार शिक्षा देकर शरीर और आत्मा के बल का विस्तार करते हैं और जैसे वस्त्रों से शरीर को वैसे गृहाश्रम के व्यवहार का आच्छादन करके आनन्द करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।**
**अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥७॥ १॥**

**तत्। अस्तु। मित्रावरुणा। तत्। अग्ने। शम्। योः। अस्मभ्यम्। इदम्। अस्तु। शस्तम्। अशीमहि। गाधम्। उत। प्रतिऽस्थाम्। नमः। दिवे। बृहते। सादनाय॥७॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(अस्तु)** **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानाविव मातापितरौ **(तत्)** **(अग्ने)** पावक **(शम्)** सुखम् **(योः)** दुःखात्पृथग्भूतम् **(अस्मभ्यम्)** **(इदम्)** **(अस्तु)** **(शस्तम्)** प्रशंसनीयम् **(अशीमहि)** प्राप्नुयाम **(गाधम्)** गभीरम् **(उत)** **(प्रतिष्ठाम्)** **(नमः)** सत्कारम् **(दिवे)** कामयमानाय **(बृहते)** महते **(सादनाय)** स्थितिमते॥७॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा अध्यापकोपदेशकौ! युवयोः सङ्गेन तच्छं वयमशीमहि। हे अग्नेऽस्मभ्यं तदस्तु योरिदं शस्तमस्तु गाधमुत प्रतिष्ठां प्राप्य बृहते सादनाय दिवे नमोऽस्तु॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तान् विदुषोऽध्यापकान् सत्कुर्वन्ति त एव सुखं लभन्ते॥७॥

अत्र स्त्रीपुरुषादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान माता-पिता तथा अध्यापक और उपदेशक जन! आप दोनों के सङ्ग से **(तत्)** उस **(शम्)** सुख को हम लोग **(अशीमहि)** प्राप्त होवें और **(अग्ने)** हे अग्ने! **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(तत्)** वह **(अस्तु)** हो। **(योः)** दुःख से पृथग्भूत **(इदम्)** यह **(शस्तम्)** प्रशंसा करने योग्य **(अस्तु)** हो और **(गाधम्)** गम्भीर **(उत)** भी **(प्रतिष्ठाम्)** आदर को प्राप्त हो कर **(बृहते)** बड़े **(सादनाय)** स्थितिमान् के लिये और **(दिवे)** कामना करते हुए के लिये **(नमः)** सत्कार हो॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों और अध्यापकों का सत्कार करते हैं, वे ही सुख को प्राप्त होते हैं॥७॥

इस सूक्त में स्त्री-पुरुषादि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतालीसवां सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिभानुरात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवाः देवताः। १, ३ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले अड़तालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को किसकी इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम्।**
**आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी॥१॥**

**कत्। ऊँ इति। प्रियाय। धाम्ने। मनामहे। स्वऽक्षत्राय। स्वऽयशसे। महे। वयम्। आऽमेन्यस्य। रजसः। यत्। अभ्रे। आ। अपः। वृणाना। विऽतनोति। मायिनी॥१॥**

**पदार्थः-(कत्)** कदा (उ) **(प्रियाय)** कमनीयाय **(धाम्ने)** जन्मस्थाननामस्वरूपाय **(मनामहे)** जानीमहे **(स्वक्षत्राय)** स्वकीयराज्याय क्षत्रियकुलाय वा **(स्वयशसे)** स्वकीयं यशो यस्मात्तस्मै **(महे)** महते **(वयम्) (आमेन्यस्य)** समन्तान्मेयस्य **(रजसः)** लोकस्य **(यत्)** या **(अभ्रे)** घने **[(आ)] (अपः)** जलानि **(वृणाना)** स्वीकुर्वाणा **(वितनोति)** विस्तीर्णां करोति **(मायिनी)** माया प्रज्ञा विद्यते यस्यां सा॥१॥

**अन्वयः**-यद्या आमेन्यस्य रजसो मध्येऽभ्रेऽप आ वृणाना मायिनी सती वितनोति तामु वयं महे प्रियाय धाम्ने स्वक्षत्राय स्वयशसे कन्मनामहे॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सततमेवमाशंसितव्यं येन राज्यं यशो धर्मश्च वर्धेत तथैव स्वीकृत्याऽनुष्ठातव्यम्॥१॥

**पदार्थः-(यत्)** जो **(आमेन्यस्य)** चारों ओर से ज्ञान के विषय **(रजसः)** लोक के मध्य में और **(अभ्रे)** मेघ में **(अपः)** जलों का **(आ, वृणाना)** उत्तम प्रकार स्वीकार करती हुई और **(मायिनी)** बुद्धि जिसमें विद्यमान वह नीति **(वितनोति)** विस्तारयुक्त करती है उसको (उ) भी **(वयम्)** हम लोग **(महे)** बड़े **(प्रियाय)** सुन्दर **(धाम्ने)** जन्म, स्थान और नाम स्वरूप के लिये **(स्वक्षत्राय)** अपने राज्य वा क्षत्रिय कुल के लिये और **(स्वयशसे)** अपना यश जिससे उसके लिये **(कत्)** कब **(मनामहे)** जानें॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि निरन्तर इस प्रकार से इच्छा करें, जिससे राज्य, यश और धर्म्म बढ़े, वैसे ही स्वीकार करके अनुष्ठान करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कार्य्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः।**
**अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः॥२॥**

**ताः। अत्नत। वयुनम्। वीरऽवक्षणम्। समान्या। वृतया। विश्वम्। आ। रजः। अपो इति। अपाचीः। अपराः। अप। ईजते। प्र। पूर्वाभिः। तिरते। देवऽयुः। जनः॥२॥**

**पदार्थः-(ताः)** आपः **(अत्नत)** निरन्तरं गच्छत **(वयुनम्)** कर्म प्रज्ञानं वा **(वीरवक्षणम्)** वीराणां वहनम् **(समान्या)** तुल्यया **(वृतया)** आवरकया क्रियया **(विश्वम्)** समग्रम् **(आ) (रजः)** लोकलोकान्तरम् **(अपो) (अपाचीः)** या अधोऽञ्चन्ति **(अपराः)** अन्याः **(अप) (ईजते)** कम्पते **(प्र) (पूर्वाभिः) (तिरते) (देवयुः)** देवान् विदुषः कामयमानः **(जनः)**॥२॥

**अन्वयः**-देवयुर्जनो वीरवक्षणं वयुनं समान्या वृतया विश्वं रजो या अपाचीरपरा अपो अपेजते पूर्वाभिः प्र तिरते ता यूयमाऽत्नत॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं विद्वत्सङ्गं कामयमाना विश्वा विद्या गृह्णीत॥२॥

**पदार्थः-(देवयुः)** विद्वानों की कामना करता हुआ **(जनः)** जन **(वीरवक्षणम्)** वीरों के पहुंचाने को **(वयुनम्)** कर्म वा प्रज्ञान को तथा **(समान्या)** तुल्य **(वृतया)** आवरण करने वाली क्रिया से **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(रजः)** लोक-लोकान्तर और जिन **(अपाचीः)** नीचे चलने वाले **(अपराः)** अन्य **(अपः)** जलों को **(अप, ईजते)** चलाता है वा **(पूर्वाभिः)** प्राचीन जलों से **(प्र, तिरते)** पार होता है **(ताः)** उन जलों को आप लोग **(आ)** सब ओर से **(अत्नत)** निरन्तर प्राप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के सङ्ग की कामना करते हुए सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण कीजिए॥१॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्त्ति मायिनि।**

**शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा॥३॥**

**आ। ग्रावऽभिः। अहन्येभिः। अक्तुऽभिः। वरिष्ठम्। वज्रम्। आ। जिघर्ति। मायिनि। शतम्। वा। यस्य। प्रऽचरन्। स्वे। दमे। सम्ऽवर्तयन्तः। वि। च। वर्तयन्। अहा॥३॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(ग्रावभिः)** मेघैः **(अहन्येभिः)** दिनैः **(अक्तुभिः)** रात्रिभिः **(वरिष्ठम्)** अतिश्रेष्ठम् **(वज्रम्)** शस्त्रविशेषम् **(आ) (जिघर्त्ति) (मायिनि)** माया प्रशंसिता प्रज्ञा विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(शतम्) (वा) (यस्य) (प्रचरन्) (स्वे)** स्वकीये **(दमे)** गृहे **(संवर्त्तयन्तः)** सम्यग्वर्त्तमानाः **(वि) (च) (वर्तयन्) (अहा)** अहानि॥३॥

**अन्वयः**-हे मायिनि! यतो भवती ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति शतं वा यस्य स्वे दमे प्रचरन्नहाऽऽवर्तयन् व्यवहारमाजिघर्त्ति यस्य च संवर्त्तयन्तः किरणा वि चरन्ति तं त्वं जानीहि॥३॥

**भावार्थ:**-यदि स्त्रीपुरुषौ निर्भयौ भवेतां तर्हि सूर्य्यविद्युद्वदहर्निशं पुरुषार्थं कृत्वैश्वर्य्येण प्रकाशितौ भवेताम्॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(मायिनि)** प्रशंसित बुद्धि से युक्त! जिससे आप **(ग्रावभि:)** मेघों **(अहर्येभि:)** दिनों और **(अक्तुभि:)** रात्रियों से **(वरिष्ठम्)** अति श्रेष्ठ **(वज्रम्)** शस्त्रविशेष को **(आ, जिघर्त्ति)** प्रदीप्त करती हो **(शतम्, वा)** अथवा सैकड़ों का दल **(यस्य)** जिसके **(स्वे)** अपने **(दमे)** गृह में **(प्रचरन्)** चलता और **(अहा)** दिनों को **(आ, वर्तयन्)** अच्छे प्रकार व्यतीत करता हुआ व्यवहार को प्रकाशित करता है **(च)** और जिसकी **(संवर्त्तयन्त:)** उत्तम प्रकार वर्त्तमान किरणें **(वि)** विशेष फैलती हैं, उसको तू विशेष करके जान॥३॥

**भावार्थ:**-जो स्त्री और पुरुष भयरहित हों तो सूर्य्य और बिजुली के सदृश दिन-रात्रि पुरुषार्थ को करके ऐश्वर्य्य से प्रकाशित हों॥३॥

**राजा कथं राज्यं कुर्य्यादित्याह॥**

राजा कैसे राज्य को करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पस:।**
**सचा यदि पितुमन्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे॥४॥**

**ताम्। अस्य। रीतिम्। परशो:ऽइव। प्रति। अनीकम्। अख्यम्। भुजे। अस्य। वर्पस:। सचा। यदि। पितुमन्तम्ऽइव। क्षयम्। रत्नम्। दधाति। भरहूतये। विशे॥४॥**

**पदार्थ:**-**(ताम्)** **(अस्य)** **(रीतिम्)** **(परशोरिव)** **(प्रति)** **(अनीकम्)** सैन्यम् **(अख्यम्)** कथनीयम् **(भुजे)** पालनाय **(अस्य)** **(वर्पस:)** रूपस्य **(सचा)** सम्बन्धि **(यदि)** **(पितुमन्तमिव)** **(क्षयम्)** निवासस्थानम् **(रत्नम्)** रमणीयम् **(दधाति)** **(भरहूतये)** भरा पालिका धारिका हूतयो यस्यास्तस्यै **(विशे)** प्रजायै॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! योऽस्य भुजेऽख्यमनीकं प्रति परशोरिव तां रीतिं दधात्यस्य वर्पस: सचा पितुमन्तमिव यदि भरहूतये विशे रत्नं क्षयं दधाति तर्हि स एव राज्यं कर्त्तुमर्हति॥४॥

**भावार्थ:**-प्रजापालनाय गूढनीत्या राजा व्यवहारान् व्यवहरेत् सर्वस्य च रक्षणं यथार्थतया कुर्य्यात्॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(अस्य)** इसके **(भुजे)** पालन के लिये **(अख्यम्)** कहने योग्य **(अनीकम्)** सेनादल के **(प्रति)** प्रति **(परशोरिव)** परशु के सम्बन्ध को जैसे वैसे **(ताम्)** उस **(रीतिम्)** रीति को **(दधाति)** धारण करता है **(अस्य)** इस **(वर्पस:)** रूप के **(सचा)** सम्बन्धि **(पितुमन्तमिव)** अन्नवान् के सदृश **(यदि)** **(भरहूतये)** पालन-धारण करने वाली वाणी आह्वान के लिये जिसकी उस **(विशे)** प्रजा के लिये **(रत्नम्)** रमणीय **(क्षयम्)** निवासस्थान को धारण करता है तो वही राज्य करने के योग्य होता है॥४॥

**भावार्थः**-प्रजा की पालना के लिये गूढनीति से राजा व्यवहारों का अनुष्ठान करे और सब की पालना यथार्थभाव से करे॥१४॥

**प्रशंसितसेन एव राजा विजयी भवितुमर्हति॥**

प्रशंसित सेना जिसकी ऐसा ही राजा जीतने वाला होने को योग्य है॥

**स जि॒ह्वया॒ चतु॑रनीक ऋञ्जते॒ चारु॒ वसा॑नो॒ वरु॑णो॒ यत॑न्न॒रिम्।**

**न तस्य॑ विद्म पुरुष॒त्वता॑ व॒यं यतो॒ भग॑: सवि॒ता दाति॒ वार्य॑म्॥५॥२॥**

**सः। जि॒ह्वया॑। चतु॑:ऽअनीकः। ऋ॒ञ्ज॒ते॒। चारु॑। वसा॑नः। वरु॑णः। यत॑न्। अ॒रिम्। न। तस्य॑। वि॒द्म॒। पु॒रु॒ष॒त्वता॑। व॒यम्। यत॑:। भग॑:। स॒वि॒ता। दाति॑। वार्य॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**जिह्वया**) वाण्या (**चतुरनीकः**) चतुर्विधान्यनीकानि अस्य सः (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोति (**चारु**) सुन्दरं वस्त्रम् (**वसानः**) धरन् (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**यतन्**) यत्नं कुर्वन् (**अरिम्**) शत्रुम् (**न**) (**तस्य**) (**विद्म**) जानीयाम (**पुरुषत्वता**) बहुपुरुषार्थेन सह (**वयम्**) (**यतः**) (**भगः**) ऐश्वर्य्यवान् (**सविता**) सत्ये प्रेरकः (**दाति**) ददाति (**वार्य्यम्**) वर्त्तुं योग्यमुपदेशम्॥५॥

**अन्वयः**-यो वरुणश्चारु वसानश्चतुरनीको जिह्वयाऽरिं यतन् पुरुषत्वता भगः सविता वार्यं दाति स ऋञ्जते यतो वयं तस्य पुरुषार्थान्तं न विद्म॥५॥

**भावार्थः**-यस्योत्तमं सैन्यं स एव राजा प्रशंसितो भवति॥५॥

अत्र विद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**चारु**) सुन्दर वस्त्र को (**वसानः**) धारण करता हुआ (**चतुरनीकः**) चार प्रकार की सेनायें जिसकी यह (**जिह्वया**) वाणी से (**अरिम्**) शत्रु का (**यतन्**) यत्न करता हुआ (**पुरुषत्वता**) बहुत पुरुषार्थ के साथ (**भगः**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**सविता**) सत्य में प्रेरणा करने वाला (**वार्यम्**) स्वीकार करने योग्य उपदेश को (**दाति**) देता है (**सः**) वह (**ऋञ्जते**) उत्तम प्रकार सिद्ध करता है (**यतः**) जिससे (**वयम्**) हम लोग (**तस्य**) उसके पुरुषार्थ के अन्त को (**न**) नहीं (**विद्म**) जानें॥५॥

**भावार्थः**-जिसकी उत्तम सेना है वही राजा प्रशंसित होता है॥५॥

इस सूक्त में विद्वान् और राजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिप्रभ आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवाः देवताः। १, २, ४ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***मनुष्यैः परोपकार एव कर्त्तव्य इत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले उनचासवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को चाहिये कि परोपकार ही करें, इस विषय को कहते हैं॥

**दे॒वं वो॑ अ॒द्य स॑वि॒तार॒मेषे॒ भगं॑ च॒ रत्नं॑ वि॒भज॑न्तमा॒योः।**

**आ वां॑ नरा पुरुभुजा ववृत्यां दि॒वेदि॑वे चिदश्विना सखी॒यन्॥१॥**

**दे॒वम्। व॒ः। अ॒द्य। स॒वि॒तार॑म्। आ। ई॒षे॒। भग॑म्। च॒। रत्न॑म्। वि॒ऽभज॑न्तम्। आ॒योः। आ। वा॒म्। न॒रा॒। पु॒रु॒ऽभु॒जाः। व॒वृ॒त्या॒म्। दि॒वेऽदि॑वे। चि॒त्। अ॒श्वि॒ना॒। स॒खि॒ऽयन्॥१॥**

**पदार्थः**-(**देवम्**) विद्वांसम् (**वः**) युष्मदर्थम् (**अद्य**) (**सवितारम्**) ऐश्वर्य्यवन्तम् (**आ**) (**ईषे**) इच्छामि (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम् (**च**) (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**विभजन्तम्**) विभागं कुर्वन्तम् (**आयोः**) जीवनस्य (**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**नरा**) नेतारौ (**पुरुभुजा**) यौ पुरून् बहून् पालयतस्तौ (**ववृत्याम्**) वर्त्तयेयम् (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**चित्**) (**अश्विना**) राजप्रजाजनौ (**सखीयन्**) सखेवाचरन्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहमद्य व आयोर्विभजन्तं देवं सवितारं रत्नं भगञ्चेषे। हे पुरुभुजा नरा अश्विना! सखीयन्नहं चिद्दिवेदिवे वामा ववृत्याम्॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सखायो भूत्वा परार्थं सुखमिच्छेयुस्ते सदैव माननीया भवेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! मैं (**अद्य**) आज (**वः**) आप लोगों के लिये (**आयोः**) जीवन का (**विभजन्तम्**) विभाग करते हुए (**देवम्**) विद्वान् (**सवितारम्**) ऐश्वर्यवान् (**रत्नम्**) रमणीय धन (**भगम्**) और ऐश्वर्य्य को (**च**) भी (**आ, ईषे**) अच्छे प्रकार चाहता हूं और हे (**पुरुभुजा**) बहुतों का पालन करते हुए (**नरा**) अग्रणी (**अश्विना**) राजा और प्रजाजनो! (**सखीयन्**) मित्र के सदृश आचरण करता हुआ मैं (**चित्**) निश्चित (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**वाम्**) आप दोनों को (**आ, ववृत्याम्**) अच्छे प्रकार वर्त्ताऊं॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य मित्र होकर दूसरे के लिये सुख की इच्छा करें, वे सदा ही आदर करने योग्य होवें॥१॥

**मेघस्य कारणं किमस्तीत्याह॥**

मेघ का कारण क्या है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रति॑ प्रया॒णमसु॑रस्य वि॒द्वान्त्सू॒क्तैर्दे॒वं स॑वि॒तारं॑ दुवस्य।**

**उप॑ ब्रुवीत॒ नम॑सा विजा॒नञ्ज्येष्ठं॑ च॒ रत्नं॑ वि॒भज॑न्तमा॒योः॥२॥**

**प्रति। प्रऽयानम्। असुरस्य। विद्वान्। सुऽउक्तैः। देवम्। सवितारम्। दुवस्य। उप। ब्रुवीत। नमसा। विऽजानन्। ज्येष्ठम्। च। रत्नम्। विऽभजन्तम्। आयोः॥२॥**

**पदार्थः-(प्रति)** प्रत्यक्षे **(प्रयाणाम्)** यात्राम् **(असुरस्य)** मेघस्य **(विद्वान्)** **(सूक्तैः)** सुष्ठ्वर्थवाचकैर्वेदविभागैः **(देवम्)** देदीप्यमानम् **(सवितारम्)** मेघोत्पादकम् **(दुवस्य)** सेवस्व **(उप)** **(ब्रुवीत)** **(नमसा)** अन्नाद्येन सत्कारेण **(विजानन्)** **(ज्येष्ठम्)** अतिशयेन प्रशस्यम् **(च)** **(रत्नम्)** धनम् **(विभजन्तम्)** **(आयोः)** जीवनस्य॥२॥

**अन्वयः**-हे जन विद्वांस्त्वं सूक्तैरसुरस्य प्रयाणं देव सवितारं प्रति दुवस्य नमसा ज्येष्ठं रत्नञ्च विजानन्नायोर्विभजन्तमुप ब्रुवीत॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सूर्य्य एव मेघादीनामुत्पादकोऽस्ति तद्विद्यामुपदिशत॥२॥

**पदार्थः**-हे जन **(विद्वान्)** विद्वान्! आप **(सूक्तैः)** अच्छे अर्थों को कहने वाले वेद के विभागों से **(असुरस्य)** मेघ की **(प्रयाणम्)** यात्रा का और **(देवम्)** प्रकाशित होते हुए **(सवितारम्)** मेघ को उत्पन्न करने वाले का **(प्रति)** प्रत्यक्ष में **(दुवस्य)** सेवन करो और **(नमसा)** अन्न आदि के दानरूप सत्कार से **(ज्येष्ठम्)** अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य **(रत्नम्)** धन को **(च)** भी **(विजानन्)** विशेष करके जानता हुआ **(आयोः)** जीवन के **(विभजन्तम्)** विभाग करते हुए को **(उप, ब्रुवीत)** कहें॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सूर्य्य ही मेघ आदिकों का उत्पन्न करने वाला है, उसकी विद्या का उपदेश दीजिये॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उस्रः।**

**इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्निरहानि भद्रा जनयन्त दस्माः॥३॥**

**अदत्रऽया। दयते। वार्याणि। पूषा। भगः। अदितिः। वस्त। उस्रः। इन्द्रः। विष्णुः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। अहानि। भद्रा। जनयन्त। दस्माः॥३॥**

**पदार्थः-(अदत्रया)** अन्नं योग्यान्यन्नादीनि **(दयते)** ददाति **(वार्य्याणि)** वरितुमर्हाणि **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(भगः)** भजनीयः **(अदितिः)** माता **(वस्ते)** आच्छादयति **(उस्रः)** किरणान्। **उस्रा इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं०१।५) **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(विष्णुः)** व्यापिका विद्युत् **(वरुणः** उदानः **(मित्रः)** प्राणः **(अग्निः)** प्रसिद्धो वह्निः **(अहानि)** दिनानि **(भद्रा)** भद्राणि **(जनयन्त)** जनयन्ति **(दस्मा)** दुःखोपक्षयितारः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विद्वानदत्रया वार्य्याणि दयते पूषा भगोऽदितिरुस्रो वस्त इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रोऽग्निर्दस्मा भद्राऽहानि जनयन्त तानि व्यर्थानि मा नयत॥३॥

**भावार्थः**-यथा माता कृपयान्नपानादिदानेनाऽपत्यानि पालयति तथैव सूर्य्यादयोऽहोरात्रिभ्यां सर्वान् रक्षन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् **(अदत्रया, वार्य्याणि)** खाने और स्वीकार करने योग्य अन्नादिकों को **(दयते)** देता है और **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(भगः)** सेवन करने योग्य तथा **(अदितिः)** माता **(उस्रः)** किरणों का **(वस्ते)** आच्छादन करती है और **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(विष्णुः)** व्यापक बिजुली **(वरुणः)** उदान **(मित्रः)** प्राण **(अग्निः)** प्रसिद्ध अग्नि **(दस्माः)** और दुःख के नाश करने वाले **(भद्रा)** कल्याणकारक **(अहानि)** दिनों को **(जनयन्त)** उत्पन्न करते हैं, उनको व्यर्थ मत व्यतीत करिये॥३॥

**भावार्थः**-जैसे माता अनुग्रह से अन्न-पान आदि के दान से सन्तानों का पालन करती है, वैसे ही सूर्य्य आदि पदार्थ दिन और रात्रि से सब की रक्षा करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वर्त्तित्वा किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या वर्त्ताव करके क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तन्नो अनर्वा सविता वरूथं तत्सिन्धव इषयन्तो अनु ग्मन्।**

**उप यद्वोचे अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः॥४॥**

**तत्। नः। अनर्वा। सविता। वरूथम्। तत्। सिन्धवः। इषयन्तः। अनु। ग्मन्। उप। यत्। वोचे। अध्वरस्य। होता। रायः। स्याम। पतयः। वाजऽरत्नाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(नः)** अस्मान् **(अनर्वा)** अविद्यमानाश्वः **(सविता)** सूर्य्यः **(वरूथम्)** गृहम् **(तत्)** **(सिन्धवः)** नद्यः समुद्रा वा **(इषयन्तः)** प्राप्नुवन्तः प्रापयन्तो वा **(अनु)** **(ग्मन्)** अनुगच्छन्ति **(उप)** **(यत्)** **(वोचे)** उपदिशेयम् **(अध्वरस्य)** अहिंसामयस्य यज्ञस्य **(होता)** आदाता **(रायः)** धनस्य **(स्याम)** भवेम **(पतयः)** स्वामिनः **(वाजरत्नाः)** विज्ञानधनवन्तः॥४॥

**अन्वयः**-अध्वरस्य होताऽहं सर्वान् प्रति यदुप वोचे तन्नो वरूथमनर्वा सविता तदिषयन्तः सिन्धवोऽनु ग्मन्। येन वाजरत्ना वयं रायः पतयः स्यामः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि यूयं सूर्य्यादिवत् सततं पुरुषार्थिनः स्यात् तर्हि श्रीमन्तो भवेत॥४॥

**पदार्थः**-**(अध्वरस्य)** अहिंसारूप यज्ञ का **(होता)** ग्रहण करने वाला मैं सब के प्रति **(यत्)** जिसका **(उप, वोचे)** उपदेश करूं **(तत्)** उसके और **(नः)** हम लोगों के **(वरूथम्)** गृह **(अनर्वा)** घोड़े जिसके नहीं वह और **(सविता)** सूर्य्य तथा **(तत्)** उसको **(इषयन्तः)** प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हुए। **(सिन्धवः)** नदियां वा समुद्र **(अनु, ग्मन्)** पीछे चलते हैं, जिससे **(वाजरत्नाः)** विज्ञान धन है जिनके ऐसे हम लोग **(रायः)** धन के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** होवें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो तुम सूर्य्य आदि के सदृश निरन्तर पुरुषार्थी होओ तो लक्ष्मीवान् होओ॥४॥

**मनुष्यैः किं कृत्वा किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या करके क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः।**
**अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम॥५॥३॥**

प्र। ये। वसुऽभ्यः। ईवत्। आ। नमः। दुः। ये। मित्रे। वरुणे। सूक्तऽवाचः। अव। एतु। अभ्वम्। कृणुत। वरीयः। दिवःपृथिव्योः। अवसा। मदेम॥५॥

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ये**) (**वसुभ्यः**) धनेभ्यः (**ईवत्**) गतिरक्षणवत् (**आ**) (**नमः**) अन्नम् (**दुः**) दद्युः (**ये**) (**मित्रे**) सख्याम् (**वरुणे**) उत्तमतिथौ (**सूक्तवाचः**) सुस्तुता सुप्रशंसिता वाग्येषान्ते (**अव**) (**एतु**) प्राप्नोतु (**अभ्वम्**) महत् (**कृणुता**) कुरुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वरीयः**) अत्युत्तमं धनादिकम् (**दिवः**) (**पृथिव्योः**) सूर्य्यभूम्योर्मध्ये (**अवसा**) रक्षणादिना (**मदेम**)॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यो! ये मित्रे वरुण ईवत्प्रा दुर्ये यूयं वसुभ्यो नमः कृणुता तद्युक्ता सूक्तवाचो वयं दिवस्पृथिव्योर्मध्ये येन वरीयोऽभ्वमवैतु तदवसा मदेम॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पुरुषार्थेन श्रियं तस्या अन्नादिकं सञ्चित्य महत् सुखं प्राप्य सर्वेषां रक्षणं विदधत्विति॥५॥

अत्र सूर्य्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**मित्रे**) मित्र (**वरुणे**) उत्तम तिथि के निमित्त (**ईवत्**) गतिमान् तथा रक्षणवान् पदार्थ को (**प्र, आ, दुः**) उत्तम प्रकार देवें वा (**ये**) जो तुम लोग (**वसुभ्यः**) धनों के लिये (**नमः**) अन्न को (**कृणुता**) सिद्ध करो उनसे युक्त (**सूक्तवाचः**) उत्तम प्रशंसित वाणी वाले हम लोग (**दिवः, पृथिव्योः**) प्रकाश सूर्य्य और भूमि के मध्य में जिससे (**वरीयः, अभ्वम्**) अत्युत्तम धनादि तथा अत्यन्त (**अव, एतु**) प्राप्त हो उसकी (**अवसा**) रक्षा से (**मदेम**) आनन्दित हों॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पुरुषार्थ से लक्ष्मी को और उससे अन्न आदि को इकट्ठा कर बड़े सुख को प्राप्त होकर सब का रक्षण करो॥५॥

इस सूक्त में सूर्य और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनचासवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ पञ्चर्चस्य पच्चाशत्तमस्य सूक्तस्य स्वस्त्यात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १ स्वराडुष्णिक्। २ निचृदुष्णिक्। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*मनुष्यैर्विद्वन्मित्रत्वेन विद्याधने प्राप्य यशः प्रथितव्यमित्याह॥*

अब पांच ऋचा वाले पचासवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के साथ मित्रता से विद्या और धन को प्राप्त होकर यज्ञ बढ़ावें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ वुरीत स॒ख्यम्।**

**विश्वो॑ रा॒य इ॑षुध्यति द्यु॒म्नं वृ॑णीत पु॒ष्यसे॑॥ १॥**

विश्वः॑। दे॒वस्य॑। ने॒तुः। मर्तः॑। वु॒री॒त॒। स॒ख्यम्। विश्वः॑। रा॒ये। इ॒षु॒ध्य॒ति॒। द्यु॒म्नम्। वृ॒णी॒त॒। पु॒ष्यसे॑॥ १॥

**पदार्थः**-(**विश्वः**) सर्वः (**देवस्य**) विदुषः (**नेतुः**) नायकस्य (**मर्त्तः**) मनुष्यः (**वुरीत**) स्वीकुर्य्यात् (**सख्यम्**) मित्रत्वम् (**विश्वः**) समग्रः (**राये**) धनाय (**इषुध्यति**) इषून् धरति (**द्युम्नम्**) यशः (**वृणीत**) (**पुष्यसे**) पुष्टो भवसि॥१॥

**अन्वयः**-विश्वो मर्त्तो नेतुर्देवस्य सख्यं वुरीत विश्वो राय इषुध्यति येन त्वं पुष्यसे तत् द्युम्नं भवान् वृणीत॥१॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैर्विद्याधनशरीरपुष्टिप्राप्तये विद्वच्छिक्षा शरीरात्मपरिश्रमश्च सततं कर्त्तव्यः॥१॥

**पदार्थः**-(**विश्वः**) सम्पूर्ण (**मर्त्तः**) मनुष्य (**नेतुः**) अग्रणी (**देवस्य**) विद्वान् की (**सख्यम्**) मित्रता को (**वुरीत**) स्वीकार करें और (**विश्वः**) सम्पूर्ण (**राये**) धन के लिये (**इषुध्यति**) वाणों को धारण करता है और जिससे आप (**पुष्यसे**) पुष्ट होते हैं, उस (**द्युम्नम्**) यश को आप (**वृणीत**) स्वीकार करिये॥१॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्या धन और शरीरपुष्टि की प्राप्ति के लिये विद्वानों की शिक्षा, शरीर और आत्मा से परिश्रम निरन्तर करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये इस उस विषय को कहते हैं॥

**ते ते॑ देव ने॒तर्ये चे॒माँ अ॑नु॒शसे॑।**

**ते रा॒या ते ह्या॒३॑पृचे॒ सचे॑महि सच॒थ्यैः॑॥ २॥**

ते। ते॒। दे॒व॒। ने॒तः॒। ये। च॒। इ॒मान्। अ॒नु॒ऽशसे॑। ते। रा॒या। ते। हि। आ॒ऽपृचे॑। सचे॑महि। स॒च॒थ्यैः॑॥ २॥

**पदार्थः**-(**ते**) तव (**ते**) (**देव**) विद्वान् (**नेतः**) नायक (**ये**) (**च**) (**इमान्**) (**अनुशसे**) अनुशासनाय (**ते**) (**राया**) धनेन (**ते**) (**हि**) (**आपृचे**) समन्तात् सम्पर्काय (**सचेमहि**) संयुञ्जमहि (**सचथ्यैः**) सचथेषु समवायेषु भवैः॥२॥

**अन्वयः**-हे नेतर्देव! ये तेऽनुशस इमान् सम्बध्नन्ति ते ते सत्कर्त्तव्याः स्युः। ये च राया सर्वान् रक्षन्ति ते प्रीतिमन्तो जायन्ते। ये ह्यापृचे सचथ्यैर्वर्त्तन्ते तैः सह वयं सचेमहि॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमिमान् वर्त्तमानान् समीपस्थान् जनाननुशाधि विद्वद्भिः सह सङ्गत्य विद्याः प्राप्नुहि॥२॥

**पदार्थः**-हे (**नेतः**) अग्रणी (**देव**) विद्वन्! (**ये**) जो (**ते**) आपके (**अनुशसे**) अनुशासन के लिये (**इमान्**) इनको सम्बन्धित करते हैं (**ते, ते**) वे वे सत्कार करने योग्य हों (**च**) और जो (**राया**) धन से सब की रक्षा करते हैं (**ते**) वे प्रीति से युक्त होते हैं और जो (**हि**) निश्चित (**आपृचे**) सब ओर से सम्बन्ध के लिये (**सचथ्यैः**) पूर्ण सम्बन्धों में उत्पन्न हुओं के साथ वर्त्तमान हैं, उनके साथ हम लोग (**सचेमहि**) मिलें॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप इन वर्त्तमान और समीप में स्थित जनों को शिक्षा दीजिये और विद्वानों के साथ मिल के विद्याओं को प्राप्त हूजिये॥२॥

**मनुष्यैः किं सत्कर्त्तव्यं किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किस का सत्कार करना और क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अतो न आ नॄनतिथीनतः पत्नीर्दशस्यत।**

**आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युयोतु यूयुविः॥३॥**

**अतः। नः। आ। नॄन्। अतिथीन्। अतः। पत्नीः। दशस्यत। आरे। विश्वम्। पथेऽस्थाम्। द्विषः। युयोतु। यूयुविः॥३॥**

**पदार्थः**-(**अतः**) कारणात् (**नः**) अस्मान् (**आ**) समन्तात् (**नॄन्**) अधर्माद्वियोज्य धर्म्मपथं गमयितॄन् (**अतिथीन्**) अनियततिथीन् (**अतः**) (**पत्नीः**) (**दशस्यत**) बलयत (**आरे**) (**विश्वम्**) सर्वञ्जनम् (**पथेष्ठाम्**) यो धर्मे पथि तिष्ठति तम् (**द्विषः**) द्वेष्ट्रीन् (**युयोतु**) वियोजयतु (**यूयुविः**) विभागकर्त्ता॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अतो नो नॄनतिथीनतोऽनन्तरं पत्नीरा दशस्यत। विश्वं पथेष्ठां जनमारे दशस्यत यूयुविर्द्विष आरे युयोतु॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्धार्म्मिकानतिथीन्त्संसेव्य सङ्गत्य विवेकम्प्राप्य द्वेषादिदोषा आरे प्रक्षेपणीयाः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अतः**) इस कारण से (**नः**) हम लोगों और (**नॄन्**) अधर्म्म से अलग कर धर्म्म के मार्ग को चलाने वाले (**अतिथीन्**) जिनके आगमन की तिथि नियत नहीं उनको (**अतः**) इसके अनन्तर (**पत्नीः**) स्त्रियों को (**आ**) सब प्रकार से (**दशस्यत**) प्रबल करिये और (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जन को

तथा **(पथेष्ठाम्)** जो धर्म्मयुक्त पथ में स्थित हो उसको **(आरे)** समीप में प्रबल करिये और **(यूयुविः)** विभाग करने वाला **(द्विषः)** द्वेष्टा जनों को दूर में **(युयोतु)** विशेष करके विभक्त करें॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक अतिथियों की उत्तम प्रकार सेवा कर मिल के विवेक को प्राप्त होकर द्वेष आदि दोषों को दूर करें॥३॥

**ये वह्निवद्व्यवहारवोढारः स्युस्ते धीरा जायन्त इत्याह॥**

जो अग्नि के सदृश व्यवहार के धारण करने वाले होवें, वे धीर होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**यत्र वह्निर॒भिहि॑तो दु॒द्रव॒द् द्रोण्यः॑ प॒शुः।**

**नृमणा॑ वी॒रप॒स्त्योऽर्णा॒ धीरे॑व॒ सनि॑ता॥४॥**

**यत्र॑। वह्निः॑। अ॒भिऽहि॑तः। दु॒द्रव॑त्। द्रोण्यः॑। प॒शुः। नृ॒ऽमनाः॑। वी॒रऽप॑स्त्यः। अर्णा॑। धीरा॑ऽइव। सनि॑ता॥४॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** यस्मिन् **(वह्निः)** वोढाऽग्निः **(अभिहितः)** कथितो धृतो वा **(दुद्रवत्)** भृशं गच्छति **(द्रोण्यः)** द्रोणेषु शीघ्रगामिषु भवः **(पशुः)** यो दृश्यते **(नृमणाः)** नृषु मनो यस्य सः **(वीरपस्त्यः)** वीरा पस्त्ये गृहे यस्य सः **(अर्णा)** प्रापिका **(धीरेव)** ध्यानवतीव **(सनिता)** विभक्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र द्रोण्यः पशुरिवाऽभिहितो वह्निर्दुद्रवत् तत्रार्णा धीरेव नृमणा वीरपस्त्यस्तनयः सनिता भवेत्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। येऽग्निवत्तेजस्विनो वेगवन्तो भवेयुस्ते सत्याऽसत्यविभाजका भवेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्र)** जिसमें **(द्रोण्यः)** शीघ्र चलने वालों में उत्पन्न **(पशुः)** जो देखा जाता है उसके सदृश **(अभिहितः)** कहा गया वा धारण किया गया **(वह्निः)** प्राप्त करने वाला अग्नि **(दुद्रवत्)** अत्यन्त चलता है वहाँ **(अर्णा)** प्राप्त कराने वाली **(धीरेव)** ध्यानवती के सदृश **(नृमणाः)** मनुष्यों में जिसका मन **(वीरपस्त्यः)** जिसके गृह में वीर वह पुत्र **(सनिता)** विभाग करने वाला होवे॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में [उपमा और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो अग्नि के सदृश तेजस्वी और वेग से युक्त होवें, वे सत्य और असत्य के विभाग करने वाले होवें॥४॥

**मनुष्यैः किं याचनीयमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या मांगना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ए॒ष ते॑ देव नेता॒ रथ॒स्पतिः॒ शं र॒यिः।**

**शं रा॒ये शं स्व॒स्तय॑ इ॒षःस्तुतो॑ मनामहे दे॒वस्तुतो॑ मनामहे॥५॥४॥**

**ए॒षः। ते॒। दे॒व॒। ने॒तरिति॑। रथः॒पतिः॑। शम्। र॒यिः। शम्। रा॒ये। शम्। स्व॒स्तये॑। इ॒षःऽस्तुतः॑। म॒ना॒म॒हे॒। दे॒वऽस्तुतः॑। म॒ना॒म॒हे॥५॥**

**पदार्थः**-(**एषः**) (**ते**) तव (**देव**) विद्वन् (**नेतः**) प्रापक (**रथस्पतिः**) रथस्य स्वामी (**शम्**) सुखरूपम् (**रयिः**) धनम् (**शम्**) (**राये**) धनाय (**शम्**) कल्याणम् (**स्वस्तये**) सुखाय (**इषःस्तुतः**) अन्नादेः स्तावकः (**मनामहे**) याचामहे (**देवस्तुतः**) देवैर्विद्वद्भिः प्रशंसितः (**मनामहे**) विजानीमः॥५॥

**अन्वयः**-हे नेतर्देव! त एषो रथस्पतिः शं रयिः शं राये स्वस्तये शमिषः स्तुतः देवस्तुतोऽस्ति तान् वयं मनामहे तान् वयं मनामहे॥५॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्प्रशंसिताः कल्याणकराः पदार्थाः स्युस्तान् वयं गृह्णीयाम॥५॥

अत्र विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**नेतः**) प्राप्ति कराने वाले (**देव**) विद्वन्! (**ते**) आपका (**एषः**) यह (**रथस्पतिः**) वाहन का स्वामी (**शम्**) सुखरूप (**रयिः**) धन और (**शम्**) सुख (**राये**) धन के लिये वा (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**शम्**) कल्याण (**इषःस्तुतः**) अन्न आदि की स्तुति करने वाला और जो (**देवस्तुतः**) विद्वानों से प्रशंसित है, उनकी हम लोग (**मनामहे**) याचना करते हैं और हम लोग (**मनामहे**) जानते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों में प्रशंसित और कल्याणकारक पदार्थ होवें उनको हम लोग ग्रहण करें॥५॥

इस सूक्त में विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचासवां सूक्त और चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य स्वस्त्यात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २ गायत्री। ३, ४ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ५, ६, ८, ९, १० निचृदुष्णिक्। ७ विराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ११ निचृत्त्रिष्टुप्। १२ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १३ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १४ विराडनुष्टुप्। १५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***विद्वान् विद्वद्भिस्सह किं कुर्य्यादित्युपदिश्यते॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले इक्यावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन विद्वानों के साथ क्या करे, यह उपदेश किया जाता है॥

### अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि। देवेभिर्हव्यदातये॥१॥

**अग्ने। सुतस्य। पीतये। विश्वैः। ऊमेभिः। आ। गहि। देवेभिः। हव्यऽदातये॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**सुतस्य**) निष्पादितस्यौषधिरसस्य (**पीतये**) पानाय (**विश्वैः**) सर्वैः (**ऊमेभिः**) रक्षणादिकर्त्तृभिस्सह (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**देवेभिः**) विद्वद्भिः (**हव्यदातये**) दातव्यदानाय॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं विश्वैरूमेभिर्देवेभिः सह सुतस्य पीतये हव्यदातय आ गहि॥१॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसः परमविदुषा सह सर्वाञ्जनान् सम्बोधयेयुस्तर्हि सर्व आनन्दिताः स्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**विश्वैः**) सम्पूर्ण (**ऊमेभिः**) रक्षा आदि करने वाले (**देवेभिः**) विद्वानों के साथ (**सुतस्य**) निकाले हुए ओषधिरस के (**पीतये**) पान करने के लिये और (**हव्यदातये**) देने योग्य वस्तु के देने के लिये (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन अत्यन्त विद्वान् के साथ सम्पूर्ण जनों को उत्तम प्रकार बोध देवें तो सब आनन्दित होवें॥१॥

**कीदृशैर्मनुष्यैर्भवितव्यमित्याह॥**

कैसे मनुष्यों को होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

### ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम्। अग्नेः पिबत जिह्वया॥२॥

**ऋतऽधीतयः। आ। गत। सत्यऽधर्माणः। अध्वरम्। अग्नेः। पिबत। जिह्वया॥२॥**

**पदार्थः**-(**ऋतधीतयः**) ऋतस्य सत्यस्य धीतिर्धारणं येषान्ते (**आ**) (**गत**) आगच्छत (**सत्यधर्माणः**) सत्यो धर्म्मो येषान्ते (**अध्वरम्**) अहिंसामयं व्यवहारम् (**अग्नेः**) पावकस्य (**पिबत**) (**जिह्वया**)॥२॥

**अन्वयः**-हे ऋतधीतयः! सत्यधर्म्माणो विद्वांसो यूयमध्वरमा गताग्नेर्जिह्वया रसं पिबत॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यूयं सत्यधर्म्मस्य धारणेनातुलं सुखं प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(ऋतधीतय:)** सत्य के धारण करने वाले **(सत्यधर्म्माण:)** सत्य धर्म्म जिनका ऐसा, विद्वानो! आप लोग **(अध्वरम्)** अहिंसारूप व्यवहार को **(आ, गत)** प्राप्त हूजिये और **(अग्ने:)** अग्नि की **(जिह्वया)** जिह्वा से रस को **(पिबत)** पीजिये॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग सत्यधर्म्म के धारण से अत्यन्त सुख को प्राप्त हूजिये॥२॥

**विद्वद्भिस्सह विद्वान् किङ्कुर्य्यादित्याह॥**

विद्वानों के साथ विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**विप्रे॑भिर्विप्र सन्त्य प्रातुर्याव॑भिरा ग॑हि। देवेभि: सोम॑पीतये॥३॥**

**विप्रे॑भि:। विप्र। सन्त्य। प्रातुर्याव॑ऽभि:। आ। गहि। देवेभि॑:। सोम॑ऽपीतये॥३॥**

**पदार्थ:**-**(विप्रेभि:)** मेधाविभि: **(विप्र)** मेधाविन् **(सन्त्य)** सन्तौ वर्त्तमाने साधो **(प्रातर्यावभि:)** ये प्रातर्यान्ति तै: **(आ) (गहि)** आगच्छ **(देवेभि:)** विद्वद्भिस्सह **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वय:**-हे सन्त्य विप्र! त्वं प्रातर्यावभिर्देवेभिर्विप्रेभिस्सह सोमपीतय आ गहि॥३॥

**भावार्थ:**-यदा विद्वद्भिस्सह विदुषां सङ्गो जायते तदैश्वर्य्यस्य प्रादुर्भावो भवति॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(सन्त्य)** वर्त्तमान में श्रेष्ठ **(विप्र)** बुद्धिमान्! आप **(प्रातर्यावभि:)** प्रात:काल में जाने वाले **(देवेभि:)** विद्वानों के और **(विप्रेभि:)** बुद्धिमानों के साथ **(सोमपीतये)** सोमलता नामक ओषधि के रस के पान के लिये **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थ:**-जब विद्वानों के साथ विद्वानों का सङ्ग होता है, तब ऐश्वर्य्य का प्रादुर्भाव होता है॥३॥

**पुनर्मनुष्यै: किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं सोम॑श्चमू सुतोऽम॑त्रे परि॑ षिच्यते। प्रिय इन्द्रा॑य वायवे॑॥४॥**

**अयम्। सोम॑:। चमू इति॑। सुत:। अमत्रे॑। परि॑। सिच्यते। प्रिय:। इन्द्रा॑य। वायवे॑॥४॥**

**पदार्थ:**-**(अयम्) (सोम:)** ऐश्वर्य्ययोग: **(चमू)** द्विविधे सेने **(सुत:)** निष्पन्न: **(अमत्रे)** पात्रे **(परि)** सर्वत: **(सिच्यते) (प्रिय:)** कमनीय: **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य्ययुक्ताय **(वायवे)** बलवते॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! योऽयं वायव इन्द्राय सुत: प्रिय: सोमोऽमत्रे परि षिच्यते स चमू परि वर्धयति॥४॥

**भावार्थ:**-यदि वैद्या ओषधिसारान्निस्सार्य्याऽरोगान् मनुष्यान् कुर्युस्तर्हि सर्व ऐश्वर्य्यवन्तो जायन्ते॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(अयम्)** यह **(वायवे)** बलवान् **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष के लिये **(सुत:)** उत्पन्न किया गया **(प्रिय:)** सुन्दर **(सोम:)** ऐश्वर्य्य का योग **(अमत्रे)** पात्र में **(परि)** सब

ओर से **(सिच्यते)** सींचा जाता है वह **(चमू)** दो प्रकार की सेनाओं को सब प्रकार से वृद्धि करता है॥४॥

**भावार्थः**-जो वैद्यजन ओषधियों के सारभागों को निकाल कर रोगरहित मनुष्यों को करें तो सब ऐश्वर्य्यों से युक्त होते हैं॥४॥

**मनुष्यैः किं भोक्तव्यं पेयं चेत्युपदिश्यते॥**

मनुष्यो को क्या भोजन करना और क्या पीना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वायवा याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये।**

**पिबा सुतस्यान्धसो अभि प्रयः॥५॥५॥**

**वायो इति। आ। याहि। वीतये। जुषाणः। हव्यऽदातये। पिब। सुतस्य। अन्धसः। अभि। प्रयः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वायो)** परमबलयुक्त **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(वीतये)** विज्ञानादिप्राप्तये **(जुषाणः)** सेवमानः **(हव्यदातये)** दातव्यदानाय **(पिबा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य **(अन्धसः)** अन्नस्य रसान् **(अभि)** **(प्रयः)** कमनीयं जलम्॥५॥

**अन्वयः**-हे वायो! त्वं हव्यदातये वीतयेऽभि प्रयो जुषाण आ याहि सुतस्यान्धसः पिबा॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वंस्त्वं रोगप्रमादनाशकं बुद्धिवर्द्धकमन्नं भुङ्क्ष्व रसं पिब॥५॥

**पदार्थः**-हे **(वायो)** अत्यन्त बल से युक्त! आप **(हव्यदातये)** देने योग्य वस्तु के देने के लिये और **(वीतये)** विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये **(अभि, प्रयः)** सब ओर से सुन्दर जल का **(जुषाणः)** सेवन करते हुए **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(सुतस्य)** उत्पन्न हुए **(अन्धसः)** अन्न के रस का **(पिबा)** पान करिये॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप रोग और प्रमाद के नाश करने और बुद्धि के बढ़ाने वाले अन्न को खाइये और रस को पीजिये॥५॥

**अथ राजामात्यौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

अब राजा और अमात्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः। तान् जुषेथामरेपसावभि प्रयः॥६॥**

**इन्द्रः। च। वायो इति। एषाम्। सुतानाम्। पीतिम्। अर्हथः। तान्। जुषेथाम्। अरेपसौ। अभि। प्रयः॥६॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** राजा **(च)** **(वायो)** प्रधानपुरुष **(एषाम्)** वर्त्तमानानाम् **(सुतानाम्)** निष्पालनानाम् **(पीतिम्)** पानम् **(अर्हथः)** **(तान्)** **(जुषेथाम्)** **(अरेपसौ)** दयालू **(अभि)** **(प्रयः)** कमनीयमन्नम्॥६॥

**अन्वयः**-हे वायो! इन्द्रश्च युवामेषां सुतानां पीतिमर्हथस्तानरेपसौ सन्तौ प्रयोऽभि जुषेथाम्॥६॥

**भावार्थः**-यत्र राजामात्या धार्मिकाः स्युस्तत्र सर्वा योग्यता जायेत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वायो)** मुख्य पुरुष! **(इन्द्रः, च)** और राजा आप दोनों **(एषाम्)** इन वर्त्तमान **(सुतानाम्)** पालना से छूटे अर्थात् सिद्ध हुए पदार्थों के **(पीतिम्)** पान के **(अर्हथः)** योग्य होते हैं **(तान्)** उनको और **(अरेपसौ)** दयालु हुए **(प्रयः)** सुन्दर अन्न को **(अभि, जुषेथाम्)** सेवन करें॥६॥

**भावार्थः**-जहाँ राजा और मन्त्री धार्मिक होवें, वहाँ सम्पूर्ण योग्यता होवे॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः।**

**निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः॥७॥**

**सुताः। इन्द्राय। वायवे। सोमासः। दधिऽआशिरः। निम्नम्। न। यन्ति। सिन्धवः। अभि। प्रयः॥७॥**

**पदार्थः**-**(सुताः)** निष्पन्नाः **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(वायवे)** वायुवद्बलाय **(सोमासः)** ऐश्वर्य्ययुक्ताः पदार्थाः **(दध्याशिरः)** ये धातुमशितुं योग्याः **(निम्नम्)** **[**निम्नं**]** देशम् **(न)** इव **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(सिन्धवः)** नद्यः **(अभि)** **(प्रयः)** अतीव प्रियम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सिन्धवो निम्नं देशं न दध्याशिरः सुतास्सोमासो वायव इन्द्राय प्रयोऽभि यन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा नद्यः समुद्रं गच्छन्ति तथैव महौषधिसेविनः सुखं यान्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सिन्धवः)** नदियां **(निम्नम्)** अर्थात् नीचे स्थल को **(न)** जैसे वैसे **(दध्याशिरः)** धारण करने और खाने योग्य **(सुताः)** उत्पन्न हुए **(सोमासः)** ऐश्वर्य से युक्त पदार्थ **(वायवे)** वायु के सदृश बलयुक्त **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य वाले के लिये **(प्रयः)** अत्यन्त प्रिय को **(अभि)** सब ओर से **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे नदियां समुद्र को प्राप्त होती हैं, वैसे ही बड़ी ओषधियों के सेवन करने वाले सुख को प्राप्त होते हैं॥७॥

**अथाग्निरिव विद्वान् कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

अब अग्नि के समान विद्वान् कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥८॥**

**सऽजूः। विश्वेभिः। देवेभिः। अश्विऽभ्याम्। उषसा। सऽजूः। आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण॥८॥**

**पदार्थः**-**(सजूः)** संयुक्तः **(विश्वेभिः)** सर्वैः **(देवेभिः)** पृथिव्यादिभिः **(अश्विभ्याम्)** प्रकाशाऽप्रकाशलोकाभ्याम् **(उषसा)** प्रातर्वेलया **(सजूः)** संयुक्तः **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(अग्ने)** पावक इव विद्वान् **(अत्रिवत्)** व्यापकवत् **(सुते)** उत्पन्ने जगति **(रण)** उपदिश॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथाऽग्निर्विश्वेभिर्देवेभिस्सजूरश्विभ्यामुषसा सजूः सुतेऽत्रिवदस्ति तथाऽऽयाहि रण॥८॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! या विद्युत्सर्वेषु पदार्थेषु व्याप्ताऽस्ति तां विजानीत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन्! जैसे अग्नि **(विश्वेभिः)** सम्पूर्ण **(देवेभिः)** पृथिवी आदिकों से **(सजूः)** संयुक्त तथा **(अश्विभ्याम्)** प्रकाशित और अप्रकाशित लोकों तथा **(उषसा)** प्रातःकाल से **(सजूः)** संयुक्त **(सुते)** उत्पन्न जगत् में **(अत्रिवत्)** व्यापक के सदृश है, वैसे **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(रण)** उपदेश करिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जो बिजुली सब पदार्थों में व्याप्त है, उसको विशेष करके जानिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥९॥**

**सऽजूः। मित्रावरुणाभ्याम्। सऽजूः। सोमेन। विष्णुना। आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण॥९॥**

**पदार्थः**-**(सजूः)** संयुक्तः **(मित्रावरुणाभ्याम्)** प्राणोदानाभ्याम् **(सजूः)** **(सोमेन)** ऐश्वर्य्येण चन्द्रेण वा **(विष्णुना)** व्यापकेनाकाशेन **(आ)** **(याहि)** **(अग्ने)** **(अत्रिवत्)** **(सुते)** **(रण)**॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! त्वं मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना सजूः सुतेऽत्रिवदस्ति तद्बोधनायाऽऽयाहि अस्मान् सत्यमुपदेशं रण॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्याः प्राणापानादिस्थविद्युद्विद्यां विजानीयुस्तर्हि बहुसुखं लभेरन्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(मित्रावरुणाभ्याम्)** प्राण और उदान पवनों से **(सजूः)** संयुक्त **(सोमेन)** ऐश्वर्य्य वा चन्द्र से और **(विष्णुना)** व्यापक आकाश से **(सजूः)** संयुक्त और **(सुते)** उत्पन्न हुए जगत् में **(अत्रिवत्)** व्यापक के सदृश है, उसके जानने के लिये **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और हम लोगों के लिये सत्य का **(रण)** उपदेश कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्राण और अपान आदि में स्थित बिजुली की विद्या को जानें तो बहुत सुख को प्राप्त होवें॥९॥

**पुनः स कीदृश इत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥१०॥६॥**

**सऽजूः। आदित्यैः। वसुऽभिः। सऽजूः। इन्द्रेण। वायुना। आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण॥१०॥**

**पदार्थः**-(**सजूः**) (**आदित्यैः**) मासैः (**वसुभिः**) पृथिव्यादिभिः (**सजूः**) (**इन्द्रेण**) जीवेन (**वायुना**) बलवता (**आ, याहि**) (**अग्ने**) पावकवद्विद्वन् (**अत्रिवत्**) (**सुते**) (**रण**) उपदिश॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्नादित्यैर्वसुभिस्सह सजूर्वायुनेन्द्रेण सजूः सुतेऽत्रिवद् वर्त्तते तद्विज्ञापनायाऽऽयाहि रण च॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो मानसो विद्युदग्निराकाशस्थो वर्त्तते तं विज्ञाय कार्य्येषूपयुङ्ध्वम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**अग्नि**) अग्नि के समान विद्वन्! जो (**आदित्यैः**) महीनों और (**वसुभिः**) पृथिवी आदिकों के साथ (**सजूः**) संयुक्त और (**वायुना**) बलवान् (**इन्द्रेण**) जीव के साथ (**सजूः**) संयुक्त (**सुते**) उत्पन्न हुए जगत् में (**अत्रिवत्**) व्यापक के सदृश वर्त्तमान है, उसके जनाने के लिये (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये और (**रण**) उपदेश करिये॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो मन सम्बन्धी बिजुलीरूप अग्नि आकाश में स्थित हुआ वर्त्तमान है, उसको जान कर कार्य्यों में उपयोग करिये॥१०॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।**

**स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना॥११॥**

**स्वस्ति। नः। मिमीताम्। अश्विना। भगः। स्वस्ति। देवी। अदितिः। अनर्वणः। स्वस्ति। पूषा। असुरः। दधातु। नः। स्वस्ति। द्यावापृथिवी इति। सुऽचेतुना॥११॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**मिमीताम्**) सृजेथाम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**भगः**) ऐश्वर्य्यकर्त्ता वायुः (**स्वस्ति**) (**देवी**) देदीप्यमाना (**अदितिः**) अखण्डिता (**अनर्वणः**) अनश्वस्य (**स्वस्ति**) (**पूषा**) पुष्टिकरो दुग्धादिः (**असुरः**) मेघः (**दधातु**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**स्वस्ति**) (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**सुचेतुना**) सुष्ठु विज्ञापनेन॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाश्विनानर्वणः स्वस्ति मिमीतां भगो नः स्वस्ति देव्यदितिर्विद्या नः स्वस्ति सुचेतुना द्यावापृथिवी नः स्वस्ति पूषाऽसुरो नः स्वस्ति दधातु तथा युष्मभ्यमपि ते दधतु॥११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पदार्थविद्यया यान् पदार्थान् उपयुञ्जीरन् त एभ्य उपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुः॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जन (**अनर्वणः**) अश्वरहित का (**स्वस्ति**) सुख (**मिमीताम्**) रचें और (**भगः**) ऐश्वर्य्य को करने वाला वायु (**नः**) हम लोगों के लिये (**स्वस्ति**) सुख (**देवी**) प्रकाशित (**अदितिः**) अखण्डविद्या (**नः**) हम लोगों के लिये (**स्वस्ति**) सुख

**(सुचेतुना)** उत्तम विज्ञापन से **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख और **(पूषा)** पुष्टि करने वाला दुग्धादि पदार्थ और **(असुरः)** मेघ हम लोगों के लिये सुख को **(दधातु)** धारण करे, वैसे आप लोगों के लिये भी वे सुख को धारण करें॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पदार्थविद्या से जिन पदार्थों को उपयुक्त करें अर्थात् काम में लावें, वे इनसे उपकार ग्रहण करने को समर्थ होवें॥११॥

**पुनर्मनुष्याः कथं विद्यावृद्धिं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे विद्यावृद्धि करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।**
**बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥१२॥**

**स्वस्तये। वायुम्। उप। ब्रवामहै। सोमम्। स्वस्ति। भुवनस्य। यः। पतिः। बृहस्पतिम्। सर्वऽगणम्। स्वस्तये। स्वस्तये। आदित्यासः। भवन्तु। नः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(स्वस्तये)** सुखाय **(वायुम्)** वायुविद्याम् **(उप)** **(ब्रवामहै)** उपदिशेम **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(स्वस्ति)** **(भुवनस्य)** लोकस्य **(यः)** **(पतिः)** पालकः **(बृहस्पतिम्)** बृहतीनां स्वामिनम् **(सर्वगणम्)** सर्वे गणाः समूहा यस्मिन् **(स्वस्तये)** निरुपद्रवाय **(स्वस्तये)** परमसुखाय **(आदित्यासः)** अष्टचत्वारिंशद्वर्ष-परिमितेन ब्रह्मचर्येण कृतविद्या मासा इव व्याप्ताखिलविद्या वा **(भवन्तु)** **(नः)** अस्मभ्यम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं स्वस्तये वायुं सोममुप ब्रवामहै तथा श्रुत्वा यूयमन्यान् प्रत्युप ब्रुवत। यो भुवनस्य पतिः सः स्वस्तये सर्वगणं बृहस्पतिं नः स्वस्ति च दधातु यथाऽऽदित्यासो नः स्वस्तये भवन्तु तथा युष्मभ्यमपि सन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्याः परस्परं पदार्थविद्यां श्रुत्वाऽभ्यस्य च विद्वांसो भवन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(वायुम्)** वायुविद्या और **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य का **(उप, ब्रवामहै)** उपदेश देवें, वैसे सुनकर आप लोग अन्यों के प्रति उपदेश दीजिये और **(यः)** जो **(भुवनस्य** लोक का **(पतिः)** स्वामी है वह **(स्वस्तये)** उपद्रव दूर होने के लिये **(सर्वगणम्)** सम्पूर्ण समूह जिसमें उस **(बृहस्पतिम्)** बड़ी वेदवाणियों के स्वामी को और **(नः)** हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख को धारण करे और जैसे **(आदित्यासः)** अड़तालीस वर्ष परिमित ब्रह्मचर्य्य से किया विद्याभ्यास जिन्होंने तथा जो मास के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त वे हम लोगों के अर्थ **(स्वस्तये)** अत्यन्त सुख के लिये **(भवन्तु)** होवें, वैसे आप लोगों के लिये भी हों॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य परस्पर पदार्थविद्या को सुन और अभ्यास करके विद्वान् होवें॥१२॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॑ दे॒वा नो॑ अ॒द्या स्व॒स्तये॑ वैश्वान॒रो वसु॑र॒ग्निः स्व॒स्तये॑।**

**दे॒वा अ॑वन्त्वृ॒भव॑: स्व॒स्तये॑ स्व॒स्ति नो॑ रु॒द्रः पा॒त्वंह॑सः॥१३॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः। न॒ः। अ॒द्य। स्व॒स्तये॑। वै॒श्वा॒न॒रः। वसु॑ः। अ॒ग्निः। स्व॒स्तये॑। दे॒वाः। अ॒व॒न्तु॒। ऋ॒भव॑ः। स्व॒स्तये॑। स्व॒स्ति। न॒ः। रु॒द्रः। पा॒तु॒। अंह॑सः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(नः)** अस्मान् **(अद्या)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(स्वस्तये)** सुखाय **(वैश्वानरः)** विश्वेषु नरेषु राजमानः **(वसुः)** यः सर्वत्र वसति **(अग्निः)** पावकः **(स्वस्तये)** आनन्दाय **(देवाः)** विद्वांसः **(अवन्तु) (ऋभवः)** मेधाविनः **(स्वस्तये)** विद्यासुखाय **(स्वस्ति)** सुखकरं वर्त्तमानम् **(नः)** अस्मान् **(रुद्रः)** दुष्टदण्डकः **(पातु) (अंहसः)** अपराधात्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाद्या विश्वे देवाः स्वस्तये नोऽवन्तु स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निरवन्त्वृभवो देवाः स्वस्तयेऽवन्तु रुद्रः स्वस्ति भावयित्वा नोऽस्मानंहसः पातु॥१३॥

**भावार्थः**-विदुषां योग्यतास्ति उपदेशाध्यापनाभ्यां सर्वान् मनुष्यान् सततं रक्षयित्वा वर्धयन्तु॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अद्या)** आज **(विश्वे, देवाः)** सम्पूर्ण विद्वान् जन **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(नः)** हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें और **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(वैश्वानरः)** समस्त मनुष्यों में प्रकाशमान **(वसुः)** सर्वत्र वसने वाला **(अग्निः)** अग्नि रक्षा करे और **(ऋभवः)** बुद्धिमान् **(देवाः)** विद्वान् जन **(स्वस्तये)** विद्यासुख के लिये रक्षा करें और **(रुद्रः)** दुष्टों को दण्ड देने वाला **(स्वस्ति)** सुख की भावना करके **(नः)** हम लोगों की **(अंहसः)** अपराध से **(पातु)** रक्षा करे॥१३॥

**भावार्थः**-विद्वानों की योग्यता है कि उपदेश और अध्यापन से सब मनुष्यों की निरन्तर रक्षा करके वृद्धि करावें॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्व॒स्ति मि॑त्रावरुणा स्व॒स्ति प॑थ्ये रेवति।**

**स्व॒स्ति न॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ स्व॒स्ति नो॑ अदिते कृधि॥१४॥**

**स्व॒स्ति। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒। स्व॒स्ति। प॒थ्ये॒। रे॒व॒ति॒। स्व॒स्ति। न॒ः। इन्द्र॑ः। च॒। अ॒ग्निः। च॒। स्व॒स्ति। न॒ः। अ॒दि॒ते॒। कृ॒धि॒॥१४॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानौ (**स्वस्ति**) (**पथ्ये**) पथोनपेते कर्मणि (**रेवति**) बहुधनयुक्ते (**स्वस्ति**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रः**) वायुः (**च**) (**अग्निः**) विद्युत् (**च**) (**स्वस्ति**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अदिते**) अखण्डितविद्य (**कृधि**) कुरु॥१४॥

**अन्वयः**-हे अदिते रेवति! त्वं पथ्ये यथा मित्रावरुणा नः स्वस्ति इन्द्रश्च स्वस्ति अग्निश्च स्वस्ति नः करोति तथा स्वस्ति कृधि॥१४॥

**भावार्थः**-यः सर्वेभ्यः सुखं प्रयच्छति स एव विद्वान् प्रशंसितो भवति॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**अदिते**) खण्डितविद्या से रहित (**रेवति**) बहुत धन से युक्त! आप (**पथ्ये**) मार्गयुक्त कर्म्म में जैसे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान (**नः**) हम लोगों के लिये (**स्वस्ति**) सुख (**इन्द्रः, च**) और वायु (**स्वस्ति**) सुख को (**अग्निः, च**) और बिजुली (**स्वस्ति**) सुख (**नः**) हम लोगों के लिये करती है, वैसे (**स्वस्ति**) सुख (**कृधि**) करिये॥१४॥

**भावार्थः**-जो सब जीवों के लिये सुख देता है वही विद्वान् प्रशंसित होता है॥१४॥

**मनुष्यैर्विद्वत्सङ्गेन धर्ममार्गेण गन्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को विद्वानों के संग से जो धर्ममार्ग उससे चलना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।**

**पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥१५॥७॥**

**स्वस्ति। पन्थाम्। अनु। चरेम। सूर्याचन्द्रमसौऽइव। पुनरिति। ददता। अघ्नता। जानता। सम्। गमेमहि॥१५॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**पन्थाम्**) पन्थानाम् (**अनु**) (**चरेम**) अनुगच्छेम (**सूर्याचन्द्रमसाविव**) (**पुनः**) (**ददता**) दानकर्त्रा (**अघ्नता**) अहिंसकेन (**जानता**) विदुषा (**सम्**) (**गमेमहि**) सङ्गच्छेमहि॥१५॥

**अन्वयः**-वयं सूर्याचन्द्रमसाविव स्वस्ति पन्थामनु चरेम पुनर्ददताघ्नता जानता सह सङ्गमेमहि॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यश्चन्द्रश्च नियमेनाहर्निशं गच्छतस्तथा न्यायमार्गं गच्छत सज्जनैः सह समागमं कुरुतेति॥१५॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या।

**इत्येकपञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हम लोग (**सूर्याचन्द्रमसाविव**) सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश (**स्वस्ति**) सुख (**पन्थाम्**) मार्गों के (**अनु, चरेम**) अनुगामी हों और (**पुनः**) फिर (**ददता**) दान करने (**अघ्नता**) और नहीं नाश करने वाले (**जानता**) विद्वान् के साथ (**सम्, गमेमहि**) मिलें॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य और चन्द्रमा नियम से दिनरात्रि चलते हैं, वैसे न्याय के मार्ग को प्राप्त हूजिये और सज्जनों के साथ समागम करिये॥१५॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यावनवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**

# ॥ओ३म्॥

**अथ सप्तदशर्चस्य द्विपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४, ५, १५ विराडनुष्टुप्। २, ७, १० निचृदनुष्टुप्। ८, १२, १३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ९, ११ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १४ विराड् बृहती। १६ भुरिग्बृहती। १७ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः सत्कर्त्तव्यान् सत्कुर्युरित्याह॥***

अब सत्रह ऋचा वाले बावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य सत्कार करने योग्यों का सत्कार करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः।**

**ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः॥१॥**

**प्र। श्यावऽअश्व। धृष्णुऽया। अर्च। मरुत्ऽभिः। ऋक्वऽभिः। ये। अद्रोघम्। अनुऽस्वधम्। श्रवः। मदन्ति। यज्ञियाः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**श्यावाश्व**) श्यावाः कृष्णशिखाऽग्नयोऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**धृष्णुया**) दृढत्वेन (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मरुद्भिः**) मनुष्यैः (**ऋक्वभिः**) सत्कर्त्तृभिः (**ये**) (**अद्रोघम्**) द्रोहरहितम् (**अनुष्वधम्**) स्वधामन्नमनुवर्त्तमानम् (**श्रवः**) श्रवणम् (**मदन्ति**) हर्षन्ति (**यज्ञियाः**) यज्ञकर्त्तारः॥१॥

**अन्वयः**-हे श्यावाश्व! ये यज्ञिया अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति तानृक्वभिर्मरुद्भिर्धृष्णुया प्रार्चा॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्कर्त्तव्यान्त्सत्कुर्वन्ति ते सर्वे सत्कृता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**श्यावाश्व**) काली शिखा वाले अग्नि रूप घोड़ों से युक्त (**ये**) जो (**यज्ञियाः**) सत्कार करने वाले (**अद्रोघम्**) द्रोह से रहित (**अनुष्वधम्, श्रवः**) अन्न और श्रवण के अनुकूल वर्त्तमान (**मदन्ति**) आनन्दित होते हैं उनकी (**ऋक्वभिः**) सत्कार करने वाले (**मरुद्भिः**) मनुष्यों के साथ (**धृष्णुया**) दृढ़ता से (**प्र, अर्चा**) सत्कार करो॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्कार करने योग्यों का सत्कार करते हैं, वे सब सत्कृत होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया।**

**ते यामन्ना धृषद्विनस्त्मना पान्ति शश्वतः॥२॥**

ते। हि। स्थिरस्य। शवसः। सखायः। सन्ति। धृष्णुऽया। ते। यामन्। आ। धृषत्ऽविनः। त्मना। पान्ति। शश्वतः॥ २॥

**पदार्थः**-(ते) (हि) (स्थिरस्य) (शवसः) बलस्य (सखायः) (सन्ति) (धृष्णुया) दृढत्वादिगुणयुक्ताः (ते) (यामन्) यामनि (आ) (धृषद्विनः) बहुदृढत्वादिगुणयुक्ताः (त्मना) आत्मना (पान्ति) (शश्वतः) निरन्तराः॥ २॥

**अन्वयः**-ये स्थिरस्य शवसो धृष्णुया सखायस्सन्ति ते हि त्मना यामन् धृषद्विन आ पान्ति ये यामन् प्रवृत्ताः सन्ति ते शश्वतः पथिकान् रक्षन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-विदुषामेव मित्रत्वं रक्षणं स्थिरं भवति नान्यस्य॥ २॥

**पदार्थः**-जो (स्थिरस्य) स्थिर (शवसः) बल के (धृष्णुया) दृढ़त्वादि गुणों से युक्त (सखायः) मित्र (सन्ति) हैं (ते) वे (हि) ही (त्मना) आत्मा से (यामन्) मार्ग में (धृषद्विनः) बहुत दृढ़त्व आदि गुणों से युक्त (आ, पान्ति) अच्छे प्रकार पालन करते हैं और जो मार्ग में प्रवृत्त है (ते) वे (शश्वतः) निरन्तर पथिकों की रक्षा करते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-विद्वानों का ही मित्रपन और रक्षण स्थिर होता है, अन्य किसी का नहीं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते स्यन्द्रासो नोक्षणोऽति ष्कन्दन्ति शर्वरीः।**
**मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे॥ ३॥**[1]

ते। स्यन्द्रासः। न। उक्षणः। अति। स्कन्दन्ति। शर्वरीः। मरुताम्। अध। महः। दिवि। क्षमा। च। मन्महे॥ ३॥

**पदार्थः**-(ते) (स्यन्द्रासः) किञ्चिच्चेष्टमानाः (न) इव (उक्षणः) सेचकान् (अति) (स्कन्दन्ति) (शर्वरीः) रात्रीः (मरुताम्) मनुष्याणाम् (अधा) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (महः) महति (दिवि) प्रकाशे (क्षमा) (च) (मन्महे) विजानीमः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! ये महो दिवि मरुतां सन्निधौ क्षमाऽधा च स्यन्द्रासो नोक्षणः शर्वरीरति ष्कन्दन्ति तान्वयं मन्महे ते सर्वैर्मनुष्यैर्विज्ञातव्याः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अहर्निशं पुरुषार्थमनुतिष्ठन्ति ते दुःखमुल्लङ्घन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (महः) बड़े (दिवि) प्रकाश और (मरुताम्) मनुष्यों के समीप में (क्षमा) (अधा, च) और इसके अनन्तर (स्यन्द्रासः) कुछ चेष्टा करते हुओं के (न) सदृश (उक्षणः) सेवन करने

---

१. अन्यत्र 'स्पन्द्रासः' दृश्यते।

वा **(शर्वरीः)** रात्रियों को **(अति, स्कन्दन्ति)** अत्यन्त प्राप्त होते हैं, उनको हम लोग **(मन्महे)** विशेष प्रकार से जानते हैं **(ते)** वे सब मनुष्यों को जानने योग्य हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य दिन-रात्रि पुरुषार्थ करते हैं, वे दुःख का उल्लंघन करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया।**

**विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः॥४॥**

**मरुत्ऽसु। वः। दधीमहि। स्तोमम्। यज्ञम्। च। धृष्णुऽया। विश्वे। ये। मानुषा। युगा। पान्ति। मर्त्यम्। रिषः॥४॥**

**पदार्थः**-**(मरुत्सु)** मनुष्येषु **(वः)** युष्मान् **(दधीमहि)** **(स्तोमम्)** श्लाघनीयम् **(यज्ञम्)** पुरुषार्थम् **(च)** **(धृष्णुया)** दृढानि **(विश्वे)** सर्वे **(ये)** **(मानुषा)** मनुष्याणामिमानि **(युगा)** युगानि वर्षाणि **(पान्ति)** रक्षन्ति **(मर्त्यम्)** मनुष्यम् **(रिषः)** हिंसकात्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विश्वे भवन्तो धृष्णुया मानुषा युगा स्तोमं यज्ञं मर्त्यं च रिषः पान्ति तान् वो वयं मरुत्सु दधीमहि॥४॥

**भावार्थः**-ये दैविकमानुषाणि युगानि वर्षाणि च जानन्ति ते गणितविद्याविदो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(विश्वे)** सब आप लोग **(धृष्णुया)** दृढ़ **(मानुषा)** मनुष्यों के सम्बन्धी **(युगा)** वर्षों को **(स्तोमम्)** प्रशंसा करने योग्य **(यज्ञम्)** पुरुषार्थ को **(मर्त्यम्, च)** और मनुष्य को **(रिषः)** हिंसक के **(पान्ति)** रखते अर्थात् बचाते हैं, उन **(वः)** आप लोगों को हम लोग **(मरुत्सु)** मनुष्यों में **(दधीमहि)** धारण करें॥४॥

**भावार्थः**-जो देव और मनुष्यसम्बन्धी युगों और वर्षों को जानते हैं, वे गणितविद्या के जानने वाले होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः।**

**प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः॥५॥८॥**

**अर्हन्तः। ये। सुऽदानवः। नरः। असामिऽशवसः। प्र। यज्ञम्। यज्ञियेभ्यः। दिवः। अर्च। मरुत्ऽभ्यः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अर्हन्तः**) योग्यतां प्राप्नुवन्तः (**ये**) (**सुदानवः**) उत्तमदानाः (**नरः**) (**असामिशवसः**) अखण्डितबलाः (**प्र**) (**यज्ञम्**) सत्काराख्यं कर्म (**यज्ञियेभ्यः**) यज्ञसम्पादकेभ्यः (**दिवः**) कामयमानाः (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मरुद्भ्यः**) मनुष्येभ्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यज्ञियेभ्यो यज्ञमर्हन्तः सुदानवोऽसामिशवसो नरो दिवो मरुद्भ्यो यज्ञं साध्नुवन्ति ताँस्त्वं प्रार्चा॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्या यावद्बलं वर्द्धितुमिच्छेयुस्तावदेव वर्द्धितुं शक्यम्॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**ये**) जो (**यज्ञियेभ्यः**) यज्ञ करनेवालों के लिये (**यज्ञम्**) सत्कार नामक कर्म्म की (**अर्हन्तः**) योग्यता को प्राप्त होते हुए (**सुदानवः**) उत्तम दान देने वाले (**असामिशवसः**) अखण्डित बलयुक्त (**नरः**) जन (**दिवः**) कामना करते हुए (**मरुद्भ्यः**) मनुष्यों के लिये सत्कार नामक कर्म्म को सिद्ध करते हैं, उनका आप (**प्र, अर्चा**) सत्कार करिये॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्य जितने बल बढ़ाने की इच्छा करें, उतना ही बढ़ सकता है॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत।**

**अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्त त्मना दिवः॥६॥**

आ। रुक्मैः। आ। युधा। नरः। ऋष्वाः। ऋष्टीः। असृक्षत। अनु। एनान्। अह। विऽद्युतः। मरुतः। जज्झतीःऽइव। भानुः। अर्त। त्मना। दिवः॥६॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**रुक्मैः**) रोचमानैः प्रदीप्तैः (**आ**) (**युधा**) युद्धेन (**नरः**) नायकाः (**ऋष्वाः**) महान्तः (**ऋष्टीः**) प्राप्ताः सेनाजनाः (**असृक्षत**) सृजन्तु (**अनु**) (**एनान्**) (**अह**) विनिग्रहे (**विद्युतः**) (**मरुतः**) वायो (**जज्झतीरिव**) शब्दकारिण्यः शीघ्रगतयो वा ता इव (**भानुः**) दीप्तिः (**अर्त्त**) प्राप्नुत (**त्मना**) आत्मना (**दिवः**) कामयमानाः॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! यथा ऋष्वा नरो युधर्ष्टीरान्वसृक्षत। एनानह जज्झतीरिव विद्युतो मरुतो दिवो भानुस्त्मना ज्ञातुं योग्याः सन्ति तान् यूयं रुक्मैराऽऽर्त्त॥६॥

**भावार्थः**-विद्वांसो मनुष्यान् विद्युदादिविद्याः प्रापयन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**ऋष्वाः**) बड़े (**नरः**) अग्रणी जन (**युधा**) युद्ध से (**ऋष्टीः**) प्राप्त हुए सेनाओं के जन (**आ, अनु, असृक्षत**) सब प्रकार अनुकूल उत्पन्न करें और (**एनान्**) इनको (**अह**) ग्रहण करने में (**जज्झतीरिव**) शब्द करने वा शीघ्र चलनेवालियों के सदृश (**विद्युतः**) बिजुली और (**मरुतः**) पवन की (**दिवः**) कामना करते हुए जन और (**भानुः**) दीप्ति (**त्मना**) आत्मा से जानने योग्य हैं, उनको आप (**रुक्मैः**) रोचमान प्रदीप्तों से (**आ**) सब प्रकार (**अर्त्त**) प्राप्त हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन मनुष्यों के लिये बिजुली आदि विद्याओं को प्राप्त करावें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ।**

**वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः॥७॥**

**ये। ववृधन्त। पार्थिवाः। ये। उरौ। अन्तरिक्षे। आ। वृजने। वा। नदीनाम्। सधऽस्थे। वा। महः। दिवः॥७॥**

**पदार्थः**-**(ये) (वावृधन्त)** भृशं वर्धन्ते **(पार्थिवाः)** पृथिव्यां विदिताः **(ये) (उरौ)** बहुरूपे **(अन्तरिक्षे)** आकाशे **(आ) (वृजने)** वृजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(वा) (नदीनाम्) (सधस्थे)** समानस्थाने **(वा) (महः)** महान्तः **(दिवः)** कामयानाः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य उरावन्तरिक्षे पार्थिवा वावृधन्त ये वा नदीनां सधस्थे वृजने वाऽऽवावृधन्त महो दिवो वावृधन्त तान् यूयं विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-ये पृथिव्यादिविद्यां जानन्ति ते सर्वतो वर्धन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(उरौ)** बहुत रूप वाले **(अन्तरिक्षे)** आकाश में **(पार्थिवः)** पृथिवी में जाने गये पदार्थ **(वावृधन्त)** अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होते हैं **(ये, वा)** अथवा जो **(नदीनाम्)** नदियों के **(सधस्थे)** समान स्थान में **(वृजने, वा)** वा वर्जते हैं जिसमें उसमें **(आ)** सब प्रकार अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होते हैं और **(महः)** महान् **(दिवः)** कामना करने वाले वृद्धि को प्राप्त होते हैं, उनको आप लोग विशेष करके जानिये॥७॥

**भावार्थः**-जो पृथिवी आदिकों की विद्या को जानते हैं, वे सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वसम्।**

**उत स्म ते शुभे नरः प्र स्यन्द्रा युजत त्मना॥८॥**

**शर्धः। मारुतम्। उत्। शंस। सत्यऽशवसम्। ऋभ्वसम्। उत। स्म। ते। शुभे। नरः। प्र। स्यन्द्राः। युजत। त्मना॥८॥**

**पदार्थः**-**(शर्धः)** बलम् **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(उत्) (शंस)** स्तुहि **(सत्यशवसम्)** सत्यं शवो बलं यस्य **(ऋभ्वसम्)** ऋभुं मेधाविनमसते गृह्णाति तम्। **ऋभुरिति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५) अस-गत्यादिः। **(उत) (स्म) (ते) (शुभे) (नरः)** नेतारो मनुष्याः **(प्र) (स्यन्द्राः)** धैर्य्यगतयः **(युजत) (त्मना)** आत्मना॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्व मारुतं शर्धः सत्यशवसमृभ्वसमुच्छंस। उत स्म ते स्यन्द्रा नरो यूयं शुभे त्मना परमात्मानं प्र युजत॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरुत्तमं बलं परमात्मा च सततं प्रशंसनीयाः॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(मारुतम्)** मनुष्यों के सम्बन्धी इस **(शर्धः)** बल और **(सत्यशवसम्)** सत्य बल जिसका उस **(ऋभ्वसम्)** बुद्धिमान् को ग्रहण करने वाले की **(उत्, शंस)** अच्छे प्रकार स्तुति करो **(उत)** और **(स्म)** निश्चित **(ते)** वे **(स्यन्द्राः)** धीरतायुक्त गमन वाले **(नरः)** नायक आप लोग **(शुभे)** उत्तम कार्य में **(त्मना)** आत्मा से परमात्मा को **(प्र, युजत)** प्रयुक्त करो॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम बल और परमात्मा की निरन्तर प्रशंसा करें॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत स्म ते परुष्ण्यामूर्णा वसत शुन्ध्यवः।**

**उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्योजसा॥९॥**

**उत। स्म। ते। परुष्ण्याम्। ऊर्णाः। वसत। शुन्ध्यवः। उत। पव्या। रथानाम्। अद्रिम्। भिन्दन्ति। ओजसा॥९॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(स्म)** एव **(ते)** **(परुष्ण्याम्)** पालनकर्त्र्याम् **(ऊर्णाः)** रक्षिताः **(वसत)** **(शुन्ध्यवः)** शोधिकाः **(उत)** **(पव्या)** रथचक्राणां रेखाः **(रथानाम्)** **(अद्रिम्)** मेघम् **(भिन्दन्ति)** **(ओजसा)** बलेन॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याः परुष्ण्यां शुन्ध्यवो रथानां पव्या इवौजसाऽद्रिं भिन्दन्ति। उत वर्षन्ति तास्ते स्युः। उत स्मोर्णाः सन्तोऽत्र सत्कृता यूयं वसत॥९॥

**भावार्थः**-यथा मेघा वर्षन्तः पृथिवीं विदीर्णन्ति तथैव सत्पुरुषसङ्गोऽशुद्धिं छिनत्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(परुष्ण्याम्)** पालन करने वाली में **(शुन्ध्यवः)** शोधन करने वाली **(रथानाम्)** वाहनों के **(पव्या)** रथों के चक्रों पहियों की लीकों के सदृश **(ओजसा)** बल से **(अद्रिम्)** मेघ को **(भिन्दन्ति)** तोड़ती हैं **(उत)** और वर्षाती हैं, वे **(ते)** तुम्हारे लिये हों **(उत)** और **(स्म)** निश्चित **(ऊर्णाः)** रक्षित हुए यहाँ सत्कार किये गये आप लोग **(वसत)** वसिये॥९॥

**भावार्थः**-जैसे मेघ वर्षते हुए पृथिवी को विदीर्ण करते हैं, वैसे ही श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग अशुद्धि का नाश करता है॥९॥

**मनुष्यैः सर्वे विद्याधर्ममार्गा अन्वेषणीया इत्याह॥**

मनुष्यों को समस्त विद्या धर्ममार्ग ढूंढने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः।**

**एतेभिर्मह्यं नामभिर्यज्ञं विष्टार ओहते॥१०॥९॥**

**आऽपथयः। विऽपथयः। अन्तःऽपथा। अनुऽपथाः। एतेभिः। मह्यम्। नामऽभिः। यज्ञम्। विऽस्तारः। ओहते॥१०॥**

**पदार्थः-(आपथयः)** समन्तादभिमुखः पन्था येषान्ते **(विपथयः)** विविधा विरुद्धा वा पन्थानो येषान्ते **(अन्तस्पथा)** अन्तराभ्यन्तरे पन्था येषान्ते **(अनुपथाः)** अनुकूलः पन्था येषान्ते **(एतेभिः)** मार्गैर्मार्गस्थैर्वा **(मह्यम्) (नामभिः)** संज्ञाभिः **(यज्ञम्)** विद्वत्सत्कारादिकम् **(विष्टारः)** प्रसारः **(ओहते)** प्राप्नोति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! आपथयो विपथयोऽन्तस्पथाऽनुपथा एतेभिर्नामभिर्मह्यं यज्ञं विष्टार ओहते॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सर्वविद्यातज्जन्यक्रियाकौशलमार्गान् यथावत् साक्षात् कृत्याऽन्यानपि सम्यक् विज्ञापयत॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(आपथयः)** सब ओर अभिमुख मार्ग जिनका वे और **(विपथयः)** अनेक प्रकार के वा विरुद्ध मार्ग जिनके वे और **(अन्तस्पथा)** भीतर मार्ग जिनके वे और **(अनुपथाः)** अनुकूल मार्ग जिनका वे **(एतेभिः)** इन मार्गों में स्थित हुओं और **(नामभिः)** संज्ञाओं से **(मह्यम्)** मेरे लिये **(यज्ञम्)** विद्वानों के सत्कार आदि कर्म को **(विष्टारः)** विस्तार **(ओहते)** प्राप्त होता है॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सम्पूर्ण विद्याओं और उनसे उत्पन्न क्रिया हुए क्रिया कौशल मार्गों को यथावत् प्रत्यक्ष करके अन्यों को भी उत्तम प्रकार जनाओ सिखलाओ॥१०॥

**मनुष्याः क्रमेण विद्यादिव्यवहारं प्राप्नुयुरित्याह॥**

मनुष्य क्रम से विद्यादि व्यवहार को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**अधा नरो न्योहतेऽधा नियुत ओहते।**

**अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्श्या॥११॥**

**अधः। नरः। नि। ओहते। अधा। निऽयुतः। ओहते। अधा। पारावताः। इति। चित्रा। रूपाणि। दर्श्या॥११॥**

**पदार्थः-(अधा)** अथ। अत्र सर्वत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(नरः)** विद्यासु नायकः **(नि)** निश्चयेन **(ओहते)** प्राप्नोति प्रापयति वा **(अधा) (नियुतः)** निश्चितवाय्वादिगतिमान् **(ओहते) (अधा) (पारावताः)** पारावति दूरदेशे भवाः **(इति)** अनेन प्रकारेण **(चित्रा)** चित्राण्यद्भुतानि **(रूपाणि) (दर्श्या)** द्रष्टुं योग्यानि॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अधा यो नरो विद्याकार्य्याणि न्योहतेऽधा नियुत ओहतेऽधा पारावता दर्श्या चित्रा रूपाणीति साक्षात्करोति स कृतकृत्यो जायते॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः पुरस्ताद्ब्रह्मचर्येण विद्या अधीत्य तदनन्तरं कार्य्यरचनकौशलं साक्षात्कृत्य पुनरनुमानेन दूरस्थानामदृश्यानां पदार्थानां विज्ञानं कृत्वाऽश्चर्य्याणि कर्माणि कर्त्तव्यानि॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अधा**) इसके अनन्तर जो (**नरः**) विद्याओं में अग्रणी जन विद्याओं के कार्यों को (**नि**) निश्चय करके (**ओहते**) प्राप्त होते हैं, और (**अधा**) इसके अनन्तर (**नियुतः**) निश्चित वायु आदि गमन वाला (**ओहते**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता है (**अधा**) इसके अनन्तर (**पारावता**) दूर देश में होने वालो (**दर्श्या**) देखने के योग्य (**चित्रा**) अद्भुत (**रूपाणि**) रूपों के (**इति**) इस प्रकार से प्रत्यक्ष करता है, वह कृत कृत्य होता है॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यों में चाहिये कि पहिले ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को पढ़कर उसके अनन्तर कार्य्यों के रचने में प्रवीणता को प्रत्यक्ष करके फिर अनुमान से दूर में स्थित अदृश्य पदार्थों के विज्ञान को करके आश्चर्य्ययुक्त कार्य्य करें॥११॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**छन्दुःस्तुभः कुभन्यव उत्सुमा कीरिणो नृतुः।**

**ते मे के चिन्न तायव ऊमा आसन् दृशि त्विषे॥१२॥**

**छन्दुःस्तुभः। कुभन्यवः। उत्सम्। आ। कीरिणः। नृतुः। ते। मे। के। चित्। न। तायवः। ऊमाः। आसन्। दृशि। त्विषे॥१२॥**

**पदार्थः**-(**छन्दःस्तुभः**) ये छन्दोभिः स्तोभनं स्तवनं कुर्वन्ति (**कुभन्यवः**) आत्मनः कुभनमुन्दनमिच्छवः (**उत्सम्**) कूपमिव (**आ**) समन्तात् (**कीरिणः**) विक्षेपकाः (**नृतुः**) नर्त्तक इव (**ते**) (**मे**) मम (**के**) (**चित्**) अपि (**न**) (**तायवः**) स्तेनाः (**ऊमाः**) सर्वस्य रक्षणादिकर्त्तारः (**आसन्**) भवेयुः (**दृशि**) दर्शके (**त्विषे**) शरीरात्मदीप्तिबलाय॥१२॥

**अन्वयः**-ये के चिच्छन्दःस्तुभ उत्समिव कुभन्यव ऊमा दृशि मे त्विष आसँस्ते नृतुरिवाऽऽकीरिणस्तायवो न स्युः॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽन्येषां विक्षेपं तायवं चाऽकृत्वा तृषातुराय जलमिव शान्तिप्रदा भूत्वा सर्वेषां शरीरात्मबलं वर्धयन्ति ते एवाप्ता भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-जो (**के**) कोई (**चित्**) भी (**छन्दःस्तुभः**) छन्दों से स्तुति करने वाले (**उत्सम्**) कूप के सदृश (**कुभन्यवः**) अपने को आर्द्रपन की इच्छा करते हुए (**ऊमाः**) सब के रक्षण आदि करने वाले (**दृशि**) दर्शक में (**मे**) मेरे (**त्विषे**) शरीर और आत्मा के प्रकाश और बल के लिये (**आसन्**) होवें (**ते**) वे (**नृतुः**) नाचने वाले के सदृश (**आ**) सब ओर से (**कीरिणः**) विक्षेप व्याकुल करने वाले (**तायवः**) चोर जन (**न**) न होवें॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अन्य जनों के विक्षेप और चोरी न करके जैसे पिपासा से व्याकुल के लिये जल वैसे शान्ति के देने वाले होकर सब के शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते हैं, वे ही श्रेष्ठ यथार्थवक्ता होते हैं॥१२॥

**मनुष्यैः केषां सङ्गः कर्त्तव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को किसका संग करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः।**

**तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा॥१३॥**

**यो ऋष्वाः। ऋष्टिऽविद्युतः। कवयः। सन्ति। वेधसः। तम्। ऋषे। मारुतम्। गणम्। नमस्य। रमय। गिरा॥१३॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**ऋष्वाः**) महान्तो महाशयाः (**ऋष्टिविद्युतः**) विद्युति ऋष्टिर्विज्ञानं येषान्ते (**कवयः**) सकलशास्त्रेषु निपुणाः (**सन्ति**) (**वेधसः**) मेधाविनः (**तम्**) (**ऋषे**) वेदार्थवित् (**मारुतम्**) विदुषां मनुष्याणामिमम् (**गणम्**) समूहम् (**नमस्या**) सत्कुरु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**रमया**) क्रीडयाऽऽनन्दय। अत्रापि **संहितायामिति** दीर्घः। (**गिरा**) सुशिक्षितया सत्यया कोमलया वाचा॥१३॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! य ऋष्टिविद्युतः कवय ऋष्वा वेधसः सन्ति तान् गिरा नमस्याऽनेन तं मारुतं गणं रमया॥१३॥

**भावार्थः**-ये महाशया आप्तान् सेवित्वा सत्कृत्य सुशिक्षां प्राप्य सत्यासत्यविवेकायोपदेशं कृत्वा सर्वान् मनुष्यानानन्दयन्ति ते सर्वैः सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**ऋषे**) वेदार्थ के जानने वाले! (**ये**) जो (**ऋष्टिविद्युतः**) ऋष्टिविद्युत् अर्थात् बिजुली में विज्ञान जिनका वे (**कवयः**) सम्पूर्ण शास्त्रों में निपुण (**ऋष्वाः**) बड़े महाशय (**वेधसः**) बुद्धिमान् जन (**सन्ति**) हैं उनका (**गिरा**) उत्तम प्रकार शिक्षित सत्य कोमल वाणी से (**नमस्या**) सत्कार करिये और इससे (**तम्**) उस (**मारुतम्**) विद्वान् मनुष्यों के (**गणम्**) समूह को (**रमया**) क्रीड़ा से आनन्दित करिये॥१३॥

**भावार्थः**-जो महाशय यथार्थवक्त जनों की सेवा और सत्कार कर उत्तम शिक्षा को प्राप्त होकर सत्य और असत्य के विवेक के लिये उपदेश करके सब मनुष्यों को आनन्दित करते हैं, वे सब लोगों से सत्कार पाने योग्य होते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अच्छं ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा।**

**दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत॥१४॥**

**अच्छ॑। ऋ॒षे॒। मारु॑तम्। ग॒णम्। दा॒ना। मि॒त्रम्। न। यो॒षणा॑। दि॒वः। वा॒। धृ॒ष्ण॒वः॒। ओज॑सा। स्तु॒ताः। धी॒भिः। इ॒ष॒ण्य॒त॒॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**अच्छ**) (**ऋषे**) विद्वन् (**मारुतम्**) मरुतां मनुष्याणामिमम् (**गणम्**) समूहम् (**दाना**) दानानि (**मित्रम्**) सखायम् (**न**) इव (**योषणा**) स्त्री (**दिवः**) कामयमानाः (**वा**) (**धृष्णवः**) धृष्टाः प्रगल्भा दृढनिश्चयाः (**ओजसा**) बलादिना (**स्तुताः**) प्रशंसिताः (**धीभिः**) प्रज्ञाभिः (**इषण्यत**) प्राप्नुवन्ति॥१४॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! त्वं योषणा मित्रं न मारुतं गणमच्छ प्राप्नुहि वा यथा दिवो धृष्णवः स्तुता धीभिरोजसा दाना मारुतं गणमिषण्यत तथा सर्वे प्राप्नुवन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। सर्वेऽध्यापका अध्येतारश्च मित्रवद्वर्त्तित्वा वाय्वादि-पदार्थविद्यां सङ्गृह्णन्तु॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**ऋषे**) विद्वन्! आप (**योषणा**) स्त्री और (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) सदृश (**मारुतम्**) मनुष्यसम्बन्धी (**गणम्**) समूह को (**अच्छ**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये (**वा**) वा जैसे (**दिवः**) कामना करते हुए (**धृष्णवः**) धृष्ट, प्रगल्भ, दृढ़ निश्चय वाले (**स्तुताः**) प्रशंसितजन (**धीभिः**) बुद्धियों और (**ओजसा**) बल आदि से (**दाना**) दानों को देकर मनुष्यसम्बन्धी समूह को (**इषण्यत**) प्राप्त होते हैं, वैसे सब प्राप्त हों॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। सम्पूर्ण अध्यापक और पढ़ने वाले मित्र के सदृश परस्पर वर्त्ताव करके वायु आदि पदार्थों की विद्या का अच्छे प्रकार ग्रहण करें॥१४॥

**पुनर्मनुष्या विद्वत्सङ्गेन विद्याः प्राप्नुवन्त्वित्याह॥**

फिर मनुष्य विद्वानों के संग से विद्याओं को प्राप्त हों, इस विषय को कहते हैं॥

**नू म॑न्वा॒न ए॑षां दे॒वाँ अच्छा॒ न व॒क्षणा॑।**

**दा॒ना स॑चेत सू॒रिभि॒र्याम॑श्रुतेभिर॒ञ्जिभि॑ः॥ १५॥**

**नु। म॒न्वा॒नः। ए॒षा॒म्। दे॒वान्। अच्छ॑। न। व॒क्षणा॑। दा॒ना। स॒चे॒त। सू॒रिऽभि॑ः। याम॑ऽश्रुतेभिः। अ॒ञ्जिऽभि॑ः॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**नू**) (**मन्वानः**) मननशीलः (**एषाम्**) मनुष्याणां मध्ये (**देवान्**) दिव्यान् विदुषः पदार्थान् वा (**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**न**) निषेधे (**वक्षणा**) वहनेन (**दाना**) दानानि (**सचेत**) सम्बध्नीत (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः (**यामश्रुतेभिः**) यामाः श्रुता यैस्तैः (**अञ्जिभिः**) विद्याशुभगुणप्रकटकारकैः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मन्वानो यामश्रुतेभिरञ्जिभिः सूरिभिः सहैषां मध्ये देवानच्छाऽऽप्नोति वक्षणा दाना करोति स नू दारिद्र्यमज्ञानञ्च नाप्नोति तं यूयं सचेत॥१५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वत्सङ्गप्रिया विद्यादानरुचयः स्युस्त एव सद्यो विद्यामाप्नुयुः॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**मन्वानः**) मननशील पुरुष (**यामश्रुतेभिः**) याम प्रहर सुने गये जिनसे उन (**अञ्जिभिः**) विद्या और श्रेष्ठ गुणों के प्रकट करने वाले (**सूरिभिः**) विद्वानों के साथ (**एषाम्**) इन

मनुष्यों के मध्य में **(देवान्)** श्रेष्ठ विद्वानों वा श्रेष्ठ पदार्थों को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार प्राप्त होता और **(वक्षणा)** प्रवाह से **(दाना)** दानों को करता है वह **(नू)** निश्चय दारिद्र्य और अज्ञान को **(न)** नहीं प्राप्त होता है, उसको आप लोग **(सचेत)** सम्बन्धित करिये॥१५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य विद्वानों के संग को प्रिय मानने और विद्या के दान में रुचि करने वाले होवें, वे ही शीघ्र विद्या को प्राप्त होवें॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम्।**

**अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः॥१६॥**

**प्र। ये। मे। बन्धुऽएषे। गाम्। वोचन्त। सूरयः। पृश्निम्। वोचन्त। मातरम्। अध। पितरम्। इष्मिणम्। रुद्रम्। वोचन्त। शिक्वसः॥१६॥**

**पदार्थ:**-**(प्र)** **(ये)** **(मे)** मम **(बन्ध्वेषे)** बन्धूनामिच्छायै **(गाम्)** वाचम् **(वोचन्त)** ब्रुवन्ति **(सूरयः)** विद्वांसः **(पृश्निम्)** अन्तरिक्षम् **(वोचन्त)** **(ब्रुवन्ति)** **(मातरम्)** जननीम् **(अधा)** अथ। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(पितरम्)** पालकं जनकम् **(इष्मिणम्)** इष्मो बहुविधो **[बलं]** विद्यते यस्य तम् **(रुद्रम्)** दुष्टानां भयप्रदम् **(वोचन्त)** उपदिशेयुः **(शिक्वसः)** शक्तिमन्तः॥१६॥

**अन्वयः**-ये सूरयो मे बन्ध्वेषे गां प्र वोचन्त पृश्निं मातरं वोचन्त। अधा शिक्वस इष्मिणं पितरं रुद्रं वोचन्त ते मया सत्कर्त्तव्याः॥१६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैरेवं वेदितव्यं येऽस्मभ्यं विद्यां सुशिक्षां दद्युस्तेऽस्माभिः सदा माननीया भवेयुः॥१६॥

**पदार्थ:**-**(ये)** जो **(सूरयः)** विद्वान् जन **(मे)** मेरी **(बन्ध्वेषे)** बन्धुओं की इच्छा के लिये **(गाम्)** वाणी को **(प्र, वोचन्त)** उत्तम प्रकार उच्चारण करते हैं और **(पृश्निम्)** अन्तरिक्ष और **(मातरम्)** माता का **(वोचन्त)** उपदेश करते हैं **(अधा)** इसके अनन्तर **(शिक्वसः)** सामर्थ्य वाले **(इष्मिणम्)** बहुत प्रकार का बल जिसका उस **(पितरम्)** पालन करने वाले पिता और **(रुद्रम्)** दुष्टों के भय देने वाले का **(वोचन्त)** उपदेश करते हैं, वे मुझ से सत्कार करने योग्य हैं॥१६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को इस प्रकार जानना चाहिये कि जो हम लोगों के लिये विद्या और उत्तम शिक्षा को देवें, वे हम लोगों से सदा आदर करने योग्य होवें॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः।**

**यमुनायामधि श्रुतमुद्राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे॥ १७॥ १०॥**

**सप्त। मे। सप्त। शाकिनः। एकम्ऽएका। शता। ददुः। यमुनायाम्। अधि। श्रुतम्। उत्। राधः। गव्यम्। मृजे। नि। राधः। अश्व्यम्। मृजे॥ १७॥**

**पदार्थः-(सप्त)** सप्तविधा मरुद्गणा मनुष्यभेदाः **(मे)** मम **(सप्त) (शाकिनः)** शक्तिमन्तः **(एकमेका)** एकमेकानि **(शता)** शतानि **(ददुः)** प्रयच्छेयुः **(यमुनायाम्)** यमनियमान्वितायां क्रियायाम् **(अधि) (श्रुतम्) (उत्) (राधः)** धनम् **(गव्यम्)** गोहितम् **(मृजे)** शुन्धामि **(नि)** नितराम् **(राधः)** द्रव्यम् **(अश्व्यम्)** अश्वेषु साधु **(मृजे)** शुन्धामि॥ १७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्राधो यमुनायां मयाधि श्रुतं यद्गव्यमुन्मृजे यदश्व्यं राधो नि मृजे तन्मे सप्त शाकिनः सप्तैकमेका शता ये ददुः तत्ताँश्च यूयं प्राप्नुत विजानीत॥ १७॥

**भावार्थः**-अत्र जगति मूढो मूढतरो मूढतमो विद्वान् विद्वत्तरो विद्वत्तमोऽनूचानश्च सप्त सप्तविधा मनुष्या भवन्तीति॥ १७॥

अत्र वायुविश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(राधः)** धन को **(यमुनायाम्)** यम और नियमों से अन्वित क्रिया के बीच मैंने **(अधि, श्रुतम्)** सुना और जो **(गव्यम्)** गौओं के हित को **(उत्, मृजे)** उत्तमता से शुद्ध करता हूं और जो **(अश्व्यम्)** घोड़ों में श्रेष्ठ **(राधः)** द्रव्य को **(नि)** निरन्तर **(मृजे)** स्वच्छ करता हूं वह **(मे)** मेरे **(सप्त)** सात प्रकार के मनुष्यों के भेद और **(शाकिनः)** सामर्थ्य वाले **(सप्त)** सात **(एकमेका)** एक-एक **(शता)** सैकड़ों को जो **(ददुः)** देवें, उसको और उनको आप लोग प्राप्त हूजिये और विशेष करके जानिये॥ १७॥

**भावार्थः**-इस संसार में मूढ, मूढतर, मूढतम, विद्वान्, विद्वत्तर, विद्वत्तम और अनूचान ये सात प्रकार के मनुष्य होते हैं॥ १७॥

इस सूक्त में वायु और विश्वेदेव के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षोडशर्चस्य त्रिपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १ भुरिग्गायत्री। ८, १२ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। २ निचृद्बृहती। ९ स्वराड्बृहती। १४ बृहतीच्छन्दः। मध्यमः स्वरः। ३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४, ५ उष्णिक्। १०, १५ विराडुष्णिक्। ११ निचृदुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ६, १६ पङ्क्तिः। ७, १३ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः किं जानीयुरित्याह॥***

अब सोलह ऋचा वाले त्रेपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्य क्या जानें इस विषय को कहते हैं॥

**को वे॑द॒ जान॑मेषां॒ को वा॑ पु॒रा सु॒म्नेष्वा॑स म॒रुता॑म्। यद्यु॑यु॒ज्रे कि॑ला॒स्यः॑॥१॥**

**कः। वे॒द॒। जान॑म्। ए॒षा॒म्। कः। वा॒। पु॒रा। सु॒म्नेषु॑। आ॒स॒। म॒रुता॑म्। यत्। यु॒यु॒ज्रे। कि॒ला॒स्यः॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वेद**) जानाति (**जानम्**) प्रादुर्भावम् (**एषाम्**) मनुष्याणां वायूनां वा (**कः**) (**वा**) (**पुरा**) पुरस्तात् (**सुम्नेषु**) (**आस**) आस्ते (**मरुताम्**) मनुष्याणां वायूनां वा (**यत्**) (**युयुज्रे**) युञ्जते (**किलास्यः**) निश्चितमास्यं यस्य सः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या विद्वांसो वा! यद्युयुज्रे तदेषां मरुतां जानं किलास्यः को वेद को वा सुम्नेषु पुरास॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यवाय्वादिपदार्थलक्षणलक्ष्याणि विद्वांस एव ज्ञातुं शक्नुवन्ति नेतरे॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो वा विद्वानो! (**यत्**) जो (**युयुज्रे**) युक्त होता है, वह (**एषाम्**) इन (**मरुताम्**) मनुष्यों वा पवनों के (**जानम्**) प्रादुर्भाव को (**किलास्यः**) निश्चित सुख जिसका वह (**कः**) कौन (**वेद**) जानता है (**कः, वा**) अथवा कौन (**सुम्नेषु**) सुखों में (**पुरा**) प्रथम (**आस**) स्थित है॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्य और वायु आदि पदार्थों के लक्षण और लक्ष्यों को विद्वान् जन ही जानने को समर्थ हो सकते हैं, अन्य नहीं॥१॥

**पुनर्मनुष्याः कथं पृष्ट्वा किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे पूँछ के क्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऐतान् रथे॑षु त॒स्थुषः॒ कः शु॑श्राव क॒था य॑युः।**
**कस्मै॑ सस्रुः सु॒दासे॒ अन्वा॒पय॒ इळा॑भिर्वृ॒ष्टयः॑ स॒ह॥२॥**

**आ। ए॒तान्। रथे॑षु। त॒स्थुषः॑। कः। शु॒श्रा॒व॒। क॒था। य॒युः॒। कस्मै॑। स॒स्रुः॒। सु॒ऽदासे॑। अनु॑। आ॒पयः॑। इळा॑भिः। वृ॒ष्टयः॑। स॒ह॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**एतान्**) मनुष्यान् वाय्वादीन् (**रथेषु**) विमानादियानेषु (**तस्थुषः**) स्थावरान् काष्ठादिपदार्थान् (**कः**) (**शुश्राव**) श्रावयति (**कथा**) केन प्रकारेण (**ययुः**) यान्ति (**कस्मै**) (**सस्रुः**) प्राप्नुवन्ति (**सुदासे**) शोभना दासा यस्य तस्मिन् (**अनु**) (**आपयः**) य आप्नुवन्ति ते (**इळाभिः**) अन्नादिभिः (**वृष्टयः**) (**सह**)॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! रथेष्वेताँस्तस्थुषः क आ शुश्राव कथा मनुष्या ययुः। कस्मै सस्रुरिळाभि-र्वृष्टय आपयः सह सुदासेऽनुसस्रुः॥२॥

**भावार्थः**-कश्चिदेव मनुष्यः सर्वं शिल्पविद्याव्यवहारं कर्त्तुं शक्नोति यो व्याप्तान् बहूत्तमगुणान् विद्युदादीन् पदार्थान् यथावज्जानाति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**रथेषु**) विमान आदि वाहनों से (**एतान्**) इन (**तस्थुषः**) स्थावर काष्ठ आदि पदार्थों को (**कः**) कौन (**आ, शुश्राव**) अच्छे प्रकार सुनाता है और (**कथा**) कैसे मनुष्य (**ययुः**) प्राप्त होते हैं और (**कस्मै**) किस के लिये (**सस्रुः**) प्राप्त होते हैं (**इळाभिः**) अन्न आदिकों से (**वृष्टयः**) वृष्टियां और (**आपयः**) प्राप्त होने वाले पदार्थ (**सह**) एक साथ (**सुदासे**) सुन्दर दास जिसके उसमें (**अनु**) अनुकूल प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-कोई ही मनुष्य सम्पूर्ण शिल्पविद्या के व्यवहार करने को समर्थ होता है, जो व्याप्त और बहुत उत्तम गुण वाले बिजुली आदि पदार्थों को यथावत् जानता है॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते म॑ आहु॒र्य आ॑य॒युरुप॑ द्यु॒भिर्विभि॒र्मदे॑।**

**नरो॒ मर्या॑ अ॒रेपस॑ इ॒मान् पश्य॒न्निति॑ ष्टुहि॥३॥**

**ते। मे॒। आ॒हुः॒। ये। आ॒ऽय॒युः। उप॑। द्यु॒ऽभिः॑। विऽभिः॑। मदे॑। नरः॑। मर्याः॑। अ॒रेपसः॑। इ॒मान्। पश्य॑न्। इति॑। स्तु॒हि॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**मे**) मम (**आहुः**) कथयेयुः (**ये**) (**आययुः**) जानीयुः प्राप्नुयुर्वा (**उप**) (**द्युभिः**) कामयमानैः (**विभिः**) पक्षिभिरिव (**मदे**) आनन्दाय (**नरः**) नेतारः (**मर्य्याः**) मरणधर्माणः (**अरेपसः**) दोषलेपरहिताः (**इमान्**) (**पश्यन्**) (**इति**) (**स्तुहि**) प्रशंस॥३॥

**अन्वयः**-येऽरेपसो मर्य्या नरो द्युभिर्विभिर्मदे मे सत्यमाहुराययुस्त इमाम् कामान् पश्यन्निवाऽऽहुरिति त्वं मामुप स्तुहि॥६॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽहर्निशं परिश्रमेण विद्यां प्राप्याऽन्यानुपदिशेयुस्त आप्ता विज्ञेयाः॥३॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**अरेपसः**) दोषों के लेप से रहित (**मर्य्याः**) मरण धर्म्म वाले (**नरः**) नायक मनुष्य (**द्युभिः**) कामना करते हुए (**विभिः**) पक्षियों के सदृश (**मदे**) आनन्द के लिये (**मे**) मेरे सत्य को

**(आहु:)** कहें और **(आययु:)** जानें वा प्राप्त होवें **(ते)** वे **(इमान्)** इन मनोरथों को **(पश्यन्)** देखते हुए के समान कहें **(इति)** इस प्रकार आप मेरी **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति करिये॥३॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् जन दिन-रात्रि परिश्रम से विद्या को प्राप्त होकर अन्यों को उपदेश देवें, उनको यथार्थवक्ता जानना चाहिये॥३॥

**मनुष्या: पुरुषार्थेन किं किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

मनुष्य पुरुषार्थ से किस किसको प्राप्तहोवें इस विषय को कहते हैं॥

**ये अ॒ञ्जिषु॒ ये वाशी॑षु॒ स्वभा॑नवः स्र॒क्षु रु॒क्मेषु॑ खा॒दिषु॑। श्रा॒या रथे॑षु॒ धन्व॑सु॥४॥**

**ये। अ॒ञ्जिषु॑। ये। वाशी॑षु। स्वऽभा॑नवः। स्र॒क्षु। रु॒क्मेषु॑। खा॒दिषु॑। श्रा॒याः। रथे॑षु। धन्व॑ऽसु॥४॥**

**पदार्थ:**-**(ये)** **(अञ्जिषु)** प्रकटेषु व्यवहारेषु **(ये)** **(वाशीषु)** वाणीषु **(स्वभानव:)** स्वकीया भानव: प्रकाशा येषान्ते **(स्रक्षु)** माल्येषु मणिषु **(रुक्मेषु)** सुवर्णादिषु **(खादिषु)** भक्षणादिषु **(श्राया:)** ये शृण्वन्ति श्रावयन्ति वा ते **(रथेषु)** वाहनेषु **(धन्वसु)** स्थलेषु॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! ये वाशीषु स्वभानवोऽञ्जिषु स्रक्षु रुक्मेषु ये खादिषु रथेषु धन्वसु श्राया: सन्ति ते विख्याता भवन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या पुरुषार्थिन: स्युस्ते सर्वत: सत्कृता: सन्त: श्रीमन्तो भवन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(वाशीषु)** वाणियों में **(स्वभानव:)** अपने प्रकाश जिनके वे **(अञ्जिषु)** प्रकट व्यवहारों में **(स्रक्षु)** माला के मणियों में और **(रुक्मेषु)** सुवर्ण आदिकों में वा **(ये)** जो **(खादिषु)** भक्षण आदिकों में **(रथेषु)** वाहनों में और **(धन्वसु)** स्थलों में **(श्राया:)** सुनते वा सुनाते हैं, वे प्रसिद्ध होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य पुरुषार्थी होवें, वे सब प्रकार से सत्कार को प्राप्त हुए लक्ष्मीवान् होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यै: किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यु॒ष्माकं॑ स्मा॒ रथाँ॒ अनु॑ मु॒दे द॑धे मरुतो जीरदानवः। वृ॒ष्टी द्यावो॑ य॒तीरि॑व॥५॥११॥**

**यु॒ष्माक॑म्। स्म॒। रथा॑न्। अनु॑। मु॒दे। द॒धे। म॒रु॒तः। जी॒र॒ऽदा॒न॒वः। वृ॒ष्टी। द्याव॑ः। य॒तीःऽइ॑व॥५॥**

**पदार्थ:**-**(युष्माकम्)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घ:। **(रथान्)** विमानादियानान् **(अनु)** **(मुदे)** हर्षाय **(दधे)** दधामि **(मरुत:)** मनुष्या: **(जीरदानव:)** जीवन्ति ते **(वृष्टी)** वर्षा: **(द्याव:)** प्रकाशान् **(यतीरिव)** प्रयत्नसाध्या क्रिया इव॥५॥

**अन्वय:**-हे जीरदानवो मरुतोऽहं युष्माकं मुदे रथान् दधे वृष्टी द्यावो यतीरिव स्माऽनु मुदे दधे॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथाहमभ्यासेन विद्याप्रकाशम् यज्ञेन वृष्टिमनु दधे तथा यूयमप्येतान् धत्त॥५॥

**पदार्थः**-हे **(जीरदानवः)** जीवते हुए **(मरुतः)** मनुष्यो! मैं **(युष्माकम्)** आप लागों के **(मुदे)** आनन्द के लिये **(रथान्)** विमान आदि यानों को **(दधे)** धारण करता हूं और **(वृष्टी)** वर्षाओं तथा **(द्यावः)** प्रकाशों को **(यतीरिव)** प्रयत्न से सिद्ध होने वालीं क्रियाओं के समान **(स्मा)** ही **(अनु)** पीछे आनन्द के लिये धारण करता हूं॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं अभ्यास से विद्या के प्रकाशों को यज्ञ से वृष्टि को धारण करता हूं, वैसे आप लोग भी इनको धारण कीजिये॥५॥

**पुनर्मनुष्या किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यं नरः॑ सु॒दान॑वो ददा॒शुषे॑ दि॒वः कोश॒मचु॑च्यवुः।**

**वि प॒र्जन्यं॑ सृजन्ति॒ रोद॑सी॒ अनु॒ धन्व॑ना यन्ति वृ॒ष्टयः॑॥६॥**

**आ। यम्। नरः॑। सु॒ऽदान॑वः। द॒दा॒शुषे॑। दि॒वः। कोश॑म्। अचु॑च्यवुः। वि। प॒र्जन्य॑म्। सृ॒जन्ति॒। रोद॑सी॒ इति॑। अनु॑। धन्व॑ना। य॒न्ति॒। वृ॒ष्टयः॑॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(यम्)** **(नरः)** नेतारो मनुष्याः **(सुदानवः)** उत्तमविद्यादिशुभगुणदानाः **(ददाशुषे)** दात्रे **(दिवः)** कामयमानाः **(कोशम्)**। मेघम्। **कोश इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(अचुच्यवुः)** च्यावयेयुः **(वि)** **(पर्जन्यम्)** मेघम् **(सृजन्ति)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(अनु)** **(धन्वना)** **(यन्ति)** **(वृष्टयः)** वर्षाः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सुदानवो दिवो नरो ददाशुषे यं कोशमाऽचुच्यवू रोदसी पर्जन्यं वि सृजन्ति तमनु धन्वना वृष्टयो यन्ति तथा यूयमप्याचरत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव मनुष्या उत्तमा दातारो ये यज्ञेन जङ्गलरक्षणेन जलाशयनिर्माणेन पुष्कला वर्षाः कारयन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सुदानवः)** उत्तमविद्या आदि श्रेष्ठ गुणों के दान से युक्त **(दिवः)** कामना करते हुए **(नरः)** नायक मनुष्य **(ददाशुषे)** देने वाले के लिये **(यम्)** जिस **(कोशम्)** मेघ को **(आ)** चारों ओर से **(अचुच्युवुः)** वर्षावें और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(पर्जन्यम्)** मेघ को **(वि, सृजन्ति)** विशेषतया छोड़ते हैं उसके **(अनु)** अनुकूल **(धन्वना)** अन्तरिक्ष से **(वृष्टयः)** वर्षायें **(यन्ति)** प्राप्त होती हैं, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही मनुष्य उत्तम दाता हैं जो यज्ञ, जङ्गलों की रक्षा और जलाशयों के निर्म्माण से बहुत वर्षाओं को कराते हैं॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त॒तृ॒दा॒नाः सिन्ध॑वः॒ क्षोद॑सा॒ रजः॒ प्र स॑स्रुर्धे॒नवो॑ यथा।**
**स्य॒न्ना अश्वा॑इ॒वाध्व॑नो वि॒मोच॑ने॒ वि यद्वर्त॑न्त ए॒न्यः॑॥७॥**

त॒तृ॒दा॒नाः। सिन्ध॑वः। क्षोद॑सा। रजः॑। प्र। स॒स्रुः। धे॒नवः॑। य॒था। स्य॒न्नाः। अश्वाः॑ऽइव। अध्व॑नः। वि॒ऽमोच॑ने। वि। यत्। वर्त॑न्ते। ए॒न्यः॑॥७॥

**पदार्थः**-(**ततृदानाः**) भूमिं हिंसन्तः (**सिन्धवः**) नद्यः (**क्षोदसा**) जलेन (**रजः**) लोकम् (**प्र**) (**सस्रुः**) स्रवन्ति (**धेनवः**) दुग्धदात्र्यो गावः (**यथा**) येन प्रकारेण (**स्यन्नाः**) आशुगमनाः (**अश्वाइव**) यथा तुरङ्गं धावन्ति तथा (**अध्वनः**) मार्गान् (**विमोचने**) (**वि**) (**यत्**) याः (**वर्त्तन्ते**) (**एन्यः**) या यन्ति ता नद्यः। (निघं०१.१३)॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा धेनवस्तथा क्षोदसा ततृदानाः सिन्धवो रजः प्र सस्रुरश्वाइव यद्याः स्यन्ना एन्यो विमोचनेऽध्वनो वि वर्त्तन्ते ताभ्यस्सर्व उपकारा ग्राह्याः॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा धेनवो दुग्धं वर्षन्ति तथैव नदी सरः समुद्रादयो जलाशयाः पृथिव्यां वर्षन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जिस प्रकार से (**धेनवः**) दुग्ध देने वाली गौएं वैसे (**क्षोदसा**) जल से (**ततृदानाः**) भूमि को तोड़ने वाली (**सिन्धवः**) नदियां (**रजः**) लोक को (**प्र, सस्रुः**) प्रस्रवित करती हैं। और (**अश्वाइव**) जैसे घोड़े दौड़ते हैं, वैसे (**यत्**) जो (**स्यन्नाः**) शीघ्र जाने वाली (**एन्यः**) नदियां (**विमोचने**) विमोचन में (**अध्वनः**) मार्गों को (**वि, वर्त्तन्ते**) बितातीं हैं उनसे सम्पूर्ण उपकार ग्रहण करने चाहियें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे दुग्ध देने वाली गौवें दुग्ध की वृष्टि करती हैं, वैसे ही नदी, तड़ाग, समुद्र आदि और अन्य जलाशय पृथिवी में वृष्टि करते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**आ या॑त मरुतो दि॒व आन्तरि॑क्षाद॒मादु॒त। माव॑ स्थात परा॒वतः॑॥८॥**

आ। या॒त। म॒रु॒तः॒। दि॒वः। आ। अ॒न्तरि॑क्षात्। अ॒मात्। उ॒त। मा। अव॑। स्था॒त। प॒रा॒ऽवतः॑॥८॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यात**) प्राप्नुत (**मरुतः**) मनुष्याः (**दिवः**) कामनाः (**आ**) (**अन्तरिक्षात्**) (**अमात्**) गृहात् (**उत**) अपि (**मा**) (**अव**) (**स्थात**) तिष्ठत (**परावतः**) दूरदेशात्॥८॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयमन्तरिक्षादुतामाद्दिव आ यात परावतो मावाऽऽस्थात॥८॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्याः कामसिद्धिमाप्नुवन्ति ये विरोधं त्यक्त्वा विद्यावन्तो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(अन्तरिक्षात्)** अन्तरिक्ष **(उत)** और **(अमात्)** गृह से **(दिवः)** कामनाओं को **(आ)** सब प्रकार से **(यात)** प्राप्त हूजिये और **(परावतः)** दूर देश से **(मा)** नहीं **(अव, आ, स्थात)** अच्छे प्रकार से स्थित हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य कामना की सिद्धि को प्राप्त होते हैं, जो विरोध का त्याग करके विद्वान् होते हैं॥८॥

**पुनर्विद्वद्भिः किमुपदेष्टव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या उपदेश देना योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत्।**

**मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत्सुम्नमस्तु वः॥ ९॥**

**मा। वः। रसा। अनितभा। कुभा। क्रमुः। मा। वः। सिन्धुः। नि। रीरमत्। मा। वः। परि। स्थात्। सरयुः। पुरीषिणी। अस्मे इति। इत्। सुम्नम्। अस्तु। वः॥ ९॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(वः)** युष्मान् **(रसा)** पृथिवी **(अनितभा)** अप्राप्तदीप्तिः **(कुभा)** कुत्सितप्रकाशा **(क्रुमुः)** क्रमिता **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(सिन्धुः)** नदी समुद्रो वा **(नि)** निरताम् **(रीरमत्)** रमयेत् **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(परि)** **(स्थात्)** तिष्ठेत् **(सरयुः)** यः सरति **(पुरीषिणी)** पुर इषिणी **(अस्मे)** अस्मभ्यम् **(इत्)** एव **(सुम्नम्)** सुखम् **(अस्तु)** भवतु **(वः)** युष्मभ्यम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अनितभा कुभा क्रुमू रसा मा वो नि रीरमत् सिन्धुर्मा वो नि रीरमत्। सरयुः पुरीषिणी मा वः परि ष्ठाद्येनाऽस्मे वश्च सुम्नमिदस्तु॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरेवं पुरुषार्थः कर्त्तव्यो यथा सर्वे पदार्थाः सुखप्रदाः स्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अनितभा)** दीप्ति को न प्राप्त **(कुभा)** कुत्सित प्रकाशयुक्त **(क्रुमुः)** क्रमण करनेवाली **(रसा)** पृथिवी **(मा)** मत **(वः)** आप लोगों को **(नि)** अत्यन्त **(रीरमत्)** रमण करावे और **(सिन्धुः)** नदी वा समुद्र **(मा)** नहीं **(वः)** आप लोगों को निरन्तर रमण करावें तथा **(सरयुः)** चलने वाला और **(पुरीषिणी)** पुरों की इच्छा करने वाली **(मा)** मत **(वः)** आप लोगों को **(परि, स्थात्)** परिस्थित करावे अर्थात् मत आलसी बनावे जिससे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये और **(वः)** आप लोगों के लिये **(सुम्नम्)** सुख **(इत्)** ही **(अस्तु)** हो॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि इस प्रकार का पुरुषार्थ करें कि जिस प्रकार सम्पूर्ण पदार्थ सुख देने वाले होवें॥९॥

**पुनर्विदुषा मनुष्यार्थं किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् जन को मनुष्यों के अर्थ क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम्। अनु प्र यन्ति वृष्टयः॥ १०॥ १२॥**

**तम्। वः। शर्धम्। रथानाम्। त्वेषम्। गणम्। मारुतम्। नव्यसीनाम्। अनु। प्र। यन्ति। वृष्टयः॥ १०॥**

**पदार्थः-(तम्) (वः)** युष्मभ्यम् **(शर्धम्)** बलम् **(रथानाम्)** यानानाम् **(त्वेषम्)** सद्गुणप्रकाशम् **(गणम्) (मारुतम्)** मरुतां मनुष्याणामिदम् **(नव्यसीनाम्)** नवीनानाम् **(अनु) (प्र) (यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(वृष्टयः)**॥ १०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं रथानां नव्यसीनां मारुतं गणं त्वेषमुपदिशामि यं वृष्टयोऽनु प्र यन्ति तं शर्धं वः प्रापयामि॥ १०॥

**भावार्थः**-ये विदुषां नवीनां नवीनां नीतिं प्राप्नुवन्ति ते बलं लभन्ते॥ १०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(रथानाम्)** वाहनों और **(नव्यसीनाम्)** नवीनाओं के बीच **(मारुतम्)** मनुष्यों के सम्बन्धी **(गणम्)** समूह का और **(त्वेषम्)** सद्गुणों के प्रकाश का उपदेश करता हूं और जिसको **(वृष्टयः)** वर्षायें **(अनु, प्र, यन्ति)** प्राप्त होती हैं **(तम्)** उस **(शर्धम्)** बल को **(वः)** आप लोगों के लिये प्राप्त करता हूं॥ १०॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों की नवीन-नवीन नीति को प्राप्त होते हैं, वे बल को प्राप्त होते हैं॥ १०॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः। अनु क्रामेम धीतिभिः॥ ११॥**

**शर्धम्ऽशर्धम्। वः। एषाम्। व्रातम्ऽव्रातम्। गणम्ऽगणम्। सुशस्तिऽभिः। अनु। क्रामेम। धीतिऽभिः॥ ११॥**

**पदार्थः-(शर्धंशर्धम्)** बलंबलम् **(वः)** युष्माकम् **(एषाम्) (व्रातंव्रातम्)** वर्त्तमानं वर्त्तमानम् **(गणंगणम्)** समूहंसमूहम् **(सुशस्तिभिः)** सुष्ठुप्रशंसाभिः **(अनु) (क्रामेम)** उल्लङ्घेम **(धीतिभिः)** अङ्गुलिभिः कर्माणीव॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं धीतिभिः कर्माणीव सुशस्तिभिर्व एषाञ्च शर्धंशर्धं व्रातंव्रातं गणंगणमनु क्रामेम तथा युष्माभिरपि कर्त्तव्यम्॥ ११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि मनुष्याः पूर्णं बलं कुर्युस्तर्हि बहून् बलिष्ठानप्युत्क्रामयेयुः॥ ११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(धीतिभिः)** जैसे अङ्गुलियों से कर्म्मों को वैसे **(सुशस्तिभिः)** अच्छी प्रशंसाओं से **(वः)** आप लोगों के और **(एषाम्)** इनके **(शर्धशर्धम्)** बल-बल और **(व्रातंव्रातम्)** वर्त्तमान-वर्त्तमान **(गणंगणम्)** समूह-समूह को **(अनु, क्रामेम)** उल्लंघन करें, वैसे आप लोगों को भी करना चाहिये॥ ११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य पूर्ण बल को करें तो बहुत बलिष्ठों का भी उत्क्रमण करें॥ ११॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कस्मा॑ अ॒द्य सुजा॑ताय रा॒तह॑व्याय॒ प्र य॑युः। ए॒ना यामे॑न म॒रुतः॑॥१२॥**

**कस्मै॑। अ॒द्य। सु॒ऽजा॑ताय। रा॒तह॑व्याय। प्र। य॒युः। ए॒ना। यामे॑न। म॒रुतः॑॥१२॥**

**पदार्थः**-(**कस्मै**) (**अद्य**) (**सुजाताय**) सुष्ठुविद्यासु प्रसिद्धाय (**रातहव्याय**) दत्तदातव्याय (**प्र, ययुः**) प्राप्नुवन्ति (**एना**) एनेन (**यामेन**) उपरतेन (**मरुतः**) मनुष्याः॥१२॥

**अन्वयः**-ये मरुतोऽद्यैना यामेन कस्मै सुजाताय रातहव्याय प्र ययुस्ते विद्यादातारो भूत्वा प्रशंसिता जायन्ते॥१२॥

**भावार्थः**-विद्यादिशुभगुणदानेन विना विदुषां प्रशंसा नैव जायते॥१२॥

**पदार्थः**-जो (**मरुतः**) मनुष्य (**अद्य**) आज (**एना**) इस (**यामेन**) विरक्त हुए से (**कस्मै**) किस (**सुजाताय**) उत्तम विद्याओं में प्रसिद्ध (**रातहव्याय**) दिया दातव्य जिसने उसके लिये (**प्र, ययुः**) प्राप्त होते हैं, वे विद्या के देने वाले होकर प्रशंसित होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-विद्या आदि उत्तम गुणों के दान के विना विद्वानों की प्रशंसा नहीं होती है॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**येन॑ तो॒काय॒ तन॑याय धा॒न्यं१॒ बीजं॒ वह॑ध्वे॒ अक्षि॑तम्।**

**अ॒स्मभ्यं॒ तद्ध॑त्तन॒ यद्व॒ ईम॑हे॒ राधो॑ वि॒श्वायु॒ सौभ॑गम्॥१३॥**

**येन॑। तो॒काय॑। तन॑याय। धा॒न्य॑म्। बीज॑म्। वह॑ध्वे। अक्षि॑तम्। अ॒स्मभ्य॑म्। तत्। ध॒त्त॒न॒। यत्। वः॒। ईम॑हे। राधः॑। वि॒श्वऽआ॑यु। सौभ॑गम्॥१३॥**

**पदार्थः**-(**येन**) कर्मणा (**तोकाय**) सद्यो जातायापत्याय (**तनयाय**) कुमाराय (**धान्यम्**) तण्डुलादिकम् (**बीजम्**) वपनार्हम् (**वहध्वे**) वहत (**अक्षितम्**) क्षयरहितम् (**अस्मभ्यम्**) (**तत्**) (**धत्तन**) धरत (**यत्**) (**वः**) युष्मदर्थम् (**ईमहे**) याचामहे (**राधः**) धनम् (**विश्वायु**) सम्पूर्णमायुष्करम् (**सौभगम्**) सौभाग्यवर्धकम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन तोकाय तनयायाक्षितं धान्यं बीजं च यूयं वहध्वे। यद्विश्वायु सौभगमक्षितं राधो वा ईमहे तदस्मभ्यं धत्तन॥१३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अपत्यरक्षार्थं धान्यादिवस्तु संरक्षन्ति तेऽक्षयं सुखं लभन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**येन**) जिस कर्म्म से (**तोकाय**) तुरन्त उत्पन्न हुए सन्तान के और (**तनयाय**) कुमार के लिये (**अक्षितम्**) नाश से रहित (**धान्यम्**) तण्डुल आदि को और (**बीजम्**) बोने के योग्य को

**(वहध्वे)** प्राप्त हूजिये और **(यत्)** जिस **(विश्वायु)** सम्पूर्ण आयु के करने और **(सौभगम्)** सौभाग्य को बढ़ाने वाले नाश से रहित **(राधः)** धन की **(वः)** आप लोगों के लिये **(ईमहे)** याचना करते हैं **(तत्)** उसको **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(धत्तन)** धारण करिये॥१३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सन्तानों की रक्षा के लिये धान्य आदि वस्तु की उत्तम प्रकार रक्षा करते हैं, वे नाश रहित सुख को प्राप्त होते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः।**

**वृष्ट्वी शं योरापं उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह॥१४॥**

**अति। इयाम। निदः। तिरः। स्वस्तिऽभिः। हित्वा। अवद्यम्। अरातीः। वृष्ट्वी। शम्। योः। आपः। उस्रि। भेषजम्। स्याम। मरुतः। सह॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अति, इयाम)** उलङ्घेम त्यजेम **(निदः)** ये निन्दन्ति तान् मिथ्यावादिनः **(तिरः)** तिरश्चीनं कर्म्म **(स्वस्तिभिः)** सुखादिभिः **(हित्वा)** त्यक्त्वा **(अवद्यम्)** निन्दितं कर्म **(अरातीः)** शत्रून् **(वृष्ट्वी)** वृष्ट्वा वर्षित्वा **(शम्)** सुखम् **(योः)** मिश्रितम् **(आपः)** जलानि **(उस्रि)** गवादियुक्तम् **(भेषजम्)** औषधम् **(स्याम)** **(मरुतः)** मनुष्याः **(सह)**॥१४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथा वयं निदोऽतीयाम स्वस्तिभिस्तिरोऽवद्यमरातीश्च हित्वा शं वृष्ट्वी आपो योरुस्रि भेषजं स्वस्तिभिस्सह प्राप्ताः स्याम तथा युष्माभिर्भवितव्यम्॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्निन्दकान् निन्दां पापिनः पापं च त्यक्त्वा शत्रून् विजित्यौषधादिसेवनेन शरीरमरोगं विधाय विद्यायोगाभ्यासेनात्मानमुन्नीय सततं सुखमाप्तव्यम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! जैसे हम लोग **(निदः)** निन्दा करने वाले मिथ्यावादियों का **(अति, इयाम)** उल्लङ्घन करें अर्थात् त्याग करें और **(स्वस्तिभिः)** सुख आदिकों से **(तिरः)** तिरश्चीन कर्म्म और **(अवद्यम्)** निन्दित कर्म्म **(अरातीः)** और शत्रुओं का **(हित्वा)** त्याग और **(शम्)** सुख **(वृष्ट्वी)** वर्षा करके **(आपः)** जलों को और **(योः)** मिश्रित **(उस्रि)** गो आदि से युक्त **(भेषजम्)** ओषधि को सुख आदिकों के **(सह)** साथ प्राप्त **(स्याम)** होवें, वैसे आप लोगों को होना चाहिये॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि निन्दक, निन्दा और पापी [तथा] पाप को छोड़ शत्रुओं को जीतकर, ओषधि आदि के सेवन से शरीर रोगरहित कर, विद्या और योगाभ्यास से आत्मा की उन्नति करके निरन्तर सुख प्राप्त करें॥१४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः। यं त्रायध्वे स्याम ते॥१५॥**

**सुऽदेवः। समह। असति। सुऽवीरः। नरः। मरुतः। सः। मर्त्यः। यम्। त्रायध्वे। स्याम। ते॥१५॥**

**पदार्थः-(सुदेवः)** शोभनश्चासौ विद्वान् **(समह)** सत्कारसहित **(असति)** भवति **(सुवीरः)** शोभनश्चासौ वीरः **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(सः)** **(मर्त्यः)** **(यम्)** **(त्रायध्वे)** रक्षत **(स्याम)** **(ते)**॥१५॥

**अन्वयः-**हे समह! स सुदेवः सुवीरो मर्त्योऽसति यं हे मरुतो नरस्ते यूयं त्रायध्वे वयं तेन सहिताः स्याम॥१५॥

**भावार्थः-**मनुष्यैरत्युन्नतैर्भूत्वा निर्बलाः प्राणिनः सदैव रक्षणीयाः॥१५॥

**पदार्थः-**हे **(समह)** सत्कार से सहित! **(सः)** वह **(सुदेवः)** सुन्दर विद्वान् **(सुवीरः)** सुन्दर वीर **(मर्त्यः)** मनुष्य **(असति)** है **(यम्)** जिसको हे **(मरुतः)** मनुष्यो **(नरः)** अग्रणीजनो! **(ते)** वे आप लोग **(त्रायध्वे)** रक्षा करो, हम लोग उसके साथ **(स्याम)** होवें॥१५॥

**भावार्थः-**मनुष्यों को चाहिये कि अति उन्नत होकर निर्बल प्राणियों की सदा ही रक्षा करें॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्तुहि भोजान्त्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे।**
**यतः पूर्वाँइव सखीँरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः॥१६॥१३॥**

**स्तुहि। भोजान्। स्तुवतः। अस्य। यामनि। रणन्। गावः। न। यवसे। यतः। पूर्वान्ऽइव। सखीन्। अनु। ह्वय। गिरा। गृणीहि। कामिनः॥१६॥**

**पदार्थः-(स्तुहि)** **(भोजान्)** पालकान् **(स्तुवतः)** प्रशंसकान् **(अस्य)** रक्षणस्य **(यामनि)** मार्गे **(रणन्)** उपदिशन् **(गावः)** धेनवः **(न)** इव **(यवसे)** बुसादौ **(यतः)** **(पूर्वानिव)** यथा पूर्वांस्तथा वर्त्तमानान् **(सखीन्)** मित्रान् **(अनु)** **(ह्वय)** निमन्त्रय **(गिरा)** वाण्या **(गृणीहि)** **(कामिनः)** प्रशस्तं कामो येषामस्ति तान्॥१६॥

**अन्वयः-**हे विद्वन्! रणँस्त्वं स्तुवतो भोजान् स्तुहि। अस्य यामनि यतः पूर्वानिव सखीन् गिराऽनु ह्वय सखीन् यवसे गावो नाऽनु ह्वय कामिनो गृणीहि॥१६॥

**भावार्थः-**अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! ये प्रशंसनीयाः सर्वेषां सुहृदः सत्यकामाः स्युस्तान् सदैव सत्कुर्य्या इति॥१६॥

अत्र प्रश्नोत्तरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(रणन्)** उपदेश देते हुए आप **(स्तुवतः)** प्रशंसा करने वाले **(भोजान्)** पालकों की **(स्तुहि)** स्तुति कीजिये और **(अस्य)** इस रक्षण के **(यामनि)** मार्ग में **(यतः)** जिससे **(पूर्वनिव)** जैसे पूर्व वैसे वर्त्तमान **(सखीन्)** मित्रों का **(गिरा)** वाणी से **(अनु, ह्वय)** निमन्त्रण करो और मित्रों को **(यवसे)** बुस आदि में **(गावः)** गौओं के **(न)** सदृश निमन्त्रण करो और **(कामिनः)** श्रेष्ठ मनोरथ जिनका उनकी **(गृणीहि)** स्तुति करो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वन्! जो प्रशंसा करने योग्य और सब के मित्र और सत्य की कामना करने वाले होवें, उनका सदा ही सत्कार करो॥१६॥

इस सूक्त में प्रश्न उत्तर और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तिरपनवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य चतु:पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषि:। मरुतो देवता:। १, ३, ७, १२ जगती। २ विराड् जगती। ६ भुरिग् जगती। ११, १५ निचृज्जगती छन्द:। निषाद: स्वर:। ४, ८, १० भुरिक् त्रिष्टुप्। ५, ९, १३, १४ त्रिष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:॥**

***अथं विद्वद्भि: कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले चौवनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते।**

**घर्मस्तुभे दिव आ पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत॥ १॥**

**प्र। शर्धाय। मारुताय। स्वऽभानवे। इमाम्। वाचम्। अनज। पर्वतऽच्युते। घर्मऽस्तुभे। दिव:। आ। पृष्ठऽयज्वने। द्युम्नऽश्रवसे। महि। नृम्णम्। अर्चत॥ १॥**

**पदार्थ:-(प्र) (शर्धाय)** बलाय **(मारुताय)** मरुतामिदं तस्मै **(स्वभानवे)** स्वकीया भानवो दीप्तयो यस्य तस्मै **(इमाम्)** वर्त्तमानाम् **(वाचम्)** सुशिक्षितां वाणीम् **(अनज)** उच्चरतोपदिशत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:, व्यत्ययेनैकवचनं च। **(पर्वतच्युते)** पर्वतान्मेघाच्च्युतो य: पर्वतं मेघं च्यावयति वा तस्मै **(घर्मस्तुभे)** यो घर्मं यज्ञं स्तोभति स्तौति तस्मै **(दिव:)** कामयमाना: **(आ)** समन्तात् **(पृष्ठयज्वने)** य: पृष्ठेन यजति तस्मै **(द्युम्नश्रवसे)** द्युम्नं यश: श्रव: श्रुतं यस्य तस्मै **(महि)** महत् **(नृम्णम्)** नरोऽभ्यस्यन्ति यत्तत् **(अर्चत)** सत्कुरुत॥ १॥

**अन्वय:-**हे दिवो विद्वांसो! यूयं स्वभानवे मारुताय शर्धायेमां वाचं प्रानज पर्वतच्युते घर्मस्तुभे पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमार्चत॥ १॥

**भावार्थ:-**हे विद्वांसो! यूयं सदैवाज्ञान् विद्यादानेन ज्ञानवत: कुरुत सत्यासत्यं विविच्य सत्यं ग्राहयित्वाऽसत्यं त्याजयत सर्वसुखायैश्वर्य्यं सञ्चिनुत॥ १॥

**पदार्थ:-**हे **(दिव:)** कामना करते हुए विद्वानो! आप लोग **(स्वभानवे)** अपनी कान्ति विद्यमान जिसके उस **(मारुताय)** मनुष्यों के सम्बन्धी **(शर्धाय)** बल के लिये **(इमाम्)** इस वर्त्तमान **(वाचम्)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी का **(प्रानज)** उच्चारण कीजिये अर्थात् उपदेश दीजिये और **(पर्वतच्युते)** मेघ से गिरे वा जो मेघ को वर्षाता **(घर्मस्तुभे)** यज्ञ की स्तुति करता और **(पृष्ठयज्वने)** पृष्ठ से यज्ञ करता **(द्युम्नश्रवसे)** वा यश सुना गया जिसका उसके लिये **(महि)** बड़े **(नृम्णम्)** मनुष्य अभ्यास करते हैं जिसका उसका **(आ, अर्चत)** सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! आप लोग सदा ही ज्ञानरहित पुरुषों को विद्या के दान से ज्ञानवान् करो, सत्य और असत्य का विचार करके सत्य का ग्रहण कराय के असत्य का त्याग कराइये और सब के सुख के लिये ऐश्वर्य्य को इकट्ठा करो॥१॥

**पुनर्म्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो मरुतस्तविषा उदन्यवो वयोवृधो अश्वयुजः परिज्रयः।**

**सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्यापोऽवना परिज्रयः॥२॥**

**प्र। वः। मरुतः। तविषाः। उदन्यवः। वयःऽवृधः। अश्वऽयुजः। परिऽज्रयः। सम्। विऽद्युता। दधति। वाशति। त्रितः। स्वरन्ति। आपः। अवना। परिऽज्रयः॥२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मान् (**मरुतः**) मनुष्याः (**तविषाः**) बलवन्तः (**उदन्यवः**) आत्मन उदकमिच्छवः (**वयोवृधः**) ये वयसा वर्धन्ते वयो वर्धयन्ति वा (**अश्वयुजः**) येऽश्वान् सद्योगामिनः पदार्थान् योजयन्ति (**परिज्रयः**) ये परितः सर्वतो गच्छन्ति ते (**सम्**) (**विद्युता**) (**दधति**) (**वाशति**) वाणीवाचरन्ति (**त्रितः**) त्रिभ्यः (**स्वरन्ति**) शब्दयन्ति (**आपः**) जलानि (**अवना**) अवनादीनि रक्षणदीनि (**परिज्रयः**) परितः सर्वतो ज्रयो गतिमन्तः॥२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! ये तविषा उदन्यवो वयोवृधोऽश्वयुजः परिज्रयो विद्युता सह वो युष्मान् सन्दधति वाशति। त्रितः परिज्रय आपोऽवना प्र स्वरन्ति तान् यूयं सत्कुरुत॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्युदादिविद्यां जानन्ति ते सर्वं सुखं सर्वार्थं दधति॥२॥

**पदार्थ:**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! जो (**तविषाः**) बलवान् (**उदन्यवः**) अपने को जल की इच्छा करने (**वयोवृधः**) अवस्था से बढ़ने वा अवस्था को बढ़ाने (**अश्वयुजः**) शीघ्रगामी पदार्थों को युक्त करने (**परिज्रयः**) और सब और जाने वाले जन (**विद्युता**) बिजुली के साथ (**वः**) आप लोगों को (**सम्, दधति**) उत्तम प्रकार धारण करते और (**वाशति**) वाणी के सदृश आचरण करते हैं और (**त्रितः**) तीन से (**परिज्रयः**) सब ओर जाने वाले (**आपः**) जल (**अवना**) रक्षण आदि का (**प्र, स्वरन्ति**) अच्छे प्रकार उच्चारण करते हैं, उनका आप लोग सत्कार करो॥२॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य बिजुली आदि की विद्या को जानते हैं, वे सम्पूर्ण सुख को सब के लिये धारण करते हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः।**

**अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः॥३॥**

**विद्युत्ऽमहसः। नरः। अश्मऽदिद्यवः। वातऽत्विषः। मरुतः। पर्वतऽच्युतः। अब्दऽया। चित्। मुहुः। आ। ह्रादुनिऽवृतः। स्तनयत्ऽअमाः। रभसाः। उत्ऽओजसः॥३॥**

**पदार्थः**-(**विद्युन्महसः**) ये विद्युद्विद्यायां महसो महान्तः (**नरः**) नायकाः (**अश्मदिद्यवः**) मेघविद्याप्रकाशकाः (**वातत्विषः**) वातविद्यया त्विषः कान्तयो येषान्ते (**मरुतः**) मानवाः (**पर्वतच्युतः**) ये पवतान्मेघान् च्यावयन्ति (**अब्दया**) येऽपो जलानि ददति ते (**चित्**) अपि (**मुहुः**) वारंवारम् (**आ**) (**ह्रादुनीवृतः**) ये ह्रादुन्या शब्दकर्त्र्या विद्युता युक्ताः (**स्तनयदमाः**) स्तनयन्ति शब्दयन्त्यमा गृहाणि येषान्ते (**रभसाः**) वेगवन्तः (**उदोजसः**) उत्कृष्टमोजः पराक्रमो येषां ते॥३॥

**अन्वयः**-हे नरो! ये विद्युन्महसोऽश्मदिद्यवो वातत्विषः पर्वतच्युतोऽब्दया स्तनयदमा रभसा उदोजसो मुहुरा ह्रादुनीवृतश्चिन्मरुतः सन्ति तैः सङ्गच्छस्व॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्युन्मेघवायुशब्दादिविद्याविदः सन्ति ते सर्वतो श्रीमन्तो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायकजनो! जो (**विद्युन्महसः**) बिजुली की विद्या में विद्या में बड़े श्रेष्ठ (**अश्मदिद्यवः**) मेघ विद्या के प्रकाश करने वाले (**वातत्विषः**) वायुविद्या से कांतियां जिनकी ऐसे और (**पर्वतच्युतः**) मेघों को वर्षाने वा (**अब्दया**) जलों को देने वाले और (**स्तनयदमाः**) शब्द करते गृह जिनके वे (**रभसाः**) वेग से युक्त (**उदोजसः**) उत्कृष्ट पराक्रम जिनका वे (**मुहुः**) वार-वार (**आ**) सब प्रकार से (**ह्रादुनीवृतः**) शब्द करने वाली बिजुली से युक्त (**चित्**) भी (**मरुतः**) मनुष्य हैं, उनसे मिलिये॥३॥

**भावार्थः**-जो बिजुली, मेघ, वायु और शब्द आदि की विद्या को जानने वाले हैं, वे सब प्रकार से लक्ष्मीवान् होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**व्यक्तून् रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः।**
**वि यदज्राँ अजथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ॥४॥**

**वि। अक्तून्। रुद्राः। वि। अहानि। शिक्वसः। वि। अन्तरिक्षम्। वि। रजांसि। धूतयः। वि। यत्। अज्रान्। अजथ। नावः। ईम्। यथा। वि। दुःऽगानि। मरुतः। न। अह। रिष्यथ॥४॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**अक्तून्**) प्रसिद्धान् (**रुद्राः**) (**वायवः**) (**वि**) विशेषे (**अहानि**) दिनानि (**शिक्वसः**) शक्तिमन्तः (**वि**) (**अन्तरिक्षम्**) (**वि**) (**रजांसि**) लोकान् (**धूतयः**) ये धुन्वन्ति (**वि**) (**यत्**) (**अज्रान्**) सततगामिनः (**अजथ**) गच्छथ (**नावः**) महत्यो नौकाः (**ईम्**) जलम् (**यथा**) (**वि**) (**दुर्गाणि**) दुःखेन गन्तुं योग्यानि (**मरुतः**) मनुष्याः (**न**) (**अह**) विनिग्रहे (**रिष्यथ**) हिंस्यथ॥४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यद्ये शिक्वसो धूतयो रुद्रा अक्तून् प्रकटयन्त्यहानि वि मिमतेऽन्तरिक्षं प्रति रजांसि विदधति विचालयन्तीं नाव इव सर्वान् लोकानागमयन्ति तानज्रान् व्यजथ यथा दुर्गाणि नाह वि रिष्यथ तथा विचरत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्वायुविद्या अवश्यं ज्ञातव्या॥४॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यत्**) जो (**शिक्वसः**) सामर्थ्य से युक्त (**धूतयः**) कांपने वाले (**रुद्राः**) पवन (**अक्तून्**) प्रसिद्धों को प्रकट करते हैं और (**अहानि**) दिनों का (**वि**) विशेष करके परिणाम करते अर्थात् गिनाते हैं (**अन्तरिक्षम्**) अन्तरिक्ष के प्रति (**रजांसि**) लोकों का (**वि**) विधान करते और (**वि**) विशेष करके चलाते हैं तथा (**ईम्**) जल को जैसे (**नावः**) बड़ी नौकायें, वैसे सम्पूर्ण लोकों को चलाते हैं उन (**अज्रान्**) निरन्तर चलाने वालों को (**वि, अजथ**) प्राप्त हूजिये और (**यथा**) जैसे (**दुर्गाणि**) दु:ख से प्राप्त होने योग्यों को (**न**) नहीं (**अह**) ग्रहण करने में (**वि, रिष्यथ**) नाश करें वैसे (**वि**) विचरिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि वायुविद्या को अवश्य जानें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तद्वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम्।**

**एता न यामे अगृभीतशोचिषोऽनश्वदां यन्न्ययातना गिरिम्॥५॥१४॥**

**तत्। वीर्यम्। वः। मरुतः। महिऽत्वनम्। दीर्घम्। ततान। सूर्यः। न। योजनम्। एताः। न। यामे। अगृभीतऽशोचिषः। अनश्वऽदाम्। यत्। नि। अयातन। गिरिम्॥५॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**वीर्यम्**) (**वः**) युष्माकम् (**मरुतः**) वायुवद्वर्त्तमानाः (**महित्वनम्**) महत्त्वम् (**दीर्घम्**) विशालम् (**ततान**) तनोति (**सूर्यः**) (**नः**) इव (**योजनम्**) युजन्ति येन तदाकर्षणाख्यम् (**एताः**) गतयः (**न**) इव (**यामे**) प्रहरे (**अगृभीतशोचिषः**) न गृहीतं शोचिस्तेजो यैस्ते (**अनश्वदाम्**) अविद्यमाना अश्वा तस्यां तां गतिम् (**यत्**) (**नि**) (**अयातना**) प्राप्नुत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**गिरिम्**) मेघम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मरुतः! सूर्यो योजनं न महित्वनं दीर्घं वस्तद्वीर्यं ततानागृभीतशोचिषो याम एता गतयो नानश्वदां गिरिं ददति यद्यूयं न्ययातना तत्सर्वं वयं गृह्णीमः॥५॥

**भावार्थः**-ये सूर्यमेघगुणान्विदित्वा सामर्थ्यं धनं च वयन्ति ते परोपकारिणो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) वायु के सदृश वर्त्तमान मनुष्यो! (**सूर्यः**) सूर्य्य (**योजनम्**) युक्त करते हैं जिससे उस आकर्षण नामक के (**न**) सदृश और (**महित्वनम्**) बड़प्पन को जैसे वैसे (**दीर्घम्**) विशाल (**वः**) आपके (**तत्**) उस (**वीर्यम्**) पराक्रम को (**ततान**) विस्तृत करता है और (**अगृभीतशोचिषः**) नहीं ग्रहण किया तेज जिन्होंने वे (**यामे**) प्रहर में (**एताः**) ये गमन (**न**) जैसे (**अनश्वदाम्**) नहीं घोड़े जिसमें

उस गमन और **(गिरिम्)** मेघ को देते हैं और **(यत्)** जिसको आप लोग **(नि, अयातना)** प्राप्त हूजिये, उस सब को हम लोग ग्रहण करें॥५॥

**भावार्थः**-जो लोग सूर्य और मेघों के गुणों को जान कर सामर्थ्य और धन को इकट्ठा करते हैं, वे परोपकारी होते हैं॥५॥

**मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः।**
**अध स्मा नो अरमतिं सजोषसश्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम्॥६॥**

**अभ्राजि। शर्धः। मरुतः। यत्। अर्णसम्। मोषथ। वृक्षम्। कपनाऽइव। वेधसः। अध। स्म। नः। अरमतिम्। सऽजोषसः। चक्षुःऽइव। यन्तम्। अनु। नेषथ। सुऽगम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(अभ्राजि)** प्रकाश्यते **(शर्धः)** बलम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(यत्)** **(अर्णसम्)** जलम् **(मोषथ)** चोरयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वृक्षम्)** वटादिकम् **(कपनेव)** कपना वायुगतय इव **(वेधसः)** मेधाविनः **(अध)** अथ **(स्म)** **(नः)** अस्माकम् **(अरमतिम्)** अरमणम् **(सजोषसः)** समानप्रीतिसेविनः **(चक्षुरिव)** यथा चक्षुः **(यन्तम्)** प्राप्नुवन्तम् **(अनु)** **(नेषथ)** नयथ। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुगम्)** सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिन्॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! युष्माभिर्यच्छर्धोऽभ्राजि यदर्णसं यूयं मोषथ तर्हि युष्मान् वृक्षं कपनेव वयं दण्डयेयाध हे वेधसः! सजोषसो यूयं चक्षुरिव नोऽरमतिं यन्तं सुगं स्मानु नेषथ॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सर्वेषां शरीरात्मबलं प्रकाशयन्ति ते धन्या सन्ति ये च सद्विद्यागुणाँश्चोरयन्ति तान् धिग्धिक्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोगों से **(यत्)** जो **(शर्धः)** बल **(अभ्राजि)** प्रकाशित किया जाता और **(अर्णसम्)** जल की जो तुम लोग **(मोषथ)** चुराइये तो आप लोगों को जैसे **(वृक्षम्)** वट आदि वृक्ष को **(कपनेव)** पवनों के गमन वैसे हम लोग दण्ड देवें **(अध)** इसके अनन्तर हे **(वेधसः)** बुद्धिमान् जनो! **(सजोषसः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले आप लोग **(चक्षुरिव)** नेत्र को जैसे वैसे **(नः)** हम लोगों के **(अरमतिम्)** रमणरहित **(यन्तम्)** प्राप्त होने वाले **(सुगम्)** सुग अर्थात् उत्तमता से चलते हैं, जिसमें उसको **(स्म)** ही **(अनु, नेषथ)** अनुकूल प्राप्त कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सब के शरीर और आत्मा के बल को प्रकाशित करते हैं, वे धन्य हैं और जो श्रेष्ठ विद्या और गुणों को चुराते, उनको धिक्कार धिक्कार॥६॥

**अथेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्युपदिश्यते॥**

अब ईश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।**

**नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ॥७॥**

**न। सः। जीयते। मरुतः। न। हन्यते। न। स्रेधति। व्यथते। न। रिष्यति। न। अस्य। रायः। उप। दस्यन्ति। न। ऊतयः। ऋषिम्। वा। यम्। राजानम्। वा। सुसूदथ॥७॥**

**पदार्थः-(न) (सः)** जगदीश्वरः **(जीयते)** जितो भवति **(मरुतः)** मनुष्याः **(न) (हन्यते) (न) (स्रेधति)** न क्षीयते **(न) (व्यथते)** पीड्यते **(न) (रिष्यति)** हिनस्ति **(न) (अस्य) (रायः)** धनम् **(उप) (दस्यन्ति)** क्षयन्ति **(न) (ऊतयः)** रक्षणाद्याः **(ऋषिम्)** वेदार्थविदम् **(वा) (यम्) (राजानम्) (वा) (सुषूदथ)** रक्षथ॥७॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! स न जीयते न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति अस्य न रायो नोतय उप दस्यन्ति यमृषिं वा राजानं वा यूयं सुषूदथ॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽजरोऽमरः सच्चिदानन्दस्वरूपो नित्यगुणकर्मस्वभावो जगदीश्वरोऽस्ति तं सर्वे यूयमुपाध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(सः)** वह **(न)** न **(जीयते)** जीता जाता **(न)** न **(हन्यते)** नाश किया जाता **(न)** न **(स्त्रधेति)** नाश होता **(न)** न **(व्यथते)** पीड़ित होता और **(न)** न **(रिष्यति)** हिंसा करता है **(अस्य)** इस का **(न)** न **(रायः)** धन और **(न)** न **(ऊतयः)** रक्षण आदि व्यवहार **(उप, दस्यन्ति)** नाश होते हैं **(यम्)** जिस **(ऋषिम्)** वेदार्थ के जानने वाले **(वा)** अथवा **(राजानम्)** राजा को **(वा)** भी आप लोग **(सुषूदथ)** रखिये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वृद्धावस्था वा मरणावस्था रहित, सत्, चित् और आनन्दस्वरूप, नित्य गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला जगदीश्वर है, उसकी सब आप लोग उपासना करो॥७॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः।**

**पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन् व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा॥८॥**

**नियुत्वन्तः। ग्रामऽजितः। यथा। नरः। अर्यमणः। न। मरुतः। कबन्धिनः। पिन्वन्ति। उत्सम्। यत्। इनासः। अस्वरन्। वि। उन्दन्ति। पृथिवीम्। मध्वः। अन्धसा॥८॥**

**पदार्थः-(नियुत्वन्तः)** निश्चयवन्तः **(ग्रामजितः)** ये ग्रामं जयन्ति ते **(यथा) (नरः)** नायकाः **(अर्यमणः)** न्यायेशाः **(नः) (मरुतः) (कबन्धिनः)** बहूदकाः **(पिन्वन्ति)** प्रीणन्ति **(उत्सम्)** कूपमिव

**(यत्)** **(इनासः)** ईश्वराः समर्थाः **(अस्वरन्)** स्वरन्ति शब्दयन्ति **(वि)** **(उन्दन्ति)** क्लेदयन्ति **(पृथिवीम्)** **(मध्वः)** मधुरगुणयुक्ताः **(अन्धसा)** अन्नेन सह॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नियुत्वन्तो ग्रामजितोऽर्यमणो न कबन्धिन इनासो नरो मरुतो यदुत्समिव पिन्वन्त्यस्वरन्नन्धसा सह मध्वस्सन्तः पृथिवीं व्युन्दन्ति ते भाग्यशालिनो भवन्ति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये जलवच्छान्तिकराः सामर्थ्यं वर्धयमाना विजयन्ते ते श्रियं लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यथा)** जैसे **(नियुत्वन्तः)** निश्चयवान् **(ग्रामजितः)** ग्राम को जीतने वाले **(अर्यमणः)** न्यायाधीशों के **(न)** सदृश **(कबन्धिनः)** बहुत जलों से युक्त **(इनासः)** समर्थ **(नरः)** नायक **(मरुतः)** मनुष्य **(यत्)** जिसको **(उत्सम्)** कूप के समान **(पिन्वन्ति)** तृप्त करते वा **(अस्वरन्)** शब्द करते हैं और **(अन्धसा)** अन्न के साथ **(मध्वः)** मधुर गुणयुक्त होते हुए **(पृथिवीम्)** पृथिवी को **(वि, उन्दन्ति)** विशेष गीला करते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जल के सदृश शान्ति करने वाले और सामर्थ्य को बढ़ाते हुए विजय को प्राप्त होते हैं, वे लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं॥८॥

**मनुष्यैः कथमुपकारो ग्रहीतव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को कैसे उपकार लेना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः।**

**प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः॥९॥**

**प्रवत्वती। इयम्। पृथिवी। मरुत्ऽभ्यः। प्रवत्वती। द्यौः। भवति। प्रयत्ऽभ्यः। प्रवत्वतीः। पथ्याः। अन्तरिक्ष्याः। प्रवत्वन्तः। पर्वताः। जीरऽदानवः॥९॥**

**पदार्थः**-**(प्रवत्वती)** निम्नदेशयुक्ता **(इयम्)** **(पृथिवी)** भूमिः **(मरुद्भ्यः)** मनुष्यादिभ्यः **(प्रवत्वती)** प्रणवती **(द्यौः)** प्रकाशः **(भवति)** **(प्रयद्भ्यः)** प्रयत्नं कुर्वद्भ्यः **(प्रवत्वतीः)** निम्नगामिनीः **(पथ्याः)** पथे हिताः **(अन्तरिक्ष्याः)** अन्तरिक्षे भवाः **(प्रवत्वन्तः)** प्रवणशीलाः **(पर्वताः)** मेघाः **(जीरदानवः)** जीवनप्रदाः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येयं प्रवत्वती पृथिवी प्रवत्वती द्यौः प्रयद्भ्यो मरुद्भ्यो हितकारिणी भवति यस्यां प्रवत्वन्तो जीरदानवः पर्वता अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वतीः पथ्याः वर्षाः कुर्वन्ति ते यथावद्वेदितव्याः॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः पृथिव्याः सकाशाद्यावाञ्छक्यस्तावानुपकारो ग्रहीतव्यः॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इयम्)** यह **(प्रवत्वती)** नीचे के स्थान से युक्त **(पृथिवी)** भूमि और **(प्रवत्वती)** फैलने वाला **(द्यौः)** प्रकाश और **(प्रयद्भ्यः)** प्रयत्न करते हुए **(मरुद्भ्यः)** मनुष्य आदिकों के लिये हितकारक **(भवति)** होता है जिसमें **(प्रवत्वन्तः)** गमनशील **(जीरदानवः)** जीवन को देने वाले

**(पर्वताः)** मेघ **(अन्तरिक्ष्याः)** अन्तरिक्ष में उत्पन्न **(प्रवत्वतीः)** नीचे चलने वाले **(पथ्याः)** मार्ग के लिये हितकारक वृष्टियों को करते हैं, वे यथावत् जानने योग्य हैं॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि पृथिवी के समीप से जितना हो सकता है, उतना उपकार ग्रहण करें॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः।**

**न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारमश्नुथ॥१०॥१५॥**

**यत्। मरुतः। सऽभरसः। स्वःऽनरः। सूर्ये। उत्ऽइते। मदथ। दिवः। नरः। न। वः। अश्वाः। श्रथयन्त। अह। सिस्रतः। सद्यः। अस्य। अध्वनः। पारम्। अश्नुथ॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** ये **(मरुतः)** मनुष्याः **(सभरसः)** समानपालनपोषणाः **(स्वर्णरः)** ये स्वः सुखं नयन्ति ते **(सूर्ये) (उदिते)** उदयं प्राप्ते **(मदथ)** आनन्दथ **(दिवः)** कामयमानाः **(नरः)** सत्ये धर्मे नेतारः **(न) (वः)** युष्माकम् **(अश्वाः)** तुरङ्गाः **(श्रथयन्त)** हिंसन्ति **(अह)** विनिग्रहे **(सिस्रतः)** गन्तारः **(सद्यः)** शीघ्रम् **(अस्य) (अध्वनः)** मार्गस्य **(पारम्) (अश्नुथ)** प्राप्नुथ॥१०॥

**अन्वयः**-हे सभरसः स्वर्णरो दिवो नरो मरुतो! यूयमुदिते सूर्ये यत्प्राप्य मदथ तेन वः सिस्रतोऽश्वा न श्रथयन्ताह तैरस्याध्वनः पारं सद्योऽश्नुथ॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सूर्य्योदयात् प्रागुत्थाय यावच्छयनं तावत्प्रयतन्ते दुःख दारिद्र्यान्तं गत्वा सुखिनः श्रीमन्तो जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(सभरसः)** तुल्य पालन और पोषण करने वाले **(स्वर्णरः)** सुख को प्राप्त कराते और **(दिवः)** कामना करते हुए **(नरः)** सत्य धर्म में पहुंचाने वाले **(मरुतः)** जनो! आप लोग **(उदिते)** उदय को प्राप्त हुए **(सूर्ये)** सूर्य में **(यत्)** जिसको प्राप्त होकर **(मदथ)** आनन्दित होओ उससे **(वः)** आप लोगों के **(सिस्रतः)** चलने वाले **(अश्वाः)** घोड़े **(न)** नहीं **(श्रथयन्त, अह)** हिंसा करते रुकते हैं, उनसे **(अस्य)** इस **(अध्वनः)** मार्ग के **(पारम्)** पार को **(सद्यः)** शीघ्र **(अश्नुथ)** प्राप्त हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सूर्य्योदय से पहले उठ के जब तक सोवैं नहीं तब तक प्रयत्न करते हैं, दुःख और दारिद्र्य के अन्त को प्राप्त होकर सुखी और लक्ष्मीवान् होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः के कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कौन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।**

**अ॒ग्निभ्रा॑जसो वि॒द्युतो॒ गभ॑स्त्योः शि॒प्राः शी॒र्षसु॒ वित॑ता हिर॒ण्ययीः॥११॥**

**अंसे॑षु। व॒ः। ऋ॒ष्टयः॑। प॒त्ऽसु। खा॒दयः॑। वक्षः॑ऽसु। रु॒क्माः। म॒रु॒तः॒। रथे॑। शुभः॑। अ॒ग्निऽभ्रा॑जसः। वि॒ऽद्युतः॑। गभ॑स्त्योः। शि॒प्राः। शी॒र्षऽसु॑। विऽत॑ताः। हि॒र॒ण्ययीः॑॥११॥**

**पदार्थः**-(**अंसेषु**) स्कन्धेषु (**वः**) युष्माकम् (**ऋष्टयः**) शस्त्रास्त्राणि (**पत्सु**) पादेषु (**खादयः**) भोक्तारः (**वक्षःसु**) (**रुक्माः**) सुवर्णालङ्काराः (**मरुतः**) मनुष्याः (**रथे**) रमणीये याने (**शुभः**) शुम्भमानाः (**अग्निभ्राजसः**) अग्निरिव प्रकाशमानाः (**विद्युतः**) तडितः (**गभस्त्योः**) हस्तयोर्मध्ये (**शिप्राः**) उष्णिषः (**शीर्षसु**) शिरस्सु (**वितताः**) विस्तृताः (**हिरण्ययीः**) सुवर्णप्रचुराः॥११॥

**अन्वयः**-हे मरुतो यदा वो वायुवद्वर्तमाना वीरा! यद् वोंऽसेष्वृष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा रथे शुभो गभस्त्योरग्निभ्राजसो विद्युतः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः शिप्राः स्युस्तदा हस्तगतो विजयो वर्त्तते॥११॥

**भावार्थः**-ये राजपुरुषा अहर्निशं राजकार्य्येषु प्रवीणा दुर्व्यसनेभ्यो विरक्ताः साङ्गोपाङ्गराजसामग्रीमन्तः स्युस्ते सदैव प्रतिष्ठां लभन्ते॥११॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो जब (**वः**) आप लोगों के वायु के सदृश वर्त्तमान वीरजनो! जो आप लोगों के (**अंसेषु**) कन्धों में (**ऋष्टयः**) शस्त्र और अस्त्र (**पत्सु**) पैरों में (**खादयः**) भोक्ताजन (**वक्षःसु**) वक्षःस्थलों में (**रुक्माः**) सुवर्ण अलंकार (**रथे**) सुन्दर वाहन में (**शुभः**) शोभित पदार्थ (**गभस्त्योः**) हाथों के मध्य में (**अग्निभ्राजसः**) अग्नि के सदृश प्रकाशमान (**विद्युतः**) बिजुलियाँ (**शीर्षसु**) शिरों में (**वितताः**) विस्तृत (**हिरण्ययीः**) सुवर्ण जिनमें बहुत ऐसी (**शिप्राः**) पगड़ियाँ होवें, तब हस्तगत विजय होता है॥११॥

**भावार्थः**-जो राजपुरुष अहर्निश राजकार्य्यों में प्रवीण, दुर्व्यसनों से विरक्त और साङ्गोपाङ्ग राजसामग्री वाले हों, वे सदैव प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं नाक॑म॒र्यो अगृ॑भीतशोचिषं॒ रुश॒त्पिप्प॑लं मरुतो॒ वि धू॑नुथ।**
**सम॑च्यन्त वृ॒जनाति॑त्विषन्त॒ यत्स्वर॑न्ति॒ घोषं॒ वित॑तमृता॒यवः॑॥१२॥**

**तम्। नाक॑म्। अ॒र्यः। अगृ॑भीतऽशोचिषम्। रुश॑त्। पिप्प॑लम्। म॒रु॒तः॒। वि। धू॒नु॒थ॒। सम्। अ॒च्य॒न्त॒। वृ॒जना॑। अति॑त्विषन्त। यत्। स्वर॑न्ति। घोष॑म्। विऽत॑तम्। ऋ॒त॒ऽयवः॑॥१२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**अर्यः**) स्वामीश्वरः (**अगृभीतशोचिषम्**) न गृहीतं शोचिर्यस्तम् (**रुशत्**) सुस्वरूपम् (**पिप्पलम्**) फलभोगम् (**मरुतः**) वायुरिव वर्त्तमानाः (**वि**) विशेषेण (**धूनुथ**) कम्पयथ (**सम्**) (**अच्यन्त**) सम्यक् प्राप्नुत (**वृजना**) वृजन्ति यैस्तानि (**अतित्विषन्त**) प्रदीपयत

प्रकाशिता भवत **(यत्)** यम् **(स्वरन्ति)** उच्चरन्ति **(घोषम्)** वाचम् **(विततम्)** विस्तृतम् **(ऋतायवः)** आत्मन ऋतमिच्छवः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयमर्य इव ऋतायवो यद्विततं घोषं स्वरन्ति तमगृभीतशोचिषं रुशत् पिप्पलं नाकं समच्यन्त दुःखं वि धूनुथ वृजनातित्विषन्त॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या ईश्वरवन्न्यायकारिणो जगदुपकारकाः उपदेशकाः सन्ति ते जगद्भूषका वर्त्तन्ते॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** वायु के सदृश वेगयुक्त वर्त्तमान जनो! आप लोग **(अर्यः)** स्वामी ईश्वर के सदृश **(ऋतायवः)** अपने सत्य की इच्छा करते हुए **(यत्)** जिस **(विततम्)** विस्तृत **(घोषम्)** वाणी का **(स्वरन्ति)** उच्चारण करते हैं **(तम्)** उस **(अगृभीतशोचिषम्)** अगृभीतशोचिषम् अर्थात् नहीं ग्रहण की स्वच्छता जिसमें ऐसे **(रुशत्)** अच्छे स्वरूप वाले **(पिप्पलम्)** फलभोगरूप **(नाकम्)** दुःखरहित आनन्द को **(सम्, अच्यन्त)** उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये दुःख को **(वि)** विशेष करके **(धूनुथ)** कम्पाइये और **(वृजना)** चलते हैं जिनसे उनको **(अतित्विषन्त)** प्रकाशित कीजिये तथा प्रकाशित हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य ईश्वर के सदृश न्यायकारी सम्पूर्ण जगत् के उपकार करने वाले और उपदेशक हैं, वे संसार के भूषक हैं॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।**

**न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३ऽस्मे रारन्त मरुतः सहस्रिणम्॥१३॥**

**युष्माऽदत्तस्य। मरुतः। विऽचेतसः। रायः। स्याम। रथ्यः। वयस्वतः। न। यः। युच्छति। तिष्यः। यथा। दिवः। अस्मे इति। ररन्त। मरुतः। सहस्रिणम्॥१३॥**

**पदार्थः**-**(युष्मादत्तस्य)** युष्माभिर्दत्तस्य **(मरुतः)** प्राणवत्प्रिया जनाः **(विचेतसः)** विविधं चेतः संज्ञानं येषान्ते **(रायः)** धनस्य **(स्याम)** **(रथ्यः)** बहुरथादियुक्ताः **(वयस्वतः)** प्रशस्तं वयो जीवनं विद्यते यस्य तस्य **(न)** **(यः)** **(युच्छति)** प्रमाद्यति **(तिष्यः)** आदित्यः पुष्यनक्षत्रं वा **(यथा)** **(दिवः)** प्रकाशमध्ये **(अस्मे)** अस्मभ्यमस्मासु वा **(रारन्त)** रमन्ते **(मरुतः)** मानवाः **(सहस्रिणम्)** सहस्राण्यसङ्ख्यानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्य तम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विचेतसो रथ्यो मरुतो! वयं युष्मादत्तस्य वयस्वतो रायः पतयः स्याम। योऽस्मे न युच्छति यथा दिवो मध्ये तिष्योऽस्ति तथा प्रकाश्येत। हे मरुतो! यूयं सहस्रिणं रारन्त॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदा धनाढ्यत्वमेषणीयं प्रमादो नैव कर्त्तव्यः॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(विचेतसः)** अनेक प्रकार का संज्ञान जिनका वे **(रथ्यः)** बहुत रथ आदि से युक्त **(मरुतः)** प्राणों के सदृश प्रियजनो! हम लोग **(युष्मादत्तस्य)** आप लोगों से दिये गये **(वयस्वतः)** प्रशंसित जीवन जिसका उस **(रायः)** धन के स्वामी **(स्याम)** होवें और **(यः)** जो **(अस्मे)** हम लोगों के लिये वा हम लोगों में **(न)** नहीं **(युच्छति)** प्रमाद करता और **(यथा)** जैसे **(दिवः)** प्रकाश के मध्य में **(तिष्यः)** सूर्य्य वा पुष्य नक्षत्र है, वैसे प्रकाशित होवे और हे **(मरुतः)** जनो! आप लोग **(सहस्रिणम्)** असंख्य वस्तु है विद्यमान जिसके उसको **(रारन्त)** रमण करते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा धनाढ्यपन का खोज करें और प्रमाद न करें॥१३॥

**राजादिभिः के के रक्षणीया इत्याह॥**

राजादिकों से कौन-कौन रक्षा पाने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**यूयं रयिं मरुतः स्पार्हवीरं यूयमृषिमवथ सामविप्रम्।**

**यूयमर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्॥१४॥**

**यूयम्। रयिम्। मरुतः। स्पार्हऽवीरम्। यूयम्। ऋषिम्। अवथ। सामऽविप्रम्। यूयम्। अर्वन्तम्। भरताय। वाजम्। यूयम्। धत्थ। राजानम्। श्रुष्टिऽमन्तम्॥१४॥**

**पदार्थः**-**(यूयम्)** **(रयिम्)** श्रियम् **(मरुतः)** पुरुषार्थिनो मनुष्याः **(स्पार्हवीरम्)** स्पार्हा अभिकाङ्क्षिता वीरा यस्मिन् **(यूयम्)** **(ऋषिम्)** वेदार्थविदम् **(अवथ)** रक्षथ **(सामविप्रम्)** सामसु मेधाविनम् **(यूयम्)** **(अर्वन्तम्)** प्राप्नुवन्तम् **(भरताय)** धारणपोषणाय **(वाजम्)** वेगान्नविज्ञानादिकम् **(यूयम्)** **(धत्थ)** **(राजानम्)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानम् **(श्रुष्टिमन्तम्)** श्रुष्टी प्रशस्तं क्षिप्रकरं यस्मिँस्तम्॥१४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं स्पार्हवीरं रयिमवथ यूयं सामविप्रमृषिमवथ यूयं भरतायार्वन्तं वाजं धत्थ यूयं श्रुष्टिमन्तं राजानं धत्थ॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सुसहायेन श्रीर्विद्वांसः सेना राजा च धर्त्तव्याः॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** पुरुषार्थी मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग **(स्पार्हवीरम्)** अभिकांक्षित वीर जिसमें उस **(रयिम्)** लक्ष्मी की **(अवथ)** रक्षा कीजिये और **(यूयम्)** आप लोग **(सामविप्रम्)** सामों में बुद्धिमान् **(ऋषिम्)** वेदार्थ के जानने वाले की रक्षा कीजिये और **(यूयम्)** आप लोग **(भरताय)** धारण और पोषण के लिये **(अर्वन्तम्)** प्राप्त होते हुए **(वाजम्)** वेग, अन्न और विज्ञान आदि को **(धत्थ)** धारण करो और **(यूयम्)** आप लोग **(श्रुष्टिमन्तम्)** अच्छा क्षिप्रकरण जिसमें उस **(राजानम्)** न्याय और विनय से प्रकाशमान को धारण कीजिये॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम सहाय से लक्ष्मी, विद्वान्, सेना और राजा को धारण करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तद्वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो येना स्व१र्ण ततनाम नॄँरभि।**

**इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः॥१५॥१६॥**

**तत्। वः। यामि। द्रविणम्। सद्यःऽऊतयः। येन। स्वः। न। ततनाम। नॄन्। अभि। इदम्। सु। मे। मरुतः। हर्यत। वचः। यस्य। तरेम। तरसा। शतम्। हिमाः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**वः**) युष्माकं सकाशात् (**यामि**) प्राप्नोमि (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**सद्यऊतयः**) क्षिप्राणि रक्षणादीनि येषां ते (**येना**) (**स्वः**) सुखम् (**न**) इव (**ततनाम**) विस्तीर्णीयाम (**नॄन्**) मनुष्यान् (**अभि**) (**इदम्**) (**सु**) (**मे**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**हर्यता**) कामयध्वम् (**वचः**) वचनम् (**यस्य**) (**तरेम**) (**तरसा**) बलेन (निघं०२.९) (**शतम्**) (**हिमाः**) वर्षाणि॥१५॥

**अन्वयः**-हे सद्यऊतयो मरुतो! वो यद्द्रविणमहं यामि तद्यूयं प्रयच्छत येना स्वर्ण नॄनभि ततनाम यूयमिदं मे वचो सु हर्यत यस्य तरसा वयं शतं हिमास्तरेम तेन यूयमपि तरत॥१५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तो यशो धनं सुखं सत्यं वचो बलं च वर्धयित्वा दुःखानि तरन्त्विति॥१५॥

अत्र सूर्य्यविद्युत्सुखगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःपञ्चाशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**सद्यऊतयः**) शीघ्र रक्षण आदि वाले (**मरुतः**) मनुष्यो (**वः**) आप लोगों के समीप से जिस (**द्रविणम्**) धन वा यश को (**यामि**) प्राप्त होता हूं (**तत्**) उसको आप लोग दीजिये (**येना**) जिससे (**स्वः**) सुख के (**न**) सदृश (**नॄन्**) मनुष्यों को (**अभि, ततनाम**) सब प्रकार विस्तृत करें और आप लोग (**इदम्**) इस (**मे**) मेरे (**वचः**) वचन को (**सु, हर्यता**) अच्छे प्रकार कामना करिये और (**यस्य**) जिसके (**तरसा**) बल से हम लोग (**शतम्**) सौ (**हिमाः**) वर्ष (**तरेम**) पार होवें, उससे आप लोग भी पार हूजिये॥१५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग यश, धन, सुख, सत्य, वचन और बल को बढ़ाय दुःखों के पार हूजिये॥१५॥

इस सूक्त में बिजुली और सुख के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौवनवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य पञ्चपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ५ जगती। २, ४, ७, ८ निचृज्जगती। ९ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ३ स्वराट् त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्। १० निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले पचपनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो बृहद्वयो दधिरे रुक्मवक्षसः।**

**ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ १॥**

**प्रऽयज्यवः। मरुतः। भ्राजत्ऽऋष्टयः। बृहत्। वयः। दधिरे। रुक्मऽवक्षसः। ईयन्ते। अश्वैः। सुऽयमेभिः। आशुऽभिः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रयज्यवः**) प्रकृष्टयज्यवः सङ्गन्तारो मनुष्याः (**मरुतः**) प्राणा इव वर्त्तमानाः (**भ्राजदृष्टयः**) भ्राजन्त ऋष्टयो विज्ञानानि येषान्ते (**बृहत्**) महत् (**वयः**) कमनीयं जीवनम् (**दधिरे**) दध्यासुः (**रुक्मवक्षसः**) रुक्माणि सुवर्णादियुक्तान्याभूषणानि [**वक्षःसु**] येषान्ते (**ईयन्ते**) प्राप्यन्ते (**अश्वैः**) आशुकारिभिः (**सुयमेभिः**) शोभना यमा येषु तैः (**आशुभिः**) सद्योऽभिगामिभिः (**शुभम्**) धर्म्यं व्यवहारम् (**याताम्**) गच्छताम् (**अनु**) (**रथाः**) रमणीया विमानादयः (**अवृत्सत**) वर्त्तन्ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यैरश्वैराशुभिः सुयमेभिर्जनैः शुभं यातां रथा ईयन्ते प्रयज्यवो भ्राजदृष्टयो रुक्मवक्षसो मरुतो बृहद्वयो दधिरे ये चान्ववृत्सत तैस्सह यूयमप्येवं प्रयतध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो ब्रह्मचर्यादिना चिरञ्जीविनो योगिनः पुरुषार्थिनः स्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिन (**अश्वैः**) शीघ्र करने वा (**आशुभिः**) शीघ्र जाने वाले (**सुयमेभिः**) सुन्दर यम इन्द्रियनिग्रह आदि जिनके उन जनों से (**शुभम्**) धर्मयुक्त व्यवहार को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) सुन्दर वाहन आदि (**ईयन्ते**) प्राप्त किये जाते हैं और (**प्रयज्यवः**) उत्तम मिलाने वाले मनुष्य (**भ्राजदृष्टयः**) शोभित होते हैं विज्ञान जिनके वे (**रुक्मवक्षसः**) सुवर्ण आदि से युक्त आभूषण [**वक्षःस्थलों पर**] जिनके वे (**मरुतः**) प्राणों के सदृश वर्त्तमान (**बृहत्**) बड़े (**वयः**) सुन्दर जीवन को (**दधिरे**) धारण करें और जो (**अनु**) पश्चात् (**अवृत्सत**) वर्त्तमान होते हैं, उनके साथ आप लोग भी इस प्रकार प्रयत्न कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग ब्रह्मचर्य आदि से अति काल पर्य्यन्त जीवन वाले योगी पुरुषार्थी होइये॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ।**

**उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥२॥**

**स्वयम्। दधिध्वे। तविषीम्। यथा। विद। बृहत्। महान्तः। उर्विया। वि। राजथ। उत। अन्तरिक्षम्। ममिरे। वि। ओजसा। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥२॥**

**पदार्थः**-(**स्वयम्**) (**दधिध्वे**) धरत (**तविषीम्**) बलेन युक्तां सेनाम् (**यथा**) (**विद**) विजानीत (**बृहत्**) महत् (**महान्तः**) महाशयाः (**उर्विया**) बहुना (**वि**) (**राजथ**) (**उत**) (**अन्तरिक्षम्**) आकाशम् (**ममिरे**) व्याप्नुवन्ति (**वि**) (**ओजसा**) बलेन (**शुभम्**) (**याताम्**) प्राप्नुताम् (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥२॥

**अन्वयः**-हे राजजना! यथा महान्तो यूयं तविषीं स्वयं दधिध्वे बृहद्विदोर्विया वि राजथ यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सतोताप्यन्तिक्षं वि ममिरे तथा यूयमोजसा विराजथ॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ब्रह्मचर्य्येण शरीरात्मबलं धृत्वा क्रियाकौशलं विज्ञाय यथेश्वरोऽन्तरिक्षे सर्वान् पदार्थान् सृजति तथैव यूयमनेकान् व्यवहारान् साध्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे राजजनो! (**यथा**) जैसे (**महान्तः**) गम्भीर आशय वाले आप लोग (**तविषीम्**) बल युक्त सेना को (**स्वयम्**) अपने से (**दधिध्वे**) धारण कीजिये और (**बृहत्**) बड़े को (**विद**) जानिये (**उर्विया**) बहुत से (**वि**) विशेष करके (**राजथ**) शोभित हूजिये और जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) अनुकूल वर्तमान हैं (**उत**) और (**अन्तरिक्षम्**) आकाश को (**वि**) विशेष करके (**ममिरे**) व्याप्त होते हैं, वैसे आप लोग (**ओजसा**) बल से (**वि**) विशेष करके (**राजथ**) शोभित हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! ब्रह्मचर्य्य से शरीर और आत्मा के बल को धारण करके और क्रियाकुशलता को जान के जैसे ईश्वर अन्तरिक्ष में सम्पूर्ण पदार्थों को उत्पन्न करता है, वैसे ही आप लोग अनेक व्यवहारों को सिद्ध कीजिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः।**

**विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥३॥**

**साकम्। जाताः। सुऽभ्वः। साकम्। उक्षिताः। श्रिये। चित्। आ। प्रऽतरम्। ववृधुः। नरः। विऽरोकिणः। सूर्य॑स्यऽइव। रश्मयः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥३॥**

**पदार्थः**-(**साकम्**) सह (**जाताः**) उत्पन्नाः (**सुभ्वः**) ये शोभना भवन्ति (**साकम्**) सह (**उक्षिताः**) सिक्ताः (**श्रिये**) शोभायै धनाय वा (**चित्**) अपि (**आ**) (**प्रतरम्**) प्रकर्षेण दुःखात्तारकं व्यवहारम् (**वावृधुः**) वर्धयन्तु (**नरः**) सत्यं नेतारः (**विरोकिणः**) विविधो रोको रुचिर्विद्यते येषु ते (**सूर्य्यस्येव**) (**रश्मयः**) किरणाः (**शुभम्**) कल्याणम् (**याताम्**) प्राप्नुवताम् (**अनु**) (**रथाः**) रमणीया यानादयः (**अवृत्सत**) वर्त्तन्ते॥३॥

**अन्वयः**-हे नरः! सूर्य्यस्येव साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिता विरोकिणो रश्मय प्रतरमा वावृधुस्तथा चित्सखायः सन्तः श्रिये प्रवृत्ता भवत यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तथा सर्वोपकारमनुवर्त्तध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं सूर्यस्य रश्मय इव सहैव पुरुषार्थाय समुपतिष्ठध्वम्। यथा कल्याणकारिणा रथाननु भृत्या वर्त्तन्ते तथैव धर्ममनुवर्त्तध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) सत्य को पहुंचाने वाले मनुष्यो! (**सूर्य्यस्येव**) सूर्य के जैसे (**साकम्**) एक साथ (**जाताः**) उत्पन्न और (**सुभ्वः**) शोभित (**साकम्**) साथ में (**उक्षिताः**) सींचे हुए (**विरोकिणः**) अनेक प्रकार की रुचि वर्त्तमान जिनमें वे (**रश्मयः**) किरण (**प्रतरम्**) अत्यन्त दुःख से पार करने वाले व्यवहार को (**आ**) सब प्रकार (**वावृधुः**) बढ़ावें वैसे (**चित्**) भी मित्र होते हुए (**श्रिये**) शोभा वा धन के लिये प्रवृत्त हूजिये और जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) सुन्दर वाहन आदि (**अनु, अवृत्सत**) पीछे वर्त्तमान हैं, वैसे सब के उपकार के पीछे वर्तिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग सूर्य्य की किरणों के सदृश एक साथ ही पुरुषार्थ के लिये उद्यत हूजिये और जैसे कल्याण करने वालों के रथों के पीछे भृत्यजन वर्त्तमान होते हैं, वैसे ही धर्म के पीछे वर्त्तमान हूजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम्।**

**उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥४॥**

**आऽभूषेण्यम्। वः। मरुतः। महिऽत्वनम्। दिदृक्षेण्यम्। सूर्यस्यऽइव। चक्षणम्। उतो इति। अस्मान्। अमृतऽत्वे। दधातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥४॥**

**पदार्थः**-(**आभूषेण्यम्**) अलङ्कर्त्तव्यम् (**वः**) युष्माकम् (**मरुतः**) प्राण इव प्रियाचरणाः (**महित्वनम्**) (**दिदृक्षेण्यम्**) द्रष्टुं योग्यम् (**सूर्यस्येव**) (**चक्षणम्**) प्रकाशनम् (**उतो**) अपि (**अस्मान्**)

**(अमृतत्वे)** अमृतानां नाशरहितानां पदार्थानां भावे वर्त्तमाने **(दधातन)** **(शुभम्)** धर्म्यं मार्गम् **(याताम्)** गच्छताम् **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! येषां वस्सूर्य्यस्येवाऽऽभूषेण्यं दिदृक्षेण्यं चक्षणं महित्वनमस्ति येनोतो अस्मानमृतत्वे दधातन येषां शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तान् वयं सततं सत्कुर्य्याम॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशका अन्यायान्धकारनिरोधका धर्मपथामनुगामिनः स्युस्तान् सदैव यूयं प्रशंसत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** प्राण के सदृश प्रिय आचरण करने वालो! जिन **(वः)** आप लोगों का **(सूर्य्यस्येव)** सूर्य्य के सदृश **(आभूषेण्यम्)** शोभा करने और **(दिदृक्षेण्यम्)** देखने को योग्य **(चक्षणम्)** प्रकाश **(महित्वनम्)** और बड़प्पन है जिससे **(उतो)** निश्चित **(अस्मान्)** हम लोगों को **(अमृतत्वे)** नाशरहित पदार्थों के भाव अर्थात् नित्यपन के वर्त्तमान होने पर **(दधातन)** धारण कीजिये और जिन **(शुभम्)** धर्मयुक्त मार्ग को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अनु, अवृत्सत)** अनुकूल वर्त्तमान हैं, उनका हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश न्याय के प्रकाशक, अन्यायरूपी अन्धकार के रोकने वाले, धर्ममार्ग के अनुगामी होवें, उनकी सदा ही आप लोग प्रशंसा करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उदी॑रयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं॑ वर्षयथा पुरीषिणः।**

**न वो॑ दस्रा उप॑ दस्यन्ति धेनवः॒ शुभं॑ यातामनु॒ रथा॑ अवृत्सत॥५॥१७॥**

उत्। ई॒र॒य॒थ॒। म॒रु॒तः॒। स॒मु॒द्र॒तः। यू॒यम्। वृ॒ष्टिम्। व॒र्ष॒य॒थ॒। पु॒री॒षि॒णः॒। न। वः॒। द॒स्राः॒। उप॑। द॒स्य॒न्ति॒। धे॒नवः॑। शुभ॑म्। या॒ताम्। अनु॑। रथाः॑। अ॒वृ॒त्स॒त॒॥५॥

**पदार्थः**-**(उत्)** उत्कृष्टे **(ईरयथा)** प्रेरयथ। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(मरुतः)** मनुष्याः **(समुद्रतः)** अन्तरिक्षात् **(यूयम्)** **(वृष्टिम्)** **(वर्षयथा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(पुरीषिणः)** पुरीषं बहुविधं पोषणं विद्यते येषु ते **(न)** **(वः)** युष्मान् **(दस्राः)** उपक्षेतारः **(उप)** **(दस्यन्ति)** क्षयन्ति **(धेनवः)** वाचः **(शुभम्)** **(याताम्)** **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरीषिणो मरुतो! यूयमस्मान् सत्कर्मसूदीरयथा यथा वायवः समुद्रतो वृष्टिं कुर्वन्ति तथा यूयं वर्षयथा यतो दस्रा धेनवो वो नोप दस्यन्ति यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तथा धर्ममार्गमनुवर्त्तध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा वायवोऽन्तरिक्षाद्वृष्टिं कृत्वा सर्वान् प्राणिनस्तर्पयित्वा दुःखक्षयं कुवन्ति तथैव सत्यविद्यापदेशवृष्ट्याऽविद्यान्धकारदुःखं निवारयन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे (**पुरीषिणः**) बहुत प्रकार का पोषण विद्यमान जिनमें वे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यूयम्**) आप लोग हम लोगों की श्रेष्ठकर्मों में (**उत्, ईरयथा**) प्रेरणा कीजिये और जैसे पवन (**समुद्रतः**) अन्तरिक्ष से (**वृष्टिम्**) वर्षा करते हैं, वैसे आप लोग (**वर्षयथा**) वर्षाइये जिससे (**दस्राः**) नाश होने वाले और (**धेनवः**) वाणियाँ (**वः**) आप लोगों को (**न**) नहीं (**उप, दस्यन्ति**) उपक्षय करते जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) अनुकूल वर्त्तते हैं, वैसे धर्ममार्ग का अनुकूल वर्त्ताव कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जैसे पवन अन्तरिक्ष से वृष्टि करके सम्पूर्ण प्राणियों को तृप्त करके दुःख का नाश करते हैं, वैसे ही सत्यविद्या के उपदेश की वृष्टि से अविद्यारूप अन्धकार से हुए दुःख का निवारण कीजिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यदश्वा॑न् धूर्षु पृष॑तीरयु॑ग्ध्वं हिर॒ण्यया॑न् प्रत्यत्काँ॒ अमु॑ग्ध्वम्।**
**विश्वा॒ इत्स्पृधो॑ मरुतो॒ व्य॑स्यथ॒ शुभं॑ यातामनु॒ रथा॑ अवृत्सत॥६॥**

**यत्। अश्वा॑न्। धूःऽसु। पृष॑तीः। अयु॑ग्ध्वम्। हिर॒ण्यया॑न्। प्रति॑। अत्का॑न्। अमु॑ग्ध्वम्। विश्वाः॑। इत्। स्पृधः॑। म॒रुतः॒। वि। अ॒स्य॒थ॒। शुभ॑म्। या॒ताम्। अनु॑। रथाः॑। अ॒वृ॒त्स॒त॒॥६॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यान् (**अश्वान्**) अग्न्यादीन् (**धूर्षु**) विमानादियानावयवकोष्ठेषु (**पृषतीः**) वायुजलगतीः (**अयुग्ध्वम्**) संयोजयत (**हिरण्ययान्**) ज्योतिर्मयान् (**प्रति**) (**अत्कान्**) व्यक्तान् (**अमुग्ध्वम्**) मुञ्चत (**विश्वाः**) समग्राः (**इत्**) एव (**स्पृधः**) याः स्पर्ध्यन्ते ताः स- इमा वा (**मरुतः**) वायुवद्वेगबलयुक्ताः (**वि**) विशेषेण (**अस्यथ**) प्रचालयत (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथा शुभ यातां रथा अन्ववृत्सत तथा धूर्षु यद्धिरण्ययान् प्रत्यत्कान् पृषतीरश्वान् यूयमयुग्ध्वममुग्ध्वम्। तैर्विश्वाः स्पृध इद् व्यस्यथ॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्निवायुजलादीन् यानेषु सम्प्रयुञ्जते ते विजयाय प्रभवो भूत्वा धर्म्यमार्गमनुगा जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) वायु के सदृश वेग और बल से युक्त जनो! जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) अनुकूल वर्त्तमान हैं, वैसे (**धूर्षु**) विमान आदि यानों के अवयव कोष्ठों में (**यत्**) जिन (**हिरण्ययान्**) ज्योतिर्मय (**प्रति, अत्कान्**) स्पष्ट (**पृषतीः**) वायु और जल के गमनों और (**अश्वान्**) अग्नि आदिकों को आप लोग (**अयुग्ध्वम्**) संयुक्त कीजिये और (**अमुग्ध्वम्**) त्यागिये, उनसे (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**स्पृधः**) स्पर्धायें, रोष (**इत्**) ही (**वि**) विशेष करके (**अस्यथ**) चलाइये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि, वायु और जल आदिकों को वाहनों में उत्तम प्रकार युक्त करते हैं, वे विजय के लिये समर्थ होकर धर्मसम्बन्धी मार्ग के अनुगामी होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत्।**

**उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥७॥**

**न। पर्वताः। न। नद्यः। वरन्त। वः। यत्र। अचिध्वम्। मरुतः। गच्छथ। इत्। ऊँ इति। तत्। उत। द्यावापृथिवी इति। याथन। परि। शुभम्। यताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥७॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**पर्वताः**) मेघाः (**न**) (**नद्यः**) (**वरन्त**) वारयन्ति (**वः**) (**यत्र**) (**अचिध्वम्**) प्राप्नुत गच्छथ (**मरुतः**) मनुष्याः (**गच्छथ**) (**इत्**) एव (**उ**) (**तत्**) (**उत**) अपि (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**याथना**) प्राप्नुत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**परि**) सर्वतः (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥७॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं द्यावापृथिवी गच्छथेत्तदु परि याथन। उत यत्राऽचिध्वं यथा शुभं यातां रथान्ववृत्सत तत्रानुवर्त्तध्वम् यथा सूर्य्यस्य न पर्वता न नद्यो वरन्त तथा वो युष्मान् केऽपि रोद्धुं न शक्नुवन्ति॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पृथिव्यादिविद्यया सृष्टिक्रमतः कार्य्याणि साधयेयुस्तान् दारिद्र्यं कदाचिन्नाप्नुयात्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! आप लोग (**द्यावापृथिवी**) प्रकाश और भूमि को (**गच्छथ, इत्**) प्राप्त ही हूजिये (**तत्**) उनको (**उ**) और भी (**परि, याथना**) सब ओर से प्राप्त हूजिये (**उत**) और (**यत्र**) जहाँ (**अचिध्वम्**) प्राप्त हूजिये और जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) पश्चात् वर्त्तमान है, यहाँ वर्त्तमान हूजिये और जैसे सूर्य्य के सम्बन्ध को (**न**) न (**पर्वताः**) मेघ (**न**) न (**नद्यः**) नदियां (**वरन्त**) वारण करती हैं, वैसे (**वः**) आप लोगों को कोई भी रोक नहीं सकते हैं॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पृथिवी आदि की विद्या से तथा सृष्टि के क्रम से कार्य्यों को सिद्ध करें, उनको दारिद्र्य कभी प्राप्त नहीं होवे॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते।**

**विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥८॥**

**यत्। पूर्व्यम्। मरुतः। यत्। च। नूतनम्। यत्। उद्यते। वसवः। यत्। च। शस्यते। विश्वस्य। तस्य। भवथ। नवेदसः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥८॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**पूर्व्यम्**) पूर्वैर्विद्वद्भिर्निष्पादितम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**यत्**) (**च**) (**नूतनम्**) नवीनम् (**यत्**) (**उद्यते**) कथ्यते (**वसवः**) वासकर्त्तारः (**यत्**) (**च**) (**शस्यते**) स्तूयते (**विश्वस्य**) समग्रस्य संसारस्य (**तस्य**) (**भवथा**) (**नवेदसः**) न विद्यते वेदो वित्तं येषान्ते (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥८॥

**अन्वयः**-हे वसवो नवेदसो मरुतो! यत्पूर्व्यं यन्नूतनं यच्चोद्यते यच्च शस्यते तस्य विश्वस्य तथा रक्षितारो भवथा। यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत॥८॥

**भावार्थः**-ये शिक्षया विद्यादण्डेन जगद्रक्षन्ति त एव प्रशंसिता भूत्वा कल्याणमुपगच्छन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वसवः**) वास करानेवाले! (**नवेदसः**) नहीं विद्यमान धन जिनके वे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यत्**) जो (**पूर्व्यम्**) प्राचीन विद्वानों से निष्पन्न किया हुआ (**यत्**) जो (**नूतनम्**) नवीन (**यत्, च**) जो (**उद्यते**) कहा जाता है (**यत्, च**) और जो (**शस्यते**) स्तुत किया जाता है (**तस्य**) उस (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण संसार की वैसे रक्षा करने वाले (**भवथा**) हूजिये जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) वर्त्तमान होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो शिक्षा और विद्या के दण्ड से संसार की रक्षा करते हैं, वे ही प्रशंसित होकर कल्याण को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनास्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन।**
**अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥९॥**

**मृळत। नः। मरुतः। मा। वधिष्टन। अस्मभ्यम्। शर्म। बहुलम्। वि। यन्तन। अधि। स्तोत्रस्य। सख्यस्य। गातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥९॥**

**पदार्थः**-(**मृळत**) सुखयत (**नः**) अस्मान् (**मरुतः**) विद्वांसः (**मा**) (**वधिष्टन**) (**अस्मभ्यम्**) (**शर्म**) सुखं गृहं वा (**बहुलम्**) (**वि**) (**यन्तन**) वियच्छत (**अधि**) (**स्तोत्रस्य**) प्रशंसितस्य (**सख्यस्य**) सख्युर्भावस्य (**गातन**) प्रशंसत (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥९॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं नो मृळत मा वधिष्टनास्मभ्यं बहुलं शर्म वि यन्तनाधि स्तोत्रस्य सख्यस्य शुभं गातन ये यातां रथा अवृत्सत ताननु गच्छथ॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वद्भ्यः प्रार्थयित्वा शुभा गुणा ग्राह्याः सर्वत्र मैत्रीं भावयित्वा सर्वार्थं सुखमनुगम्येत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विद्वानो! आप लोग **(न)** हम लोगों को **(मृळत)** सुखी करिये किन्तु **(मा)** मत **(वधिष्टन)** नष्ट करिये और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(बहुलम्)** बहुत **(शर्म)** सुख वा गृह **(वि, यन्तन)** विशेष करके दीजिये और **(अधि, स्तोत्रस्य)** अधिक प्रशंसित **(सख्यस्य)** मित्रपने के **(शुभम्)** सुख की **(गातन)** प्रशंसा करिये और जो **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अवृत्सत)** वर्त्तमान हैं, उनके **(अनु)** अनुगामी हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों से प्रार्थना करके श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करें और सब जगह मित्रता करके सब के लिये सुख प्राप्त कराया जावे॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यूयमस्मान्नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः।**

**जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥१०॥१८॥**

**यूयम्। अस्मान्। नयत। वस्यः। अच्छ। निः। अंहतिऽभ्यः। मरुतः। गृणानाः। जुषध्वम्। नः। हव्यऽदातिम्। यजत्राः। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यूयम्)** **(अस्मान्)** **(नयत)** **(वस्यः)** वसीयसोऽतिधनाढ्यान् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(निः)** नितराम् **(अंहतिभ्यः)** **(मरुतः)** विद्वांसो मनुष्याः **(गृणानाः)** स्तुवन्तः **(जुषध्वम्)** सेवध्वम् **(नः)** अस्मान् **(हव्यदातिम्)** दातव्यदानम् **(यजत्राः)** सङ्गन्तारः **(वयम्)** **(स्याम)** भवेम **(पतयः)** पालकाः **(रयीणाम्)** धनानाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे गृणाना मरुतो! यूयं वस्योऽस्मान् रक्षतांहतिभ्यः पृथगच्छा निर्नयत नोऽस्मान् जुषध्वम्। हे यजत्रा! नो हव्यदातिं नयत यतो वयं रयीणां पतयः स्याम॥१०॥

**भावार्थः**-जिज्ञासवो विदुषां प्रार्थनामेवं कुर्युर्भवन्तोऽस्मान् दुष्टाचारात् पृथक्कृत्य धर्म्यं पन्थानं प्रापयन्तु॥१०॥

अत्र मरुद्विद्वदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(गृणानाः)** स्तुति करते हुए **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग **(वस्यः)** अति धन से युक्त **(अस्मान्)** हम लोगों की रक्षा कीजिये और **(अंहतिभ्यः)** मारते हैं जिनसे उन अस्त्रों से पृथक् **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(निः, नयत)** निरन्तर पहुंचाइये और **(नः)** हम लोगों की **(जुषध्वम्)** सेवा करिये। और हे **(यजत्राः)** मिलने वाले जनो! हम लोगों के लिये **(हव्यदातिम्)** देने योग्य दान को

प्राप्त कराइये जिससे **(वयम्)** हम लोग **(रयीणाम्)** धनों के **(पतयः)** पालन करने वाले **(स्याम)** होवें॥१०॥

**भावार्थः**-जिज्ञासुजन विद्वानों की प्रार्थना इस प्रकार करें कि आप लोग हम लोगों को दुष्ट आचरण से अलग करके धर्मयुक्त मार्ग को प्राप्त कराइये॥१०॥

इस सूक्त में मरुत नाम से विद्वान् आदि के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पचपनवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ नवर्चस्य षट्पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, २, ६ निचृद्बृहती। ४ विराड्बृहती। ८, ९ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ३ विराट्पङ्क्तिः। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

*अथ विद्वदुपदेशेन मनुष्यगुणान् वायुगुणान् विदित्वा पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥*

विद्वानों के उपदेश से मनुष्य और वायु के गुणों को जानकर फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॒ शर्ध॑न्त॒मा ग॒णं पि॒ष्टं रु॒क्मेभि॑र॒ञ्जिभि॑ः।**
**विशो॑ अ॒द्य म॒रुता॒मव॑ ह्वये दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादधि॑॥१॥**

**अग्ने॑। शर्ध॑न्तम्। आ। ग॒णम्। पि॒ष्टम्। रु॒क्मेभि॑ः। अ॒ञ्जिऽभि॑ः। विशः॑। अ॒द्य। म॒रुता॑म्। अव॑। ह्व॒ये॒। दि॒वः। चि॒त्। रो॒च॒नात्। अधि॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**शर्धन्तम्**) बलवन्तम् (**आ**) समन्तात् (**गणम्**) समूहम् (**पिष्टम्**) अवयवीभूतम् (**रुक्मेभिः**) रोचमानैः सुवर्णादिभिर्वा (**अञ्जिभिः**) कमनीयैः (**विशः**) (**अद्य**) (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**अव**) (**ह्वये**) शब्दयेयम् (**दिवः**) प्रकाशमानात् (**चित्**) अपि (**रोचनात्**) रुचिविषयात् (**अधि**) उपरिभावे॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथाऽहं रुक्मेभिरञ्जिभिर्मरुतां पिष्टं शर्धन्तं गणमाह्वयेऽद्य दिवो रोचनाच्चिद्विशोऽध्यव ह्वये तथा त्वमप्याचर॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपालङ्कारः। ये पुरुषा वायूनां मनुष्याणाञ्च गुणान् जानन्ति ते सत्कर्त्तारो भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जैसे मैं (**रुक्मेभिः**) प्रकाशमान सुवर्ण आदि वा (**अञ्जिभिः**) सुन्दर पदार्थों से (**मरुताम्**) मनुष्यों के (**पिष्टम्**) अवयवीभूत (**शर्धन्तम्**) बलवान् (**गणम्**) समूह को (**आ**) सब ओर से (**ह्वये**) पुकारता हूँ और (**अद्य**) आज (**दिवः**) प्रकाशमान (**रोचनात्**) प्रीति के विषय से (**चित्**) भी (**विशः**) मनुष्यों को (**अधि**) ऊपर के भाव में (**अव**) अत्यन्त पुकारता हूँ, वैसे आप भी आचरण करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य वायु और मनुष्यों के गुणों को जानते हैं, वे सत्कार करने वाले होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यथा॑ चि॒न्मन्य॑से हृ॒दा तदिन्मे॑ जग्मुरा॒शस॑:।**

**ये त॒ नेदि॑ष्ठं॒ हव॑नान्या॒गम॒न् तान् व॑र्ध भी॒मस॑न्दृशः॥ २॥**

यथा॑। चि॒त्। मन्य॑से। हृ॒दा। तत्। इत्। मे॒। ज॒ग्मु॒:। आ॒ऽशस॑:। ये। ते॒। नेदि॑ष्ठम्। हव॑नानि। आ॒ऽगम॑न्। तान्। व॒र्ध॒। भी॒मऽस॑न्दृशः॥ २॥

**पदार्थः**-(**यथा**) येन प्रकारेण (**चित्**) अपि (**मन्यसे**) (**हृदा**) हृदयेन (**तत्**) (**इत्**) एव (**मे**) मह्यम् (**जग्मुः**) प्राप्नुवन्ति (**आशसः**) ये आशंसन्ति ते (**ये**) (**ते**) तुभ्यम् (**नेदिष्ठम्**) अतिशयेनान्तिकम् (**हवनानि**) दातुं ग्रहीतुं योग्यानि वस्तूनि (**आगमन्**) आगच्छन्तु (**तान्**) (**वर्ध**) वर्धय (**भीमसन्दृशः**) भीमं भयङ्करं सन् दृग्दर्शनं येषान्ते॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! ये ते नेदिष्ठमाशसो जग्मुस्ताँस्त्वं वर्ध। यथा चित् त्वं हृदा मे तन्मन्यसे तथा हवनान्यागमन्। भीमसन्दृश इज्जग्मुः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्याः परस्परस्योपकारेण सुखिनो भवन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! (**ये**) जो (**ते**) आपके लिये (**नेदिष्ठम्**) अत्यन्त सामीप्य को (**आशसः**) कहने वाले (**जग्मुः**) प्राप्त होते हैं (**तान्**) उनकी आप (**वर्ध**) वृद्धि करिये और (**यथा, चित्**) जिसी प्रकार से आप (**हृदा**) हृदय से (**मे**) मेरे लिये (**तत्**) उसको (**मन्यसे**) मानते हो, उस प्रकार (**हवनानि**) देने-लेने योग्य वस्तुयें (**आगमन्**) प्राप्त होवें और (**भीमसन्दृशः**) भयङ्कर दर्शन जिनका वे (**इत्**) ही प्राप्त होते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य लोग परस्पर के उपकार से सुखी हों॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मी॒ळ्हुष्म॑तीव पृथि॒वी परा॑हता॒ मद॑न्त्येत्य॒स्मदा।**

**ऋक्षो॒ न वो॑ मरुतः॒ शिमी॑वाँ॒ अमो॑ दु॒ध्रो गौरि॑व भी॒म॒युः॥ ३॥**

मी॒ळ्हुष्म॑तीऽइव। पृ॒थि॒वी। परा॑ऽहता। मद॑न्ती। ए॒ति॒। अ॒स्मत्। आ। ऋक्ष॑:। न। वः॒। म॒रु॒तः॒। शिमी॑ऽवान्। अम॑:। दु॒ध्रः। गौ॒ऽइ॑व। भी॒म॒ऽयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-(**मीळ्हुष्मतीव**) मीढुः सेक्ता वीर्यप्रदः प्रशस्तः पतिर्विद्यते यस्यास्तत् (**पृथिवी**) भूमिः (**पराहता**) दूरं प्राप्ता (**मदन्ती**) हर्षन्ती (**एति**) प्राप्नोति (**अस्मत्**) (**आ**) (**ऋक्षः**) पशुविशेषः (**न**) इव (**वः**) युष्मान् (**मरुतः**) मनुष्याः (**शिमीवान्**) प्रशस्तकर्मवान् (**अमः**) गृहम् (**दुध्रः**) दुःखेन धर्त्तुं योग्यः (**गौरिव**) आदित्य इव (**भीमयुः**) यो भीमं भयङ्करं योद्धारं याति सः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथाः वः पृथिवी मीळ्हुष्मतीवास्मत् पराहता मदन्ती वर्त्तते तां शिमीवानृक्षो नैति

गौरिव भीमयुर्दुध्रोऽम एति तथा यूयमप्याचरत॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। ये यतमाना: कर्माणि कुर्वन्ति ते सदा सुखिनो भवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुत:)** मनुष्यो! जैसे **(व:)** आप लोगों को **(पृथिवी)** भूमि **(मीळ्हुष्मतीव)** वीर्य्य का देने वाला सुन्दर स्वामी जिसका उसके समान **(अस्मत्)** हम लोगों से **(पराहता)** दूर को प्राप्त **(मदन्ती)** प्रसन्न होती हुई वर्त्तमान है, उसको **(शिमीवान्)** अच्छे कर्म्मों वाला **(ऋक्ष:)** पशुविशेष के **(न)** समान **(आ, एति)** प्राप्त होता तथा **(गौरिव)** सूर्य्य के सदृश **(भीमयु:)** भयङ्कर युद्ध करने वाले को प्राप्त होने वाला **(दुध्र:)** दु:ख से धारण करने योग्य पुरुष **(अम:)** गृह को प्राप्त होता है, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो प्रयत्न करते हुए कर्म्मों को करते हैं, वे सदा सुखी होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुर:।**

**अश्मानं चित्स्वर्यं१ पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभि:॥४॥**

**नि। ये। रिणन्ति। ओजसा। वृथा। गाव:। न। दु:ऽधुर:। अश्मानम्। चित्। स्वर्यम्। पर्वतम्। गिरिम्। प्र। च्यावयन्ति। यामऽभि:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(नि)** **(ये)** **(रिणन्ति)** प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा **(ओजसा)** पराक्रमेण **(वृथा)** **(गाव:)** **(न)** इव **(दुर्धुर:)** दुर्गता धुरो येषान्ते **(अश्मानम्)** मेघम् **(चित्)** अपि **(स्वर्यम्)** स्वरेषु शब्देषु साधुम् **(पर्वतम्)** पर्वतमिवोच्छ्रितं **(गिरिम्)** यो गृणाति शब्दयति तम् **(प्र)** **(च्यावयन्ति)** निपातयन्ति **(यामभि:)** प्रहरै:॥४॥

**अन्वय:**-ये मनुष्या ओजसा नि रिणन्ति ये चिदपि यामभि: स्वर्यं पर्वतं गिरिमश्मानं दुर्धुरो न प्र च्यावयन्ति वृथा गावो न भवन्ति ते सर्वै: सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यथा सूर्यकिरणा: मेघमध: पातयन्ति तथा विद्वांसो दोषन्निपातयन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-**(ये)** जो मनुष्य **(ओजसा)** पराक्रम से **(नि, रिणन्ति)** प्राप्त होते हैं **(चित्)** और जो **(यामभि:)** प्रहरों से **(स्वर्यम्)** शब्दों में श्रेष्ठ **(पर्वतम्)** पर्वत के सदृश ऊँचे **(गिरिम्)** शब्द कराने वाले **(अश्मानम्)** मेघ को **(दुर्धुर:)** दूरगत हैं धुरा जिनकी उनके **(न)** समान **(प्र, च्यावयन्ति)** गिराते हैं और **(वृथा)** व्यर्थ निज अर्थ के विना **(गाव:)** गौओं के सदृश होते हैं, वे सब से सत्कार करने योग्य होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य की किरणें मेघ को नीचे गिराती हैं, वैसे विद्वान् लोग दोषों को दूर करते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत्तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम्।**

**मरुतां पुरुतममपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये॥५॥१९॥**

**उत्। तिष्ठ। नूनम्। एषाम्। स्तोमैः। सम्ऽउक्षितानाम्। मरुताम्। पुरुऽतमम्। अपूर्व्यम्। गवाम्। सर्गम्ऽइव। ह्वये॥५॥**

**पदार्थ:**-**(उत्) (तिष्ठ)** ऊद्‌र्ध्वं गच्छ **(नूनम्)** निश्चयेन **(एषाम्) (स्तोमैः)** प्रशंसाभिः **(समुक्षितानाम्)** सम्यक् सेक्तॄणाम् **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(पुरुतमम्)** बहुतमम् **(अपूर्व्यम्)** अपूर्वे भवम् **(गवाम्)** धेनूनाम् **(सर्गमिव)** उदकमिव **(ह्वये)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाहं गवां सर्गमिव पुरुतममपूर्व्यं ह्वये तथैषां समुक्षितानां मरुतां स्तोमैर्नूनमुत्तिष्ठ॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैः सृष्टिक्रमं विज्ञाय सर्वानन्द आप्तव्यः॥५॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान्! जैसे मैं **(गवाम्)** गौओं के **(सर्गमिव)** जल के सदृश **(पुरुतमम्)** अत्यन्त बहुत **(अपूर्व्यम्)** अपूर्व में हुए को **(ह्वये)** पुकारता हूँ वैसे **(एषाम्)** इन **(समुक्षितानाम्)** उत्तम प्रकार से सींचने वाले **(मरुताम्)** मनुष्यों की **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से **(नूनम्)** निश्चय से **(उत्, तिष्ठ)** ऊपर पहुँचिये॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि सृष्टि के क्रम को जानकर सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त हों॥५॥

**अथाग्निविद्योपदेशमाह॥**

अब अग्निविद्या के उपदेश को कहते हैं॥

**युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।**

**युङ्ग्ध्वं हरी आजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे॥६॥**

**युङ्ग्ध्वम्। हि। अरुषीः। रथे। युङ्ग्ध्वम्। रथेषु। रोहितः। युङ्ग्ध्वम्। हरी इति। अजिरा। धुरि। वोळ्हवे। वहिष्ठा। धुरि। वोळ्हवे॥६॥**

**पदार्थ:**-**(युङ्ग्ध्वम्)** संयोजयत **(हि)** खलु **(अरुषीः)** रक्तगुणविशिष्टाः वडवा इव ज्वालाः **(रथे) (युङ्ध्वम्) (रथेषु) (रोहितः)** रक्तगुणविशिष्टान् **(युङ्ग्ध्वम्) (हरी)** धारणाकर्षणाख्यौ **(अजिरा)**

गन्तारौ **(धुरि)** **(वोळ्हवे)** वहनाय **(वहिष्ठा)** अतिशयेन वोढारः **(धुरि)** **(वोळ्हवे)** स्थानान्तरं प्रापणाय॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः शिल्पिनो! यूयं रथेऽरुषीर्युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितो युङ्ग्ध्वं धुरि वोळ्हवेऽजिरा हरी धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा ह्यग्निवायू युङ्ध्वम्॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरग्न्यादिपदार्था यानादिवहनाय नियोजनीयाः॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् कारीगरो! आप लोग **(रथे)** वाहन में **(अरुषीः)** रक्तगुणों में विशिष्ट घोड़ियों के सदृश ज्वालाओं को **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिये **(रथेषु)** रथों में **(रोहितः)** लाल गुण वाले पदार्थों को और **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिये और **(धुरि)** अग्रभाग में **(वोळ्हवे)** प्राप्त करने के लिये **(अजिरा)** जाने वाले **(हरी)** धारण और आकर्षण को तथा **(धुरि)** अग्रभाग में **(वोळ्हवे)** स्थानान्तर में प्राप्त होने के लिये **(वहिष्ठा)** अत्यन्त पहुँचाने वाले **(हि)** निश्चय अग्नि और पवन को **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिए॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि अग्नि आदि पदार्थों को वाहन आदि के चलाने के लिए निरन्तर युक्त करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्वणिरिह स्म धायि दर्शतः।**

**मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत्प्र तं रथेषु चोदत॥७॥**

**उत। स्यः। वाजी। अरुषः। तुविऽस्वनिः। इह। स्म। धायि। दर्शतः। मा। वः। यामेषु। मरुतः। चिरम्। करत्। प्र। तम्। रथेषु। चोदत॥७॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(स्यः)** सः **(वाजी)** वेगवान् **(अरुषः)** मर्मणः **(तुविष्वणिः)** बलसेवी **(इह)** अस्मिन् **(स्म)** **(धायि)** ध्रियते **(दर्शतः)** द्रष्टव्यः **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(यामेषु)** यमादियुक्तशुभव्यवहारेषु प्रहरेषु वा **(मरुतः)** मानवाः **(चिरम्)** **(करत्)** कुर्यात् **(प्र)** **(तम्)** **(रथेषु)** **(चोदत)**॥७॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो वाजी इहाऽरुषस्तुविष्वणिर्दर्शतो धायि स्यो यामेषु वश्चिरं मा स्म करत्तमुत रथेषु प्र चोदत प्रेरयत॥७॥

**भावार्थः**-येऽग्निविद्यां धरन्ति तान् सर्वदा सत्कुरुत॥७॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! जो **(वाजी)** वेगवान् **(इह)** इस में **(अरुषः)** मर्मस्थल के **(तुविष्वणिः)** बल का सेवी **(दर्शतः)** देखने योग्य **(धायि)** धारण किया जाता है **(स्यः)** वह **(यामेषु)** यम आदि से युक्त उत्तम व्यवहारों वा प्रहरों में **(वः)** आप लोगों को **(चिरम्)** बहुत कालपर्य्यन्त **(मा)** मत **(स्म)** ही **(करत्)** करे अर्थात् न निषेध करे **(तम्, उत)** उसी को **(रथेषु)** रथों में **(प्र, चोदत)** प्रेरित करो॥७॥

**भावार्थः**-जो अग्निविद्या को धारण करते हैं, उनका सब समय में सत्कार करो॥७॥

**पुनर्वायुगुणानाह॥**

फिर वायुगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे।**

**आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी॥८॥**

रथम्। नु। मारुतम्। वयम्। श्रवस्युम्। आ। हुवामहे। आ। यस्मिन्। तस्थौ। सुऽरणानि। बिभ्रती। सचा। मरुत्ऽसु। रोदसी॥८॥

**पदार्थः**-(**रथम्**) विमानादियानम् (**नु**) सद्यः (**मारुतम्**) मनुष्यवायुसम्बन्धिनम् (**वयम्**) (**श्रवस्युम्**) आत्मनः श्रव इच्छुम् (**आ**) (**हुवामहे**) स्पर्धामहे (**आ**) (**यस्मिन्**) (**तस्थौ**) (**सुरणानि**) सुष्ठु रमणीयानि (**बिभ्रती**) धरन्त्यौ (**सचा**) सम्बुद्धौ (**मरुत्सु**) वायुषु (**रोदसी**) भूमिसूर्य्यौ॥८॥

**अन्वयः**-यस्मिन् सुरणानि सन्ति वीर आ तस्थौ यत्र मरुत्सु सुरणानि बिभ्रती सचा रोदसी वर्त्तेते तं मारुतं श्रवस्युं रथं नु वयमा हुवामहे॥८॥

**भावार्थः**-यथा वायवो भूम्यादिकं धरन्ति तथैव विद्वांसः सर्वान् मनुष्यान् धरन्तु॥८॥

**पदार्थः**-(**यस्मिन्**) जिसमें (**सुरणानि**) सुन्दर रमण करने योग्य पदार्थ हैं और वीर (**आ**) सब प्रकार से (**तस्थौ**) स्थिर हैं तथा जिसमें (**मरुत्सु**) पवनों में सुन्दर पदार्थों को (**बिभ्रती**) धारण करते हुए (**सचा**) सम्बन्ध रखने वाले (**रोदसी**) पृथिवी और सूर्य्य वर्त्तमान हैं उस (**मारुतम्**) मनुष्य और वायुसम्बन्धी (**श्रवस्युम्**) अपनी श्रवण की इच्छा करने वाले की और (**रथम्**) विमान आदि वाहन की (**नु**) शीघ्र (**वयम्**) हम लोग (**आ, हुवामहे**) स्पर्द्धा करें॥८॥

**भावार्थः**-जैसे पवन भूमि आदि को धारण करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन सब मनुष्यों को धारण करें॥८॥

**पुनर्विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

फिर विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

**तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे।**

**यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळ्हुषी॥९॥२०॥४॥**

तम्। वः। शर्धम्। रथेऽशुभम्। त्वेषम्। पनस्युम्। आ। हुवे। यस्मिन्। सुऽजाता। सुऽभगा। महीयते। सचा। मरुत्ऽसु। मीळ्हुषी॥९॥

**पदार्थः**-(**तम्**) (**वः**) युष्माकम् (**शर्धम्**) बलयुक्तम् (**रथेशुभम्**) यो रथे शुम्भते तम् (**त्वेषम्**) देदीप्यमानम् (**पनस्युम्**) आत्मनः पनः स्तवनमिच्छुम् (**आ**) (**हुवे**) (**यस्मिन्**) कुले (**सुजाता**) सम्यक्

प्रसिद्धा **(सुभगा)** सौभाग्ययुक्ता **(महीयते)** सत्क्रियते **(सचा)** समवेता **(मरुत्सु)** मनुष्येषु **(मीळ्हुषी)** सेचनकर्त्री॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्मिन् सुजाता सुभगा सचा मीळ्हुषी मरुत्सु महीयते यमियमाप्नोति तं पनस्युमा हुवे तं वो रथेशुभं त्वेषं शर्धमा हुवे॥९॥

**भावार्थः**-यस्मिन् कुले कृतब्रह्मचर्याः स्त्रीपुरुषा वर्त्तन्ते तदेव कुलं भाग्यशालि मन्तव्यमिति॥९॥

अत्र विद्वद्वायुगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गः [चतुर्थोऽनुवाकश्च] समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्मिन्)** जिस कुल में **(सुजाता)** उत्तम प्रकार प्रसिद्ध **(सुभगा)** सौभाग्य से युक्त **(सचा)** सम्बद्ध **(मीळ्हुषी)** सेचन करने वाली **(मरुत्सु)** मनुष्यों में **(महीयते)** सत्कार की जाती और जिसको सेवन करने वाली प्राप्त होती है **(तम्)** उस **(पनस्युम्)** अपनी स्तुति की इच्छा करते हुए को **(आ, हुवे)** बुलाता हूँ, उसको **(वः)** आप लोगों के **(रथेशुभम्)** रथ के द्वारा कहते हुए **(त्वेषम्)** प्रकाशमान **(शर्धम्)** बलयुक्त को पुकारता हूँ॥९॥

**भावार्थः**-जिस कुल में किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री और पुरुष वर्त्तमान हैं, उसी कुल को भाग्यशाली जानना चाहिये॥९॥

इस सूक्त में विद्वान् तथा वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छप्पनवां सूक्त और बीसवां वर्ग [चतुर्थ अनुवाक] समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य सप्तपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४, ५ जगती। २, ६ विराड् जगती। ३ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ विराट् त्रिष्टुप्। ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ रुद्रगुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले सत्तावन सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में रुद्रगुणों को कहते हैं॥

**आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन।**
**इयं वो अस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे॥१॥**

आ। रुद्रासः। इन्द्रऽवन्तः। सऽजोषसः। हिरण्यऽरथाः। सुविताय। गन्तन। इयम्। वः। अस्मत्। प्रति। हर्यते। मतिः। तृष्णऽजे। न। दिवः। उत्साः। उदन्यवे॥१॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**रुद्रासः**) दुष्टानां रोदयितारः (**इन्द्रवन्तः**) बह्विन्द्र ऐश्वर्य्यं विद्यन्ते येषान्ते (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेविनः (**हिरण्यरथाः**) हिरण्यं सुवर्णं रथेषु येषान्ते यद्वा हिरण्यं तेज इव रथा येषान्ते (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**गन्तन**) गच्छथ (**इयम्**) (**वः**) युष्मान् (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**प्रति**) (**हर्यते**) कामयते (**मतिः**) प्रज्ञा (**तृष्णजे**) यः तृष्णाति तस्मै (**न**) इव (**दिवः**) दिवः कामनाः (**उत्साः**) कूपाः (**उदन्यवे**) उदकानीच्छवे॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा हिरण्यरथा सजोषस इन्द्रवन्तो रुद्रासः सुवितायाऽऽगन्तन। येयमस्मन्मतिः सा वः प्रति हर्यते तृष्णज उदन्यव उत्सा न ये दिवः कामयन्ते तेऽस्माभिः सततं सत्कर्त्तव्याः॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा तृषातुराय जलं शान्तिकरं भवति तथा विद्वांसो जिज्ञासुभ्यः शान्तिप्रदा भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**हिरण्यरथाः**) सुवर्ण रथों में जिनके अथवा तेज के सदृश रथ जिनके वे (**सजोषसः**) समान प्रीति सेवने और (**इन्द्रवन्तः**) बहुत ऐश्वर्य्य रखने और (**रुद्रासः**) दुष्टों को रुलाने वाले (**सुविताय**) ऐश्वर्य्य के लिए (**आ**) सब और (**गन्तन**) प्राप्त होवें और जो (**इयम्**) यह (**अस्मत्**) हम लोगों के समीप से (**मतिः**) बुद्धि है वह (**वः**) आप लोगों की (**प्रति, हर्यते**) कामना करती है और (**तृष्णजे**) तृष्णायुक्त (**उदन्यवे**) जल की इच्छा करने वाले के लिए (**उत्साः**) कूप (**न**) जैसे वैसे जो (**दिवः**) कामनाओं की कामना करते हैं, वे हम लोगों से निरन्तर सत्कार करने योग्य हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पिपासा से व्याकुल के लिये जल शान्तिकारक होता है, वैसे विद्वान् जन जानने की इच्छा करने वालों के लिए शान्ति के देने वाले होते हैं॥१॥

**अथ मरुद्गुणानाह॥**

अब पवनों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।**
**स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्॥२॥**

**वाशीऽमन्तः। ऋष्टिऽमन्तः। मनीषिणः। सुऽधन्वानः। इषुऽमन्तः। निषङ्गिणः। सुऽअश्वाः। स्थ। सुऽरथाः। पृश्निऽमातरः। सुऽआयुधाः। मरुतः। याथन। शुभम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**वाशीमन्तः**) प्रशस्ता वाग् विद्यते येषान्ते (**ऋष्टिमन्तः**) ज्ञानवन्तः (**मनीषिणः**) मनसा ईषिणः (**सुधन्वानः**) शोभनं धनुर्येषान्ते (**इषुमन्तः**) वाणवन्तः (**निषङ्गिणः**) निषङ्गाः प्रशस्ता असयादयो येषान्ते (**स्वश्वाः**) उत्तमाश्वाः (**स्थ**) भवथ (**सुरथाः**) शोभना रथा येषान्ते (**पृश्निमातरः**) पृश्निरन्तरिक्षं मातेव येषान्ते (**स्वायुधाः**) शोभनान्यायुधानि येषान्ते (**मरुतः**) सुशिक्षिता मानवाः (**याथना**) गच्छथ। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**शुभम्**) कल्याणं स- ग्रामं वा॥२॥

**अन्वयः**-हे पृश्निमातरो मरुतो! यूयं वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणस्सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः स्वश्वाः स्वायुधाः सुरथाश्च स्थ शुभं याथना॥२॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्यादिशुभान् गुणान् गृहीत्वा सदैव विजयेन युक्तैर्भवितव्यम्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**पृश्निमातरः**) अन्तरिक्ष माता के सदृश जिनका ऐसे (**मरुतः**) उत्तम प्रकार शिक्षित जनो! आप लोग (**वाशीमन्तः**) उत्तम वाणी जिनकी वा जो (**ऋष्टिमन्तः**) ज्ञान वाले (**मनीषिणः**) वा मन की इच्छा करने वाले (**सुधन्वानः**) सुन्दर धनुष जिनका (**इषुमन्तः**) वा वाणों वाले और (**निषङ्गिणः**) अच्छे तरवार आदि पदार्थ जिनके वा जो (**स्वश्वाः**) उत्तम घोड़ों से युक्त (**स्वायुधाः**) सुन्दर आयुधों वाले वा (**सुरथाः**) सुन्दर रथ जिनके ऐसे (**स्थ**) होओ और (**शुभम्**) कल्याणकारक व्यवहार वा संग्राम को (**याथना**) प्राप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करके सदा ही विजय से युक्त हों॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**धूनुथ द्यां पर्वतान् दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया।**
**कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम्॥३॥**

**धूनुथ। द्याम्। पर्वतान्। दाशुषे। वसु। नि। वः। वना। जिहते। यामनः। भिया। कोपयथ। पृथिवीम्। पृश्निऽमातरः। शुभे। यत्। उग्राः। पृषतीः। अयुग्ध्वम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**धूनुथ**) कम्पयथ (**द्याम्**) विद्युतम् (**पर्वतान्**) मेघान् (**दाशुषे**) दात्रे (**वसु**) द्रव्यम् (**नि**) (**वः**) युष्मान् (**वना**) जङ्गलानि (**जिहते**) गच्छन्ति (**यामनः**) ये यान्ति ते (**भिया**) भयेन (**कोपयथ**)

**(पृथिवीम्)** **(पृश्निमातरः)** अन्तरिक्षमातरः **(शुभे)** उदकाय। **शुभमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(यत्)** **(उग्राः)** तेजस्विनः **(पृषतीः)** सेचनकर्त्रीरुदकधाराः **(अयुग्ध्वम्)** योजयत॥३॥

**अन्वयः**-हे उग्राः! पृश्निमातरो वायव इव यद्यूयं द्यां पर्वतान् धूनुथ तद्दाशुषे वसु धूनुथ यानि वो वना जिहते तानि यामनो यूयं भिया नि कोपयथ यथा वायवः पृथिवीं युञ्जते तथा शुभे पृषतीरयुग्ध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वायवः पृथिवीं मेघं वनादीनि च कम्पयन्ते यथा शत्रवः शत्रून् कोपयन्ति तथैव विद्वांसः पदार्थान् विमथ्य विद्युदादीन् कम्पयन्ते कार्य्येषु योजयन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(उग्राः)** तेजस्वियो! **(पृश्निमातरः)** जिनकी माता के सदृश अन्तरिक्ष उन पवनों के सदृश वेग से युक्त **(यत्)** जो आप लोग **(द्याम्)** बिजुली और **(पर्वतान्)** मेघों को **(धूनुथ)** कँपाइये वह **(दाशुषे)** दाताजन के लिये **(वसु)** द्रव्य को कंपित कीजिये जो **(वः)** आप लोगों को **(वना)** जङ्गल **(जिहते)** प्राप्त होते हैं उनको **(यामनः)** जाने वाले आप लोग **(भिया)** भय से **(नि, कोपयथ)** निरन्तर कंपाइये और जैसे पवन **(पृथिवीम्)** पृथिवी को युक्त होते हैं, वैसे **(शुभे)** जल के लिये **(पृषतीः)** सेचन करने वाली जल की धाराओं को **(अयुग्ध्वम्)** युक्त कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पवन पृथिवी, मेघ और वन आदिकों को कंपाते हैं और जैसे शत्रुजन शत्रुओं को क्रुद्ध करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन पदार्थों को मथकर बिजुली आदि को कंपाते हैं और कार्य्यों में युक्त करते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमाइव सुसदृशः सुपेशसः।**
**पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः॥४॥**

**वातऽत्विषः। मरुतः। वर्षऽनिर्निजः। यमाःऽइव। सुऽसदृशः। सुऽपेशसः। पिशङ्गऽअश्वाः। अरुणऽअश्वाः। अरेपसः। प्रऽत्वक्षसः। महिना। द्यौःऽइव। उरवः॥४॥**

**पदार्थः**-**(वातत्विषः)** वातस्य त्विट् कान्तिर्येषान्ते **(मरुतः)** मनुष्याः **(वर्षनिर्णिजः)** ये वर्षं निर्नेनिजन्ति ते **(यमाइव)** न्यायाधीशा इव **(सुसदृशः)** सम्यक्तुल्यगुणकर्मस्वभावाः **(सुपेशसः)** सुष्ठु पेशो रूपं सुवर्णं वा येषान्ते **(पिशङ्गाश्वाः)** आ पीतवर्णा अश्वा येषान्ते **(अरुणाश्वाः)** रक्तवर्णाऽश्वाः **(अरेपसः)** अनपराधिनः **(प्रत्वक्षसः)** प्रकर्षेण सूक्ष्मकर्त्तारः **(महिना)** महिम्ना **(द्यौरिव)** सूर्य्य इव **(उरवः)** बहवः॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये यमाइव वातत्विषो वर्षनिर्णिजः सुसदृशः सुपेशसः पिशङ्गाश्वा अरेपसोऽरुणाश्वा प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवो मरुतः स्युस्तान् सत्कुरुत॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। ये मनुष्या: सूर्य्यवदात्मप्रकाशा न्यायाधीशवद् व्यवहर्त्तारो विमानादि-यानयुक्ता: सन्ति तान् सततं सत्कुरुत॥४॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान् जनो! जो **(यमाइव)** न्यायाधीशों के सदृश **(वातत्विष:)** वायु की कान्ति के समान कान्ति जिनकी ऐसे **(वर्षनिर्णिज:)** वर्ष का निर्णय करने वाले **(सुसदृश:)** उत्तम प्रकार तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव युक्त **(सुपेशस:)** उत्तम तुल्य रूप वा सुवर्ण जिनका वे **(पिशङ्गाश्वा:)** सब ओर से पीले वर्ण के घोड़ों वाले **(अरेपस:)** अपराध से रहित **(अरुणाश्वा:)** रक्त वर्ण के घोड़ों वाले **(प्रत्वक्षस:)** अत्यन्त सूक्ष्म करने वाले **(महिना)** महिमा से **(द्यौरिव)** सूर्य्य के सदृश **(उरव:)** बहुत **(मरुत:)** मनुष्य होवें, उनका सत्कार करो॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश आत्मा से प्रकाशित और न्यायाधीशों के सदृश व्यवहार करने वाले विमान आदि वाहन से युक्त हैं, उनका निरन्तर सत्कार करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः।**

**सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे॥५॥२१॥**

**पुरुऽद्रप्साः। अञ्जिऽमन्तः। सुऽदानवः। त्वेषऽसंदृशः। अनवभ्रऽराधसः। सुऽजातासः। जनुषा। रुक्मऽवक्षसः। दिवः। अर्काः। अमृतम्। नाम। भेजिरे॥५॥**

**पदार्थ:**-**(पुरुद्रप्सा:)** बहुमोहा: **(अञ्जिमन्त:)** प्रकृष्टा अञ्जय: कामना विद्यन्ते येषान्ते **(सुदानव:)** उत्तमदाना: **(त्वेषसन्दृश:)** ये त्वेषं सम्पश्यन्ति **(अनवभ्रराधस:)** न विद्यतेऽवभ्रो धननाशो येषान्ते **(सुजातास:)** सुष्ठु धर्म्येण व्यवहारेण प्रसिद्धा: **(जनुषा)** जन्मना **(रुक्मवक्षस:)** रुक्माणि जटितान्याभूषणानि वक्ष:सु येषान्ते **(दिव:)** कामयमाना: **(अर्का:)** सत्कर्त्तव्या: **(अमृतम्)** नाशरहितम् **(नाम)** **(भेजिरे)** सेवन्ताम्॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! ये पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्त: सुदानवस्त्वेषसन्दृशोऽनवभ्रराधसो जनुषा सुजातासो रुक्मवक्षसो दिवोऽर्का अमृतं नाम भेजिरे तान् सर्वथा सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या उत्तमगुणकर्मस्वभावान् सर्वतो गृह्णन्ति ते सर्वथा सुखिनो जायन्ते॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(पुरुद्रप्सा:)** बहुत मोह वाले **(अञ्जिमन्त:)** अच्छी कामना विद्यमान जिनकी ऐसे वा **(सुदानव:)** उत्तम दानों के करने और **(त्वेषसन्दृश:)** प्रकाशित रूप को देखने वाले **(अनवभ्रराधस:)** नहीं विद्यमान धन का नाश जिनके ऐसे और **(जनुषा)** जन्म से **(सुजातास:)** उत्तम प्रकार धर्मयुक्त व्यवहार से प्रसिद्ध **(रुक्मवक्षस:)** सुवर्ण आदि से जुड़े हुए आभूषण वक्षस्थलों में

जिनके वे **(दिवः)** कामना करने वाले **(अर्काः)** सत्कार करने योग्य जन **(अमृतम्)** नाश से रहित **(नाम)** **[नाम]** का **(भेजिरे)** सेवन करें, उनका सब प्रकार सत्कार करिये॥५॥

**भावार्थः**-जो जन उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव को सब प्रकार ग्रहण करते हैं, वे सब प्रकार से सुखी होते हैं॥५॥

**पुनर्मरुद्विषये यानचालनफलमाह॥**

फिर मरुद्विषय में यान चलाने के फल को कहते हैं॥

**ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम्।**
**नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे॥६॥**

**ऋष्टयः। वः। मरुतः। अंसयोः। अधि। सहः। ओजः। बाह्वोः। वः। बलम्। हितम्। नृम्णा। शीर्षऽसु। आयुधा। रथेषु। वः। विश्वा। श्रीः। अधि। तनूषु। पिपिशे॥६॥**

**पदार्थः**-**(ऋष्टयः)** ज्ञानवन्तः **(वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(अंसयोः)** भुजदण्डमूलयोः **(अधि)** उपरि **(सहः)** सहनम् **(ओजः)** पराक्रमः **(बाह्वोः)** **(वः)** युष्माकम् **(बलम्)** **(हितम्)** स्थितम् **(नृम्णा)** नरो रमन्ते येषु तानि **(शीर्षसु)** मस्तकेषु **(आयुधा)** शस्त्रास्त्राणि **(रथेषु)** स- ग्रामार्थेषु यानेषु **(वः)** युष्माकम् **(विश्वा)** सर्वाणि **(वः)** **(श्रीः)** धनं शोभा वा **(अधि)** **(तनूषु)** शरीरेषु **(पिपिशे)** आश्रीयते॥६॥

**अन्वयः**-हे ऋष्टयो मरुतो! वोंऽसयोर्यत्सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितं शीर्षस्वधि नृम्णाऽऽयुधा रथेषु वो विश्वा श्रीरधि पिपिशे वस्तनूषु श्रीरधि पिपिशे ता यूयं सङ्गृह्णीत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शरीरात्मबलिष्ठा भूत्वाऽऽयुधविद्यायां निपुणा भूत्वोत्तमयानादिसामग्री-सहिताः पुरुषार्थयन्ते ते श्रीमन्तो जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(ऋष्टयः)** ज्ञानवान् **(मरुतः)** मनुष्यो! **(वः)** आप लोगों के **(अंसयोः)** भुजारूप दण्डों के मूलों में जो **(सहः)** सहन और **(ओजः)** पराक्रम तथा **(बाह्वोः)** बाहु सम्बन्धी **(वः)** आप लोगों का **(बलम्)** बल **(हितम्)** स्थित **(शीर्षसु)** मस्तकों **(अधि)** पर **(नृम्णा)** और मनुष्य रमते हैं जिनमें ऐसे **(आयुधा)** शस्त्र और अस्त्र **(रथेषु)** संग्रामार्थ वाहनों में वा **(वः)** आप लोगों के **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(श्रीः)** धन वा शोभा **(अधि, पिपिशे)** अधिक आश्रय की जाती और **(वः)** आप लोगों के **(तनूषु)** शरीरों में धन वा शोभा अधिक आश्रयण की जाती, उनका आप लोग संग्रहण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शरीर और आत्मा से बलिष्ठ और आयुधों की विद्या में निपुण होकर उत्तम वाहन आदि सामग्रियों से युक्त हुए पुरुषार्थ करते हैं, वे धनवान् होते हैं॥६॥

**पुनर्मरुद्विषयमाह॥**

फिर मरुद्विषय को कहते हैं॥

**गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं चन्द्रवद्राधो मरुतो ददा नः।**

**प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य॥७॥**

**गोऽमत्। अश्वऽवत्। रथऽवत्। सुऽवीरम्। चन्द्रऽवत्। राधः। मरुतः। दद। नः। प्रऽशस्तिम्। नः। कृणुत। रुद्रियासः। भक्षीय। वः। अवसः। दैव्यस्य॥७॥**

**पदार्थः-(गोमत्)** बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तत् **(अश्वावत्)** बह्वश्वयुक्तम् **(रथवत्)** प्रशंसितरथसहितम् **(सुवीरम्)** उत्तमवीरनिमित्तम् **(चन्द्रवत्)** सुवर्णादियुक्तमानन्दादिप्रदं वा **(राधः)** धनम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(ददा)** दत्त। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(प्रशस्तिम्)** प्रशंसाम् **(नः)** अस्माकम् **(कृणुत)** कुरुत **(रुद्रियासः)** रुद्रेषु साधनकर्त्तृषु भवाः **(भक्षीय)** भजेयम् **(वः)** युष्माकम् **(अवसः)** रक्षादेः **(दैव्यस्य)** देवैः कृतस्य॥७॥

**अन्वयः-**हे रुद्रियासो मरुतो! यूयं नो गोमदश्वावद्रथवच्चन्द्रवत्सुवीरं राधो ददा। दैव्यस्यावसो नः प्रशस्तिं कृणुत येन वः सकाशादेकैकोऽहं सुखं भक्षीय॥७॥

**भावार्थः-**यदा मनुष्याः सत्पुरुषाणां सङ्गं कुर्युस्तदेह समग्रैश्वर्यं परत्र धर्मानुष्ठानं कर्त्तुं याचन्ताम्॥७॥

**पदार्थः-**हे **(रुद्रियासः)** साधन करने वालों में हुए **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(नः)** हम लोगों के लिये **(गोमत्)** बहुत गौवें विद्यमान जिसमें वा **(अश्वावत्)** बहुत घोड़ों से युक्त **(रथवत्)** व प्रशंसित वाहनों के सहित **(चन्द्रवत्)** वा सुवर्ण आदि से युक्त वा आनन्द आदि के देने वाले **(सुवीरम्)** उत्तम वीर निमित्तक **(राधः)** धन को **(ददा)** दीजिये और **(दैव्यस्य)** विद्वानों से किये गये **(अवसः)** रक्षण आदि के सम्बन्ध में **(नः)** हम लोगों की **(प्रशस्तिम्)** प्रशंसा को **(कृणुत)** करिये जिससे **(वः)** आप लोगों के समीप से एक-एक मैं सुख का **(भक्षीय)** सेवन करूं॥७॥

**भावार्थः-**जब मनुष्य सत्पुरुषों का सङ्ग करें, तब इस लोक में सम्पूर्ण ऐश्वर्य और परलोक में धर्म्म के अनुष्ठान करने की याचना करें॥७॥

**पुनर्मरुद्विषयकविद्वद्गुणानाह॥**

फिर मरुद्विषयक विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**

**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः॥८॥२२॥**

**हये। नरः। मरुतः। मृळत। नः। तुविऽमघासः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। सत्यऽश्रुतः। कवयः। युवानः। बृहत्ऽगिरयः। बृहत्। उक्षमाणाः॥८॥**

**पदार्थः-(हये)** सम्बोधने **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मरणशीलाः **(मृळता)** सुखयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(तुवीमघासः)** बहुधनयुक्ताः **(अमृताः)** स्वस्वरूपेण मृत्युरहिताः

**(ऋतज्ञाः)** ये ऋतं यथार्थं जानन्ति ते **(सत्यश्रुतः)** ये सत्यं श्रुतवन्तः शृण्वन्ति वा **(कवयः)** विद्वांसः **(युवानः)** प्राप्तयुवावस्थाः **(बृहद्गिरयः)** बहुप्रशंसाः **(बृहत्)** महत् **(उक्षमाणाः)** सेवमानाः॥८॥

**अन्वयः**-हये नरो मरुतो! तुवीमघासोऽमृता ऋतज्ञाः सत्यश्रुतो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः कवयः सन्तो यूयं नो मृळता॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तान् विदुषः सेवन्ते ते सत्यां विद्यां प्राप्य सदैव मोदन्ते॥८॥

अत्र रुद्रमरुद्गुणवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-**(हये)** हे **(नरः)** नायक **(मरुतः)** मरणशील जनो! **(तुवीमघासः)** बहुत धनों से युक्त **(अमृताः)** अपने स्वरूप से मृत्युरहित **(ऋतज्ञाः)** यथार्थ को जानने वाले **(सत्यश्रुतः)** सत्य को सुने हुए वा सत्य को सुनने वाले **(युवानः)** युवावस्था को प्राप्त **(बृहद्गिरयः)** बहुत प्रशंसा वाले **(बृहत्)** बहुत **(उक्षमाणाः)** सेवन किये और **(कवयः)** विद्वान् होते हुए आप लोग **(नः)** हम लोगों को **(मृळता)** सुखी करो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों का सेवन करते हैं, वे सत्य विद्या को प्राप्त होकर सदा ही प्रसन्न होते हैं॥८॥

इस सूक्त में रुद्र और वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवाँ सूक्त और बाईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्याष्टपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ वायुगुणानाह॥*

अब आठ ऋचा वाले अठ्ठावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में वायुगुणों को कहते हैं॥

**तमु नूनं तविषीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम्।**

**य आश्वश्वा अमवद्वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः॥ १॥**

**तम्। ऊँ इति। नूनम्। तविषीऽमन्तम्। एषाम्। स्तुषे। गणम्। मारुतम्। नव्यसीनाम्। ये। आशुऽअश्वाः। अमऽवत्। वहन्ते। उत। ईशिरे। अमृतस्य। स्वऽराजः॥ १॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(उ)** वितर्के **(नूनम्)** निश्चितम् **(तविषीमन्तम्)** प्रशस्ता तविषी सेना यस्य तम् **(एषाम्)** वीराणाम् **(स्तुषे)** स्तोतुम् **(गणम्)** समूहम् **(मारुतम्)** मरुतामिमम् **(नव्यसीनाम्)** अतिशयेन नवीनानां प्रजानाम् **(ये)** **(आश्वश्वाः)** आशुगामिनोऽग्न्यादयो अश्वा येषान्ते **(अमवत्)** गृहवत् **(वहन्ते)** प्राप्नुवन्ति **(उत)** अपि **(ईशिरे)** ऐश्वर्य्यं प्राप्नुवन्ति **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य कारणस्य **(स्वराजः)** स्वः राजत इति स्वराट् तस्य॥ १॥

**अन्वयः**-अमृतस्य स्वराज आश्वश्वा येऽमवद्वहन्ते उतापि नव्यसीनां मारुतं गणं स्तुष ईशिर एषामु तविषीमन्तं तं नूनं वहन्ते ते विजयिनो जायन्ते॥ १॥

**भावार्थः**-ये कार्य्यकारणात्मकस्य जगतो गुणकर्म्मस्वभावाञ्जानन्ति ते गृहवत्सर्वान् सुखयितुं शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-**(अमृतस्य)** नाश से रहित कारण **(स्वराजः)** जो कि आप प्रकाशवान् उसके सम्बन्ध में **(आश्वश्वाः)** शीघ्र चलने वाले अग्नि आदि अश्व जिनके वे **(ये)** जो **(अमवत्)** गृहों को प्राप्त हों, वैसे **(वहन्ते)** प्राप्त होते हैं **(उत)** और **(नव्यसीनाम्)** अत्यन्त नवीन प्रजाओं के **(मारुतम्)** पवनसम्बन्धी **(गणम्)** समूह की **(स्तुषे)** स्तुति करने के लिये **(ईशिरे)** ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं **(एषाम्)** इन वीरों के **(उ)** तर्क के साथ **(तविषीमन्तम्)** अच्छी सेना जिसकी **(तम्)** उसी को **(नूनम्)** निश्चय प्राप्त होते हैं, वे विजयी होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो कार्य्य और कारणस्वरूप संसार के गुण, कर्म्म और स्वभावों को जानते हैं, वे गृह के सदृश सब को सुखी कर सकते हैं॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम्।**

**मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन्॥ २॥**

त्वेषम्। गणम्। तवसम्। खादिऽहस्तम्। धुनिऽव्रतम्। मायिनम्। दातिऽवारम्। मयःऽभुवः। ये। अमिताः। महिऽत्वा। वन्दस्व। विप्र। तुविऽराधसः। नॄन्॥ २॥

**पदार्थः**-(**त्वेषम्**) दीप्तिमन्तम् (**गणम्**) गणनीयम् (**तवसम्**) बलवन्तम् (**खादिहस्तम्**) खादि हस्तयोर्यस्य तम् (**धुनिव्रतम्**) धुनिः कम्पनमिव व्रतं शीलं यस्य तम् (**मायिनम्**) प्रशस्ता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् (**दातिवारिम्**) यो दातिं दानं वृणोति तम् (**मयोभुवः**) सुखं भावुकाः (**ये**) (**अमिताः**) अतुलशुभगुणाः (**महित्वा**) महत्त्वं प्राप्य (**वन्दस्व**) (**विप्र**) मेधाविन् (**तुविराधसः**) बहुधनवतः (**नॄन्**) मनुष्यान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे विप्र! त्वं त्वेषं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारं वीराणां गणं वन्दस्व। ये महित्वाऽमिता मयोभुवः स्युस्ताँस्तुविराधसो नॄन् वन्दस्व॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्योग्यानां धार्मिकाणां विदुषामेव सत्कारः कर्त्तव्यो यतः सुखं वर्त्तेत॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**विप्र**) बुद्धिमन्! आप (**त्वेषम्**) प्रकाशित (**तवसम्**) बलवान् (**खादिहस्तम्**) खाद्य हाथों में जिसके (**धुनिव्रतम्**) कंपन के सदृश स्वभाव जिसका वा (**मायिनम्**) उत्तम बुद्धि जिसकी उस (**दातिवारम्**) दान के स्वीकार करने वाले वीरों के (**गणम्**) गणन करने योग्य की (**वन्दस्व**) वन्दना करिये और (**ये**) जो (**महित्वा**) महत्त्व को प्राप्त होकर (**अमिताः**) अतुल शुभ गुण वाले (**मयोभुवः**) सुख को कराने वाले हों उन (**तुविराधसः**) बहुत धन वाले (**नॄन्**) मनुष्यों की वन्दना कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि योग्य धार्मिक विद्वानों का ही सत्कार करें, जिससे सुख बढ़े॥ २॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति।**

**अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः॥ ३॥**

आ। वः। यन्तु। उदऽवाहासः। अद्य। वृष्टिम्। ये। विश्वे। मरुतः। जुनन्ति। अयम्। यः। अग्निः। मरुतः। सम्ऽइद्धः। एतम्। जुषध्वम्। कवयः। युवानः॥ ३॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वः**) युष्मान् (**यन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**उदवाहासः**) य उदकं वहन्ति तानिव (**अद्य**) इदानीम् (**वृष्टिम्**) वर्षणम् (**ये**) (**विश्वे**) सर्वे (**मरुतः**) वायवः (**जुनन्ति**) प्रेरयन्ति (**अयम्**) (**यः**)

**(अग्नि:)** पावक: **(मरुत:)** मनुष्या: **(समिद्ध:)** प्रदीप्त: **(एतम्)** **(जुषध्वम्)** **(कवय:)** मेधाविन: **(युवान:)** प्राप्तयौवना:॥३॥

**अन्वय:**-हे कवयो युवानो मरुतो मनुष्या! ये विश्व उदवाहसो मरुतो वृष्टिं जुनन्ति तेऽद्य व आ यन्तु। योऽयं समिद्धोऽग्निरस्त्येतं यूयं जुषध्वम्॥३॥

**भावार्थ:**-ये वृष्टिकरान् वाय्वग्न्यादीन् विजानन्ति त एतान् वृष्टये प्रेरयितुं शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(कवय:)** बुद्धिमान् **(युवान:)** युवावस्था को प्राप्त हुए **(मरुत:)** मनुष्यो! **(ये)** जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(उदवाहास:)** जल को जो धारण करते हैं उनके सदृश **(मरुत:)** पवन **(वृष्टिम्)** वृष्टि की **(जुनन्ति)** प्रेरणा करते हैं, वे **(अद्य)** इस समय **(व:)** आप लोगों को **(आ, यन्तु)** प्राप्त हों और **(य:)** जो **(अयम्)** यह **(समिद्ध:)** प्रदीप्त **(अग्नि:)** अग्नि है **(एतम्)** इसको आप लोग **(जुषध्वम्)** सेवन करो॥३॥

**भावार्थ:**-जो वृष्टि करने वाले वायु और अग्नि आदि को विशेष करके जानते हैं, वे इनको वृष्टि करने के लिये प्रेरणा करने को समर्थ होते हैं॥३॥

**पुनर्मरुद्गुणानाह॥**

फिर मरुद् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयं राजा॑नमिर्यं जना॑य विभ्वत॒ष्टं ज॑नयथा यजत्राः।**

**युष्मदे॑ति मुष्टि॒हा बा॒हुजू॑तो युष्मत्सद॑श्वो मरुतः सु॒वीर॑:॥४॥**

**यू॒यम्। राजा॑नम्। इर्य॑म्। जना॑य। वि॒भ्व॒ऽत॒ष्टम्। ज॒न॒य॒थ॒। य॒ज॒त्राः। यु॒ष्मत्। ए॒ति। मु॒ष्टि॒ऽहा। बा॒हुऽजू॑तः। यु॒ष्मत्। सत्ऽअ॑श्वः। म॒रु॒तः। सु॒ऽवीर॑:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(यूयम्)** **(राजानम्)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानम् **(इर्यम्)** प्रेरकम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य ह्रस्व:। **(जनाय)** मनुष्याय **(विभ्वतष्टम्)** विभूनां मेधाविनां मध्ये तष्टं तीव्रप्रज्ञम् **(जनयथा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(यजत्रा:)** सङ्गन्तार: **(युष्मत्)** युष्माकं सकाशात् **(एति)** प्राप्नोति **(मुष्टिहा)** यो मुष्टिना हन्ति **(बाहुजूत:)** बाहुभ्यां बलवान् **(युष्मत्)** **(सदश्व:)** सन्त: समीचीना अश्वा यस्य स: **(मरुत:)** सुशिक्षिता मानवा: **(सुवीर:)** शोभनश्चासौ वीरश्च॥४॥

**अन्वय:**-हे यजत्रा मरुतो! यो युष्मन्मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्व: सुवीर एति तं जनायेर्यं विभ्वतष्टं राजानं यूयं जनयथा॥४॥

**भावार्थ:**-मनुष्या: सर्वैरुपायैर्धर्म्यगुणकर्मस्वभावं राजानं तादृशान् सहायांश्च जनयेयु:॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(यजत्रा:)** मिलने वाले **(मरुत:)** उत्तम प्रकार शिक्षित मनुष्यो! जो **(युष्मत्)** आप लोगों के समीप **(मुष्टिहा)** मुष्टि से मारने वाला **(बाहुजूत:)** बाहुओं से बलवान् वा **(युष्मत्)** आप लोगों के समीप **(सदश्व:)** अच्छे घोड़े जिसके ऐसा **(सुवीर:)** सुन्दर वीरजन **(एति)** प्राप्त होता है उसको

**(जनाय)** मनुष्य के लिये **(इर्यम्)** प्रेरणा करने वाले **(विभ्वतष्टम्)** बुद्धिमानों के मध्य में तीव्र बुद्धि वाले **(राजानम्)** न्याय और विनय से प्रकाशमान राजा को **(यूयम्)** आप **(जनयथा)** प्रकट कीजिये॥४॥

**भावार्थ:**-मनुष्य सम्पूर्ण उपायों से धर्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले राजा और उसी प्रकार के सहायों को उत्पन्न करें॥४॥

**अथ विद्वदुपदेशगुणानाह॥**

अब विद्वानों के उपदेशगुणों को कहते हैं॥

**अराइवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः।**
**पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः॥५॥**

**अराःऽइव। इत्। अचरमाः। अहाऽइव। प्रऽप्र। जायन्ते। अकवाः। महःऽभिः। पृश्नेः। पुत्राः। उपऽमासः। रभिष्ठाः। स्वया। मत्या। मरुतः। सम्। मिमिक्षुः॥५॥**

**पदार्थ:**-**(अराइव)** चक्रावयवा इव **(इत्)** एव **(अचरमाः)** नान्त्यावयवाः **(अहेव)** अहानीव **(प्रप्र)** **(जायन्ते)** **(अकवाः)** अशब्दायमानाः **(महोभिः)** महद्भिः **(पृश्नेः)** अन्तरिक्षस्य **(पुत्राः)** **(उपमासः)** **(रभिष्ठाः)** अतिशयेनाऽऽरब्धारः **(स्वया)** **(मत्या)** प्रज्ञया **(मरुतः)** वायवः **(सम्)** **(मिमक्षुः)** सिञ्चन्ति॥५॥

**अन्वय:**-हे विद्वांसो! ये मरुतोऽराइवाऽचरमा अहेवाऽकवाः पृश्नेः पुत्रा महोभिरित् प्रप्र जायन्ते सं मिमक्षुस्तथोपमासो रभिष्ठा यूयं स्वया मत्या प्रप्र जायध्वम्॥५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा रथचक्राङ्गानि दिनानि च क्रमेण वर्त्तन्ते यथा वायवो गत्वागत्य वर्षन्ति तथैव मनुष्यैः क्रमेण वर्त्तित्वा प्रज्ञया सुखवृष्टिः सर्वेषां सुखाय कर्त्तव्या॥५॥

**पदार्थ:**-हे विद्वानो! जो **(मरुतः)** पवन **(अराइव)** चक्रों के अवयवों के सदृश **(अचरमाः)** नहीं अन्त्यावयव जिनके वे **(अहेव)** दिनों के सदृश **(अकवाः)** नहीं शब्द करते हुए **(पृश्नेः)** अन्तरिक्ष के **(पुत्राः)** पुत्र **(महोभिः, इत्)** बड़ों के ही साथ **(प्रप्र, जायन्ते)** अत्यन्त उत्पन्न होते और **(सम्, मिमिक्षुः)** अच्छे प्रकार सिञ्चन करते हैं वैसे **(उपमासः)** प्रत्येक के तुल्य **(रभिष्ठाः)** अत्यन्त आरम्भ करने वाले आप लोग **(स्वया)** अपनी **(मत्या)** बुद्धि से अत्यन्त उत्पन्न होओ॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे वाहन के चक्रों के अङ्ग और दिन, क्रम से वर्त्तमान हैं और जैसे पवन जा, आकर वर्षाते हैं, वैसे ही मनुष्यों को चाहिये कि क्रम से वर्त्ताव करके बुद्धि से सुख की वृष्टि सब के सुख के लिये करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः।**

**क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः॥६॥**

**यत्। प्र। अयासिष्ट। पृषतीभिः। अश्वैः। वीळुपविऽभिः। मरुतः। रथेभिः। क्षोदन्ते। आपः। रिणते। वनानि। अव। उस्रियः। वृषभः। क्रन्दतु। द्यौः॥६॥**

**पदार्थः-(यत्) (प्र) (अयासिष्ट)** यातु **(पृषतीभिः)** वेगादिभिः **(अश्वैः)** आशुगामिभिः **(वीळुपविभिः)** दृढचक्रैः **(मरुतः)** विद्वांसो मनुष्याः **(रथेभिः)** विमानादियानैः **(क्षोदन्ते)** क्षरन्ति वर्षन्ति **(आपः)** जलानि **(रिणते)** गच्छन्ति **(वनानि)** किरणान् **(अव) (उस्रियः)** उस्रासु किरणेषु भवः **(वृषभः)** वर्षको मेघः **(क्रन्दतु)** आह्वयतु **(द्यौः)** कामयमानः॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! भवन्तः पृषतीभिरश्वै रथेभिर्यद्वीळुपविभिः क्षोदन्ते यथाऽऽपो वनानि रिणते तथैवोस्रियो वृषभो द्यौर्वनान्यव क्रन्दतु इष्टं प्रायासिष्ट॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि यूयं वायुवत्सद्योगमनं जलवत्तृप्तिकरणं कुर्य्यात तर्हि सर्वाणि सुखानि प्राप्नुयात॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! आप लोग **(पृषतीभिः)** वेग आदिकों और **(अश्वैः)** शीघ्र चलने वाले **(रथेभिः)** विमान आदि वाहनों से **(यत्)** जो **(वीळुपविभिः)** दृढ़ चक्रों से **(क्षोदन्ते)** वृष्टि करते हैं और जैसे **(आपः)** जल **(वनानि)** किरणों को **(रिणते)** प्राप्त होते हैं, वैसे ही **(उस्रियः)** किरणों में उत्पन्न **(वृषभः)** वर्षाने वाला मेघ **(द्यौः)** कामना करता हुआ किरणों का **(अव, क्रन्दतु)** आह्वान करे और इष्ट को **(प्र, अयासिष्ट)** अत्यन्त प्राप्त हों॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो आप लोग वायु के सदृश शीघ्र गमन और जल के सदृश तृप्ति करने रूप कार्य को करें तो सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त हों॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः।**

**वातान् ह्यश्वान् धुर्य्यायुयुज्रे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः॥७॥**

**प्रथिष्ट। यामन्। पृथिवी। चित्। एषाम्। भर्ताऽइव। गर्भम्। स्वम्। इत्। शवः। धुः। वातान्। हि। अश्वान्। धुरि। आऽयुयुज्रे। वर्षम्। स्वेदम्। चक्रिरे। रुद्रियासः॥७॥**

**पदार्थः-(प्रथिष्ट)** प्रथते **(यामन्)** यामनि **(पृथिवी)** भूमिः **(चित्)** अपि **(एषाम्) (भर्त्तेव) (गर्भम्) (स्वम्) (इत्) (शवः)** गमनम् **(धुः)** दधति **(वातान्)** वायून् **(हि)** यतः **(अश्वान्)** सद्योगामिनः **(धुरि)** यानमध्ये **(आयुयुज्रे)** समन्तात् युञ्जते **(वर्षम्) (स्वेदम्)** प्रस्वेदमिव **(चक्रिरे) (रुद्रियासः)** रुद्रेषु दुष्टरोदयितृषु कुशलाः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथैषां मध्ये पृथिवी यामन् गर्भं भर्त्तेव प्रथिष्ट तथा भवन्तः स्वं शव इद् धुरि

धुरश्वान् वातानायुयुज्रे चिदपि रुद्रियासः सन्त स्वेदमिव हि वर्षं चक्रिरे॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पृथिवीवत् क्षमाशीला विस्तीर्णविद्या यानेषु वायूनश्वान् संयोज्य वर्षानिमित्तान् निर्माय कार्याणि साध्नुवन्ति ते सर्वं सुखं कर्त्तुं शक्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(एषाम्)** इनके मध्य में **(पृथिवी)** भूमि **(यामन्)** प्रहर में **(गर्भम्)** गर्भ को **(भर्त्तेव)** स्वामी के सदृश **(प्रथिष्ट)** प्रकट करती है, वैसे आप लोग **(स्वम्)** सुख और **(शवः)** गमन को **(इत्)** ही **(धुरि)** वाहन के मध्य में **(धुः)** धारण करते और **(अश्वान्)** शीघ्र चलने वाले **(वातान्)** पवनों को **(आयुयुज्रे)** सब ओर से युक्त करते और **(चित्)** भी **(रुद्रियासः)** दुष्टों के रुलाने वालों में चतुर हुए **(स्वेदम्)** पसीने के सदृश **(हि)** निश्चय **(वर्षम्)** वृष्टि को **(चक्रिरे)** करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य पृथिवी के सदृश क्षमाशील और विस्तीर्ण विद्या वाले वाहनों के पवन रूप घोड़ों को संयुक्त करके और वृष्टि के कारणों का निर्माण करके कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे सम्पूर्ण सुख कर सकते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**

**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः॥८॥२३॥**

**हये। नरः। मरुतः। मृळत। नः। तुविऽमघासः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। सत्यऽश्रुतः। कवयः। युवानः। बृहत्ऽगिरयः। बृहत्। उक्षमाणाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(हये)** **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(मृळता)** सुखयत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(तुवीमघासः)** बहुधनाः **(अमृताः)** प्राप्तमोक्षाः **(ऋतज्ञाः)** य ऋतं परमात्मानं प्रकृतिं वा जानन्ति **(सत्यश्रुतः)** ये सत्यं यथार्थं शृण्वन्ति ते **(कवयः)** पूर्णविद्याः **(युवानः)** प्राप्ताऽत्मशरीरयौवनाः **(बृहद्गिरयः)** बृहन्तो गिरयो मेघा इवोपकारका गुणा येषान्ते **(बृहत्)** महद् ब्रह्म **(उक्षमाणाः)** सेवमानाः॥८॥

**अन्वयः**-हये नरो मरुतस्तुवीमघासोऽमृताः सत्यश्रुतः ऋतज्ञा युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः कवयो यूयं नो मृळता॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वसत्यविद्याः प्राप्याप्तं परमात्मानं तदाज्ञां च सेवमाना महाशयाः पूर्णशरीरात्मबला अध्यापनोपदेशाभ्यामस्मानुन्नयन्ति तः एव सर्वदाऽस्माभिः सत्कर्त्तव्याः॥८॥

अत्र विद्वद्वायुगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(हये)** हे **(नरः)** नायक **(मरुतः)** जनो! **(तुवीमघासः)** बहुत धनवान् **(अमृताः)** मोक्ष को प्राप्त हुए **(सत्यश्रुतः)** सत्य को यथार्थ सुनने और **(ऋतज्ञाः)** परमात्मा वा प्रकृति को जानने वाले **(युवानः)** प्राप्त हुई अपने शरीर को यौवन अवस्था जिनको **(बृहद्गिरयः)** जिनके बड़े मेघों के सदृश उपकार करने वाले गुण वे **(बृहत्)** महत् ब्रह्म का **(उक्षमाणाः)** सेवन करते हुए **(कवयः)** पूर्णविद्या वाले आप लोग **(नः)** हम लोगों को **(मृळता)** सुखी करिये॥८॥

**भावार्थः-**जो मनुष्य सम्पूर्ण सत्य विद्याओं को प्राप्त होकर यथार्थवक्ता, परमात्मा और उसकी आज्ञा का सेवन करते हुए महाशय पूर्ण शरीर और आत्मा के बल से युक्त अध्यापन और उपदेश से हम लोगों की वृद्धि करते हैं, वे ही सर्वदा हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥८॥

इस सूक्त में विद्वान् तथा वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के [साथ] संगति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठावनवां सूक्त तथा तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथाष्टर्चस्यैकोनषष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४ विराड्जगती। २, ३, ६, निचृज्जगती। ५ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ स्वराट्त्रिष्टुप्। ८ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथ विद्वद्गुणानाह॥*

अब आठ ऋचा वाले उनसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वद्गुणों को कहते हैं॥

**प्र वः स्पळक्रन्त्सुवितायं दावनेऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।**
**उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजोऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः॥ १॥**

**प्र। वः। स्पट्। अक्रन्। सुवितायं। दावने। अर्च। दिवे। प्र। पृथिव्यै। ऋतम्। भरे। उक्षन्ते। अश्वान्। तरुषन्ते। आ। रजः। अनु। स्वम्। भानुम्। श्रथयन्ते। अर्णवैः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**स्पट्**) स्पष्टा (**अक्रन्**) कुर्वन्ति (**सुविताय**) ऐश्वर्य्यवते (**दावने**) दात्रे (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दिवे**) कामयमानाय (**प्र**) (**पृथिव्यै**) अन्तरिक्षाय भूमये वा (**ऋतम्**) सत्यम् (**भरे**) बिभ्रति यस्मिंस्तस्मिन् (**उक्षन्ते**) सेवन्ते (**अश्वान्**) वेगवतोऽग्न्यादीन् (**तरुषन्ते**) सद्यः प्लवन्ते (**आ**) (**रजः**) लोकम् (**अनु**) (**स्वम्**) स्वकीयम् (**भानुम्**) दीप्तिम् (**श्रथयन्ते**) शिथिलीकुर्वन्ति (**अर्णवैः**) समुद्रैर्नदीभिर्वा॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये सुविताय दावने दिवे पृथिव्यै वो भर ऋतं प्राक्रन्नश्वानुक्षन्ते तरुषन्ते रजोऽनु स्वं भानुं चार्णवैः प्राश्रथयन्ते तान् यूयं सत्कुरुत। हे राजन् स्पट्! त्वमेतान् सततमर्चा॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये मनुष्याः शिल्पविद्यया विमानादिकं निर्मायान्तरिक्षादिषु गत्वागत्य सर्वेषां सुखायैश्वर्य्यमाश्रयन्ति ते जगद्विभूषका भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**सुविताय**) ऐश्वर्य से युक्त और (**दावने**) देने वाले के लिए (**दिवे**) कामना करते हुए के लिए (**पृथिव्यै**) अन्तरिक्ष वा भूमि के लिये तथा (**वः**) आप लोगों के लिये (**भरे**) धारण करते हैं जिसमें उस व्यवहार में (**ऋतम्**) सत्य को (**प्र, अक्रन्**) अच्छे प्रकार करते हैं और (**अश्वान्**) वेग से युक्त अग्नि आदि को (**उक्षन्ते**) सेवते हैं तथा (**तरुषन्ते**) शीघ्र प्लवित होते हैं तथा (**रजः**) लोक के (**अनु**) पश्चात् (**स्वम्**) अपनी (**भानुम्**) कान्ति को (**अर्णवैः**) समुद्रों वा नदियों से (**प्र, आ, श्रथयन्ते**) सब प्रकार शिथिल करते हैं, उनका आप लोग सत्कार करिये और हे राजन् (**स्पट्**) स्पर्श करने वाले! आप इनका निरन्तर (**अर्चा**) सत्कार कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो मनुष्य शिल्पविद्या से विमानादि को रच के अन्तरिक्षादि मार्गों में जा आ कर सब के सुख के लिये ऐश्वर्य्य का आश्रयण करते हैं, वे संसार के विभूषक होते हैं॥ १॥

**अथ वायुगुणानाह॥**

अब वायुगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अमादेषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती।**

**दूरेदृशो ये चितयन्त एमभिरन्तर्महे विदथे येतिरे नरः॥२॥**

**अमात्। एषाम्। भियसा। भूमिः। एजति। नौः। न। पूर्णा। क्षरति। व्यथिः। यती। दूरेऽदृशः। ये। चितयन्ते। एमऽभिः। अन्तः। महे। विदथे। येतिरे। नरः॥२॥**

**पदार्थः-(अमात्)** गृहात् **(एषाम्)** वाय्वग्न्यादीनाम् **(भियसा)** भयेन **(भूमिः)** पृथिवी **(एजति)** कम्पते **(नौः)** बृहती नौका **(न)** इव **(पूर्णा)) (क्षरति)** वर्षति **(व्यथिः)** या व्यथते सा **(यती)** गच्छन्ती **(दूरेदृशः)** ये दूरे दृश्यन्ते पश्यन्ति वा **(ये) (चितयन्ते)** प्रज्ञापयन्ति **(एमभिः)** प्रापकैर्गुणैः **(अन्तः)** मध्ये **(महे)** महते **(विदथे)** स- ग्रामे विज्ञानमये व्यवहारे वा **(येतिरे)** यतन्ते **(नरः)** नेतारो मनुष्याः॥२॥

**अन्वयः**-हे नरो नायका मनुष्या! या भूमिः पूर्णा नौर्न भियसा व्यथिर्यती स्त्रीवैजति एषाममात् क्षरति तां य एमभिरस्यान्तर्मध्ये दूरेदृशो महे चितयन्ते विदथे यतिरे त एव सर्वान् सुखयितुमर्हन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा शूराणां समीपाद् भीरवः पलायन्ते तथैव वायुसूर्य्याभ्यां भूमिः कम्पते चलति च यथा पदार्थैः पूर्णा नौरग्न्यादियोगेन समुद्रपारं सद्यो गच्छति तथा विद्यापारं मनुष्या गच्छन्तु यथा वीराः स- ग्रामे प्रयतन्ते तथैवेतरैर्मनुष्यैः प्रयतितव्यम्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक मनुष्यो! जो **(भूमिः)** पृथिवी **(पूर्णा)** पूर्ण **(नौः)** बड़े नौका के **(न)** सदृश **(भियसा)** भय से **(व्यथिः)** पीड़ित होने वाली **(यती)** जाती हुई स्त्री के तुल्य **(एजति)** कांपती है और **(एषाम्)** इन वायु और अग्नि आदि के **(अमात्)** गृह से **(क्षरति)** वर्षाती है उसको **(ये)** जो **(एमभिः)** प्राप्त कराने वाले गुणों से इसके **(अन्तः)** मध्य में **(दूरेदृशः)** जो दूर देखे जाते वा दूर देखने वाले **(महे)** बड़े के लिये **(चितयन्ते)** उत्तमता से समझाते हैं और **(विदथे)** संग्राम वा विज्ञानयुक्त व्यवहार में **(येतिरे)** प्रयत्न करते हैं, वे ही सब को सुखी करने के योग्य होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे शूरवीर जनों के समीप से डरने वाले जन भागते हैं, वैसे ही वायु और सूर्य से भूमि कांपती और चलती है और जैसे पदार्थों से पूर्ण नौका अग्नि आदि के योग से समुद्र के पार को शीघ्र जाती है, वैसे विद्या के पार मनुष्य जावें और जैसे वीर संग्राम में प्रयत्न करते हैं, वैसे ही अन्य मनुष्यों को प्रयत्न करना चाहिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने।**

**अत्याइव सुभ्वश्चारवः स्थन मर्याइव श्रियसे चेतथा नरः॥३॥**

**गवाम्ऽइव। श्रियसे। शृङ्गम्। उत्ऽतमम्। सूर्यः। न। चक्षुः। रजसः। विऽसर्जने। अत्याःऽइव। सुऽभ्वः। चारवः। स्थन। मर्याःऽइव। श्रियसे। चेतथ। नरः॥३॥**

**पदार्थः**-(**गवामिव**) किरणानामिव (**श्रियसे**) सेवितुम् (**शृङ्गम्**) उपरिभागम् (**उत्तमम्**) (**सूर्यः**) सविता (**न**) इव (**चक्षुः**) प्रकाशकः (**रजसः**) लोकस्य (**विसर्जने**) त्यागे (**अत्याइव**) अश्ववत् (**सुभ्वः**) ये सुष्ठु भवन्ति (**चारवः**) सुन्दरस्वभावा गन्तारो वा (**स्थन**) भवत (**मर्य्याइव**) यथा विद्वांसो मनुष्याः (**श्रियसे**) श्रयितुमाश्रयितुम् (**चेतथा**) सञ्जानीध्वं ज्ञापयत वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नरः**) नेतारो मनुष्याः॥३॥

**अन्वयः**-हे सुभ्वश्चारवो नरः! शृङ्गमुत्तमं सूर्य्यो न गवामिव श्रियसे रजसो विसर्जने चक्षुरिव यूयं स्थनात्याइव मर्य्याइव श्रियसे यूयं चेतथा॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये किरणवत्सूर्य्यवदश्ववन्मनुष्यवत्प्रकाशं दानं वेगं विवेकं च सेवन्ते त एवोत्तमं सुखं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**सुभ्वः**) उत्तम प्रकार होने वाले (**चारवः**) सुन्दर स्वभाव युक्त वा जाने वाले (**नरः**) नायक मनुष्यो! (**शृङ्गम्**) ऊपर के (**उत्तमम्**) उत्तम भाग को (**सूर्य्यः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**गवामिव**) किरणों के सदृश (**श्रियसे**) सेवने को (**रजसः**) लोक के (**विसर्जने**) त्याग में (**चक्षुः**) प्रकाश करने वाले के सदृश आप लोग (**स्थन**) हूजिये और (**अत्याइव**) घोड़े के सदृश (**मर्य्याइव**) वा विद्वानों के सदृश (**श्रियसे**) आश्रयण करने को आप लोग (**चेतथा**) उत्तम प्रकार जानिये वा जनाइये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य किरणों, सूर्य्य, घोड़े और मनुष्यों के सदृश प्रकाश, दान, वेग और विवेक को सेवते हैं, वे ही उत्तम सुख को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को वो महान्ति महतामुदश्नवत् कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या।**

**यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद्भरध्वे सुविताय दावने॥४॥**

**कः। वः। महान्ति। महताम्। उत्। अश्नवत्। कः। काव्या। मरुतः। कः। ह। पौंस्या। यूयम्। ह। भूमिम्। किरणम्। न। रेजथ। प्र। यत्। भरध्वे। सुविताय। दावने॥४॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वः**) युष्माकं युष्मान् वा (**महान्ति**) विज्ञानादीनि (**महताम्**) (**उत्**) (**अश्नवत्**) प्राप्नोति (**कः**) (**काव्या**) कवीनां मेधाविनां कर्म्माणि (**मरुतः**) मननशीलाः (**कः**) (**ह**) किल (**पौंस्या**) पुंसामिमानि बलानि (**यूयम्**) (**ह**) खलु (**भूमिम्**) (**किरणम्**) दीप्तिम् (**न**) इव (**रेजथ**) कम्पध्वम् (**प्र**) (**यत्**) यम् (**भरध्वे**) धरत (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**दावने**) दात्रे॥४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! महतां वो महान्ति क उदश्नवत् कः काव्योदश्नवत्को ह पौंस्योदश्नवद्यतो यूयं भूमि किरणं न रेजथ यद्ध सुविताय दावने प्र भरध्वे तदेव सर्वैः प्राप्तव्यम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र प्रश्नोत्तराणि सन्ति-क आप्तानां सकाशान्महान्ति विज्ञानानि प्राप्नोति, कश्चाप्तानां कर्म्माणि, को वीराणां बलानि चेत्यतेषामुत्तरं ये पवित्रान्तःकरणाः शुश्रूषवो धर्मिष्ठाः पुरुषार्थिनो ब्रह्मचारिणश्चेति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विचार करने वाले जनो! **(महताम्)** बड़े **(वः)** आप लोगों के वा आप लोगों को **(महान्ति)** बड़े विज्ञान आदिकों को **(कः)** कौन **(उत्, अश्नवत्)** उत्तमता से प्राप्त होता है **(कः)** कौन **(काव्या)** बुद्धिमानों के कामों को उत्तमता से प्राप्त होता है **(कः)** कौन **(ह)** निश्चय से **(पौंस्या)** पुरुषों के इन बलों को प्राप्त होता है जिससे **(यूयम्)** आप लोग **(भूमिम्)** पृथिवी को **(किरणम्)** दीप्ति के **(न)** समान **(रेजथ)** कंपावें और **(यत्)** जिसको **(ह)** निश्चय **(सुविताय)** ऐश्वर्य और **(दावने)** देने वाले के लिये **(प्र, भरध्वे)** धारण कीजिये, उसी को सब लोग प्राप्त होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में प्रश्न और उत्तर हैं-कौन यथार्थवक्ता जनों के समीप से बड़े विज्ञानों को प्राप्त होता है और कौन आप्तजनों के कर्म्मों को और कौन वीरों के बलों को प्राप्त होता है, इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि पवित्र अन्तःकरण युक्त और धर्म्म के सुनने की इच्छा करने वाले धर्मिष्ठ पुरुषार्थी और ब्रह्मचारी हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अश्वाऽइवेदरुषासः सबन्धवः शूराइव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।**

**मर्याइव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः॥५॥**

**अश्वाःऽइव। इत्। अरुषासः। सऽबन्धवः। शूराःऽइव। प्रऽयुधः। प्र। उत। युयुधुः। मर्याःऽइव। सुऽवृधः। ववृधुः। नरः। सूर्यस्य। चक्षुः। प्र। मिनन्ति। वृष्टिऽभिः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अश्वाइव)** तुरङ्गा इव **(इत्)** **(अरुषासः)** रक्तादिगुणविशिष्टाः **(सबन्धवः)** समाना बन्धवो येषान्ते **(शूराइव)** शूरवत् **(प्रयुधः)** ये प्रकर्षेण युध्यन्ते **(प्र)** **(उत)** **(युयुधुः)** स-ामं कुर्युः **(मर्याइव)** मनुष्यवत् **(सुवृधः)** ये सुष्ठु वर्धन्ते ते **(वावृधुः)** वर्धन्ताम् **(नरः)** नायकाः **(सूर्यस्य)** सवितृदेवस्य **(चक्षुः)** चष्टे येन तत् **(प्र)** **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(वृष्टिभिः)** वर्षाभिः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! सबन्धवो नरो भवन्तोऽरुषासोऽश्वाइवेत् सद्यो गच्छन्तूत प्रयुधः शूराइव प्र युयुधुः सुवृधो मर्याइव वावृधुर्धायवः सूर्य्यस्य चक्षुर्वृष्टिभिरिव शत्रुसेनाः प्र मिनन्ति ते सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽश्ववद्बलिष्ठाः शूरवन्निर्भया मनुष्यवद्विचारशीलाः सूर्यवदविद्याऽन्धकारनिवारकाः सन्ति ते सर्वस्य कल्याणाय भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(सबन्धवः)** तुल्य बन्धु जिनके ऐसे **(नरः)** नायक आप लोग **(अरुषासः)** रक्त आदि गुणों से विशिष्ट **(अश्वाइव, इत्)** घोड़ों के सदृश ही शीघ्र चलिये **(उत)** और **(प्रयुधः)** अत्यन्त युद्ध करने वाले **(शूराइव)** शूरवीरों के सदृश **(प्र, युयुधुः)** अत्यन्त युद्ध करिये तथा **(सुवृधः)** उत्तम प्रकार बढ़ने वाले **(मर्याइव)** मनुष्यों के सदृश **(वावृधुः)** बढ़िये और पवन **(सूर्यस्य)** सूर्य्य देव के **(चक्षुः)** देखता जिससे उसको **(वृष्टिभिः)** वर्षाओं से जैसे वैसे शत्रुओं की सेनाओं को **(प्र, मिनन्ति)** अत्यन्त नाश करते हैं, वे सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो घोड़ों के सदृश बलिष्ठ, शूरवीरों के सदृश भयरहित, मनुष्यों के सदृश विचारशील और सूर्य के सदृश अविद्यारूपी अन्धकार के निवारक हैं, वे सब के कल्याण के लिये होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते अ॒ज्ये॒ष्ठा अक॑निष्ठास उ॒द्भिदो॒ऽम॑ध्यमासो॒ मह॑सा॒ वि वा॑वृधुः।**

**सु॒जा॒तासो॑ ज॒नुषा॒ पृश्नि॑मातरो दि॒वो मर्या॒ आ नो॒ अच्छा॑ जिगातन॥६॥**

ते। अ॒ज्ये॒ष्ठाः। अक॑निष्ठासः। उ॒त्ऽभिदः॑। अम॑ध्यमासः। मह॑सा। वि। व॒वृ॒धुः। सु॒ऽजा॒तासः॑। ज॒नुषा॑। पृश्नि॑ऽमातरः। दि॒वः। मर्याः॑। आ। नः॒। अच्छ॑। जि॒गा॒त॒न॥६॥

**पदार्थः**-**(ते)** **(अज्येष्ठाः)** अविद्यमानो ज्येष्ठो येषान्ते **(अकनिष्ठासः)** अविद्यमानाः कनिष्ठा येषान्ते **(उद्भिदः)** ये पृथिवीं भित्त्वा प्ररोहन्ति **(अमध्यमासः)** अविद्यमानो मध्यमो येषां ते **(महसा)** महता बलादिना **(वि)** **(वावृधुः)** वर्धन्ते **(सुजातासः)** शोभनेषु व्यवहारेषु प्रसिद्धाः **(जनुषा)** जन्मना **(पृश्निमातरः)** पृश्निरन्तरिक्षं माता येषान्ते **(दिवः)** कामयमानाः **(मर्याः)** मनुष्याः **(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्मान् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(जिगातन)** प्रशंसन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! येऽज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो जनुषा सुजातासः पृश्निमातरो दिवो मर्या महसा वि वावृधुस्ते नोऽच्छाऽऽजिगातन॥६॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्येषु यथावत्सुशिक्षा भवेत्तर्हि कनिष्ठा मध्यमोत्तमा जना विवेकिनो भूत्वा यथावज्जगदुन्नतिं कर्तुं शक्नुयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(अज्येष्ठाः)** नहीं विद्यमान ज्येष्ठ जिनके वा **(अकनिष्ठासः)** नहीं विद्यमान छोटा जिनके वा **(उद्भिदः)** पृथिवी को फोड़कर उगने वाले तथा **(अमध्यमासः)** नहीं विद्यमान मध्यम जिनके वे **(जनुषा)** जन्म से **(सुजातासः)** उत्तम व्यवहारों में प्रसिद्ध वा **(पृश्निमातरः)** अन्तरिक्ष माता जिनका वे और **(दिवः)** कामना करते हुए **(मर्याः)** मनुष्य **(महसा)** बड़े बल आदि से **(वि, वावृधुः)**

विशेष बढ़ते हैं **(ते)** वे **(नः)** हम लोगों की **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(आ, जिगातन)** सब ओर से प्रशंसा करते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्यों में यथायोग्य उत्तम शिक्षा हो तो कनिष्ठ, मध्यम और उत्तम जन विचारशील होकर यथायोग्य जगत् की उन्नति कर सकें॥६॥

**पुनः शिक्षा विषयमाह॥**

फिर शिक्षविषय को कहते हैं॥

**वयो न ये श्रेणीः पप्तुरोजसान्तान् दिवो बृहतः सानुनस्परि।**

**अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः॥७॥**

**वयः। न। ये। श्रेणीः। पप्तुः। ओजसा। अन्तान्। दिवः। बृहतः। सानुनः। परि। अश्वासः। एषाम्। उभये। यथा। विदुः। प्र। पर्वतस्य। नभनून्। अचुच्यवुः॥७॥**

**पदार्थः**-**(वयः)** पक्षिणः **(न)** इव **(ये)** **(श्रेणीः)** पङ्क्तीः **(पप्तुः)** प्राप्नुवन्ति **(ओजसा)** पराक्रमेण **(अन्तान्)** समीपस्थान् **(दिवः)** व्यवहर्तॄन् **(बृहतः)** **(सानुनः)** शिखरस्येव **(परि)** **(अश्वासः)** सद्योगामिनः **(एषाम्)** **(उभये)** **(यथा)** **(विदुः)** जानन्ति **(प्र)** **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(नभनून्)** धनान् **(अचुच्यवुः)** च्यावयेयुः॥७॥

**अन्वयः**-य ओजसा वयो न श्रेणीः पप्तुर्बृहतः सानुनोऽन्तान् दिवः परि पप्तुरेषां य उभयेऽश्वासः सन्ति तान् यथा विदुः पर्वतस्य नभनून् प्राचुच्यवुस्ते जगदाधाराः सन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पक्षिणः श्रेणीभूताः सद्यो गच्छन्ति तथैव सुशिक्षिता भृत्या अश्वादयो यानानि त्रिषु मार्गेषु सद्यो गच्छन्ति॥७॥

**पदार्थः**-**(ये)** जो **(ओजसा)** पराक्रम से **(वयः)** पक्षियों के **(न)** सदृश **(श्रेणीः)** पङ्क्तियों को **(पप्तुः)** प्राप्त होते और **(बृहतः)** बड़े **(सानुनः)** शिखर के समान **(अन्तान्)** समीप में वर्त्तमान **(दिवः)** व्यवहार करने वालों को **(परि)** सब ओर से प्राप्त होते हैं **(एषाम्)** इनके जो **(उभये)** दो प्रकार के **(अश्वासः)** शीघ्र चलने वाले पदार्थ हैं उनको **(यथा)** जिस प्रकार से **(विदुः)** जानते हैं और **(पर्वतस्य)** मेघ के **(नभनून्)** समूहों को **(प्र, अचुच्यवुः)** अत्यन्त वर्षावें, वे संसार के आधार होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पक्षी पंक्तिबद्ध हुए शीघ्र जाते हैं, वैसे ही उत्तम प्रकार शिक्षा युक्त नौकर और घोड़े आदि वाहन तीनों मार्गों में शीघ्र जाते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।**

**आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः॥८॥२४॥**

**मिमातु। द्यौः। अदितिः। वीतये। नः। सम्। दानुऽचित्राः। उषसः। यतन्ताम्। आ। अचुच्यवुः। दिव्यम्। कोशम्। एते। ऋषे। रुद्रस्य। मरुतः। गृणानाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**मिमातु**) (**द्यौः**) प्रकाश इव (**अदितिः**) मातेव (**वीतये**) विज्ञानादिप्राप्तये (**नः**) अस्मान् (**सम्**) सम्यक् (**दानुचित्राः**) चित्रा अद्भुता दानवो दानानि यासु ताः (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**यतन्ताम्**) (**आ, अचुच्यवुः**) आगच्छन्तु (**दिव्यम्**) दिवि कामनायां साधुम् (**कोशम्**) धनालयम् (**एते**) (**ऋषे**) विद्याप्रद (**रुद्रस्य**) अन्यायकारिणो रोदयितुः (**मरुतः**) मनुष्याः (**गृणानाः**) स्तुवन्तः॥८॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! यथाऽदितिर्द्यौर्वीतये नो मिमातु तथा त्वमस्मान् मिमीहि। यथा दानुचित्रा उषसो व्यवहारान् निर्म्मापयन्ति यथैत रुद्रस्य दिव्यं कोशमाचुच्यवुस्तथा गृणाना मरुतः सं यतन्ताम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्युद्वदुषर्वदृषिवद्धनकोशं सञ्चिन्वन्ति ते प्रतिष्ठिता भवन्ति॥८॥

अत्र वायुविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनषष्टितमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**ऋषे**) विद्या के देने वाले! जैसे (**अदितिः**) माता वा (**द्यौः**) प्रकाश के सदृश (**वीतये**) विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये (**नः**) हम लोगों का (**मिमातु**) आदर करे, वैसे आप आदर करिये जैसे (**दानुचित्राः**) अद्भुत दान जिनमें ऐसी (**उषसः**) प्रातर्वेलायें व्यवहारों को सिद्ध कराती हैं वा जैसे (**एते**) ये (**रुद्रस्य**) अन्यायकारियों को रुलाने वाले (**दिव्यम्**) कामना में श्रेष्ठ (**कोशम्**) धन के स्थान को (**आ, अचुच्यवुः**) प्राप्त होवें वैसे (**गृणानाः**) स्तुति करते हुए (**मरुतः**) मनुष्य (**सम्**) उत्तम प्रकार (**यतन्ताम्**) प्रयत्न करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन बिजुली, प्रातःकाल और ऋषि के सदृश धन के कोश को इकट्ठा करते हैं, वे प्रतिष्ठित होते हैं॥८॥

इस सूक्त में पवन और बिजुली के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनसठवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य षष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो वाग्निश्च देवता। ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७, ८ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं साधनीयमित्याह॥***

अब मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ईळे॑ अ॒ग्निं स्वव॑सं॒ नमो॑भिरि॒ह प्र॑स॒त्तो वि च॑यत्कृ॒तं नः॑।**

**रथै॑रिव॒ प्र भ॑रे वा॒ज॒यद्भिः॑ प्रदक्षि॒णिन्म॒रुतां॒ स्तोम॑मृध्याम्॥ १॥**

**ईळे॑। अ॒ग्निम्। सु॒ऽअव॑सम्। नम॑ःऽभिः। इ॒ह। प्र॒ऽस॒त्तः। वि। च॒य॒त्। कृ॒तम्। न॒ः। रथैः॑ऽइव। प्र। भ॒रे। वा॒ज॒यत्ऽभिः॑। प्र॒ऽद॒क्षि॒णित्। म॒रुता॑म्। स्तोम॑म्। ऋ॒ध्या॒म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ईळे**) अधीच्छामि (**अग्निम्**) विद्युतम् (**स्ववसम्**) सुष्ठ्ववो रक्षणं यस्मात्तम् (**नमोभिः**) सत्कारैः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**प्रसत्तः**) प्रसन्नः (**वि**) (**चयत्**) विचिनोमि (**कृतम्**) (**नः**) अस्मान् (**रथैरिव**) (**प्र**) (**भरे**) (**वाजयद्भिः**) वेगवद्भिः (**प्रदक्षिणित्**) यः प्रदक्षिणां नयति (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**ऋध्याम्**) वर्धयेयम्॥ १॥

**अन्वयः**-यथा प्रसत्त इहाहं नमोभिरस्मि तथा नमोभिः स्ववसमग्निमीळे कृतं वि चयत्। ये मरुतां गणा वाजयद्भी रथैरिव नोऽस्मान् वहन्ति तानहं प्र भरे प्रदक्षिणिदहं मरुतां स्तोमममृध्याम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। विदुषा विदुषां सङ्गेनाग्न्यादिविद्यामाविर्भाव्य प्रसन्नता सम्पादनीया॥ १॥

**पदार्थः**-जैसे (**प्रसत्तः**) प्रसन्न (**इह**) इस संसार में मैं (**नमोभिः**) सत्कारों से हूँ वैसे सत्कारों से (**स्ववसम्**) उत्तम रक्षण जिससे उस (**अग्निम्**) बिजुली की (**ईळे**) अधिक इच्छा करता और (**कृतम्**) किये काम को (**वि, चयत्**) विवेक करता हूँ और जो (**मरुताम्**) मनुष्यों के समूह (**वाजयद्भिः**) वेग वाले (**रथैरिव**) वाहनों के सदृश पदार्थों से (**नः**) हम लोगों को पहुँचाते हैं उनको मैं (**प्र, भरे**) धारण करता हूँ और (**प्रदक्षिणित्**) प्रदक्षिणा को प्राप्त कराने वाला मैं मनुष्यों की (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**ऋध्याम्**) बढाऊं॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। विद्वान् जन को चाहिये कि विद्वानों के सङ्ग से अग्नि आदि विद्या को प्रकट करा के प्रसन्नता सम्पादित करे॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ये त॒स्थुः पृष॑तीषु श्रु॒तासु॑ सु॒खेषु॑ रु॒द्रा म॒रुतो॒ रथे॑षु।**

**वना॑ चिदुग्रा जिहते नि वो॑ भिया पृथिवी चि॑द्रेजते पर्व॑तश्चित्॥२॥**

**आ। ये। तस्थुः। पृष॑तीषु। श्रुतासु॑। सुऽखेषु॑। रुद्राः। मरुतः। रथे॑षु। वना॑। चित्। उग्राः। जिहते। नि। वः। भिया। पृथिवी। चित्। रेजते। पर्व॑तः। चित्॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**ये**) (**तस्थुः**) (**पृषतीषु**) सेचनकर्त्रीषु (**श्रुतासु**) विद्यासु (**सुखेषु**) (**रुद्राः**) प्राणादयः (**मरुतः**) मनुष्याः (**रथेषु**) विमानादिषु यानेषु (**वना**) किरणाः (**चित्**) अपि (**उग्राः**) तीव्रस्वभावाः (**जिहते**) गच्छन्ति (**नि**) नितराम् (**वः**) युष्माकम् (**भिया**) भयेन (**पृथिवी**) भूमिः (**चित्**) (**रेजते**) कम्पते (**पर्वतः**) मेघः (**चित्**) इव॥२॥

**अन्वयः**-ये रुद्रा मरुतः श्रुतासु पृषतीषु सुखेषु रथेष्वा तस्थुश्चिदपि वनोग्रा इव नि जिहते। वो भिया पृथिवी चिद्रेजते पर्वतश्चिदिव रेजते तान् वयं सततं सत्कुर्याम॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! उत्तमासु विद्यासूत्तमेषु यानेषु च स्थित्वा शीघ्रगमनाय समर्था भवत॥२॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**रुद्राः**) प्राण आदि और (**मरुतः**) मनुष्य (**श्रुतासु**) विद्याओं में (**पृषतीषु**) सेचन करने वालियों में (**सुखेषु**) सुखों में और (**रथेषु**) विमानादि वाहनों में (**आ, तस्थुः**) स्थित होवें (**चित्**) और (**वना**) किरण (**उग्राः**) तीव्र स्वभाव वालों के सदृश (**नि, जिहते**) निरन्तर जाते हैं और (**वः**) आप लोगों के (**भिया**) भय से (**पृथिवी**) भूमि (**चित्**) भी (**रेजते**) कम्पित होती है (**पर्वतः**) मेघ के (**चित्**) समान पदार्थ कम्पित होता है, उनका हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! उत्तम विद्याओं और उत्तम वाहनों पर स्थित होकर शीघ्र जाने के लिये समर्थ हूजिये॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पर्व॑तश्चिन्महि॑ वृद्धो बि॑भाय दिवश्चि॑त्सानु॑ रेजत स्वने वः।**
**यत्क्रीळ॑थ मरुत ऋष्टिमन्त आप॑इव सध्र्य॑ञ्चो धवध्वे॥३॥**

**पर्व॑तः। चित्। महि॑। वृद्धः। बिभाय। दिवः। चित्। सानु॑। रेजत। स्वने। वः। यत्। क्रीळथ। मरुतः। ऋष्टिऽमन्तः। आप॑ःऽइव। सध्र्य॑ञ्चः। धवध्वे॥३॥**

**पदार्थः**-(**पर्वतः**) मेघः (**चित्**) इव (**महि**) महान् (**वृद्धः**) (**बिभाय**) बिभेति (**दिवः**) प्रकाशात् (**चित्**) (**सानु**) शिखरमिव (**रेजत**) कम्पते (**स्वने**) शब्दे (**वः**) युष्माकम् (**यत्**) यत्र (**क्रीळथ**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**ऋष्टिमन्तः**) प्रशस्तविज्ञानवन्तः (**आपइव**) (**सध्र्यञ्चः**) सहाञ्चन्तः (**धवध्वे**) कम्पयध्वे॥३॥

**अन्वयः**-हे ऋष्टिमन्तो मरुतो! यद्यूयं क्रीळथाऽऽपइव सध्र्यञ्चो धवध्वे वः स्वने पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय दिवश्चित्सानु रेजत तत्रान्वेषणं कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्याव्यवहारसिद्धये क्रीडन्ते तथा सखायो भूत्वा कार्य्यसिद्धिं कुर्वन्ति ते सर्वथाऽऽनन्दिता जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे **(ऋष्टिमन्तः)** अच्छे विज्ञान वाले **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यत्)** जहाँ तुम **(क्रीळथ)** क्रीड़ा करते हो **(आपइव)** जलों के सदृश **(सध्र्यञ्चः)** एक साथ गमन करते हुए **(धवध्वे)** कंपाओ और **(वः)** आप लोगों के **(स्वने)** शब्द में **(पर्वतः)** मेघ के **(चित्)** सदृश **(महि)** बड़ा **(वृद्धः)** वृद्ध **(बिभाय)** डरता है **(दिवः)** प्रकाश से **(चित्)** भी जैसे वैसे **(सानु)** शिखर के तुल्य **(रेजत)** कम्पित होता है, वहाँ अन्वेषण करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या के व्यवहार की सिद्धि के लिये क्रीड़ा करते हैं तथा मित्र होकर कार्य की सिद्धि करते हैं, वे सब प्रकार आनन्दित होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**वराइवेद् रैवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे।**
**श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूषु॥४॥**

**वराःऽईव। इत्। रैवतासः। हिरण्यैः। अभि। स्वधाभिः। तन्वः। पिपिश्रे। श्रिये। श्रेयांसः। तवसः। रथेषु। सत्रा। महांसि। चक्रिरे। तनूषु॥४॥**

**पदार्थः**-**(वराइव)** वरैस्तुल्याः **(इत्)** एव **(रैवतासः)** रेवतीषु पशुषु भवाः **(हिरण्यैः)** सुवर्णैस्तेज आदिभिः **(अभि)** **(स्वधाभिः)** अन्नादिभिः **(तन्वः)** शरीराणि **(पिपिश्रे)** स्थूलावयवानि कुर्वन्ति **(श्रिये)** लक्ष्म्यै **(श्रेयांसः)** अतिशयेन श्रेय इच्छन्तः **(तवसः)** बलिष्ठा गतिमन्तः **(रथेषु)** यानेषु **(सत्रा)** सत्यानि **(महांसि)** **(चक्रिरे)** कुर्वन्ति **(तनूषु)** शरीरेषु॥४॥

**अन्वयः**-ये श्रेयांसस्तवसो रैवतासो मनुष्या वराइवेद्धिरण्यैः स्वधाभिस्तन्वः पिपिश्रे। श्रिये रथेषु तनूषु सत्रा महांस्यभि चक्रिरे ते भाग्यशालिनो भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्यशरीरमाश्रित्य श्रियमन्विच्छन्ति ते दारिद्र्यं घ्नन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(श्रेयांसः)** अत्यन्त कल्याण की इच्छा करते हुए **(तवसः)** बलवान् गति वाले **(रैवतासः)** पशुओं में हुए मनुष्य **(वराइव)** श्रेष्ठों के तुल्य **(इत्)** ही **(हिरण्यैः)** सुवर्ण तेज आदिकों से और **(स्वधाभिः)** अन्न आदिकों से **(तन्वः)** शरीरों को **(पिपिश्रे)** स्थूल अवयव वाले करते हैं, और **(श्रिये)** लक्ष्मी के लिये **(रथेषु)** वाहनों और **(तनूषु)** शरीरों में **(सत्रा)** सत्य **(महांसि)** बड़े काम **(अभि, चक्रिरे)** करते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य के शरीर का आश्रय करके लक्ष्मी की इच्छा करते हैं, वे दारिद्र्य का नाश करते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं भवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ज्ये॒ष्ठासो॒ अक॑निष्ठास ए॒ते सं भ्रात॑रो वावृधुः सौभ॑गाय।**

**युवा॑ पि॒ता स्व॒पा रु॒द्र ए॑षां सु॒दुघा॒ पृश्नि॑ः सु॒दिना॑ म॒रुद्भ्य॑ः॥५॥**

**अ॒ज्ये॒ष्ठास॑ः। अक॑निष्ठासः। ए॒ते। सम्। भ्रात॑रः। व॒वृ॒धुः। सौभ॑गाय। युवा॑। पि॒ता। सु॒ऽअपा॑ः। रु॒द्रः। ए॒षा॒म्। सु॒ऽदुघा॑। पृश्नि॑ः। सु॒ऽदिना॑। म॒रुत्ऽभ्य॑ः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अज्येष्ठासः**) ज्येष्ठभावरहिताः (**अकनिष्ठासः**) कनिष्ठभावमप्राप्ताः (**एते**) (**सम्**) (**भ्रातरः**) बन्धवः (**वावृधुः**) वर्धन्ते (**सौभगाय**) श्रेष्ठैश्वर्य्यस्य भावाय (**युवा**) (**पिता**) पालकः (**स्वपाः**) श्रेष्ठकर्मानुष्ठानः (**रुद्रः**) अन्येषां रोदयिता (**एषाम्**) (**सुदुघा**) सुष्ठु कामस्य प्रपूरिका (**पृश्निः**) अन्तरिक्षमिव बुद्धिः (**सुदिना**) उत्तमदिना (**मरुद्भ्यः**) वायुभ्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स्वपा युवा रुद्रः पितैषां सुदुघा सुदिना पृश्निर्मरुद्भ्यो मनुष्येभ्यो विद्यादिदानं ददाति तथाऽज्येष्ठासोऽकनिष्ठास एते भ्रातरः सौभगाय सं वावृधुः॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पूर्णयुवावस्थायां विद्याः समाप्य सुशीलतां स्वीकृत्यातीवोत्तमाः सन्तः सुशीलाः स्त्रियः स्वीकृत्य च प्रयतन्ते त ऐश्वर्य्यं प्राप्यानन्दिता भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**स्वपाः**) श्रेष्ठ कर्म का अनुष्ठान करने वाला (**युवा**) युवावस्थायुक्त और (**रुद्रः**) अन्यों को रुलाने वाला (**पिता**) पालक जन और (**एषाम्**) इन की (**सुदुघा**) उत्तम प्रकार मनोरथ को पूर्ण करने वाली (**सुदिना**) सुन्दर दिन जिससे वह (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष के सदृश बुद्धि (**मरुद्भ्यः**) मनुष्यों के लिये विद्यादि दान देती है, वैसे (**अज्येष्ठासः**) जेठेपन से रहित (**अकनिष्ठासः**) कनिष्ठपन से रहित (**एते**) ये (**भ्रातरः**) बन्धु जन (**सौभगाय**) श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य होने के लिये (**सम्, वावृधुः**) बढ़ते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पूर्ण युवावस्था में विद्याओं को समाप्त कर और सुशीलता को स्वीकार कर बहुत ही उत्तम हुए उत्तम स्वभावयुक्त स्त्रियों को विवाह द्वारा स्वीकार करके प्रयत्न करते हैं, वे ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर आनन्दित होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यदु॑त्त॒मे म॑रुतो मध्य॒मे वा॒ यद्वा॑व॒मे सु॑भगासो दि॒वि ष्ठ।**

**अतो॑ नो रुद्रा उ॒त वा॒ न्व१॒॑स्याग्ने॑ वि॒त्ताद्ध॒विषो॒ यद्यजा॑म॥६॥**

**यत्। उत्ऽतमे। मरुतः। मध्यमे। वा। यत्। वा। अवमे। सुऽभगासः। दिवि। स्थ। अतः। नः। रुद्राः। उत। वा। नु। अस्य। अग्ने। वित्तात्। हविषः। यत्। यजाम॥६॥**

**पदार्थः-(यत्)** यत्र **(उत्तमे) [**उत्तमे**]** व्यवहारे **(मरुतः)** मनुष्याः **(मध्यमे)** मध्यस्थे **(वा) (यत्)** यत्र **(वा) (अवमे)** निकृष्टे **(सुभगासः)** उत्तमैश्वर्याः **(दिवि)** शुद्धे व्यवहारे **(स्थ)** भवत **(अतः)** अस्मात् कारणात् **(नः)** अस्मान् **(रुद्राः)** मध्यस्था विद्वांसः **(उत) (वा) (नु) (अस्य) (अग्ने)** पावकवत् प्रकाशितात्मन् **(वित्तात्) (हविषः)** भोक्तुमर्हात् **(यत्)** यम् **(यजाम)** प्रेरयेम॥६॥

**अन्वयः-**हे सुभगासो रुद्रा मरुतो! यूयं यदुत्तमे मध्यमे वावमे यद्वान्यत्रावमे दिवि वा स्थ तत्रातो नोऽस्मानुत्तमे व्यवहारे स्थापयत। उत वा हे अग्नेऽस्य वित्ताद्धविषो यन्नु वयं यजाम तत्र त्वमपि यजस्व॥६॥

**भावार्थः-**ये मनुष्या उत्तममध्यमकनिष्ठेषु व्यवहारेषु यथावद्वर्त्तित्वोत्तमैश्वर्या जायन्ते तान् सर्वे सत्कुर्य्युः॥६॥

**पदार्थः-**हे **(सुभगासः)** उत्तम ऐश्वर्य्य वाले और **(रुद्राः)** मध्यस्थ विद्वान् **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(यत्)** जिस **(उत्तमे)** उत्तम व्यवहार में **(मध्यमे)** मध्यस्थ व्यवहार में **(वा)** वा **(अवमे)** निकृष्ट व्यवहार में **(यत्)** जहाँ **(वा)** अथवा अन्यत्र निकृष्ट व्यवहार में **(दिवि)** शुद्ध व्यवहार में **(स्थ)** हूजिये वहाँ **(अतः)** इस कारण से **(नः)** हम लोगों को उत्तम व्यवहार में स्थापित कीजिये **(उत, वा)** और अथवा हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रकाशित आत्मा वाले! **(अस्य)** इसके **(वित्तात्)** धन से और **(हविषः)** भोग करने योग्य से **(यत्)** जिसको **(नु)** निश्चय हम लोग **(यजाम)** प्रेरणा करें, वहाँ आप भी प्रेरणा करिये॥६॥

**भावार्थः-**जो मनुष्य उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ व्यवहारों में यथायोग्य वर्त्ताव करके उत्तम ऐश्वर्य्य वाले होते हैं, उनका सब लोग सत्कार करें॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्व उत्तरादधि ष्णुभिः।**

**ते मन्दसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते॥७॥**

**अग्निः। च। यत्। मरुतः। विश्वऽवेदसः। दिवः। वहध्वे। उत्ऽतरात्। अधि। स्नुऽभिः। ते। मन्दसानाः। धुनयः। रिशादसः। वामम्। धत्त। यजमानाय। सुन्वते॥७॥**

**पदार्थः-(अग्निः)** पावक इव **(च) (यत्)** ये **(मरुतः)** मननशीला मानवाः **(विश्ववेदसः)** समग्रैश्वर्याः **(दिवः)** कामयमानाः **(वहध्वे)** प्राप्नुत **(उत्तरात्)** पश्चात् **(अधि)** उपरिभावे **(स्नुभिः)** इच्छावद्भिः **(ते) (मन्दसानाः)** आनन्दन्तः **(धुनयः)** दुष्टानां कम्पकाः **(रिशादसः)** हिंसकानां नाशकाः **(वामम्)** प्रशस्यम् **(धत्त) (यजमानाय)** सङ्गन्त्रे **(सुन्वते)** यज्ञकर्त्रे॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्योऽग्निरिव विश्ववेदसो दिवो रिशादसो मन्दसानो धुनयो मरुतो यूयं सुन्वते यजमानाय वामं धत्त। उत्तरादधि ष्णुभिर्वामं वहध्वे ते च यूयं सदा सर्वानुपकुरुत॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव महात्मानः सन्ति ये सर्वार्थं सत्यं दधति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(विश्ववेदसः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त **(दिवः)** कामना करते हुए **(रिशादसः)** हिंसकों के नाश करने वाले **(मन्दसानाः)** आनन्द करते हुए **(धुनयः)** दुष्टों के कम्पाने वाले **(मरुतः)** विचारशील मनुष्य आप लोग **(सुन्वते)** यज्ञ करने और **(यजमानाय)** पदार्थों के मेल करने वाले जन के लिये **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य व्यवहार को **(धत्त)** धारण करो और **(उत्तरात्)** पीछे से **(अधि)** ऊपर के होने में **(स्नुभिः)** इच्छा वालों से प्रशंसा करने योग्य को **(वहध्वे)** प्राप्त हूजिये **(ते, च)** वे भी आप लोग सदा सब का उपकार करिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही महात्मा हैं जो सब के लिये सत्य को धारण करते हैं॥७॥

**अथ विद्वत्सेवनमाह॥**

अब विद्वानों की सेवा करना अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने॑ म॒रुद्भिः॑ शु॒भय॑द्भि॒र्ऋक्व॑भिः॒ सोमं॑ पिब मन्दसा॒नो ग॑ण॒श्रिभिः॑।**
**पा॒व॒केभि॑र्विश्वमि॒न्वेभि॑रा॒युभि॒र्वैश्वा॑नर प्र॒दिवा॑ के॒तुना॑ स॒जूः॥८॥२५॥**

अग्ने॑। म॒रुत्ऽभिः॑। शु॒भय॑त्ऽभिः। ऋक्व॑ऽभिः। सोम॑म्। पि॒ब॒। म॒न्द॒सा॒नः। ग॒ण॒श्रिऽभिः॑। पा॒व॒केभिः॑। वि॒श्व॒म्ऽइ॒न्वेभिः॑। आ॒युऽभिः॑। वैश्वा॑नर। प्र॒ऽदिवा॑। के॒तुना॑। स॒ऽजूः॥८॥

**पदार्थः**-**(अग्ने)** विद्वन् **(मरुद्भिः)** मनुष्यैः **(शुभयद्भिः)** शुभमाचरद्भिः **(ऋक्वभिः)** सत्कर्त्तव्यैः **(सोमम्)** महौषधिरसम् **(पिब)** **(मन्दसानः)** आनन्दन् **(गणश्रिभिः)** समुदायलक्ष्मीभिः **(पावकेभिः)** पवित्रैः **(विश्वमिन्वेभिः)** सर्वं जगद्व्यवहारं प्रापयद्भिः **(आयुभिः)** जीवनैः **(वैश्वानर)** विश्वेषु सर्वेषु नायक **(प्रदिवा)** प्रकृष्टप्रकाशवता **(केतुना)** प्रज्ञया सह **(सजूः)** समानप्रीतिसेवी॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! गणश्रिभिर्मन्दसानः प्रदिवा केतुना सजूर्वैश्वानर त्वं शुभयद्भिर्ऋक्वभिः पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्मरुद्भिः सह सोमं पिब॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्याणां योग्यतास्ति सदाऽऽप्तैर्विद्वद्भिस्सह सङ्गत्य विद्यायुः प्रज्ञा वर्धयित्वौषधवदाहारविहारौ च विधाय शुभाचरणं सर्वदा कुर्युरिति॥८॥

अत्र वाय्वग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्टितमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(गणश्रिभिः)** समुदाय की लक्ष्मियों से **(मन्दसानः)** आनन्द करता हुआ **(प्रदिवा)** अत्यन्त प्रकाश वाली **(केतुना)** बुद्धि के साथ **(सजूः)** तुल्य प्रीति को सेवने वाले

**(वैश्वानर)** सब में मुख्य आप **(शुभयद्भिः)** उत्तम आचरण करने वाले **(ऋक्वभिः)** सत्कार करने योग्य **(पावकेभिः)** पवित्र **(विश्वमिन्वेभिः)** सम्पूर्ण संसार के व्यवहार को प्राप्त कराते हुए **(आयुभिः)** जीवनों में **(मरुद्भिः)** मनुष्यों के साथ **(सोमम्)** बड़ी औषधियों के रस का **(पिब)** पान करिये॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यों की योग्यता है कि सदा यथार्थवक्ता विद्वानों के साथ मिलकर विद्या, अवस्था और बुद्धि को बढ़ाकर औषध के सदृश आहार और विहार को करके उत्तम आचरण सर्वदा करें॥८॥

इस सूक्त में वायु, अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह साठवां सूक्त और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथैकोनविंशत्यृचस्यैकषष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। १-४, ११-१६ मरुतः। ५-८ शशीयसी तरन्तमहिषी। ९ पुरुमीळ्हो वैददश्विः। १० तरन्तो वैददश्विः। १७-१९ रथवीतिर्दाल्भ्यो देवताः। १, ४, ६, ७, ८, ११, १५, १६, १८ गायत्री। २, ३, १०, १२-१४, १९ निचृद्गायत्री। १७ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ५ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ९ सतोबृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ प्रश्नोत्तरैर्मरुदादिगुणानाह॥***

अब उन्नीस ऋचा वाले एकसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रश्नोत्तरों से मरुदादिकों के गुणों को कहते हैं॥

**के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय। परमस्याः परावतः॥१॥**

**के। स्थ। नरः। श्रेष्ठऽतमाः। ये। एकःऽएकः। आऽयय। परमस्याः। पराऽवतः॥१॥**

**पदार्थः-(के) (स्था)** तिष्ठत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(नरः)** नायकाः **(श्रेष्ठतमाः)** अतिशयेन श्रेयस्कराः **(ये) (एकएकः) (आयय)** आयाथ **(परमस्याः)** अतिश्रेष्ठायाः **[**पारगन्तारः**] (परावतः)** दूरतः॥१॥

**अन्वयः**-हे श्रेष्ठतमा नरः! परमस्याः पारगन्तारः के यूयं स्था ये परावत आगत्य उपदिशन्ति येषां मध्य एकएको यूयं परावतो देशादेकमायय॥१॥

**भावार्थः**-के श्रेष्ठतमा मनुष्या भवन्ति? ये सर्वदा श्रेष्ठतमानि कर्माणि कुर्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे **(श्रेष्ठतमाः)** अत्यन्त कल्याण करने वाले **(नरः)** नायक जनो! **(परमस्याः)** अत्यन्त श्रेष्ठ के पार जाने वाले **(के)** कौन **(स्था)** ठहरें **(ये)** जो **(परावतः)** दूर से आकर उपदेश करते हैं और जिनके मध्य में **(एकएकः)** एकएक आप दूर देश से एक को **(आयय)** प्राप्त होवें॥१॥

**भावार्थः**-कौन अत्यन्त श्रेष्ठ मनुष्य होते हैं? जो सर्वदा अत्यन्त श्रेष्ठ कर्म्मों को करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क्व१ वोऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय। पृष्ठे सदो नसोर्यमः॥२॥**

**क्व। वः। अश्वाः। क्व। अभीशवः। कथम्। शेक। कथा। यय। पृष्ठे। सदः। नसोः। यमः॥२॥**

**पदार्थः-(क्व)** कस्मिन् **(वः)** युष्माकम् **(अश्वाः)** आशुगामिनः **(क्व) (अभीशवः)** अङ्गुलय इव। **अभीशव इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं०२.५) **(कथम्) (शेक)** सद्योगामिनो भवत **(कथा)** केन प्रकारेण **(यय)** गच्छत **(पृष्ठे)** पश्चाद्भागे **(सदः)** छेद्यं वस्तु **(नसोः)** नासिकयोः **(यमः)** नियन्ता॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वः क्वाश्वाः क्वाभीशवः सन्ति तान् यूयं कथं शेक कथा यय। यथा नसोः पृष्ठे सदो यमोऽस्ति तथा यूयं भवत॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदा कश्चित् विदुषः पृच्छेत्तदा त उत्तरं दद्युः पक्षपातञ्च विहाय न्यायाधीशा इव भवेयुस्तदा समग्रं बोधमाप्नुयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(वः)** आप लोगों के **(क्व)** कहाँ **(अश्वाः)** शीघ्र चलने वाले घोड़े और **(क्व)** कहाँ **(अभीशवः)** अङ्गुलियां हैं, उनको आप लोग **(कथम्)** किस प्रकार **(शेक)** शीघ्र पहुंचने वाले हूजिये और **(कथा)** किस प्रकार से **(यय)** जाइये और जैसे **(नसोः)** नासिकाओं के **(पृष्ठे)** पीछे के भाग में **(सदः)** छेदन करने योग्य वस्तु का **(यमः)** नियन्ता है, वैसे आप लोग हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जब कोई विद्वानों को पूछे तब वे उत्तर दें और पक्षपात को छोड़कर न्यायाधीशों के सदृश होवें, तब सम्पूर्ण बोध को प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

## जघने चोदं एषां वि सक्थानि नरो यमुः। पुत्रकृथे न जनयः॥३॥

**जघने। चोदः। एषाम्। वि। सक्थानि। नरः। यमुः। पुत्रऽकृथे। न। जनयः॥३॥**

**पदार्थः**-**(जघने)** कट्यधोभागावयवे **(चोदः)** प्रेरकः **(एषाम्)** **(वि)** **(सक्थानि)** सक्थीनि **(नरः)** नेतारः **(यमुः)** नियच्छेयुः **(पुत्रकृथे)** पुत्रकरणे **(न)** इव **(जनयः)** मातापितरः॥३॥

**अन्वयः**-हे नरः! पुत्रकृथे जनयो नैषां जघने यश्चोदोऽस्ति ये सक्थानि वि यमुस्तान् यूयं सत्कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा जनका मातापितरः सुनियमेन सन्तानोत्पत्तिं कृत्वैतान् सुनियम्य सुशिक्षितान् कुर्युस्तथा सर्वे कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक जनो! **(पुत्रकृथे)** पुत्र करने में **(जनयः)** माता-पिता **(न)** जैसे वैसे **(एषाम्)** इनके **(जघने)** कटि के नीचे के भाग के अवयवों को जो **(चोदः)** प्रेरणा करने वाला है और जो **(सक्थानि)** घुटनों को **(वि, यमुः)** नियम में रक्खें, उनका आप लोग सत्कार करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे उत्पन्न करने वाले माता-पिता सुन्दर नियम से सन्तानोत्पत्ति करके इनको उत्तम प्रकार नियम युक्त करके उत्तम प्रकार शिक्षित करें, वैसे सब करें॥३॥

**अथ विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

अब विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

## परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः। अग्नितपो यथासथ॥४॥

**परा। वीरासः। इतन। मर्यासः। भद्रऽजानयः। अग्निऽतपः। यथा। असथ॥४॥**

**पदार्थः**-(**परा**) दूरार्थे (**वीरासः**) व्याप्तविद्याबलाः (**एतन**) प्राप्नुत। अत्रेण्गतावित्यस्माल्लोटि युष्मद्बहुवचने **तप्तनप्तनथनाश्च** (अष्टा०७.१.४५) इति तनबादेशः। (**मर्यासः**) मनुष्याः (**भद्रजानयः**) ये भद्रं कल्याणं जानन्ति ते (**अग्नितपः**) येऽग्निना तापयन्ति ते (**यथा**) (**असथ**) भवथ॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यथाऽग्नितपो वीरासो मर्यासः परैतन भद्रजानयोऽसथ तथा ते सत्कर्त्तव्यास्युः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये बन्धनसाधनं पापाचरणं त्यक्त्वा त्याजयित्वा मुक्तिसाधनं गृहीत्वा ग्राहयित्वा सर्वानानन्दयन्ति तान्सर्व आनन्दयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**यथा**) जैसे (**अग्नितपः**) अग्नि से तपाने वाले (**वीरासः**) विद्या और बल से व्याप्त (**मर्यासः**) मनुष्य (**परा**) दूर के लिये (**एतन**) प्राप्त हों और (**भद्रजानयः**) कल्याण के जानने वाले (**असथ**) होवें, वैसे वे सत्कार करने योग्य होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो बन्धन के साधन और पाप के आचरण का त्याग कर और त्याग करा के और मुक्ति के साधन को ग्रहण कर और ग्रहण करा के सब को आनन्दित करते हैं, उनको सब आनन्दित करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम्।**

**श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्बृहत्॥५॥२६॥**

**सनत्। सा। अश्व्यम्। पशुम्। उत। गव्यम्। शतऽअवयम्। श्यावाश्वऽस्तुताय। या। दोः। वीराय। उपऽबर्बृहत्॥५॥**

**पदार्थः**-(**सनत्**) सनातनम् (**सा**) विदुषी स्त्री (**अश्व्यम्**) अश्वेषु साधुम् (**पशुम्**) पश्यन्तम् (**उत**) अपि (**गव्यम्**) गोषु साधुम् (**शतावयम्**) शतान्यवयवा यस्मिँस्तम् (**श्यावाश्वस्तुताय**) श्यावैरश्वैः प्रशंसिताय (**या**) (**दोः**) भुजस्य बलम् (**वीराय**) शूराय (**उपबर्बृहत्**) भृशमुपबर्हयति॥५॥

**अन्वयः**-या श्यावाश्वस्तुताय वीराय दोरुपबर्बृहत् सा सनदश्व्यं गव्यमुत शतावयं पशुं वर्धयितुं शक्नोति॥५॥

**भावार्थः**-सैव स्त्री प्रशंसिता भवति या स्वपतिं कामासक्तं कृत्वा बलं न नाशयति गृहस्थानश्वादीन् सम्पाल्य वर्धयति॥५॥

**पदार्थः**-(**या**) जो (**श्यावाश्वस्तुताय**) घोड़ों से प्रशंसित (**वीराय**) वीर जन के लिये (**दोः**) भुजा का बल (**उपबर्बृहत्**) अत्यन्त समीप में देती है (**सा**) वह विद्यायुक्त स्त्री (**सनत्**) सनातन (**अश्व्यम्**)

घोड़ों में श्रेष्ठ **(गव्यम्)** गौओं में श्रेष्ठ **(उत)** और **(शतावयम्)** सौ अवयव जिसमें उस **(पशुम्)** देखते हुए को बढ़ा सकती है॥५॥

**भावार्थः**-वही स्त्री प्रशंसित होती है, जो अपने पति को काम में आसक्त करके बल का नाश नहीं करती है और गृहस्थित घोड़े आदि का पालन करके बढ़ाती है॥५॥

**पुनः स्त्रीपुरुषार्थोपदेशमाह॥**

फिर स्त्री के पुरुषार्थ उपदेश को कहते हैं॥

**उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी। अदेवत्रादराधसः॥६॥**

**उत। त्वा। स्त्री। शशीयसी। पुंसः। भवति। वस्यसी। अदेवऽत्रात्। अराधसः॥६॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(त्वा)** त्वाम् **(स्त्री)** **(शशीयसी)** अतिशयेन दुःखं प्लावयन्ती **(पुंसः)** पुरुषस्य **(भवति)** **(वस्यसी)** अतिशयेन वसुमती **(अदेवत्रात्)** देवान् त्रायते यस्मात्तद्विरुद्धात् **(अराधसः)** अधनात्॥६॥

**अन्वयः**-हे पुरुष! या स्त्री-अदेवत्रादराधसः पृथग्भूत्वा पुंसो वस्यस्युत शशीयसी भवति त्वा सुखयति तां त्वं सुखय॥६॥

**भावार्थः**-सैव स्त्री पत्या माननीया भवति याऽन्यायाचरणादपूज्यपूजनाद्विरहा सती पतिं सुखयति सैव पत्या सततं सत्कर्त्तव्यास्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे पुरुष! जो **(स्त्री)** स्त्री **(अदेवत्रात्)** विद्वानों की रक्षा करता है जिससे उससे विरुद्ध **(अराधसः)** धनविरुद्ध पदार्थ से पृथक् होकर **(पुंसः)** पुरुष की **(वस्यसी)** अत्यन्त धनवाली **(उत)** और **(शशीयसी)** अत्यन्त दुःख को दूर करने वाली **(भवति)** होती और **(त्वा)** आपको सुखी करती है, उसको आप सुखयुक्त करो॥६॥

**भावार्थः**-वही स्त्री पति से आदर करने योग्य होती है जो अन्यायाचरण और नहीं आदर करने योग्य के आदर करने से रहित हुई पति को सुखी करती है, वही पति से निरन्तर आदर करने योग्य होती है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम्। देवत्रा कृणुते मनः॥७॥**

**वि। या। जानाति। जसुरिम्। वि। तृष्यन्तम्। वि। कामिनम्। देवऽत्रा। कृणुते। मनः॥७॥**

**पदार्थः**-**(वि)** विशेषेण **(या)** **(जानाति)** **(जसुरिम्)** प्रयतमानम् **(वि)** **(तृष्यन्तम्)** तृषातुरमिव **(वि)** **(कामिनम्)** कामातुरम् **(देवत्रा)** देवेषु **(कृणुते)** करोति **(मनः)** चित्तम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या जसुरिं वि जानाति तृष्यन्तं वि जानाति कामिनं वि जानाति सा देवत्रा मनः

कृणुते॥७॥

**भावार्थः**-या स्त्री पुरुषार्थिनं धार्मिकं लोभिनं कामातुरं च पतिं विज्ञाय दोषनिवारणाय गुणग्रहणाय च प्रेरयति सैव पत्यादिकल्याणकारिणी भवति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(जसुरिम्)** प्रयत्न करते हुए को **(वि)** विशेष करके **(जानाति)** जानती है **(तृष्यन्तम्)** पिपासा से व्याकुल हुए के तुल्य को **(वि)** विशेष करके जानती है और **(कामिनम्)** कामातुर पुरुष को **(वि)** विशेष करके जानती है वह **(देवत्रा)** विद्वानों में **(मनः)** चित्त **(कृणुते)** करती है॥७॥

**भावार्थः**-जो स्त्री पुरुषार्थी, धार्मिक, लोभी और कामातुर पति को जानकर दोषों के निवारण और गुणों के ग्रहण करने के लिये प्रेरणा करती है, वही पति आदि की कल्याण करने वाली होती है॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः। स वैरदेय इत्समः॥८॥**

**उत। घ। नेमः। अस्तुतः। पुमान्। इति। ब्रुवे। पणिः। सः। वैरऽदेये। इत्। समः॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(नेमः)** अर्द्धाधिकारी **(अस्तुतः)** अप्रशंसितः **(पुमान्)** पुरुषः **(इति)** अनेन प्रकारेण **(ब्रुवे)** **(पणिः)** प्रशंसितः **(सः)** **(वैरदेये)** वैरं देयं येन तस्मिन् **(इत्)** एव **(समः)** तुल्यः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽस्तुत उत नेमो घा वैरदेये पुमान् यश्च पणिर्वर्त्तते स इत्सम इत्यहं ब्रुवे॥८॥

**भावार्थः**-योऽलसः सत्कर्मसु न प्रवर्त्तते द्वितीयो विद्वान् सत्याऽसत्यं विज्ञाय सत्यं नाचरति तौ द्वौ तुल्यावधर्मात्मानौ वर्त्तेते इति बोध्यम्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अस्तुतः)** नहीं प्रशंसा किया गया **(उत)** और **(नेमः)** आधे का अधिकारी **(घा)** ही **(वैरदेये)** वैर देने योग्य जिससे उसमें **(पुमान्)** पुरुष और जो **(पणिः)** प्रशंसित वर्त्तमान है **(सः, इत्)** वही **(समः)** तुल्य है **(इति)** इस प्रकार से मैं **(ब्रुवे)** कहता हूं॥८॥

**भावार्थः**-जो आलस्ययुक्त जन श्रेष्ठ कर्म्मों में नहीं प्रवृत्त होता है और दूसरा विद्वान् पुरुष सत्य और असत्य को जानकर सत्य का आचरण नहीं करता है, वे दोनों तुल्य अधर्मात्मा हैं, यह जानना चाहिये॥८॥

**पुनर्दम्पतीविषयमाह॥**

फिर स्त्री-पुरुष के विषय को कहते हैं॥

**उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम्।**

**वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे॥९॥**

**उत। मे। अरपत्। युवतिः। ममन्दुषी। प्रति। श्यावाय। वर्तनिम्। वि। रोहिता। पुरुऽमीळ्हाय। येमतुः। विप्राय। दीर्घऽयशसे॥९॥**

**पदार्थः-(उत)** अपि **(मे)** मह्यम् **(अरपत्)** व्यक्तमुपदिशति **(युवतिः)** प्राप्तयौवनावस्था **(ममन्दुषी)** प्रशंसनीयानन्दकरी **(प्रति) (श्यावाय)** श्याववर्णयुक्तायाऽश्वाय **(वर्त्तनिम्)** मार्गम् **(वि) (रोहिता)** रोहणकर्त्री **(पुरुमीळ्हाय)** बहुवीर्यसेक्त्रे **(येमतुः)** नियच्छतः **(विप्राय)** मेधाविने **(दीर्घयशसे)** महद्यशसे॥९॥

**अन्वयः**-या प्रति श्यावाय पुरुमीळ्हाय दीर्घशयसे विप्राय मे ममन्दुषी वर्त्तनिं वि रोहिता युवतिररपदुताहमरपं तावावां यथा सद्‌गुणाढ्यौ स्त्रीपुरुषौ येमतुस्तथा वर्त्तावहै॥९॥

**भावार्थः**-यदि स्त्रीपुरुषौ तुल्यगुणकर्म्मस्वभावौ स्यातां तर्हि सन्मार्गं बृहत्कीर्त्तिमानन्दञ्च लभेताम्॥९॥

**पदार्थः**-जो **(प्रति, श्यावाय)** धूमिल वर्ण से युक्त अश्व और **(पुरुमीळ्हाय)** बहुत वीर्य्य के सींचने वाले **(दीर्घयशसे)** बड़े यशस्वी **(विप्राय)** बुद्धिमान् **(मे)** मेरे लिये **(ममन्दुषी)** प्रशंसा करने योग्य और आनन्द करने वाली **(वर्त्तनिम्)** मार्ग को **(वि, रोहिता)** जानेवाली **(युवतिः)** यौवनावस्था को प्राप्त स्त्री **(अरपत्)** स्पष्ट उपदेश देती है **(उत)** और मैं स्पष्ट उपदेश करूँ, वे हम दोनों जैसे श्रेष्ठ गुणों से युक्त स्त्री और पुरुष **(येमतुः)** नियम करते हैं, वैसे वर्त्ताव करें॥९॥

**भावार्थः**-जो स्त्री-पुरुष परस्पर तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव वाले हों तो श्रेष्ठ मार्ग, अत्यन्त कीर्त्ति और आनन्द को प्राप्त हों॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत्। तरन्तइव मंहना॥१०॥२७॥**

**यः। मे। धेनूनाम्। शतम्। वैदत्ऽअश्विः। यथा। ददत्। तरन्तःऽइव। मंहना॥१०॥**

**पदार्थः-(यः) (मे)** मम **(धेनूनाम्)** गवाम् **(शतम्) (वैददश्विः)** योऽश्वान् विन्दति स विददश्वस्तस्यापत्यं वैददश्विः **(यथा) (ददत्)** ददाति **(तरन्तइव)** तरन्त इव **(मंहना)** महत्या नौकया॥१०॥

**अन्वयः**-यो वैददश्विर्मे धेनूनां शतं ददद्यथा मंहना तरन्तइव दुःखपारं नयति स एव स्वामी भवितुमर्हति॥१०॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यः शतदः सहस्रदो भवति दोग्ध्रीणां गवां रक्षणं करोति स नौकया नदीं समुद्रं वा तरति तथैव मेधाविनौ स्त्रीपुरुषौ दुःखसागरं धर्म्माचरणेन तरतः॥१०॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(वैददश्विः)** घोड़ों के ज्ञाता का पुत्र **(मे)** मेरी **(धेनूनाम्)** गौओं के **(शतम्)** सैकड़े को **(ददत्)** देता है **(यथा)** जैसे **(मंहना)** बड़ी नौका से **(तरन्तइव)** तैरते हुओं के समान दुःख के पार पहुंचाता है, वही स्वामी होने के योग्य होता है॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सैकड़ों वा हजारों का देने वाला होता है और दुग्ध देनेवाली गौओं की रक्षा करता है, वह नौका से नदी वा समुद्र को तरता है, वैसे ही बुद्धिमान् स्त्री और पुरुष दुःखरूपी सागर को धर्म के आचरण से तरते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे॥११॥**

**ये। ईम्। वहन्ते। आशुऽभिः। पिबन्तः। मदिरम्। मधु। अत्र। श्रवांसि। दधिरे॥११॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(ईम्)** उदकम् **(वहन्ते)** प्राप्नुवन्ति **(आशुभिः)** आशुकारिभिर्गुणैः **(पिबन्तः)** **(मदिरम्)** आनन्दकरम् **(मधु)** माधुर्यादिगुणोपेतम् **(अत्र)** **(श्रवांसि)** अन्नादीनि **(दधिरे)** धरन्ति॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या आशुभिर्मदिरमीं वहन्ते मधु पिबन्तोऽत्र श्रवांसि दधिरे त एव श्रीमन्तो जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-ये सद्यः सुखकराणि मेधावर्धकानि वस्तूनि सेवन्ते तेऽत्र श्रीमन्तो जायन्ते॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(आशुभिः)** शीघ्रकारी गुणों से **(मदिरम्)** आनन्दकारक **(ईम्)** जल को **(वहन्ते)** प्राप्त होते हैं और **(मधु)** माधुर्य्य आदि गुणों से युक्त को **(पिबन्तः)** पीते हुए **(अत्र)** यहाँ **(श्रवांसि)** अन्न आदिकों को **(दधिरे)** धारण करते हैं, वे ही लक्ष्मीवान् होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-जो शीघ्र सुखकारक और बुद्धिवर्धक वस्तुओं का सेवन करते हैं, वे यहाँ लक्ष्मीवान् होते हैं॥११॥

**पुनरुपदेशविषयमाह॥**

फिर उपदेश विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा। दिवि रुक्मइवोपरि॥१२॥**

**येषाम्। श्रिया। अधि। रोदसी इति। विऽभ्राजन्ते। रथेषु। आ। दिवि। रुक्मःऽइव। उपरि॥१२॥**

**पदार्थः**-**(येषाम्)** **(श्रिया)** शोभया लक्ष्म्या वा **(अधि)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(विभ्राजन्ते)** **(रथेषु)** विमानादियानेषु **(आ)** **(दिवि)** कामनायाम् **(रुक्मइव)** रुचिकरः सुवर्णादिपदार्थो यथा **(उपरि)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषां विदुषां श्रिया धर्म्या व्यवहारा दिवि रुक्मइव विभ्राजन्ते। ये रथेष्वाऽधिष्ठिता स्युस्त उपरि रोदसी इव प्रकाशन्ते॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये धर्म्येण पुरुषार्थेन धनादिकं सञ्चिन्वन्ति ते सूर्य्यकिरणा इव प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(येषाम्)** जिन विद्वानों की **(श्रिया)** शोभा वा लक्ष्मी से, धर्मयुक्त व्यवहार **(दिवि)** कामना में **(रुक्मइव)** प्रीतिकारक सुवर्ण आदि पदार्थ जैसे वैसे **(विभ्राजन्ते)** शोभित होते हैं और जो **(रथेषु)** विमान आदि वाहनों में **(आ, अधि)** विराजित होवें वे **(उपरि)** ऊपर **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश प्रकाशित होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो धर्मयुक्त पुरुषार्थ से धन आदि को इकट्ठे करते हैं, वे सूर्य्य के किरणों के सदृश प्रकाशित यश वाले होते हैं॥१२॥

**पुनर्दम्पतीविषयमाह॥**

फिर स्त्री-पुरुष के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः। शुभंयावाप्रतिष्कुतः॥१३॥

**युवा। सः। मारुतः। गणः। त्वेषऽरथः। अनेद्यः। शुभम्ऽयावा। अप्रतिऽस्कुतः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(युवा)** प्राप्तयौवनाः **(सः)** **(मारुतः)** वायूनां समूह इव मनुष्याणां **(गणः)** **(त्वेषरथः)** त्वेषः प्रकाशवान् रथो यस्य सः **(अनेद्यः)** अनिन्दनीयः **(शुभंयावा)** यः शुभं जलं याति **(अप्रतिष्कुतः)** अकम्पितो दृढः॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽनेद्यस्त्वेषरथः शुभंयावाऽप्रतिष्कुतो युवा मारुतो गणोऽस्ति स बहूनि कार्य्याणि साद्धुं शक्नोति॥१३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वान् स्त्रीपुरुषान् यूनो विदुषः सम्पादयन्ति ते प्रशंसनीयाः कल्याणकारिणो दृढा जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अनेद्यः)** नहीं निन्दा करने योग्य **(त्वेषरथः)** प्रकाशवान् वाहन जिसका वह **(शुभंयावा)** जल को प्राप्त होने वाला **(अप्रतिष्कुतः)** नहीं कम्पित दृढ़ **(युवा)** यौवनावस्था को प्राप्त **(मारुतः)** पवनों के समूह के सदृश मनुष्यों का **(गणः)** समूह है **(सः)** वह बहुत कार्य्यों को सिद्ध कर सकता है॥१३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सम्पूर्ण स्त्रीपुरुषों को यौवनावस्थायुक्त और विद्वान् करते हैं, वे प्रशंसा करने योग्य, कल्याणकारी और दृढ़ होते हैं॥१३॥

**पुनरुपदेशार्थविषयमाह॥**

फिर उपदेशार्थ विषय को कहते हैं॥

## को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः। ऋतजाता अरेपसः॥१४॥

**कः। वेद। नूनम्। एषाम्। यत्र। मदन्ति। धूतयः। ऋतऽजाताः। अरेपसः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वेद**) जानाति (**नूनम्**) निश्चितम् (**एषाम्**) वाय्वादीनाम् (**यत्रा**) (**मदन्ति**) हर्षन्ति (**धूतयः**) ये पापं धूनयन्ति ते (**ऋतजाताः**) य ऋते जायन्ते ते (**अरेपसः**) अनपराधिनः॥१४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यत्रर्तजाता अरेपसो धूतयो मदन्ति तत्रैषां स्वरूपं नूनं को वेद॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अपराधानपराधौ सत्यासत्ये च को वेत्तीति पृच्छामः। ये प्रमादविरहाः परमेश्वरभक्ता भवन्तीति॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यत्रा**) जहाँ (**ऋतजाताः**) सत्य में उत्पन्न होने वाले (**अरेपसः**) अपराध से रहित (**धूतयः**) पाप को कम्पाने वाले (**मदन्ति**) प्रसन्न होते हैं वहाँ (**एषाम्**) इन वायु आदि के स्वरूप को (**नूनम्**) निश्चित (**कः**) कौन (**वेद**) जानता है॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अपराध-अनपराध तथा सत्य और असत्य को कौन जानता है, यह हम पूछते हैं। जो प्रमाद से रहित और परमेश्वर भक्त होते हैं॥१४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

### यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया। श्रोतारो यामहूतिषु॥१५॥२८॥

**यूयम्। मर्तम्। विपन्यवः। प्रऽनेतारः। इत्था। धिया। श्रोतारः। यामऽहूतिषु॥१५॥**

**पदार्थः**-(**यूयम्**) (**मर्त्तम्**) मनुष्यम् (**विपन्यवः**) मेधाविनः (**प्रणेतारः**) प्रेरकाः (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**धिया**) प्रज्ञया कर्म्मणा वा (**श्रोतारः**) (**यामहूतिषु**) उपरमाऽऽह्वानरूपकर्म्मसु॥१५॥

**अन्वयः**-हे विपन्यवो! यूयं प्रणेतारः श्रोतारो धिया यामहूतिष्वित्था मर्त्तं प्रेरयत॥१५॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो धर्म्येषु व्यवहारेषु मनुष्यान् प्रेरयित्वा प्रज्ञान् कुर्वन्ति ते धन्या भवन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे (**विपन्यवः**) बुद्धिमानो! (**यूयम्**) आप लोग (**प्रणेतारः**) प्रेरणा करने और (**श्रोतारः**) सुनने वाले जन (**धिया**) बुद्धि वा कर्म से (**यामहूतिषु**) उपरम अर्थात् निवृत्ति और आह्वानरूप कर्म्मों में (**इत्था**) इस प्रकार से (**मर्त्तम्**) मनुष्यों को प्रेरणा करो॥१५॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन धर्मयुक्त व्यवहारों में मनुष्यों को प्रेरणा करके बुद्धिमान् करते हैं, वे धन्य होते हैं॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः। आ यज्ञियासो ववृत्तन॥१६॥

**ते। नः। वसूनि। काम्या। पुरुऽचन्द्राः। रिशादसः। आ। यज्ञियासः। ववृत्तन॥१६॥**

**पदार्थः**-(**ते**) विद्वांसः (**नः**) अस्माकम् (**वसूनि**) धनानि (**काम्या**) कमनीयानि (**पुरुश्चन्द्राः**) बहुसुवर्णानि (**रिशादसः**) हिंसकहिंसकाः (**आ**) (**यज्ञियासः**) यज्ञसम्पादकाः (**ववृत्तन**) वर्त्तन्ते॥१६॥

**अन्वयः**-ये यज्ञियासो रिशादसो नः पुरुश्चन्द्राः काम्या वसून्याऽऽववृत्तन तेऽस्माकं कल्याणकारिणो भवन्ति॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यास्त एवात्र जगति परोपकाराय वर्त्तन्ते ये न्यायेन द्रव्योपार्जनमाचरन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-जो **(यज्ञियासः)** यज्ञ के करने **(रिशादासः)** और हिंसकों के मारने वाले **(नः)** हम लोगों के **(पुरुश्चन्द्राः)** बहुत सुवर्ण और **(काम्या)** सुन्दर **(वसूनि)** धनों को **(आ, ववृत्तन)** प्राप्त होते हैं **(ते)** वे विद्वान् हम लोगों के कल्याणकारी होते हैं॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! वे ही इस संसार में परोपकार के लिये वर्त्तमान हैं, जो न्याय से द्रव्य को स- ह करते हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतं मे स्तोममूर्म्ये दार्भ्याय परा वह। गिरो देवि रथीरिव॥१७॥**

**एतम्। मे। स्तोमम्। ऊर्म्ये। दार्भ्याय। परा। वह। गिरः। देवि। रथीःऽइव॥१७॥**

**पदार्थः**-**(एतम्)** **(मे)** मम **(स्तोमम्)** श्लाघाम् **(ऊर्म्ये)** रात्रीव वर्त्तमाने **(दार्भ्याय)** दर्भेषु विदारकेषु भवाय **(परा)** **(वह)** **(गिरः)** वाणीः **(देवि)** देदीप्यमाने विदुषि **(रथीरिव)** प्रशंसितो रथवान्यथा॥१७॥

**अन्वयः**-हे देवि! ऊर्म्ये रात्रिवद्वर्त्तमाने त्वं मे एतं स्तोमं शृणु दार्भ्याय वर्त्तमानं परा वह रथीरिव गिर आवह॥१७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा भूतानां सुखाय रात्री वर्त्तते तथैव पत्यादीनां सुखाय सत् स्त्री भवति॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(देवि)** प्रकाशमान विद्यायुक्त स्त्री! **(ऊर्म्ये)** रात्रि के सदृश वर्त्तमान आप **(मे)** मेरी **(एतम्)** इस **(स्तोमम्)** प्रशंसा को सुनिये और **(दार्भ्याय)** विदारण करने वालों में हुए के लिये वर्त्तमान को **(परा, वह)** दूर कीजिये तथा **(रथीरिव)** प्रशंसित रथ वाला जैसे वैसे **(गिरः)** वाणियों को धारण कीजिये॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्राणियों के सुख के लिये रात्रि है, वैसे ही पति आदिकों के सुख के लिये श्रेष्ठ स्त्री होती है॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत मे वोचतादिति सुतसोमे रथवीतौ। न कामो अप वेति मे॥१८॥**

**उत। मे। वोचतात्। इति। सुतऽसोमे। रथऽवीतौ। न। कामः। अप। वेति। मे॥१८॥**

**पदार्थ:**-(**उत**) अपि (**मे**) मह्यम् (**वोचतात्**) उपदिशतु (**इति**) (**सुतसोमे**) निष्पादितैश्वर्य्यादौ (**रथवीतौ**) रथानां गतौ (**न**) (**काम:**) कामना (**अप**) (**वेति**) नश्यति (**मे**) मम॥१८॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! भवान् मे रथवीतावुत सुतसोमे सत्यमुपदेश्यमिति वोचतात्। यतो मे कामो नाप वेति॥१८॥

**भावार्थ:**-सर्वैर्मनुष्यैर्विदुष: प्रतीयं प्रार्थना कार्या भवन्तोऽस्मभ्यमीदृशानुपदेशान् कुर्वन्तु यतोऽस्माकमिच्छा: सिद्धा: स्युरिति॥१८॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! आप (**मे**) मेरे लिये (**रथवीतौ**) वाहनों के गमन में (**उत**) और (**सुतसोमे**) उत्पन्न किये हुए ऐश्वर्य्य आदि में सत्य का उपदेश देने योग्य हैं (**इति**) इस प्रकार (**वोचतात्**) उपदेश देवे जिससे (**मे**) मेरी (**काम:**) कामना (**न**) नहीं (**अप, वेति**) नष्ट होती है॥१८॥

**भावार्थ:**-सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्वान् जनों के प्रति यह प्रार्थना करें कि आप लोग हम लोगों को ऐसे उपदेश करो जिससे हम लोगों की इच्छायें सिद्ध होवें॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एष क्षे॑ति रथ॑वीतिर्म॒घवा॒ गोम॑ती॒रनु॑। पर्व॑ते॒ष्वप॑श्रितः॥१९॥१९॥**

**ए॒षः। क्षे॒ति॒। रथ॑ऽवीतिः। म॒घऽवा॑। गोऽम॑तीः। अनु॑। पर्व॑तेषु। अप॑ऽश्रितः॥१९॥**

**पदार्थ:**-(**एष:**) (**क्षेति**) निवसति (**रथवीति:**) यो रथेन व्याप्नोति मार्गम् (**मघवा**) परमधनवान् (**गोमती:**) गाव: किरणा विद्यन्ते यासु गतिषु ता: (**अनु**) (**पर्वतेषु**) मेघेषु (**अपश्रित:**) योऽपश्रयति स:॥१९॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यथा पर्वतेष्वपश्रित: सूर्य्यो गोमतीरनु वर्त्तयति तथैवैष रथवीतिर्मघवा क्षेति॥१९॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यथा सूर्य्यो मेघनिमित्तं भूत्वा पृथक् स्वरूपोऽस्ति तथैव विद्वान् सर्वत्र वासं कुर्वन्नपि निर्मोहो भवतीति॥१९॥

अत्र प्रश्नोत्तरमरुदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकषष्टितमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे (**पर्वतेषु**) मेघों में (**अपश्रित:**) आश्रित सूर्य्य (**गोमती:**) किरणें विद्यमान जिसमें ऐसे गमनों को (**अनु**) अनुकूल वर्त्ताता है, वैसे (**एष:**) यह (**रथवीति:**) रथ से मार्ग को व्याप्त होने वाला (**मघवा**) अत्यन्त धनवान् जन (**क्षेति**) निवास करता है॥१९॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का कारण होकर पृथक् स्वरूप है, वैसे ही विद्वान् सर्वत्र वास करता हुआ भी मोहरहित होता है॥१९॥

इस सूक्त में प्रश्न, उत्तर और वायु आदि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इकसठवाँ सूक्त और उनतीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अत्र नवर्चस्य द्विषष्टितमस्य सूक्तस्य श्रुतिविदात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ त्रिष्टुप्। ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ७, ८, ९ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथ सूर्य्यगुणानाह॥*

अब नव ऋचा वाले बासठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्य्यगुणों को कहते हैं॥

**ऋतेन॑ ऋतमपि॑हितं ध्रुवं वां सूर्य॑स्य यत्र॑ विमुचन्त्यश्वा॑न्।**

**दश॑ शता सह त॑स्थुस्तदेकं॑ देवानां श्रेष्ठं॑ वपु॑षामपश्यम्॥ १॥**

**ऋतेन॑। ऋतम्। अपि॑ऽहितम्। ध्रुवम्। वाम्। सूर्य॑स्य। यत्र॑। विऽमुचन्ति॑। अश्वा॑न्। दश॑। शता। सह। तस्थुः। तत्। एक॑म्। देवाना॑म्। श्रेष्ठ॑म्। वपु॑षाम्। अपश्यम्॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन कारणेन (**ऋतम्**) सत्यं स्वरूपम् (**अपिहितम्**) आच्छादितम् (**ध्रुवम्**) निश्चलम् (**वाम्**) युवयोः (**सूर्यस्य**) सवितुः (**यत्र**) (**विमुचन्ति**) त्यजन्ति (**अश्वान्**) किरणान् (**दश**) (**शता**) शतानि (**सह**) सार्धम् (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**तत्**) (**एकम्**) अद्वितीयम् (**देवानाम्**) विदुषाम् (**श्रेष्ठम्**) (**वपुषाम्**) रूपवतां शरीराणाम् (**अपश्यम्**) पश्यामि॥ १॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यत्र विद्वांसः सूर्यस्य दश शताऽश्वान् विमुचन्ति सह तस्थुर्वां युवयोर्ऋतेन ध्रुवमृतमपिहितमस्ति तेदकं देवानां वपुषां च श्रेष्ठमहमपश्यं तदेव यूयमपि पश्यत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽयं सूर्यलोकः स परमेश्वरेणानेकैस्तत्त्वैर्निर्मितत्वादनेकैर्गुणैर्युक्तोऽस्ति तं यथावद्विजानीत॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेश जनो! (**यत्र**) जहाँ विद्वान् जन (**सूर्यस्य**) सूर्य्य के (**दश**) दश (**शता**) सैकड़ों (**अश्वान्**) किरणों को (**विमुचन्ति**) छोड़ते और (**सह**) साथ (**तस्थुः**) स्थित होते हैं (**वाम्**) तुम दोनों के (**ऋतेन**) सत्य कारण से (**ध्रुवम्**) निश्चल (**ऋतम्**) सत्यस्वरूप (**अपिहितम्**) आच्छादित है (**तत्**) उस (**एकम्**) अद्वितीय (**देवानाम्**) विद्वानों के और (**वपुषाम्**) रूप वाले शरीरों के (**श्रेष्ठम्**) श्रेष्ठभाव को मैं (**अपश्यम्**) देखता हूं, उसको आप लोग भी देखिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यह सूर्य्यलोक है वह परमेश्वर से अनेक तत्त्वों द्वारा रचा गया है, इस कारण अनेक गुणों से युक्त है, उसको तुम लोग यथावत् जानो॥ १॥

**अथ मित्रावरुणगुणानाह॥**

अब मित्रावरुण के गुणों को कहते हैं॥

**तत्सु वां॑ मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरह॑भिर्दुदुह्रे।**

**विश्वाः॑ पिन्वथः स्वस॑रस्य धेना अनु॑ वामेकः॑ पविरा व॑वर्त॥ २॥**

**तत्। सु। वाम्। मित्रावरुणा। महिऽत्वम्। ईर्मा। तस्थुषीः। अहंऽभिः। दुदुह्रे। विश्वाः। पिन्वथः। स्वसंरस्य। धेनाः। अनुं। वाम्। एकः। पविः। आ। ववर्त॥२॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**सु**) ( (**वाम्**) युवयोः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ (**महित्वम्**) महत्त्वम् (**ईर्मा**) (**तस्थुषीः**) स्थिराः (**अहभिः**) दिनैः (**दुदुह्रे**) प्रपूरयन्ति (**विश्वाः**) सर्वाः (**पिन्वथः**) प्रीणयतम् (**स्वसरस्य**) दिनस्य (**धेनाः**) वाचः (**अनु**) (**वाम्**) युवाम् (**एकः**) असहायः (**पविः**) पवित्रो व्यवहारः (**आ**) (**ववर्त्त**)॥२॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! वां यन्महित्वमीर्मा रक्षति तद्युवां पिन्वथो यथाऽहभिः किरणास्तस्थुषीः स दुदुह्रे स्वसरस्य मध्ये वां विश्वा धेनाः पिन्वथस्तथैकः पविरन्वाऽऽववर्त्त॥२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां मनुष्यान् रात्र्यहर्प्राणोदानविद्युद्विद्यां ग्राहयतं यतः सर्वाः प्रजा आनन्दिताः स्युः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! (**वाम्**) आप दोनों के जिस (**महित्वम्**) महत्त्व की (**ईर्मा**) निरन्तर चलने वाला रक्षा करता है (**तत्**) उसकी आप दोनों (**पिन्वथः**) तृप्ति कीजिये और जैसे (**अहभिः**) दिनों से किरणें (**तस्थुषीः**) स्थिर वेलाओं को (**सु**) उत्तम प्रकार (**दुदुह्रे**) पूर्ण करते हैं और (**स्वसरस्य**) दिन के मध्य में (**वाम्**) आप दोनों (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**धेनाः**) वाणियों को तृप्त कीजिये वैसे (**एकः**) सहायरहित केवल एक (**पविः**) पवित्र व्यवहार (**अनु**) अनुकूल (**आ**) (**ववर्त**) वर्तमान हो॥२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों मनुष्यों को रात्रि-दिन, प्राण, उदान और बिजुली की विद्याओं को ग्रहण कराइये, जिससे सम्पूर्ण प्रजायें प्रजायें आनन्दित होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः।**
**वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू॥३॥**

**अधारयतम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। मित्रऽराजाना। वरुणा। महःऽभिः। वर्धयतम्। ओषधीः। पिन्वतम्। गाः। अव। वृष्टिम्। सृजतम्। जीरदानू इति जीरऽदानू॥३॥**

**पदार्थः**-(**अधारयतम्**) धारयतम् (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**उत**) (**द्याम्**) सूर्य्यम् (**मित्रराजाना**) प्राणविद्युतौ (**वरुणा**) श्रेष्ठौ (**महोभिः**) बृहद्भिर्गुणैः (**वर्धयतम्**) (**ओषधीः**) यवाद्याः (**पिन्वतम्**) तर्प्पयतम् (**गाः**) पृथिवीः (**अव**) (**वृष्टिम्**) (**सृजतम्**) (**जीरदानू**) यौ जीवनं दद्यातां तौ॥३॥

**अन्वयः**-हे जीरदानू वरुणा! मित्रराजाना यथा वायुविद्युतौ पृथिवीमुत द्यां धारयतस्तथाऽधारयतं यथेमौ महोभिरोषधीर्वर्धयतस्तथा युवां वर्धयतं गाः पिन्वतस्तथा युवां पिन्वतं तथैतौ वृष्टिमव सृजतस्तथाऽव

सृजतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजामात्यौ! युवां प्राणसूर्य्यवद्वर्त्तित्वा पृथिवीराज्यं सम्पाल्य वैद्योषधीर्वर्धयित्वा वृष्टिमुन्नीय सर्वेषां सुखाय वर्त्तेयाताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(जीरदानू)** जीवन के देने वाले **(वरुणा)** श्रेष्ठ! **(मित्रराजाना)** जैसे वायु और बिजुली **(पृथिवीम्)** भूमि को **(उत)** और **(द्याम्)** सूर्य्य को धारण करते हैं, वैसे **(अधारयतम्)** धारण कीजिये और जैसे ये दोनों **(महोभिः)** बड़े गुणों से **(ओषधीः)** यव आदि ओषधियों को बढ़ाते हैं, वैसे आप दोनों **(वर्धयतम्)** बढ़ावें, **(गाः)** पृथिवियों को तृप्त करते हैं, वैसे आप दोनों **(पिन्वतम्)** तृप्त कीजिये और जैसे ये दोनों **(वृष्टिम्)** वृष्टि को उत्पन्न करते हैं, वैसे **(अव, सृजतम्)** उत्पन्न कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों प्राण और सूर्य्य के सदृश वर्त्ताव कर पृथिवी के राज्य का पालन कर वैद्य और ओषधियों की वृद्धि कर और वृष्टि की उन्नति करके सबके सुख के लिये वर्त्ताव कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्वर्वाक्।**

**घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति॥४॥**

आ। वाम्। अश्वासः। सुऽयुजः। वहन्तु। यतऽरश्मयः। उप। यन्तु। अर्वाक्। घृतस्य। निःऽनिक्। अनु। वर्तते। वाम्। उप। सिन्धवः। प्रऽदिवि। क्षरन्ति॥४॥

**पदार्थः**-**(आ)** **(वाम्)** युवयोः **(अश्वासः)** अग्न्याद्यास्तुरङ्गा वा **(सुयुजः)** ये सुष्ठु युञ्जते ते **(वहन्तु)** गमयन्तु **(यतरश्मयः)** यता निगृहीता रश्मयः किरणा रज्जवो वा येषान्ते **(उप)** **(यन्तु)** गमयन्तु **(अर्वाक्)** अधस्तात् **(घृतस्य)** उदकस्य **(निर्णिक्)** यो निर्णेनेक्ति स सारथिः **(अनु)** **(वर्त्तते)** **(वाम्)** युवाम् **(उप)** **(सिन्धवः)** नद्यः **(प्रदिवि)** प्रद्योतनात्मकेऽग्नौ **(क्षरन्ति)** वर्षन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे याननिर्मातृचालकौ! ये यथा वां सुयुजो यतरश्मयोऽश्वासो घृतस्यार्वागा वहन्तु यानान्युप यन्तु यथा निर्णिगनु वर्त्तते प्रदिवि सिन्धवो वामुप क्षरन्ति तथा प्रयतेथाम्॥४॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या यानेषु यन्त्रकला रचयित्वाऽधोऽग्निमुपरि जलं संस्थाप्य प्रदीप्य मार्गेषु चालयेयुस्तर्हि पुष्कलाः श्रिय एतान् प्राप्नुयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे वाहन के बनाने और चलाने वाले जनो! जो जैसे **(वाम्)** आप दोनों के **(सुयुजः)** उत्तम प्रकार मिलने वाले **(यतरश्मयः)** ग्रहण की गई किरणें वा रस्सियां जिनकी ऐसे **(अश्वासः)** अग्नि आदि पदार्थ वा घोड़े **(घृतस्य)** जल के **(अर्वाक्)** नीचे से **(आ, वहन्तु)** पहुंचावें और यानों को **(उप, यन्तु)** चलावें और **(निर्णिक्)** निर्णय करने वाला सारथी **(अनु, वर्त्तते)** प्रवृत्त होता है और **(प्रदिवि)**

प्रकाशस्वरूप अग्नि में **(सिन्धवः)** नदियां **(वाम्)** आप दोनों को **(उप, क्षरन्ति)** जल किंछती हैं, वैसा प्रयत्न कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वाहनों में यन्त्रकलाओं को रच के नीचे अग्नि और ऊपर जल स्थापित करके और फिर उस अग्नि को प्रदीप्त करके मार्गों में चलावें तो बहुत लक्ष्मियां इनको प्राप्त हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनु॑ श्रु॒ताम॒मतिं॒ वर्ध॑दु॒र्वीं ब॒र्हिरि॑व॒ यजु॑षा॒ रक्ष॑माणा।**

**नम॑स्वन्ता धृतद॒क्षाधि॒ गर्ते॒ मित्रासा॑थे वरु॒णेळा॑स्व॒न्तः॥५॥३०॥**

**अनु॑। श्रु॒ताम्। अ॒मति॑म्। वर्ध॑त्। उ॒र्वीम्। ब॒र्हिःऽइ॑व। यजु॑षा। रक्ष॑माणा। नम॑स्वन्ता। धृ॒त॒ऽद॒क्षा। अधि॑ गर्ते॑। मित्र॑। आसा॑थे इति॑। व॒रु॒ण॒। इळा॑सु। अ॒न्तरिति॑ अ॒न्तः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अनु)** **(श्रुताम्)** **(अमतिम्)** रूपम् **(वर्धत्)** वर्धयेत् **(उर्वीम्)** पृथिवीम् **(बर्हिरिव)** जलमिव। **बर्हिरित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(यजुषा)** सत्सङ्गेन क्रियया वा **(रक्षमाणा)** यौ रक्षतस्तौ **(नमस्वन्ता)** बह्वन्नवन्तौ **(धृतदक्षा)** धृतं दक्षं बलं याभ्यां तौ **(अधि)** उपरिभावे **(गर्त्ते)** गृहे। **गर्त्त इति गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) **(मित्र)** **(आसाथे)** **(वरुण)** **(इळासु)** वाक्षु **(अन्तः)** मध्ये॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! धृतदक्षा बर्हिरिव यजुषोर्वी रक्षमाणा नमस्वन्तेळास्वन्तर्गर्ते युवामासाथे सोऽनु श्रुताममतिमधि वर्धत् तान् वयं परिचरेम॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा प्राणोदानादयो वायवः सर्वं जगद्रक्षन्ति तथा भवन्तो रक्षन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** प्राण के सदृश **(वरुण)** श्रेष्ठ **(धृतदक्षा)** धारण किया बल जिन्होंने वे **(बर्हिरिव)** जल के सदृश **(यजुषा)** सत्सङ्ग वा क्रिया से **(उर्वीम्)** पृथिवी की **(रक्षमाणा)** रक्षा करते हुए **(नमस्वन्ता)** बहुत अन्न वाले **(इळासु)** वाणियों में और **(अन्तः)** मध्य **(गर्त्ते)** गृह में आप दोनों **(आसाथे)** वर्त्तमान हैं और वह **(अनु, श्रुताम्)** पीछे श्रवण किये गये **(अमतिम्)** रूप को **(अधि)** ऊपर को **(वर्धत्)** बढ़ावे, उनकी हम लोग परिचर्य्या करें॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे प्राण और उदान आदि पवन सब जगत् की रक्षा करते हैं, वैसे आप लोग रक्षा करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अक्र॑विहस्ता सु॒कृते॑ पर॒स्पा यं त्रासा॑थे वरु॒णेळा॑स्व॒न्तः।**

**राजा॑ना क्ष॒त्रमहृ॑णीयमाना स॒हस्र॑स्थूणं बिभृथः स॒ह द्वौ॥६॥**

**अक्रविऽहस्ता। सुऽकृते। परःऽपा। यम्। त्रासाथे इति। वरुणा। इळासु। अन्तरिति अन्तः। राजाना। क्षत्रम्। अहृणीयमाना। सहस्रऽस्थूणम्। बिभृथः। सह। द्वौ॥६॥**

**पदार्थः**-(**अक्रविहस्ता**) अहिंसाहस्तौ दानशीलहस्तौ वा (**सुकृते**) धर्म्ये कर्मणि (**परस्पा**) यौ परं पातो रक्षतस्तौ (**यम्**) (**त्रासाथे**) भयं दद्यातम् (**वरुणा**) अतिश्रेष्ठौ (**इळासु**) पृथिवीषु (**अन्तः**) मध्ये (**राजाना**) राजमानौ (**क्षत्रम्**) राज्यं धनं वा (**अहृणीयमाना**) क्रोधरहिताचरणौ सन्तौ (**सहस्रस्थूणम्**) सहस्रमसंख्या वा स्थूणा यस्मिंस्तज्जगत् राज्यं यानं वा (**बिभृथः**) धरथः (**सह**) साधर्म्य (**द्वौ**)॥६॥

**अन्वयः**-हे वरुणा सभासेनेशौ राजामात्यौ! वायुसूर्य्यवदक्रविहस्ता परस्पा राजाना क्षत्रमहृणीयमाना द्वौ युवामिळास्वन्तः सुकृते वर्त्तमानौ सह यं त्रासाथे तं सहस्रस्थूणं बिभृथः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजामात्या! भवन्तः स्वयं धर्मात्मानो भूत्वा सहस्रशाखस्य राज्यस्य रक्षणाय दुष्टान् दण्डयित्वा श्रेष्ठान् सत्कृत्य यशस्विनो भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वरुणा**) अति श्रेष्ठ सभा और सेना के स्वामी राजा और मन्त्री जनो! वायु और सूर्य के सदृश (**अक्रविहस्ता**) नहीं हिंसा करने वाले हस्त जिनके वा दानशील हस्त जिनके वे (**परस्पा**) दूसरों की रक्षा करने वाले (**राजाना**) प्रकाशमान और (**क्षत्रम्**) राज्य वा धन को (**अहृणीयमाना**) क्रोध से रहित आचरण करते हुए (**द्वौ**) दोनों आप (**इळासु**) पृथिवियों के (**अन्तः**) मध्य में (**सुकृते**) धर्मयुक्त काम में वर्त्तमान (**सह**) साथ (**यम्**) जिसको (**त्रासाथे**) भय देवें उस (**सहस्रस्थूणम्**) सहस्र वा असंख्य थूनी वाले जगत्, राज्य वा वाहन को (**बिभृथः**) धारण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा और मन्त्रीजन! आप स्वयं धर्मात्मा होकर सहस्र शाखा जिसकी ऐसे राज्य के रक्षण के लिये दुष्टों को दण्ड देकर और श्रेष्ठों का सत्कार करके यशस्वी होवें॥६॥

**पुनः प्रसङ्गाद्विद्युद्विद्याविषयमाह॥**

फिर प्रसङ्ग से विद्युद्विद्या विषय को कहते हैं॥

**हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्य१श्वाजनीव।**

**भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य॥७॥**

**हिरण्यऽनिर्निक्। अयः। अस्य। स्थूणा। वि। भ्राजते। दिवि। अश्वाजनीऽइव। भद्रे। क्षेत्रे। निऽमिता। तिल्विले। वा। सनेम। मध्वः। अधिऽगर्त्यस्य॥७॥**

**पदार्थः**-(**हिरण्यनिर्णिक्**) यः पृथिव्या हिरण्यमग्नेस्तेजश्च नितरां नेनेक्ति (**अयः**) योऽयते गच्छति सः (**अस्य**) राज्यस्य (**स्थूणा**) स्तम्भ इव दृढा नीतिः (**वि**) (**भ्राजते**) प्रकाशते (**दिवि**) प्रकाशे (**अश्वाजनीव**) विद्युदिव (**भद्रे**) कल्याणकरे (**क्षेत्रे**) क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन् पुण्ये कर्म्मणि तत्र

**(निमिता)** नितरां मिता **(तिल्विले)** स्नेहस्थाने **(वा)** **(सनेम)** विभजेम **(मध्वः)** मधुरादिपदार्थस्य **(अधिगर्त्यस्य)** अधिकसुन्दरे गर्त्ते गृहे भवस्य॥७॥

**अन्वयः**-अत्र यो हिरण्यनिर्णिगयोऽस्या जगतो मध्ये दिवि भद्रे तिल्विले क्षेत्रे वि भ्राजते याऽश्राजनीव निमिता वा स्थूणा वि भ्राजते तं तां चाधिगर्त्यस्य मध्वो मध्ये वयं सनेम॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्या दिव्ये व्यवहारे विराजमानां विद्युदादिविद्यां गृहीतवन्तः सन्तो गृहकृत्ये यथावत् न्यायं कुर्वन्ति विभज्य विभागञ्च दत्त्वा कृतकृत्या भवन्ति त एव नीतिमन्तो भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-इस संसार में जो **(हिरण्यनिर्णिक्)** पृथिवी के सुवर्ण और अग्नि के तेज को अत्यन्त निश्चय करने और **(अयः)** जाने वाला **(अस्य)** इस राज्य और जगत् के मध्य में **(दिवि)** प्रकाश में **(भद्रे)** कल्याणकारक **(तिल्विले)** स्नेह के स्थान में **(क्षेत्रे)** निवास करते हैं जिस पुण्य कर्म्म में उसमें **(वि, भ्राजते)** विशेष प्रकाशित होता है और **(अश्राजनीव)** बिजुली के सदृश **(निमिता)** अत्यन्त मापी अर्थात् जांची गई **(वा)** अथवा **(स्थूणा)** खंभे के सदृश दृढनीति विशेष प्रकाशित होती है उस और उसको **(अधिगर्त्यस्य)** अधिक सुन्दर गृह में हुए **(मध्वः)** मधुरादि पदार्थ के मध्य में हम लोग **(सनेम)** विभाग करें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य श्रेष्ठ व्यवहार में विराजमान बिजुली आदि की विद्या को ग्रहण करते हुए गृह के कृत्य में यथावत् न्याय को करते हैं, विभाग कर और विभाग देकर कृत्यकृत्य होते हैं, वे नीति वाले होते हैं॥७॥

**पुनर्मित्रावरुणगुणानाह॥**

फिर मित्रावरुण के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य।**

**आ रोहथो वरुण मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च॥८॥**

**हिरण्यऽरूपम्। उषसः। विऽउष्टौ। अयःऽस्थूणम्। उत्ऽइता। सूर्यस्य। आ। रोहथः। वरुण। मित्र। गर्तम्। अतः। चक्षाथे इति। अदितिम्। दितिम्। च॥८॥**

**पदार्थः**-**(हिरण्यरूपम्)** तेजःस्वरूपम् **(उषसः)** प्रातर्वेलायाः **(व्युष्टौ)** विशेषदाहे निवासे वा **(अयःस्थूणम्)** सुवर्णस्तम्भमिव **(उदिता)** उदये **(सूर्य्यस्य)** **(आ)** **(रोहथः)** **(वरुण, मित्र)** प्राणोदानाविव वर्त्तमानौ राजामात्यौ **(गर्त्तम्)** गृहम् **(अतः)** कारणात् **(चक्षाथे)** उपदिशथः **(अदितिम्)** अविनाशिकारणम् **(दितिम्)** नाशवत्कार्य्यम् **(च)**॥८॥

**अन्वयः**-हे मित्रवरुणद्वर्त्तमानौ राजामात्यौ! युवां यथा सूर्य्यस्योदितोषसो व्युष्टौ हिरण्यरूपमयःस्थूणमारोहथोऽतो गर्त्तमधिष्ठायाऽदितिं दितिं च चक्षाथे तो वयं सङ्गच्छेमहि॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्योदयेऽन्धकारो निवर्त्तते प्रकाशः प्रवर्त्तते तथैव कार्य्यकारणात्मविद्याविदो राजाऽमात्या मित्रवद्वर्त्तित्वा दृढं न्यायं प्रचारयेयुः॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र) (वरुण)** प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों जैसे **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य के **(उदिता)** उदय में और **(उषसः)** प्रातःकाल के **(व्युष्टौ)** विशेष दाह वा निवास में **(अयःस्थूणम्)** सुवर्ण के खम्भे के सदृश **(हिरण्यरूपम्)** तेजःस्वरूप को **(आ, रोहथः)** आरोहण करते हैं, **(अतः)** इस कारण से **(गर्त्तम्)** गृह को अधिष्ठित हो के **(अदितिम्)** नहीं नष्ट होने वाले कारण **(दितिम्, च)** और नाश होने वाले कार्य्य का **(चक्षाथे)** उपदेश करते हैं, उन दोनों को हम लोग मिलें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य के उदय होने पर अन्धकार निवृत्त होता और प्रकाश होता है, वैसे ही कार्य्य और कारणरूप विद्या के जानने वाले राजा और मन्त्रीजन मित्र के सदृश वर्त्ताव करके दृढ़ न्याय का प्रचार करावें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यद् बंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा।**

**तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥९॥३१॥३॥**

**यत्। बंहिष्ठम्। न। अतिऽविधे। सुदानू इति सुऽदानू। अच्छिद्रम्। शर्म। भुवनस्य। गोपा। तेन। नः। मित्रावरुणौ। अविष्टम्। सिसासन्तः। जिगीवांसः। स्याम॥९॥**

**पदार्थः**-**(यत्) (बंहिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(न)** निषेधे **(अतिविधे)** अतिवेद्धुं योग्यौ **(सुदानू)** उत्तमदानकर्त्तारौ **(अच्छिद्रम्)** छिद्ररहितम् **(शर्म)** गृहम् **(भुवनस्य)** अखिलसंसारस्य **(गोपा)** रक्षकौ **(तेन)** **(नः)** अस्मान् **(मित्रावरुणौ)** प्राणोदानवद्वर्त्तमानौ राजामात्यौ **(अविष्टम्)** व्याप्नुतम् **(सिषासन्तः)** विभजन्तः **(जिगीवांसः)** शत्रुधनानि जेतुमिच्छन्तः **(स्याम)** भवेम॥९॥

**अन्वयः**-हे सुदानू भुवनस्य गोपा मित्रावरुणौ! युवां यथा नाऽतिविधे यद्बंहिष्ठमच्छिद्रं शर्म प्राप्नुतं तेन नोऽविष्टं येन वयं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥९॥

**भावार्थः**-विद्वांसोऽत्युत्तमानि गृहाणि निर्म्माय तत्र विचारं कृत्वा विजयं विद्यां क्रियां च प्राप्नुवन्ति॥९॥

अत्र सूर्यमित्रावरुणराजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थोऽष्टके तृतीयोध्याय एकत्रिंशो वर्गः पञ्चमे मण्डले द्विषष्टितमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे **(सुदानू)** उत्तम दान करने वाले **(भुवनस्य)** सम्पूर्ण संसार के **(गोपा)** रक्षक **(मित्रावरुणौ)** प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों जैसे **(न, अतिविधे)** अतिवेधन करने के अयोग्य **(यत्)** जिस **(बंहिष्ठम्)** अत्यन्त वृद्ध **(अच्छिद्रम्)** छिद्ररहित **(शर्म)** गृह को प्राप्त हूजिये **(तेन)** इससे **(नः)** हम लोगों को **(अविष्टम्)** व्याप्त हूजिये जिससे हम लोग **(सिषासन्तः)** विभाग करते हुए **(जिगीवांसः)** शत्रुओं के धनों को जीतने की इच्छा करने वाले **(स्याम)** होवें॥९॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन अति उत्तम गृहों को रचकर और वहाँ विचार करके विजय, विद्या और क्रिया को प्राप्त होते हैं॥९॥

इस सूक्त में सूर्य, प्राण, उदान और राजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रमद्विरजानन्दसरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिविरचित उत्तम प्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में चतुर्थाष्टक में तीसरा अध्याय इकतीसवां वर्ग और पञ्चम मण्डल में बासठवाँ सूक्त समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

## अथ चतुर्थाऽध्यायारम्भः॥

**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ सप्तर्चस्य त्रिषष्टितमस्य सूक्तस्यार्चनाना आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ४, ७ निचृज्जगती। ३, ५, ६ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मित्रावरुणविद्वद्विषयमाह॥***

अब चतुर्थाध्याय का आरम्भ है और पञ्चम मण्डल में सात ऋचा वाले त्रेसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि।**
**यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः॥ १॥**

**ऋतस्य। गोपौ। अधि। तिष्ठथः। रथम्। सत्यऽधर्माणा। परमे। विऽओमनि। यम्। अत्र। मित्रावरुणा। अवथः। युवम्। तस्मै। वृष्टिः। मधुऽमत्। पिन्वते। दिवः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य (**गोपौ**) रक्षकौ राजामात्यौ (**अधि**) (**तिष्ठथः**) (**रथम्**) (**सत्यधर्माणा**) सत्यो धर्मो ययोस्तौ (**परमे**) प्रकृष्टे (**व्योमनि**) व्योमवत्प्रकाशिते व्यापके परमात्मनि (**यम्**) (**अत्र**) राज्ये (**मित्रावरुणा**) (**अवथः**) (**युवम्**) युवाम् (**तस्मै**) (**वृष्टिः**) वर्षाः (**मधुमत्**) मधुरादिगुणयुक्तम् (**पिन्वते**) सिञ्चति (**दिवः**) अन्तरिक्षात्॥ १॥

**अन्वयः**-हे ऋतस्य गोपौ सत्यधर्माणा मित्रावरुणा राजामात्यौ! युवं परमे व्योमनि स्थित्वा रथमधि तिष्ठथोऽत्र यमवथस्तस्मै दिवो वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते॥ १॥

**भावार्थः**-यत्र धार्मिका विद्वांसः पुत्रमिव प्रजां पालयितारो राजादयो भवन्ति तत्र काले वृष्टिः काले मृत्युश्च जायते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**ऋतस्य**) ऋत अर्थात् सत्य की (**गोपौ**) रक्षा करने वाले और (**सत्यधर्माणा**) सत्य है धर्म जिनका ऐसे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान राजा और अमात्य जनो! (**युवम्**) आप दोनों (**परमे**) अति उत्तम (**व्योमनि**) आकाश के सदृश प्रकाशित व्यापक परमात्मा में स्थित होकर (**रथम्**) वाहन पर (**अधि, तिष्ठथः**) वर्त्तमान हूजिये और (**अत्र**) इस राज्य में (**यम्**) जिसकी (**अवथः**) रक्षा करते हैं (**तस्मै**) उसके लिये (**दिवः**) अन्तरिक्ष से (**वृष्टिः**) वर्षा (**मधुमत्**) मधुर आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त (**पिन्वते**) सिञ्चन करती है॥ १॥

**भावार्थः**-जहाँ धार्मिक विद्वान् पुत्र की जैसे वैसे प्रजा की पालना करने वाला राजा आदि होते हैं, वहाँ उचित काल में वृष्टि और उचित काल में मृत्यु होता है॥ १॥

**पुनर्मित्रावरुणवाच्यराजामात्यविषयमाह॥**

फिर मित्रावरुणवाच्य राजा अमात्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा।**

**वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः॥ २॥**

**सम्ऽराजौ। अस्य। भुवनस्य। राजथः। मित्रावरुणा। विदथे। स्वःऽदृशा। वृष्टिम्। वाम्। राधः। अमृतऽत्वम्। ईमहे। द्यावापृथिवी इति। वि। चरन्ति। तन्यवः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सम्राजौ**) यौ सम्यग्राजेते तौ (**अस्य**) (**भुवनस्य**) जगतो मध्ये (**राजथः**) प्रकाशेथे (**मित्रावरुणा**) वायुसूर्याविव (**विदथे**) स-ामे (**स्वर्दृशा**) यौ स्वः सुखं दर्शयतस्तौ (**वृष्टिम्**) (**वाम्**) युवाभ्याम् (**राधः**) धनम् (**अमृतत्वम्**) उदकस्य भावम् (**ईमहे**) याचामहे (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**वि**) विविधे (**चरन्ति**) गच्छन्ति (**तन्यवः**) विद्युतः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा स्वर्दृशा सम्राजौ राजामात्यौ! युवां यथा तन्यवो द्यावापृथिवी वि चरन्ति वृष्टिं जनयन्ति तथाऽस्य भुवनस्य मध्ये विदथे राजथो वयं वां राधोऽमृतत्वं चेमहे॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वायुविद्युतौ वृष्टिं कृत्वा सर्वान् मनुष्यान् धनधान्याढ्यान् कुरुतस्तथा धार्मिकौ राजामात्यौ प्रजा ऐश्वर्य्ययुक्ताः कुर्याताम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) वायु और सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान (**स्वर्दृशा**) सुख को दिखाने और (**सम्राजौ**) उत्तम प्रकार शोभित होने वाले राजा और मन्त्रीजनो! आप जैसे (**तन्यवः**) बिजुलियां (**द्यावापृथिवी**) प्रकाश और भूमि को (**वि, चरन्ति**) विचरती और (**वृष्टिम्**) वृष्टि को उत्पन्न करती हैं, वैसे (**अस्य**) इस (**भुवनस्य**) संसार के मध्य (**विदथे**) स-ाम में (**राजथः**) प्रकाशित होते हैं, हम लोग (**वाम्**) आप दोनों से (**रायः**) धन और (**अमृतत्वम्**) जल होने की (**ईमहे**) याचना करते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे वायु और बिजुली वर्षा करके सब मनुष्यों को धन और धान्य से युक्त करते हैं, वैसे धार्मिक राजा और मन्त्री प्रजाओं को ऐश्वर्य्ययुक्त करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी।**

**चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया॥ ३॥**

**सम्ऽराजौ। उग्रा। वृषभा। दिवः। पती इति। पृथिव्याः। मित्रावरुणा। विचर्षणी इति विऽचर्षणी। चित्रेभिः। अभ्रैः। उप। तिष्ठथः। रवम्। द्याम्। वर्षयथः। असुरस्य। मायया॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सम्राजौ**) यौ सम्यक् राजेते तौ (**उग्रा**) तेजस्विनौ (**वृषभा**) बलिष्ठौ वृष्टिहेतू (**दिवः**) प्रकाशस्य (**पती**) पालयितारौ (**पृथिव्याः**) भूमेः (**मित्रावरुणा**) वायुसवितारौ (**विचर्षणी**) प्रकाशकौ (**चित्रेभिः**) अद्भुतैः (**अभ्रैः**) घनैः (**उप**) (**तिष्ठथः**) समीपस्थौ भवथः (**रवम्**) शब्दम् (**द्याम्**) प्रकाशम् (**वर्षयथः**) (**असुरस्य**) मेघस्य (**मायया**) आच्छादनादिना प्रज्ञया वा॥३॥

**अन्वयः**-हे राजामात्यौ! यथा वृषभा पृथिव्या दिवस्पती विचर्षणी मित्रावरुणा चित्रेभिरभ्रैः सहोप तिष्ठथोऽसुरस्य मायया रवं द्यां कुरुथस्तथोग्रा सम्राजौ युवां प्रजा उपतिष्ठथः कामैः प्रजाः वर्षयथः॥३॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना! ये राजाऽमात्यादयो न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमाना दुष्टेषु तेजस्विनः कठोरदण्डप्रदाः सूर्य्यवायुवत्कामवर्षकाः सन्ति ते यशस्विनः प्रजाप्रियाश्च जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे राजा और मन्त्रीजनो! जैसे (**वृषभा**) बलिष्ठ वृष्टि के कारण (**पृथिव्याः**) भूमि के और (**दिवः**) प्रकाश के (**पती**) पालन करने वाले (**विचर्षणी**) प्रकाशक (**मित्रावरुणा**) वायु और सूर्य्य (**चित्रेभिः**) अद्भुत (**अभ्रैः**) मेघों के साथ (**उप, तिष्ठथः**) समीप में स्थित होते हैं और (**असुरस्य**) मेघ के (**मायया**) आच्छादन आदि से वा बुद्धि से (**रवम्**) शब्द को और (**द्याम्**) प्रकाश को करते हैं, वैसे (**उग्रा**) तेजस्वी (**सम्राजौ**) उत्तम प्रकार शोभित होने वाले आप दोनों प्रजाओं के समीप स्थित होते हैं, और कामनाओं से प्रजाओं को (**वर्षयथः**) वृष्टियुक्त करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! जो राजा और मन्त्री आदि जन न्याय और विनय से प्रकाशमान, दुष्टों में तेजस्वी और कठोर दण्ड के देने वाले, सूर्य्य और वायु के सदृश मनोरथों की वृष्टि करते वाले हैं, वे यशस्वी और प्रजाओं के प्रिय होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम्।**

**तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते॥४॥**

**माया। वाम्। मित्रावरुणा। दिवि। श्रिता। सूर्यः। ज्योतिः। चरति। चित्रम्। आयुधम्। तम्। अभ्रेण। वृष्ट्या। गूहथः। दिवि। पर्जन्य। द्रप्साः। मधुऽमन्तः। ईरते॥४॥**

**पदार्थः**-(**माया**) प्रज्ञा (**वाम्**) युवयोः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवद्राजामात्यौ (**दिवि**) विद्युति (**श्रिता**) (**सूर्य्यः**) सवितेव (**ज्योतिः**) प्रकाशस्वरूपम् (**चरति**) गच्छति (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**आयुधम्**) आयुध्यन्ति येन तत् (**तम्**) (**अभ्रेण**) घनेन (**वृष्ट्या**) (**गूहथः**) संवृणुथः (**दिवि**) सूर्य्यप्रकाशे (**पर्जन्य**) मेघ इव वर्त्तमान (**द्रप्साः**) विमोहकारकाः (**मधुमन्तः**) बहूनि मधुराणि कर्माणि विद्यन्ते येषान्ते (**ईरते**) गच्छन्ति कम्पन्ते वा॥४॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! या वां दिवि श्रिता माया सूर्य्यइव यं ज्योतिश्चित्रमायुधं चरति तमभ्रेण वृष्ट्या

गूहथो हे पर्जन्य! दिवि मधुमन्तो द्रप्सा ईरते तथा यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-ये राजाऽमात्याः सूर्य्यचन्द्रवत्तीव्रशान्तस्वभावा मेधाविनो वृष्टिवत्प्रजाः पालयन्ति ते सर्वदा सुखमुन्नयन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! **(वाम्)** आप दोनों की **(दिवि)** बिजुली में **(श्रिता)** आश्रित **(माया)** बुद्धि **(सूर्य्यः)** सूर्य्य के सदृश जिस **(ज्योतिः)** प्रकाश रूप **(चित्रम्)** अद्भुत **(आयुधम्)** युद्ध करते हैं जिससे उस शस्त्र को **(चरति)** प्राप्त होती है **(तम्)** उसको **(अभ्रेण)** मेघ से और **(वृष्ट्या)** वृष्टि से **(गूहथः)** घेरते हो, हे **(पर्जन्य)** मेघ के समान वर्तमान जन! **(दिवि)** सूर्य्य के प्रकाश में **(मधुमन्तः)** बहुत मधुर कर्म्म विद्यमान जिनके वे **(द्रप्साः)** विमोह के करने वाले **(ईरते)** चलते वा कंपते हैं, वैसे आप जानिये॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा और मन्त्री जन सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश तीव्र और शान्तस्वभाव वाले, बुद्धिमान्, वृष्टि के सदृश प्रजाओं का पालन करते हैं, वे सब काल में सुख की वृद्धि करते हैं॥४॥

**अथ मित्रावरुणवाच्यशिल्पविषयमाह॥**

अब मित्रावरुणवाच्य शिल्पविषय को कहते हैं॥

**रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु।**

**रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्॥५॥**

**रथम्। युञ्जते। मरुतः। शुभे। सुऽखम्। शूरः। न। मित्रावरुणा। गोऽइष्टिषु। रजांसि। चित्रा। वि। चरन्ति। तन्यवः। दिवः। सम्ऽराजा। पयसा। नः। उक्षतम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(रथम्)** विमानादियानम् **(युञ्जते)** **(मरुतः)** शिल्पिनो मनुष्याः **(शुभे)** कल्याणाय **(सुखम्)** सुखकरम् **(शूरः)** निर्भयो वीरः शत्रुहन्ता **(न)** इव **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानाविव यज्ञशिल्पकारिणौ **(गविष्टिषु)** किरणानां सङ्गतिषु **(रजांसि)** लोकाः **(चित्रा)** अद्भुतानि **(वि, चरन्ति)** विचलन्ति **(तन्यवः)** विद्युतः **(दिवः)** काम्यमानान् **(सम्राजा)** यौ सम्यग् राजेते तौ **(पयसा)** उदकेन **(नः)** अस्मान् **(उक्षतम्)** सिञ्चतम्॥५॥

**अन्वयः**-हे दिवः सम्राजा मित्रावरुणा! ये मरुतः शूरो न शुभे सुखं रथं युञ्जते गविष्टिषु चित्रा रजांसि तन्यवश्च वि चरन्ति तैः पयसा नोऽस्मान् युवामुक्षतम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये शूरवत्सुखं रथमधिष्ठाय यथेष्ठे स्थाने विहरन्ति तेऽभीष्टं प्राप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** कामना करने वालों के प्रति **(सम्राजा)** उत्तम प्रकार शोभित होने वाले **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश यज्ञ और शिल्प के करने वालो! जो **(मरुतः)** कारीगर मनुष्य **(शूरः)** भयरहित वीरशत्रु को मारने वाले के **(न)** सदृश **(शुभे)** कल्याण के लिये **(सुखम्)**

सुखकारक **(रथम्)** विमान आदि वाहन को **(युञ्जते)** युक्त करते हैं और **(गविष्टिषु)** किरणों की सङ्गतियों में **(चित्रा)** अद्भुत **(रजांसि)** लोक और **(तन्यवः)** बिजुलियां **(वि)** विशेष करके **(चरन्ति)** चलती हैं उनके साथ **(पयसा)** जल से **(नः)** हम लोगों को आप दोनों **(उक्षतम्)** सींचिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो शूरवीर जनों के सदृश सुखकारक रथ पर चढ़कर यथेष्ट स्थान में घूमते हैं, वे अभीष्ट पदार्थ को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनर्मित्रावरुणवाच्यविद्वद्विषयमाह॥**

फिर मित्रावरुणवाच्य विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं पर्जन्यश्चित्रां वदति त्विषीमतीम्।**
**अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम्॥६॥**

**वाचम्। सु। मित्रावरुणौ। इराऽवतीम्। पर्जन्यः। चित्राम्। वदति। त्विषिऽमतीम्। अभ्रा। वसत। मरुतः। सु। मायया। द्याम्। वर्षयतम्। अरुणाम्। अरेपसम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(वाचम्)** **(सु)** सुष्ठु **(मित्रावरुणौ)** अध्यापकाऽध्येतारौ **(इरावतीम्)** इरा जलानि विद्यन्ते यस्यास्ताम् **(पर्जन्य)** मेघः **(चित्राम्)** अद्भुताम् **(वदति)** **(त्विषीमतीम्)** प्रशस्तविद्याप्रकाशयुक्ताम् **(अभ्रा)** अभ्राणि **(वसत)** **(मरुतः)** मानवाः **(सु, मायया)** शोभनया प्रज्ञया **(द्याम्)** कामनाम् **(वर्षयतम्)** **(अरुणाम्)** प्राप्तव्याम् **(अरेपसम्)** अनपराधिनीम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! युवां यथा पर्जन्यो वदति तथेरावतीं त्विषीमतीं चित्रां वाचं वदतं यथाऽभ्राऽऽकाशे सन्ति तथैव मरुतः सु मायया सु वसत। हे मित्रावरुणावरुणामरेपसं द्यां युवां वर्षयतम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्यायुक्तां वाचं प्राप्य पर्जन्य इव कामान् वर्षयन्ति ते प्रज्ञया विदुषः सम्पाद्यानपराधिनः कुर्वन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणौ)** पढ़ाने और पढ़ने वाले जनो! आप दोनों जैसे **(पर्जन्यः)** मेघ **(वदति)** शब्द करता है, वैसे **(इरावतीम्)** जल विद्यमान जिसमें उस **(त्विषीमतीम्)** अच्छी विद्याओं के प्रकाश से युक्त **(चित्राम्)** अद्भुत **(वाचम्)** वाणी को कहो जैसे **(अभ्रा)** मेघ प्रकाश में हैं, वैसे ही **(मरुतः)** मनुष्य **(सु, मायया)** उत्तम बुद्धि से **(सु)** उत्तम प्रकार **(वसत)** बसें और हे मित्रावरुण! **(अरुणाम्)** प्राप्त होने योग्य **(अरेपसम्)** अपराधरहित **(द्याम्)** कामना की आप लोग **(वर्षयतम्)** वृष्टि करिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या से युक्त वाणी को प्राप्त होकर मेघ के सदृश मनोरथों की वृष्टि करते हैं, वे बुद्धि से विद्वान् करके [=बनाके] अपराध रहित करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया।**
**ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम्॥७॥१॥**

**धर्मणा। मित्रावरुणा। विपःऽचिता। व्रता। रक्षेथे इति। असुरस्य। मायया। ऋतेन। विश्वम्। भुवनम्। वि। राजथः। सूर्यम्। आ। धत्थः। दिवि। चित्र्यम्। रथम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**धर्मणा**) (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविव (**विपश्चिता**) विद्वांसौ (**व्रता**) सत्यभाषणादीनि व्रतानि (**रक्षेथे**) (**असुरस्य**) मेघस्य (**मायया**) आडम्बरेण (**ऋतेन**) यथार्थेन (**विश्वम्**) विशन्ति परस्मिंस्तत्सर्वम् (**भुवनम्**) भवन्ति यस्मिन् (**वि, राजथः**) विशेषेण प्रकाशेथे (**सूर्यम्**) (**आ**) (**धत्थः**) (**दिवि**) प्रकाशे (**चित्र्यम्**) अद्भुते भवम् (**रथम्**) यानम्॥७॥

**अन्वयः**-हे विपश्चिता मित्रावरुणा! यतो युवामसुरस्य मायया धर्मणा व्रता रक्षेथे ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथो दिवि सूर्यमिव चित्र्यं रथमा धत्थस्तस्मात्सत्कर्त्तव्यौ भवथः॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या धर्म्मस्य सत्यभाषणादीनि व्रतानि कर्म्माणि वा कुर्वन्ति ते सूर्य्य इव सत्येन प्रकाशिता भवन्तीति॥७॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिषष्टितमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**विपश्चिताः**) विद्वान् (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमानो! जिससे आप दोनों (**असुरस्य**) मेघ के (**मायया**) आडम्बर से और (**धर्मणा**) धर्म से (**व्रता**) सत्यभाषण आदि व्रतों की (**रक्षेथे**) रक्षा करते हैं तथा (**ऋतेन**) यथार्थ से (**विश्वम्**) प्रविष्ट होते हैं (**भुवनम्**) वा होते हैं जिसमें उस सम्पूर्ण जगत् को (**वि, राजथः**) विशेष करके प्रकाशित करते हैं और (**दिवि**) प्रकाश में (**सूर्यम्**) सूर्य के सदृश (**चित्र्यम्**) अद्भुत में हुए (**रथम्**) वाहन को (**आ, धत्थः**) धारण करते हैं, इससे सत्कार करने के योग्य होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धर्म सम्बन्धी सत्यभाषण आदि व्रत वा कर्मों को करते हैं, वे सूर्य के सदृश सत्य से प्रकाशित होते हैं॥७॥

इस सूक्त में मित्रावरुण और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पिछले सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह त्रेसठवां सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ सप्तर्चस्य चतु:षष्टितमस्य सूक्तस्य अर्चनाना ऋषि:। मित्रावरुणौ देवते। १, २ विराडनुष्टुप्। ६ निचृदनुष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:। ३, ५ भुरिगुष्णिक्। ४ उष्णिक् छन्द:। ऋषभ: स्वर:। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्द:। पञ्चम: स्वर:॥**

***अथ मित्रावरुणपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥***

अब सात ऋचा वाले चौसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण पदवाच्य विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे।**

**परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम्॥ १॥**

**वरुणम्। वः। रिशादसम्। ऋचा। मित्रम्। हवामहे। परि। व्रजाऽइव। बाह्वोः। जगन्वांसा। स्वःऽनरम्॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**वरुणम्**) उत्तमं विद्वांसम् (**व:**) युष्मान् (**रिशादसम्**) शत्रुनिवारकम् (**ऋचा**) स्तुत्या (**मित्रम्**) सखायम् (**हवामहे**) स्वीकुर्महे (**परि**) सर्वत: (**व्रजेव**) व्रजन्ति यथा गत्या तद्वत् (**बाह्वो:**) भुजयो: (**जगन्वांसा**) गच्छन्तौ (**स्वर्णरम्**) य: स्व: सुखं नयति तम्॥१॥

**अन्वय:**-यथा जगन्वांसा मित्रावरुणौ स्वर्णरं बाह्वोर्व्रजेव व: स्वीकुरुतस्तथा वयं रिशादसं वरुणं मित्रमृचा परि हवामहे॥१॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथा विद्वांस: प्रीत्या युष्मान् गृह्णन्ति तथैतान् यूयमपि स्वीकुरुत॥१॥

**पदार्थ:**-जैसे (**जगन्वांसा**) जाते हुए प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान जन (**स्वर्णरम्**) सुख को प्राप्त कराने वाले को (**बाह्वो:**) भुजाओं की (**व्रजेव**) चलते हैं जिससे उस गति से जैसे वैसे (**व:**) आप लोगों को स्वीकार करते हैं, वैसे हम लोग (**रिशादसम्**) शत्रुओं के रोकने वाले (**वरुणम्**) उत्तम विद्वान् और (**मित्रम्**) मित्र का (**ऋचा**) स्तुति से (**परि**) सब ओर से (**हवामहे**) स्वीकार करते हैं॥१॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन प्रीति से आप लोगों का ग्रहण करते हैं, वैसे इनको आप लोग भी स्वीकार करिये॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते।**

**शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे॥ २॥**

**ता। बाहवा। सुऽचेतुना। प्र। यन्तम्। अस्मै। अर्चते। शेवम्। हि। जार्यम्। वाम्। विश्वासु। क्षासु। जोगुवे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**बाहवा**) बाहुना (**सुचेतुना**) उत्तमविज्ञानेन (**प्र**) (**यन्तम्**) प्रयत्नं कुर्वन्तम् (**अस्मै**) (**अर्चते**) सत्कर्त्रे (**शेवम्**) सुखम् (**हि**) (**जार्यम्**) जरावस्थाजन्यम् (**वाम्**) युवयोः (**विश्वासु**) समग्रासु (**क्षासु**) भूमिषु (**जोगुवे**) उपदिशामि॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! ता युवां बाहवा सुचेतुनाऽस्मा अर्चते शेवं हि प्र यन्तं वा जार्यमहं विश्वासु क्षासु जोगुवे तथा तं प्रशंसतम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये सर्वस्यां पृथिव्यां विद्याबाहुबलाभ्यामुत्तमेभ्यः सुखं प्रयच्छन्ति तेभ्यो वयमपि सुखं प्रयच्छेम॥ २॥

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमानो! (**ता**) वे दोनों आप (**बाहवा**) बाहु और (**सुचेतुना**) उत्तम विज्ञान से (**अस्मै**) इस (**अर्चते**) सत्कार करने वाले जन के लिये (**शेवम्**) सुख को (**हि**) ही (**प्र, यन्तम्**) प्रयत्न करते हुए (**वाम्**) आप दोनों का (**जार्यम्**) जरा वृद्धावस्था में उत्पन्न विषय का मैं (**विश्वासु**) सम्पूर्ण (**क्षासु**) भूमियों में (**जोगुवे**) उपदेश करता हूं, वैसे उसकी आप लोग प्रशंसा करो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब पृथिवी पर विद्या और बाहुबल से उत्तम पुरुषों के लिये सुख देते हैं, उनके लिये हम लोग भी सुख देवें॥ २॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।**

**अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे॥ ३॥**

**यत्। नूनम्। अश्याम्। गतिम्। मित्रस्य। यायाम्। पथा। अस्य। प्रियस्य। शर्मणि। अहिंसानस्य। सश्चिरे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) याम् (**नूनम्**) निश्चितम् (**अश्याम्**) प्राप्नुयाम् (**गतिम्**) (**मित्रस्य**) सख्युः (**यायाम्**) (**पथा**) मार्गेण (**अस्य**) (**प्रियस्य**) कमनीयस्य (**शर्मणि**) गृहे (**अहिंसानस्य**) हिंसारहितस्य (**सश्चिरे**) समवयन्ति प्राप्नुवन्ति॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अस्य प्रियस्याहिंसानस्य मित्रस्य शर्मणि यद्यां गतिं विद्वांसः सश्चिरे तामहं नूनमश्यां पथा यायाम्॥ ३॥

**भावार्थः**-सर्वे मनुष्या विद्वदनुकरणं कृत्वा धर्म्ममार्गेण गत्वा सद्गतिं प्राप्नुवन्तु॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अस्य**) इस (**प्रियस्य**) सुन्दर (**अहिंसानस्य**) हिंसा से रहित (**मित्रस्य**) मित्र के (**शर्मणि**) गृह में (**यत्**) जिस (**गतिम्**) गमन को विद्वान् जन (**सश्चिरे**) प्राप्त होते हैं, उस गमन को मैं (**नूनम्**) निश्चित (**अश्याम्**) प्राप्त होऊँ और (**पथा**) मार्ग से (**यायाम्**) जाऊँ॥ ३॥

**भावार्थः**-सब मनुष्य विद्वानों का अनुकरण कर और धर्ममार्ग से चलकर उत्तम गति को प्राप्त होवें॥३॥

**पुनर्मित्रावरुणपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

फिर मित्रावरुणपदवाच्य विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा।**

**यद्ध क्षये मघोनां स्तोतृणां च स्पूर्धसे॥४॥**

**युवाभ्याम्। मित्रावरुणा। उपऽमम्। धेयाम्। ऋचा। यत्। ह। क्षये। मघोनाम्। स्तोतृणाम्। च। स्पूर्धसे॥४॥**

**पदार्थः**-(**युवाभ्याम्**) (**मित्रावरुणा**) अध्यापकोपदेशकौ (**उपमम्**) उपमाम् (**धेयाम्**) दध्याम् (**ऋचा**) स्तुत्या (**यत्**) याम् (**ह**) किल (**क्षये**) गृहे (**मघोनाम्**) बहुधनवताम् (**स्तोतृणाम्**) विदुषाम् (**च**) (**स्पूर्धसे**) स्पर्धायै॥४॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! युवाभ्यामृचा स्पूर्धसे यन्मघोनां स्तोतृणाञ्च क्षये उपमं यथाहं धेयां तथा तां ह युवां धरतम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वैर्मनुष्यैर्विदुषामुपमा ग्राह्या॥४॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) अध्यापक और उपदेशक जनो! (**युवाभ्याम्**) आप दोनों से (**ऋचा**) स्तुति से (**स्पूर्धसे**) स्पर्धा के लिए (**यत्**) जिस (**मघोनाम्**) बहुत धन वालों के (**स्तोतृणाम्, च**) और विद्वानों के (**क्षये**) गृह में (**उपमम्**) उपमा को जैसे मैं (**धेयाम्**) धारण करूं, वैसे उसको (**ह**) निश्चय आप धारण करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों की उपमा को ग्रहण करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ।**

**स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे॥५॥**

**आ। नः। मित्र। सुदीतिऽभिः। वरुणः। च। सधऽस्थे। आ। स्वे। क्षये। मघोनाम्। सखीनाम्। च। वृधसे॥५॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्माकम् (**मित्र**) सखे (**सुदीतिभिः**) प्रशस्तप्रकाशैः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**च**) (**सधस्थे**) समानस्थाने (**आ**) (**स्वे**) स्वकीये (**क्षये**) निवासे (**मघोनाम्**) प्रशंसितधनानाम् (**सखीनाम्**) मित्राणाम् (**च**) (**वृधसे**) वर्धितुम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र त्वं वरुणश्च युवां सुदीतिभिर्मघोनां सखीनां नो वृधसे स्वे क्षय आ वसत सधस्थे

चाऽऽवसतं वयं च युवयोः क्षये सधस्थे च वसेम॥५॥

**भावार्थः**-त एव सखायः श्रेष्ठाः ये परस्परोन्नतये सुखदुःखे सङ्गे च प्रयतन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र आप और **(वरुणः)** श्रेष्ठ जन! आप दोनों **(सुदीतिभिः)** अच्छे प्रकाशों से **(मघोनाम्)** प्रशंसित धन जिसके ऐसे **(सखीनाम्)** मित्रों और **(नः)** हम लोगों को **(वृधसे)** वृद्धि के लिये **(स्वे)** अपने **(क्षये)** निवास स्थान में **(आ)** सब और बसिये **(सधस्थे, च)** और तुल्यस्थान में **(आ)** सब ओर से बसिये तथा हम लोग भी आप दोनों के निवास स्थान **(च)** और तुल्यस्थान में बसें॥५॥

**भावार्थः**-वे ही मित्र श्रेष्ठ हैं, जो परस्पर की उन्नति के लिये सुख दुःख और सङ्ग में प्रयत्न करते हैं॥५॥

**पुनर्विरोधत्यागधनप्राप्तिविषयमाह॥**

फिर विरोध के त्याग और धनप्राप्ति विषय को कहते हैं॥

**युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्चं बिभृथः।**

**उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये॥६॥**

**युवम्। नः। येषु। वरुण। क्षत्रम्। बृहत्। च। बिभृथः। उरु। नः। वाजऽसातये। कृतम्। राये। स्वस्तये॥६॥**

**पदार्थः**-**(युवम्)** युवाम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(येषु)** **(वरुण)** उत्तम **(क्षत्रम्)** धनम् **(बृहत्)** महत् **(च)** मित्र **(बिभृथः)** **(उरु)** बहु **(नः)** अस्मान् **(वाजसातये)** स-ामाय **(कृतम्)** **(राये)** धनाय **(स्वस्तये)** सुखाय॥६॥

**अन्वयः**-हे वरुण च! युवं येषु नो बृहदुरु क्षत्रं बिभृथो नो वाजसातये राये स्वस्तये कृतं तेषु तथैव भवतम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विरोधं विहाय सम्प्रयोगेणोद्यमं कृत्वा विजयधनादिकं प्रापणीयम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वरुण)** उत्तम **(च)** और हे मित्र! **(युवम्)** आप दोनों **(येषु)** जिनमें **(नः)** हम लोगों के लिये **(बृहत्)** बड़े और **(उरु)** बहुत **(क्षत्रम्)** धन को **(बिभृथः)** धारण करते हैं और **(नः)** हम लोगों को **(वाजसातये)** स-ाम के लिये **(राये)** धन के और **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(कृतम्)** किया उनमें वैसे ही हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विरोध का त्याग कर और उत्तम प्रकार मिलने से उद्यम करके विजय और धन आदि को प्राप्त करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उच्छन्त्यां म यजता देवक्षत्रे रुशद्गवि।**

**सुतं सोमं न हस्तिभिरा पड्भिर्धावतं नरा बिभ्रतावर्चनानसम्॥७॥२॥**

**उच्छन्त्याम्। मे। यजता। देवऽक्षत्रे। रुशत्ऽगवि। सुतम्। सोमम्। न। हस्तिऽभिः। आ। पट्ऽभिः। धावतम्। नरा। बिभ्रतौ। अर्चनानसम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**उच्छन्त्याम्**) विवसन्त्याम् (**मे**) मम (**यजता**) सङ्गन्तारौ (**देवक्षत्रे**) देवानां धने राज्ये वा (**रुशद्गवि**) प्रकाशमानरश्मियुक्ते (**सुतम्**) निष्पादितम् (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम् (**न**) इव (**हस्तिभिः**) इभैः (**आ**) (**पड्भिः**) पादैः (**धावतम्**) गच्छन्तम् (**नरा**) नेतारौ (**बिभ्रतौ**) धरन्तौ (**अर्चनानसम्**) अर्चिता श्रेष्ठा नासिका यस्य तम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ यजता नरा राजाऽमात्यौ! युवामुच्छन्त्यां रुशद्गवि देवक्षत्रे सुतं सोमं हस्तिभिर्न पड्भिर्धावतमर्चनानसं बिभ्रतौ मे सुतं सोममा प्राप्नुतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे पुरुषार्थिनो राजजनाः! प्रजा न्यायेन पालयित्वा विद्वद्धनं प्राप्नुतेति॥७॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःषष्टितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान (**यजता**) मिलने वाले (**नरा**) नायक राजा और मन्त्रीजन! आप दोनों (**उच्छन्त्याम्**) विवास करती हुई में तथा (**रुशद्गवि**) प्रकाशमान किरणों से युक्त (**देवक्षत्रे**) विद्वानों के धन वा राज्य में (**सुतम्**) उत्पन्न किये गये (**सोमम्**) ऐश्वर्य को (**हस्तिभिः**) हाथियों से (**न**) जैसे वैसे (**पड्भिः**) पैरों से (**धावतम्**) प्राप्त होओ और (**अर्चनानसम्**) श्रेष्ठ नासिका जिसकी उसको (**बिभ्रतौ**) धारण करते हुए (**मे**) मेरे उत्पन्न किये गये ऐश्वर्य को (**आ**) अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे पुरुषार्थी राजजनो! प्रजाओं का न्याय से पालन करके विद्वानों के धन को प्राप्त होओ॥७॥

इस सूक्त में प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान तथा विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौसठवां सूक्त तथा द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**अथ षडर्चस्य पञ्चषष्टितमस्य सूक्तस्य रातहव्यात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, ४ अनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ३ स्वराडुष्णिक्। ५ भुरिगुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ६ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अत्र मित्रावरुणपदवाच्याध्यापकाध्येतृपदेश्योपदेशकविषयमाह॥***

अब छः ऋचा वाले पैंसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण पदवाच्य पढ़ने पढ़ाने वाले वा उपदेश योग्य वा उपदेश देने वालों के विषय को कहते हैं॥

**यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः।**

**वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः॥१॥**

**यः। चिकेत। सः। सुऽक्रतुः। देवऽत्रा। सः। ब्रवीतु। नः। वरुणः। यस्य। दर्शतः। मित्रः। वा। वनते। गिरः॥१॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**चिकेत**) जानीयात् (**सः**) (**सुक्रतुः**) सुष्ठु बुद्धिमान् (**देवत्रा**) देवेषु (**सः**) (**ब्रवीतु**) (**नः**) अस्मान् (**वरुणः**) वरः (**यस्य**) (**दर्शतः**) द्रष्टव्यः (**मित्रः**) सखा (**वा**) (**वनते**) सम्भजति (**गिरः**) वाणीः॥१॥

**अन्वयः**-यत्सुक्रतुर्वरुणोऽस्ति स चिकेत यो देवत्रा देवोऽस्ति स नो ब्रवीतु वा यस्य दर्शतो मित्रोऽस्ति स नो गिरो वनते॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽस्माकं मध्येऽधिकविद्यो भवेत् स एवोपदिशेत् यो ज्ञानाऽधिकः स्यात् स सत्याऽसत्ये विविच्यात्॥१॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**सुक्रतुः**) उत्तम प्रकार बुद्धिमान् और (**वरुणः**) श्रेष्ठ है (**सः**) वह (**चिकेत**) जाने और जो (**देवत्रा**) विद्वानों में विद्वान् है (**सः**) वह (**नः**) हम लोगों को (**ब्रवीतु**) कहे (**वा**) वा (**यस्य**) जिसका (**दर्शतः**) देखने के योग्य (**मित्रः**) मित्र है वह हम लोगों की (**गिरः**) वाणियों को (**वनते**) पालन करता है॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो हम लोगों के मध्य में अधिक विद्वान् होवे, वही उपदेश करे और जो अधिक ज्ञानवान् होवे, वह सत्य और असत्य को अलग करे॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा।**

**ता सत्पती ऋतावृध ऋतावाना जनेजने॥२॥**

**ता। हि। श्रेष्ठऽवर्चसा। राजाना। दीर्घश्रुतऽतमा। ता। सत्पती इति सत्ऽपती। ऋतऽवृधा। ऋतऽवाना। जनेऽजने॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**हि**) यतः (**श्रेष्ठवर्चसा**) श्रेष्ठं वर्चोऽध्ययनं ययोस्तौ (**राजाना**) प्रकाशमानौ (**दीर्घश्रुत्तमा**) यौ दीर्घकालं शृणुतस्तावतिशयितौ (**ता**) तौ (**सत्पती**) सतां पालकौ (**ऋतावृधा**) यावृतं सत्यं वर्धयतस्तौ (**ऋतावाना**) ऋतं सत्यं विद्यते ययोस्तौ (**जनेजने**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यौ दीर्घश्रुत्तमा श्रेष्ठवर्चसा राजाना वर्त्तेते ता यौ जनेजने सत्पती ऋतावृधा ऋतावाना वर्त्तेते ता हि वयं सततं सत्कुर्य्याम॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या बहुश्रुताः पूर्णविद्याः सत्यधर्म्मनिष्ठा विद्याप्रवृत्तिप्रियाश्च स्युस्त एवोपदेशका अध्यापकाश्च भवन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**दीर्घश्रुत्तमा**) दीर्घकालपर्यन्त अत्यन्त शास्त्र को सुनने वाले (**श्रेष्ठवर्चसा**) श्रेष्ठ अध्ययन जिनका ऐसे (**राजाना**) प्रकाशमान जन वर्त्तमान हैं (**ता**) वे दोनों और जो (**जनेजने**) मनुष्य मनुष्य में (**सत्पती**) श्रेष्ठों के पालन करने और (**ऋतावृधा**) सत्य को बढ़ाने वाले (**ऋतावाना**) तथा सत्य विद्यमान जिनमें (**ता, हि**) उन्हीं दोनों का हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बहुश्रुत, पूर्ण विद्या वाले, सत्य धर्म्म में निष्ठा करने वाले और जो विद्या की प्रवृत्ति में प्रीति करने वाले हों, वे ही उपदेशक अध्यापक होवें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा।**

**स्वश्वासः सु चेतुना वाजाँ अभि प्र दावने॥ ३॥**

**ता। वाम्। इयानः। अवसे। पूर्वौ। उप। ब्रुवे। सचा। सुऽअश्वासः। सु। चेतुना। वाजान्। अभि। प्र। दावने॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**वाम्**) युवाम् (**इयानः**) प्राप्नुवन् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**पूर्वौ**) प्रथमाधीतविद्यौ (**उप**) (**ब्रुवे**) (**सचा**) समवेतौ (**स्वश्वासः**) शोभना अश्वा येषान्ते (**सु**) सुष्ठु (**चेतुना**) विज्ञानवता सह (**वाजान्**) स- ग्रामान् (**अभि**) (**प्र**) (**दावने**) दात्रे॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! स्वश्वासः सु चेतुना दावने वाजानभि प्र ब्रूयुस्तानहमुप ब्रुवे। हे अध्यापकोपदेशकौ! यौ पूर्वौ वामियानोऽवसे वर्त्ते ता सचाऽहमुपब्रुवे॥ ३॥

**भावार्थः**-यथोपदेशका उपदिशेयुस्तथैवोपदेश्या अन्यानप्युपदिशन्तु॥ ३॥

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान के समान वर्तमानो! (**स्वश्वासः**) अच्छे घोड़े जिनके ये (**सु, चेतुना**) उत्तम ज्ञानवान् के साथ (**दावने**) देने वाले के लिये (**वाजान्**) संग्रामों के (**अभि, प्र**) सम्मुख अच्छे प्रकार कहें उनको मैं (**उप, ब्रुवे**) समीप में कहूँ। हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जिन (**पूर्वौ**) प्रथम

विद्या पढ़े हुए **(वाम्)** आप दोनों को **(इयानः)** प्राप्त होता हुआ **(अवसे)** रक्षा आदि के लिये वर्त्तमान हूं **(ता)** उन **(सचा)** मिले हुओं के मैं समीप में कहता हूँ॥३॥

**भावार्थः**-जैसे उपदेशक जन उपदेश देवें, वैसे ही जिनको उपदेश दिया जाये वे औरों को भी उपदेश करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते।**

**मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः॥४॥**

**मित्रः। अंहोः। चित्। आत्। उरु। क्षयाय। गातुम्। वनते। मित्रस्य। हि। प्रऽतूर्वतः। सुऽमतिः। अस्ति। विधतः॥४॥**

**पदार्थः**-**(मित्रः)** सखा **(अंहोः)** दुष्टाचारात् **(चित्)** **(आत्)** **(उरु)** बहु **(क्षयाय)** निवासाय **(गातुम्)** पृथिवीम् **(वनते)** सम्भजति **(मित्रस्य)** **(हि)** खलु **(प्रतूर्वतः)** शीघ्रं कर्त्तुः **(सुमतिः)** उत्तमप्रज्ञा **(अस्ति)** **(विधतः)** परिचरतः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मित्रोंऽहोश्चिद्वियोज्याऽऽदुरु क्षयाय गातुं वनते स हि प्रतूर्वतो विधतो मित्रस्य या सुमतिरस्ति तां गृह्णीयात्॥४॥

**भावार्थः**-त एव सखायः सन्ति ये निष्कपटत्वेन शुद्धभावेन परस्परैः सह वर्त्तन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मित्रः)** मित्र **(अंहोः)** दुष्ट आचरण से **(चित्)** भी वियुक्त करके **(आत्)** अनन्तर **(उरु)** बहुत **(क्षयाय)** निवास के लिये **(गातुम्)** पृथिवी को **(वनते)** सेवन करता है वह **(हि)** निश्चय से **(प्रतूर्वतः)** शीघ्र करने वाले **(विधतः)** परिचरण करते हुए **(मित्रस्य)** मित्र की जो **(सुमतिः)** श्रेष्ठ बुद्धि **(अस्ति)** है, उसको ग्रहण करें॥४॥

**भावार्थः**-वे ही मित्र हैं, जो निष्कपटता से और शुद्ध भाव से परस्पर के जनों के साथ वर्तमान हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वयं मित्रस्यावसि स्याम सुप्रथस्तमे।**

**अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः॥५॥**

**वयम्। मित्रस्य। अवसि। स्याम। सुप्रथःऽतमे। अनेहसः। त्वाऽऊतयः। सत्रा। वरुणऽशेषसः॥५॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**मित्रस्य**) (**अवसि**) रक्षणादौ कर्मणि (**स्याम**) प्रवृत्ता भवेम (**सप्रथस्तमे**) अतिविस्तारयुक्ते (**अनेहसः**) अहिंसकाः सन्तः (**त्वोतयः**) त्वया रक्षिताः (**सत्रा**) सत्येन युक्ताः (**वरुणशेषसः**) वरुण उत्तमो जनः शेषो येषान्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽनेहसस्त्वोतयो वरुणशेषसो वयं सत्रा मित्रस्य सप्रथस्तमेऽवसि स्याम॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वदा कृतज्ञता भाव्या कृतघ्नता च दूरतस्त्याज्या॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अनेहसः**) नहीं हिंसक होते हुए (**त्वोतयः**) आपसे रक्षित और (**वरुणशेषसः**) उत्तम जन शेष जिनके वे (**वयम्**) हम लोग (**सत्रा**) सत्य से युक्त (**मित्रस्य**) मित्र के (**सप्रथस्तमे**) अतिविस्तार युक्त (**अवति**) रक्षण आदि कर्म्म में (**स्याम**) प्रवृत्त होवें॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा कृतज्ञता करें और कृतघ्नता को दूर से त्याग करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः।**

**मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम्॥६॥३॥**

**युवम्। मित्रा। इमम्। जनम्। यतथः। सम्। च। नयथः। मा। मघोनः। परि। ख्यतम्। मो इति। अस्माकम्। ऋषीणाम्। गोऽपीथे। नः। उरुष्यतम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**युवम्**) युवाम् (**मित्रा**) (**इमम्**) (**जनम्**) उपदेश्यं मनुष्यम् (**यतथः**) प्रेरयथः (**सम्**) (**च**) (**नयथः**) प्रापयथः (**मा**) निषेधे (**मघोनः**) बहुधनयुक्तान् (**परि**) वर्जने (**ख्यतम्**) निराकुरुतम् (**मो**) निषेधे (**अस्माकम्**) (**ऋषीणाम्**) वेदार्थविदाम् (**गोपीथे**) गवां पेये दुग्धादौ (**नः**) अस्मान् (**उरुष्यतम्**) प्रेरयेतम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मित्रा अध्यापकोपदेशकौ! युवमिमं जनं यतथः सन्नयथश्च मघोनो नो मा परि ख्यतमृषीणामस्माकं गोपीथे मो परिख्यतं शुभे कर्मण्यस्मानुरुष्यतम्॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तः सर्वान् जनान् प्रयतमानान् कृत्वा सुखं प्रापयन्तु। हे विद्यार्थिनः श्रोतारो वा! यूयमस्मानध्यापकानुपदेशकान् कदाचिन्मावमन्यध्वमेव वर्त्तित्वा सत्यं धर्मं सेवेमहीति॥६॥

अत्र मित्रावरुणाध्यापकाध्येत्रुपदेशकोपदेश्यकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चषष्टितमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**मित्रा**) प्राण और उदान के समान वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! (**युवम्**) आप दोनों (**इमम्**) इस (**जनम्**) उपदेश देने योग्य जन को (**यतथः**) प्रेरणा करते और (**सम्, नयथः, च**) प्राप्त कराते हैं तथा (**मघोनः**) बहुत धनों से युक्त (**नः**) हम लोगों का (**मा**) मत (**परि, ख्यतम्**) निरादर कीजिये और (**ऋषीणाम्**) वेदार्थ के जानने वाले (**अस्माकम्**) हम लोगों का (**गोपीथे**) गौओं के

पीने योग्य दुग्ध आदि में **(मो)** नहीं निरादर करिये और शुभ कर्म में हम लोगों को **(उरुष्यतम्)** प्रेरणा करिये॥६॥

**भावार्थः-**हे विद्वानो! आप लोग सब लोगों को प्रयत्न से युक्त करके सुख को प्राप्त कराइये और हे विद्यार्थीजनो वा श्रोतृजनो! आप लोग हम अध्यापक और उपदेशकों का अपमान मत करो इस प्रकार वर्त्ताव कर सत्य धर्म का सेवन हम लोग करें॥६॥

इस सूक्त में मित्रावरुणपदवाच्य अध्यापक और अध्ययन करने तथा उपदेश करने और उपदेश देने योग्यों के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैसठवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षट्षष्टितमस्य सूक्तस्य रातहव्य आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १ भुरिगनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप्। ३, ४, ५, ६ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यः किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब छः ऋचा वाले छासठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र मे मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ चि॑कितान सु॒क्रतू॑ दे॒वौ म॑र्त रि॒शाद॑सा।**

**वरु॑णाय ऋ॒तपे॑शसे दधी॒त प्रय॑से म॒हे॥ १॥**

**आ। चि॒कि॒ता॒न॒। सु॒क्रतू॒ इति॑ सु॒ऽक्रतू॑। दे॒वौ। म॒र्त॒। रि॒शाद॑सा। वरु॑णाय। ऋ॒तऽपे॑शसे। द॒धी॒त। प्रय॑से। म॒हे॥ १॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(चिकितान)** ज्ञानयुक्त **(सुक्रतू)** शोभनप्रज्ञौ **(देवौ)** विद्वांसौ **(मर्त्त)** मरणधर्मयुक्त **(रिशादसा)** दुष्टहिंसकौ **(वरुणाय)** उत्तमाय व्यवहाराय **(ऋतपेशसे)** सत्यस्वरूपाय **(दधीत)** दधेत **(प्रयसे)** प्रयतमानाय **(महे)** महते॥ १॥

**अन्वयः**-हे चिकितान मर्त्त! भवानृतपेशसे प्रयसे महे वरुणाय रिशादसा सुक्रतू देवावा दधीत॥ १॥

**भावार्थः**-स एव विद्वान् भवति यो विदुषां सङ्गं कृत्वा प्रज्ञां वर्धयति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(चिकितान, मर्त्त)** ज्ञान और मरण धर्मयुक्त! आप **(ऋतपेशसे)** सत्यस्वरूप और **(प्रयसे)** प्रयत्न करते हुए **(महे)** बड़े **(वरुणाय)** उत्तम व्यवहारयुक्त के लिये **(रिशादसा)** दुष्टों के मारने वाले **(सुक्रतू)** उत्तम बुद्धिमान् **(देवौ)** दो विद्वानों को **(आ)** सब प्रकार से **(दधीत)** धारण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-वही विद्वान् होता है, जो विद्वानों का सङ्ग करके बुद्धि को बढ़ाता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता हि क्ष॒त्रमवि॑ह्रुतं स॒म्यग॑सु॒र्य१॒॑माशा॑ते।**

**अध॑ व्र॒तेव॒ मानु॑षं॒ स्व१॒॑र्ण धा॑यि दर्श॒तम्॥ २॥**

**ता। हि। क्ष॒त्रम्। अवि॑ऽह्रुतम्। स॒म्यक्। अ॒सु॒र्य॑म्। आशा॑ते॒ इति॑। अध॑। व्र॒ताऽइ॑व। मानु॑षम्। स्व१॒॑रिति॑ स्वः॑। न। धा॒यि॒। द॒र्श॒तम्॥ २॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(हि)** एव **(क्षत्रम्)** धनं राज्यं वा **(अविह्रुतम्)** अकुटिलम् **(सम्यक्)** यत्समीचीनमञ्चति **(असुर्य्यम्)** असुरेभ्यो विद्वद्भ्यो हितम् **(आशाते)** व्याप्नुतः **(अध)** अथ **(व्रतेव)** कर्म्माणीव **(मानुषम्)** मनुष्याणामिदम् **(स्वः)** सुखम् **(न)** इव **(धायि)** ध्रियताम् **(दर्शतम्)** द्रष्टव्यम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! ता ह्यविह्रुतमसुर्य्यं सम्यक् क्षत्रमाशाते अथ याभ्यां हितम्मानुषं दर्शतं व्रतेव स्वर्ण

धायि॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्या धर्मपथा सुखं कर्म्म च धरन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ता)** वे **(हि)** ही **(अविह्रुतम्)** नहीं कुटिल **(असुर्य्यम्)** विद्वानों के लिये हितकारक **(सम्यक्)** उत्तम प्रकार चलने वाले **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य को **(आशाते)** व्याप्त होते हैं **(अध)** इसके अनन्तर जिन्होंने हित **(मानुषम्)** मनुष्य सम्बन्धी **(दर्शतम्)** देखने योग्य **(व्रतेव)** कर्म्मों के सदृश और **(स्वः)** सुख के **(न)** सदृश **(धायि)** धारण किया॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। सब मनुष्य धर्म पथ से सुख और कर्म्म को धारण करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वामेषे रथानामुर्वीं गव्यूतिमेषाम्।**
**रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक् स्तोमैर्मनामहे॥३॥**

**ता। वाम्। एषे। रथानाम्। उर्वीम्। गव्यूतिम्। एषाम्। रातऽहव्यस्य। सुऽस्तुतिम्। दधृक्। स्तोमैः। मनामहे॥३॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(वाम्)** युवाम् **(एषे)** गन्तुम् **(रथानाम्)** विमानादियानानाम् **(उर्वीम्)** पृथिवीम् **(गव्यूतिम्)** मार्गम् **(एषाम्)** **(रातहव्यस्य)** दत्तदातव्यस्य **(सुष्टुतिम्)** शोभनां प्रशंसाम् **(दधृक्)** प्रागल्भ्यं प्राप्तौ **(स्तोमैः)** प्रशंसनैः **(मनामहे)** विजानीमः॥३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवामेषां रथानां रातहव्यस्य सुष्टुतिं गव्यूतिमेषे प्रवर्त्तेथे यथा विद्वान् स्तोमैरेतेषामुर्वीं दधाति तथा ता दधृग् वां तं च वयं मनामहे॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये जगत्कल्याणाय सृष्टिक्रमेण पदार्थविद्यां प्रकाशयन्ति ते धन्या भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जन! आप दोनों **(एषाम्)** इन **(रथानाम्)** विमान आदि वाहनों का **(रातहव्यस्य)** दिया है देने योग्य पदार्थ जिसने उसको **(सुष्टुतिम्)** उत्तम प्रशंसा को और **(गव्यूतिम्)** मार्ग को **(एषे)** प्राप्त होने को प्रवृत्त होते हैं, और जैसे विद्वान् जन **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से इन की **(उर्वीम्)** पृथिवी को धारण करता है, वैसे **(ता)** उन **(दधृक्)** प्रगल्भता को प्राप्त **(वाम्)** आप दोनों को और उस विद्वान् को हम लोग **(मनामहे)** अच्छे प्रकार जानते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगत् के कल्याण के लिये सृष्टिक्रम से पदार्थविद्या को प्रकाशित करते हैं, वे धन्य होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता।**

**नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा॥४॥**

**अध। हि। काव्या। युवम्। दक्षस्य। पूःऽभिः। अद्भुता। नि। केतुना। जनानाम्। चिकेथे इति। पूतऽदक्षसा॥४॥**

**पदार्थः-(अधा)** अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(काव्या)** कवीनां कर्माणि **(युवम्)** युवाम् **(दक्षस्य)** बलस्य **(पूर्भिः)** नगरैः **(अद्भुता)** आश्चर्य्यरूपाणि **(नि)** **(केतुना)** प्रज्ञया **(जनानाम्)** मनुष्याणाम् **(चिकेथे)** जानीथः **(पूतदक्षसा)** पूतं पवित्रं दक्षो बलं ययोस्तौ॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! पूतदक्षसा युवं केतुनाऽद्भुता काव्या चिकेथे अधा हि जनानां दक्षस्य पूर्भिर्नि चिकेथे तौ वयं सदा सत्कुर्याम॥४॥

**भावार्थः**-विदुषामिदं योग्यमस्ति यत्स्वयं पूर्णा विद्वांसो भूत्वाऽज्ञजनानध्यापनोपदेशाभ्यामुप- कृतान् कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! **(पूतदक्षसा)** पवित्र बल जिनका ऐसे **(युवम्)** आप दोनों **(केतुना)** बुद्धि से **(अद्भुता)** आश्चर्य्य रूप **(काव्या)** कवियों के कर्म्मों को **(चिकेथे)** जानते हैं **(अधा)** इसके अनन्तर **(हि)** जिससे **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(दक्षस्य)** बल सम्बन्धी **(पूर्भिः)** नगरों से **(नि)** निरन्तर करके जानते हैं, उनका हम लोग सदा सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-विद्वानों को यह योग्य है कि स्वयं पूर्ण विद्वान् होके अज्ञजनों को अध्यापन और उपदेश से उपकृत करें॥४॥

**स्त्रियोऽपि विद्वद्वदुत्तमाचरणं कुर्य्युरित्याह॥**

स्त्री भी विद्वानों के समान होकर उत्तमाचरण करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तदृतं पृथिवि बृहच्छ्रवएष ऋषीणाम्।**

**ज्रयसानावरं पृथ्वति क्षरन्ति यामभिः॥५॥**

**तत्। ऋतम्। पृथिवि। बृहत्। श्रवःऽएषे। ऋषीणाम्। ज्रयसानौ। अरम्। पृथु। अति। क्षरन्ति। यामऽभिः॥५॥**

**पदार्थः-(तत्)** **(ऋतम्)** सत्यं जलं वा **(पृथिवि)** भूमिरिव वर्त्तमाने **(बृहत्)** महत् **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(एषे)** प्राप्तुम् **(ऋषीणाम्)** मन्त्रार्थविदाम् **(ज्रयसानौ)** गच्छन्तौ विजानन्तौ वा **(अरम्)** अलम् **(पृथु)** विस्तीर्णम् **(अति)** **(क्षरन्ति)** वर्षन्ति **(यामभिः)** प्रहरैर्यमोद्भवैः कर्म्मभिर्वा॥५॥

**अन्वयः**-हे पृथिवि विदुषि स्त्रि! यथा मेघा योगिनो वा यामभिः पृथु जलमरमति क्षरन्ति यथा च ज्रयसानौ वर्त्तेते यथर्षीणां तद् बृहदृतं श्रवश्चैषे प्रवर्त्तस्व॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि स्त्रियो विदुष्यो भूत्वा सत्यं धर्म्मं शीलं च स्वीकृत्य मेघवत्सुखानि वर्षन्ति तर्हि ता महत्सुखमाप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पृथिवि)** पृथिवी के सदृश वर्त्तमान विद्या से युक्त स्त्री! जैसे मेघ वा योगी जन **(यामभिः)** प्रहरों वा प्रहर में उत्पन्न कर्म्मों से **(पृथु)** विस्तीर्ण जल को **(अरम्)** पूरा **(अति, क्षरन्ति)** वर्षाते हैं और जैसे **(व्रयसानौ)** जाते हुए वा विशेष करके जानते हुए वर्त्तमान हैं, वैसे **(ऋषीणाम्)** मन्त्रार्थ जानने वालों के **(तत्)** उस **(बृहत्)** बड़े **(ऋतम्)** सत्य को वा जल को **(श्रवः)** और अन्न वा श्रवण को **(एषे)** प्राप्त होने को प्रवृत्त होओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्रियाँ विद्यायुक्त होकर सत्य, धर्म्म और उत्तम स्वभाव को स्वीकार करके मेघ के सदृश सुखों की वृष्टि करती हैं तो वे बड़े सुख को प्राप्त होती हैं॥५॥

**मनुष्यैर्न्यायेन राज्यं रक्षणीयमित्याह॥**

मनुष्यों को न्याय से राज्य की रक्षा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्वामीयचक्षसा मित्रा वयं च सूरयः।**

**व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये॥६॥४॥**

**आ। यत्। वाम्। ईयऽचक्षसा। मित्रा। वयम्। च। सूरयः। व्यचिष्ठे। बहुऽपाय्ये। यतेमहि। स्वऽराज्ये॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(यत्)** यस्मिन् **(वाम्)** युवाम् **(ईयचक्षसा)** ईयं प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा चक्षो दर्शनं कथनं च ययोस्तौ **(मित्रा)** सखायौ **(वयम्)** **(च)** **(सूरयः)** विद्वांसः **(व्यचिष्ठे)** अतिशयेन व्याप्ते **(बहुपाय्ये)** बहुभी रक्षणीये **(यतेमहि)** **(स्वराज्ये)** स्वकीये राष्ट्रे॥६॥

**अन्वयः**-हे ईयचक्षसा मित्रा! वां युवयोर्यद् व्यचिष्ठे बहुपाय्ये राज्ये स्वराज्ये च सूरयो वयमा यतेमहि तस्मिन् यतेयाथाम्॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्मैत्रीं कृत्वा स्वं परकीयं च राज्यं न्यायेन रक्षित्वा धर्म्मोन्नतिः कार्य्येति॥६॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्विदुषिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्षष्टितमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(ईयचक्षसा)** प्राप्त होने वा जानने योग्य दर्शन वा कथन जिनका वे **(मित्रा)** मित्र **(वाम्)** आप दोनों के **(यत्)** जिस **(व्यचिष्ठे)** अत्यन्त व्याप्त और **(बहुपाय्ये)** बहुतों से रक्षा करने योग्य राज्य **(स्वराज्ये, च)** और अपने राज्य में **(सूरयः)** विद्वान् जन **(वयम्)** हम लोग **(आ)** सब प्रकार से **(यतेमहि)** यत्न करें, उसमें यत्न करो॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि मित्रता करके अपने और दूसरे के राज्य की न्याय से रक्षा करके धर्म की उन्नति करें॥६॥

इस सूक्त में मित्र और श्रेष्ठ विद्वान् के और विद्यायुक्त स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिए॥

**यह छासठवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तषष्टितमस्य सूक्तस्य यजत आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ४ निचृदनुष्टुप्। ३, ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यैः किंवत् किं करणीयमित्याह॥*

अब पाँच ऋचा वाले सड़सठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसके तुल्य क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बळित्था देवा निष्कृतमादित्या यजतं बृहत्।**

**वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे॥ १॥**

**बट्। इत्था। देवा। निःऽकृतम्। आदित्या। यजतम्। बृहत्। वरुण। मित्र। अर्यमन्। वर्षिष्ठम्। क्षत्रम्। आशाथे इति॥ १॥**

**पदार्थः-(बट्)** सत्यम् **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(देवा)** दिव्यस्वभावौ **(निष्कृतम्)** निष्पन्नम् **(आदित्या)** अविनाशिनौ **(यजतम्)** सङ्गच्छेताम् **(बृहत्)** महत् **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** सुहृत् **(अर्यमन्)** न्यायकारिन् **(वर्षिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(क्षत्रम्)** राज्यं धनं वा **(आशाथे)** प्राप्नुथः॥१॥

**अन्वयः**-हे देवा आदित्या मित्र वरुण! युवां बृहन्निष्कृतं यजतं, हे अर्य्यमन्नित्था त्वं च यज। हे मित्रावरुण! युवां यथा बड् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे तथेदमर्यमन्नपि प्राप्नोतु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽत्र धर्म्याणि कुर्युस्तथा राज्यं राजादयः पालयन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे **(देवा)** श्रेष्ठ स्वभाव वाले **(आदित्या)** अविनाशी **(मित्र)** मित्र **(वरुण)** श्रेष्ठ! आप दोनों **(बृहत्)** बड़े **(निष्कृतम्)** उत्पन्न हुए को **(यजतम्)** उत्तम प्रकार मिलो, हे **(अर्य्यमन्)** न्यायकारी! **(इत्था)** इस प्रकार से आप भी मिलिये और हे मित्र श्रेष्ठ जनो! तुम जैसे **(बट्)** सत्य **(वर्षिष्ठम्)** अत्यन्त बढ़े हुए **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन को **(आशाथे)** प्राप्त होते हो, वैसे इसको न्यायकारी भी प्राप्त हो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन इस संसार में धर्म्म युक्त कर्म्मों को करें, वैसे राज्य का राजा आदि पालन करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किंवत् किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसके तुल्य क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः।**

**धर्तारा चर्षणीनां यन्त सुम्नं रिशादसा॥ २॥**

**आ। यत्। योनिम्। हिरण्ययम्। वरुण। मित्र। सदथः। धर्तारा। चर्षणीनाम्। यन्तम्। सुम्नम्। रिशादसा॥ २॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यत्**) यत् (**योनिम्**) कारणम् (**हिरण्ययम्**) तेजोमयम् (**वरुण**) (**मित्र**) (**सदथः**) (**धर्त्तारा**) (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**यन्तम्**) प्राप्नुवन्तम् (**सुम्नम्**) सुखम् (**रिशादसा**) दुष्टानां दण्डयितारौ॥२॥

**अन्वयः**- हे रिशादसा मित्र वरुण! चर्षणीनां युवा यत्सुम्नं यन्तं हिरण्ययं योनिमा सदथस्तं वयमप्याऽऽसीदेम॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसस्तेजोमयं विद्युद्रूपं सूर्य्यादिकारणं विज्ञायोपकुर्वन्ति तथैवैतत्कृत्वा मनुष्याः सुखं प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**रिशादसा**) दुष्टों को दण्ड देने वाले (**मित्र**) (**वरुण**) श्रेष्ठ (**चर्षणीनाम्**) मनुष्यों के (**धर्त्तारा**) धारण करने वाले तुम (**यत्**) जिस (**सुम्नम्**) सुख को (**यन्तम्**) प्राप्त होते हुए और (**हिरण्ययम्**) तेजःस्वरूप (**योनिम्**) कारण को (**आ**) सब प्रकार से (**सदथः**) प्राप्त हो उसको हम लोग भी प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन तेजःस्वरूप बिजुलीरूप सूर्य्य आदि कारण को जान के उपकार करते हैं, वैसे ही इसको करके मनुष्य सुख को प्राप्त हों॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा।**

**व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः॥३॥**

**विश्वे। हि। विश्वऽवेदसः। वरुणः। मित्रः। अर्यमा। व्रता। पदाऽइव। सश्चिरे। पान्ति। मर्त्यम्। रिषः॥३॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**हि**) (**विश्ववेदसः**) समग्रप्राप्तविद्यैश्वर्याः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**मित्रः**) सर्वेषां सखा (**अर्यमा**) न्यायकारी (**व्रता**) व्रतानि सत्याचरणरूपाणि कर्म्माणि (**पदेव**) पद्यन्ते यैस्तानि पदानि चरणानीव (**सश्चिरे**) प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा। **सश्चतीति गतिकर्म्मसु पठितम्।** (निघं०२.२४) (**पान्ति**) रक्षन्ति (**मर्त्यम्**) मनुष्यम् (**रिषः**) हिंसकाद्धिंसाया वा॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विश्वे विश्ववेदसो वरुणो मित्रोऽर्यमा च पदेव व्रता सश्चिरे रिषो मर्त्यं पान्ति ते हि युष्माभिर्माननीयाः सन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्राणिनः पदैरभीष्टं स्थानान्तरं गत्वा स्वप्रयोजनं साध्नुवन्ति तथैव सत्यभाषणादीनि कर्म्माणि धर्मार्थं प्राप्याऽभीष्टमानन्दं साध्नुत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**विश्वे**) सब (**विश्ववेदसः**) सम्पूर्ण विद्या और ऐश्वर्य्य पाये हुए (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**मित्रः**) और सब का मित्र (**अर्यमा**) और न्यायकारी जन (**पदेव**) चलते हैं जिनसे उन चरणों के सदृश (**व्रता**) सत्याचरण रूप कर्म्मों को (**सश्चिरे**) प्राप्त होते वा जाते हैं और (**रिषः**) मारने

वाले से वा हिंसा से **(मर्त्यम्)** मनुष्य की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं वे **(हि)** ही आप लोगों से आदर करने योग्य हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे प्राणी पैरों से अभीष्ट एक स्थान से दूसरे स्थान को जाके अपने प्रयोजन को सिद्ध करते हैं वैसे ही सत्यभाषण आदि कर्म्मों को धर्म्ममार्ग के लिए प्राप्त होकर अभीष्ट आनन्द को सिद्ध करो॥३॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भूत्वा किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे होकर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने।**

**सुनीथासः सुदानवोऽहोश्चिदुरुचक्रयः॥४॥**

ते। हि। सत्याः। ऋतऽस्पृशः। ऋतऽवानः। जनेऽजने। सुऽनीथासः। सुऽदानवः। अंहोः। चित्। उरुऽचक्रयः॥४॥

**पदार्थः**-**(ते)** **(हि)** यतः **(सत्याः)** सत्सु साधवः **(ऋतस्पृशः)** य ऋतं सत्यं यथार्थं स्पृशन्ति स्वीकुर्वन्ति ते **(ऋतावानः)** ऋतं सत्यं मतं कर्म वा विद्यते येषु ते **(जनेजने)** मनुष्ये मनुष्ये **(सुनीथासः)** सुनीतिप्रदाः **(सुदानवः)** शोभनं सद्विद्यादिदानं येषान्ते **(अंहोः)** अपराधात् **(चित्)** अपि **(उरुचक्रयः)** बहुकर्त्तारो महापुरुषार्थिनः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! हि यतो जनेजने ये सत्या ऋतस्पृश ऋतावानः सुदानवस्सुनीथास उरुचक्रयोंऽहोश्चित्पृथग्भूताः स्युस्ते सर्वदा सर्वथा सत्कर्त्तव्या भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-ये स्वयं धर्म्यगुणकर्मस्वभावाः सन्तो दुष्टाचाराद् पृथग्वर्त्तित्वाऽन्यान्मनुष्यांस्तादृशान् कुर्वन्ति ते धन्यवादार्हाः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(हि)** जिससे **(जनेजने)** मनुष्य मनुष्य में जो **(सत्याः)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ **(ऋतस्पृशः)** यथार्थ को स्वीकार करने वाले **(ऋतावानः)** सत्य मत वा कर्म्म विद्यमान जिनमें वे **(सुदानवः)** सुन्दर श्रेष्ठ विद्या आदि का दान जिनका और **(सुनीथासः)** उत्तम नीति के देने और **(उरुचक्रयः)** बहुत करने वाले बड़े पुरुषार्थी हुए **(अंहोः)** अपराध से **(चित्)** भी **(पृथक्)** हुए होवें **(ते)** वे सर्वदा सब प्रकार से सत्कार करने योग्य हों॥४॥

**भावार्थः**-जो स्वयं धर्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले हुए दुष्ट आचरण से पृथक् वर्त्ताव करके अन्य मनुष्यों को तादृश अर्थात् अपने समान करते हैं, वे धन्यवाद के योग्य हैं॥४॥

**मनुष्यैर्विद्वद्भ्यः कथं विद्यां ग्राह्येत्याह॥**

मनुष्य विद्वानों से किस प्रकार विद्या ग्रहण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम्।**

**तत्सु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः॥५॥५॥**

**कः। नु। वाम्। मित्र। अस्तुतः। वरुणः। वा। तनूनाम्। तत्। सु। वाम्। आ। ईषते। मतिः। अत्रिऽभ्यः। आ। ईषते। मतिः॥५॥**

**पदार्थः-(कः)** **(नु)** सद्यः **(वाम्)** युवयोः **(मित्र)** सुहृत् **(अस्तुतः)** अप्रशंसितः **(वरुणः)** उत्तमस्वभावः **(वा)** **(तनूनाम्)** शरीराणाम् **(तत्)** ताम् **(सु)** **(वाम्)** **(आ)** **(ईषते)** अभिगच्छति **(मतिः)** प्रज्ञा **(अत्रिभ्यः)** व्याप्तविद्येभ्यः **(आ)** **(ईषते)** समन्तात्प्राप्नोति **(मतिः)** मननशीलान्तःकरणवृत्तिः॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र! वां तनूनां क एषते त्वं वा वरुणः को न्वस्तुतोऽस्ति या वां मतिरस्मानेषतेऽत्रिभ्यो मतिः स्वेषते तत्तां वयं स्वीकुर्य्याम॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अध्यापकोपदेशकानभिगम्य तदुपदेशान् विद्यां च गृहीत्वैतेभ्यः प्रज्ञामुत्तमकृतिं च स्वीकुर्वन्ति ते प्रसिद्धस्तुतयो जायन्त इति॥५॥

अत्र मित्रावरुणविद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तषष्टितमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र **(वाम्)** आप दोनों के **(तनूनाम्)** शरीरों के **(कः)** कौन **(आ, ईषते)** सब प्रकार से प्राप्त होता है, आप **(वा)** वा **(वरुणः)** उत्तम स्वभावयुक्त कौन **(नु)** शीघ्र **(अस्तुतः)** नहीं प्रशंसित है और जो **(वाम्)** आप दोनों की **(मतिः)** बुद्धि हम लोगों को **(आ, ईषते)** सब प्रकार प्राप्त होती है और **(अत्रिभ्यः)** व्याप्त विद्या जिनमें उसके लिये **(मतिः)** मननशील अन्तःकरण की वृत्ति **(सु)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती है **(तत्)** उसका हम लोग स्वीकार करें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अध्यापक और उपदेशकों को प्राप्त होकर उनके उपदेश और विद्या को ग्रहण करके उनसे बुद्धि और उत्तम क्रिया का स्वीकार करते हैं, वे प्रसिद्ध स्तुति वाले होते हैं॥५॥

इस सूक्त में मित्रावरुण और विद्वानों के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सड़सठवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टषष्टितमस्य सूक्तस्य यजत आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २ गायत्री। ४ निचृद्गायत्री। ५ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यैर्मिथः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब मनुष्यों को परस्पर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ मि॒त्राय॑ गायत॒ वरु॑णाय वि॒पा गि॒रा। महि॑क्षत्रावृ॒तं बृ॒हत्॥ १॥**

**प्र। वः॒। मि॒त्राय॑। गा॒य॒त॒। वरु॑णाय। वि॒पा। गि॒रा। महि॑ऽक्षत्रौ। ऋ॒तम्। बृ॒हत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**मित्राय**) सुहृदे (**गायत**) प्रशंसत (**वरुणाय**) उत्तमाचरणाय (**विपा**) यौ विविधप्रकारेण पातस्तौ (**गिरा**) वाण्या (**महिक्षत्रौ**) महत्क्षत्रं ययोस्तौ (**ऋतम्**) सत्याढ्यम् (**बृहत्**) महत्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वो यौ विपा महिक्षत्रौ बृहदृतं गृह्णीयातां ताभ्यां मित्राय वरुणाय यूयं गिरा प्र गायत॥ १॥

**भावार्थः**-यावाध्यापकोपदेशकौ सर्वान् मनुष्यान् विद्यादिना शोधयतस्तौ मनुष्यैः सर्वदा सत्कर्त्तव्यौ॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**वः**) तुम लोगों के जो (**विपा**) अनेक प्रकार से रक्षा करने वाले (**महिक्षत्रौ**) बड़े क्षत्र जिनके वे (**बृहत्**) बड़े (**ऋतम्**) सत्य से युक्त को ग्रहण करें, उन दोनों से (**मित्राय**) मित्र के और (**वरुणाय**) उत्तम आचरण के लिये तुम (**गिरा**) वाणी से (**प्र, गायत**) प्रशंसा करो॥ १॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक जन सब मनुष्यों को विद्यादि से पवित्र करते हैं, वे मनुष्यों से सर्वदा सत्कार करने योग्य हैं॥ १॥

**मनुष्यैरिह कथं भवितव्यमित्याह॥**

मनुष्यो को यहां कैसे होना चाहिए, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒म्राजा॒ या घृ॒तयो॑नी मि॒त्रश्चो॒भा वरु॑णश्च। दे॒वा दे॒वेषु॑ प्रश॒स्ता॥ २॥**

**स॒म्ऽराजा॑। या। घृ॒तयो॑नी॒ इति॑ घृ॒तऽयो॑नी। मि॒त्रः। च॒। उ॒भा। वरु॑णः। च॒। दे॒वा। दे॒वेषु॑। प्र॒ऽश॒स्ता॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सम्राजा**) यौ सम्यग्राजेते तौ (**या**) यौ (**घृतयोनी**) घृतमुदकं कारणं ययोस्तौ (**मित्रः**) सखा (**च**) (**उभा**) उभौ (**वरुणः**) वरणीयः (**च**) (**देवा**) देवौ (**देवेषु**) विद्वत्सु (**प्रशस्ता**) श्रेष्ठौ॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या घृतयोनी देवेषु प्रशस्ता सम्राजा देवा मित्रश्च वरुणश्चोभा प्रवर्त्तेते तौ यूयं बहु मन्यध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्सु विद्वांसो राजपुरुषाश्चक्रवर्त्तिराज्यं साद्धुं शक्नुवन्ति त एव कीर्त्तिमन्तो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(घृतयोनी)** घृतयोनी अर्थात् जल कारण जिनका वे **(देवेषु)** विद्वानों में **(प्रशस्ता)** श्रेष्ठ **(सम्राजा)** उत्तम प्रकार शोभित होने वाले **(देवा)** दो विद्वान् अर्थात् **(मित्रः)** मित्र **(च)** और **(वरुणः)** स्वीकार करने योग्य **(च)** भी **(उभा)** दोनों प्रवृत्त होते हैं, उन दोनों को आप लोग बहुत आदर करिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों में विद्वान् राजपुरुष चक्रवर्त्तिराज्य को सिद्ध कर सकते हैं, वे ही यशस्वी होते हैं॥२॥

**पुना राज्यं कथमुन्नेयमित्याह॥**

फिर राज्य कैसे उन्नति को प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु॥३॥**

**ता। नः। शक्तम्। पार्थिवस्य। महः। रायः। दिव्यस्य। महि। वाम्। क्षत्रम्। देवेषु॥३॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(नः)** अस्माकम् **(शक्तम्)** समर्थम् **(पार्थिवस्य)** पृथिव्यां विदितस्य **(महः)** महतः **(रायः)** धनस्य **(दिव्यस्य)** दिवि शुद्धे व्यवहारे भवस्य **(महि)** महत् **(वाम्)** युवयोः **(क्षत्रम्)** राज्यं धन वा **(देवेषु)** सत्यविद्यां प्राप्तेषु॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! **[यो]** नः पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य शक्तं ययोर्वां देवेषु महि क्षत्रं वर्त्तते ता युवां वयं सत्कुर्य्याम॥३॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! युष्माभिर्यदि स्वं राज्यं विद्वद्भी रक्ष्येत तर्हि तत्पृथिव्यां विदितं समर्थं जायेत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(नः)** हम लोगों के सम्बन्ध में **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में विदित **(महः)** बड़े **(रायः)** धन के और **(दिव्यस्य)** शुद्ध व्यवहार में हुए का **(शक्तम्)** समर्थ, जिन **(वाम्)** आप दोनों का **(देवेषु)** सत्य विद्या को प्राप्त हुओं में **(महि)** बड़ा **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन वर्त्तमान है **(ता)** उन आप दोनों का हम लोग सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! आप लोग जो अपने राज्य वा विद्वानों से रक्षा करें तो वह पृथिवी में विदित हुआ समर्थ होवे॥३॥

**विद्वद्वदितरैर्वर्त्तितव्यमित्याह॥**

विद्वानों के सदृश इतरजनों को वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते॥४॥**

**ऋतम्। ऋतेन। सपन्ता। इषिरम्। दक्षम्। आशाते इति। अद्रुहा। देवौ। वर्धेते इति॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऋतम्)** सत्यम् **(ऋतेन)** सत्येन **(सपन्ता)** आक्रोशन्तौ **(इषिरम्)** प्राप्तव्यम् **(दक्षम्)** बलम् **(आशाते)** **(अद्रुहा)** द्रोहरहितौ **(देवौ)** विद्वांसौ **(वर्धेते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथर्त्तेनर्त्तं सपन्तेषिरं दक्षमाशातेऽद्रुहा देवौ वर्धेते तथा यूयमपि प्रयतध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विद्वद्वत् क्रियां कृत्वा सदैव वर्धितव्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(ऋतेन)** सत्य से **(ऋतम्)** सत्य का **(सपन्ता)** आक्रोश करते हुए **(इषिरम्)** प्राप्त होने योग्य **(दक्षम्)** बल को **(आशाते)** व्याप्त होते हैं और **(अद्रुहा)** द्वेष से रहित **(देवौ)** दो विद्वान् जन **(वर्धते)** वृद्धि को प्राप्त होते हैं, वैसे आप लोग भी प्रयत्न करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के सदृश क्रिया करके सदा ही वृद्धि करें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञाय किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जान क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्त्तमाशाते॥५॥६॥**

**वृष्टिऽद्यावा रीतिऽआपा। इषः। पती इति। दानुऽमत्याः। बृहन्तम्। गर्त्तम्। आशाते इति॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृष्टिद्यावा)** वृष्टिश्च द्यौश्च याभ्यां तौ **(रीत्यापा)** रीतिश्चापश्च ययोस्तौ **(इषः)** अन्नादेः **(पती)** पालकौ **(दानुमत्याः)** बहूनि दानवो दानानि विद्यन्ते यस्यां पृथिव्यां तस्या मध्ये **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(गर्त्तम्)** गृहम् **(आशाते)** व्याप्नुतः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती वायुविद्युतौ दानुमत्या बृहन्तं गर्त्तमाशाते तौ यूयं विज्ञायोपकुरुत॥५॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या वृष्ट्यादिनिमित्तानि सूर्य्यवायुविद्युदादीनि जानीयुस्तर्हि तत्तत्कार्य्यं कर्त्तुं शक्नुयुरिति॥५॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टषष्टितमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(वृष्टिद्यावा)** वृष्टि और अन्तरिक्ष के कारण **(रीत्यापा)** रीति और जल जिनके सम्बन्ध में वह **(इषः)** अन्न आदि के **(पती)** पालक वायु और विद्युदग्नि **(दानुमत्याः)** बहुत दान विद्यमान जिसमें उस पृथिवी के मध्य में **(बृहन्तम्)** बड़े **(गर्त्तम्)** गृह को **(आशाते)** व्याप्त होते हैं, उन दोनों को आप लोग जान के उपकार करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वृष्टि आदि में कारण सूर्य्य, वायु और बिजुली आदि को जानें तो उस कार्य्य को कर सकें॥५॥

इस सूक्त में मित्र, श्रेष्ठ और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़सठवां सूक्त और छठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**त्री रोचनेति चतुर्ऋचस्यैकोनसप्ततितमस्य सूक्तस्य उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १ निचृत्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अत्र मनुष्यैः किं विज्ञाय किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले उनहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इस संसार में मनुष्यों को क्या जान कर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्री रो॑चना व॑रुण त्रीँरु॒त द्यून् त्रीणि॑ मित्र धारयथो॒ रजां॑सि।**
**वा॒वृ॒धा॒नाव॒मतिं॑ क्ष॒त्रिय॒स्यानु॑ व्र॒तं रक्ष॑माणावजु॒र्यम्॥ १॥**

त्री। रो॒च॒ना। व॒रु॒ण॒। त्रीन्। उ॒त। द्यून्। त्रीणि॑। मि॒त्र॒। धा॒र॒य॒थः॒। रजां॑सि। व॒वृ॒धा॒नौ। अ॒मति॑म्। क्ष॒त्रिय॑स्य। अनु॑। व्र॒तम्। रक्ष॑माणौ। अ॒जु॒र्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**त्री**) त्रीणि भौमविद्युत्सूर्यादीनि (**रोचना**) प्रकाशनानि (**वरुण**) उदान इव वर्त्तमान (**त्रीन्**) (**उत**) (**द्यून्**) प्रकाशान् (**त्रीणि**) प्रकाशनीयानि (**मित्र**) प्राण इव (**धारयथः**) (**रजांसि**) लोकान् (**वावृधानौ**) वर्धमानौ (**अमतिम्**) रूपम् (**क्षत्रियस्य**) क्षत्रापत्यस्य राज्ञः (**अनु**) (**व्रतम्**) कर्म शीलं वा (**रक्षमाणौ**) (**अजुर्य्यम्**) अजीर्णम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! यथा प्राणोदानौ त्री रोचना त्रीन् द्यूनुत त्रीणि प्रकाशनीयानि रजांसि वावृधानौ सन्तौ क्षत्रियस्यामतिमजुर्य्यमनु व्रतं रक्षणाणौ सन्तौ धारयतस्तथैतो युवां धारयथः॥ १॥

**भावार्थः**-अस्मिञ्जगति त्रिविधा दीप्तिवर्त्तते एका सूर्यस्य, द्वितीया विद्युतस्तृतीया भूमिस्थस्याग्नेस्ताः सर्वा ये क्षत्रियादयो जानीयुस्तेऽक्षयं राज्यं कर्तुं शक्नुयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**मित्र**) प्राणवायु के और (**वरुण**) उदानवायु के सदृश वर्त्तमान! जैसे प्राण और उदानवायु वा (**त्री**) तीन अर्थात् भूमि, बिजुली और सूर्य्य रूप अग्नि जो (**रोचना**) प्रकाश होने योग्य उनको और (**त्रीन्**) तीन (**द्यून्**) प्रकाशों (**उत**) और (**त्रीणि**) प्रकाशित होने योग्य (**रजांसि**) लोकों को (**वावृधानौ**) बढ़ाते हुए (**क्षत्रियस्य**) राजपूत राजा के (**अमतिम्**) रूप को और (**अजुर्य्यम्**) नहीं जीर्ण हुए (**अनु, व्रतम्**) कर्म वा स्वभाव को (**रक्षमाणौ**) रक्षा करते हुए धारण करते हैं, वैसे इन दोनों को आप दोनों (**धारयथः**) धारण करते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-इस संसार में तीन प्रकार का प्रकाश है-एक सूर्य का, दूसरा बिजुली का, तीसरा पृथिवी में वर्तमान अग्नि का उन तीनों को जो क्षत्रिय आदि जानें, वे अक्षय राज्य करने को समर्थ होवें॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इरा॑वतीर्वरुण धे॒नवो॑ वां॒ मधु॑मद्वां॒ सिन्ध॑वो मित्र दुह्रे।**
**त्रय॑स्तस्थुर्वृष॒भास॑स्तिसृ॒णां धि॒षणा॑नां रेतो॒धा वि द्यु॒मन्तः॑॥२॥**

**इरा॑वतीः। व॒रु॒ण॒। धे॒नवः॑। वा॒म्। मधु॑ऽमत्। वा॒म्। सिन्ध॑वः। मि॒त्र॒। दु॒ह्रे॒। त्रयः॑। त॒स्थु॒ः। वृ॒ष॒भासः॑। ति॒सृ॒णाम्। धि॒षणा॑नाम्। रे॒त॒ःऽधाः। वि। द्यु॒ऽमन्तः॑॥२॥**

**पदार्थः-(इरावतीः)** बह्वन्नादिसामग्रीस्ताः **(वरुण)** उत्तमकर्मकारी **(धेनवः)** वाण्यो गाव इव **(वाम्)** युवाम् **(मधुमत्)** **(वाम्)** **(सिन्धवः)** नद्यः **(मित्र)** सखे **(दुह्रे)** प्रपूरयन्ति **(त्रयः)** **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति **(वृषभासः)** वर्षकाः **(तिसृणाम्)** त्रिविधानाम् **(धिषणानाम्)** कर्म्मोपासनाज्ञानविदाम् **(रेतोधाः)** यो रेतो वीर्यं दधाति सः **(वि)** **(द्युमन्तः)** प्रशस्तकामनायुक्ताः॥२॥

**अन्वयः**-हे वरुण मित्र! वां या इरावतीर्धेनवो मधुमद् दुह्रे ये सिन्धवो वां दुह्रे तिसृणां धिषणानां त्रयो द्युमन्तो वृषभासो रेतोधाश्च वितस्थुस्तान् युवां सम्प्रयुञ्जतम्॥२॥

**भावार्थः**-हे सर्वमित्रा जना! यूयं धेनुवत्सुखप्रदा नदीवन्मलापहारकाः प्रज्ञाप्रदाः कामनासिद्धिदाश्च भवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे **(वरुण)** उत्तम कर्म्म के करने वाले **(मित्र)** मित्र! **(वाम्)** आप दोनों की जो **(इरावतीः)** बहुत अन्न आदि सामग्रियां **(धेनवः)** और वाणियाँ गौओं के सदृश **(मधुमत्)** मधुमान् जैसे हो, वैसे **(दुह्रे)** अच्छे प्रकार पूरित करती हैं और जो **(सिन्धवः)** नदियाँ वे **(वाम्)** आप दोनों को उत्तम प्रकार पूरित करती हैं **(तिसृणाम्)** तीन प्रकार के **(धिषणानाम्)** कर्म्म, उपासना और ज्ञान के जानने वालों के **(त्रयः)** तीन **(द्युमन्तः)** उत्तम कामनाओं से युक्त **(वृषभासः)** वर्षाने वाले **(रेतोधाः)** और जो वीर्य्य को धारण करता है वह **(वि)** विशेष करके **(तस्थुः)** स्थित होते हैं, उनको आप दोनों संप्रयुक्त करिये॥२॥

**भावार्थः**-हे सब के मित्र जनो! आप लोग गौ के सदृश सुख के देने वाले, नदी के सदृश मल के दूर करने, बुद्धि के देने और कामनाओं की सिद्धि के देने वाले हूजिये॥२॥

**मनुष्यैः सततं प्रयततितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रा॒तर्दे॒वीमदि॑तिं जोहवीमि म॒ध्यंदि॑न॒ उदि॑ता॒ सूर्य॑स्य।**
**रा॒ये मि॑त्रावरुणा स॒र्वता॒तेळे॑ तो॒काय॒ तन॑याय॒ शं योः॥३॥**

**प्रा॒तः। दे॒वीम्। अदि॑तिम्। जो॒ह॒वी॒मि॒। म॒ध्यंदि॑ने। उत्ऽइ॑ता। सूर्य॑स्य। रा॒ये। मि॒त्रा॒ऽव॒रु॒णा॒। स॒र्वऽता॑ता। ईळे॑। तो॒काय॑। तन॑याय। शम्। योः॥३॥**

**पदार्थः-(प्रातः) (देवीम्)** दिव्यां प्रज्ञाम् **(अदितिम्)** अखण्डितबोधाम् **(जोहवीमि)** भृशं गृह्णामि **(मध्यन्दिने)** मध्याह्ने **(उदिता)** उदिते **(सूर्य्यस्य) (राये)** धनाद्याय **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानवन्मातापितरौ **(सर्वताता)** सर्वेषां सुखप्रदे यज्ञे **(ईळे)** प्रशंसे **(तोकाय)** अल्पाय **(तनयाय)** कुमाराय **(शम्)** सुखम् **(योः)** संयुक्तम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! यथाहं सर्वताता राये तोकाय तनयाय प्रातर्देवीमदितिं सूर्य्यस्य मध्यन्दिन उदिता योः शं जोहवीमि योऽहमीळे योऽहमीळे तथा युवामाचरतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या कुटुम्बपालनाय सतां शिक्षायै वृद्धये सर्वदा प्रयतन्ते ते विद्वत्कुलं कुर्वन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और वायु के सदृश माता और पिता! जैसे मैं **(सर्वताता)** सब के सुख देने वाले यज्ञ में **(राये)** धन आदि के लिये **(तोकाय)** छोटे **(तनयाय)** कुमार के अर्थ **(प्रातः)** प्रातःकाल **(देवीम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को **(अदितिम्)** अखण्डित बोध से युक्त को और **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य के **(मध्यन्दिने)** मध्याह्न **(उदिता)** उदित में **(योः)** संयुक्त **(शम्)** सुख को **(जोहवीमि)** अत्यन्त ग्रहण करता हूँ और मैं **(ईळे)** प्रशंसा करता हूँ, वैसे आप दोनों आचरण कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य कुटम्ब के पालन के लिये श्रेष्ठ पुरुषों की शिक्षा और वृद्धि के लिये सर्वदा प्रयत्न करते हैं, वे विद्वानों के कुल को करते हैं॥३॥

**मनुष्यैः किं किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य।**

**न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि॥४॥७॥**

**या। धर्तारा। रजसः। रोचनस्य। उत। आदित्या। दिव्या। पार्थिवस्य। न। वाम्। देवाः। अमृताः। आ। मिनन्ति। व्रतानि। मित्रावरुणा। ध्रुवाणि॥४॥**

**पदार्थः-(या)** यौ **(धर्त्तारा)** धर्त्तारौ **(रजसः)** लोकस्य **(रोचनस्य)** दीप्तिमतः **(उत) (आदित्या)** आदित्यानाम् **(दिव्या)** दिव्यानाम् **(पार्थिवस्य)** पृथिव्यां विदितस्य **(न)** निषेधे **(वाम्)** युवयोः **(देवाः)** विद्वांसः **(अमृताः)** प्राप्तजीवनमुक्तिसुखाः **(आ)** समन्तात् **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(व्रतानि)** कर्म्माणि **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ **(ध्रुवाणि)** निश्चलानि॥४॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! येऽमृता देवा वां ध्रुवाणि व्रतानि नामिनन्ति या रोचनस्य रजस आदित्या दिव्या उत पार्थिवस्य रजसो धर्त्तारा वर्त्तेते तौ विजानीयातम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यौ वायुविद्युत्सूर्यौ सर्वलोकधर्त्तारौ वर्त्तेते तौ परमेश्वरेण धृताविति मत्वा सर्वमीश्वरेणैव धृतमिति वेद्यम्॥४॥

अत्र मित्रावरुणाविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनसप्ततितमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के समान वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(अमृता)** प्राप्त हुआ जीवनमुक्तिसुख जिनको वे **(देवाः)** विद्वान् जन **(वाम्)** आप दोनों के **(ध्रुवाणि)** निश्चित **(व्रतानि)** कर्म्मों का **(न)** नहीं **(आ)** सब प्रकार से **(मिनन्ति)** नाश करते हैं और **(या)** जो **(रोचनस्य)** प्रकाश वाले **(रजसः)** लोक के **(आदित्या)** सूर्य्यों के **(दिव्या)** प्रकाशमानों के **(उत)** और **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में विदित लोक के **(धर्त्तारा)** धारण करने वाले वर्त्तमान हैं, उनको जानिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वायु बिजुली और सूर्य्य सम्पूर्ण लोक के धारण करने वाले हैं, वे परमेश्वर से धारण किये गये हैं, ऐसा जानकर सम्पूर्ण ईश्वर ने ही धारण किया ऐसा जानना चाहिये॥४॥

इस सूक्त में प्राण, उदान और बिजुली के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनहत्तरवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**पुरूरुणेति चतुर्ऋचस्य[स्य] सप्ततितमस्य सूक्तस्य उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २ विराड्गायत्री। ३ गायत्री। ४ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले सत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम्॥१॥**

**पुरुऽउरुणा। चित्। हि। अस्ति। अवः। नूनम्। वाम्। वरुण। मित्र। वंसि। वाम्। सुऽमतिम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**पुरूरुणा**) बहुतरम्। अत्र **सुपां सुलुगि**त्याकारादेशः। (**चित्**) अपि (**हि**) यतः (**अस्ति**) (**अवः**) रक्षणादिकम् (**नूनम्**) निश्चितम् (**वाम्**) युवयोः (**वरुण**) वर (**मित्र**) सखे (**वंसि**) सम्भजसि (**वाम्**) युवयोः (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! हि वां यत्पुरूरुणा नूनमवोऽस्ति यत् चित् त्वं वंसि यो वां सुमतिं गृह्णाति तौ युवां तं च वयं सेवेमहि॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये रक्षका राजपुरुषाः प्रजा अत्यन्तं रक्षन्ति त एव प्रजापुरुषैः सेव्याः सन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**मित्र**) मित्र (**वरुण**) श्रेष्ठ! (**हि**) जिससे (**वाम्**) आप दोनों का जो (**पुरूरुणा**) अत्यन्त बहुत (**नूनम्**) निश्चित (**अवः**) रक्षण आदि (**अस्ति**) है और जिसको (**चित्**) निश्चित आप (**वंसि**) सेवन करते हैं और जो (**वाम्**) आप दोनों की (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धि को ग्रहण करता है, उन आप दोनों और उसकी हम लोग सेवा करें॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो रक्षक राजपुरुष प्रजाओं की अत्यन्त रक्षा करते हैं, वे ही प्रजापुरुषों से सेवा करने योग्य हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे। वयं ते रुद्रा स्याम॥२॥**

**ता। वाम्। सम्यक्। अद्रुह्वाणा। इषम्। अश्याम। धायसे। वयम्। ते। रुद्रा। स्याम॥२॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**वाम्**) युवयोः (**सम्यक्**) (**अद्रुह्वाणा**) द्रोहरहितौ (**इषम्**) अन्नं विज्ञानं वा (**अश्याम**) प्राप्नुयाम (**धायसे**) धर्त्तुम् (**वयम्**) (**ते**) (**रुद्रा**) रुतो रोदनाद्रावयितारौ (**स्याम**) भवेम॥२॥

**अन्वयः**-हे अद्रुह्वाणा रुद्रा! वयं वां धायस इष सम्यगश्याम ते वयं ता सेवन्तः सर्वस्य धायसे स्याम॥२॥

**भावार्थः**-तावेवाध्यापकोपदेशकौ कृतक्रियौ भवतां यौ क्रोधलोभादिविरहौ स्यातां ये ताभ्यामधीयते ते विद्याधारणे प्रयतमानाः स्युः॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अद्रुह्वाणा)** द्वेष से रहित **(रुद्रा)** रोदन से शब्द कराने वाले! **(वयम्)** हम लोग **(वाम्)** आप दोनों के **(धायसे)** धारण करने को **(इषम्)** अन्न वा विज्ञान को **(सम्यक्)** उत्तम प्रकार **(अश्याम)** प्राप्त होवें **(ते)** वे हम लोग **(ता)** उन दोनों का सेवन करते हुए सब के धारण करने को **(स्याम)** होवें॥२॥

**भावार्थः**-वे ही अध्यापक और उपदेशक कृतक्रिय होवें, जो क्रोध और लोभ आदि दोषों से रहित होवें और जो उनसे पढ़ते हैं, वे विद्या के धारण में प्रयत्न करते हुए होवें॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

## पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून् तनूभिः॥३॥

**पातम्। नः। रुद्रा। पायुऽभिः। उत। त्रायेथाम्। सुऽत्रात्रा। तुर्याम। दस्यून्। तनूभिः॥३॥**

**पदार्थः**-**(पातम्)** **(नः)** अस्मान् **(रुद्रा)** दुष्टानां रोदयितारौ **(पायुभिः)** रक्षणै रक्षकैर्वा **(उत)** अपि **(त्रायेथाम्)** **(सुत्रात्रा)** यः सुष्ठु त्रायते तेन **(तुर्याम)** हिंस्याम **(दस्यून्)** दुष्टान् स्तेनान् **(तनूभिः)** शरीरैः॥३॥

**अन्वयः**-हे रुद्रा सभासेनेशौ! युवां सुत्रात्रा सह पायुभिर्नः पातमुत त्रायेथाम्। यतो वयं तनूभिर्दस्यूंस्तुर्याम॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यौ सभासेनेशौ सततं प्रजा रक्षेतां तयो रक्षणं प्रजाः कुर्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(रुद्रा)** दुष्टों के रुलाने वाले सभा और सेना के स्वामी! आप दोनों **(सुत्रात्रा)** उत्तम प्रकार पालन करने वाले के साथ **(पायुभिः)** रक्षणों वा रक्षकों से **(नः)** हम लोगों का **(पातम्)** पालन करिये और **(उत)** भी **(त्रायेथाम्)** रक्षा कीजिये जिससे हम लोग **(तनूभिः)** शरीरों से **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का **(तुर्याम)** नाश करें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सभा और सेना के स्वामी निरन्तर प्रजाओं की रक्षा करें, उन का रक्षण प्रजा करें॥३॥

**उत्तमैः कस्माच्चिदपि पुरुषाद्दानं कदाचिन्न ग्रहीतव्यमित्याह॥**

उत्तमों को किसी पुरुष से भी दान कभी न ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

## मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः। मा शेषसा मा तनसा॥४॥८॥

**मा। कस्य। अद्भुतक्रतू इत्यद्भुतऽक्रतू। यक्षम्। भुजेम। तनूभिः। मा। शेषसा। मा। तनसा॥४॥**

**पदार्थः**-(**मा**) (**कस्य**) (**अद्भुतक्रतू**) अद्भुतां क्रतुः प्रज्ञा कर्म्म वां ययोस्तौ (**यक्षम्**) दानम् (**भुजेमा**) पालयेम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**तनूभिः**) शरीरैः (**मा**) (**शेषसा**) अपत्यैः सह वर्त्तमानाः (**मा**) (**तनसा**) पौत्रादिसहिता॥४॥

**अन्वयः**-हे अद्भुतक्रतू! वयं तनूभिः कस्यचिद्यक्षं मा भुजेम। शेषसा मा भुजेम तनसा मा भुजेम॥४॥

**भावार्थः**-विद्वांस एवमुपदेशं कुर्य्युर्येन कस्माच्चिद्दानं कोऽपि न गृह्णीयात्। तथैव मातापितृभ्यां पुत्रपौत्रादयोऽपि दानरुचिं न कुर्य्युरिति॥४॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्ततितमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अद्भुतक्रतू**) अद्भुत बुद्धि वा कर्म वालो! हम लोग (**तनूभिः**) शरीरों से (**कस्य**) किसी के (**यक्षम्**) दान का (**मा**) नहीं (**भुजेम**) सेवन करें और (**शेषसा**) अन्यों के साथ वर्त्तमान हुए (**मा**) नहीं पालन करें और (**तनसा**) पौत्र आदि के सहित (**मा**) नहीं पालन करें॥४॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन ऐसा उपदेश करें जिससे कि किसी से दान कोई भी नहीं ग्रहण करे, वैसे ही माता और पिता से पुत्र, पौत्र आदि भी दान की रुचि न करें॥४॥

इस सूक्त में प्राण, उदान और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तरवां सूक्त और अष्टम वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**आ नो गन्तमिति त्र्यृचस्यैकसप्तिततमस्य सूक्तस्य बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*पुनरध्यापकोपदेशकौ किं कुर्यातामित्याह॥*

अब तीन ऋचा वाले एकहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर अध्यापक और उपदेशक क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा। उपेमं चारुमध्वरम्॥ १॥**

**आ। नः। गन्तम्। रिशादसा। वरुण। मित्र। बर्हणा। उप। इमम्। चारुम्। अध्वरम्॥ १॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्माकम् **(गन्तम्)** गच्छतम् **(रिशादसा)** दुष्टहिंसकौ **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** सुहृत् **(बर्हणा)** वर्धकौ **(उप) (इमम्) (चारुम्)** सुन्दरम् **(अध्वरम्)** यज्ञम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे रिशादसा वरुण मित्र! बर्हणा युवामिमं नश्चारुमध्वरमुपागन्तम्॥ १॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसौ व्यवहाराख्यं यज्ञमकरिष्यंस्तर्ह्यस्माकमुन्नतये प्रभवोऽभविष्यन्॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(रिशादसा)** दुष्टों के मारने वाले **(वरुण)** श्रेष्ठ और **(मित्र)** मित्र! **(बर्हणा)** बढ़ाने वाले आप दोनों **(इमम्)** इस **(नः)** हम लोगों के **(चारुम्)** सुन्दर **(अध्वरम्)** यज्ञ के **(उप)** समीप **(आ)** सब प्रकार से **(गन्तम्)** प्राप्त होओ॥ १॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन व्यवहार नामक यज्ञ को करें तो हम लोगों की उन्नति के लिये समर्थ हों॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः। ईशाना पिप्यतं धियः॥ २॥**

**विश्वस्य। हि। प्रऽचेतसा। वरुण। मित्र। राजथः। ईशाना। पिप्यतम्। धियः॥ २॥**

**पदार्थः-(विश्वस्य)** संसारस्य **(हि)** यतः **(प्रचेतसा)** प्रकृष्टज्ञानौ **(वरुण)** वरप्रद **(मित्र)** सर्वसुखकारक **(राजथः) (ईशाना)** समर्थौ **(पिप्यतम्)** वर्धयेतम् **(धियः)** बुद्धीः॥ २॥

**अन्वयः**-हे प्रचेतसेशाना वरुण मित्र विश्वस्य मध्ये युवां राजथः धियो हि पिप्यतम्॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथान्तरिक्षे सूर्य्याचन्द्रमसौ प्रकाशेते तथा जनानां बुद्धीर्वर्द्धयन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(प्रचेतसा)** उत्तम ज्ञान वाले **(ईशाना)** समर्थ **(वरुण)** वर के देने और **(मित्र)** सब के सुख करने वालो! **(विश्वस्य)** संसार के मध्य में आप दोनों **(राजथः)** प्रकाशित होते हैं और **(धियः)** बुद्धियों को **(हि)** ही **(पिप्यतम्)** बढ़ाइये॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अन्तरिक्ष में सूर्य्य और चन्द्रमा प्रकाशित होते हैं, वैसे मनुष्यों की बुद्धियों को बढ़ाइये॥२॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उप॑ नः सु॒तमा ग॑तं॒ वरु॑ण॒ मित्र॑ दा॒शुषः॑। अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये॑॥३॥९॥**

**उप॑। न॒ः। सु॒तम्। आ। ग॒तम्। वरु॑ण। मित्र॑। दा॒शुषः॑। अ॒स्य। सोम॑स्य। पी॒तये॑॥३॥**

**पदार्थः**-**(उप)** समीपे **(नः)** अस्माकम् **(सुतम्)** निष्पन्नम् **(आ)** **(गतम्)** आगच्छतम् **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** मित्र **(दाशुषः)** दातुः **(अस्य)** **(सोमस्य)** महौषधिरसस्य **(पीतये)** पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे मित्र वा वरुण! युवामस्य दाशुषः सोमस्य पीतये नः सुतमुपागतम्॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्या धार्मिकान् विदुष आहूय सदा सत्कुर्वन्त्विति॥३॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकसप्ततितमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र **(वरुण)** श्रेष्ठ! आप दोनों **(अस्य)** इस **(दाशुषः)** देने वाले के **(सोमस्य)** बड़ी औषधियों के रस को **(पीतये)** पीने के लिये **(नः)** हम लोगों के **(सुतम्)** उत्पन्न किये हुए पदार्थ के **(उप)** समीप में **(आ, गतम्)** आइये॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्य धार्मिक विद्वानों को बुलाकर सदा उनका सत्कार करें॥३॥

इस सूक्त में मित्र, श्रेष्ठ और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥३॥

**यह इकहत्तरवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**॥ओ३म्॥**

**आमित्र इति त्र्यृचस्य द्विसप्ततितमस्य सूक्तस्य बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यान् प्रति कथं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले बहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों के प्रति कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ मि॒त्रे वरु॑णे व॒यं गी॒र्भिर्जु॑हुमो अ॒त्रिवत्। नि ब॒र्हिषि॑ सदतं॒ सोम॑पीतये॥ १॥**

**आ। मि॒त्रे। वरु॑णे। व॒यम्। गी॒ःऽभिः। जु॒हु॒मः। अ॒त्रि॒ऽवत्। नि। ब॒र्हिषि॑। स॒द॒तम्। सोम॑ऽपीतये॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**मित्रे**) (**वरुणे**) उत्तमे पुरुषे (**वयम्**) (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**जुहुमः**) (**अत्रिवत्**) अविद्यमानत्रिविधदुःखेन तुल्यम् (**नि**) (**बर्हिषि**) उत्तमे गृहे आसने वा (**सदतम्**) सीदतम् (**सोमपीतये**) सोमस्य पानाय॥ १॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! वयं गीर्भिरत्रिवन्मित्रे वरुण आ जुहुमः युवां सोमपीतये बर्हिषि उत्तमे नि सदतम्॥ १॥

**भावार्थः**-ये मित्रवद्वर्त्तित्वा सर्वं जगत्सत्कुर्वन्ति तदनुसरणैः सर्वैर्वर्त्तितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे (**वयम्**) हम लोग (**गीर्भिः**) वाणियों से (**अत्रिवत्**) नहीं विद्यमान तीन प्रकार का दुःख जिसको उसके तुल्य (**मित्रे**) मित्र और (**वरुणे**) उत्तम पुरुष के निमित्त (**आ, जुहुमः**) अच्छे प्रकार होम करते है और आप (**सोमपीतये**) सोम रस के पान करने के लिये (**बर्हिषि**) उत्तम गृह वा आसन में (**नि, सदतम्**) बैठिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो मित्र के सदृश वर्त्ताव करके संपूर्ण जगत् का सत्कार करते हैं, उनके अनुसार सबको वर्त्तना चाहिये॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**व्र॒तेन॑ स्थो ध्रु॒वक्षे॑मा॒ धर्म॑णा यात॒यज्ज॑ना। नि ब॒र्हिषि॑ सदतं॒ सोम॑पीतये॥ २॥**[१]

**व्र॒तेन॑। स्थः॒। ध्रु॒वऽक्षे॑मा। धर्म॑णा। या॒त॒यत्ऽज॑ना। नि। ब॒र्हिषि॑। स॒द॒तम्। सोम॑ऽपीतये॥ २॥**

---

१. अन्यत्र 'सदताम्' उपलभ्यते।

**पदार्थः-(व्रतेन)** धर्मयुक्तेन कर्म्मणा **(स्थः)** भवथः **(ध्रुवक्षेमा)** ध्रुवं क्षेमं रक्षणं ययोस्तौ **(धर्म्मणा)** धर्म्मेण सह वर्त्तमानौ **(यातयज्जना)** यातयन्तो जना ययोस्तौ **(नि) (बर्हिषि)** उत्तमे व्यवहारे **(सदतम्)** तिष्ठतम् **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥२॥

**अन्वयः**-हे ध्रुवक्षेमा यातयज्जना! यौ युवां धर्म्मणा व्रतेन स्थस्तौ सोमपीतये बर्हिषि निषदतम्॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य निश्चितधर्मव्रतशीलानि धरन्ति ते स्थिरसुखा जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे **(ध्रुवक्षेमा)** निश्चित रक्षण और **(यातयजना)** यत्न कराते हुए जनों वाले मनुष्यो! जो तुम **(धर्म्मणा)** धर्म्म के और **(व्रतेन)** धर्म्मयुक्त कर्म्म के साथ वर्त्तमान **(स्थः)** होते हो **[**वे दोनों आप**]** **(सोमपीतये)** सोम पीने के लिये **(बर्हिषि)** उत्तम व्यवहार में **(नि, सदतम्)** उपस्थित हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य निश्चित धर्म्म व्रत और शील को धारण करते हैं, वे दृढ़ सुख से युक्त होते हैं॥२॥

**मनुष्यैरिह कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को यहां कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मित्रश्च॑ नो॒ वरु॑णश्च जु॒षेतां॑ य॒ज्ञमि॒ष्टये॑। नि ब॒र्हिषि॑ सदतां॒ सोम॑पीतये॥३॥१०॥५॥**

**मि॒त्रः। च॒। नः॒। वरु॑णः। च॒। जु॒षेता॑म्। य॒ज्ञम्। इ॒ष्टये॑। नि। ब॒र्हिषि॑। स॒द॒तम्। सोम॑ऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः-(मित्रः)** सखा **(च) (नः)** अस्माकम् **(वरुणः)** वरणीयः **(च) (जुषेताम्) (यज्ञम्) (इष्टये)** इष्टसुखाय **(नि) (बर्हिषि)** उत्तमे व्यवहारे **(सदतम्)** निषीदतम् **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! यथा मित्रश्च वरुणश्चेष्टये सोमपीतये नो यज्ञं जुषेतां बर्हिष्याशाते तथा युवां निषदतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सखीवद्वर्त्तित्वेष्टसुखं सिषाधिषन्ति ते गणनीया जायन्ते॥३॥

अत्र मित्रवरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे द्विसप्ततितमं सूक्तं पञ्चमोऽनुवाकश्चतुर्थाष्टको दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! जैसे **(मित्रः)** मित्र **(च)** और **(वरुणः)** स्वीकार करते योग्य जन **(च)** भी **(इष्टये)** इष्ट सुख के लिये और **(सोमपीतये)** सोमरस के पान के लिये **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** यज्ञ का **(जुषेताम्)** सेवन करिये और **(बर्हिषि)** उत्तम व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं, वैसे आप दोनों **(नि, सदतम्)** स्थिर हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मित्र के सदृश वर्त्ताव करके वांछित सुख से सिद्ध करने की इच्छा करते हैं, वे गणना करने योग्य होते हैं॥३॥

इस सूक्त में मित्र और श्रेष्ठ विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद में बहत्तरवां सूक्त पञ्चम अनुवाक और चतुर्थ अष्टक में दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**यदद्य स्थ इति दशर्चस्य त्रिसप्ततितमस्य सूक्तस्य पौर आत्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ५, ७, निचृदनुष्टुप्। ३, ४, ६, ८, ९ अनुष्टुप्। १० विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले तिहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में फिर स्त्री-पुरुष कैसे वर्त्ते, इस विषय को कहते हैं॥

**यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना। यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम्॥ १॥**

**यत्। अद्य। स्थः। पराऽवति। यत्। अर्वाऽवति। अश्विना। यत्। वा। पुरु। पुरुऽभुजा। यत्। अन्तरिक्षे। आ। गतम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यौ (**अद्य**) (**स्थः**) तिष्ठथः (**परावति**) दूरदेशे (**यत्**) यौ (**अर्वावति**) निकटदेशे (**अश्विना**) वायुविद्युतौ (**यत्**) यौ (**वा**) (**पुरू**) बहु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**पुरुभुजा**) बहुपालकौ (**यत्**) यौ (**अन्तरिक्षे**) आकाशे (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम्॥१॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषा! यदश्विना परावति यदर्वावति यत् पुरुभुजा वा यदन्तरिक्षे पुरू स्थस्तयोर्विज्ञानायाऽद्यागतम्॥१॥

**भावार्थः**-यौ ब्रह्मचर्य्येण विद्यामधीत्य परस्परप्रीत्या गृहारम्भं कुर्य्यातां तौ स्त्रीपुरुषौ शिल्पविद्यामपि साद्धुं शक्नुयाताम्॥१॥

**पदार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! (**यत्**) जो (**अश्विना**) वायु **[**और**]** बिजुली (**परावति**) दूर देश में और (**यत्**) जो (**अर्वावति**) निकट देश में (**यत्**) जो (**पुरुभुजा**) बहुतों के पालन करने वाले (**वा**) वा (**यत्**) जो (**अन्तरिक्षे**) आकाश में (**पुरू**) बहुत (**स्थः**) स्थित होते हैं, उनके विज्ञान के लिये (**अद्य**) आज (**आ, गतम्**) आइये॥१॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य से विद्या को पढ़कर परस्पर प्रीति से गृहारम्भ करें, वे स्त्री-पुरुष शिल्प विद्या को भी सिद्ध कर सकें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता। वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे॥ २॥**

**इह। त्या। पुरुऽभूतमा। पुरु। दंसांसि। बिभ्रता। वरस्या। यामि। अध्रिगू इत्यध्रिऽगू। हुवे। तुविःऽतमा। भुजे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इह**) (**त्या**) तौ (**पुरुभूतमा**) अतिशयेन बहुव्यापकौ (**पुरू**) बहूनि (**दंसांसि**) कर्म्माणि (**बिभ्रता**) धरन्तौ (**वरस्या**) अतिशयेन वरौ (**यामि**) प्राप्नोमि (**अध्रिगू**) अधिकगन्तारौ (**हुवे**) स्वीकरोमि (**तुविष्टमा**) अतिशयेन बलिष्ठौ (**भुजे**) भोगाय॥२॥

**अन्वयः**-हे पत्नि! यौ पुरुभूतमा पुरु दंसांसि बिभ्रता वरस्या तुविष्टमाऽध्रिगू इह भुजे हुवे याभ्यामिष्टसिद्धिं यामि त्या त्वमपि संप्रयुङ्क्ष्व॥२॥

**भावार्थः**-यत्र स्त्रीपुरुषौ तुल्यगुणकर्म्मस्वभावसुरूपौ वर्त्तेते तत्र सकलपदार्थविद्या जायते॥२॥

**पदार्थः**-हे स्त्रि! जिन (**पुरुभूतमा**) अत्यन्त बहुत व्यापक (**पुरु**) बहुत (**दंसांसि**) कर्म्मों को (**बिभ्रता**) धारण करते हुए (**वरस्या**) अत्यन्त श्रेष्ठ और (**तुविष्टमा**) अत्यन्त बलिष्ठ (**अध्रिगू**) अधिक चलने वालों को (**इह**) इस संसार में (**भुजे**) भोग के लिये (**हुवे**) स्वीकार करता हूं, जिन दोनों से इष्टसिद्धि को (**यामि**) प्राप्त होता हूं (**त्या**) उन दोनों को तू भी संप्रयुक्त कर॥२॥

**भावार्थः**-जहां स्त्री और पुरुष तुल्य गुण, कर्म्म, स्वभाव और सुरूपवान् हैं, वहाँ सम्पूर्ण पदार्थविद्या होती है॥२॥

**मनुष्यैरतः परं किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को इसके आगे क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ई॒र्मान्यद्वपु॑षे॒ वपु॑श्च॒क्रं रथ॑स्य येमथुः। पर्य॒न्या नाहु॑षा यु॒गा म॒ह्ना रजां॑सि दीयथः॥३॥**

**ई॒र्मा। अ॒न्यत्। वपु॑षे। वपुः॑। च॒क्रम्। रथ॑स्य। ये॒म॒थुः। परि॑। अ॒न्या। नाहु॑षा। यु॒गा। म॒ह्ना। रजां॑सि। दी॒य॒थः॥३॥**

**पदार्थः**-(**ईर्मा**) प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा (**अन्यत्**) (**वपुषे**) सुरूपाय (**वपुः**) सुरूपम् (**चक्रम्**) चरति येन तत् (**रथस्य**) (**येमथुः**) गमयतम् (**परि**) सर्वतः (**अन्या**) अन्यानि (**नाहुषा**) मनुष्याणामिमानि (**युगा**) युगानि वर्षाणि वर्षसमूहा वा (**मह्ना**) महत्त्वेन (**रजांसि**) लोकान् (**दीयथः**) क्षयथः॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! वायुसूर्य्याविव यौ युवां रथस्य चक्रमिव वपुषेऽन्यदीर्मा वपुर्येमथुरन्या नाहुषा युगा परियेमथुर्मह्ना रजांसि दीयथस्तौ कालविद्यां ज्ञातुमर्हथः॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा रथचक्राणि भ्रमन्ति तथाऽहर्निशं कालचक्रं भ्रमति येन क्षणादियुगकल्पमहाकल्पादिका गणितविद्या सिद्ध्यतीति वित्त॥३॥

**पदार्थः**-हे स्त्री और पुरुषो! वायु और सूर्य्य के सदृश जो तुम (**रथस्य**) वाहन के (**चक्रम्**) चलता है जिससे उस पहिये के सदृश (**वपुषे**) सुन्दर रूप के लिये (**अन्यत्**) अन्य (**ईर्मा**) प्राप्त होने वा जानने योग्य (**वपुः**) सुरूप को (**येमथुः**) प्राप्त होओ और (**अन्या**) अन्य (**नाहुषा**) मनुष्यों के सम्बन्धी (**युगा**) वर्ष वा वर्षों के समूहों को (**परि**) सब ओर से प्राप्त होओ और (**मह्ना**) महत्त्व से (**रजांसि**) लोकों का (**दीयथः**) नाश करते हो, वे कालविद्या के जानने योग्य हो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे रथ के पहिये घूमते हैं, वैसे दिन-रात्रि कालसम्बन्धी चक्र घूमता है, जिससे क्षण आदि तथा युग, कल्प और महाकल्प आदि सम्बन्धी गणितविद्या सिद्ध होती है, ऐसा जानो॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं विजानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या विशेष जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**तदू षु वामेना कृतं विश्वा यद्वामनु ष्टवे।**

**नाना जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः॥४॥**

**तत्। ऊँ इति। सु। वाम्। एना। कृतम्। विश्वा। यत्। वाम्। अनु। स्तवे। नाना। जातौ। अरेपसा। सम्। अस्मे इति। बन्धुम्। आ। ईयथुः॥४॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**उ**) (**सु**) (**वाम्**) युवाम् (**एना**) एनानि (**कृतम्**) निष्पादितम् (**विश्वा**) सर्वाणि (**यत्**) यानि (**वाम्**) युवाम् (**अनु**) (**स्तवे**) स्तौमि (**नाना**) (**जातौ**) प्रकटौ (**अरेपसा**) अनपराधिनौ (**सम्**) (**अस्मे**) अस्माकम् (**बन्धुम्**) (**आ**) (**ईयथुः**) प्राप्नुयातम्। अत्र पुरुषव्यत्ययः॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यद्युवाभ्यां कृतं तदेना विश्वाहमनुष्टवे यावरेपसा नाना जातौ वां प्राप्नुथ[**स्**]तावस्मे बन्धुं समेयथुस्तदु अहं वां सुप्रेरयेयम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाहं वायुविद्युद्विद्यां जानीयां तथैव यूयमपि विजानीत॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! (**यत्**) जो आप दोनों ने (**कृतम्**) सिद्ध किया (**तत्**) उन (**एना**) इन (**विश्वा**) संपूर्णों की मैं (**अनु, स्तवे**) स्तुति करता हूँ और जो (**अरेपसा**) अपराधरहित (**नाना**) अनेक प्रकार (**जातौ**) प्रकट (**वाम्**) आप दोनों प्राप्त होते हैं वह [**=**आप दोनों] (**अस्मे**) हम लोगों के (**बन्धुम्**) बन्धु को (**सम्, आ, ईयथुः**) प्राप्त हूजिये (**उ**) और उसको मैं (**वाम्**) आप दोनों की (**सु**) उत्तम प्रकार प्रेरणा करूं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं वायु और बिजुली की विद्या को जानूं, वैसे ही आप लोग भी जानिये॥४॥

**पुनः स्त्रियः कीदृशो भवेयुरित्याह॥**

फिर स्त्रियाँ कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्वां सूर्या रथं तिष्ठद्रघुष्यदं सदा।**

**परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः॥५॥११॥**

**आ। यत्। वाम्। सूर्या। रथम्। तिष्ठत्। रघुऽस्यदम्। सदा। परि। वाम्। अरुषाः। वयः। घृणा। वरन्ते। आऽतपः॥५॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यत्**) या (**वाम्**) युवयोः (**सूर्या**) सूर्य्यसम्बन्धिन्युषा इव (**रथम्**) विमानादियानम् (**तिष्ठत्**) तिष्ठति (**रघुष्यदम्**) या लघु स्यन्दति सा (**सदा**) निरन्तरम् (**परि**) (**वाम्**) युवयोः (**अरुषाः**) रक्तभास्वरगुणाः (**वयः**) पक्षिणः (**घृणा**) दीप्तिः (**वरन्ते**) स्वीकुर्वन्ति (**आतपः**) समन्तात् प्रतापकः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्या घृणारुषा सूर्योषा इव स्त्री वां रघुष्यदं रथमातिष्ठत् वां वयः परि वरन्ते सा आतप इव सदोपकारिणी भवति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रातर्वेला सर्वथा प्रिया सुखप्रदा वर्त्तते तथा परस्परं प्रीतौ स्त्रीपुरुषौ प्रसन्नौ वर्त्तेते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**घृणा**) प्रकाशित (**अरुषाः**) लाल चमकते हुए गुणों वाली (**सूर्या**) सूर्य्यसम्बन्धिनी प्रातर्वेला के सदृश स्त्री (**वाम्**) तुम्हारे (**रघुष्यदम्**) थोड़े चलने वाले (**रथम्**) विमान आदि वाहन पर (**आ**) सब प्रकार से (**तिष्ठत्**) स्थित होती है, जिसको (**वाम्**) आप दोनों के (**वयः**) पक्षी (**परि, वरन्ते**) सब ओर से स्वीकार करते हैं, वह (**आतपः**) चारों और से उष्ण करने वाले घर्म्म के सदृश (**सदा**) सब काल में उपकार करने वाली होती है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातःकाल सब प्रकार से प्रिय और सुखकारक है, वैसे परस्पर प्रीतियुक्त स्त्री पुरुष प्रसन्न [रहते] हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा।**

**घर्मं यद्वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति॥६॥**

**युवोः। अत्रिः। चिकेतति। नरा। सुम्नेन। चेतसा। घर्मम्। यत्। वाम्। अरेपसम्। नासत्या। आस्ना। भुरण्यति॥६॥**

**पदार्थः**-(**युवोः**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अत्रिः**) अविद्यमानत्रिविधदुःखम् (**चिकेतति**) जानाति (**नरा**) नायकौ धर्म्मपथनेतारौ (**सुम्नेन**) सुखेन (**चेतसा**) चित्तेन (**घर्मम्**) यज्ञम् (**यत्**) यः (**वाम्**) युवयोः (**अरेपसम्**) अनपराधिनम् (**नासत्या**) अविद्यमानासत्यौ (**आस्ना**) आस्येन (**भुरण्यति**) धरति॥६॥

**अन्वयः**-हे नासत्या नरा! यद्योऽत्रिः सुम्नेन चेतसा युवोर्घर्मं चिकेतत्यास्ना वामरेपसं यज्ञं भुरण्यति तं युवां ज्ञापयेतम्॥६॥

**भावार्थः**-ये पुरुषा विद्वत्सङ्गेनाध्ययनाध्यापनं यज्ञं विस्तारयन्ति ते जगदुपकारका: सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) असत्य से रहित (**नरा**) धर्म्म मार्ग में चलने वाले दो नायक जनो! (**यत्**) जो (**अत्रिः**) आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक आदि तीन प्रकार के दुःख से रहित जन (**सुम्नेन**)

सुख और **(चेतसा)** चित्त से **(युवोः)** आप दोनों अध्यापक और उपदेशकों के **(घर्मम्)** यज्ञ को **(चिकेतति)** जानता और **(आस्ना)** मुख से **(वाम्)** आप दोनों के **(अरेपसम्)** अपराध रहित यज्ञ को **(भुरण्यति)** धारण करता है, उसको आप जानिये॥६॥

**भावार्थः**-जो पुरुष विद्वानों के संग से अध्ययन और अध्यापन रूप यज्ञ का विस्तार करते हैं, वे संसार के उपकारक हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु संतनिः।**

**यद्वां दंसोभिरश्विनात्रिर्नराववर्तति॥७॥**

**उग्रः। वाम्। ककुहः। ययिः। शृण्वे। यामेषु। सम्ऽतनिः। यत्। वाम्। दंसःऽभिः। अश्विना। अत्रिः। नरा। आऽववर्तति॥७॥**

**पदार्थः**-(**उग्रः**) तेजस्वी (**वाम्**) युवाम् (**ककुहः**) महान् (**ययिः**) यो याति सः (**शृण्वे**) (**यामेषु**) प्रहरेषु (**सन्तनिः**) सम्यक् विस्तारकः (**यत्**) यः (**वाम्**) युवयोः (**दंसोभिः**) कर्म्मभिः (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**अत्रिः**) अत्रिवारम् (**नरा**) नेतारौ (**आववर्तति**) भृशं वर्त्तते॥७॥

**अन्वयः**-हे नराश्विना! यद्यो ययिः ककुह उग्रः सन्तनिरहं यामेषु वां शृण्वे यश्च वां दंसोभिरत्रिराववर्त्तति ता आवां युवां बोधयतम्॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सूर्य्यचन्द्रवन्नियमेन वर्त्तित्वा कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सर्वदोन्नता जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे (**नरा**) नायक (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! (**यत्**) जो (**ययिः**) चलने वाला (**ककुहः**) बड़ा (**उग्रः**) तेजस्वी (**सन्तनिः**) उत्तम प्रकार विस्तारकर्त्ता मैं (**यामेषु**) प्रहरों में (**वाम्**) आप दोनों को (**शृण्वे**) सुनूं और जो (**वाम्**) आप दोनों के (**दंसोभिः**) कर्म्मों से (**अत्रिः**) न तीन वार (**आववर्त्तति**) अत्यन्त वर्त्तमान है, उन हम दोनों को आप दोनों बोध कराइये॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश नियम से वर्त्ताव करके कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे सर्वदा उन्नत होते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मध्वं ऊ षु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी।**

**यत्समुद्राति पर्षथः पक्वाः पृक्षो भरन्त वाम्॥८॥**

**मध्वः। ऊँ इति। सु। मधुऽयुवा। रुद्रा। सिसक्ति। पिप्युषी। यत्। समुद्रा। अति। पर्षथः। पक्वाः। पृक्षः। भरन्त। वाम्॥८॥**

**पदार्थः-(मध्वः)** मधुरस्य **(उ)** वितर्के **(सु) (मधूयुवा)** यौ मधूनि यावयतस्तौ **(रुद्रा)** दुष्टानां रोदयितारौ **(सिषक्ति)** सिञ्चति **(पिप्युषी)** प्यायन्ती **(यत्)** या **(समुद्रा)** यानि सम्यग्द्रवन्ति **(अति) (पर्षथः)** सिञ्चथः **(पक्वाः) (पृक्षः)** संपर्काः **(भरन्त)** भरन्ति **(वाम्)** युवयोः॥८॥

**अन्वयः**-हे मधूयुवा रुद्रा! यद्या पिप्युषी मध्व ऊ षु सिषक्ति तया युवां समुद्रातिपर्षथो यतः पक्वाः पृक्षो वां भरन्त॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यवायू वृष्ट्या सर्वान् सिञ्चतः पक्वानि फलानि जनयतस्तथा यूयमप्याचरत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मधूयुवा)** सोम आदि रस को मिलाने और **(रुद्रा)** दुष्टों के रुलाने वाले जनो! **(यत्)** जो **(पिप्युषी)** पान कराती हुई **(मध्वः)** सोमलता के रस को **(उ)** तर्क-वितर्क से **(सु, सिषक्ति)** अच्छे प्रकार सींचती है, उससे आप दोनों **(समुद्रा)** उत्तम प्रकार द्रवित होने वालों को **(अति, पर्षथः)** सींचते हैं जिससे **(पक्वाः)** पके **(पृक्षः)** सम्बन्ध हुए फल **(वाम्)** आप दोनों को **(भरन्त)** पोषण करते हैं॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य और वायु वृष्टि से सब को सींचते और पके हुए फलों को उत्पन्न करते हैं, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सत्यमिद्वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा।**

**ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा॥९॥**

**सत्यम्। इत्। वै। ऊँ इति। अश्विना। युवाम्। आहुः। मयःऽभुवा। ता। यामन्। यामऽहूतमा। यामन्। आ। मृळयत्ऽतमा॥९॥**

**पदार्थ-(सत्यम्)** यथार्थं व्यवहारमुदकं वा **(इत्)** अपि **(वै)** निश्चये **(उ)** वितर्के **(अश्विना)** द्यावापृथिव्याविवाध्यापकोपदेशकौ **(युवाम्) (आहुः)** कथयन्ति **(मयोभुवा)** सुखं भावुकौ **(ता)** तौ **(यामन्)** यामनि प्रहरादौ **(यामहूतमा)** यौ यामानाह्वयतस्तावतिशयितौ **(यामन्)** यामनि **(आ) (मृळयत्तमा)** अत्यन्तसुखकारकौ॥९॥

**अन्वयः**-हे मयोभुवाऽश्विना! यौ युवां यामहूतमा यामन्नामृळयत्तमा आहुस्ता यामन् वै सत्यमु इत्प्रचारयेतम्॥९॥

**भावार्थः**-यथा भूमिमेघौ सर्वेषां प्राणिनां सुखकरौ वर्त्तेते तथैवाध्यापकोपदेशकौ भृशं सुखकरौ भवेताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मयोभुवा)** सुखकारक **(अश्विना)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(युवाम्)** आप दोनों **(यामहूतमा)** प्रहरों को बुलाने वाले अत्यन्त **(यामन्)** प्रहर में **(आ, मृळयत्तमा)** सब ओर से अतीव सुखकारकों को **(आहुः)** कहते हैं **(ता)** वे दोनों **(यामन्)** प्रहर में **(वै)** निश्चय **(सत्यम्)** यथार्थ व्यवहार वा जल को **(उ)** तर्क के साथ **(इत्)** भी प्रचारित कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-जैसे भूमि और मेघ सब प्राणियों के सुखकारक हैं, वैसे ही अध्यापक और उपदेशक जन अत्यन्त सुखकारक हों॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु शंतमा।**

**या तक्षाम रथाँइवावोचाम बृहन्नमः॥१०॥१२॥**

**इमा। ब्रह्माणि। वर्धना। अश्विऽभ्याम्। सन्तु। शम्ऽतमा। या। तक्षाम। रथान्ऽइव। अवोचाम। बृहत्। नमः॥१०॥**

**पदार्थः-(इमा)** इमानि **(ब्रह्माणि)** धनान्यन्नानि वा **(वर्धना)** वर्धन्ते तानि **(अश्विभ्याम्)** द्यावापृथिवीभ्याम् **(सन्तु)** **(शन्तमा)** अतिशयेन सुखकराणि **(या)** यानि **(तक्षाम)** संवृणुयामाऽऽच्छादयाम स्वीकुर्य्याम **(रथानिव)** **(अवोचाम)** उपदिशेम **(बृहत्)** महत् **(नमः)** सत्कारम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अश्विभ्यां येमा वर्धना शन्तमा ब्रह्माणि रथानिव तक्षाम तानि युष्मभ्यं सुखकाराणि सन्तु तैर्बृहन्नमो वयमवोचाम॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथा वस्त्रादिना रथानावृत्य शृङ्गारयन्ति तथैव धनधान्यानि संगृह्य सुसंस्कृतानि कुर्य्युः शुद्धान्नभोगेन महद्विज्ञानं प्राप्यान्यानप्येतदुपपदिशेयुः॥१०॥

अत्राश्विविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिसप्ततितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अश्विभ्याम्)** अन्तरिक्ष और पृथिवी से **(या)** जो **(इमा)** ये **(वर्धना)** वृद्धि को प्राप्त होते जिनसे उन **(शन्तमा)** अत्यन्त सुखकारक **(ब्रह्माणि)** धनों या अन्नों का **(रथानिव)** रथों के समान **(तक्षाम)** आच्छादन करें, वे आप लोगों के लिये सुखकारक **(सन्तु)** हों उनसे **(बृहत्)** बड़े **(नमः)** सत्कार का हम **(अवोचाम)** उपदेश करें॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप जैसे वस्त्र आदि से वाहनों को उढ़ाकर शृङ्गारयुक्त करते हैं, वैसे ही धन और धान्यों को उत्तम प्रकार ग्रहण करके उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त करें और शुद्ध अन्न के भोग से बड़े विज्ञान को प्राप्त होकर अन्य जनों को भी इस का उपदेश करें॥१०॥

इस सूक्त में अन्तरिक्ष पृथिवी और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तिहत्तरवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**कूष्ठ इति दशर्चस्य चतु:सप्ततितमस्य सूक्तस्य आत्रेय ऋषि:। अश्विनौ देवते। १, २, १० विराडनुष्टुप्। ३ अनुष्टुप्। ४, ५, ६, ९ निचृदनुष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:। ७ भुरिगुष्णिक्। ८ निचृदुष्णिक् छन्द:। ऋषभ: स्वर:॥**

***अथ मनुष्यै: किमनुष्ठेयमित्याह॥***

[अब दश ऋचा वाले चौहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में] अब मनुष्यों को क्या अनुष्ठान करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कूष्ठो देवावश्विनाद्या दिवो मनावसू।**
**तच्छ्रवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति॥ १॥**

**कुऽस्थ:। देवौ। अश्विना। अद्य। दिव:। मनावसू इति। तत्। श्रवथ:। वृषणऽवसू इति वृषणऽवसू। अत्रि:। वाम्। आ। विवासति॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**कूष्ठ:**) य: कौ पृथिव्यां तिष्ठति (**देवौ**) विद्वांसौ (**अश्विना**) व्याप्तविद्यौ (**अद्य**) (**दिव:**) प्रकाशस्य (**मनावसू**) यौ मनो वासयतस्तौ (**तत्**) (**श्रवथ:**) शृणुथ: (**वृषण्वसू**) यौ वृषणो वासयतस्तौ (**अत्रि:**) आप्तविद्य: (**वाम्**) (**आ, विवासति**) समन्तात्सेवते॥ १॥

**अन्वय:**-हे मनावसू वृषण्वसू अश्विना देवौ! य: कूष्ठोऽत्रिरद्य दिवो वामाविवासति तद्युवां श्रवथ:॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! ये युष्मान् सेवन्ते ते बहुश्रुता मननशीला विद्वांस: सर्वाणि सत्कर्म्माणि सेवन्ते ते दु:खरहिता जायन्ते॥ १॥

**पदार्थ:**-हे (**मनावसू**) मन को वसाने वाले (**वृषण्वसू**) उत्तमों को वसाने वाले (**अश्विना**) विद्या से व्याप्त (**देवौ**) विद्वानो! जो (**कूष्ठ:**) पृथिवी में स्थित होने वाला (**अत्रि:**) विद्या प्राप्त जन (**अद्य**) इस समय (**दिव:**) प्रकाश के सम्बन्ध में (**वाम्**) आप दोनों का (**आ, विवासति**) सब प्रकार से सेवन करता है (**तत्**) उसको आप दोनों (**श्रवथ:**) सुनते हैं॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! जो आप लोगों का सेवन करते हैं वे बहुश्रुत, विचारशील विद्वान् जन सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म्मों का सेवन करते हैं और वे दु:ख से रहित होते हैं॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैर्विदुष: प्रति कथं प्रष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को विद्वानों के प्रति कैसे पूछना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि नासत्या।**
**कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा॥ २॥**

**कुह॑। त्या। कुह॑। नु। श्रुता। दि॒वि। दे॒वा। नास॑त्या। कस्मि॑न्। आ। य॒त॒थः॒। जने॑। कः॒। वा॒म्। न॒दीना॑म्। सचा॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कुह**) क्व (**त्या**) तौ (**कुह**) (**नु**) सद्यः (**श्रुता**) श्रुतौ (**दिवि**) दिव्ये व्यवहारे प्रकाशे वा (**देवा**) दिव्यगुणौ (**नासत्या**) सत्यस्वरूपौ (**कस्मिन्**) (**आ**) (**यतथः**) यतेथे। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**जने**) (**कः**) (**वाम्**) युवाम् (**नदीनाम्**) (**सचा**) समवाये॥ २॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! त्या नासत्या कुह वर्त्तेते कुह श्रुता देवा भवतो युवां कस्मिञ्जन आ यतथो वां तयोर्युवयोर्नदीनां सचा को न्वस्ति यौ दिव्या यतथः॥ २॥

**भावार्थः**-जिज्ञासुभिर्विदुषां सनीडं गत्वा विद्युदादिविद्याः प्रष्टव्याः॥ २॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! (**त्या**) ये (**नासत्या**) सत्यस्वरूप (**कुह**) कहाँ वर्त्तमान हैं और (**कुह**) कहाँ (**श्रुता**) सुने हुए (**देवा**) श्रेष्ठ गुण वाले होते हैं और तुम (**कस्मिन्**) किस (**जने**) जन में (**आ, यतथः**) सब ओर से यत्न करते हो (**वाम्**) उन आप दोनों की (**नदीनाम्**) नदियों के (**सचा**) सम्बन्ध से (**कः**) कौन (**नु**) शीघ्र है जो (**दिवि**) श्रेष्ठ व्यवहार वा प्रकाश में प्रयत्न करते हो॥ २॥

**भावार्थः**-जिज्ञासु जनों को चाहिये कि विद्वानों के समीप जाकर बिजुली आदि की विद्याओं को पूछें॥ २॥

**अथ मनुष्यैः किं प्रष्टव्यमित्याह॥**

अब मनुष्यों को क्या पूछना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कं या॑थः॒ कं ह॑ गच्छथः॒ कमच्छा॑ यु॒ञ्जाथे॒ रथ॑म्।**

**कस्य॒ ब्रह्मा॑णि रण्यथो व॒यं वा॑मुश्मसी॒ष्टये॑॥ ३॥**

**कम्। या॒थः॒। कम्। ह॒। ग॒च्छ॒थः॒। कम्। अच्छ॑। यु॒ञ्जाथे॒ इति॑। रथ॑म्। कस्य॑। ब्रह्मा॑णि। र॒ण्य॒थः॒। व॒यम्। वा॒म्। उ॒श्म॒सि॒। इ॒ष्टये॑॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**कम्**) (**याथः**) प्राप्नुथः (**कम्**) (**ह**) किल (**गच्छथः**) (**कम्**) (**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**युञ्जाथे**) (**रथम्**) रमणीयं यानम् (**कस्य**) (**ब्रह्माणि**) धनधान्यानि (**रण्यथः**) रमयथः (**वयम्**) (**वाम्**) युवाम् (**उश्मसि**) कामयेमहि (**इष्टये**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां कं याथः कं गच्छथः कं रथमच्छा युञ्जाथे कस्य ह ब्रह्माणि रण्यथो वयमिष्टये वामुश्मसि॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वांसो यं प्राप्नुयुर्युञ्जते वाञ्छन्ति तमेव यूयमपीच्छत॥ ३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों (**कम्**) किसको (**याथः**) प्राप्त होते हो और (**कम्**) किसको (**गच्छथः**) जाते हो (**कम्**) किस (**रथम्**) रमण करने योग्य वाहन को (**अच्छा**)

उत्तम प्रकार **(युञ्जाथे)** युक्त होते हो और **(कस्य)** किसके **(ह)** निश्चय से **(ब्रह्माणि)** धन और धान्यों को **(रण्यथः)** रमाते हो **(वयम्)** हम लोग **(इष्टये)** इच्छा के लिये **(वाम्)** आप दोनों की **(उश्मसि)** कामना करें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् जन जिसको प्राप्त होवें और युक्त होते तथा इच्छा करते हैं, उसी की आप लोग इच्छा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौर पौराय जिन्वथः।**
**यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे॥४॥**

**पौरम्। चित्। हि। उदऽप्रुतम्। पौर। पौराय। जिन्वथः। यत्। ईम्। गृभीतऽतातये। सिंहम्ऽइव। द्रुहः। पदे॥४॥**

**पदार्थः**-**(पौरम्)** पुरि भवं मनुष्यम् **(चित्)** अपि **(हि)** यतः **(उदप्रुतम्)** उदकयुक्तम् **(पौर)** पुरोर्मनुष्यस्याऽपत्यं तत्सम्बुद्धौ **(पौराय)** पुरे भवाय **(जिन्वथः)** प्राप्नुथः **(यत्)** यम् **(ईम्)** सर्वतः **(गृभीततातये)** गृहीता तातिः सत्कर्म्मविस्तृतिर्येन **(सिंहमिव)** सिंहवत् **(द्रुहः)** शत्रोः **(पदे)** प्राप्तव्ये॥४॥

**अन्वयः**-हे पौर! त्वं ह्युदप्रुतं पौरं चित् प्राप्नुहि पौरायाऽध्यापकस्त्वं च जिन्वथो गृभीततातये द्रुहस्पदे सिंहमिव यदीं जिन्वथस्तं त्वं सन्तोषय॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथैकपुरवासिनः परस्परं सुखोन्नतिं कुर्वन्ति तथैव भिन्नदेशवासिनोऽप्याचरन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे **(पौर)** पुर में हुए! आप **(हि)** ही **(उदप्रुतम्)** जल से युक्त **(पौरम्)** मनुष्य के सन्तान को **(चित्)** निश्चय से प्राप्त हूजिये और **(पौराय)** पुर में हुए मनुष्य के लिये अध्यापक और आप **(जिन्वथः)** प्राप्त होते हो **(गृभीततातये)** ग्रहण किया श्रेष्ठ कर्म्मों का विस्तार जिसने उसके लिये **(द्रुहः)** शत्रु के **(पदे)** प्राप्त होने योग्य स्थान में **(सिंहमिव)** सिंह के सदृश **(यत्)** जिसको **(ईम्)** सब ओर से प्राप्त होते हो, उसको आप सन्तुष्ट कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे एक नगर के वासी जन परस्पर सुख की उन्नति करते हैं, वैसे ही अन्य देशवासी भी करें॥४॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रच्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः।**
**युवा यदी कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः॥५॥१३॥**

**प्र। च्यवानात्। जुजुरुषः। वव्रिम्। अत्कम्। न। मुञ्चथः। युवा। यदि। कृथः। पुनः। आ। कामम्। ऋण्वे। वध्वः॥५॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**च्यवानात्**) गमनात् (**जुजुरुषः**) जीर्णावस्थां प्राप्तः (**वव्रिम्**) रूपम्। **वव्रिरिति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०१.७)। (**अत्कम्**) व्याप्तम् (**न**) इव (**मुञ्चथः**) (**युवा**) प्राप्तयौवनावस्थः (**यदी**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**कृथः**) कुरुथः (**पुनः**) (**आ**) (**कामम्**) (**ऋण्वे**) प्रसाध्नोमि (**वध्वः**) भार्यायाः॥५॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! जुजुरुषश्च्यवानादत्कं वव्रिं व्यभिचारं प्रमुञ्चथः यदी युवा न कार्यं कृथः पुनर्वध्वः कामं युवा सन्नहमृण्वे तथा युवामाकृथः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा वृद्धावस्थासु रूपं मुक्त्वा वृद्धावस्थां प्राप्नुवन्ति तथैव दोषज्ञा गुणांस्त्यक्त्वा दोषान् गृह्णन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे स्त्री-पुरुषो! (**जुजुरुषः**) वृद्धावस्था को प्राप्त जन (**च्यवानात्**) गमन से (**अत्कम्**) व्याप्त (**वव्रिम्**) रूप और व्यभिचार का (**प्र, मुञ्चथः**) त्याग करते हो और (**यदी**) जो (**युवा**) युवावस्था को प्राप्त पुरुष के (**न**) समान कार्य्य को (**कृथः**) करते हो (**पुनः**) फिर (**वध्वः**) स्त्री के (**कामम्**) मनोरथ को युवावस्था को प्राप्त हुआ मैं (**ऋण्वे**) सिद्ध करता हूं, वैसे आप दोनों (**आ**) सब ओर से करिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे वृद्धावस्थाओं में रूप का त्याग करके वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं, वैसे ही दोषों के जानने वाले गुणों का त्याग कर के दोषों को ग्रहण करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्ति हि वामिह स्तोता स्मसि वां संदृशि श्रिये**

**नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू॥६॥**

**अस्ति। हि। वाम्। इह। स्तोता। स्मसि। वाम्। सम्ऽदृशि। श्रिये। नु। श्रुतम्। मे। आ। गतम्। अवःऽभिः। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू॥६॥**

**पदार्थः**-(**अस्ति**) (**हि**) यतः (**वाम्**) युवयोः (**इह**) (**स्तोता**) प्रशंसकः (**स्मसि**) (**वाम्**) युवाम् (**संदृशि**) सदृश्ये (**श्रिये**) धनाय (**नु**) सद्यः (**श्रुतम्**) (**मे**) मम (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम् (**अवोभिः**) रक्षणादिभिः (**वाजिनीवसू**) यौ वाजिनीं बह्वन्नादिक्रियां वासयतस्तौ॥६॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसू अध्यापकोपदेशकाविह यो वां स्तोतास्ति तं हि वयं प्राप्ताः स्मसि। वां संदृशि श्रिये नु श्रुतमवोभिर्मां प्राप्नुतं मे मम श्रुतमागतम्॥६॥

**भावार्थः**-ये विदुषां गुणान्स्तुवन्ति ते गुणाढ्या भूत्वा विद्वत्सादृश्यं प्राप्य श्रीमन्तो भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वाजिनीवसु)** बहुत अन्नादि क्रिया को वसाने वाले अध्यापक और उपदेशक जनो! **(इह)** इस संसार में जो **(वाम्)** आप दोनों का **(स्तोता)** प्रशंसा करने वाला **(अस्ति)** है उसको **(हि)** जिससे हम लोग प्राप्त **(स्मसि)** होवें और **(वाम्)** आप दोनों को **(संदृशि)** सादृश्य में **(श्रिये)** धन के लिये **(नु)** शीघ्र **(श्रुतम्)** सुनिये और **(अवोभिः)** रक्षणादिकों से मुझ को प्राप्त हूजिये **(मे)** मेरे कथन को सुनने को **(आ, गतम्)** आइये॥६॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के गुणों की स्तुति करते हैं, वे गुणों से युक्त हो और विद्वानों की समता को प्राप्त होकर श्रीमान् होते हैं॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**को वा॑म॒द्य पु॑रू॒णामा व॑व्ने॒ मर्त्या॑नाम्।**

**को विप्रो॑ विप्रवाहसा॒ को य॒ज्ञैर्वा॑जिनीवसू॥७॥**

**कः। वा॒म्। अ॒द्य। पु॒रू॒णाम्। आ। व॒व्ने॒। मर्त्या॑नाम्। कः। विप्रः। विप्र॒ऽवा॒ह॒सा॒। कः। य॒ज्ञैः। वा॒जि॒नी॒व॒सू॒ इति॑ वाजिनीऽवसू॥७॥**

**पदार्थः**-**(कः)** **(वाम्)** युवयोः **(अद्य)** **(पुरूणाम्)** बहूनाम् **(आ)** **(वव्ने)** संभजति **(मर्त्यानाम्)** मनुष्याणाम् **(कः)** **(विप्रः)** मेधावी **(विप्रवाहसा)** यौ विद्वद्भिः प्रापणीयौ **(कः)** **(यज्ञैः)** **(वाजिनीवसू)** धनधान्यप्रापकौ॥७॥

**अन्वयः**-हे विप्रवाहसा वाजिनीवसू! पुरूणां मर्त्यानां मध्ये को विप्रोऽद्य वामावव्ने को यज्ञैर्विद्यां कश्च प्रज्ञां वव्ने॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्यां याचन्ते ते विदुषः सनीडं प्राप्य प्रश्नोत्तरैरानन्द्य महान्तं लाभं प्राप्नुयुस्तेऽन्यानपि प्रापयितुं शक्नुयुः॥७॥

**पदार्थः**-हे **(विप्रवाहसा)** विद्वानों से प्राप्त होने योग्य **(वाजिनीवसू)** धन धान्य प्राप्त कराने वालो! **(पुरूमाण्)** बहुत **(मर्त्यानाम्)** मनुष्यों के मध्य में **(कः)** कौन **(विप्रः)** बुद्धिमान् **(अद्य)** आज **(वाम्)** आप दोनों का **(आ, वव्ने)** अच्छे प्रकार आदर करता **(कः)** कौन **(यज्ञैः)** यज्ञों से विद्या को और **(कः)** कौन बुद्धि का आदर करता है॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्या की याचना करते हैं वे विद्वान् के समीप प्राप्त होकर प्रश्न और उत्तरों से आनन्द कर के लाभ को प्राप्त होवें, वे अन्यों को भी प्राप्त करा सकें॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना।**

**पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा॥८॥**

**आ। वाम्। रथः। रथानाम्। येष्ठः। यातु। अश्विना। पुरु। चित्। अस्मऽयुः। तिरः। आङ्गूषः। मर्त्येषु। आ॥८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवयोः (**रथः**) यानम् (**रथानाम्**) यानानां मध्ये (**येष्ठः**) अतिशयेन याता (**यातु**) गच्छतु (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**पुरू**) पुरूणि (**चित्**) अपि (**अस्मयुः**) योऽस्मान् याति सः (**तिरः**) तिरस्करणे (**आङ्गूषः**) अङ्गेषु भवा प्रशंसा (**मर्त्येषु**) मनुष्येषु (**आ**) समन्तात्॥८॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यो वां रथानां येष्ठो रथो यात्वस्मयुश्चिन्मर्त्येष्वाङ्गूषः सन् पुरू पुरून् प्रायातु दुःखानि तिरस्कृत्य सुखमायाति तं युवामा प्राप्नुयातम्॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाऽध्यापकोपदेशकाः शिल्पिन उत्तमानि यानानि निर्मिमते तथैव सुखसाधनानि यूयं सृजत॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! जो (**वाम्**) तुम्हारा (**रथानाम्**) वाहनों के मध्य में (**येष्ठः**) अतिशय चलने वाला (**रथः**) वाहन (**यातु**) चले (**अस्मयुः**) हम लोगों को प्राप्त होने वाली (**चित्**) भी (**मर्त्येषु**) मनुष्यों में (**आङ्गूषः**) अङ्गों में हुई प्रशंसा (**पुरू**) बहुतों को (**आ**) सब प्रकार से प्राप्त हो और दुःखों का (**तिरः**) तिरस्कार कर के सुख प्राप्त होता है, उसको आप दोनों (**आ**) प्राप्त हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अध्यापक और उपदेशक, शिल्पी जन उत्तम वाहनों को रचते हैं, वैसे सुख के साधनों को आप लोग उत्पन्न कीजिये॥८॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चर्कृतिः।**

**अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम्॥९॥**

**शम्। ऊँ इति। सु। वाम्। मधुऽयुवा। अस्माकम्। अस्तु। चर्कृतिः। अर्वाचीना। विऽचेतसा। विऽभिः। श्येनाऽइव। दीयतम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) सुखं कल्याणं वा (**उ**) (**सु**) (**वाम्**) युवयोः (**मधूयुवा**) माधुर्य्यगुणोपेतौ (**अस्माकम्**) (**अस्तु**) (**चर्कृतिः**) अत्यन्तक्रिया (**अर्वाचीना**) यावर्वागञ्चतस्तौ (**विचेतसा**) विविधविज्ञानौ (**विभिः**) पक्षिभिः सह (**श्येनेव**) श्येनः पक्षीव (**दीयतम्**) दद्यातम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मधूयुवा विचेतसार्वाचीना वां युवयोर्या चर्कृतिरस्ति साऽस्माकमस्तु यतो युवामु विभिः

श्येनेव शं सु दीयतम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो ये त्वैश्वर्य्यं परसुखार्थं नियोजयन्ति यथा पक्षिभिः सह श्येनः सद्यो गच्छति तथैभिः सह विद्यार्थिनः पूर्णं गच्छन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मधूयुवा)** माधुर्य्य गुण से युक्त **(विचेतसा)** अनेक प्रकार के विज्ञान वाले **(अर्वाचीना)** सन्मुख चलते हुए दो जनो! **(वाम्)** आप दोनों की जो **(चर्कृतिः)** अत्यन्त क्रिया है वह **(अस्माकम्)** हम लोगों की **(अस्तु)** हो जिससे आप दोनों (उ) ही **(विभिः)** पक्षियों के साथ **(श्येनेव)** वाज पक्षी के सदृश **(शम्)** सुख वा कल्याण को **(सु, दीयतम्)** उत्तम प्रकार देवें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् हैं जो अपने ऐश्वर्य्य को अन्य जनों के सुख के लिये नियुक्त करते हैं, जैसे पक्षियों के साथ श्येन पक्षी शीघ्र चलता है, वैसे इनके साथ विद्यार्थी जन पूर्ण रीति से चलें॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम्।**

**वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः॥१०॥१४॥**

**अश्विना। यत्। ह। कर्हि। चित्। शुश्रूयातम्। इमम्। हवम्। वस्वीः। ऊँ इति। सु। वाम्। भुजः। पृञ्चन्ति। सु। वाम्। पृचः॥१०॥**

**पदार्थः-(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(यत्)** यौ (ह) किल **(कर्हि)** कदा **(चित्)** अपि **(शुश्रूयातम्)** प्राप्नुयातम् **(इमम्)** वर्त्तमानम् **(हवम्)** प्रशंसनम् **(वस्वीः)** धनसम्बन्धिनीः (उ) **(सु)** **(वाम्)** युवयोः **(भुजः)** भोगक्रियाः **(पृञ्चन्ति)** सम्बध्नन्ति **(सु)** शोभने **(वाम्)** युवयोः **(पृचः)** कामनाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यद्यौ कर्हि चिदिममस्माकं हवं शुश्रूयातं या पृचो वस्वीर्भुजो वां सुपृञ्चन्ति ता हो वां वयं सुपृञ्चेम॥१०॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्यार्थिनां परीक्षां कुर्वन्ति तान् विद्यार्थिनो विद्वांसो भूत्वा प्रीणयन्तीति॥१०॥

अत्राश्विविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःसप्ततितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यत्)** जो **(कर्हि, चित्)** कभी हम लोगों को **(इमम्)** इस वर्त्तमान **(हवम्)** प्रशंसा को **(शुश्रूयातम्)** प्राप्त होओ और जो **(पृचः)** कामना और **(वस्वीः)** धनसम्बन्धिनी **(भुजः)** भोग की क्रियाओं को **(वाम्)** आप दोनों के सम्बन्ध में **(सु)** उत्तम

प्रकार **(पृञ्चन्ति)** सम्बन्धित करते हैं उनको **(ह)** निश्चय से **(उ)** और **(वाम्)** आप दोनों की हम लोग **(सु)** उत्तम प्रकार कामना करें॥१०॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् जन विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं, उनको विद्यार्थीजन विद्वान् होकर प्रसन्न करते हैं॥१०॥

इस सूक्त में अध्यापक, उपदेशक और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौहत्तरवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य पञ्चसप्ततितमस्य सूक्तस्य अवस्युरात्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, ३, पङ्क्तिः। २, ४, ६, ७, ८ निचृत्पङ्क्तिः। ५, ९ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

अब नव ऋचा वाले पचहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रति॑ प्रि॒यत॑मं॒ रथं॒ वृष॑णं वसु॒वाह॑नम्।**
**स्तो॒ता वा॑मश्विना॒वृषि॒: स्तोमे॑न॒ प्रति॑ भूषति॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥ १॥**

**प्रति॑। प्रि॒यऽत॑मम्। रथ॑म्। वृष॑णम्। व॒सु॒ऽवाह॑नम्। स्तो॒ता। वा॒म्। अ॒श्वि॒नौ॒। ऋषि॑:। स्तोमे॑न। प्रति॑। भू॒ष॒ति॒। माध्वी॒ इति॑। मम॑। श्रु॒तम्। हव॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**प्रियतमम्**) अतिशयेन प्रियम् (**रथम्**) रमते येन तद् विमानादियानम् (**वृषणम्**) सुखवर्षकम् (**वसुवाहनम्**) वसूनां द्रव्याणां वाहनम् (**स्तोता**) स्तावकः (**वाम्**) युवयोः (**अश्विनौ**) अध्यापकपरीक्षकौ (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**स्तोमेन**) स्तवनेन (**प्रति**) (**भूषति**) अलङ्करोति (**माध्वी**) मधुरादिगुणप्रापकौ (**मम**) (**श्रुतम्**) शृणुतम् (**हवम्**)॥१॥

**अन्वयः**-हे माध्वी अश्विनौ! यः स्तोता ऋषिः स्तोमेन वां प्रियतमं वृषणं वसुवाहनं रथं प्रति भूषति तस्य मम च हवं प्रति श्रुतम्॥१॥

**भावार्थः**-येऽध्यापनोपदेशौ कुर्वन्ति ते यथासमयं परीक्षामपि कुर्य्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**माध्वी**) मधुर आदि गुणों को प्राप्त कराने वाले (**अश्विनौ**) अध्यापक परीक्षक जनो! जो (**स्तोता**) स्तुति करने और (**ऋषिः**) मन्त्र और अर्थ का जानने वाला (**स्तोमेन**) स्तवन से (**वाम्**) आप दोनों के (**प्रियतमम्**) अत्यन्त प्रिय (**वृषणम्**) सुख के वर्षाने और (**वसुवाहनम्**) द्रव्यों के पहुंचाने वाले (**रथम्**) रमते हैं, जिससे उस विमान आदि वाहन को (**प्रति, भूषति**) शोभित करता है, उसके और (**मम**) मेरे (**हवम्**) बुलाने को (**प्रति, श्रुतम्**) सुनिये॥१॥

**भावार्थः**-जो अध्यापन और उपदेश करते हैं, वे योग्य समय में परीक्षा भी करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किस विषय की इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒त्याया॑तमश्विना ति॒रो विश्वा॑ अ॒हं सना॑।**
**दस्रा॒ हिर॑ण्यवर्तनी॒ सुषु॑म्ना॒ सिन्धु॑वाहसा॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥ २॥**

**अतिऽआयातम्। अश्विना। तिरः। विश्वाः। अहम्। सना। दस्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। सुऽसुम्ना। सिन्धुऽवाहसा। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अत्यायातम्**) देशानतिक्रम्याऽऽगच्छतम् (**अश्विना**) शिल्पकार्य्यविदौ (**तिरः**) (**विश्वाः**) समग्राः (**अहम्**) (**सना**) सदा (**दस्रा**) दुःखनिवारकौ (**हिरण्यवर्त्तनी**) यौ हिरण्यं ज्योतिः सुवर्णं वा वर्त्तयतस्तौ (**सुषुम्ना**) सुष्ठु सुखयुक्तौ (**सिन्धुवाहसा**) यौ सिन्धुं वहतः प्रापयतस्तौ (**माध्वी**) मधुरगतिमन्तौ (**मम**) (**श्रुतम्**) शृणुतम् (**हवम्**) अधीतम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे दस्रा हिरण्यवर्त्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी अश्विना! यथाहं सना विश्वा विद्या गृह्णामि तथा युवामत्यायातं मम तिरो हवं श्रुतम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येभ्यो विद्वद्भ्यो विद्या यूयमधीध्वं ते यदा यदा परीक्षां कुर्युस्तदा तदा तिरस्कारपुरःसरं वर्त्तमानं विदधीरन् यतः सर्वान् सम्यग्विद्या प्राप्नुयात्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**दस्रा**) दुःख के दूर करने और (**हिरण्यवर्त्तनी**) ज्योतिः वा सुवर्ण को वर्त्ताने वाले! (**सुषुम्ना**) उत्तम सुख से युक्त तथा (**सिन्धुवाहसा**) नदियों को प्राप्त कराने वालो! (**माध्वी**) मधुर गति से युक्त और (**अश्विना**) शिल्प कार्य्यों के जानने वालो! जैसे (**अहम्**) मैं (**सना**) सदा (**विश्वाः**) सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण करता हूं, वैसे आप दोनों (**अत्यायातम्**) देशों का अतिक्रमण करके आइये और (**मम**) मेरा (**तिरः**) तिरस्कारपूर्वक (**हवम्**) पठित (**श्रुतम्**) सुनिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन विद्वानों से विद्याओं को आप लोग पढ़ो, वे जब जब परीक्षा करें, तब-तब तिरस्कार के साथ वर्त्तमान को धारण करें, जिससे सब को अच्छे प्रकार विद्या प्राप्त होवे॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम्।**

**रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम्॥ ३॥**

**आ। नः। रत्नानि। बिभ्रतौ। अश्विना। गच्छतम्। युवम्। रुद्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। जुषाणा। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**रत्नानि**) रमणीयानि धनानि (**बिभ्रतौ**) धरन्तौ (**अश्विनौ**) विद्यायुक्तौ (**गच्छतम्**) (**युवम्**) युवाम् (**रुद्रा**) दुष्टानां भयङ्करौ (**हिरण्यवर्त्तनी**) यौ हिरण्यं ज्योतिर्वर्त्तयातां तौ (**जुषाणा**) सेवमानौ (**वाजिनीवसू**) यौ वाजिनीमन्नादियुक्तां सामग्रीं वासयतस्तौ (**माध्वी**) मधुरस्वभावौ (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसू हिरण्यवर्त्तनी रत्नानि जुषाणा बिभ्रतौ रुद्राश्विना माध्वी! युवं न आ गच्छतं मम

हवं श्रुतम्॥३॥

**भावार्थः**-त एव भाग्यशालिनो भवेयुर्य आप्तान् विदुष उपगम्याऽऽहूय वा प्रयत्नेन विद्याभ्यासं कृत्वा परीक्षां प्रददति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वाजिनीवसू)** अन्न आदि से युक्त सामग्री को वसाने और **(हिरण्यवर्त्तनी)** सुवर्ण वा ज्योति को वर्त्ताने वाले **(रत्नानि)** रमणीय धनों को **(जुषाणा)** सेवन और **(बिभ्रतौ)** धारण करते हुए **(रुद्रा)** दुष्टों को भय देने वाले **(अश्विना)** विद्या से युक्त **(माध्वी)** मधुरस्वभाव वालो! **(युवम्)** आप दोनों **(नः)** हम लोगों को **(आ)** सब प्रकार से **(गच्छतम्)** प्राप्त होइये और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये॥३॥

**भावार्थः**-वे ही भाग्यशाली होवें, जो यथार्थवक्ता विद्वानों के समीप जाकर वा उनको बुलाकर प्रयत्न से विद्या का अभ्यास कर के परीक्षा देते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता।**

**उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम्॥४॥**

**सुऽस्तुभः। वाम्। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। रथे। वाणीची। आऽहिता। उत। वाम्। ककुहः। मृगः। पृक्षः। कृणोति। वापुषः। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(सुष्टुभः)** शोभनस्तोता **(वाम्)** **(वृषण्वसू)** यौ वृषणौ बलिष्ठान् वासयतस्तौ **(रथे)** **(वाणीची)** वाक् **(आहिता)** स्थापिता **(उत)** **(वाम्)** **(ककुहः)** महान् **(मृगः)** यो मार्ष्टि सः **(पृक्षः)** अन्नम्। **पृक्ष इत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **(कृणोति)** **(वापुषः)** वपुषि भवः **(माध्वी)** **(मम)** **(श्रुतम्)** **(हवम्)**॥४॥

**अन्वयः**-हे वृषण्वसू माध्वी अश्विनौ! यः सुष्टुभो वां रथं रमते येन वाणीच्याहितोत यो वां ककुहो मृगो वापुषः पृक्षः कृणोति तस्य मम च हवं श्रुतम्॥४॥

**भावार्थः**-स एव महान् भवति यो विदुषां सकाशाद्विद्यां सुशीलतां गृह्णाति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वृषण्वसू)** बलिष्ठों को बसाने वाले **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले विद्यायुक्त जनो! जो **(सुष्टुभः)** उत्तम स्तुति करने वाला **(वाम्)** आप दोनों के **(रथे)** रथ में रमता है जिससे **(वाणीची)** वाणी **(आहिता)** स्थापित की गई **(उत)** और जो **(वाम्)** दोनों का **(ककुहः)** बड़ा **(मृगः)** शुद्ध करने वाला और **(वापुषः)** शरीर में हुआ **(पृक्षः)** अन्न को **(कृणोति)** करता है उसके और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये॥४॥

**भावार्थ:**-वही बड़ा होता है जो विद्वानों के समीप से विद्या और सुशीलता को ग्रहण करता है॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता।**

**विभिश्च्यवानमश्विना नि याथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम्॥५॥ १५॥**

**बोधित्ऽमनसा। रथ्या। इषिरा। हवनऽश्रुता। विऽभिः। च्यवानम्। अश्विना। नि। याथः। अद्वयाविनम्। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥५॥**

**पदार्थ:**-(**बोधिन्मनसा**) बोधितं मनो ययोस्तौ (**रथ्या**) रथेषु साधू (**इषिरा**) गन्तारौ (**हवनश्रुता**) हवनं श्रुतं ययोस्तौ (**विभिः**) पक्षिभिस्सह (**च्यवानम्**) पृच्छन्तम् (**अश्विना**) विद्याऽध्यापकोपदेशकौ (**नि**) नितराम् (**याथः**) प्राप्नुथः (**अद्वयाविनम्**) इन्द्रभावरहितम् (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥५॥

**अन्वय:**-हे रथ्येषिरा हवनश्रुता बोधिन्मनसा माध्वी अश्विना! युवमद्वयाविनं विभिश्च्यवानं नि याथो मम हवं च श्रुतम्॥५॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्याः शुद्धान्तःकरणाः प्राप्तशिल्पविद्या निष्कपटा विद्यार्थिनां परीक्षकाः सन्ति ते जगन्मङ्गलकरा भवन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे (**रथ्या**) रथों में श्रेष्ठ (**इषिरा**) चलने वाले (**हवनश्रुता**) आह्वान सुना गया जिनका और (**बोधिन्मनसा**) बोधित मन जिनका ऐसे (**माध्वी**) मधुर स्वभाव वाले (**अश्विना**) विद्या के अध्यापक और उपदेशक! आप दोनों (**अद्वयाविनम्**) द्वन्द्वभाव से रहित (**विभिः**) पक्षियों के साथ (**च्यवानम्**) पूंछते हुए को (**नि**) अत्यन्त (**याथः**) प्राप्त होते हैं और (**मम**) मेरे (**हवम्**) आह्वान को भी (**श्रुतम्**) सुनिये॥५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण वाले, प्राप्त हुई शिल्पविद्या जिनको ऐसे और कपटरहित होकर विद्यार्थियों के परीक्षक हैं, वे जगत् के मङ्गलकारक होते हैं॥५॥

**मनुष्यैः शिल्पविद्या कार्य्याणि साधनीयानीत्याह॥**

मनुष्यों को शिल्पविद्या से कार्य्य सिद्ध करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वां नरा मनोयुजोऽश्वासः प्रुषितप्सवः।**

**वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम्॥६॥**

**आ। वाम्। नरा। मनःऽयुजः। अश्वासः। प्रुषितऽप्सवः। वयः। वहन्तु। पीतये। सह। सुम्नेभिः। अश्विना। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवयोः (**नरा**) नेतारौ (**मनोयुजः**) ये मन इव युञ्जन्ते ते वेगवत्तराः (**अश्वासः**) वेगादयो गुणाः (**प्रुषितप्स्वः**) प्रुषितं दग्धं प्सु इन्धनान्नादिकं यैस्ते (**वयः**) व्याप्तिशीलाः (**वहन्तु**) (**पीतये**) पानाय (**सह**) (**सुम्नेभिः**) सुखैः (**अश्विना**) शिल्पविद्याविदौ (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥६॥

**अन्वयः**-हे माध्वी नराऽश्विना! युवां सुम्नेभिः सह पीतये ये वां मनोयुजः प्रुषितप्स्वो वयोऽश्वासः सन्ति ते यानान्या वहन्तु तदर्थं मम हवं श्रुतम्॥६॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्याः पदार्थविद्यया शिल्पसिद्धानि कार्य्याणि साध्नुवन्तु तर्हि धनवन्तो भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**माध्वी**) मधुर स्वभावयुक्त (**नरा**) नायक (**अश्विना**) शिल्पविद्या के जानने वालो! आप लोगो आप दोनों (**सुम्नेभिः**) सुखों के (**सह**) साथ (**पीतये**) पान के लिये जो (**वाम्**) आप दोनों के (**मनोयुजः**) मन के सदृश युक्त होने वाले अत्यन्त वेगवान् (**प्रुषितप्स्वः**) जलाया ईंधन आदि जिन्होंने ऐसे (**वयः**) व्याप्तिशील (**अश्वासः**) वेग आदि गुण हैं वे वाहनों को (**आ**) सब प्रकार से (**वहन्तु**) पहुंचावें उनके लिये (**मम**) मेरे (**हवम्**) आह्वान को (**श्रुतम्**) सुनिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पदार्थविद्या से शिल्पसिद्ध कार्य्यों को सिद्ध करें तो अधिक धनी होवें॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्।**
**तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम्॥७॥**

**अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम्। तिरः। चित्। अर्यऽया। परि। वर्तिः। यातम्। अदाभ्या। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अश्विनौ**) व्याप्तविद्यौ (**आ**) (**इह**) अस्मिन् संसारे (**गच्छतम्**) (**नासत्या**) अविद्यमानासत्यव्यवहारौ (**मा**) (**वि**) (**वेनतम्**) कामयतम् (**तिरः**) तिरस्कारम् (**चित्**) अपि (**अर्य्यया**) अर्य्यस्य स्त्रिया (**परि**) (**वर्त्तिः**) मार्गम् (**यातम्**) (**अदाभ्या**) अहिंसनीयौ (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे नासत्याऽदाभ्या माध्वी अश्विनौ! युवामिहाऽऽगच्छतमर्य्यया वेनतं तिरश्चिन्मां कुर्य्यातं वर्त्तिः परि यातं मम हवं विश्रुतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषौ! युवां गृहस्थमार्गे वर्त्तित्वा धर्म्येण सन्तानानैश्वर्य्यं चेच्छतम्। अध्यापनपरीक्षे च सदैव कुर्य्यातम्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) नहीं विद्यमान असत्य व्यवहार जिनके ऐसे (**अदाभ्या**) नहीं हिंसा करने योग्य (**माध्वी**) मधुर स्वभाव वाले (**अश्विनौ**) विद्या में व्याप्त! आप दोनों (**इह**) इस संसार में (**आ,**

**गच्छतम्**) आइये तथा (**अर्य्यया**) वैश्य या स्वामी की स्त्री से (**वेनतम्**) कामना करो (**तिरः**) तिरस्कार को (**चित्**) भी (**मा**) मत करो (**वर्त्तिः**) मार्ग को (**परि, यातम्**) सब ओर से प्राप्त होओ और (**मम**) मेरे (**हवम्**) आह्वान को (**वि**) विशेष करके (**श्रुतम्**) सुनो॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषो! आप दोनों गृहस्थ मार्ग में वर्त्ताव करके धर्म्म से सन्तान और ऐश्वर्य की इच्छा करो तथा अध्यापन और परीक्षा सदा ही करो॥७॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर स्त्रीपुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती।**

**अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम्॥८॥**

**अस्मिन्। यज्ञे। अदाभ्या। जरितारम्। शुभः। पती इति। अवस्युम्। अश्विना। युवम्। गृणन्तम्। उप। भूषथः। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**अस्मिन्**) गृहाश्रमाख्ये (**यज्ञे**) सम्यग्गन्तव्ये (**अदाभ्या**) अहिंसनीयौ (**जरितारम्**) स्तोतारम् (**शुभः, पती**) कल्याणकरव्यवहारस्य पालकौ (**अवस्युम्**) आत्मनोऽवं रक्षणमिच्छुं कामयमानं वा (**अश्विना**) ब्रह्मचर्य्येण प्राप्तविद्यौ स्त्रीपुरुषौ (**युवम्**) युवाम् (**गृणन्तम्**) स्तुवन्तम् (**उप**) (**भूषथः**) (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥८॥

**अन्वयः**-हे अदाभ्या माध्वी शुभस्पती अश्विना! युवमस्मिन् यज्ञे जरितारमवस्युं गृणन्तं जनमुपभूषथो मम हवं च श्रुतम्॥८॥

**भावार्थः**-ये स्त्रीपुरुषा गृहाश्रमे वर्त्तमानाः शुभाचरणाः स्तुतिभिः स्तावका गृहकृत्यान्यलङ्कुर्वन्ति। अध्यापनपरीक्षाभ्यां विद्यां चोन्नयन्ति त एवेह प्रशंसिता भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अदाभ्या**) नहीं हिंसा करने योग्य (**माध्वी**) मधुर स्वभाव वाले (**शुभः, पती**) कल्याणकारक व्यवहार के पालन करने वाले (**अश्विना**) ब्रह्मचर्य्य से प्राप्त हुई विद्या जिनको ऐसे स्त्री पुरुषो! (**युवम्**) आप दोनों (**अस्मिन्**) इस गृहाश्रम नामक (**यज्ञे**) उत्तम प्रकार प्राप्त होने योग्य यज्ञ में (**जरितारम्**) स्तुति करने और (**अवस्युम्**) अपने कल्याण की इच्छा वा कामना करने वाले (**गृणन्तम्**) स्तुति करते हुए जन को (**उप, भूषथः**) शोभित करते हो (**मम**) मेरे (**हवम्**) आह्वान को भी (**श्रुतम्**) सुनिये॥८॥

**भावार्थः**-जो स्त्री पुरुष गृहाश्रम में वर्त्तमान उत्तम आचरण वाले स्तुतियों से स्तुति करने वाले गृह के कृत्यों को शोभित करते हैं तथा अध्यापन और परीक्षा से विद्या का उन्नति करते हैं, वे ही इस जगत् में प्रशंसित होते हैं॥८॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अभू॑दु॒षा रुश॑त्पशु॒राग्निर॑धाय्यृ॒त्विय॑:।**

**अयो॑जि वां वृषण्वसू॒ रथो॑ दस्रा॒वम॑र्त्यो॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥९॥१६॥**

**अभू॑त्। उ॒षाः। रुश॑त्ऽपशुः। आ। अ॒ग्निः। अ॒धा॒यि॒। ऋ॒त्विय॑:। अयो॑जि। वा॒म्। वृ॒ष॒ण्व॒सू॒ इति॑ वृष॒ण्ऽव॒सू॒। रथ॑:। द॒स्रौ॒। अम॑र्त्यः। माध्वी॒ इति॑। मम॑। श्रु॒तम्। हव॑म्॥९॥**

**पदार्थः-(अभूत्)** भवेत् **(उषाः)** प्रातर्वेलेव **(रुशत्पशुः)** पालितः पशुर्येन सः। **रुशदिति पशुनामसु पठितम्।** (निघं०४.३) **(आ) (अग्निः)** पावकः **(अधायि)** ध्रियते **(ऋत्वियः)** ऋतुयाजकः **(अयोजि)** योज्यते **(वाम्)** युवयोः **(वृषण्वसू)** यौ वृषणौ बलिष्ठौ देहौ वासयतस्तौ **(रथः)** यानम् **(दस्रौ)** दुःखनाशकौ **(अमर्त्यः)** अविद्यमाना मर्त्या यस्मिन् सः **(माध्वी) (मम) (श्रुतम्) (हवम्)**॥९॥

**अन्वयः**-हे वृषण्वसू दस्रौ माध्वी स्त्रीपुरुषौ! ययोर्वां रुशत्पशुर्ऋत्वियोऽग्निराऽधाय्युषा अभूत्। अमर्त्यो रथोऽयोजि तौ युवां मम हवं श्रुतम्, हे पते! या पत्न्युषा इवाभूत्तां सततं प्रसादय॥९॥

**भावार्थः**-सदा स्त्रीपुरुषावृतुगामिनौ भवेतां सर्वदा शरीरस्याऽऽरोग्यं पुष्टिं च सम्पादयेतां विद्योन्नतिञ्च विधायाऽऽनन्दमुन्नयतामिति॥९॥

अत्राश्विविद्वद्स्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चसप्ततितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वृषण्वसू)** बलिष्ठ दो देहों को बसाने और **(दस्रौ)** दुःख के नाश करने वाले **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले स्त्री-पुरुषो! जिन **(वाम्)** आप दोनों को **(रुशत्पशुः)** पाला पशु जिसने वह **(ऋत्वियः)** ऋतु-ऋतु में यज्ञ कराने वाला **(अग्निः)** अग्नि **(आ, अधायि)** स्थापन किया जाता है और **(उषाः)** प्रातःकाल के सदृश **(अभूत्)** होवे और **(अमर्त्यः)** नहीं विद्यमान मनुष्य जिसमें ऐसा **(रथः)** वाहन **(अयोजि)** युक्त किया जाता वे आप दोनों **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये और हे स्त्री के पति! जो पत्नी प्रातःकाल के सदृश होवे, उसको निरन्तर प्रसन्न करो॥९॥

**भावार्थः**-सदा स्त्री-पुरुष ऋतुगामी होवें, सदा शरीर के आरोग्य और पुष्टि को करें तथा विद्या की उन्नति करके आनन्द की उन्नति करें॥९॥

इस सूक्त में अश्विपदवाच्य विद्वान्, स्त्री-पुरुष के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पचहत्तरवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य षट्सप्ततितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥***

अब पाँच ऋचा वाले छहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर स्त्री-पुरुष कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।**
**अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ॥ १॥**

**आ। भाति। अग्निः। उषसाम्। अनीकम्। उत्। विप्राणाम्। देवऽयाः। वाचः। अस्थुः। अर्वाञ्चा। नूनम्। रथ्या। इह। यातम्। पीपिऽवांसम्। अश्विना। घर्मम्। अच्छ॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**भाति**) (**अग्निः**) सूर्य्यरूपेण परिणतः (**उषसाम्**) प्रभातवेलानाम् (**अनीकम्**) सैन्यम् (**उत्**) (**विप्राणाम्**) मेधाविनाम् (**देवयाः**) या देवान् विदुषो यान्ति ताः (**वाचः**) वाण्यः (**अस्थुः**) सन्ति (**अर्वाञ्चा**) यावर्वागञ्चतो गच्छतस्तौ (**नूनम्**) निश्चितम् (**रथ्या**) रथेषु यानेषु साधू (**इह**) (**यातम्**) (**पीपिवांसम्**) सम्यग्वर्धमानम् (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषौ (**घर्मम्**) गृहाश्रमकृत्याख्यं यज्ञम् (**अच्छ**) सम्यक्॥ १॥

**अन्वयः**-हे रथ्याऽर्वाञ्चाऽश्विना! या विप्राणां देवया वाचोऽस्थुर्यं उषसामनीकमग्निरुद्भाति तैरिह पीपिवांसं घर्मं नूनमच्छाऽऽयातम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे धीमन्तो! यथा विद्युदादिरग्निर्बहूनि कार्याणि साध्नोति तथैव स्त्रीपुरुषौ मिलित्वा गृहकृत्यानि साध्नुयाताम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**रथ्या**) वाहनों में प्रवीण (**अर्वाञ्चा**) नीचे चलने वाले (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषो! जो (**विप्राणाम्**) बुद्धिमानों की (**देवयाः**) विद्वानों को प्राप्त होने वाली (**वाचः**) वाणियां (**अस्थुः**) हैं और जो (**उषसाम्**) प्रभात वेलाओं की (**अनीकम्**) सेनारूप (**अग्नि**) सूर्य्यरूप से परिणत हुआ अग्नि (**उत्**) ऊपर को (**भाति**) प्रकाशित होता है उनसे (**इह**) इस संसार में (**पीपिवांसम्**) उत्तम प्रकार बढ़ते हुए (**घर्मम्**) गृहाश्रम के कृत्य नामक यज्ञ को (**नूनम्**) निश्चित (**अच्छ**) अच्छे प्रकार (**आ**) सब प्रकार से (**यातम्**) प्राप्त होओ॥ १॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमान् जनो! जैसे बिजुली आदि अग्नि बहुत कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही स्त्रीपुरुष मिलकर गृहकृत्यों को सिद्ध करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह।**
**दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शंभविष्ठा॥ २॥**

न। संस्कृतम्। प्र। मिमीतः। गमिष्ठा। अन्ति। नूनम्। अश्विना। उपऽस्तुता। इह। दिवा। अभिऽपित्वे। अवसा। आऽगमिष्ठा। प्रति। अवर्त्तिम्। दाशुषे। शम्ऽभविष्ठा॥ २॥

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**संस्कृतम्**) कृतसंस्कारम् (**प्र**) (**मिमीतः**) जनयतः (**गमिष्ठा**) अतिशयेन गन्तारौ (**अन्ति**) समीपे (**नूनम्**) निश्चितम् (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषौ (**उपस्तुता**) उपगतप्रशंसया कीर्त्तितौ (**इह**) अस्मिन् (**दिवा**) दिवसेन (**अभिपित्वे**) अभितः प्राप्ते (**अवसा**) रक्षणाद्येन (**आगमिष्ठा**) समन्तादतिशयेन गन्तारौ (**प्रति**) (**अवर्त्तिम्**) अमार्गम् (**दाशुषे**) दात्रे (**शम्भविष्ठा**) अतिशयेन सुखस्य भावयितारौ॥ २॥

**अन्वयः**-हे गमिष्ठा शम्भविष्ठा नूनमुपस्तुताऽश्विनेह संस्कृतं न प्र मिमीतः। अभिपित्वेऽवसाऽवर्तिं प्रति मिमीतो दाशुषे दिवान्त्यागमिष्ठा भवेताम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये गृहस्थाः कृतसंस्कारान् पदार्थान् वृथा न हिंसन्ति ते श्रीमन्तो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**गमिष्ठा**) अतिशय चलने वाले (**शम्भविष्ठा**) अतिशय सुखकारक और (**नूनम्**) निश्चित (**उपस्तुता**) प्राप्त हुई प्रशंसा से कीर्त्ति को पाये हुए (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषो! आप (**इह**) इस संसार में (**संस्कृतम्**) किया संस्कार जिसका उसको (**न**) नहीं (**प्र, मिमीतः**) उत्पन्न करते हो और (**अभिपित्वे**) सब ओर से प्राप्त होने पर (**अवसा**) रक्षण आदि से (**अवर्त्तिम्**) अमार्ग के (**प्रति**) प्रतिकूल उत्पन्न करते हो और (**दाशुषे**) दान करने वाले के लिये (**दिवा**) दिवस से (**अन्ति**) समीप में (**आगमिष्ठा**) चारों ओर अतिशय चलने वाले होओ॥ २॥

**भावार्थः**-जो गृहस्थ जन-किया है संस्कार जिनका ऐसे पदार्थों का वृथा नहीं नाश करते हैं, वे लक्ष्मीवान् होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य।**
**दिवा नक्तमवसा शंतमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान॥ ३॥**

उत। आ। यातम्। सम्ऽगवे। प्रातः। अह्नः। मध्यंदिने। उत्ऽइता। सूर्यस्य। दिवा। नक्तम्। अवसा। शम्ऽतमेन। न। इदानीम्। पीतिः। अश्विना। आ। ततान॥ ३॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**आ**) (**यातम्**) आगच्छतम् (**सङ्गवे**) सङ्गच्छन्ति गावो यस्मिन् सायं समये तस्मिन् (**प्रातः**) प्रभाते (**अहः**) दिवसस्य (**मध्यन्दिने**) मध्याह्ने (**उदिता**) उदिते (**सूर्य्यस्य**) (**दिवा**) दिवसे

**(नक्तम्)** रात्रौ **(अवसा)** रक्षणादिना **(शन्तमेन)** अतिशयितेन सुखेन **(न) (इदानीम्) (पीतिः)** पानम् **(अश्विना)** व्याप्तसुखौ **(आ) (ततान)** आतनोति॥३॥

**अन्वयः**-हे अश्विना स्त्रीपुरुषौ! युवमह्नो मध्यन्दिने प्रातः सूर्य्यस्योदिताऽह्नः सङ्गवे च दिवा नक्तं शन्तमेनावसा सहाऽऽयातम्। उत युवयोर्या पीतिराऽऽततान तामिदानीन्न हिंस्यातम्॥३॥

**भावार्थः**-कृतविवाहाः स्त्रीपुरुषाः प्रातर्मध्यसायंसमयेष्वहर्निशं कल्याणकरैः कर्म्मभिः सुखानि प्राप्नुवन्तु कदाचिदालस्यं मा कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** व्याप्तसुख स्त्रीपुरुषो! तुम **(अह्नः)** दिवस के **(मध्यन्दिने)** मध्याह्न भाग में और **(प्रातः)** प्रभातसमय में **(सूर्य्यस्य)** सूर्यमण्डल के **(उदिता)** उदय होने में और दिन के **(सङ्गवे)** सायं समय में जिसमें गौएँ संगत होतीं अर्थात् चर के आतीं **(दिवा)** दिन **(नक्तम्)** रात्रि **(शन्तमेन)** अत्यन्त सुख से **(अवसा)** रक्षा आदि के साथ **(आ, यातम्)** आओ **(उत)** और तुम दोनों की जो **(पीतिः)** पिआवट **(आ, ततान)** विस्तृत होती है उसको **(इदानीम्)** अब **(न)** नहीं नाश करो॥३॥

**भावार्थः**-किया विवाह जिन्होंने वे स्त्री-पुरुष प्रातः, मध्याह्न, सायं समयों में दिन-रात्रि को कल्याण करने वाले कर्म्मों को सुखों से प्राप्त हों, कभी आलस्य मत करें॥३॥

**पुनर्गृहस्थैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर गृहस्थों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम्।**
**आ नो दिवो बृहतः पर्वतादाद्भ्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता॥४॥**

**इदम्। हि। वाम्। प्रऽदिवि। स्थानम्। ओकः। इमे। गृहाः। अश्विना। इदम्। दुरोणम्। आ। नः। दिवः। बृहतः। पर्वतात्। आ। अत्ऽभ्यः। यातम्। इषम्। ऊर्जम्। वहन्ता॥४॥**

**पदार्थः**-**(इदम्) (हि)** यतः **(वाम्)** युवयोः **(प्रदिवि)** प्रकृष्टप्रकाशे **(स्थानम्)** तिष्ठन्ति यस्मिन् **(ओकः)** गृहम् **(इमे) (गृहाः)** ये गृह्णन्ति ते गृहस्थाः **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषौ **(इदम्) (दुरोणम्)** गृहम् **(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्मानस्माकं वा **(दिवः)** प्रकाशात् **(बृहतः)** महतः **(पर्वतात्)** मेघात् **(आ) (अद्भ्यः) (यातम्)** प्राप्नुतम् **(इषम्)** अन्नम् **(ऊर्जम्)** पराक्रमम् **(वहन्ता)**॥४॥

**अन्वयः**-हे दिवो बृहतः पर्वतादद्भ्य इषमूर्जमाऽऽवहन्ताश्विना! न इदं दुरोणमाऽऽयातं हीदं वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहाः प्राप्नुवन्ति तानायातम्॥४॥

**भावार्थः**-ये गृहस्था गृहाश्रमकर्माण्यलङ्कुर्वन्ति ते सर्वाणि सुखानि प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** प्रकाश से **(बृहतः)** बड़े **(पर्वतात्)** मेघ और **(अद्भ्यः)** जलों से **(इषम्)** अन्न और **(ऊर्जम्)** पराक्रम को **(आ)** सब प्रकार से **(वहन्ता)** प्राप्त करने वाले **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषो! **(नः)** हम लोगों को वा हम लोगों के **(इदम्)** इस **(दुरोणम्)** गृह को **(आ)** सब प्रकार से **(यातम्)** प्राप्त

होओ **(हि)** जिससे **(इदम्)** यह **(वाम्)** आप दोनों के **(प्रदिवि)** उत्तम प्रकाश में **(स्थानम्)** स्थित होते हैं जिस में उस **(ओकः)** गृह को **(इमे)** ये **(गृहाः)** ग्रहण करने वाले गृहस्थ जन प्राप्त होते हैं, उनको सब प्रकार से प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-जो गृहस्थ जन गृहाश्रम के कर्म्मों को पूर्ण रीति से करते हैं, वे सब सुखों को प्राप्त होते हैं॥४॥

**मनुष्यैः पुरुषार्थविद्वत्सङ्गेनैश्वर्य्यं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ और विद्वानों के संग से ऐश्वर्य्य को प्राप्त करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम।**
**आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यमृ॒ता सौभ॑गानि॥५॥१७॥**

**सम्। अ॒श्विनोः। अव॑सा। नूत॑नेन। म॒यः॒ऽभुवा॑। सु॒ऽप्रनी॑ती। ग॒मे॒म॒। आ। नः॒। र॒यिम्। व॒ह॒त॒म्। आ। उ॒त। वी॒रान्। आ। विश्वा॑नि। अ॒मृ॒ता। सौभ॑गानि॥५॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** सम्यक् **(अश्विनोः)** द्यावापृथिव्योरिव राजोपदेशकयोः **(अवसा)** अन्नादिना। **अव इत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **(नूतनेन)** नवीनेन **(मयोभुवा)** सुखं भावुकेन **(सुप्रणीती)** शोभनयोत्तमया नीत्या **(गमेम)** प्राप्नुयाम **(आ)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(वहतम्)** प्रापयतम् **(आ)** **(उत)** अपि **(वीरान्)** शौर्यादिगुणोपेतान् **(आ)** **(विश्वानि)** सर्वाणि **(अमृता)** स्वादून्युदकानि **(सौभगानि)** सुभगानामुत्तमधनाद्यैश्वर्याणां भावरूपाणि॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽश्विनोर्नूतनेनावसा मयोभुवा सुप्रणीती नो रयिमाऽऽवहतं वीरानुत विश्वान्यमृता सौभगान्या वहतं वयं समाऽऽगमेम तथा यूयमप्युपगच्छत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य आप्तोपदेशेन राजन्यायव्यवस्थया सह वर्त्तित्वा न्यायेनोत्तमपुरुषानखिलान्यैश्वर्याणि च प्राप्नुवन्ति तेऽभीष्टसिद्धा भवन्तीति॥५॥

अत्राग्न्यश्विराजोपदेशकगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्सप्ततितमं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अश्विनोः)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश राजा और उपदेशक के **(नूतनेन)** नवीन **(अवसा)** अन्न आदि और **(मयोभुवा)** सुखकारक से और **(सुप्रणीती)** उत्तम नीति से **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** धन को **(आ)** सब प्रकार **(वहतम्)** प्राप्त कराते हुए को **(वीरान्)** वीरों को **(उत)** और **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(अमृता)** स्वादु जलों और **(सौभगानि)** उत्तम धनादि ऐश्वर्यों के भावरूपों को **(आ)** सब प्रकार प्राप्त कराते हुए को हम लोग **(सम्, आ, गमेम)** उत्तम प्रकार से प्राप्त होवें, वैसे आप लोग भी प्राप्त होओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग यथार्थवक्ताओं के उपदेश से राजा की न्यायव्यवस्था के साथ वर्त्ताव करके न्याय से उत्तम पुरुषों को और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को प्राप्त होते हैं, वे अभीष्ट पदार्थों की सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, अश्वि, राजा और उपदेशक के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छहत्तरवां सूक्त और सत्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तसप्ततितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ३, ४ त्रिष्टुप्। ५ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले सतहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः।**
**प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः॥ १॥**

**प्रातःऽयावाना। प्रथमा। यजध्वम्। पुरा। गृध्रात्। अररुषः। पिबातः। प्रातः। हि। यज्ञम्। अश्विना। दधाते इति। प्र। शंसन्ति। कवयः। पूर्वऽभाजः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रातर्यावाणा**) यौ सूर्य्योषसौ प्रातर्यातस्तौ (**प्रथमा**) आदिमौ विस्तीर्णस्वरूपौ (**यजध्वम्**) सङ्गच्छध्वम् (**पुरा**) पुरस्तात् (**गृध्रात्**) अभिकाङ्क्षया (**अररुषः**) अदातुः (**पिबातः**) पिबतः (**प्रातः**) (**हि**) (**यज्ञम्**) राज्यपालनम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**दधाते**) (**प्र**) (**शंसन्ति**) प्रशंसन्ति (**कवयः**) मेधाविनः (**पूर्वभाजः**) ये पूर्वान् भजन्ति ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यथा पुरा प्रातर्यावाणा प्रथमाऽश्विना यजध्वं तथा तावररुषो गृध्राद् रसं पिबातः प्रातर्हि यज्ञं दधाते तौ पूर्वभाजः कवयः प्र शंसन्ति तथा तौ यूयं विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यौ राजोपदेशकौ दिवास्वापरहितौ तथा यौ विद्वांसः तत्सङ्गेन यूयं काङ्क्षासिद्धिं कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! तुम जैसे (**पुरा**) पहिले (**प्रातर्यावाणा**) जो सूर्य्य और उषा प्रातर्वेला में चलते हैं उन (**प्रथमा**) प्रथम और विस्तीर्ण स्वरूप वालों को और (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनों को (**यजध्वम्**) मिलाओ और (**अररुषः**) नहीं देने वाले की (**गृध्रात्**) अभिकांक्षा से रस को (**पिबातः**) पीते और (**प्रातः हि**) प्रातःकाल ही (**यज्ञम्**) राज्यपालन को (**दधाते**) धारण करते हैं उनकी (**पूर्वभाजः**) पूर्वजनों के आदर करने वाले (**कवयः**) बुद्धिमान् जन (**प्र, शंसन्ति**) प्रशंसा करते हैं, वैसे उनको आप लोग जानो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजा और उपदेशक जन दिन में शयनरहित और जिनकी विद्वान् जन स्तुति करते हैं, उनके सत्सङ्ग से आप लोग कांक्षासिद्धि करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम्।**
**उतान्यो अस्मद्यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान्॥ २॥**

**प्रातः। यजध्वम्। अश्विना। हिनोत। न। सायम्। अस्ति। देवऽयाः। अजुष्टम्। उत। अन्यः। अस्मत्। यजते। वि। च। आवः। पूर्वःऽपूर्वः। यजमानः। वनीयान्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**प्रातः**) प्रभातसमये (**यजध्वम्**) सङ्गच्छध्वम् (**अश्विना**) सूर्योषसौ (**हिनोत**) वर्धयत (**न**) निषेधे (**सायम्**) सन्ध्यासमयः (**अस्ति**) (**देवयाः**) ये देवान् दिव्यगुणान् विदुषो यान्ति (**अजुष्टम्**) सेवेध्वम् (**उत**) अपि (**अन्यः**) (**अस्मत्**) (**यजते**) सङ्गच्छते (**वि**) (**च**) (**आवः**) रक्षति (**पूर्वःपूर्वः**) आदिम आदिमः (**यजमानः**) यो यजते (**वनीयान्**) अतिशयेन विभाजकः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं प्रातरश्विना यजध्वं हिनोत यत्र न सायमस्ति तत्र मे देवयास्तानजुष्टं योऽन्योऽस्मद्यजते यश्च व्यावः स उत पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान् भवति तमपि सत्कुरुत॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः प्रत्यहं रात्रेश्चतुर्थे याम उत्थाय यथा नियमेन द्यावापृथिव्यौ वर्त्तेते तथा वर्त्तित्वा सर्वे रक्षितव्याः॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**प्रातः**) प्रभातकाल में (**अश्विना**) सूर्य्य और उषा को (**यजध्वम्**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये और (**हिनोत**) वृद्धि कीजिये जहां (**न**) नहीं (**सायम्**) सन्ध्याकाल (**अस्ति**) है वहाँ जो (**देवयाः**) श्रेष्ठ गुण और विद्वानों को प्राप्त होने वाले हैं उनका (**अजुष्टम्**) सेवन करिये और जो (**अन्यः**) अन्य (**अस्मत्**) हम लोगों से (**यजते**) मिलता है (**च**) और जो (**वि, आवः**) विशेष रक्षा करता है वह (**उत**) भी (**पूर्वःपूर्वः**) पहिला पहिला (**यजमानः**) यज्ञ करने वाला (**वनीयान्**) अतिशय विभाग करने वाला होता है, उसका भी सत्कार करो॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि प्रतिदिन रात्रि के चोथे शेष प्रहर में उठकर जैसे नियम से अन्तरिक्ष और पृथिवी वर्त्तमान हैं, वैसे वर्त्ताव करके सब की रक्षा करें॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**हिरण्यत्वङ् मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम्।**
**मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा॥ ३॥**

**हिरण्यऽत्वक्। मधुऽवर्णः। घृतऽस्नुः। पृक्षः। वहन्। आ। रथः। वर्तते। वाम्। मनःऽजवाः। अश्विना। वातऽरंहाः। येन। अतिऽयाथः। दुःऽइतानि। विश्वा॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**हिरण्यत्वक्**) हिरण्यं तेजः सुवर्णं चेव त्वगुपरिवर्णं यस्य सः। (**मधुवर्णः**) मधुर्द्रष्टव्यो वर्णो यस्य सः (**घृतस्नुः**) यो घृतमुदकं स्नाति (**पृक्षः**) अन्नादिकम् (**वहन्**) प्राप्नुवन् प्रापयन् वा (**आ**)

**(रथः)** विमानादियानम् **(वर्त्तते)** **(वाम्)** युवयोः **(मनोजवाः)** मन इव वेगवन्तः **(अश्विना)** शिल्पविद्याविदौ **(वातरंहाः)** वायुवद्वेगवन्तोऽग्न्यादयः **(येन)** रथेन **(अतियाथः)** अत्यन्तं गच्छन्तः **(दुरितानि)** दुःखैनैतुं प्राप्तुं योग्यानि स्थानान्तराणि **(विश्वा)** सर्वाणि॥३॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! वां हिरण्यत्वङ् मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन् रथ आ वर्त्तते यं मनोजवा वातरंहा वहन्ति येन विश्वा दुरितान्यतियाथस्तं युवां रचयेतम्॥३॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या विमानादियानान्यग्न्युदकादिभिश्चालयेयुस्तर्ह्येतानि मनोवद्वायुवच्छीघ्रं गत्वाऽऽगच्छेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** शिल्पविद्या के जानने वालो! **(वाम्)** आप दोनों का **(हिरण्यत्वक्)** तेज और सुवर्ण के सदृश त्वचा पर का वर्ण और **(मधुवर्णः)** देखने योग्य वर्ण जिसका वह **(घृतस्नुः)** जल को शुद्ध करने वाला **(पृक्षः)** अन्न आदि को **(वहन्)** प्राप्त होता वा प्राप्त कराता हुआ **(रथः)** विमान आदि वाहन को **(आ, वर्त्तते)** सब प्रकार वर्त्तमान है और जिसको **(मनोजवाः)** मन के सदृश वेग वाले **(वातरंहाः)** वायु के सदृश वेगयुक्त अग्नि आदि पदार्थ प्राप्त होते हैं और **(येन)** जिस रथ से **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(दुरितानि)** दुःख से प्राप्त होने योग्य स्थानान्तरों को **(अतियाथः)** अत्यन्त प्राप्त होते हैं, उसको आप दोनों रचिये॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विमानादिकों को अग्नि और जलादिकों से चलावें तो वे विमान आदि मन और वायु के सदृश शीघ्र जा कर लौट आवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे।**

**स तोकमस्य पीपरच्छमीभिरनूर्ध्वभासः सदमित्तुतुर्यात्॥४॥**

**यः। भूयिष्ठम्। नासत्याभ्याम्। विवेष। चनिष्ठम्। पित्वः। ररते। विऽभागे। सः। तोकम्। अस्य। पीपरत्। शमीभिः। अनूर्ध्वऽभासः। सदम्। इत्। तुतुर्यात्॥४॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(भूयिष्ठम्)** अतिशयेन बहु **(नासत्याभ्याम्)** अविद्यमानासत्याभ्याम् **(विवेष)** वेवेष्टि **(चनिष्ठम्)** अतिशयेनान्नम् **(पित्वः)** अन्नस्य **(ररते)** राति ददाति **(विभागे)** **(सः)** **(तोकम्)** अपत्यम् **(अस्य)** **(पीपरत्)** पालयेत् **(शमीभिः)** कर्म्मभिः **(अनूर्ध्वभासः)** न ऊर्द्धवा भासो दीप्तिर्यस्य **(सदम्)** प्राप्तं दुःखम् **(इत्)** **(तुतुर्यात्)** हिंस्यात्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नासत्याभ्यां शमीभिर्भूयिष्ठं चनिष्ठं विवेष पित्वो विभागे ररते सोऽनूर्ध्वभासोऽस्य तोकं पीपरत् स इत्सदं तुतुर्यात्॥४॥

**भावार्थः**-येऽग्न्युदकाभ्यां बहूनि कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते जगतो रक्षणं कृत्वा सर्वं विषादं हन्तुमर्हन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(नासत्याभ्याम्)** नहीं विद्यमान असत्य जिनके उनसे **(शचीभिः)** कर्म्मों के द्वारा **(भूयिष्ठम्)** अतीव बहुत **(चनिष्ठम्)** अतिशय अन्न को **(विवेष)** व्याप्त होता है और **(पित्वः)** अन्न के **(विभागे)** विभाग में **(ररते)** देता है **(सः)** वह **(अनूर्ध्वभासः)** नहीं ऊपर कान्तियां जिसकी **(अस्य)** इसके **(तोकम्)** सन्तान का **(पीपरत्)** पालन करे वह **(इत्)** ही **(सदम्)** प्राप्त दुःख का **(तुतुर्यात्)** नाश करे॥४॥

**भावार्थः**-जो अग्नि और जल से बहुत कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे जगत् का रक्षण करके सम्पूर्ण दुःख के नाश करने योग्य हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**

**आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि॥५॥१८॥**

**सम्। अश्विनोः। अवसा। नूतनेन। मयःऽभुवा। सुऽप्रनीती। गमेम। आ। नः। रयिम्। वहतम्। आ। उत। वीरान्। आ। विश्वानि। अमृता। सौभगानि॥५॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** एकीभावे **(अश्विनोः)** अग्न्युदकयोस्सकाशात् **(अवसा)** रक्षणादिना **(नूतनेन)** **(मयोभुवा)** सुखसाधकेन **(सुप्रणीती)** शोभनया नीत्या **(गमेम)** प्राप्नुयाम **(आ)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(वहतम्)** प्रापयन्तम् **(आ)** **(उत)** अपि **(वीरान्)** शौर्यादिगुणोपेतान् **(आ)** **(विश्वानि)** सर्वाणि **(अमृता)** उदकानि सुखकराणि **(सौभगानि)** शोभनैश्वर्य्याणि॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमश्विनोर्नूतनेन मयोभुवऽवसा सुप्रणीती नो रयिमाऽऽवहतं नो वीरानुत विश्वान्यमृता सौभगान्यावहतं समाऽऽगमेम तथैतानि यूयमपि समागच्छध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाप्ताः सर्वैः सह वर्त्तेरन् तथैतैः सर्वैर्वर्त्तितव्यमिति॥५॥

अत्राश्विविद्वद्राजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तसप्ततितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(अश्विनोः)** अग्नि और जल के समीप से **(नूतनेन)** नवीन **(मयोभुवा)** सुख के साधक **(अवसा)** रक्षण आदि और **(सुप्रणीती)** श्रेष्ठ नीति से **(नः)** हम अपने लिये **(रयिम्)** धन को **(आ, वहतम्)** प्राप्त कराते हुए को और हमारे लिये **(वीरान्)** शूरता आदि गुणों से युक्त पुरुषों को **(उत)** और **(विश्वानि)** संपूर्ण **(अमृता)** जलों के सदृश सुखकारक **(सौभगानि)** सुन्दर

ऐश्वर्यों को प्राप्त कराते हुए को **(सम्, आ, गमेम)** मिलें, वैसे उनको आप लोग भी **(आ)** उत्तम प्रकार मिलिये॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यथार्थवक्ता जन सब के साथ वर्त्ताव करें वैसे इन सब लोगों को वर्त्ताव करना चाहिये॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, जल, विद्वान् और राजा के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सतहत्तरवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्याष्टसप्ततितमस्य सूक्तस्य सप्तवध्रिरात्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ३ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ७, ८, ९ निचृदनुष्टुप्। ६ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।**

***पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब नव ऋचा वाले अठहत्तरवें सूक्त का आरम्भ किया है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

### अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥ १॥

**अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अश्विनौ**) वायूदके इवोपदेष्टृयुपदेश्यौ (**आ**) (**इह**) अस्मिन् संसारे (**गच्छतम्**) (**नासत्या**) सत्यव्यवहारयुक्तौ (**मा**) निषेधे (**वि**) विरोधे (**वेनतम्**) कामयेथाम् (**हंसाविव**) हंसवत् (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) निष्पन्नान् पदार्थान् (**उप**)॥१॥

**अन्वयः**-हे नासत्याऽश्विनौ! युवामिह हंसाविवाऽऽगच्छतं सुताननुपाऽऽपततं मा वि वेनतं विरुद्धं मा कामयेथाम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विमानेन हंसवदन्तरिक्षे गत्वाऽऽगत्य विरुद्धाचरणं त्यक्त्वा सत्यं कामयन्ते ते बहुसुखं लभन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) सत्य व्यवहार से युक्त तथा (**अश्विनौ**) वायु और जल के सदृश उपदेश देने वा ग्रहण करने वाले! आप दोनों (**इह**) इस संसार में (**हंसाविव**) दो हंसों के सदृश (**आ, गच्छतम्**) आइये और (**सुतान्**) उत्पन्न हुए पदार्थों के (**उप**) समीप (**आ**) सब प्रकार (**पततम्**) प्राप्त हूजिये तथा (**मा, वि, वेनतम्**) विरुद्ध कामना मत कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विमान से हंस के सदृश अन्तरिक्ष में जा आकर विरुद्ध आचरण का त्याग करके सत्य की कामना करते हैं, वे बहुत सुख को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥ २॥

**अश्विना। हरिणौऽइव। गौरौऽइव। अनु। यवसम्। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥**

**पदार्थः**-(**अश्विना**) यजमानर्त्विजौ (**हरिणाविव**) यथा हरिणौ धावतः (**गौराविव**) यथा गौरौ मृगौ धावतः (**अनु**) (**यवसम्**) सोमलताम् (**हंसाविव**) (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) निष्पन्नानैश्वर्य्यादीन् (**उप**)॥२॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! युवां हंसाविव सुतानुपाऽऽपततं यवसमनु हरिणाविव गौराविवाऽऽपततम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये जलविद्युतौ साध्नुवन्ति ते हरिणवत्सद्यो गन्तुमर्हन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) यजमान और यज्ञ कराने वाले आप दोनों (**हंसाविव**) दो हंसों के सदृश (**सुतान्**) उत्पन्न हुए ऐश्वर्य्य आदिकों के (**उप**) समीप (**आ, पततम्**) आइये तथा (**यवसम्**) सोमलता के (**अनु**) पश्चात् (**हरिणाविव**) जैसे हरिण दौड़ते हैं, वैसे और (**गौराविव**) जैसे दो मृग दौड़ते हैं, वैसे आइये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य जल और बिजुली को सिद्ध करते हैं, वे हरिण के सदृश शीघ्र जाने के योग्य हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥३॥**

**अश्विना। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू। जुषेथाम्। यज्ञम्। इष्टये। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥३॥**

**पदार्थः**-(**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**वाजिनीवसू**) यौ विज्ञानक्रियां वासयतस्तौ (**जुषेथाम्**) (**यज्ञम्**) विज्ञानसङ्गतिमयम् (**इष्टये**) इष्टसुखप्राप्तये (**हंसाविव**) (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) पुत्रवद्वर्त्तमानान् शिक्षणीयान् शिष्यान् (**उप**)॥३॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसू अश्विना! युवामिष्टये यज्ञमा जुषेथां हंसाविव सुतानुप पततम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। उपदेशकाः सर्वान् शिक्षणीयान् मनुष्यान् पुत्रवन्मत्वा सर्वत्र भ्रमित्वा सत्योपदेशेन कृतकृत्यान् कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे (**वाजिनीवसू**) विज्ञानक्रिया को वसाने वाले (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! आप लोग (**इष्टये**) इष्ट सुख की प्राप्ति के लिये (**यज्ञम्**) विज्ञान की संगतिमय यज्ञ का (**आ**) सब प्रकार से (**जुषेथाम्**) सेवन करिये तथा (**हंसाविव**) दो हंसों के समान (**सुतान्**) पुत्र के सदृश वर्त्तमान शिक्षा करने योग्य शिष्यों के (**उप**) समीप (**पततम्**) प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। उपदेशक जन सम्पूर्ण शिक्षा करने योग्य मनुष्यों को पुत्र के सदृश मान कर और सब जगह भ्रमण कर के सत्य उपदेश से कृतकृत्य करें॥३॥

**पुनः स्त्रीपुरुषैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर स्त्रीपुरुष क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अत्रिर्यद्वामवरोहन्नृबीसमजोहवीन्नाधमानेव योषा।**
**श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेनागच्छतमश्विना शंतमेन॥४॥१९॥**

**अत्रिः। यत्। वाम्। अवऽरोहन्। ऋबीसम्। अजोहवीत्। नाधमानाऽइव। योषा। श्येनस्य। चित्। जवसा। नूतनेन। आ। अगच्छतम्। अश्विना। शम्ऽतमेन॥४॥**

**पदार्थः**-(**अत्रिः**) अविद्यमानत्रिविधदुःखः (**यत्**) यः (**वाम्**) युवाम् (**अवरोहन्**) अवरोहं कुर्वन् (**ऋबीसम्**) सरलम् (**अजोहवीत्**) भृशमाह्वयति (**नाधमानेव**) याचमानेव (**योषा**) (**श्येनस्य**) (**चित्**) अपि (**जवसा**) वेगेन (**नूतनेन**) (**आ**) (**अगच्छतम्**) गच्छतम् (**अश्विना**) सूर्य्याचन्द्रमसाविवाध्यापकोपदेशकौ (**शन्तमेन**) अतिशयेन सुखकरेण॥४॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यद्योऽत्रिर्वामवरोहन् योषा नाधमानेव ऋबीसमजोहवीत् तेन सह श्येनस्य नूतनेन **[**शन्तमेन**]** जवसा चिन्मानेनाऽऽगच्छतम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वदनुकरणेन सरलभावं स्वीकृत्य प्रयतन्ते ते सर्वदा सुखिनो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! (**यत्**) जो (**अत्रिः**) त्रिविध दुःखरहित (**वाम्**) आप दोनों को (**अवरोहन्**) प्राप्त होता हुआ (**योषा**) स्त्री (**नाधमानेव**) जो याचना करती उसके समान (**ऋबीसम्**) सरल को (**अजोहवीत**) अत्यन्त आह्वान करता है उसके साथ (**श्येनस्य**) वाज पक्षी के (**नूतनेन**) नवीन (**शन्तमेन**) अतिशय सुखकारक (**जवसा**) वेग के (**चित्**) सदृश मान से (**आ, अगच्छतम्**) आइये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वानों के अनुकरण से सरल स्वभाव को स्वीकार करके प्रयत्न करते हैं, वे सर्वदा सुखी होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्याइव।**
**श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम्॥५॥**

**वि। जिहीष्व। वनस्पते। योनिः। सूष्यन्त्याःऽइव। श्रुतम्। मे। अश्विना। हवम्। सप्तऽवध्रिम्। च। मुञ्चतम्॥५॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**जिहीष्व**) त्यज (**वनस्पते**) (**योनिः**) कारणम् (**सूष्यन्त्याइव**) प्रसवन्त्याः स्त्रिया इव (**श्रुतम्**) (**मे**) मम (**अश्विना**) विद्याव्यापिनावध्यापकपरीक्षकौ (**हवम्**) (**सप्तवध्रिम्**) हतसप्तेन्द्रियम् (**च**) (**मुञ्चतम्**)॥५॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! मे हवं श्रुतं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम्। हे वनस्पते! सूष्यन्त्याइव योनिस्त्वं वि

जिहीष्व॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यूयमाप्तानध्यापकोपदेशकानिच्छत तथा प्रसववती स्त्री बालकं त्यजति तथैवान्तःकरणादविद्या दूरतोऽस्यत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** विद्या से व्याप्त अध्यापक और परीक्षकजनो! **(मे)** मेरे **(हवम्)** शब्द को **(श्रुतम्)** श्रवण को और **(सप्तवध्रिम्)** नष्ट हुए सात इन्द्रिय जिसके उसका **(च)** और **(मुञ्चतम्)** त्याग करो और **(वनस्पते)** हे वनस्पति! **(सूष्यन्त्याइव)** गर्भवती स्त्री के सदृश **(योनिः)** कारण आप **(वि)** विशेष करके **(जिहीष्व)** त्याग करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। आप लोग यथार्थवक्ता अध्यापक और उपदेशकों की इच्छा करिये और जैसे गर्भवती स्त्री बालक का त्याग करती है, वैसे ही अन्तःकरण से अविद्या को दूर करिये॥५॥

**अथ विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

इसके अनन्तर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये।**

**मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः॥६॥**

**भीताय। नाधमानाय। ऋषये। सप्तऽवध्रये। मायाभिः। अश्विना। युवम्। वृक्षम्। सम्। च। वि। च। अचथः॥६॥**

**पदार्थः**-**(भीताय)** प्राप्तभयाय **(नाधमानाय)** उपतप्यमानाय **(ऋषये)** वेदार्थविदे **(सप्तवध्रये)** पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि मनो बुद्धिश्च सप्त हता यस्य तस्मै **(मायाभिः)** प्रज्ञाभिः **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(युवम्)** युवाम् **(वृक्षम्)** यो वृश्च्यते तम् **(सम्)** **(च)** **(वि)** **(च)** **(अचथः)**॥६॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! युवं मायाभिर्भीताय नाधमानाय सप्तवध्रये ऋषये च समचथः वृक्षं च व्यचथः॥६॥

**भावार्थः**-विदुषां योग्यतास्ति प्रज्ञादानेनाविद्यादिभयभीतान्निर्भयान् कृत्वा संसारे मोहाऽधर्म्मयोगात् वियोज्य सुखिनः सम्पादयन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशकजनो! **(युवम्)** आप दोनों **(मायाभिः)** बुद्धियों से **(भीताय)** भय को प्राप्त **(नाधमानाय)** उपतप्यमान और **(सप्तवध्रये)** पांच ज्ञानेन्द्रियां मन और बुद्धि ये सात नष्ट हुईं जिसकी अर्थात् इनकी प्रबलता से रहित उसके लिये और **(ऋषये)** वेदार्थ के जानने वाले के लिये **(च)** भी **(सम्, अचथः)** उत्तम प्रकार जाइये **(वृक्षम्, च)** और जो काटा जाता उस वृक्ष को **(वि)** उत्तम प्रकार प्राप्तहूजिये॥६॥

**भावार्थः**-विद्वानों की योग्यता है कि बुद्धि के देने से अविद्यादि भय के कारण डरे हुओं को भयरहित करके तथा संसार में मोह और अधर्म्म के योग से वियुक्त करके सुखी करें॥६॥

**कीदृशो गर्भो जन्म चेत्याह॥**

कैसा गर्भ और जन्म इस विषय को कहते हैं॥

**यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः।**

**एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः॥७॥**

**यथा। वातः। पुष्करिणीम्। सम्ऽइङ्गयति। सर्वतः। एव। ते। गर्भः। एजतु। निःऽऐतु। दशऽमास्यः॥७॥**

**पदार्थः**-(**यथा**) येन प्रकारेण (**वातः**) वायुः (**पुष्करिणीम्**) अल्पान् तडागान् (**समिङ्गयति**) सम्यक् चालयति (**सर्वतः**) (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**ते**) तव (**गर्भः**) यो गृह्यते (**एजतु**) कम्पताम् (**निरैतु**) निर्गच्छतु (**दशमास्यः**) दशसु मासेषु भवः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वातः पुष्करिणीं सर्वतः समिङ्गयति तथैवा ते गर्भ एजतु दशमास्यो निरैत्विति विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि स्त्रीपुरुषा ब्रह्मचर्येण विद्यामधीत्य विवाहं कुर्युस्तदा दशमे मासे प्रसवः स्यादिति वेदितव्यम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जिस प्रकार से (**वातः**) पवन (**पुष्करिणीम्**) छोटे तालाबों को (**सर्वतः**) सब ओर से (**समिङ्गयति**) उत्तम प्रकार हिलाता है, वैसे (**एवा**) ही (**ते**) आपका (**गर्भः**) जो धारण किया जाता वह गर्भ (**एजतु**) कंपित होवे और (**दशमास्यः**) दश महीनों में हुआ (**निरैतु**) निकले, ऐसा जानो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो स्त्रीपुरुष ब्रह्मचर्य्य से विद्या को पढ़ के विवाह करें तो दशवें मास में प्रसव हो, ऐसा जानना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति।**

**एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा॥८॥**

**यथा। वातः। यथा। वनम्। यथा। समुद्रः। एजति। एव। त्वम्। दशऽमास्य। सह। अव। इहि। जरायुणा॥८॥**

**पदार्थः**-(**यथा**) येन प्रकारेण (**वातः**) वायुः (**यथा**) (**वनम्**) जङ्गलम् (**यथा**) (**समुद्रः**) उदधिः (**एजति**) कम्पते चलति वा (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**त्वम्**) (**दशमास्य**) दशसु मासेषु जातः (**सह**) (**अव**) (**इहि**) आगच्छ (**जरायुणा**) देहावरणेन॥८॥

**अन्वयः**-हे दशमास्य! यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति तथैवा त्वं जरायुणा सहाऽवेहि॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एव गर्भस्तत्स्थो बालकश्चोत्तमो जायते यो दशमे मासे जायते॥८॥

**पदार्थः**-हे **(दशमास्य)** दश महीनों में उत्पन्न हुए! **(यथा)** जिस प्रकार से **(वातः)** वायु और **(यथा)** जिस प्रकार से **(वनम्)** जङ्गल **(यथा)** जिस प्रकार से **(समुद्रः)** समुद्र **(एजति)** कम्पित होता वा चलता है वैसे **(एवा)** ही **(त्वम्)** आप **(जरायुणा)** देह के ढांपने वाले के **(सह)** सहित **(अव, इहि)** आइये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही गर्भ और उसमें स्थित बालक उत्तम होता है, जो दशवें महीने में होता है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि।**

**निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि॥९॥२०॥**

**दश। मासान्। शशयानः। कुमारः। अधि। मातरि। निःऐतु। जीवः। अक्षतः। जीवः। जीवन्त्याः। अधि॥९॥**

**पदार्थः**-**(दश)** **(मासान्)** **(शशयानः)** कृतशयनः **(कुमारः)** **(अधि)** उपरि **(मातरि)** **(निरैतु)** निर्गच्छतु **(जीवः)** यः प्राणान् धरति **(अक्षतः)** क्षतवर्जितः **(जीवः)** **(जीवन्त्याः)** **(अधि)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जीवोऽधि मातरि दश मासाञ्छशयानोऽक्षतः कुमारो निरैतु स जीवो जीवन्त्या अधि जीवति॥९॥

**भावार्थः**-त एव सन्ताना उत्तमा भवन्ति ये दश मासा यावत्तावद् गर्भे स्थित्वा जायन्ते॥९॥

अत्राश्विस्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टसप्ततितमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(जीवः)** प्राण आदि का धारण करने वाला **(अधि)** ऊपर **(मातरि)** माता में **(दश)** दश **(मासान्)** महीनों तक **(शशयानः)** शयन करता हुआ **(अक्षतः)** घाव से रहित **(कुमारः)** बालक **(निरैतु)** निकले वह **(जीवः)** जीव **(जीवन्त्याः)** जीवती हुई के **(अधि)** ऊपर जीवता है॥९॥

**भावार्थः**-वे ही सन्तान उत्तम होते हैं कि जो दश महीने पूर्ण हों, जबतक तबतक गर्भ में स्थित होकर प्रकट होते हैं॥९॥

इस सूक्त में अश्विपदवाच्य स्त्रीपुरुष के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अठहत्तरवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्यैकोनाऽशीतितमस्य सूक्तस्य सत्यश्रवा आत्रेय ऋषिः। उषा देवता। १ स्वराड्ब्राह्मी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। २, ३, ७ भुरिक् बृहती। १० स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यम स्वरः। ४, ५, ८ पङ्क्तिः। ६, ९ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स्त्री कीदृशी भवेदित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले उनासी**[वें]** सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑ध॒योषो॑ रा॒ये दि॒वित्म॑ती।**

**यथा॑ चिन्नो॒ अबो॑धयः स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॒ते अश्व॑सूनृते॥१॥**

**म॒हे। नः॒। अ॒द्य। बो॒ध॒य॒। उषः॑। रा॒ये। दि॒वित्म॑ती। यथा॑। चि॒त्। नः॒। अबो॑धयः। स॒त्यऽश्र॑वसि। वा॒य्ये। सु॒ऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते॥ १॥**

**पदार्थः-(महे)** महते **(नः)** अस्मान् **(अद्य)** **(बोधय)** **(उषः)** उषर्वद्वर्त्तमाने **(राये)** धनाय **(दिवित्मती)** प्रकाशयुक्ता **(यथा)** **(चित्)** अपि **(नः)** अस्मान् **(अबोधयः)** बोधय **(सत्यश्रवसि)** सत्यानां श्रवणे सत्येऽन्ने वा **(वाय्ये)** तन्तुसदृशे सन्ताननीये विस्तारप्रापये सन्ततिरूपे **(सुजाते)** सुष्ठुरीत्योत्पन्ने **(अश्वसूनृते)** अश्वा महती सूनृता प्रिया वाग्यस्यास्तत्सम्बुद्धौ। **अश्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३।६)॥१॥

**अन्वयः**-हे उषर्वद्वर्त्तमाने वाय्ये सुजातेऽश्वसूनृते स्त्रि! यथा दिवित्मत्युषा महे राये बोधयति तथाऽद्य नो बोधय चिदपि सत्यश्रवसि नोऽस्मानबोधयः॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा प्रातर्वेला दिनं जनयित्वा सर्वाञ्जागरयति तथैव विदुषी स्त्री स्वसन्तानानविद्यानिद्रात उत्थाप्य विद्यां बोधयति॥१॥

**पदार्थः**-हे **(उषः)** श्रेष्ठ गुणों से प्रातःकालः के सदृश वर्त्तमान **(वाय्ये)** डोरे के सदृश फैलाने योग्य सन्ततिरूप **(सुजाते)** उत्तम रीति से उत्पन्न **(अश्वसूनृते)** बड़ी प्रिय वाणी जिसकी ऐसी हे स्त्रि! **(यथा)** जैसे **(दिवित्मती)** प्रकाश से युक्त प्रातर्वेला **(महे)** बड़े **(राये)** धन के लिये प्रबोध देती है, वैसे **(अद्य)** आज **(नः)** हम लोगों को **(बोधय)** जनाइये और **(चित्)** भी **(सत्यश्रवसि)** सत्यों के श्रवण, सत्य वा अन्न में **(नः)** हम लोगों को **(अबोधयः)** जनाइये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्रातर्वेला दिन को उत्पन्न कर के सब को जगाती है, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री अपने सन्तानों को अविद्या के सदृश वर्त्तमान निद्रा से उठा कर विद्या को जनाती है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।**

**सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥२॥**

**या। सुऽनीथे। शौचत्ऽरथे। वि। औच्छः। दुहितः। दिवः। सा। वि। उच्छ। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥२॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**सुनीथे**) शोभने न्याये (**शौचद्रथे**) पवित्रे रथे (**वि**) (**औच्छः**) विवासयति (**दुहितः**) पुत्रीव (**दिवः**) सूर्य्यस्य (**सा**) (**वि**) (**उच्छ**) (**सहीयसि**) अतिशयेन सोढ्रि (**सत्यश्रवसि**) सत्यस्य श्रवो यस्मिन् (**वाय्ये**) ज्ञापनीये (**सुजाते**) शोभनैः संस्कारैरुत्पन्ने (**अश्वसूनृते**) महदन्नयुक्ते॥२॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते वाय्ये सहीयसि दिवो दुहितरिव वर्त्तमाने स्त्रि! या त्वं शौचद्रथे सुनीथे सत्यश्रवसि व्यौच्छः सा त्वमस्मान् सुखे व्युच्छ॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषाः सर्वान् सुखे वासयति तथैव साध्वी स्त्र्यानन्दयुक्ते गृहाश्रमे सर्वान् निवासयति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े अन्न से युक्त (**सुजाते**) उत्तम संस्कारों से उत्पन्न (**वाय्ये**) जनाने योग्य (**सहीयसि**) अतिशय सहने वाली (**दिवः**) सूर्य्य की (**दुहितः**) पुत्री के समान वर्त्तमान स्त्री! (**या**) जो तू (**शौचद्रथे**) पवित्र रथ में (**सुनीथे**) श्रेष्ठ न्याय में (**सत्यश्रवसि**) सत्य का श्रवण जिसमें उसमें (**वि, औच्छः**) विशेष वसाती है (**सा**) वह तू हम लोगों को सुख में (**वि, उच्छ**) विशेष बसावे॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातर्वेला सब को सुख में वसाती है, वैसे ही श्रेष्ठ स्त्री आनन्दयुक्त गृहाश्रम में सबको वसाती है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः।**

**यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥३॥**

**सा। नः। अद्य। आभरत्ऽवसुः। वि। उच्छ। दुहितः। दिवः। यो इति। वि। औच्छः। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥३॥**

**पदार्थः**-(**सा**) (**नः**) अस्मान् (**अद्य**) (**आभरद्वसुः**) या समन्ताद्वसूनि बिभर्त्ति सा (**वि**) (**उच्छ**) विवासय (**दुहितः**) दुहितरिव (**दिवः**) कामयमानस्य (**यो**) या (**वि**) (**औच्छः**) निवासितवती वर्त्तते

**(सहीयसि)** अतिशयेन सोढ्रि **(सत्यश्रवसि)** सत्येन व्यवहारेण प्राप्तान्नाद्यैश्वर्य्ये **(वाय्ये)** गमनीये **(सुजाते)** शोभनया विद्यया प्रकटीभूते **(अश्वसूनृते)** महाज्ञानयुक्ते॥३॥

**अन्वयः**-हे सत्यश्रवसि सुजाते वाय्येऽश्वसूनृते सहीयसि दिवो दुहितरिव विदुषि स्त्रि! यो या त्वमाभरद्वसुः सती नोऽस्मान् व्यौच्छः सा त्वमद्य सुसुखे व्युच्छ॥३॥

**भावार्थः**-यदि स्त्रियः प्रातर्वेलावच्छुभगुणाः स्युस्तर्हि सर्वानानन्दे निवासयितुमर्हन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सत्यश्रवसि)** सत्य व्यवहार से प्राप्त अन्न आदि ऐश्वर्य्य वाली **(सुजाते)** अच्छी विद्या से प्रकट हुई **(वाय्ये)** प्राप्त होने योग्य **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त **(सहीयसि)** अतिशय सहनशील और **(दिवः)** कामना करते हुए की **(दुहितः)** कन्या के सदृश विदुषी स्त्री **(यो)** जो तू **(आभरद्वसुः)** सब प्रकार से धनों को धारण करने वाली हुई **(नः)** हम लोगों को **(वि)** विशेष करके **(औच्छः)** निवास कराने वाली है **(सा)** वह आप **(अद्य)** आज उत्तम सुख में **(वि)** विशेष करके **(उच्छ)** निवास कराओ॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्रियाँ प्रातर्वेला के सदृश श्रेष्ठ गुण वाली हों तो सब को आनन्द में वसाने के योग्य होती हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒भि ये त्वा॑ विभावरि॒ स्तोमै॑र्गृ॒णन्ति॒ वह्न॑यः।**

**म॒घैर्म॑घोनि सु॒श्रियो॒ दाम॑न्वन्तः सुरा॒तयः॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते॥४॥**

**अ॒भि। ये। त्वा॒। वि॒भा॒ऽव॒रि॒। स्तोमैः॑। गृ॒णन्ति॑। वह्न॑यः। म॒घैः। म॒घो॒नि॒। सु॒ऽश्रियः॑। दाम॑न्ऽवन्तः। सु॒ऽरा॒तयः॑। सु॒ऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते॥४॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये **(ये)** विद्वांसः **(त्वा)** त्वाम् **(विभावरि)** प्रकाशयुक्तोषर्वद्वर्त्तमाने **(स्तोमैः)** **(गृणन्ति)** स्तुवन्ति **(वह्नयः)** वोढारोऽग्नय इव वर्त्तमानाः **(मघैः)** धनैः **(मघोनि)** बहुधनयुक्ते **(सुश्रियः)** शोभना लक्ष्मीर्येषान्ते **(दामन्वन्तः)** बहुदानक्रियायुक्ताः **(सुरातयः)** शोभना रातिर्दानेच्छा येषान्ते **(सुजाते)** **(अश्वसूनृते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मघोनि सुजातेऽश्वसूनृते विभावरीव विदुषि स्त्रि! ये सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयो वह्नयो विद्वांसो मघैः स्तोमैस्त्वाऽभि गृणन्ति ते त्वया सत्कर्त्तव्याः॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽग्नय उषसः कर्त्तारः सन्ति तथैव शिक्षका विद्याप्राप्तिकर्त्तारः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मघोनि)** बहुत धन से युक्त **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(विभावरि)** प्रकाशवती प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान विद्यायुक्त स्त्री! **(ये)** जो विद्वान्

जन (**सुश्रियः**) सुन्दर लक्ष्मी जिनकी ऐसे (**दामन्वन्तः**) बहुत दान क्रिया से युक्त (**सुरातयः**) सुन्दर दान की इच्छा जिनकी वे (**वह्नयः**) पहुंचाने वाले अग्नियों के समान वर्त्तमान विद्वान् जन (**मघैः**) धनों से और (**स्तोमैः**) स्तोत्रों से (**त्वा**) आप को (**अभि**) सन्मुख (**गृणन्ति**) स्तुति करते हैं, वे आप से सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि प्रातर्वेलाओं के कर्त्ता हैं, वैसे ही शिक्षक जन विद्या की प्राप्ति करने वाले हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यच्चिद्धि ते गुणा इमे छदयन्ति मघत्तये।**
**परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते॥५॥२१॥**

**यत्। चित्। हि। ते। गुणाः। इमे। छदयन्ति। मघत्तये। परि। चित्। वष्टयः। दधुः। ददतः। राधः। अह्रयम्। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥५॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**चित्**) अपि (**हि**) एव (**ते**) तव (**गणाः**) समूहाः (**इमे**) (**छदयन्ति**) ऊर्जयन्ति (**मघत्तये**) धनदानाय (**परि**) (**चित्**) (**वष्टयः**) कामयमानाः (**दधुः**) धरन्तु (**ददतः**) दानशीलान् (**राधः**) धनम् (**अह्रयम्**) लज्जादिदोषरहितम् (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥५॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते विदुषि स्त्रि! यद्य इमे वष्टयस्ते गणा मघत्तयेऽह्रयं चिद्राधो ददतश्चिच्छदयन्ति ते चिद्धि सुखानि परि दधुः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषसः किरणगणाः स्वतेजसा सर्वाञ्छादयन्ति तथैव शुभगुणस्त्रियः स्वैः शुभैर्गुणैः सर्वाञ्छादयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई विदुषि स्त्रि! (**यत्**) जो (**इमे**) ये (**वष्टयः**) कामना करते हुए (**ते**) आप के (**गणाः**) समूह (**मघत्तये**) धनदान के लिये (**अह्रयम्**) लज्जा आदि दोष से रहित को (**चित्**) और (**राधः**) धन को (**ददतः**) देने वालों को (**चित्**) निश्चय (**छदयन्ति**) प्रबल करते हैं, वे निश्चय (**हि**) ही सुखों की (**परि, दधुः**) धारण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातःकाल के किरणसमूह अपने तेज से सब को ढांपते हैं, वैसे ही शुभगुण वाली स्त्रियाँ अपने शुभगुणों से सब को आच्छादित करती हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ऐषु धा वीरवद्यश उषो मघोनि सूरिषु।**

**ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते॥६॥**

**आ। एषु। धाः। वीरऽवत्। यशः। उषः। मघोनि। सूरिषु। ये। नः। राधांसि। अह्रया। मघऽवानः। अरासत। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**एषु**) स्त्रीपुरुषेषु (**धाः**) धेहि (**वीरवत्**) वीरा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (**यशः**) कीर्त्तिम् (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**मघोनि**) प्रशंसितधनयुक्ते (**सूरिषु**) विद्वत्सु (**ये**) (**नः**) अस्मान् (**राधांसि**) अन्नानि (**अह्रया**) अलज्जया प्रतिपादितानि (**मघवानः**) बहुधनयुक्ताः (**अरासत**) दद्युः (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥६॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते मघोन्युषर्वद्वर्त्तमान उत्तमे स्त्रि! त्वमेषु सूरिषु वीरवद्यश आ धाः। ये मघवानो नोऽह्रया राधांस्यरासत तांस्त्वं सत्कुर्य्याः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सैव प्रशंसिता स्त्री या पितृपतिकुले शुभाचरणेन पितृपतिकुलं प्रकाशयेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञानवाली (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**मघोनि**) प्रशंसित धन से युक्त और (**उषः**) प्रातःकाल के सदृश वर्त्तमान उत्तम स्त्री! तू (**एषु**) इन स्त्री-पुरुषों और (**सूरिषु**) विद्वानों में (**वीरवत्**) वीरजन विद्यमान जिसमें उस (**यशः**) यश को (**आ**) सब प्रकार से (**धाः**) धारण कर और (**ये**) जो (**मघवानः**) बहुत धनों से युक्त जन (**नः**) हम लोगों को (**अह्रया**) विना लज्जा से कहे गये (**राधांसि**) अन्नों को (**अरासत**) देवें, उनका तू सत्कार कर॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही प्रशंसित स्त्री है जो पिता और पति के कुल में श्रेष्ठ आचरण से पिता और पति के कुल को प्रकाशित करे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश उषो मघोन्या वह।**

**ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते॥७॥**

**तेभ्यः। द्युम्नम्। बृहत्। यशः। उषः। मघोनि। आ। वह। ये। नः। राधांसि। अश्व्या। गव्या। भजन्त। सूरयः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥७॥**

**पदार्थः**-(**तेभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**द्युम्नम्**) धनम् (**बृहत्**) महत् (**यशः**) कीर्त्तिम् (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**मघोनि**) बहुधनयुक्ते (**आ**) (**वह**) समन्तात्प्रापय (**ये**) (**नः**) अस्माकम् (**राधांसि**) (**अश्व्या**) अश्वेभ्यो हितानि (**गव्या**) गोभ्यो हितानि (**भजन्त**) सेवन्ते (**सूरयः**) विद्वांसः (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते मघोन्युषर्वद्विदुषि स्त्रि! ये नः सूरयोऽश्व्या गव्या राधांसि भजन्त तेभ्यो बृहद् द्युम्नं यशश्चाऽऽवह॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो सर्वसुखाय पदार्थानुन्नयन्ति त उषर्वत्प्रकाशकीर्त्तयो भूत्वा सुखिनो जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(मघोनि)** बहुत धनवती **(उषः)** प्रातःकाल के सदृश वर्त्तमान विदुषि स्त्रि! **(ये)** जो **(नः)** हम लोगों में **(सूरयः)** विद्वान् जन **(अश्व्या)** घोड़ों के लिये और **(गव्या)** गौओं के लिये हितकारक **(राधांसि)** धनों का **(भजन्त)** सेवन करते हैं **(तेभ्यः)** उन विद्वानों के लिये **(बृहत्)** बड़े **(द्युम्नम्)** धन और **(यशः)** यश को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कराओ॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सब के सुख के लिये पदार्थों की वृद्धि करते हैं, वे प्रातःकाल के सदृश प्रकाशित यश वाले होकर सुखी होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत नो गोमतीरिष आ वहा दुहितर्दिवः।**

**साकं सूर्यस्य रश्मिभिः शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सुजाते अश्वसूनृते॥८॥**

**उत। नः। गोऽमतीः। इषः। आ। वह। दुहितः। दिवः। साकम्। सूर्यस्य। रश्मिऽभिः। शुक्रैः। शोचत्ऽभिः। अर्चिऽभिः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्मान् **(गोमतीः)** गावो विद्यन्ते यासु ताः **(इषः)** अन्नाद्याः **(आ)** **(वहा)** समन्तात्प्रापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(दुहितः)** कन्येव **(दिवः)** प्रकाशमानस्य **(साकम्)** सार्धम् **(सूर्य्यस्य)** **(रश्मिभिः)** **(शुक्रैः)** शुद्धैः **(शोचद्भिः)** पवित्रकारकैः **(अर्चिभिः)** पूजितैर्गुणकर्मस्वभावैः **(सुजाते)** **(अश्वसूनृते)**॥८॥

**अन्वयः**-हे सुजाते अश्वसूनृते दिवो दुहितरिव स्त्रि! सूर्य्यस्य रश्मिभिः साकमुत शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सह नो गोमतीरिष आ वहा॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यस्य किरणैरुत्पन्नोषा उपकारिणी भवति तथैव शुभगुणकर्मस्वभावैः सहिता स्त्र्यानन्दोपकारिणी जायते॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(दिवः)** प्रकाशमान की **(दुहितः)** कन्या के सदृश वर्त्तमान स्त्रि! **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य के **(रश्मिभिः)** किरणों के **(साकम्)** साथ **(उत)** और **(शुक्रैः)** शुद्ध **(शोचद्भिः)** पवित्र करने वाले **(अर्चिभिः)** श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव के साथ **(नः)** हम लोगों को **(गोमतीः)** गौवें विद्यमान जिनमें उन **(इषः)** अन्न आदिकों को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कराइये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य की किरणों से उत्पन्न उषा उपकार करने वाली होती है, वैसे ही शुभ गुण, कर्म और स्वभावों के सहित स्त्री आनन्द की उपकार करने वाली होती है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः।**

**नेत्त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते॥९॥**

**वि। उच्छ। दुहितः। दिवः। मा। चिरम्। तनुथाः। अपः। नः। इत्। त्वा। स्तेनम्। यथा। रिपुम्। तपाति। सूरः। अर्चिषा। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥९॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**उच्छा**) निवासय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दुहितः**) कन्येव (**दिवः**) प्रकाशस्य (**मा**) (**चिरम्**) (**तनुथाः**) विस्तारयेः (**अपः**) कर्म (**न**) निषेधे (**इत्**) एव (**त्वा**) त्वाम् (**स्तेनम्**) चोरम् (**यथा**) (**रिपुम्**) शत्रुम् (**तपाति**) तापयति (**सूरः**) सूर्य्यः (**अर्चिषा**) तेजसा (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥९॥

**अन्वयः**-हे सुजाते अश्वसूनृते दिवो दुहितरिव वर्त्तमाने शुभाचारे स्त्रि! त्वमपश्चिरं मा तनुथाः। यथा रिपुं तपाति तथा स्तेनं तापय त्वा कोऽपि न तापयतु यथार्चिषा सूरः सर्वान् तापयति तथेत्त्वं दुष्टान् तापयित्वाऽस्मान् व्युच्छा॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये स्त्रीपुरुषा दीर्घसूत्रिणोऽलसाः स्तेनाश्च न भवन्ति ते सूर्य्यवत्प्रकाशिता भवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**दिवः**) प्रकाश की (**दुहितः**) कन्या के सदृश वर्त्तमान उत्तम आचरण वाली स्त्रि! तू (**अपः**) कर्म को (**चिरम्**) बहुत काल पर्यन्त (**मा**) नहीं (**तनुथाः**) विस्तार कर (**यथा**) जैसे (**रिपुम्**) शत्रु को (**तपाति**) संतापित करती है, वैसे (**स्तेनम्**) चोर को सन्तापित कर और (**त्वा**) तुझको कोई भी (**न**) नहीं सन्तापयुक्त करे और जैसे (**अर्चिषा**) तेज से (**सूरः**) सूर्य सब को तपाता है, वैसे (**इत्**) ही तू दुष्टजनों को सन्तापित करके हम लोगों को (**वि, उच्छा**) अच्छे प्रकार वसाओ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्री और पुरुष मन्द, आलसी और चोर नहीं होते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रकाशित होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि।**

**या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते॥१०॥२२॥**

**एतावत्। वा। इत्। उषः। त्वम्। भूयः। वा। दातुम्। अर्हसि। या। स्तोतृऽभ्यः। विभाऽवरि। उच्छन्ती। न। प्रऽमीयसे। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥१०॥**

**पदार्थः**-(**एतावत्**) (**वा**) (**इत्**) एव (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**त्वम्**) (**भूयः**) अधिकम् (**वा**) वा (**दातुम्**) (**अर्हसि**) (**या**) (**स्तोतृभ्यः**) स्तावकेभ्यः (**विभावरि**) प्रकाशमाने (**उच्छन्ती**) निवसन्ती (**न**) निषेधे (**प्रमीयसे**) म्रियसे (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते विभावर्युषर्वद्वर्त्तमाने स्त्रि! त्वमेतावद्वा भूयो वा दातुमर्हसि या त्वं स्तोतृभ्य उच्छन्ती निवसन्ती वर्त्तसे सा त्वमात्मस्वरूपेणेन्न प्रमीयसे॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे स्त्रियो! यथोषाः स्वल्पं महत आनन्दान् प्रयच्छति तथा त्वं भवेति॥१०॥

अत्रोषःस्त्रीगुणवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनाऽशीतितमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**विभावरि**) प्रकाशमान और (**उषः**) प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान स्त्री! (**त्वम्**) तू (**एतावत्**) इतने को (**वा**) वा (**भूयः**) अधिक को (**वा**) भी (**दातुम्**) देने को (**अर्हसि**) योग्य है और (**या**) जो तू (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये (**उच्छन्ती**) निवास करती हुई वर्त्तमान है, वह तू अपने स्वरूप से (**इत्**) ही (**न**) नहीं (**प्रमीयसे**) मरती है॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे स्त्रीजनो! जैसे उषर्वेला थोड़ी भी बड़े आनन्दों को देती है, वैसे तुम होओ॥१०॥

इस सूक्त में प्रातः और स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनासीवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षडर्चस्याऽशीतितमस्य सूक्तस्य सत्यश्रवा आत्रेय ऋषिः। उषा देवता। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ स्त्रीगुणानाह॥*

अब छः ऋचा वाले अस्सीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्रियों के गुणों को कहते हैं॥

**द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणप्सुं विभातीम्।**
**देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते॥ १॥**

**द्युतत्ऽयामानम्। बृहतीम्। ऋतेन। ऋतऽवरीम्। अरुणऽप्सुम्। विऽभातीम्। देवीम्। उषसम्। स्वः। आऽवहन्तीम्। प्रति। विप्रासः। मतिऽभिः। जरन्ते॥ १॥**

**पदार्थः**-(**द्युतद्यामानम्**) प्रहरान् द्योतयन्तीम् (**बृहतीम्**) (**ऋतेन**) जलेनेव सत्येन (**ऋतावरीम्**) बहुसत्याचरणयुक्ताम् (**अरुणप्सुम्**) **प्सु इति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) (**विभातीम्**) प्रकाशयन्तीम् (**देवीम्**) देदीप्यमानाम् (**उषसम्**) प्रातर्वेलाम् (**स्वः**) आदित्यमिव विद्याप्रकाशम् (**आवहन्तीम्**) प्रापयन्तीम् (**प्रति**) (**विप्रासः**) (**मतिभिः**) प्रज्ञाभिः (**जरन्ते**) स्तुवन्ति॥१॥

**अन्वयः**-हे स्त्रि! यथा विप्रासो मतिभिर्ऋतेन द्युतद्यामानं बृहतीमृतावरीमरुणप्सुं विभातीं देवीं स्वरावहन्तीमुषहं प्रति जरन्ते तांस्त्वं प्रशंस॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मेधाविनः पतय उषसादिपदार्थविद्यां विज्ञाय क्षणमपि कालं व्यर्थं न नयन्ति तथैव स्त्रियोऽपि निरर्थकं समयन्न गमयेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे स्त्रि! जैसे (**विप्रासः**) बुद्धिमान् जन (**मतिभिः**) बुद्धियों से और (**ऋतेन**) जल के सदृश सत्य से (**द्युतद्यामानम्**) प्रहरों को प्रकाश करती और (**बृहतीम्**) बढ़ती हुई (**ऋतावरीम्**) बहुत सत्य आचरण से युक्त (**अरुणप्सुम्**) लालरूप वाली (**विभातीम्**) प्रकाश करती हुई (**देवीम्**) प्रकाशमान और (**स्वः**) सूर्य्य के सदृश विद्या के प्रकाश को (**आवहन्तीम्**) धारण करती हुई (**उषसम्**) उषर्वेला की (**प्रति**) उत्तम प्रकार (**जरन्ते**) स्तुति करते हैं, उनकी तू प्रशंसा कर॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् पति उषःकाल आदि पदार्थों की विद्या को जान कर क्षणभर भी काल व्यर्थ नहीं व्यतीत करते हैं, वैसे ही स्त्रियाँ भी व्यर्थ समय न व्यतीत करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे।**

**बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम्॥२॥**

**एषा। जनम्। दर्शता। बोधयन्ती। सुऽगान्। पथः। कृण्वती। याति। अग्रे। बृहत्ऽरथा। बृहती। विश्वम्ऽइन्वा। उषाः। ज्योतिः। यच्छति। अग्रे। अह्नाम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**एषा**) (**जनम्**) (**दर्शता**) द्रष्टव्या भूमीः (**बोधयन्ती**) (**सुगान्**) सुखेन गच्छन्ति येषु तान् (**पथः**) मार्गान् (**कृण्वती**) प्रकाशं कुर्वती (**याति**) गच्छति (**अग्रे**) दिवसात्पुरः (**बृहद्रथा**) महान्तो रथा यस्याः सा (**बृहती**) महती (**विश्वमिन्वा**) या विश्वं सर्वं जगन्मिनोति (**उषाः**) प्रातर्वेला (**ज्योतिः**) प्रकाशम् (**यच्छति**) ददाति (**अग्रे**) प्रथमतः (**अह्नाम्**) दिवसानाम्॥२॥

**अन्वयः**-हे सुशीलाः स्त्रियो! यथैषा बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वत्युषा अग्रे यात्यह्नामग्रे ज्योतिर्यच्छति तथा यूयं भवत॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। याः स्त्रियः प्रभातवेलावत्स्वकीयान् पत्यादीन् सूर्योदयात्प्राक् चेतयन्त्यो गृहस्थान् बाह्यांश्च मार्गांश्छोधयन्त्य आगच्छतां पत्यादीनां कृताञ्जलयोऽग्रे तिष्ठन्ति सर्वदा विज्ञानं च प्रयच्छन्ति ता एव देशकुलभूषणानि भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे उत्तम स्वभाववाली स्त्रियो! जैसे (**एषा**) यह (**बृहद्रथा**) बड़े रथ जिसके ऐसी (**बृहती**) बड़ी (**विश्वमिन्वा**) संपूर्ण जगत् को प्रक्षेप करती अलग करती और (**जनम्**) मनुष्य को और (**दर्शता**) देखने योग्य भूमियों को (**बोधयन्ती**) जनाती हुई (**सुगान्**) सुखपूर्वक जिनमें चलें उन (**पथः**) मार्गों को (**कृण्वती**) प्रकाशित करती हुई (**उषाः**) प्रातर्वेला (**अग्रे**) दिन से आगे (**याति**) चलती है और (**अह्नाम्**) दिनों के (**अग्रे**) पहिले से (**ज्योतिः**) प्रकाश को (**यच्छति**) देती है, वैसे तुम होओ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्रियाँ प्रभातवेला के सदृश अपने पति आदि को सूर्योदय से पहिले जगातीं, गृह और बाहर के मार्गों को साफ करतीं, आते हुए पतियों के हाथ जोड़ के आगे खड़ी होतीं और सब काल में विज्ञान को देती हैं, वे ही देश और कुल को शोभन करने वाली हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा गोभिररुणेभिर्युजानास्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे।**
**पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति॥३॥**

**एषा। गोभिः। अरुणेभिः। युजाना। अस्रेधन्ती। रयिम्। अप्रऽआयु। चक्रे। पथः। रदन्ती। सुविताय। देवी। पुरुऽस्तुता। विश्वऽवारा। वि। भाति॥३॥**

**पदार्थः**-(**एषा**) उषाः (**गोभिः**) किरणैः (**अरुणेभिः**) आरक्तवर्णैः सह (**युजाना**) युक्ता (**अस्रेधन्ती**) साधयन्ती (**रयिम्**) धनम् (**अप्रायु**) यन्न प्रैति नश्यति तत् (**चक्रे**) करोति (**पथः**) मार्गान्

**(रदन्ती)** लिखन्ती **(सुविताय)** ऐश्वर्य्याय **(देवी)** द्योतमाना **(पुरुष्टुता)** बहुभिः प्रशंसिता **(विश्ववारा)** विश्वैः सर्वैर्मनुष्यैर्वरणीया **(वि, भाति)** विशेषेण प्रकाशते॥३॥

**अन्वयः**-हे विदुषि स्त्रि! यथैषोषा अरुणेभिर्गोभिर्युजाना रयिमस्रेधन्ती अप्रायु चक्रे पथो रदन्ती पुरुष्टुता विश्ववारा देवी सुविताय वि भाति तथा त्वं भव॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रता विदुषी विचक्षणा स्त्री गृहस्य प्रकाशिका वर्त्तते तथैवोषा ब्रह्माण्डस्य प्रकाशिका वर्त्तते॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्यायुक्त स्त्रि! जैसे **(एषा)** यह प्रातर्वेला **(अरुणेभिः)** चारों ओर रक्त वर्ण वाले **(गोभिः)** किरणों के साथ **(युजाना)** युक्त और **(रयिम्)** धन को **(अस्रेधन्ती)** सिद्ध करती हुई **(अप्रायु)** नहीं नष्ट होने वाले को **(चक्रे)** करती है और **(पथः)** मार्गों को **(रदन्ती)** खोदती हुई **(पुरुष्टुता)** बहुतों से प्रशंसा की गई **(विश्ववारा)** सम्पूर्ण मनुष्यों से स्वीकार करने योग्य **(देवी)** प्रकाशित होती हुई **(सुविताय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(वि, भाति)** विशेष करके प्रकाशित होती है, वैसे आप होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता, विद्यायुक्त और चतुर स्त्री गृह को प्रकाशित करने वाली होती है, वैसे ही प्रातर्वेला ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाली है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात्।**

**ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति॥४॥**

**एषा। विऽएनी। भवति। द्विऽबर्हाः। आविःऽकृण्वाना। तन्वम्। पुरस्तात्। ऋतस्य। पन्थाम्। अनु। एति। साधु। प्रजानतीऽइव। न। दिशः। मिनाति॥४॥**

**पदार्थः**-**(एषा)** **(व्येनी)** या विशिष्टमृगीवद्वेगवती **(भवति)** **(द्विबर्हाः)** या द्वाभ्यां रात्रिदिनाभ्यां बृंहयति वर्धयति **(आविष्कृण्वाना)** सर्वेषां मूर्तिमतां द्रव्याणां प्राकट्यं सम्पादयन्ती **(तन्वम्)** शरीरम् **(पुरस्तात्)** **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(पन्थाम्)** मार्गम् **(अनु)** **(एति)** अनुगच्छति **(साधु)** उत्तमं विज्ञानम् **(प्रजानतीव)** **(न)** निषेधे **(दिशः)** **(मिनाति)** हिनस्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे विदुषि स्त्रि! यथैषोषाः पुरस्तात्तन्वमाविष्कृण्वाना द्विबर्हा व्येनी भवति। ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव दिशो न मिनाति तथा त्वं वर्त्तस्व॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सती स्त्री गृहाश्रमस्य मार्गं प्रकाश्य सर्वाणि सुखानि प्रकटयति तथैवोषा वर्त्तते॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्यायुक्त स्त्रि! जैसे **(एषा)** यह प्रातर्वेला **(पुरस्तात्)** प्रथम **(तन्वम्)** शरीर को **(आविष्कृण्वाना)** और संपूर्ण रूप वाले द्रव्यों की प्रकटता करती हुई **(द्विबर्हाः)** दिन और रात्रि से बढ़ाने

वाली **(व्येनी)** विशेष हरिणी के सदृश वेगयुक्त **(भवति)** होती है और **(ऋतस्य)** सत्य के **(पन्थाम्)** मार्ग की **(अनु, एति)** अनुगामिनी होती है और **(साधु)** उत्तम विज्ञान को **(प्रजानतीव)** विशेष करके जानती हुई सी **(दिशः)** दिशाओं का **(न)** नहीं **(मिनाति)** नाश करती है, वैसा तू वर्त्ताव कर॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सती स्त्री गृहाश्रम के मार्ग को प्रकाशित करके सम्पूर्ण सुखों को प्रकट करती है, वैसे ही प्रातर्वेला वर्त्तमान है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात्।**

**अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्॥५॥**

**एषा। शुभ्रा। न। तन्वः। विदाना। ऊर्ध्वाऽइव। स्नाती। दृशये। नः। अस्थात्। अप। द्वेषः। बाधमाना। तमांसि। उषाः। दिवः। दुहिता। ज्योतिषा। आ। अगात्॥५॥**

**पदार्थः**-**(एषा)** **(शुभ्रा)** श्वेतवर्णा **(न)** इव **(तन्वः)** शरीराणि **(विदाना)** ज्ञापयन्ती **(ऊर्ध्वेव)** ऊर्ध्वेव स्थिता **(स्नाती)** शुद्धा **(दृशये)** दर्शनाय **(नः)** अस्माकम् **(अस्थात्)** तिष्ठति **(अप)** **(द्वेषः)** द्वेष्टॄन् **(बाधमाना)** निवारयन्ती **(तमांसि)** रात्रीः **(उषाः)** प्रातर्वेला **(दिवः)** सूर्य्यस्य **(दुहिता)** कन्येव **(ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(आ)** **(अगात्)** आगच्छति॥५॥

**अन्वयः**-हे शुभलक्षणे स्त्रि! यथैषोषाः शुभ्रा विद्युन्न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती नो दृशयेऽस्थाद् द्वेषस्तमांसि चाप बाधमाना दिवो दुहिता ज्योतिषाऽऽगात्तथा त्वं भवेः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कुलीना स्त्री जलादीन्द्रियसंयमाभ्यां बाह्याऽऽभ्यन्तरे शुद्धा गृहस्थाऽन्धकारं निवारयन्ती सर्वेषां शरीररक्षां विदधाति गृहकृत्येषु दक्षा वर्त्तते तथैवोषा भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे श्रेष्ठ लक्षणों वाली स्त्रि! जैसे **(एषा)** यह **(उषाः)** प्रातर्वेला **(शुभ्रा)** श्वेतवर्णवाली बिजुली के **(न)** सदृश **(तन्वः)** शरीरों को **(विदाना)** जनाती हुई **(ऊर्ध्वेव)** ऊपर सी स्थित **(स्नाती)** शुद्ध और **(नः)** हम लोगों के **(दृशये)** दर्शन के लिये **(अस्थात्)** स्थित होती है और **(द्वेषः)** द्वेष करने वाले जनों और **(तमांसि)** रात्रियों को **(अप, बाधमाना)** निवारण करती हुई **(दिवः)** सूर्य्य की **(दुहिता)** कन्या के सदृश वर्त्तमान **(ज्योतिषा)** प्रकाश से **(आ, अगात्)** प्राप्त होती है, वैसे तू हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे कुलीन स्त्री जलादिकों और इन्द्रियों के निग्रहों से बाहर और भीतर से शुद्ध, गृहस्थान्धकार को निवृत्त करती हुई, सब के शरीर की रक्षा करती है और गृह के कृत्यों में चतुर है, वैसे ही प्रातर्वेला होती है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ए॒षा प्र॑ती॒ची दु॑हि॒ता दि॒वो नॄन् योषे॑व भ॒द्रा नि रि॑णीते॒ अप्सः॑।**
**व्यू॒र्ण्व॒ती दा॒शुषे॒ वार्या॑णि पु॒नर्ज्योति॑र्यु॒व॒तिः पू॒र्वथा॑कः॥६॥२३॥**

ए॒षा। प्र॒ती॒ची। दु॒हि॒ता। दि॒वः। नॄन्। योषा॑ऽइव। भ॒द्रा। नि। रि॒णी॒ते॒। अप्सः॑। वि॒ऽऊ॒र्ण्व॒ती। दा॒शुषे॑। वार्या॑णि। पुनः॑। ज्योतिः॑। यु॒व॒तिः। पू॒र्वऽथा॑। अ॒कृ॒रित्य॑कः॥६॥

**पदार्थः**-(**एषा**) (**प्रतीची**) पश्चिमदिशां प्राप्ता (**दुहिता**) कन्येव (**दिवः**) सूर्यस्य (**नॄन्**) नायकान् श्रेष्ठान् पुरुषान् (**योषेव**) (**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**नि**) (**रिणीते**) गच्छति (**अप्सः**) सुरूपम् (**व्यूर्ण्वती**) विशेषणाच्छादयन्ती (**दाशुषे**) दात्रे (**वार्याणि**) वर्त्तुमर्हाणि धनादीनि (**पुनः**) (**ज्योतिः**) (**युवतिः**) प्राप्तयौवनावस्थेव (**पूर्वथा**) पूर्वा इव (**अकः**) करोति॥६॥

**अन्वयः**-हे शुभलक्षणे स्त्रि! यथैषोषा दिवो दुहिता नॄन् योषेव भद्रा प्रतीच्यप्सो नि रिणीते दाशुषे वार्याणि व्यूर्ण्वती पूर्वथा पुनर्ज्योतियुवतिरिवाकस्तथा त्वं भव॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। याः स्त्रियो भद्राचाराः प्राप्तयुवावस्थाः स्वसदृशान् पतीन् प्राप्य सर्वाणि गृहकृत्यानि व्यवस्थापयन्ति ता उषर्वत्सुशोभन्त इति॥६॥

अत्रोषःस्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यशीतितमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे शुभ लक्षणों वाली स्त्रि! जैसे (**एषा**) यह प्रातर्वेला (**दिवः**) सूर्य्य की (**दुहिता**) कन्या के सदृश (**नॄन्**) अग्रणी श्रेष्ठ पुरुषों को (**योषेव**) स्त्री के सदृश (**भद्रा**) कल्याण करने वाली (**प्रतीची**) पश्चिम दिशा को प्राप्त (**अप्सः**) सुन्दर रूप को (**नि, रिणीते**) अत्यन्त प्राप्त होती है और (**दाशुषे**) देने वाले के लिये (**वार्याणि**) स्वीकार करने योग्य धन आदि को (**व्यूर्ण्वती**) विशेष करके आच्छादित करती हुई (**पूर्वथा**) पहिली के सदृश (**पुनः**) फिर (**ज्योतिः**) ज्योतिःरूप को (**युवतिः**) प्राप्त यौवनावस्था वाली के सदृश (**अकः**) करती है, वैसी तुम होओ॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो स्त्रियाँ शुभ आचरण वालीं और युवावस्था को प्राप्त हुई अपने सदृश पतियों को प्राप्त होकर सम्पूर्ण गृहकृत्यों को व्यवस्थापित करती हैं वे प्रातर्वेला के सदृश अत्यन्त शोभित होती हैं॥६॥

इस सूक्त में प्रातर्वेला और स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अस्सीवां सूक्त और तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकाऽशीतितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। सविता देवता। १, ५ जगती। २ विराड्जगती। ३, ४ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः।**

***अथ योगिनः किं कुर्वन्तीत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले इक्यासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में योगीजन क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।**
**वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥१॥**

**युञ्जते। मनः। उत। युञ्जते। धियः। विप्राः। विप्रस्य। बृहतः। विपःऽचितः। वि। होत्राः। दधे। वयुनऽवित्। एकः। इत्। मही। देवस्य। सवितुः। परिऽस्तुतिः॥१॥**

**पदार्थः**-(**युञ्जते**) समादधाति (**मनः**) मननात्मकम् (**उत**) अपि (**युञ्जते**) (**धियः**) प्रज्ञाः (**विप्राः**) मेधाविनो योगिनः (**विप्रस्य**) विशेषेण प्राति व्याप्नोति तस्य (**बृहतः**) महतः (**विपश्चितः**) अनन्तविद्यस्य (**वि**) (**होत्राः**) आदातारो दातारो वा (**दधे**) दधाति (**वयुनावित्**) यो वुयनानि प्रज्ञानानि वेत्ति। अत्रा**न्येषामपी**त्युपधाया दीर्घः। (**एकः**) अद्वितीयोऽसहायः (**इत्**) एव (**मही**) महती पूज्या (**देवस्य**) सर्वस्य जगतः प्रकाशकस्य (**सवितुः**) सकलजगदुत्पादकस्य (**परिष्टुतिः**) परितो व्याप्ता चासौ स्तुतिश्च॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा होत्रा विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः सवितुर्देवस्य परमात्मनो मध्ये मनो युञ्जत उत धियो युञ्जते यो वयुनाविदेक इदेव सर्वं जगद्वि दधे यस्य मही परिष्टुतिरस्ति तथा तस्मिन्यूयमपि चित्तं धत्त॥१॥

**भावार्थः**-अनेकविद्याबृंहितस्य बुद्ध्यादिपदार्थाधिष्ठानस्य जगदीश्वरस्य मध्ये ये मनो बुद्धिं वा निदधति ते सर्वमैहिकं पारलौकिकं सुखं चाप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**होत्राः**) लेने वा देने वाले (**विप्राः**) बुद्धिमान् योगीजन (**विप्रस्य**) विशेष कर के व्याप्त होने वाले (**बृहतः**) बड़े (**विपश्चितः**) अनन्त विद्यावान् (**सवितुः**) सम्पूर्ण जगत् के उत्पन्न करने वाले (**देवस्य**) सम्पूर्ण जगत् के प्रकाशक परमात्मा के मध्य में (**मनः**) मननस्वरूप मन को (**युञ्जते**) युक्त करते (**उत**) और (**धियः**) बुद्धियों को (**युञ्जते**) युक्त करते हैं और जो (**वयुनावित्**) प्रज्ञानों को जानने वाला (**एकः**) सहायरहित अकेला (**इत्**) ही संपूर्ण जगत् को (**वि, दधे**) रचता और जिसकी (**मही**) बड़ी आदर करने योग्य (**परिष्टुतिः**) सब और व्याप्त स्तुति है, वैसे उस में आप लोग भी चित्त को धारण करो॥१॥

**भावार्थ:**-अनेक विद्याबृंहित, बुद्धि आदि पदार्थों के अधिष्ठान, जगदीश्वर के बीच जो मन और बुद्धि को निरन्तर स्थापन करते हैं, वे समस्त ऐहिक और पारलौकिक सुख को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**विश्वा॑ रू॒पाणि॒ प्रति॑ मुञ्चते क॒विः प्रासा॑वीद्भ॒द्रं द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे।**

**वि नाक॑मख्यत्सवि॒ता वरे॒ण्योऽनु॑ प्र॒याण॑मु॒षसो॒ वि रा॑जति॥२॥**

**विश्वा॑। रू॒पाणि॑। प्रति॑। मु॒ञ्च॒ते॒। क॒विः। प्र। अ॒सा॒वी॒त्। भ॒द्रम्। द्वि॒ऽपदे॑। चतुः॑ऽपदे। वि। नाक॑म्। अ॒ख्य॒त्। स॒वि॒ता। वरे॑ण्यः। अनु॑। प्र॒ऽयान॑म्। उ॒षसः॑। वि। रा॒ज॒ति॒॥२॥**

**पदार्थ:**-**(विश्वा)** सर्वाणि **(रूपाणि)** सूर्यादीनि **(प्रति) (मुञ्चते)** त्यजति **(कविः)** सर्वेषां क्रान्तप्रज्ञः सर्वज्ञः **(प्र) (असावीत्)** उत्पादयति **(भद्रम्)** कल्याणम् **(द्विपदे)** मनुष्याद्याय **(चतुष्पदे)** गवाद्याय **(वि) (नाकम्)** अविद्यमानदुःखम् **(अख्यत्)** ख्याति प्रकाशयति **(सविता)** सकलैश्वर्य्यप्रदः **(वरेण्यः)** वरितुमर्हः **(अनु) (प्रयाणम्) (उषसः) (वि) (राजति)** प्रकाशते॥२॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यः कविर्वरेण्यः सवितेश्वरो द्विपदे चतुष्पदे भद्रं प्रासावीत्। विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते नाकं व्यख्यत् स यथोषसोऽनु प्रयाणं सूर्यो वि राजति तथा सूर्य्यादिकं प्रकाशयति तं सर्वे यूयमुपाध्वम्॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेण विचित्रं विविधं जगत्सर्वेषां प्राणिनां सुखाय निर्मितं तमेव यूयं भजध्वम्॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्या! जो **(कविः)** सर्व पदार्थों का जानने वाला सर्वज्ञ **(वरेण्यः)** स्वीकार करने योग्य और **(सविता)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों को देने वाला ईश्वर **(द्विपदे)** मनुष्य आदि और **(चतुष्पदे)** गौ आदि के लिये **(भद्रम्)** कल्याण को **(प्र, असावीत्)** उत्पन्न करता और **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(रूपाणि)** सूर्य्य आदिकों का **(प्रति, मुञ्चते)** त्याग करता है तथा **(नाकम्)** नहीं विद्यमान दुःख जिसमें उसका **(वि, अख्यत्)** प्रकाश करता है, वह जैसे **(उषसः)** प्रातःकाल के **(अनु, प्रयाणम्)** पीछे गमन को सूर्य्य **(वि, राजति)** विशेष करके शोभित करता है, वैसे सूर्य्य आदि को प्रकाशित करता है, उसकी तुम सब उपासना करो॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने विचित्र और अनेक प्रकार के जगत् को सम्पूर्ण प्राणियों के सुख के लिये रचा उसी जगदीश्वर की आप लोग उपासना करो॥२॥

**पुनरीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर ईश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ प्र॒याण॒मन्व॒न्य इद्य॒युर्दे॒वा दे॒वस्य॑ महि॒मान॒मोज॑सा।**

**यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना॥ ३॥**

**यस्य। प्रऽयानम्। अनु। अन्ये। इत्। ययुः। देवाः। देवस्य। महिमानम्। ओजसा। यः। पार्थिवानि। विऽममे। सः। एतशः। रजांसि। देवः। सविता। महिऽत्वना॥ ३॥**

**पदार्थः-(यस्य)** जगदीश्वरस्य **(प्रयाणम्)** प्रकर्षेण याति गच्छति येन तत् **(अनु) (अन्ये) (इत्)** एव **(ययुः)** गच्छन्ति **(देवाः)** सूर्य्यादयः **(देवस्य)** सर्वेषां प्रकाशस्य **(महिमानम्) (ओजसा)** पराक्रमेण बलेन **(यः) (पार्थिवानि)** अन्तरिक्षे विदितानि कार्य्याणि। **पृथिवीत्यन्तरिक्षनामसु पठितम्।** (निघं० १.३) **(विममे)** विशेषेण मिमीते विधत्ते **(सः) (एतशः)** सर्वत्र प्राप्तः **(रजांसि)** लोकान् **(देवः)** सर्वसुखदाता **(सविता)** सकलैश्वर्य्यविधाता **(महित्वना)** महिम्ना॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य देवस्य प्रयाणं महिमानमन्वन्य इत् वस्वादयो देवा ययुः। य एतशस्सविता देवो महित्वनैजसा पार्थिवानि रजांसि विममे स एव सर्वैर्ध्येयोऽस्ति॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्यादीनां धर्तॄणां धर्त्ता दातॄणां दाता महतां महान् प्रकृत्याख्यात् कारणात् सर्वं जगद्विधत्ते यमनु सर्वे जीवन्ति तिष्ठन्ति च स एव सर्वजगद्विधाता ध्यातव्योऽस्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यस्य)** जिस जगदीश्वर **(देवस्य)** सब के प्रकाशक के **(प्रयाणम्)** अच्छी तरह चलते हैं, जिससे उस मार्ग और **(महिमानम्)** महिमा को **(अनु)** पश्चात् **(अन्ये, इत्)** और ही वसु आदि **(देवाः)** प्रकाश करने वाले सूर्य्य आदि **(ययुः)** चलते अर्थात् प्राप्त होते हैं और **(यः)** जो **(एतशः)** सर्वत्र व्याप्त **(सविता)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों का करने और **(देवः)** सम्पूर्ण सुखों का देने वाला **(महित्वना)** महिमा से **(ओजसा)** पराक्रम से और बल से **(पार्थिवानि)** अन्तरिक्ष में विदित कार्यों और **(रजांसि)** लोकों को **(विममे)** विशेष करके रचता है **(सः)** वही सब से ध्यान करने योग्य है॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य आदिकों के धारण करने वालों का धारण करने वाला और देने वालों का देने वाला, बड़ों और प्रकृतिरूप कारण से सम्पूर्ण जगत् को रचता है और जिसके पीछे अर्थात् आश्रय से सब जीवते और स्थित हैं, वही सम्पूर्ण जगत् का रचने वाला ईश्वर ध्यान करने योग्य है॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत यासि सवितस्त्रीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः समुच्यसि।**
**उत रात्रीमुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः॥ ४॥**

**उत। यासि। सवितरिति। त्रीणि। रोचना। उत। सूर्यस्य। रश्मिऽभिः। सम्। उच्यसि। उत। रात्रीम्। उभयतः। परि। ईयसे। उत। मित्रः। भवसि। देव। धर्मऽभिः॥ ४॥**

**पदार्थः-(उत)** अपि **(यासि)** प्राप्नोषि **(सवितः)** सकलजगदुत्पादक **(त्रीणि)** सूर्य्याचन्द्रविद्युदाख्यानि **(रोचना)** प्रकाशकानि **(उत) (सूर्य्यस्य) (रश्मिभिः)** किरणैः **(सम्) (उच्यसि)**

वदसि **(उत)** **(रात्रीम्)** **(उभयत:)** **(परि, ईयसे)** **(उत)** **(मित्र:)** सखा **(भवसि)** **(देव)** विद्वन् **(धर्मभि:)** धर्म्माचरणै:॥४॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव! यस्त्वमुत त्रीणि रोचना यास्युत सूर्य्यस्य रश्मिभि: समुच्यसि। उतोभयतो रात्रीं परीयस उत धर्म्मभिर्मित्रो भवसि स त्वमस्माभि: सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्सर्वेश्वरस्त्रीन् विद्युत्सूर्य्याचन्द्रान् महतो दीपान्निर्माय सर्वत्र व्याप्त: सर्वस्य सुहृत् सन् सूर्य्यादीनभिव्याप्य धृत्वा प्रकाशयति स एव सर्वथा पूज्योऽस्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(सवित:)** सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न करने वाले **(देव)** विद्वन्! जो आप **(उत)** निश्चय से **(त्रीणि)** सूर्य्य, चन्द्रमा और बिजुली नामक **(रोचना)** प्रकाशकों को **(यासि)** प्राप्त होते **(उत)** और **(सूर्य्यस्य)** सूर्य की **(रश्मिभि:)** किरणों से **(सम्, उच्यसि)** उत्तम प्रकार कहते हो **(उत)** और **(उभयत:)** दोनों ओर से **(रात्रीम्)** अन्धकार को **(परि, ईयसे)** दूर करते हो **(उत)** और **(धर्म्मभि:)** धर्म्माचरणों से **(मित्र:)** मित्र **(भवसि)** होते हो, वह आप हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो सब का स्वामी, ईश्वर तीन-बिजुली, सूर्य्य और चन्द्रमा रूप बड़े दीपों को रच के सर्वत्र व्याप्त और सब का मित्र हुआ और सूर्य्य आदि को अभिव्याप्त हो और धारण कर के प्रकाशित करता है, वही सब प्रकार पूज्य है अर्थात् उपासना करने योग्य है॥४॥

**पुनरीश्वरविषयमाह॥**

फिर ईश्वरविषय को कहते हैं॥

**उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभि:।**

**उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि श्यावाश्वस्ते सवित: स्तोममानशे॥५॥२४॥**

**उत। ईशिषे। प्रऽसवस्य। त्वम्। एक:। इत्। उत। पूषा। भवसि। देव। यामऽभि:। उत। इदम्। विश्वम्। भुवनम्। वि। राजसि। श्यावऽअश्व:। ते। सवितरिति। स्तोमम्। आनशे॥५॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** **(ईशिषे)** ऐश्वर्य्यं विदधासि **(प्रसवस्य)** प्रसूतस्य जगत: **(त्वम्)** **(एक:)** अद्वितीय: **(इत्)** एव **(उत)** अपि **(पूषा)** पुष्टिकर्ता **(भवसि)** **(देव)** सकलसुखप्रदात: **(यामभि:)** प्रहरै: **(उत)** **(इदम्)** **(विश्वम्)** **(भुवनम्)** **(वि)** **(राजसि)** **(श्यावाश्व:)** सूर्य्यलोक: **(ते)** तव **(सवित:)** सत्यव्यवहारे प्रेरक **(स्तोमम्)** प्रशंसाम् **(आनशे)** व्याप्नोति॥५॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव! ते य: श्यावाश्वो यामभि: स्तोममानशे तद्दृष्टान्तेनोतेदं विश्वं भुवनं त्वं वि राजसि उत पूषा भवसि उतैक इदेव प्रसवस्येशिषे॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्य महिमज्ञापनाय सूर्य्यादयो लोका दृष्टान्ता: सन्ति तमेवाखिलं परमैश्वर्य्यप्रदं यूयं ध्यायतेति॥५॥

अत्र सवित्रीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाशीतितमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** सत्य व्यवहार में प्रेरणा करने और **(देव)** सम्पूर्ण सुखों के देने वाले **(ते)** आपका जो **(श्यावाश्वः)** सूर्यलोक **(यामभिः)** प्रहरों से **(स्तोमम्)** प्रशंसा को **(आनशे)** व्याप्त होता है, उसके दृष्टान्त से **(उत)** भी **(इदम्)** इस **(विश्वम्)** समस्त **(भुवनम्)** भुवन को **(त्वम्)** आप **(वि, राजसि)** प्रकाशित करते हो **(उत)** और **(पूषा)** पुष्टि करने वाले **(भवसि)** होते हो **(उत)** और **(एकः)** द्वितीयरहित **(इत्)** ही **(प्रसवस्य)** उत्पन्न हुए जगत् के **(ईशिषे)** ऐश्वर्य का विधान करते हो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके महत्त्व के जनाने के लिये सूर्य्य आदि लोक दृष्टान्त हैं, उसी सम्पूर्ण परमैश्वर्य के देने वाले का तुम ध्यान करो॥५॥

इस सूक्त में सत्यव्यवहार में प्रेरणा करने वाले ईश्वर के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यासीवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य द्व्यशीतितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। सविता देवता। १ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ४, ९ निचृद्गायत्री। ३, ५, ६, ७ गायत्री। ८ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः क उपास्य इत्याह॥***

अब नव ऋचा वाले बयासीवें सूक्त का प्रारम्भ है उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तत्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒वस्य॒ भोज॑नम्। श्रेष्ठं॑ सर्व॒धात॑मं॒ तुरं॒ भग॑स्य धीमहि॥ १॥**

**तत्। स॒वि॒तुः। वृ॒णी॒म॒हे॒। व॒यम्। दे॒वस्य॑। भोज॑नम्। श्रेष्ठ॑म्। स॒र्व॒ऽधात॑मम्। तु॒र॑म्। भग॑स्य। धी॒म॒हि॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**सवितुः**) अन्तर्य्यामिणो जगदीश्वरस्य (**वृणीमहे**) स्वीकुर्महे (**वयम्**) (**देवस्य**) सकलप्रकाशकस्य (**भोजनम्**) पालनं भोक्तव्यं वा (**श्रेष्ठम्**) अतिशयेन प्रशस्तम् (**सर्वधातमम्**) यः सर्वं दधाति सोऽतिशयितस्तम् (**तुरम्**) अविद्यादिदोषनाशकं सामर्थ्यम् (**भगस्य**) सकलैश्वर्य्ययुक्तम् (**धीमहि**) दधीमहि॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं भगस्य सवितुर्देवस्य यच्छ्रेष्ठं भोजनं सर्वधातमं तुरं वृणीमहे धीमहि तद्यूयं स्वीकुरुत॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वोत्तमजगदीश्वरमुपास्यान्यस्योपासनं त्यजन्ति ते सर्वैश्वर्य्या भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**वयम्**) हम लोग (**भगस्य**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त (**सवितुः**) अन्तर्य्यामी (**देवस्य**) सम्पूर्ण के प्रकाशक जगदीश्वर का जो (**श्रेष्ठम्**) अतिशय उत्तम और (**भोजनम्**) पालन वा भोजन करने योग्य (**सर्वधातमम्**) सब को अत्यन्त धारण करने वाले (**तुरम्**) अविद्या आदि दोषों के नाश करने वाले सामर्थ्य को (**वृणीमहे**) स्वीकार करते और (**धीमहि**) धारण करते हैं (**तत्**) उसको तुम लोग स्वीकार करो॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सबसे उत्तम जगदीश्वर की उपासना करके अन्य की उपासना का त्याग करते हैं, वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अस्य॒ हि स्वय॑शस्तरं सवि॒तुः कच्च॒न प्रि॒यम्। न मि॒नन्ति॒ स्व॒राज्य॑म्॥ २॥**

**अस्य॑। हि। स्वय॑शःऽतरम्। स॒वि॒तुः। कत्। च॒न। प्रि॒यम्। न। मि॒नन्ति॑। स्व॒ऽराज्य॑म्॥ २॥**

**पदार्थः**-**(अस्य)** परमात्मनः **(हि)** **(स्वयशस्तरम्)** स्वकीयं यशं कीर्त्तिर्यस्य तदतिशयितम् **(सवितुः)** जगदीश्वरस्य **(कत्)** कदा **(चन)** अपि **(प्रियम्)** **(न)** निषेधे **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(स्वराज्यम्)** स्वकीयं राष्ट्रम्॥२॥

**अन्वयः**-ये ह्यस्य सवितुरीश्वरस्य स्वयशस्तरं प्रियं स्वराज्यं कच्चन न मिनन्ति ते धार्मिका जायन्ते॥२॥

**भावार्थः**-ये परमात्माज्ञानं हिंसन्ति ते यशस्विनो भूत्वा राज्यमाप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो **(हि)** निश्चय से **(अस्य)** इस परमात्मा **(सवितुः)** जगदीश्वर का **(स्वयशस्तरम्)** अपना यश जिसका वह अतिशयित **(प्रियम्)** अत्यन्त प्रिय **(स्वराज्यम्)** अपने राज्य को **(कत्, चन)** कभी **(न)** नहीं **(मिनन्ति)** नष्ट करते हैं, वे धार्म्मिक होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो परमात्मा के बीच अज्ञान का नाश करते हैं, वे यशस्वी होकर राज्य को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः। तं भागं चित्रमीमहे॥३॥**

**सः। हि। रत्नानि। दाशुषे। सुवाति। सविता। भगः। तम्। भागम्। चित्रम्। ईमहे॥३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(हि)** **(रत्नानि)** धनानि **(दाशुषे)** दात्रे **(सुवाति)** जनयति **(सविता)** प्रसवकर्त्ता **(भगः)** ऐश्वर्य्यवान् **(तम्)** **(भागम्)** भगानामिमम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(ईमहे)** प्राप्नुयाम जानीम वा॥३॥

**अन्वयः**-यः सविता भगो दाशुषे रत्नानि सुवाति तं भागं चित्रमीमहे स हि दातोदारोऽस्ति॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वरत्नप्रदं परमात्मानं सेवन्ते तेऽद्भुतमैश्वर्य्यमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जो **(सविता)** उत्पन्न करने वाला **(भगः)** ऐश्वर्य्यवान् परमात्मा **(दाशुषे)** दाताजन के लिये **(रत्नानि)** धनों को **(सुवाति)** उत्पन्न करता है **(तम्)** उस **(भागम्)** ऐश्वर्य्यसम्बन्धी **(चित्रम्)** अद्भुत को **(ईमहे)** प्राप्त होवें वा जानें और **(सः, हि)** वही उदार दाता है॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सम्पूर्ण रत्नों के देने वाले परमात्मा की सेवा करते हैं वे अद्भुत ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव॥४॥**

**अद्य। नः। देव। सवितरिति। प्रजाऽवत्। सावीः। सौभगम्। परा। दुःऽस्वप्न्यम्। सुव॥४॥**

**पदार्थ:-(अद्या)** अद्य। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घ:। **(न:)** अस्मभ्यमस्माकं वा **(देव)** प्रकाशमान **(सवित:)** सर्वैश्वर्य्यप्रदेश्वर **(प्रजावत्)** बह्व्य: प्रजा विद्यन्ते यस्य तत् **(सावी:)** जनय **(सौभगम्)** शौभनैश्वर्य्यस्य भागम् **(परा) (दु:ष्वप्न्यम्)** दुष्टेषु स्वप्नेषु भवं दु:खम् **(सुव)** प्रेरय॥४॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव! त्वं कृपया नोऽद्या प्रजावत्सौभगं सावीर्दु:ष्वप्न्यं परा सुव दूरं गमय॥४॥

**भावार्थ:**-ये परमेश्वरं प्रार्थयित्वा धर्म्यं पुरुषार्थं कुर्वन्ति ते महदैश्वर्या भूत्वा दु:खदारिद्र्यविरहा जायन्ते॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(सवित:)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य के देने वाले स्वामिन् **(देव)** शोभित! आप कृपा से **(न:)** हम लोगों के लिये वा हम लोगों के **(अद्या)** आज **(प्रजावत्)** बहुत प्रजायें विद्यमान जिसके उस **(सौभगम्)** सुन्दर ऐश्वर्य के भाग को **(सावी:)** उत्पन्न कीजिये और **(दु:ष्वप्न्यम्)** दुष्ट स्वप्नों में उत्पन्न दु:ख को **(परा, सुव)** दूर कीजिये॥४॥

**भावार्थ:**-जो परमेश्वर की प्रार्थना करके धर्म्मयुक्त पुरुषार्थ करते हैं, वे बहुत ऐश्वर्य्य वाले होकर दु:ख और दारिद्र्य से रहित होते हैं॥४॥

**मनुष्यै: किमर्थमीश्वर: प्रार्थनीय इत्याह॥**

मनुष्य किसलिये ईश्वर की प्रार्थना करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥५॥२५॥**

**विश्वा॑नि। दे॒व॒। स॒वि॒त॒:। दु॒:ऽइ॒तानि॑। परा॑। सु॒व॒। यत्। भ॒द्रम्। तत्। न॒:। आ। सु॒व॒॥५॥**

**पदार्थ:-(विश्वानि)** सर्वाणि **(देव)** सकलजगत्प्रकाशक **(सवित:)** सर्वविश्वोत्पादक **(दुरितानि)** दुष्टाचरणानि **(परा) (सुव)** दूरे प्रक्षिप **(यत्) (भद्रम्)** कल्याणकरम् **(तत्) (न:)** अस्मभ्यम् **(आ) (सुव)** समन्तात् प्रापय॥५॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव जगदीश्वर! विश्वानि दुरितानि त्वं परा सुव यद्भद्रं तन्न आ सुव॥५॥

**भावार्थ:**-हे परमेश्वर! भवान् कृपया यावन्त्यस्मासु दुष्टाचरणानि सन्ति तावन्ति पृथक्कृत्य धर्म्यगुणकर्म-स्वभावान् स्थापयतु॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(सवित:)** संपूर्ण संसार के उत्पन्न करने वाले **(देव)** और संपूर्ण संसार को प्रकाशित करने वाले जगदीश्वर! **(विश्वानि)** संपूर्ण **(दुरितानि)** दुष्ट आचरणों को आप **(परा, सुव)** दूर कीजिये और **(यत्)** जो **(भद्रम्)** कल्याणकारक है **(तत्)** उसको **(न:)** हम लोगों के लिये **(आ, सुव)** सब प्रकार से प्राप्त कीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-हे परमेश्वर! आप कृपा से जितने हम लोगों में दुष्ट आचरण हैं, उनको अलग करके धर्म्मयुक्त गुण, कर्म्म और स्वभावों को स्थापित कीजिये॥५॥

**अस्मिन् जगति मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

इस जगत् में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे। विश्वा वामानि धीमहि॥६॥**

**अनागसः। अदितये। देवस्य। सवितुः। सवे। विश्वा। वामानि। धीमहि॥६॥**

**पदार्थः-(अनागसः)** अनपराधाः **(अदितये)** मात्राद्याय **(देवस्य)** सर्वसुखदातुः **(सवितुः)** सकलैश्वर्य्यसम्पन्नस्य **(सवे)** जगद्रूपैश्वर्य्ये **(विश्वा)** सर्वाणि **(वामानि)** वननीयानि सम्भजनीयानि धनानि **(धीमहि)** धरेम॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽनागसो वयमदितये देवस्य सवितुः सवे विश्वा वामानि धीमहि तथा यूयमपि धरत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽस्मिन्नीश्वररचिते जगति सृष्टिक्रमेण विद्यया कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैवान्यैरपि साधनीयानि॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अनागसः)** अपराध से रहित हम लोग **(अदितये)** माता आदि के लिये **(देवस्य)** सर्व सुख देने वाले **(सवितुः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के **(सवे)** जगद्रूप ऐश्वर्य्य में **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(वामानि)** संभोग करने योग्य धनों को **(धीमहि)** धारण करें, वैसे आप लोग भी धारण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन इस ईश्वर से रचे हुए संसार में सृष्टिक्रम से विद्या के द्वारा कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही अन्य जनों को भी चाहिये कि सिद्ध करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे। सत्यसवं सवितारम्॥७॥**

**आ। विश्वऽदेवम्। सत्ऽपतिम्। सुऽउक्तैः। अद्य। वृणीमहे। सत्यऽसवम्। सवितारम्॥७॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(विश्वदेवम्)** विश्वस्य प्रकाशकम् **(सत्पतिम्)** सतां प्रकृत्यादीनां सत्पुरुषाणां पतिं पालकम् **(सूक्तैः)** सुष्ठु सत्यैर्वचनैर्वेदोक्तैर्वा **(अद्या)** अद्य। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वृणीमहे)** स्वीकुर्महे **(सत्यसवम्)** सत्योऽविनाशी सवः सामर्थ्ययोगो यस्य तम् **(सवितारम्)** सकलपदार्थनिर्मातारम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमद्या सूक्तैर्विश्वदेवं सत्पतिं सत्यसवं सवितारं परमात्मानमाऽऽवृणीमहे तथा यूयमपि वृणुत॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः परमेश्वरं विहाय कस्याप्यन्यस्याश्रयो नैव कर्त्तव्यः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(अद्या)** आज **(सूक्तैः)** उत्तम प्रकार कहे गये सत्य वचनों वा वेदोक्त वचनों से **(विश्वदेवम्)** संसार के प्रकाश करने और **(सत्पतिम्)** प्रकृति आदि पदार्थ और सत्पुरुषों के पालन करने वाले **(सत्यसवम्)** नहीं नाश होने वाला सामर्थ्ययोग्य जिसका उस **(सवितारम्)** सम्पूर्ण पदार्थों के बनाने वाले परमात्मा का **(आ, वृणीमहे)** स्वीकार करते हैं, वैसे आप लोग भी स्वीकार कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य का आश्रय नहीं करें॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन्। स्वाधीर्देवः सविता॥८॥**

**यः। इमे। उभे इति। अहनी इति। पुरः। एति। अप्रऽयुच्छन्। सुऽआधीः। देवः। सविता॥८॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(इमे)** **(उभे)** **(अहनी)** रात्रिदिने **(पुरः)** **(एति)** प्राप्नोति **(अप्रयुच्छन्)** प्रमादमकुर्वन् **(स्वाधीः)** सुष्ठ्वाधीयते येन सः **(देवः)** द्योतमानः **(सविता)** सत्कर्मसु प्रेरकः॥८॥

**अन्वयः**-योऽप्रयुच्छन् मनुष्यो यथा स्वाधीर्देवः सविता सत्ये वर्त्तते तथेमे उभे अहनी सत्येन पुर एति स एव भाग्यशाली भवति॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा परमेश्वरः स्वकीयान्नियमान् यथावद्रक्षति तथैव मनुष्या अपि सुनियमान् यथावद्रक्षन्तु॥८॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अप्रयुच्छन्)** प्रमाद को नहीं करता हुआ मनुष्य जैसे **(स्वाधीः)** उत्तम प्रकार स्थापन किया जाता है जिससे वह **(देवः)** प्रकाशमान **(सविता)** श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रेरणा करने वाला सत्य में वर्त्तमान है, वैसे **(इमे)** इन **(उभे)** दोनों **(अहनी)** रात्रि और दिनों को सत्य से **(पुरः)** आगे **(एति)** प्राप्त होता है, वही भाग्यशाली होता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे परमेश्वर अपने नियमों की यथायोग्य रक्षा करता है, वैसे ही मनुष्य भी श्रेष्ठ नियमों की यथावत् रक्षा करें॥८॥

**मनुष्यैः कः परमगुरुर्मन्यत इत्याह॥**

मनुष्यों से कौन परम गुरु माना जाता है, इस विषय को कहते है॥

**य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन। प्र च सुवाति सविता॥९॥२६॥**

**यः। इमा। विश्वा। जातानि। आऽश्रवयति। श्लोकेन। प्र। च। सुवाति। सविता॥९॥**

**पदार्थ:-(य:) (इमा)** इमानि **(विश्वा)** सर्वाणि प्रज्ञानानि **(जातानि) (आश्रावयति) (श्लोकेन)** वाचा। **श्लोक इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(प्र) (च) (सुवाति)** प्रेरयेत् **(सविता)** प्रेरक:॥९॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य: श्लोकेनेमा विश्वा जातान्याश्रावयति स च सविताऽस्मान् प्र सुवाति॥९॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो वेदद्वारा मनुष्येभ्य: सर्वा विद्या उपदिशति स एव परमगुरुर्मन्तव्य:॥९॥

अत्रेश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्व्यशीतितमं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(य:)** जो **(श्लोकेन)** वाणी से **(इमा)** इन **(विश्वा)** सम्पूर्ण प्रज्ञानों और **(जातानि)** उत्पन्न हुओं को **(आश्रावयति)** सब प्रकार से सुनाता है वह **(च)** और **(सविता)** प्रेरणा करने वाला हम लोगों को **(प्र, सुवाति)** प्रेरणा करे॥९॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर वेद के द्वारा मनुष्यों के लिये सम्पूर्ण विद्याओं का उपदेश करता है, वही परमगुरु मानने योग्य है॥९॥

इस सूक्त में ईश्वर और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बयासीवां सूक्त और छब्बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य त्र्यशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। पृथिवी देवता। १, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। २ स्वराट् त्रिष्टुप्। ३ भुरिक्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप्। ७ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ८, १० भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ९ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ मेघः कीदृशोऽस्तीत्याह॥***

अब दश ऋचा वाले तिरासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः स्तु॒हि प॒र्जन्यं॒ नम॒सा वि॑वास।**
**कनि॑क्रदद् वृ॒ष॒भो जी॒रदा॑नू॒ रेतो॑ दधा॒त्योष॑धीषु॒ गर्भ॑म्॥ १॥**

**अच्छ॑। व॒द॒। त॒वस॑म्। गीः॒ऽभिः। आ॒भिः। स्तु॒हि। प॒र्जन्य॑म्। नम॑सा। आ। वि॒वा॒स॒। कनि॑क्रदत्। वृ॒ष॒भः। जी॒रऽदा॑नुः। रेतः॑। द॒धा॒ति॒। ओष॑धीषु। गर्भ॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**वद**) (**तवसम्**) बलम् (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**आभिः**) वर्त्तमानाभिः (**स्तुहि**) प्रशंस (**पर्जन्यम्**) मेघम् (**नमसा**) अन्नाद्येन (**आ**) (**विवास**) विवसति (**कनिक्रदत्**) शब्दयन् (**वृषभः**) बलीवर्द इव (**जीरदानुः**) यो जीवयति (**रेतः**) उदकम्। **रेत इत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**दधाति**) (**ओषधीषु**) (**गर्भम्**)॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो वृषभ इव जीरदानुः कनिक्रदन्नमसाऽऽविवासौषधीषु रेतो गर्भं दधाति तं पर्जन्यमाभिर्गीर्भिरच्छा वद तवसं च स्तुहि॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वद्भ्यो मेघविद्या यथावद्विज्ञातव्या॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जो (**वृषभः**) थूहे वाले बैल के सदृश (**जीरदानुः**) जीवाने वाला (**कनिक्रदत्**) शब्द करता हुआ (**नमसा**) अन्न आदि के साथ (**आ, विवास**) सब ओर से बसता और [(**ओषधीषु**)] ओषधियों में (**रेतः**) जल रूप (**गर्भम्**) गर्भ को (**दधाति**) धारण करता है उस (**पर्जन्यम्**) मेघ को (**आभिः**) इन वर्तमान (**गीर्भिः**) वाणियों से (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**वद**) कहिये और (**तवसम्**) बल की (**स्तुहि**) प्रशंसा करिये॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों से मेघविद्या का यथावत् विज्ञान करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्यु॒त ह॑न्ति र॒क्षसो॒ विश्वं॑ बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात्।**
**उ॒ताना॑गा ईषते॒ वृष्ण्या॑वतो॒ यत्प॒र्जन्यः॑ स्त॒नय॑न् हन्ति॑ दु॒ष्कृतः॑॥ २॥**

**वि। वृक्षान्। हन्ति। उत। हन्ति। रक्षसः। विश्वम्। बिभाय। भुवनम्। महाऽवधात्। उत। अनागाः। ईषते। वृष्ण्यऽवतः। यत्। पर्जन्यः। स्तनयन्। हन्ति। दुःऽकृतः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**वृक्षान्**) छेत्तुमर्हान् (**हन्ति**) (**उत**) अपि (**हन्ति**) (**रक्षसः**) दुष्टाचारान् (**विश्वम्**) (**बिभाय**) बिभेति (**भुवनम्**) उदकम्। **भुवनमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**महावधात्**) महतो हननात् (**उत**) (**अनागाः**) न विद्यत आगोऽपराधो यस्मिन् (**ईषते**) हिनस्ति (**वृष्ण्यावतः**) वृष्ण्यानि वर्षितुं योग्यान्यभ्राणि विद्यन्ते येषु तान् (**यत्**) यः (**पर्जन्यः**) (**स्तनयन्**) शब्दयन् (**हन्ति**) (**दुष्कृतः**) दुष्टाचारान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा तक्षा वृक्षान् वि हन्त्युत न्यायकारी राजा येभ्यो विश्वं बिभाय तान् रक्षसो हन्ति यद्यः पर्जन्यः स्तनयन्महावधाद् भुवनं वर्षयति यथा चाऽनागा वृष्ण्यावत ईषत उत दुष्कृतो हन्ति तथैव मनुष्या वर्त्तन्ताम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पालनीयान् पालयन्ति हन्तव्यान् घ्नन्ति ते राजसत्तावन्तो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे बढ़ई (**वृक्षान्**) काटने योग्य वृक्षों को (**वि, हन्ति**) विशेष कर के काटता है (**उत**) और न्यायकारी राजा जिनसे (**विश्वम्**) सम्पूर्ण संसार (**बिभाय**) भय करता है, उन (**रक्षसः**) दुष्ट आचरण वालों का (**हन्ति**) नाश करता है और (**यत्**) जो (**पर्जन्यः**) मेघ (**स्तनयन्**) शब्द करता हुआ (**महावधात्**) बड़े हनन से (**भुवनम्**) जल को वर्षाता है और जैसे (**अनागाः**) नहीं अपराध जिसमें वह (**वृष्ण्यावतः**) वर्षने योग्य मेघ जिनमें उन का (**ईषते**) नाश करता है (**उत**) और (**दुष्कृतः**) दुष्ट कर्मों के करने वालों का (**हन्ति**) नाश करता है, वैसा ही मनुष्य वर्ताव करें॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य पालन करने योग्यों का पालन करते हैं और नाश करने योग्यों का नाश करते हैं, वे राजसत्ता से युक्त होते हैं॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**र॒थीव॒ कश॒याश्वाँ॑ अभिक्षि॒पन्ना॒विर्दू॒तान् कृ॑णुते व॒र्ष्याँ॒३॑ अह॑।**

**दू॒रात् सिं॒हस्य॑ स्त॒नथा॒ उदी॑रते॒ यत्प॒र्जन्यः॑ कृणु॒ते व॒र्ष्यं॒१॑ नभः॑॥ ३॥**

**र॒थीऽइ॑व। कश॑या। अश्वा॑न्। अ॒भि॒ऽक्षि॒पन्। आ॒विः। दू॒तान्। कृ॒णु॒ते। व॒र्ष्या॑न्। अह॑। दू॒रात्। सिं॒हस्य॑। स्त॒नथाः॑। उत्। ई॒र॒ते॒। यत्। प॒र्जन्यः॑। कृ॒णु॒ते। व॒र्ष्य॑म्। नभः॑॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**रथीव**) बहवो रथा विद्यन्ते यस्य तद्वत् (**कशया**) ताडनार्थरज्वा (**अश्वान्**) तुरङ्गान् (**अभिक्षिपन्**) आभिमुख्ये प्रेरयन् (**आविः**) प्राकट्ये (**दूतान्**) (**कृणुते**) करोति (**वर्ष्यान्**) वर्षासु साधून्

**(अह)** विनिग्रहे **(दूरात्)** **(सिंहस्य)** **(स्तनथाः)** शब्दयेः **(उत्)** **(ईरते)** कम्पयन्ति गच्छन्ति वा **(यत्)** यः **(पर्जन्यः)** मेघः **(कृणुते)** **(वर्ष्यम्)** वर्षासु भवम् **(नभः)** अन्तरिक्षम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यद्यः पर्जन्यः कशयाऽश्वानभिक्षिपन् रथीव वर्ष्यान् दूतानाविष्कृणुतेऽह ते दूरात् सिंहस्येवोदीरते पर्जन्यो वर्ष्यन्नभः कृणुते तं त्वं स्तनथाः॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सारथिरश्वान् यथेष्टं स्थानं नेतुं शक्नोति तथैव मेघो घनानीतस्ततो नयति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यत्)** जो **(पर्जन्यः)** मेघ **(कशया)** मारने के लिये रस्सी अर्थात् कोड़े से **(अश्वान्)** घोड़ों को **(अभिक्षिपन्)** सन्मुख लाता हुआ **(रथीव)** बहुत रथ वाले के सदृश **(वर्ष्यान्)** वर्षाओं में श्रेष्ठ **(दूतान्)** दूतों को **(आवि, कृणुते)** प्रकट करता है **(अह)** परतन्त्र करने में वे **(दूरात्)** दूर से **(सिंहस्य)** सिंह के सदृश **(उत्, ईरते)** कम्पाते वा चलते हैं और पर्जन्य **(वर्ष्यम्)** वर्षाओं में हुए **(नभः)** अन्तरिक्ष को **(कृणुते)** करता अर्थात् प्रकट करता है, उसको आप वर्षाओं में हुए **(नभः)** अन्तरिक्ष को **(कृणुते)** करता अर्थात् प्रकट करता है, उसको आप **(स्तनथाः)** पुकारिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सारथी घोड़ों को यथेष्ट स्थान में ले जाने को समर्थ होता है, वैसे ही मेघ जलों को इधर-उधर ले जाता है॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।**
**इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति॥४॥**

**प्र। वाताः। वान्ति। पतयन्ति। विऽद्युतः। उत्। ओषधीः। जिहते। पिन्वते। स्वरिति स्वः। इरा। विश्वस्मै। भुवनाय। जायते। यत्। पर्जन्यः। पृथिवीम्। रेतसा। अवति॥४॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** प्रकर्षेण **(वाताः)** वायवः **(वान्ति)** गच्छन्ति **(पतयन्ति)** **(विद्युतः)** **(उत्)** **(ओषधीः)** **(जिहते)** प्राप्नुवन्ति **(पिन्वते)** सेवन्ते **(स्वः)** अन्तरिक्षम् **(इरा)** अन्नादिकम्। **इरेत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं० १। ७) **(विश्वस्मै)** सर्वस्मै **(भुवनाय)** **(जायते)** **(यत्)** यः **(पर्जन्यः)** पालनजनकः **(पृथिवीम्)** **(रेतसा)** जलेन **(अवति)** रक्षति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्पर्जन्यो रेतसा पृथिवीमवति येन विश्वस्मै भुवनायेरा जायते घनाः स्वः पिन्वते येनौषधीरुज्जिहते यस्माद्विद्युतः पतयन्ति यत्र वाताः प्र वान्ति तं मेघं यथावद्यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्येन मेघेन सर्वस्य पालनं जायते तस्योन्नतिर्वृक्षप्रवापणेन वनरक्षणेन होमेन च संसाधनीया यतः सर्वस्य पालनं सुखेन जायेत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(पर्जन्यः)** पालनों को उत्पन्न करने वाला मेघ **(रेतसा)** जल से **(पृथिवीम्)** भूमि की **(अवति)** रक्षा करता है जिससे **(विश्वस्मै)** सम्पूर्ण **(भुवनाय)** भुवन के लिये **(इरा)** अन्न आदिक **(जायते)** उत्पन्न होता है और बादल **(स्वः)** अन्तरिक्ष का **(पिन्वते)** सेवन करते हैं और जिससे **(ओषधीः)** ओषधियों को **(उत्, जिहते)** उत्तमता से प्राप्त होते हैं जिससे **(विद्युतः)** बिजुलियां **(पतयन्ति)** पतन होती है, जहाँ **(वाताः)** पवन **(प्र)** अत्यन्त **(वान्ति)** चलते हैं, उस मेघ को यथावत् तुम विशेष जानो॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोगों को चाहिये कि जिस मेघ से सबका पालन होता है, उसकी वृद्धि वृक्षों के लगने, वनों की रक्षा करने और होम करने से सिद्ध करें, जिससे सब का पालन सुख से होवे॥४॥

**पुनः स मेघः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ व्र॒ते पृ॑थि॒वी नन्न॑मीति॒ यस्य॑ व्र॒ते श॒फव॒ज्जर्भु॑रीति।**

**यस्य॑ व्र॒त ओष॑धीर्वि॒श्वरू॑पाः॒ स नः॑ पर्जन्य॒ महि॒ शर्म॑ यच्छ॥५॥२७॥**

**यस्य॑। व्र॒ते। पृ॒थि॒वी। नन्न॑मीति। यस्य॑। व्र॒ते। श॒फऽव॑त्। जर्भु॑रीति। यस्य॑। व्र॒ते। ओष॑धीः। वि॒श्वऽरू॑पाः। सः। नः॒। प॒र्ज॒न्य॒। महि॑। शर्म॑। य॒च्छ॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** **(व्रते)** कर्म्मणि **(पृथिवी)** **(नंनमीति)** भृशं नमति **(यस्य)** **(व्रते)** **(शफवत्)** शफेन तुल्यम् **(जर्भुरीति)** भृशं धरति **(यस्य)** **(व्रते)** **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(विश्वरूपाः)** **(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(पर्जन्य)** पर्जन्यवद्वर्त्तमान **(महि)** महत् **(शर्म)** गृहम् **(यच्छ)**॥५॥

**अन्वयः**-हे पर्जन्य तद्वद्वर्त्तमान विद्वन्! यस्य मेघस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति यस्य व्रते विश्वरूपा ओषधीर्जायन्ते तद्विद्यया युक्तः स त्वं नो महि शर्म्म यच्छ॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि वर्षा न भवेयुस्तर्हि कस्यापि जीवनं न भवेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पर्जन्य)** मेघ के सदृश वर्तमान विद्वन्! **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म्म में **(पृथिवी)** भूमि **(नंनमीति)** अत्यन्त नम्र होती और **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म्म में **(शफवत्)** खुर के तुल्य **(जुर्भुरीति)** निरन्तर धारण करती है और **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म में **(विश्वरूपाः)** अनेक प्रकार की **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियां उत्पन्न होती हैं, उस मेघ की विद्या से युक्त **(सः)** वह आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(महि)** बड़े **(शर्म)** गृह को **(यच्छ)** दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वृष्टियां न होवें तो किसी का भी जीवन न होवे॥५॥

**पुनः सः मेघः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**दि॒वो नो॑ वृ॒ष्टिं म॑रुतो ररीध्वं॒ प्र पि॑न्वत॒ वृष्णो॒ अश्व॑स्य॒ धारा॑:।**
**अ॒र्वाङे॒तेन॑ स्तनयि॒त्नुनेह्य॒पो नि॑षि॒ञ्चन्नसु॑रः पि॒ता न॑:॥६॥**

दि॒व:। न॒:। वृ॒ष्टिम्। म॒रु॒त॒:। र॒री॒ध्व॒म्। प्र। पि॒न्व॒त॒। वृष्ण॑:। अश्व॑स्य। धारा॑:। अ॒र्वाङ्। ए॒तेन॑। स्त॒न॒यि॒त्नुना॑। आ। इ॒हि। अ॒प:। नि॒ऽसि॒ञ्चन्। असु॑र:। पि॒ता। न॒:॥६॥

**पदार्थः**-(**दिवः**) सूर्य्यात् (**नः**) अस्मभ्यम् (**वृष्टिम्**) (**मरुतः**) वायुवद्वर्त्तमाना मनुष्याः (**ररीध्वम्**) दत्त (**प्र**) (**पिन्वत**) सिञ्चत (**वृष्णः**) वर्षकस्य (**अश्वस्य**) महतः। **अश्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३.३) (**धाराः**) प्रवाहान् (**अर्वाङ्**) अधो वर्त्तमानः (**एतेन**) (**स्तनयित्नुना**) विद्युद्रूपेण (**आ**) (**इहि**) आगच्छन्ति। अत्र व्यत्ययः। (**अपः**) जलानि (**निषिञ्चन्**) नितरां सेचनं कुर्वन् (**असुरः**) मेघः। **असुर इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) (**पिता**) जनक इव पालकः (**नः**) अस्माकम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं नो दिवो वृष्टिं ररीध्वं वृष्णोऽश्वस्य धाराः प्र पिन्वत योऽर्वाङ् वर्त्तमान एतेन स्तनयित्नुनाऽपो निषिञ्चन्नसुरो नः पितेव पालको मेघ एहि तं यूयं विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यैः कर्मभिर्वृष्टिरधिका भवेत्तानि कर्म्माणि सेवध्वम्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) वायुवद्वर्त्तमान मनुष्यो! आप लोग (**नः**) हम लोगों के लिये (**दिवः**) सूर्य्य से (**वृष्टिम्**) वृष्टि को (**ररीध्वम्**) दीजिये तथा (**वृष्णः**) वर्षने वाले (**अश्वस्य**) बड़े मेघ के (**धाराः**) प्रवाहों को (**प्र, पिन्वत**) सींचिये और जो (**अर्वाङ्**) नीचे वर्त्तमान और (**एतेन**) इस (**स्तनयित्नुना**) बिजुली रूप से (**अपः**) जलों को (**निषिञ्चन्**) अत्यन्त सेचन करता हुआ (**असुरः**) मेघ (**नः**) हम लोगों के (**पिता**) उत्पन्न करने वाले पिता के सदृश पालन करने वाला (**आ, इहि**) प्राप्त होता है, उसको आप लोग विशेष करके जनिये॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जिन कर्म्मों से वृष्टि अधिक होवे, उन कर्म्मों का सेवन कीजिये॥६॥

**पुनः स मेघः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह मेघ क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒भि क्र॑न्द स्त॒नय॒ गर्भ॒मा धा॑ उद॒न्वता॒ परि॑ दीया॒ रथे॑न।**
**दृतिं॒ सु क॑र्ष॒ विषि॑तं॒ न्य॑ञ्चं स॒मा भ॑वन्तू॒द्वतो॑ निपा॒दा:॥७॥**

अ॒भि। क्र॒न्द॒। स्त॒नय॑। गर्भ॑म्। आ। धा॒:। उ॒द॒न्ऽवता॑। परि॑। दी॒य॒। रथे॑न। दृति॑म्। सु। क॒र्ष॒। विऽसि॑तम्। न्य॑ञ्चम्। स॒मा:। भ॒व॒न्तु॒। उ॒त्ऽव॑त:। नि॒ऽपा॒दा:॥७॥

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**क्रन्द**) क्रन्दति। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। (**स्तनय**) गर्जति (**गर्भम्**) (**आ**) (**धाः**) समन्ताद्दधाति (**उदन्वता**) बहूदकसहितेन (**परि**) सर्वतः (**दीया**) उपक्षयति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं, **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घश्च। (**रथेन**) रमणीयेन स्वरूपेण (**दृतिम्**) यो दृणाति तं दृतिरिव जलेन

पूर्णम् **(सु, कर्ष)** विलिखति **(विषितम्)** **(न्यञ्चम्)** यो निश्चितमञ्चति तम् **(समाः)** वर्षाणि **(भवन्तु)** **(उद्वतः)** ऊर्ध्वदेशस्थाः **(निपादाः)** निश्चिता निम्ना वा पादा अंशा येषान्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मेघो गर्भमाऽऽधा उदन्वता रथेनाऽभि क्रन्द स्तनय दृतिं सु कर्ष दुःखानि परि दीया विषितं न्यञ्चं सु कर्ष येनोद्वतो निपादाः समा भवन्तु तं विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-यो हि जलेन विश्वं पुष्यति दुःखं नाशयति फलानि जनयति स मेघो विश्वम्भरोऽस्तीति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेघ **(गर्भम्)** गर्भ को **(आ, धाः)** चारों ओर से धारण करता और **(उदन्वता)** बहुत जल के सहित **(रथेन)** सुन्दर स्वरूप से **(अभि)** सम्मुख **(क्रन्द)** शब्द करता और **(स्तनय)** गर्जता है **(दृतिम्)** फाड़ने वाले के सदृश जल से पूर्ण को **(सु, कर्ष)** विशेष करके खोदता और दुःखों का **(परि)** सब प्रकार से **(दीया)** नाश करता और **(विषितम्)** बंधे **(न्यञ्चम्)** निश्चित सेवा करते हुए को विशेष करके लिखता अर्थात् चेष्टा में लाता है तथा जिससे हम लोगों के **(उद्वतः)** ऊर्ध्वस्थान में वर्त्तमान **(निपादाः)** निश्चित वा नाचे हैं अंश जिनके ऐसे **(समाः)** वर्ष **(भवन्तु)** होवें, उसको जानिये॥७॥

**भावार्थः**-जो निश्चय[पूर्वक] जल से संसार को पुष्ट करता है और दुःख का नाश करता तथा फलों को उत्पन्न करता है, वह मेघ विश्वंभर है, ऐसा जानना चाहिये॥७॥

**अथ मेघनिमित्तानि कानि सन्तीत्याह॥**

अब मेघनिमित्त कौन हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**म॒हान्तं॒ कोश॒मुद॑चा॒ नि षि॑ञ्च॒ स्यन्द॑न्तां कु॒ल्या विषि॑ताः पु॒रस्ता॑त्।**

**घृ॒तेन॒ द्यावा॑पृथि॒वी व्यु॑न्धि सुप्रपा॒णं भ॑वत्व॒घ्न्याभ्यः॑॥८॥**

**म॒हान्त॑म्। कोश॑म्। उत्। अ॒च॒। नि। सि॒ञ्च॒। स्यन्द॑न्ताम्। कु॒ल्याः। विऽसि॑ताः। पु॒रस्ता॑त्। घृ॒तेन॑। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। वि। उ॒न्धि॒। सु॒ऽप्र॒पा॒नम्। भ॒व॒तु॒। अ॒घ्न्याभ्यः॑॥८॥**

**पदार्थः**-**(महान्तम्)** महत्परिमाणम् **(कोशम्)** धनादीनां कोश इव जलेन पूर्णं मेघम्। **कोश इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(उत्)** **(अचा)** ऊर्ध्वं गच्छति **(नि)** नितराम् **(सिञ्च)** सिञ्चति। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। **(स्यन्दन्ताम्)** प्रस्रवन्तु **(कुल्याः)** निर्म्मिता जलगमनमार्गाः **(विषिताः)** व्याप्ताः **(पुरस्तात्)** **(घृतेन)** जलेन। **घृतमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(द्यावापृथिवी)** भूम्यन्तरिक्षे **(वि)** **(उन्धि)** विशेषेणोन्दयति क्लेदयति **(सुप्रपाणम्)** सुष्ठु प्रकर्षेण पिबन्ति यस्मिन् स जलाशयः **(भवतु)** **(अघ्न्याभ्यः)** गोभ्यः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्यो महान्तं कोशमुदचा येन पृथिवीं नि षिञ्च पुरस्ताद्विषिताः कुल्याः स्यन्दन्तां यो घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सोऽघ्न्याभ्यः सुप्रपाणं भवत्विति वित्त॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत् सूर्य्यो वायुश्च मेघनिमित्तानि सन्ति तानि यथवत्प्रयोजयत यतो वर्षणेन गवादीनां यथावत् पालनं स्यात्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य **(महान्तम्)** बड़े परिमाण वाले **(कोशम्)** घनादिकों के कोश के समान जल से परिपूर्ण मेघ को **(उत्) (अचा)** ऊपर प्राप्त होता है और जिससे पृथिवी को **(नि, सिञ्च)** निरन्तर सींचता है और **(पुरस्तात्)** प्रथम **(विषिताः)** व्याप्त **(कुल्याः)** रचे गये जल के निकलने के मार्ग **(स्यन्दन्ताम्)** बहें और जो **(घृतेन)** जल से **(द्यावापृथिवी)** पृथिवी और अन्तरिक्ष को **(वि, उन्धि)** अच्छे प्रकार गीला करता है वह **(अघ्न्याभ्यः)** गौओं के लिये **(सुप्रपाणम्)** उत्तम प्रकार प्रकर्षता से पीते हैं जिसमें ऐसा जलाशय **(भवतु)** हो, यह जानो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली, सूर्य्य और वायु मेघ के कारण हैं, उनको यथायोग्य प्रयुक्त कीजिये जिससे वृष्टि द्वारा गौ आदि पशुओं का यथावत् पालन होवे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।**

**प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥९॥**

**यत्। पर्जन्य। कनिक्रदत्। स्तनयन्। हंसि। दुःऽकृतः। प्रति। इदम्। विश्वम्। मोदते। यत्। किम्। च। पृथिव्याम्। अधि॥९॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(पर्जन्य)** पर्जन्यो मेघः **(कनिक्रदत्)** भृशं शब्दयन् **(स्तनयन्)** गर्जनं कुर्वन् **(हंसि)** अत्र पुरुषव्यत्ययः। **(दुष्कृतः)** ये दुःखेन कुर्वन्ति तान् **(प्रति) (इदम्)** वर्त्तमानम् **(विश्वम्)** सर्वं जगत् **(मोदते) (यत्) (किम्) (च) (पृथिव्याम्) (अधि)** उपरि॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् दुष्कृतो हंसि यत्किं चेदं पृथिव्यामधि विश्वं वर्त्तते तत्सर्वं येन मेघेन प्रति मोदते स महानुपकार्यस्ति॥९॥

**भावार्थः**-मेघेनैव सर्वाणि भूतान्यानन्दन्ति तस्मादिदं मेघनिर्माणाख्यं कर्म परमेश्वरस्य धन्यवादार्हमस्तीति सर्वे विजानन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(पर्जन्य)** मेघ **(कनिक्रदत्)** अत्यन्त शब्द करता तथा **(स्तनयन्)** गर्जन करता हुआ **(दुष्कृतः)** दुःख से करने वालों का **(हंसि)** नाश करता है **(यत्)** जो **(किम्)** कुछ **(च)** भी **(इदम्)** यह वर्त्तमान **(पृथिव्याम्)** पृथिवी **(अधि)** पर **(विश्वम्)** सम्पूर्ण जगत् वर्त्तमान है वह जिस मेघ से **(प्रति, मोदते)** आनन्दित होता है, वह बड़ा उपकारी है॥९॥

**भावार्थः**-मेघ से ही सम्पूर्ण प्राणी आनन्दित होते हैं, इससे यह मेघ को बनानारूप कर्म्म परमेश्वर का धन्यवाद के योग्य है, यह सब लोग जानो॥९॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।**

**अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम्॥१०॥२८॥**

**अवर्षीः। वर्षम्। उत्। ऊँ इति। सु। गृभाय। अकः। धन्वानि। अतिऽएतवै। ऊँ इति। अजीजनः। ओषधीः। भोजनाय। कम्। उत। प्रऽजाभ्यः। अविदः। मनीषाम्॥१०॥**

**पदार्थः-(अवर्षीः)** वर्षयति **(वर्षम्) (उत्) (उ) (सु)** शोभने **(गृभाय)** गृहाण **(अकः)** कुर्याः **(धन्वानि)** अविद्यमानोदकादिदेशान् **(अत्येतवै)** एतुं प्राप्तुम् **(उ) (अजीजनः)** जनयः **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(भोजनाय) (कम्) (उत) (प्रजाभ्यः) (अविदः)** वेत्सि **(मनीषाम्)** प्रज्ञाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् वैद्य! यथा सूर्यो वर्षमवर्षीस्तथा त्वमुदु गृभाय धन्वान्यत्येतवै स्वकः। उ ओषधीर्भोजनायाऽजीजनः। उत प्रजाभ्यः कमविद उ मनीषाम्॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा जगदीश्वरो वर्षाभ्यः प्रजाहितं जनयति तथैव धार्मिको राजा प्रजाभ्यः सुखमध्यापकश्च प्रज्ञां जनयेदिति॥१०॥

अत्र पर्जन्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्र्यशीतितमं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन् वैद्य! जैसे सूर्य्य **(वर्षम्)** वृष्टि को **(अवर्षीः)** वर्षाता है, वैसे आप **(उत्, गृभाय)** उत्कृष्टता से ग्रहण कीजिये तथा **(धन्वानि)** जल आदि से रहित देशों को **(अत्येतवै)** प्राप्त होने के लिये **(सु)** उत्तम प्रकार **(अकः)** करिये **(उ)** और **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियों को **(भोजनाय)** भोजन के लिये **(अजीजनः)** उत्पन्न कीजिये **(उत)** और भी **(प्रजाभ्यः)** प्रजाओं के लिये **(कम्)** किसको **(अविदः)** जानते हो (उ) क्या **(मनीषाम्)** बुद्धि को॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे जगदीश्वर वर्षाओं से प्रजा के हित को सिद्ध करता है, वैसे ही धार्मिक राजा प्रजाओं के लिये सुख और अध्यापक बुद्धि को उत्पन्न करे॥१०॥

इस सूक्त में मेघ और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तिरासीवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ त्र्यृचस्य चतुरशीतितमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः पृथिवी देवता। १, ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। २ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले चौरासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि।**

**प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि॥ १॥**

**बट्। इत्था। पर्वतानाम्। खिद्रम्। बिभर्षि। पृथिवि। प्र। या। भूमिम्। प्रवत्वति। मह्ना। जिनोषि। महिनि॥ १॥**

**पदार्थः-(बट्)** सत्यम्। **बडिति सत्यनामसु पठितम्।** (निघं०३.१०) **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(पर्वतानाम्)** मेघानाम् **(खिद्रम्)** दैन्यम् **(बिभर्षि) (पृथिवी)** भूमिवद्वर्त्तमाने **(प्र) (या) (भूमिम्) (प्रवत्वति)** प्रवणदेशयुक्ते **(मह्ना)** महत्त्वेन **(जिनोषि) (महिनि)** पूज्ये॥१॥

**अन्वयः**-हे प्रवत्वति महिनि पृथिवीव वर्त्तमाने! या त्वं पर्वतानां मह्ना भूमिं धरसीत्था बट् सत्यं यतो बिभर्षि खिद्रं प्र जिनोषि तस्मात् सत्कर्त्तव्याऽसि॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा भूमौ शैलाः स्थिरा वर्त्तन्ते तथा येषां हृदि धर्म्मादयः सद्व्यवहारा वर्त्तन्ते ते पूज्या जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे **(प्रवत्वति)** अत्यन्त नीचे स्थान से युक्त **(महिनि)** आदर करने योग्य **(पृथिवि)** भूमि के सदृश वर्त्तमान! **(या)** जो तुम **(पर्वतानाम्)** मेघों के **(मह्ना)** महत्त्व से **(भूमिम्)** भूमि को धारण करती **(इत्था)** इस प्रकार से **(बट्)** सत्य को जिस कारण **(बिभर्षि)** धारण करती हो तथा **(खिद्रम्)** दीनता को **(प्र, जिनोषि)** विशेष करके नष्ट करती हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे भूमि पर पर्वत स्थिर होकर वर्त्तमान हैं, वैसे जिनके हृदय में धर्म आदि श्रेष्ठ व्यवहार हैं, वे आदर करने योग्य होते हैं॥१॥

**पुनः स्त्री कीदृशी भवेदित्याह॥**

फिर स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति ष्टोभन्त्यक्तुभिः।**

**प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि॥ २॥**

**स्तोमासः। त्वा। विऽचारिणि। प्रति। स्तोभन्ति। अक्तुऽभिः। प्र। या। वाजम्। न। हेषन्तम्। पेरुम्। अस्यसि। अर्जुनि॥ २॥**

**पदार्थः**-(**स्तोमासः**) स्तुतिकर्त्तारः (**त्वा**) त्वाम् (**विचारिणि**) विचारितुं शीलं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (**प्रति**) (**स्तोभन्ति**) स्तुवन्ति (**अक्तुभिः**) रात्रिभिः (**प्र**) (**या**) (**वाजम्**) वेगम् (**न**) इव (**हेषन्तम्**) शब्दं कुर्वन्तम् (**पेरुम्**) पूरकम् (**अस्यसि**) प्रक्षिपसि (**अर्जुनि**) उषर्वद्वर्त्तमाने॥२॥

**अन्वयः**-हे अर्जुनि विचारिणि! या त्वं वाजं न हेषन्तं पेरुं प्राऽस्यसि तां त्वा स्तोमासोऽक्तुभिः प्रति ष्टोभन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा विद्वांसः स्तुत्यान् स्तुवन्ति तथैव विदुषी स्त्री प्रशंसनीयं प्रशंसति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अर्जुनि**) उषा के समान वर्त्तमान (**विचारिणि**) विचार करने वाली स्त्री! (**या**) जो तू (**वाजम्**) वेग के (**न**) समान (**हेषन्तम्**) शब्द करते हुए (**पेरुम्**) पूर्ण करने वाले को (**प्र, अस्यसि**) फेंकती है उस (**त्वा**) तेरी (**स्तोमासः**) स्तुति करने वाले जन (**अक्तुभिः**) रात्रियों से (**प्रति, स्तोभन्ति**) सब प्रकार स्तुति करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे विद्वान् जन स्तुति करने योग्य जनों की स्तुति करते हैं, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री प्रशंसा करने योग्य की प्रशंसा करती है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**दृळ्हा चि॒द्या वन॒स्पती॑न् क्ष्म॒या दर्ध॒र्ष्योज॑सा।**

**यत्ते॑ अ॒भ्रस्य॑ वि॒द्युतो॑ दि॒वो वर्ष॑न्ति वृ॒ष्टयः॑॥३॥२९॥**

**दृळ्हा। चि॒त्। या। वन॒स्पती॑न्। क्ष्म॒या। दर्धर्षि। ओज॑सा। यत्। ते॒। अ॒भ्रस्य॑। वि॒ऽद्युतः॑। दि॒वः। वर्ष॑न्ति। वृ॒ष्टयः॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**दृळ्हा**) (**चित्**) (**या**) (**वनस्पतीन्**) (**क्ष्मया**) पृथिव्या (**दर्धर्षि**) भृशं दधासि (**ओजसा**) (**यत्**) या (**ते**) तव (**अभ्रस्य**) घनस्य (**विद्युतः**) (**दिवः**) दिव्याः (**वर्षन्ति**) (**वृष्टयः**)॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रि! या दृळ्हा त्वं क्ष्मया वनस्पतीन् दर्धर्षि यद्याश्चित्तेऽभ्रस्य दिवो विद्युतो वृष्टयो वर्षन्ति तास्त्वमोजसा धर॥३॥

**भावार्थः**-या स्त्री पृथिवीवत् क्षमान्विता पुत्रपौत्रादियुक्ता भवति सा वृष्टिवत्सुखवर्षिका भवतीति॥३॥

अत्र मेघविद्वत्स्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुरशीतितमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे स्त्रि! (**या**) जो (**दृळ्हा**) दृढ़ तुम (**क्ष्मया**) पृथिवी से (**वनस्पतीन्**) वृक्षादिकों को (**दर्धर्षि**) अत्यन्त धारण करती हो और (**यत्**) जो (**चित्**) निश्चित (**ते**) आप के (**अभ्रस्य**) घन की

**(दिवः)** अन्तरिक्ष में हुई **(विद्युतः)** बिजुली और **(वृष्टयः)** वर्षायें **(वर्षन्ति)** वर्षती हैं, उनको तुम **(ओजसा)** बल से धारण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्री पृथिवी के सदृश क्षमा से युक्त और पुत्र-पौत्रादि से युक्त होती है, वह वृष्टि के सदृश सुखों को वर्षाने वाली होती है॥३॥

इस सूक्त में मेघ, विद्वान् और स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौरासीवां सूक्त और उनतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य पञ्चाशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। वरुणो देवता। १, २ विराड्त्रिष्टुप्। ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब आठ ऋचा वाले पचासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताय।**

**वि यो जघान शमितेव चर्मोपस्तिरे पृथिवीं सूर्याय॥ १॥**

**प्र। सम्ऽराजे। बृहत्। अर्च। गभीरम्। ब्रह्म। प्रियम्। वरुणाय। श्रुताय। वि। यः। जघान। शमिताऽइव। चर्म। उपऽस्तिरे। पृथिवीम्। सूर्याय॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सम्राजे**) यः सम्यग्राजते तस्मै (**बृहत्**) महत् (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**गभीरम्**) अगाधम् (**ब्रह्म**) धनमन्नं वा (**प्रियम्**) यत्पृणाति (**वरुणाय**) श्रेष्ठाय (**श्रुताय**) विषिद्धकीर्तये (**वि**) (**यः**) (**जघान**) हन्ति (**शमितेव**) यथा यज्ञमयः (**चर्म**) (**उपस्तिरे**) आस्तरणे (**पृथिवीम्**) (**सूर्य्याय**) सवित्रे॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! यः सवितेव दुष्टान् वि जघान सूर्य्यायोपस्तिरे चर्म पृथिवीं शमितेव प्राप्नोति तथा त्वं वरुणाय श्रुताय सम्राजे बृहद्गभीरं प्रियं ब्रह्म प्रार्चा॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या यजमानवद्राजानं सुखयन्ति ते महदैश्वर्य्यं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! (**यः**) जो रचने वाले के सदृश दुष्टों का (**वि, जघान**) नाश करता और (**सूर्य्याय**) रचने वाले के लिये (**उपस्तिरे**) बिछौने पर (**चर्म**) चमड़े और (**पृथिवीम्**) पृथिवी को (**शमितेव**) जैसे यज्ञमय व्यवहार प्राप्त होता है, वैसे आप (**वरुणाय**) श्रेष्ठ (**श्रुताय**) विशेष करके सिद्ध यश वाले तथा (**सम्राजे**) उत्तम प्रकार शोभित के लिये (**बृहत्**) बड़े (**गभीरम्**) थाहरहित (**प्रियम्**) जो प्रसन्न करता उस (**ब्रह्म**) धन वा अन्न का (**प्र, अर्चा**) सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यजमान के सदृश राजा को सुखी करते हैं, वे बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्स परमेश्वरः किं कृतवानित्याह॥**

फिर उस परमेश्वर ने क्या किया इस विषय को कहते हैं॥

**वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान् वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु।**

**हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्व१ग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ॥२॥**

**वनेषु। वि। अन्तरिक्षम्। ततान। वाजम्। अर्वत्ऽसु। पयः। उस्रियासु। हृत्ऽसु। क्रतुम्। वरुणः। अप्ऽसु। अग्निम्। दिवि। सूर्यम्। अदधात्। सोमम्। अद्रौ॥२॥**

**पदार्थः**-(**वनेषु**) किरणेषु जङ्गलेषु वा (**वि**) (**अन्तरिक्षम्**) जलम् (**ततान**) तनोति (**वाजम्**) वेगम् (**अर्वत्सु**) अश्वेषु (**पयः**) उदकं रसं वा (**उस्रियासु**) पृथिवीषु (**हृत्सु**) हृदयेषु (**क्रतुम्**) प्रज्ञानम् (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**अप्सु**) आकाशप्रदेशेषु (**अग्निम्**) पावकम् (**दिवि**) प्रकाशे (**सूर्य्यम्**) (**अदधात्**) दधाति (**सोमम्**) रसम् (**अद्रौ**) मेघे॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो वनेष्वन्तरिक्षमर्वत्सु वाजमुस्रियासु पयो हृत्सु क्रतुमप्स्वग्निं दिवि सूर्य्यमद्रौ सोममदधात्स वरुणः सर्वं जगद्वि ततान॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! येन जगदीश्वरेण सर्वं जगद् विस्तारितं तमेव सततं ध्यायन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर (**वनेषु**) किरणों वा जंगलों में (**अन्तरिक्षम्**) जल को (**अर्वत्सु**) घोड़ों में (**वाजम्**) वेग को और (**उस्रियासु**) पृथिवियों में (**पयः**) जल वा रस को (**हृत्सु**) हृदयों में (**क्रतुम्**) विशेष ज्ञान को (**अप्सु**) आकाश प्रदेशों में (**अग्निम्**) अग्नि को (**दिवि**) प्रकाश में (**सूर्य्यम्**) सूर्य्य को (**अद्रौ**) मेघ में (**सोमम्**) रस को (**अदधात्**) धारण करता है वह (**वरुणः**) श्रेष्ठ परमात्मा सम्पूर्ण जगत् को (**वि, ततान**) विस्तृत करता है॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जिस जगदीश्वर ने सम्पूर्ण जगत् को विस्तृत किया, उसी का निरन्तर ध्यान करो॥२॥

**पुनरीश्वरः किं करोतीत्याह॥**

फिर ईश्वर क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**नीचीनबारं वरुणः कवन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम्।**
**तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम॥३॥**

**नीचीनऽबारम्। वरुणः। कवन्धम्। प्र। ससर्ज। रोदसी इति। अन्तरिक्षम्। तेन। विश्वस्य। भुवनस्य। राजा। यवम्। न। वृष्टिः। वि। उनत्ति। भूम॥३॥**

**पदार्थः**-(**नीचीनबारम्**) यो नीचप्रदेशे वृष्टिं करोति तम् (**वरुणः**) परमेश्वरः (**कवन्धम्**) मेघम् (**प्र**) (**ससर्ज**) सृजति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अन्तरिक्षम्**) जलम् (**तेन**) (**विश्वस्य**) सर्वस्य (**भुवनस्य**) ब्रह्माण्डस्य (**राजा**) प्रकाशकः (**यवम्**) यवादिधान्यम् (**न**) इव (**वृष्टिः**) (**वि**) (**उनत्ति**) क्लेदयति (**भूम**) भवेम॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वरुणो नीचीनबारं कवन्धं रोदसी अन्तरिक्षं प्र ससर्ज विश्वस्य भुवनस्य राजा वृष्टिर्यवं न व्युनत्ति तेन सह वयं सुखिनो भूम॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं जगत्स्रष्टारं जगदीश्वरमुपास्य राजानो भूत्वा शस्यादि मेघवत्प्रजाः पालयत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(वरुणः)** श्रेष्ठ परमेश्वर **(नीचीनबारम्)** नीचे के स्थानों में वृष्टि करने वाले **(कवन्धम्)** मेघ को और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी तथा **(अन्तरिक्षम्)** जल को **(प्र, ससर्ज)** उत्तमता से उत्पन्न करता है और **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण **(भुवनस्य)** ब्रह्माण्ड का **(राजा)** प्रकाशक परमात्मा **(वृष्टिः)** वृष्टि **(यवम्)** यव आदि धान्य को **(न)** जैसे वैसे **(वि, उनत्ति)** विशेष करके गीला करता है **(तेन)** उससे हम लोग सुखी **(भूम)** होवें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जगत् के रचने वाले जगदीश्वर की उपासना करके और राजा होकर जैसे धान्य आदि का मेघ वैसे प्रजाओं का पालन कीजिये॥३॥

**अथ राजानः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

अब राजाजन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उनत्ति भूमिं पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित्।**
**समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः॥४॥**

**उनत्ति। भूमिम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। यदा। दुग्धम्। वरुणः। वष्टि। आत्। इत्। सम्। अभ्रेण। वसत। पर्वतासः। तविषीऽयन्तः। श्रथयन्त। वीराः॥४॥**

**पदार्थः**-**(उनत्ति)** आर्द्रीकरोति **(भूमिम्)** **(पृथिवीम्)** विस्तीर्णम् **(उत)** **(द्याम्)** प्रकाशम् **(यदा)** **(दुग्धम्)** **(वरुणः)** वायुरिव राजा **(वष्टि)** कामयते **(आत्)** **(इत्)** एव **(सम्)** **(अभ्रेण)** मेघेन। **अभ्र इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(वसत)** **(पर्वतासः)** मेघाः **(तविषीयन्तः)** सेनां कामयमानाः **(श्रथयन्त)** हिंसत **(वीराः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यदा वरुणोऽभ्रेण पृथिवीं भूमिमुत द्यां समुनत्त्यादिद्वरुणो दुग्धं वष्टि। हे तविषीयन्तो वीरा! यूयं पर्वतास इवात्र वसत श्रथयन्त॥४॥

**भावार्थः**-त एव राजानः श्रेष्ठाः सन्ति ये प्रजाहितं कामयन्ते यथा मेघाः सर्वेषां सुखानि वर्षयन्ति तथैव नृपाः प्रजानां कामानलङ्कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यदा)** जब **(वरुणः)** वायु के सदृश राजा **(अभ्रेण)** मेघ से **(पृथिवीम्)** विस्तीर्ण **(भूमिम्)** भूमि को और **(उत)** भी **(द्याम्)** प्रकाश को **(सम्, उनत्ति)** गीला करता है **(आत्)** उसके अनन्तर **(इत्)** ही वायु के सदृश राजा **(दुग्धम्)** दुग्ध की **(वष्टि)** कामना करता है और हे **(तविषीयन्तः)** सेना की कामना करते हुए **(वीराः)** शूरवीरो! आप लोग **(पर्वतासः)** मेघों के सदृश यहाँ **(वसत)** वास करिये और **(श्रथयन्त)** अर्थात् शत्रुओं का नाश करिये॥४॥

**भावार्थः**-वे ही राजा श्रेष्ठ हैं, जो प्रजा के हित की कामना करते हैं और जैसे मेघ सब के सुखों की वृष्टि करते हैं, वैसे ही राजा लोग प्रजाओं की कामनाओं को पूर्ण करें॥४॥

**अथ विद्वदीश्वरौ किं कुरुत इत्याह॥**

अब विद्वान् और ईश्वर क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्।**
**मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण॥५॥३०॥**

**इमाम्। ऊँ इति। सु। आसुरस्य। श्रुतस्य। महीम्। मायाम्। वरुणस्य। प्र। वोचम्। मानेनऽइव। तस्थिऽवान्। अन्तरिक्षे। वि। यः। ममे। पृथिवीम्। सूर्येण॥५॥**

**पदार्थः**-**(इमाम्)** (उ) **(सु)** **(आसुरस्य)** मेघभवस्य **(श्रुतस्य)** **(महीम्)** पूज्यां वाणीम्। **महीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(मायाम्)** प्रज्ञाम् **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(प्र)** **(वोचम्)** उपदिशेयम् **(मानेनेव)** सत्कारेणेव **(तस्थिवान्)** यस्तिष्ठति **(अन्तरिक्षे)** आकाशे **(वि)** **(यः)** **(ममे)** सृजति **(पृथिवीम्)** **(सूर्य्येण)** सवित्रा सह॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमिमां श्रुतस्याऽऽसुरस्य वरुणस्य महीं मायां युष्मदर्थं सु प्र वोचमु यस्तस्थिवान् मानेनेवान्तरिक्षे सूर्य्येण सह पृथिवीं वि ममे तमीश्वरं वि जानीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो मेघविद्याविदो वाणीं प्रज्ञां च प्रशंसति यश्च परमेश्वरो सर्वं जगद्रचयति तौ सदा सत्कुरुत॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(इमाम्)** इस **(श्रुतस्य)** सुने गये **(आसुरस्य)** मेघ में उत्पन्न हुए और **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ की **(महीम्)** आदर करने योग्य वाणी और **(मायाम्)** बुद्धि का आप लोगों के लिये **(सु, प्र, वोचम्)** उत्तम प्रकार उपदेश करूं **(उ)** और **(यः)** जो **(तस्थिवान्)** ठहरने वाला **(मानेनेव)** सत्कार से जैसे वैसे **(अन्तरिक्षे)** आकाश में **(सूर्य्येण)** सूर्य्य के साथ **(पृथिवीम्)** पृथिवी को **(वि,ममे)** विस्तारता है, उसको ईश्वर जानो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो मेघ की विद्या के जानने वाले की वाणी और बुद्धि की प्रशंसा करता है और जो परमेश्वर सम्पूर्ण जगत् को रचता है, उन दोनों का सदा सत्कार करो॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किङ्कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष।**
**एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीरवनयः समुद्रम्॥६॥**

इमाम्। ऊँ इति। नु। कविऽतमस्य। मायाम्। महीम्। देवस्य। नकिः। आ। दधर्ष। एकम्। यत्। उद्ना। न। पृणन्ति। एनीः। आऽसिञ्चन्तीः। अवनयः। समुद्रम्॥६॥

**पदार्थः**-(**इमाम्**) (उ) (**नु**) (**कवितमस्य**) अतिशयेन कवेः (**मायाम्**) मेघाम् (**महीम्**) वाणीम् (**देवस्य**) (**नकिः**) (**आ**) (**दधर्ष**) आधृष्णोति (**एकम्**) (**यत्**) याः (**उद्ना**)[३] उदकेन (**न**) इव (**पृणन्ति**) पूरयन्ति (**एनीः**) एन्यो मृगस्त्रिय इव धावन्त्यः (**आसिञ्चन्तीः**) समन्तात् सिञ्चन्त्यः (**अवनयः**) अवन्ति यास्ता नद्यः। **अवनय इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) (**समुद्रम्**) सागरम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इमां कवितमस्य देवस्य मायामु महीं कोऽपि नु नकिराऽऽदधर्ष यद्या उद्ना नैनीरासिञ्चन्तीरवनय एकं समुद्रं पृणन्ति ता यूयं यथावद्विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या महाविदुषां सकाशान्महतीं प्रज्ञां वाचं च प्राप्यान्यान् प्रापयन्ति त एव जगति धन्याः सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इमाम्**) इस (**कवितमस्य**) अतिशय कविजन (**देवस्य**) विद्वान् की (**मायाम्**) बुद्धि को (**उ**) और (**महीम्**) वाणी को कोई भी (**नु**) शीघ्र (**नकिः**) नहीं (**आ, दधर्ष**) दबाता है और (**यत्**) जो (**उद्ना**) जल से (**न**) जैसे वैसे (**एनीः**) हरिणियों के सदृश दौड़तीं और (**आसिञ्चन्तीः**) चारों ओर सींचती हुईं (**अवनयः**) रक्षा करने वाली नदियां (**एकम्**) एक (**समुद्रम्**) समुद्र को (**पृणन्ति**) पूर्ण करती हैं, उनको आप लोग यथावत् जानिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बड़े विद्वानों के समीप से बड़ी बुद्धि और वाणी को प्राप्त होकर अन्यों के लिये प्राप्त कराते हैं, वे ही संसार में धन्य होते हैं॥६॥

**मनुष्यैः प्रमादात् कस्यापि प्रमादं कृत्वा सद्य एव निवारणीयः॥**

मनुष्यों को चाहिये कि प्रमाद से किसी के प्रमाद को करके शीघ्र निवृत्त करावें॥

**अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद् भ्रातरं वा।**

**वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत्॥७॥**

अर्यम्यम्। वरुण। मित्र्यम्। वा। सखायम्। वा। सदम्। इत्। भ्रातरम्। वा। वेशम्। वा। नित्यम्। वरुण। अरणम्। वा। यत्। सीम्। आगः। चकृम। शिश्रथः। तत्॥७॥

**पदार्थः**-(**अर्य्यम्यम्**) अर्य्यमसु न्यायाधीशेषु भवम् (**वरुण**) श्रेष्ठ विद्वन् (**मित्र्यम्**) मित्रेषु भवम् (**वा**) (**सखायम्**) (**वा**) (**सदम्**) सीदन्ति यस्मिंस्तद्गृहम् (**इत्**) एव (**भ्रातरम्**) (**वा**) (**वेशम्**) यो विशति तम् (**वा**) (**नित्यम्**) (**वरुण**) (**अरणम्**) उदकम् (**वा**) अथवा (**यत्**) (**सीम्**) सर्वतः (**आगः**) अपराधम् (**चकृमा**) कुर्य्याम (**शिश्रथः**) प्रयतस्व हिन्धि वा (**तत्**)॥७॥

---

३. अन्यत्र भाष्येषु 'उद्गा' उपलभ्यते।

**अन्वयः**:-हे वरुण! अर्य्यम्यं मित्र्यं वा सखायं सदमिद् वा भ्रातरं वा वेशं वा हे वरुण! नित्यमरणं वा सीं यदागो वयं चकृमा तत्सर्वं त्वं शिश्रथः॥७॥

**भावार्थः**:-हे विद्वांसोऽज्ञानात्प्रमादाद्वा श्रेष्ठेषु पुरुषेषु वयं यद् प्रमादं कुर्य्याम तत्सर्वं भवन्तो निवारयन्तु॥७॥

**पदार्थः**:-हे **(वरुण)** श्रेष्ठ विद्वन्! **(अर्य्यम्यम्)** न्यायधीशों में हुए और **(मित्र्याम्)** मित्रों में हुए **(वा)** अथवा **(सखायम्)** मित्र और **(सदम्)** स्थित होते हैं जिसमें उस गृह **(इत्)** ही **(वा)** वा **(भ्रातरम्)** भ्राता **(वा)** अथवा **(वेशम्)** प्रविष्ट होने वाले को **(वा)** अथवा हे **(वरुण)** श्रेष्ठ विद्वन्! **(नित्यम्)** नित्य **(अरणम्)** जल को **(वा)** वा **(सीम्)** सब ओर से **(यत्)** जिस **(आगः)** अपराध को हम लोग **(चकृमा)** करें **(तत्)** उस सबका आप **(शिश्रथः)** प्रयत्न करिये वा नाश करिये॥७॥

**भावार्थः**:-हे विद्वान् जनो! अज्ञान वा प्रमाद से श्रेष्ठ पुरुषों से हम लोग जो प्रमाद करें, उस सम्पूर्ण को आप निवृत्त कीजिये॥७॥

**के मनुष्याः सत्कर्त्तव्यास्तिरस्करणीयाश्चेत्याह॥**

कौन से मनुष्य सत्कार और कौन तिरस्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**कि॒त॒वासो॒ यद्रि॑रि॒पुर्न दी॒वि यद्वा॑ घा स॒त्यमु॒त यन्न वि॒द्म।**

**सर्वा॒ ता वि ष्य॑ शिथि॒रेव॑ दे॒वाधा॑ ते स्याम वरुण प्रि॒यासः॑॥८॥३१॥**

**कि॒त॒वासः॑। यत्। रि॒रि॒पुः। न॒। दी॒वि। यत्। वा॒। घ॒। स॒त्यम्। उ॒त। यत्। न। वि॒द्म। सर्वा॑। ता। वि। स्य॒। शि॒थि॒राऽइ॑व। दे॒व॒। अध॑। ते॒। स्या॒म॒। व॒रु॒ण॒। प्रि॒यासः॑॥८॥**

**पदार्थः**:-**(कितवासः)** द्यूतकाराः **(यत्)** ये **(रिरिपुः)** आरोपयन्ति **(न)** निषेधे **(दीवि)** द्यूतकर्म्मणि **(यत्)** **(वा)** **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(सत्यम्)** सत्सु साधुम् **(उत)** **(यत्)** **(न)** **(विद्म)** **(सर्वा)** सर्वाणि **(ता)** तानि **(वि)** **(स्य)** अन्तं कुरु **(शिथिरेव)** यथा शिथिला: **(देव)** विद्वन् **(अधा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(ते)** तव **(स्याम)** **(वरुण)** **(प्रियासः)** प्रसन्नाः॥८॥

**अन्वयः**:-हे वरुण देव! यद्ये कितवासो दीवि न रिरिपुर्यद्वा सत्यमुत न विद्म यद् घा न विद्म ता सर्वा शिथिरेव त्वं विष्य यतोऽधा वयं ते प्रियासः स्याम॥८॥

**भावार्थः**:-हे मनुष्या! ये छलिनो मनुष्या द्यूतादिकर्म्म कुर्य्युस्ते ताडनीया ये च सत्यमाचरणं कुर्य्युस्ते सत्कर्त्तव्या इति॥८॥

अत्र राजेश्वरमेघविद्वद्गुणकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशीतितमं सूक्तमेकत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**:-हे **(वरुण)** श्रेष्ठ **(देव)** विद्वन्! **(यत्)** जो **(कितवासः)** जुआ करने वाले **(दीवि)** जुआरूप कर्म्म में **(न)** नहीं **(रिरिपुः)** आरोपित करते हैं **(वा)** अथवा **(यत्)** जिस **(सत्यम्)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ

को **(उत)** तर्क वितर्क से **(न)** न **(विद्म)** जानें और **(यत्)** जिसे **(घा)** ही नहीं जानें **(ता)** उन **(सर्वा)** सम्पूर्णों को **(शिथिरेव)** जैसे शिथिल वैसे आप **(वि, स्य)** अन्त करिये जिससे **(अधा)** इसके अनन्तर हम लोग **(ते)** आपके **(प्रियासः)** प्रसन्न प्यारे **(स्याम)** होवें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो छली मनुष्य जुआ आदि कर्म्म करें वे ताड़ना करने योग्य और जो सत्य आचरण करें वे सत्कार करने योग्य हैं॥८॥

इस सूक्त में राजा, ईश्वर, मेघ और विद्वान् के गुण [और] कर्म [का] वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पच्चासीवां सूक्त और एकतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षडशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्राग्नी देवते। १, ४, ५ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २, ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। ६ विराट्पूर्वानुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किं कुर्वन्तीत्याह॥***

अब छः ऋचा वाले छियासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम्।**

**दृळ्हा चित्स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः॥ १॥**

**इन्द्राग्नी इति। यम्। अवथः। उभा। वाजेषु। मर्त्यम्। दृळ्हा। चित्। सः। प्र। भेदति। द्युम्ना। वाणीःऽइव। त्रितः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविवाध्यापकोपदेशकौ (**यम्**) (**अवथः**) रक्षथः (**उभा**) (**वाजेषु**) स- ग्रमेषु (**मर्त्यम्**) मनुष्यम् (**दृळ्हा**) स्थिराणि (**चित्**) अपि (**सः**) (**प्र**) (**भेदति**) भिनत्ति (**द्युम्ना**) धनानि यशांसि वा (**वाणीरिव**) (**त्रितः**) त्रिभ्योऽध्यापनोपदेशनरक्षणेभ्यः॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी इवाऽध्यापकोपदेशकौ! युवामुभा वाजेषु यं मर्त्यमवथः स चित्त्रितो वाणीरिव दृळ्हा द्युम्ना प्र भेदति॥१॥

**भावार्थः**-यत्र धार्मिका विद्वांसः शूरा बलिष्ठाः शिक्षकाश्च सन्ति तत्र कोऽपि न दुःखं प्राप्नोतीति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के सदृश अध्यापक और उपदेशको! तुम (**उभा**) दोनों (**वाजेषु**) संग्रामों में (**यम्**) जिस (**मर्त्यम्**) मनुष्य की (**अवथः**) रक्षा करते हो (**सः**) वह (**चित्**) भी (**त्रितः**) तीन अर्थात् अध्यापन, उपदेशन और रक्षण से (**वाणीरिव**) जैसे वाणियों का वैसे (**दृळ्हा**) स्थिर (**द्युम्ना**) धनों वा यशों का (**प्र, भेदति**) अत्यन्त भेद करता है॥१॥

**भावार्थः**-जहाँ धार्मिक, विद्वान्, शूरवीर, बलिष्ठ और शिक्षक हैं, वहाँ पर कोई भी नहीं दुःख को प्राप्त होता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या।**

**या पञ्च चर्षणीरभीन्द्राग्नी ता हवामहे॥ २॥**

**या। पृतनासु। दुस्तरा। या। वाजेषु। श्रवाय्या। या। पञ्च। चर्षणीः। अभि। इन्द्राग्नी इति। ता। हवामहे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**या**) यौ सेनाशिक्षकयोधयितारौ (**पृतनासु**) सेनासु (**दुष्टरा**) दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं योग्यौ (**या**) (**वाजेषु**) अन्नादिषु स-ामेषु वा (**श्रवाय्या**) प्रशंसनीयौ (**या**) (**पञ्च**) (**चर्षणीः**) प्राणान् मनुष्यान् वा (**अभि**) अभिमुख्ये (**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविव (**ता**) तौ (**हवामहे**) स्वीकुर्य्याम प्रशंसेम वा॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ सेनापत्यध्यक्षौ! या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या या पञ्च चर्षणीरभि रक्षतस्ता वयं हवामहे॥२॥

**भावार्थः**-नरेशसेनापतिभ्यां सुपरीक्ष्य सेनायामध्यक्षा भृत्याः संरक्षणीया यतस्सर्वदा विजयः सम्भवेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान सेनापति और अध्यक्ष! (**या**) जो सेना के शिक्षक और लड़ाने वाले (**पृतनासु**) सेनाओं में (**दुष्टरा**) दुःख से उल्लंघन करने योग्य (**या**) जो (**वाजेषु**) अन्नादिकों वा संग्रामों में (**श्रवाय्या**) प्रशंसा करने योग्य (**या**) जो (**पञ्च**) पांच (**चर्षणीः**) प्राणों वा मनुष्यों को (**अभि**) सम्मुख रक्षा करते हैं (**ता**) उन दोनों को हम लोग (**हवामहे**) स्वीकार करें वा प्रशंसा करें॥२॥

**भावार्थः**-राजा और सेनापति को चाहिये कि उत्तम प्रकार परीक्षा करके सेना के अध्यक्ष भृत्यों को रक्खें, जिससे सर्वदा विजय होवे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः।**

**प्रति द्रुणा गभस्त्योर्गवां वृत्रघ्न एषते॥३॥**

**तयोः। इत्। अमऽवत्। शवः। तिग्मा। दिद्युत्। मघोनोः। प्रति। द्रुणा। गभस्त्योः। गवाम्। वृत्रऽघ्ने। आ। ईषते॥३॥**

**पदार्थः**-(**तयोः**) पूर्वोक्तयोः सेनापत्यध्यक्षयोः (**इत्**) एव (**अमवत्**) गृहवत् (**शवः**) बलम् (**तिग्मा**) तीव्रा (**दिद्युत्**) (**मघोनोः**) बहुधनयुक्तयोः (**प्रति**) (**द्रुणा**) गन्तारौ (**गभस्त्योः**) भुजयोः (**गवाम्**) किरणानाम् (**वृत्रघ्ने**) मेघहन्त्रे (**आ**) (**ईषते**) हिनस्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो वृत्रघ्ने गवामेषते यौ द्रुणा वर्त्तेते तयोरिन्मघोनोर्गभस्त्यो-रमवच्छवस्तिग्मा दिद्युद्वर्त्तते तथा तां यूयं प्रति गृह्णीत॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजपुरुषा! यथा सूर्य्यो मेघं हत्वा प्रजाः पालयति तथैव यूयं दुष्टान् हत्वा प्रजाः सततं रक्षत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य **(वृत्रघ्ने)** मेघ के नाश करने वाले के लिये **(गवाम्)** किरणों को **(आ, ईषते)** सब प्रकार नाश करता है और जो दोनों **(द्रुणा)** चलने वाले वर्त्तमान हैं **(तयोः, इत्)** उन्हीं सेनापति और सेनाध्यक्ष और **(मघोनोः)** बहुत धन से युक्त **(गभस्त्योः)** भुजाओं के **(अमवत्)** गृह के सदृश **(शवः)** बलयुक्त **(तिग्मा)** तीव्र **(दिद्युत्)** बिजुली है, वैसे उसको आप लोग **(प्रति)** ग्रहण करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजपुरुषो! जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करके प्रजाओं का पालन करता है, वैसे ही आप लोग दुष्टों का नाश करके प्रजाओं की निरन्तर रक्षा कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी हवामहे।**

**पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा॥४॥**

**ता। वाम्। एषे। रथानाम्। इन्द्राग्नी इति। हवामहे। पती इति। तुरस्य। राधसः। विद्वांसा। गिर्वणःऽतमा॥४॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(वाम्)** युवाम् **(एषे)** एतुम् **(रथानाम्)** **(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युतौ **(हवामहे)** प्राप्तुमिच्छेम **(पती)** पालकौ **(तुरस्य)** शीघ्रं सुखकरस्य **(राधसः)** धनस्य **(विद्वांसा)** विद्यायुक्तौ **(गिर्वणस्तमा)** अतिशयेन सुशिक्षितां वाचं सेवमानौ॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यौ रथानां तुरस्य राधसः पती गिर्वणस्तमा विद्वांसेन्द्राग्नी वामेषे वयं हवामहे ता यूयमपि प्राप्नुत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्वायुविद्युद्वच्छुभगुणव्यापिनां विदुषां सङ्गेन विद्याशिक्षे प्राप्य प्रजासु मित्रवद्वर्त्तितव्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(रथानाम्)** वाहनों और **(तुरस्य)** शीघ्र सुखकारक **(राधसः)** धन के **(पती)** पालन करने वाले **(गिर्वणस्तमा)** अतिशय उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी का सेवन करते हुए **(विद्वांसा)** विद्या से युक्त **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली **(वाम्)** और आप दोनों को **(एषे)** प्राप्त होने के लिये हम लोग **(हवामहे)** प्राप्त होने की इच्छा करें **(ता)** उन दोनों को आप लोग भी प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि वायु और बिजुली के सदृश श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त विद्वानों के सङ्ग से विद्या और शिक्षा को प्राप्त होकर प्रजाओं में मित्र के सदृश वर्त्ताव करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वृधन्तावनु द्यून् मर्ताय देवावदभा।**

**अर्हन्ता चित्पुरो दधेंऽशेव देवावर्वते॥५॥**

**ता। वृधन्तौ। अनु। द्यून्। मर्ताय। देवौ। अदभा। अर्हन्ता। चित्। पुरः। दधे। अंशाऽइव। देवौ। अर्वते॥५॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**वृधन्तौ**) वर्धमानौ वर्धयन्तौ वा (**अनु**) (**द्यून्**) दिनान्यनु (**मर्त्ताय**) मनुष्याय (**देवौ**) दातारौ (**अदभा**) अहिंसकौ (**अर्हन्ता**) पूज्यौ (**चित्**) (**पुरः**) (**दधे**) (**अंशेव**) भागमिव (**देवौ**) देदीप्यमानौ (**अर्वते**) विज्ञानाय॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यावंशेव सत्कर्त्तव्यौ मर्त्तायाऽनु द्यून् वृधन्तावदभाऽर्हन्ता देवावहं पुरो दधे यौ देवौ चिदर्वते वर्त्तेते ता यूयं सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अहर्निशं मनुष्यहिताय प्रयतन्ते त एव सर्वैः पूज्या वर्त्तन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अंशेव**) भाग के सदृश सत्कार करने योग्य (**मर्त्ताय**) मनुष्य के लिये (**अनु, द्यून्**) प्रतिदिन (**वृधन्तौ**) बढ़ते वा बढ़ाते हुए (**अदभा**) नहीं हिंसा करने वाले (**अर्हन्ता**) आदर करने योग्य (**देवौ**) देने वाले को मैं (**पुरः**) आगे (**दधे**) धारण करता हूँ और जो (**देवौ**) प्रकाशमान दोनों (**चित्**) भी (**अर्वते**) विज्ञान के लिये वर्त्तमान हैं (**ता**) उन दोनों का आप लोग सत्कार करें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दिनरात्रि मनुष्यों के हित के लिये प्रयत्न करते हैं, वे ही सब से आदर करने योग्य हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवेन्द्राग्निभ्यामहा वि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः।**

**ता सूरिषु श्रवो बृहद्रयिं गृणत्सु दिधृतमिषं गृणत्सु दिधृतम्॥६॥३२॥**

**एव। इन्द्राग्निऽभ्याम्। अहा। वि। हव्यम्। शूष्यम्। घृतम्। न। पूतम्। अद्रिऽभिः। ता। सूरिषु। श्रवः। बृहत्। रयिम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्। इषम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**एव**) (**इन्द्राग्निभ्याम्**) सूर्य्याग्निभ्याम् (**अहा**) अहानि (**वि**) (**हव्यम्**) हव्यं ग्रहीतुमर्हम् (**शूष्यम्**) शूषे बले भवम् (**घृतम्**) आज्यम् (**न**) इव (**पूतम्**) पवित्रम् (**अद्रिभिः**) मेघैः (**ता**) तौ (**सूरिषु**) विद्वत्सु (**श्रवः**) अन्नम् (**बृहत्**) महत् (**रयिम्**) (**गृणत्सु**) स्तुवत्सु (**दिधृतम्**) धरतम् (**इषम्**) विज्ञानम् (**गृणत्सु**) (**दिधृतम्**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याभ्यामिन्द्राग्निभ्यामहाऽद्रिभिर्घृतन्न पूतं हव्यं शूष्यं श्रवो जायते गृणत्सु सूरिषु बृहद्रयिं यौ दिधृतं सूरिषु गृणत्स्विषं वि दिधृतं ता एव यथावद्वेदितव्यौ॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि विद्वत्सु यूयं निवसतः तर्हि विद्युन्मेघादिविद्यां विजानीत॥६॥

अत्रेन्द्राग्निविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षडशीतितमं सूक्तं द्वात्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिन **(इन्द्राग्निभ्याम्)** सूर्य्य और अग्नि से **(अहा)** दिनों को और **(अद्रिभिः)** मेघों से **(घृतम्)** घृत जैसे **(न)** वैसे **(पूतम्)** पवित्र **(हव्यम्)** ग्रहण करने योग्य **(शूष्यम्)** बल में उत्पन्न **(श्रवः)** अन्न होता है तथा **(गृणत्सु)** प्रशंसा करते हुए **(सूरिषु)** विद्वानों में **(बृहत्)** बड़े **(रयिम्)** धन को जो दोनों **(दिधृतम्)** धारण करें तथा **(गृणत्सु)** स्तुति करते हुए विद्वानों में **(इषम्)** विज्ञान को **(वि, दिधृतम्)** विशेष धारण करें **(ता)** वे दोनों **(एव)** ही यथावत् जानने के योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वानों में आप लोग निवास करें तो बिजुली और मेघ आदि की विद्या को जानें॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, अग्नि और बिजुली के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह छियासीवां सूक्त और बत्तीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

## ॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य सप्ताऽशीतितमस्य सूक्तस्य एवयामरुदात्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १ अतिजगती। २, ५, ८, ९ स्वराड्जगती। ३, ६, ७ भुरिग्जगती। ४ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यान् कथं किं प्राप्नोतीत्याह॥*

अब नव ऋचा वाले सत्तासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसे क्या प्राप्त होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ म॒हे म॒तयो॑ यन्तु॒ विष्ण॑वे म॒रुत्व॑ते गिरि॒जा ए॑व॒याम॑रुत्।**
**प्र शर्धा॑य॒ प्रय॑ज्यवे सुखा॒दये॑ त॒वसे॑ भ॒न्ददि॑ष्टये धुनि॑व्रताय॒ शव॑से॥ १॥**

**प्र। व॒ः। म॒हे। म॒तय॑ः। य॒न्तु॒। विष्ण॑वे। म॒रुत्व॑ते। गि॒रि॒ऽजाः। ए॒व॒याम॑रुत्। प्र। शर्धा॑य। प्रऽय॑ज्यवे। सु॒ऽखा॒दये॑। त॒वसे॑। भ॒न्दत्ऽइ॑ष्टये। धुनि॑ऽव्रताय। शव॑से॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मान् (**महे**) महते (**मतयः**) मनुष्या बुद्धयो वा (**यन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**विष्णवे**) व्यापकाय (**मरुत्वते**) प्रशंसिता मनुष्या यस्मिँस्तस्मै (**गिरिजाः**) ये गिरौ मेघे जाताः (**एवयामरुत्**) य एवान् प्रापकान् यान्ति तेषां यो मरुन्मनुष्यः (**प्र**) (**शर्धाय**) बलाय (**प्रयज्यवे**) प्रयजन्ति येन तस्मै (**सुखादये**) यस्सुष्ठु खादति तस्मै (**तवसे**) बलिष्ठाय (**भन्ददिष्टये**) कल्याणसुखसङ्गतये (**धुनिव्रताय**) धुनानि कम्पितानि व्रतानि यस्य तस्मै (**शवसे**) बलाय॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मरुत्वते महे विष्णवे विद्युद्रूपाग्नये गिरिजा यन्ति तथा वो मतयः प्र यन्तु यथैवयामरुच्छर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे प्र भवति तथा यूयमप्येतस्मै प्र भवत॥ १॥

**भावार्थः**-यथा विद्युद्रूपाग्निं मेघोत्पन्ना गर्जनादिप्रभावा गच्छन्ति यतोऽग्नीवायुसाध्यास्ते तथा धीमतः पुरुषानन्ये सम्प्राप्नुवन्ति गुणप्रापको गुणिनमन्विच्छत्यत्युत्तमं बलं चाप्नोति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**मरुत्वते**) प्रशंसित मनुष्य जिसमें उस (**महे**) बड़े (**विष्णवे**) व्यापक बिजुलीरूप अग्नि के लिये (**गिरिजाः**) मेघ में उत्पन्न हुए प्राप्त होते हैं, वैसे (**वः**) आप लोगों को (**मतयः**) मनुष्य वा बुद्धियां (**प्र, यन्तु**) प्राप्त होवें और जैसे (**एवयामरुत्**) प्राप्त कराने वालों को प्राप्त होने वालों का मनुष्य (**शर्धाय**) बल के और (**प्रयज्यवे**) अत्यन्त यजन करते हैं जिससे उस (**सुखादये**) उत्तम प्रकार खाने वाले (**तवसे**) बलिष्ठ के लिये तथा (**भन्ददिष्टये**) कल्याण और सुख की संगति के लिये (**धुनिव्रताय**) और कंपित व्रत जिसका उस (**शवसे**) बल के लिये (**प्र**) समर्थ होता है, वैसे आप लोग भी इसके लिये समर्थ हूजिये॥ १॥

**भावार्थ:**-जैसे बिजुलीरूप अग्नि को मेघोत्पन्न गर्जनादि प्रभाव प्राप्त होते हैं, क्योंकि वे गर्जनादि प्रभाव अग्नि और वायु से सिद्ध होने योग्य हैं, वैसे बुद्धिमान् पुरुषों को अन्य पुरुष प्राप्त होते हैं। और गुण प्राप्त कराने वाला पुरुष गुणी पुरुष को ढूंढता है और अति उत्तम बल को भी प्राप्त होता है॥१॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्मना ब्रुवत एवयामरुत्।**
**क्रत्वा तद्वो मरुतो नाधृषे शवो दाना मह्ना तदेषामधृष्टासो नाद्रयः॥२॥**

**प्र। ये। जाताः। महिना। ये। च। नु। स्वयम्। प्र। विद्मना। ब्रुवते। एवयाऽमरुत्। क्रत्वा। तत्। वः। मरुतः। न। आऽधृषे। शवः। दाना। मह्ना। तत्। एषाम्। अधृष्टासः। न। अद्रयः॥२॥**

**पदार्थ:**-**(प्र) (ये) (जाताः)** उत्पन्नाः **(महिना)** महत्त्वेन **(ये) (च) (नु)** सद्यः **(स्वयम्) (प्र) (विद्मना)** विज्ञानेन **(ब्रुवते)** उपदिशन्ति **(एवयामरुत्)** विज्ञानवान् मनुष्यः **(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(तत्) (वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(न)** निषेधे **(आधृषे)** आधर्षितुम् **(शवः)** बलम् **(दाना)** दानेन **(मह्ना)** महत्त्वेन **(तत्) (एषाम्) (अधृष्टासः)** अप्रगल्भाः **(न)** इव **(अद्रयः)** मेघाः॥२॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! मनुष्या ये महिना जाता ये विद्मना प्र ब्रुवते ये च स्वयं नु प्र ब्रुवते एवयामरुदहं क्रत्वा तेषां वस्तच्छवो दाना मह्ना वा नाऽऽधृषे प्र भवामि। अद्रयो नाऽधृष्टासो यदेषां शवोऽस्ति तन्नाऽऽधृषे प्र भवामि॥२॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वेषामुपकारं कृत्वा प्राणवत्प्रिया भवन्ति त एव जगदुपकारका भवन्ति॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(ये)** जो **(महिना)** महत्त्व से **(जाताः)** उत्पन्न हुए तथा **(ये)** जो **(विद्मना)** विज्ञान से **(प्र, ब्रुवते)** उपदेश देते हैं **(च)** और जो **(स्वयम्)** अपने से **(नु)** शीघ्र **(प्र)** विशेष करके उपदेश देते हैं और **(एवयामरुत्)** विज्ञान वाला मनुष्य मैं **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से उन **(वः)** आप लोगों के **(तत्)** उस **(शवः)** बल को **(दाना)** देने से वा **(मह्ना)** महत्त्व से **(न)** नहीं **(आधृषे)** दबाने को समर्थ होता हूं तथा **(अद्रयः)** मेघों के **(न)** समान **(अधृष्टासः)** नहीं धर्षण किये गये जो **(एषाम्)** इनका बल है **(तत्)** उसको नहीं दबाने को समर्थ होता हूं॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सब के उपकार को करके प्राणवत् प्रिय होते हैं, वे ही जगत् के उपकार करने वाले होते हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र ये दिवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्व एवयामरुत्।**

**न येषामिरी सधस्थ ईष्ट आँ अग्नयो न स्वविद्युतः प्र स्यन्द्रासो धुनीनाम्॥३॥**

**प्र। ये। दिवः। बृहतः। शृण्विरे। गिरा। सुऽशुक्वानः। सुऽभ्वः। एवयामरुत्। न। येषाम्। इरी। सधऽस्थे। ईष्टे। आ। अग्नयः। न। स्वऽविद्युतः। प्र। स्यन्द्रासः। धुनीनाम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ये**) (**दिवः**) कामयमानान् विद्युदादीन् वा (**बृहतः**) महतः (**शृण्विरे**) शृण्वन्ति (**गिरा**) वाण्या (**सुशुक्वानः**) सुष्ठु शुद्धाः (**सुभ्वः**) ये शोभने धर्म्ये व्यवहारे भवन्ति (**एवयामरुत्**) (**न**) निषेधे (**येषाम्**) (**इरी**) प्रेरकः (**सधस्थे**) समानस्थे (**ईष्टे**) ईशनं करोति (**आ**) समन्तात् (**अग्नयः**) पावकाः (**न**) इव (**स्वविद्युतः**) स्वेन रूपेण व्याप्तः (**प्र**) (**स्यन्द्रासः**) प्रस्रवन्तः प्रस्रावयन्तो वा (**धुनीनाम्**) कम्पनक्रियावतीनाम् भूम्यादीनाम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये सुशुक्वानः सुभ्वो दिवः स्वविद्युतो धुनीनां स्यन्द्रासोऽग्नयो न गिरा बृहतः प्र शृण्विरे येषामेवयामरुदिरी सधस्थे न प्रेष्टे तान् यूयमा विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्याकामा महतीर्विद्याः प्राप्य विद्युदादिपदार्थान् स्वाधीनान् कुर्वन्ति ते एव सिद्धेच्छा जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**सुशुक्वानः**) उत्तम प्रकार शुद्ध (**सुभ्वः**) और सुन्दर धर्मयुक्त व्यवहार में होने वाले (**दिवः**) कामना करते हुओं वा बिजुली आदिकों को जैसे (**स्वविद्युतः**) अपने स्वरूप से व्याप्त और (**धुनीनाम्**) कम्पन क्रिया से युक्त भूमि आदिकों के (**स्यन्द्रासः**) पिघलते हुए वा पिघलाते हुए (**अग्नयः**) अग्नियां (**न**) वैसे (**गिरा**) वाणी से (**बृहतः**) बड़े (**प्र, शृण्विरे**) सुनते हैं और (**येषाम्**) जिनका (**एवयामरुत्**) विज्ञान वाला मनुष्य (**इरी**) प्रेरणा करने वाला (**सधस्थे**) समान स्थान में (**न**) जैसे वैसे (**प्र, ईष्टे**) स्वामी होता है, उनको आप लोग (**आ**) अच्छे प्रकार जानिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्या की कामना करने वाले जन बड़ी विद्याओं को प्राप्त होकर बिजुली आदि पदार्थों को स्वाधीन करते हैं, वे ही सिद्ध इच्छा वाले होते हैं॥३॥

**अथेश्वरोपासनविषयमाह॥**

अब ईश्वर के उपासनाविषय को कहते हैं॥

**स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात्सदस एवयामरुत्।**
**यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः॥४॥**

**सः। चक्रमे। महतः। निः। उरुऽक्रमः। समानस्मात्। सदसः। एवयामरुत्। यदा। अयुक्त। त्मना। स्वात्। अधि। स्नुऽभिः। विऽस्पर्धसः। विऽमहसः। जिगाति। शेऽवृधः। नृऽभिः॥४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**चक्रमे**) क्रमते (**महतः**) (**निः**) नितराम् (**उरुक्रमः**) उरवो बहवः क्रमा यस्य (**समानस्मात्**) तुल्यात् (**सदसः**) गृहात् (**एवयामरुत्**) (**यदा**) (**अयुक्त**) युङ्क्ते (**त्मना**) आत्मना

**(स्वात्) (अधि) (स्नुभिः)** पवित्रैर्गुणैः **(विष्पर्धसः)** ये विशेषेण स्पर्धन्ते तान् **(विमहसः)** विशेषेण महागुणविशिष्टान् **(जिगाति)** गच्छति **(शेवृधः)** सुखवर्धकान् **(नृभिः)** नेतृभिः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य एवयामरुदुरुक्रमः समानस्मान्महतः सदसो निश्चक्रमे तं यस्त्मना यदाऽयुक्त स्नुभिर्नृभिश्च सह वर्तमानः स्वाद् विष्पर्धसो विमहसः शेवृधोऽधि जिगाति स परमेश्वर उपासनीयो योगी च सेवनीयः॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विदुषः सकाशात् परमेश्वरयोगमभ्यस्यन्ति ते सुखधरा जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(एवयामरुत्)** विज्ञान वाला मनुष्य **(उरुक्रमः)** जो बहुत क्रम वाला **(समानस्मात्)** तुल्य **(महतः)** बड़े **(सदसः)** गृह से **(निः)** निरन्तर **(चक्रमे)** क्रमण करता है उसको जो **(त्मना)** आत्मा से **(यदा)** जब **(अयुक्त)** युक्त होता है **(स्नुभिः)** तथा पवित्र गुणों और **(नृभिः)** नायकों के साथ वर्त्तमान **(स्वात्)** अपने से **(विष्पर्धसः)** विशेष करके स्पर्द्धा करने वाले **(विमहसः)** विशेष करके बड़े गुणों से विशिष्ट और **(शेवृधः)** सुख के बढ़ाने वालों को **(अधि, जिगाति)** प्राप्त होता है **(सः)** वह परमेश्वर उपासना करने योग्य और योगीजन सेवन करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वान् पुरुष के द्वारा परमेश्वर के योग का अभ्यास करते हैं, वे सुख के धारण करने वाले होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांसो राजजनाः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

फिर विद्वान् राजाजन कैसे होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत्।**

**येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः॥५॥३३॥**

**स्वनः। न। वः। अमऽवान्। रेजयत्। वृषा। त्वेषः। ययिः। तविषः। एवयामरुत्। येन। सहन्तः। ऋञ्जत। स्वऽरोचिषः। स्थाःऽरश्मानः। हिरण्ययाः। सुऽआयुधासः। इष्मिणः॥५॥**

**पदार्थः**-**(स्वनः)** शब्दः **(न)** इव **(वः)** युष्माकम् **(अमवान्)** गृहवन् **(रेजयत्)** कम्पयते **(वृषा)** बलिष्ठः **(त्वेषः)** दीप्तिमान् **(ययिः)** याता **(तविषः)** बलात् **(एवयामरुत्) (येना)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सहन्तः)** सोढारः **(ऋञ्जत)** प्रसाध्नुत **(स्वरोचिषः)** स्वयं रोची रोचनमेषान्ते **(स्थारश्मानः)** स्थिरा रश्मानः किरणा इव व्यवहारा येषान्ते **(हिरण्ययाः)** तेजोमयाः **(स्वायुधासः)** स्वकीयान्यायुधानि येषान्ते **(इष्मिणः)** बहुविधमिष्मेच्छा येषान्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स वः स्वनो नाऽमवान् वृषा त्वेषस्तविषो ययिरेवयामरुत् व्यवहारान् रेजयत् येना सहन्तः स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणो जना यूयं स्वप्रयोजनान्यृञ्जत॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये प्रकाशितधर्म्यव्यवहारा शमदमान्वितास्तेजस्विनो बलिष्ठा युद्धविद्याकुशलाः स्युस्त एव विजयिनो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! वह **(वः)** आप लोगों के मध्य में **(स्वनः)** शब्द के **(न)** समान **(अमवान्)** गृह वाला **(वृषा)** बलिष्ठ और **(त्वेषः)** प्रकाशवान् **(तविषः)** बल से **(ययिः)** प्राप्त होने वाला **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् मनुष्य व्यवहारों को **(रेजयत्)** कंपित कराता है **(येना)** जिस पुरुष से **(सहन्तः)** सहन करने वाले **(स्वरोचिषः)** अपने से प्रकाश जिनका ऐसे और **(स्थारश्मानः)** स्थिर किरणों के सदृश व्यवहार जिनके तथा **(हिरण्ययाः)** तेजस्वरूप **(स्वायुधासः)** अपने आयुधों वाले और **(इष्मिणः)** बहुत प्रकार की इच्छा वाले जन आप लोग अपने प्रयोजनों को **(ऋञ्जत)** सिद्ध करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो प्रकाशित धर्म्मयुक्त व्यवहार वाले तथा शम, दम आदि से युक्त, तेजस्वी, बल वाले और युद्धविद्या में कुशल होवें, वे ही विजयी होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्भिः कान्निवार्य के सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

अब विद्वानों को किनका निवारण करके किनका सत्कार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत्।**

**स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः॥६॥**

**अपारः। वः। महिमा। वृद्धऽशवसः। त्वेषम्। शवः। अवतु। एवयामरुत्। स्थातारः। हि। प्रऽसितौ। सम्ऽदृशि। स्थन। ते। नः। उरुष्यत। निदः। शुशुक्वांसः। न। अग्नयः॥६॥**

**पदार्थः**-**(अपारः)** पाररहितः **(वः)** युष्माकम् **(महिमा)** **(वृद्धशवसः)** वृद्धं शवो बलं येषां तत्सम्बुद्धौ **(त्वेषम्)** प्रकाशितम् **(शवः)** बलम् **(अवतु)** **(एवयामरुत्)** **(स्थातारः)** ये तिष्ठन्ति **(हि)** यतः **(प्रसितौ)** प्रकृष्टे बन्धने **(संदृशि)** समानदर्शने **(स्थन)** तिष्ठत **(ते)** **(नः)** अस्मान् **(उरुष्यता)** सेवध्वम्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(निदः)** ये निन्दन्ति **(शुशुक्वांसः)** शोकयुक्ताः **(न)** इव **(अग्नयः)** पावकाः॥६॥

**अन्वयः**-हे वृद्धशवसः स्थातारोऽग्नयो न वो योऽपारो महिमैवयामरुत्त्वेषं शवश्चावतु हि प्रसितौ निदः शुशुक्वांसः सन्तु ते यूयं संदृशि स्थन नोऽस्मानुरुष्यता॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये निन्दका अर्थान्मिथ्यावादिनः स्युस्तान् सदा बन्धने प्रवेशयत। ये च महाशयाः परोपकारिणः स्तावकाः सत्यवादिनः स्युस्तान् सर्वदा सत्कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृद्धशवसः)** बढ़े हुए बल वालो! **(स्थातारः)** स्थित होने वाले **(अग्नयः)** अग्नियां **(न)** जैसे वैसे **(वः)** आप लोगों का जो **(अपारः)** अपार **(महिमा)** बड़प्पन और **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् मनुष्य **(त्वेषम्)** प्रकाशित **(शवः)** बल की **(अवतु)** रक्षा करे **(हि)** जिससे कि **(प्रसितौ)** प्रकृष्ट बन्धन के रहने पर **(निदः)** निन्दा करने वाले **(शुशुक्वांसः)** शोक से युक्त होवें **(ते)** वे आप लोग **(संदृशि)** तुल्य दर्शन में **(स्थन)** स्थित हूजिये और **(नः)** हम लोगों का **(उरुष्यता)** सेवन करिये॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो निन्दक अर्थात् मिथ्यावादी होवें, उनको सदा बन्धन में प्रविष्ट करिये और जो महाशय, परोपकारी स्तुति करने और सत्य बोलने वाले होवें, उनका सदा सत्कार करिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत्।**

**दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम्॥७॥**

**ते। रुद्रासः। सुऽमखाः। अग्नयः। यथा। तुविऽद्युम्नाः। अवन्तु। एवयाऽमरुत्। दीर्घम्। पृथु। पप्रथे। सद्म। पार्थिवम्। येषाम्। अज्मेषु। आ। महः। शर्धांसि। अद्भुतऽएनसाम्॥७॥**

**पदार्थ:**-**(ते)** **(रुद्रासः)** मध्यमा विद्वांसः **(सुमखाः)** शोभनन्यायाचरणयज्ञानुष्ठातारः **(अग्नयः)** अग्निवद्वर्त्तमानाः **(यथा)** येन प्रकारेण **(तुविद्युम्नाः)** बहुधनयशोऽन्विताः **(अवन्तु)** **(एवयामरुत्)** **(दीर्घम्)** **(पृथु)** विस्तीर्णं प्रख्यातं वा **(पप्रथे)** प्रख्यापयति **(सद्म)** सीदन्ति यस्मिन् **(पार्थिवम्)** पृथिव्यां विदितम् **(येषाम्)** **(अज्मेषु)** अजन्ति गच्छन्ति येषु स-ामेषु **(आ)** **(महः)** **(शर्धांसि)** बलानि **(अद्भुतैनसाम्)** अद्भुतानि महान्त्येनांसि पापानि येषान्ते॥७॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! ते सुमखा रुद्रासो यथाऽग्नयस्तुविद्युम्ना अस्मानवन्तु येषामद्भुतैनसामज्मेषु शर्धांसि महो दीर्घं पृथु पार्थिवं सद्मैवयामरुदाऽऽपप्रथे॥७॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्निवत्पापप्रणाशकाः सत्यप्रकाशकाः दुष्टानां रोदयितारः श्रेष्ठानां पालकाः सन्ति त एवातुलकीर्त्तयो भवन्ति॥७॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(ते)** वे **(सुमखाः)** सुन्दर न्यायाचरण और यज्ञ के करने वाले **(रुद्रासः)** मध्यम विद्वान् जन **(यथा)** जैसे **(अग्नयः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(तुविद्युम्नाः)** बहुत धन और यश से युक्त हुए हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें **(येषाम्)** जिन **(अद्भुतैनसाम्)** अद्भुत बड़े पाप वालों के **(अज्मेषु)** संग्रामों में **(शर्धांसि)** बलों और **(महः)** बड़े **(दीर्घम्)** लम्बे **(पृथु)** विस्तृत वा प्रसिद्ध **(पार्थिवम्)** पृथिवी में विदित **(सद्म)** ठहरते हैं जिसमें उस स्थान को **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् पुरुष **(आ, पपथे)** अच्छे प्रकार प्रसिद्ध करता है॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि के सदृश पाप के नाश करने, सत्य के प्रकाश करने और दुष्टों के रुलाने वाले, श्रेष्ठों के पालक हैं, वे ही अधिक कीर्त्ति वाले होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत्।**

**विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद्रथ्यो३ न दंसनाप द्वेषांसि सनुतः॥८॥**

**अद्वेषः। नः। मरुतः। गातुम्। आ। इतन। श्रोत। हवम्। जरितुः। एवयामरुत्। विष्णोः। महः। सऽमन्यवः। युयोतन। स्मत्। रथ्यः। न। दंसना। अप। द्वेषांसि। सनुतरिति॥८॥**

**पदार्थः**-(**अद्वेषः**) द्वेषरहितान् (**नः**) अस्माकम् (**मरुतः**) मानवाः (**गातुम्**) पृथिवीम् (**आ**) (**इतन**) प्राप्नुत (**श्रोता**) शृणुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हवम्**) प्रशंसनीयं व्यवहारम् (**जरितुः**) स्तुत्यस्य (**एवयामरुत्**) (**विष्णोः**) व्यापकस्य (**महः**) महत्त्वम् (**समन्यवः**) समानो मन्युः क्रोधो येषां ते (**युयोतन**) संयोजयत (**स्मत्**) एव (**रथ्यः**) रथेषु साधवः (**न**) इव (**दंसना**) कर्म्माणि (**अप**) दूरीकरणे (**द्वेषांसि**) द्वेषयुक्तानि कर्म्माणि (**सनुतः**) सनातनान्॥८॥

**अन्वयः**-हे समन्यवो मरुतो! यूयमेवयामरुदिव नोऽद्वेषः कुरुत गातुमेतन नो हवं श्रोता जरितुर्विष्णोर्महः स्मद्युयोतन रथ्यो न सनुतर्दंसनाऽप द्वेषांसि युयोतन॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांस उपदेशका मनुष्यान् द्वेषादिदोषरहितान् कुर्वन्ति ते व्यापकस्येश्वरस्य पदं प्राप्नुवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**समन्यवः**) समान क्रोध वाले (**मरुतः**) मनुष्यो! आप लोग (**एवयामरुत्**) बुद्धिमान् मनुष्य के सदृश (**नः**) हम लोगों को (**अद्वेषः**) द्वेष से रहित करिये। और (**गातुम्**) पृथिवी को (**आ, इतन**) प्राप्त हूजिये तथा हम लोगों के (**हवम्**) श्रेष्ठ व्यवहार को (**श्रोता**) सुनिये (**जरितुः**) स्तुति करने योग्य (**विष्णोः**) व्यापक के (**महः**) महत्त्व को (**स्मत्**) ही (**युयोतन**) संयुक्त कीजिये और (**रथ्यः**) वाहनों के चलाने में कुशलों के (**न**) सदृश (**सनुतः**) सनातन (**दंसना**) कर्म्मों को और (**अप**) दूरीकरण के निमित्त (**द्वेषांसि**) द्वेषयुक्त कर्मों को संयुक्त कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् और उपदेशक जन मनुष्यों को द्वेष आदि दोष से रहित करते हैं, वे व्यापक ईश्वर के पद को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्।**
**ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य**
**प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः॥९॥३४॥६॥५॥**

**गन्त। नः। यज्ञम्। यज्ञियाः। सुऽशमि। श्रोत। हवम्। अरक्षः। एवयामरुत्। ज्येष्ठासः। न। पर्वतासः। विऽओमनि। यूयम्। तस्य। प्रऽचेतसः। स्यात। दुःऽधर्तवः। निदः॥९॥**

**पदार्थः**-(**गन्ता**) प्राप्नुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**यज्ञम्**) सत्यजनकं व्यवहारं (**यज्ञियाः**) यज्ञं सम्पादितुमर्हाः (**सुशमि**) शोभनं कर्म्म (**श्रोता**) शृणुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हवम्**) पठनपरीक्षाख्यम् (**अरक्षः**) अरक्षणीयम् (**एवयामरुत्**) (**ज्येष्ठासः**) विद्यावयोवृद्धाः प्रशस्तवाचः (**न**) इव (**पर्वतासः**) मेघाः (**व्योमनि**) व्योमवद्व्यापके परमेश्वरे (**यूयम्**) (**तस्य**) (**प्रचेतसः**) प्रज्ञापकाः (**स्यात**) (**दुर्धर्त्तवः**) दुःखेन धर्त्तारः (**निदः**) निन्दकाः॥९॥

**अन्वयः**-हे यज्ञियाः! यूयमेवयामरुदिव नोऽस्मानस्माकं यज्ञञ्च गन्ता, सुशमि हवं श्रोताऽरक्षो निवारयत व्योमनि पर्वतासो न ज्येष्ठासो भवत यो व्योमवद्व्यापक ईश्वरोऽस्ति तस्य प्रचेतसः स्यात ते दुर्धर्त्तवो निदः सन्ति तेषां निवारकाः स्यात॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं विद्याप्रचारव्यवहारप्रचारेण धर्म्याणि कर्म्माणि कृत्वाऽन्यैः कारयत, निन्दादिदोषेभ्यश्च मनुष्यान् पृथक्कृत्य परमेश्वरे प्रवर्त्तयत स्वयमप्येवं भवतेति॥९॥

अत्र मरुद्विद्वद्परमेश्वरोपासनावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृतार्यभाषाविभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये सप्ताशीतितमं सूक्तं चतुस्त्रिंशो वर्गः पञ्चमे मण्डले षष्ठोऽनुवाकः पञ्चमं मण्डलञ्च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**यज्ञियाः**) यज्ञ करने योग्य (**यूयम्**) आप लोगो (**एवयामरुत्**) बुद्धिमान् मनुष्य के सदृश (**नः**) हम लोगों को वा हम लोगों के (**यज्ञम्**) सत्य की प्रकट करने वाले व्यवहार को (**गन्ता**) प्राप्त हूजिये और (**सुशमि**) श्रेष्ठ कर्म्म और (**हवम्**) पठन की परीक्षा नामक कर्म्म को (**श्रोता**) सुनिये तथा (**अरक्षः**) नहीं रक्षा करने योग्य का निवारण करिये और (**व्योमनि**) आकाश के सदृश व्यापक परमेश्वर में (**पर्वतासः**) मेघ (**न**) जैसे वैसे (**ज्येष्ठासः**) विद्या और अवस्था से वृद्ध और प्रशंसायुक्त वाणी वाले हूजिये और जो आकाश के सदृश व्यापक ईश्वर है (**तस्य**) उसके (**प्रचेतसः**) जनाने वाले (**स्यात**) हूजिये और जो (**दुर्धर्त्तवः**) दुःख से धारण करने वाले (**निदः**) निन्दक जन हैं, उनके निवारण करने वाले हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! आप लोग विद्या के प्रचारनामक व्यवहार के प्रचार से धर्मसम्बन्धी कार्यों को करके अन्यों से भी कराओ और निन्दा आदि दोषों से मनुष्यों को पृथक् करके परमेश्वर की ओर प्रवृत्त करो और स्वयं भी ऐसे होओ॥९॥

इस सूक्त में वायु, विद्वान् और परमेश्वर की उपासना का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी विरचित संस्कृतार्य्यभाषाविभूषित सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में सतासीवां सूक्त चौंतीसवां वर्ग तथा पञ्चम मण्डल में छठा अनुवाक और पञ्चम मण्डल भी समाप्त हुआ॥**